भगवान महावीर के पच्चीसवें निर्वाण शताब्दी समारोह के

उपलक्ष में प्रकाशित

स्थानांग सूत्र

[सानुवाद सपरिशिष्ट]



संपादक

मुनि कन्हैयालाल 'कमल'



आगम अनुयोग प्रकाशन

साडेराव, (राजस्थान)

प्रकाशक—आगम अनुयोग प्रकाशन परिषद्
बख्तावरपुरा साडेराव
[फालना–राजस्थान]

प्रथम संस्करण वीर संवत् २४९९ दीपमालिका
अक्टूबर १९७२
प्रतियाँ एक हजार
मूल्य पच्चीस रुपये

मुद्रण व्यवस्था—
श्रीचन्द सुराना 'सरस'
संजय साहित्य संगम
दाम बिल्डिंग नं० १
त्रिलोचपुरा आगरा-२

प्राप्ति स्थान
शा हिम्मतमल हस्तीमल
A/4 मस्कती मार्केट
अहमदाबाद-२

मुद्रक—श्यामसुन्दर शर्मा, श्री प्रिंटर्स, २९।१५४
राजामण्डी, आगरा-२

समर्पण

श्रमणसस्कृति के प्रतीक-

सरल शान्त दान्त

गुणरत्नाकर गुरुवर

भजनानदी श्री फतहचन्द्र जी म० को

प्रकाशकीय

स्वतन्त्र भारत की राजधानी देहली मे आगम अनुयोग प्रकाशन की ओर से जैनागमों का नवीन शैली मे प्रकाशन प्रारम्भ किया गया। इस कार्य मे सर्वप्रथम ई० सन् १९६६ मे समवायाङ्ग का प्रकाशन किया गया। पश्चात् स्थानाङ्ग सूत्र का प्रकाशन भी प्रारम्भ होगया था। बियालीस फर्मे भी वहाँ छप-गये थे किन्तु कारणवश मुद्रण कार्य स्थगित करना पडा। सन् १९७१ मे पुन आगरा मे मुद्रण कार्य प्रारम्भ किया गया।

प्रूफ सशोधन एव मुद्रण का सारा कार्यभार श्रीमान् श्रीचन्दजी सुराना "सरस" ने सँभाल कर हमारे गुरुतर भार को हलका कर दिया। आपका यह सहयोग कभी भुलाया नही जा सकता।

समवायाङ्ग के समान इस स्थानाङ्ग सूत्र मे भी विस्तृत विषय सूची, शुद्ध मूलपाठ शब्दानुलक्षी सरल, सरस, सक्षिप्त हिन्दी अनुवाद और ज्ञानवर्धक शोधपूर्ण विशिष्ट परिशिष्ट प० रत्न मुनि श्री कन्हैयालालजी म० "कमल" की अनुपम कृपा से

हमे प्राप्त हुए हैं अत हम सब गुरुदेव की ज्ञान साधना के प्रति श्रद्धापूर्वक सदा नतमस्तक हैं।

इस प्रकाशन के हेतु स्थानीय दानवीर धर्म प्रेमी **शा देवीचन्दजी रूपाजी** ने २००१) रु० कागज खरीदने के लिए प्रदान किए तथा **श्री श्वे० स्थानकवासी जैन श्रावक सघ, फूलिया कला** ने ५५०१) रु० का महान् योगदान मुद्रणकार्य के लिए किया—इसके लिए हम आप सबके आभारी हैं।

मन्त्री—
आगम अनुयोग प्रकाशन परिषद्
बखतावरपुरा, साडेराव

सम्पादकीय

आगम अनुयोग प्रकाशन की ओर मे स्थानाङ्ग के प्रकाशन की योजना पर मवप्रथम मूलपाठ मशोयन का सकल्प वना किन्तु वार्य प्रारम्भ करते ही कुछ ऐमी समस्यायें सामने आई —जिनके कारण यथेष्ट मशाधन की सम्भावना धूमिल होती चली गई। दुर्भाग्य मे काय-काल में एक अप्रत्याशित व्यवधान ऐमा अनिष्टकार आया कि जिमके कारण काय मवथा स्थगित करना पडा। सौभाग्य से शेप कार्य पूरा करने के लिए पुन सुअवसर प्राप्त हुआ और गुरुदेव की कृपा मे कार्य मम्पन्न भी हो गया।

मेरे मकल्पो के अनुरूप सपादन मे सौष्ठव नही आ पाया है—यह मैं स्वय स्वीकार करता हूँ—फिर भी स्वाध्याय प्रेमियो के लिए उपलब्ध अन्य सस्करणो की अपेक्षा प्रस्तुत सस्करण अधिक उपादेय सिद्ध होगा।

स्मरणशक्ति की समृद्धि के लिए सख्या प्रधान सकलनो की एक सुन्दर शृङ्खला जो चिरकाल से चली आ रही है उसकी ये दो अमर कडियां स्थानाङ्ग और समवायाङ्ग हैं। समवायाङ्ग का प्रकाशन पाठको के हाथो

मे पहले पहुँच गया है और स्थानाङ्ग का प्रकाशन अब पहुँच रहा है।

सम्पादन काल मे प० रत्न मुनि श्री मिश्रीमलजी "मुमुक्षु" का तथा सेवाभावी मुनि श्री चाँदमलजी का समय समय पर जो योगदान रहा है वह चिरस्मरणीय रहेगा। श्री नवीन मुनिजी (गुजराती) तथा अन्तेवासी मुनि विनय ने सेवा मे सलग्न रहकर मेरी श्रुत-भावना को जो सबल प्रदान किया है वह सर्वदा अविस्मरणीय है।

जिनके सामयिक सुझावो से इस कार्य के सम्पन्न होने मे जो सरलता हुई है उन सिद्धहस्त लेखक एव अनेक ग्रन्थो के सपादक "सरस" जी को भी मैं अपना सहयोगी पाकर प्रसन्नता अनुभव कर रहा हूँ।

दीपमालिका —मुनि कन्हैयालाल "कमल"
वीर सवत २४९८
वर्षावास-फूलिया कलॉ

प्राक्कथन

स्थानाङ्ग-परिचय—

स्थानाङ्ग म स्थान और अङ्ग ये दो शब्द है। स्थान शब्द का सामान्य अर्थ "विश्रान्ति स्थल" होता है। अङ्ग का सामान्य अथ 'एक विभाग" होता है। इस प्रकार स्थानाङ्ग नाम निष्पन्न हुआ है।

इस स्थानाङ्ग के सकलनकर्ता श्री सुधर्मा गणधर एक-एक सख्या वाले पदार्थो का सकलन जब परिपूर्ण कर लेते है तो उस सकलन का नाम "एक स्थान" देते हैं। इसी प्रकार द्विसख्यक त्रिसख्यक यावत् दससख्यक पदार्थो के सकलन का क्रमश द्विस्थान त्रिस्थान यावत् दसस्थान नाम देते हैं।

यह आगम द्वादशाङ्गात्मक गणिपिटक का एक अङ्ग-विभाग है। अत इस अङ्ग का "स्थानाङ्ग" नाम सार्थक है[1]। यह स्थानाङ्ग का शाब्दिक परिचय है। अन्तरङ्ग परिचय इस प्रकार है—

स्थानाङ्ग तृतीय अङ्ग आगम है। इसके दस अध्ययन हैं। इन दस अध्ययनो का एक ही श्रुतस्कन्ध है। द्वितीय, तृतीय

---

१ एक से दस तक की सख्यावाले स्थान ही प्रवचन पुरुष के भाव अङ्ग हैं, अत इस आगम का नाम स्थानाग है।

और चतुर्थ अध्ययन के चार-चार उद्देशक हैं। पचम अध्ययन के तीन उद्देशक हैं। शेष छ अध्ययनो मे एक-एक उद्देशक हैं। इस प्रकार स्थानाङ्ग के इक्कीस उद्देशक है।

वर्तमान मे उपलब्ध स्थानाग मे ७८३ मूल सूत्र माने गये हैं[१]। इन सूत्रो मे से जिन-जिन सूत्रो के जितने-जितने अन्तर्गत सूत्र माने गये हैं उनकी एक विस्तृत सूची परिशिष्ट नम्बर २ मे दी गई है। किस अनुयोग के कितने सूत्र है—इसकी पूरी जानकारी परिशिष्ट नम्बर १ मे दी गई है। सबसे अधिक सूत्र द्रव्यानुयोग के है और सबसे अल्पसूत्र कथानुयोग के है। स्थानाग और समवायाग के कुछ ऐसे सूत्र हैं जिनका विषय समान है। ऐसे सूत्रो की एक तुलनात्मक सूची परिशिष्ट नम्बर ३ म दी गई है।

स्थानाग की विषय सूचियो का तुलनात्मक अध्ययन—

नन्दी सूत्र और समवायाग मे वर्णित स्थानाग की विषय-सूचियो के देखने पर यह पता चलता है कि नन्दीसूत्र मे कही गई स्थानाग की विषयसूची सक्षिप्त है और समवायाग मे कही गई विस्तृत है। समवायाग की अपेक्षा नन्दीसूत्र अर्वाचीन है (यह जैन साहित्य के ऐतिहासिक विद्वानो का अभिमत है) अत नन्दी-सूत्र मे कही गई स्थानाग की विषय सूची विस्तृत होनी चाहिए

---

१ आगमोदय समिति म प्रकाशित सटीक स्थानाग की प्रति के अनुसार ये सूत्राक दिये गए हैं।

थी, किन्तु ऐसा न होकर विपरीत हुआ है। इस समस्या का समाधान कही मिल नही रहा है।

समवायाग मे स्थानाग की विषय सूची—

१ स्वसिद्धान्त, पर-सिद्धान्त और स्वपर-सिद्धान्तो का सयुक्त कथन।

२ जीव, अजीव और जीवाजीव का सयुक्त कथन।

३ लोक, अलोक और लोकालोक का सयुक्त कथन।

४ द्रव्य के गुण तथा विभिन्न क्षेत्र-कालवर्ती पर्यायो का कथन।

५ पर्वत, पानी, समुद्र, चार प्रकार के देव, आकर, पुरुषो के विभिन्न प्रकार, स्वर, गोत्र, नदियो, निधियो और ज्योतिषी देवो की विविध गतियो का वर्णन।

६ एक प्रकार, दो प्रकार यावत् दस प्रकार के लोकस्थ जीव और पुद्गलो का कथन।

नन्दीसूत्र मे स्थानांग की विषय सूची—

प्रारम्भ के तीन कोष्ठको मे कहे गए विषय यद्यपि यहाँ व्युत्क्रम से कहे गए हैं फिर भी समवायाग के समान हैं।

चौथे और पाँचवें कोष्ठक मे कहे गए विषय यहाँ अत्यन्त सक्षिप्त करके कहे गये हैं—यथा—टक कूट शैल, शिखरी प्राग्भार, गुफा, आकर, द्रह और नदियो का कथन है।

छठे कोष्ठक मे कहे गये विषय समान हैं। इस सक्षिप्ती-करण का हेतु क्या है यह ज्ञातव्य है।

स्थानाग की पदसख्या का ह्रास—

समवायाग और नदी सूत्र मे स्थानाग की पदसख्या बहत्तर हजार कही गई है किन्तु वर्तमान मे उपलब्ध स्थानाग मे बहत्तर हजार पद नही हैं—ऐसी मान्यता प्रचलित है। यद्यपि पद का परिमाण सुनिश्चित नही है फिर भी उपलब्ध आचाराग से स्थानाग चौगुना नही है—इसलिए सकलन काल मे जितने पद थे उतने पद वर्तमान मे नहीं हैं—यह निश्चित है।

एक स्थान से लेकर दसवे स्थान तक प्रत्येक स्थान के अतिम सूत्र की सकलन शैली देखकर यह धारणा बनती है कि स्थानाङ्ग मे सकलन काल से लेकर अब तक किसी प्रकार का परिवर्तन नही हुआ है। पर यह धारणा असगत है। अत स्थानाङ्ग के प्रत्येक स्थान का अन्तिम भाग ज्यो का त्यो बना रहा[1] और पूर्व भाग मे से पदो का ह्रास हो गया'—ऐसा मान लें तो कोई असगति नही दिखाई देती।

---

१ देखिए—एक स्थान सूत्र ५६। द्वितीय स्थान सूत्र ११७-११८। तृतीय स्थान सूत्र २३३ २३४। चतुर्थस्थान सूत्र ३८७-३८८। पचम स्थान सूत्र ४७४। षष्ठ स्थान सूत्र ५४०। सप्तम स्थान सूत्र ५९२-५९३। अष्टम स्थान सूत्र ६६०। नवम स्थान सूत्र ७०२ ७०३। दसम स्थान सूत्र ७८३।

स्थानाङ्ग की सूत्राङ्क निर्धारण नीति--

आगमोदय समिति से प्रकाशित सटीक स्थानाङ्ग की प्रति मे जो सूत्राङ्क दिये है उनकी विभाजक रेखा जानने के लिये जो अब तक प्रयास किये गए हैं, वे सफल सिद्ध नही हुए हैं। द्वितीय तृतीय, चतुर्थ, सप्तम और नवम अध्ययन के अन्तिम दो-दो सूत्रो की जो रचना शैली है वही षष्ठ, अष्टम और दशम अध्ययन के अन्तिम एक-एक सूत्र की है।[1] इनके अतिरिक्त भी अनेक सूत्र ऐसे हैं जिनकी विभाजक रेखा का आधार अब तक अज्ञात है अत सूत्राङ्क निर्धारण नीति निश्चित करके आगामी प्रकाशनो म सूत्राङ्क दिए जावें तो यह एक प्रशस्त प्रयास सिद्ध होगा।

सूत्रो की सृष्टि का अज्ञात रहस्य--

१ सप्तम स्थान के सूत्राङ्क ५४३ मे सात प्रकार का योनि सग्रह कहा गया है, और अष्टम स्थान के सूत्राङ्क ५९६ मे अष्ट प्रकार का योनि सग्रह कहा गया है। इन दो सूत्रो की किस अपेक्षा से रचना की गई है—यह ज्ञातव्य है।

२ द्वितीय स्थान प्रथम उद्देशक सूत्राङ्क ६७ मे दो प्रकार का समय कहा गया है और इसी स्थान एव उद्देशक के सूत्राङ्क ७४ मे दो प्रकार का काल कहा गया है। समय और काल पर्यायवाची हैं—तो क्या ये दोनो सूत्र केवल पर्याय भेद की अपेक्षा से कहे गये है या और भी कोई अपेक्षा इन सूत्रो की सृष्टि के पीछे सन्निहित है ?

---

१ टिप्पण एक के समान।

३ पंचम स्थान के सूत्राङ्क [illegible]१० मे केवली के पाँच अनुत्तर कहे हैं और दसम स्थान के सूत्राङ्क ७६३ में केवली के दस अनुत्तर कहे गये हैं। दस अनुत्तरों में पाच अनुत्तरों का समावेश हो जाता है फिर भी पाच और दस के दो भिन्न-भिन्न जो सूत्र कहे गये है वे विवक्षा भेद या अपेक्षा भेद से ही कहे गए होंगे?

४ अष्टम स्थान के सूत्राक ६१३ मे आठ प्रकार के तृण वनस्पतिकायों का कथन है और दसम स्थान के सूत्राक ७७३ मे दस प्रकार के तृण वनस्पतिकायो का कथन है। ऊपर के समान सूत्रद्वय की रचना का हेतु प्रकाश में आना चाहिए।

५ सूत्राक [illegible]६३, २८६, ४९८ और ६०० मे क्रमश लोक-स्थिति के ३, ४, ६ और ८ प्रकार कहे गए हैं किन्तु ५ और ७ प्रकार नही कहे गए है—ऐसी स्थिति में हमारे सामने दो विकल्प आते हैं।

पहला विकल्प—पाच और सात प्रकार की लोक स्थिति के सूत्र बने ही नही होंगे।

दूसरा विकल्प—यदि बने थे तो विच्छिन्न हो गए होंगे।

फिर भी चार सूत्र किस-किस अपेक्षा से कहे गए है यह तो मालूम होना ही चाहिए।

६ सूत्राङ्क [illegible], [illegible] और [illegible] मे क्रमश ४, ५ और ६ भेद तृण वनस्पतिकाय के कहे गए है। एक-एक नाम बढाकर तीन सूत्रों की रचना करने का तात्पर्य क्या है?—यह जिज्ञासा है।

इस प्रकार अनेक सूत्र समाधान के लिए प्रस्तुत किये जा सकते है यहाँ केवल कुछ सूत्र उदाहरणाथ लिखे गए है।

स्थानाङ्ग मे इन सूत्रो को स्थान कैसे मिला—

तृतीय स्थान-द्वितीय उद्देशक के अन्तिम दो सूत्र १६६ और १६७ दु ख विषयक है।

प्रथम सूत्र मे दु ख सम्बन्धी प्रश्नोत्तर हैं।

द्वितीय सूत्र मे अन्यतीर्थियो की मान्यता है।

दोनो सूत्रो मे कही सख्या का निर्देश नही है फिर भी गणना प्रधान स्थानांग मे ये सूत्र हैं यह विचारणीय प्रश्न है।

तृतीय स्थान के तृतीय उद्देशक के अन्तिम सूत्र १९० मे ग्यारह प्रश्नोत्तरो मे श्रमण को पर्युपासना का फल कहा गया है। तीन की सख्या का कही उल्लेख नही है फिर भी तृतीय स्थान में इस सूत्र का सकलन किया गया है।

नन्दीश्वर द्वीप वणन और भ० विमलवाहन का वर्णन आदि के कुछ सूत्र ऐसे हैं जो स्थानाङ्ग की सकलन शैली से मेल नही खाते हैं। यद्यपि ये सूत्र टीकाकार के सामने भी थे। किन्तु वे स्वय इस सम्बन्ध मे किसी निर्णय पर नही पहुचे हैं।[1]

---

१ सत्सम्प्रदायहीनत्वात्, सदूहस्य वियोगत। सर्व स्वपर शास्त्राणामदृष्टेरस्मृतेश्च मे ॥१॥ वाचनानामनेकत्वात्, पुस्तकानामशुद्धित। सूत्राणामति गाम्भीर्याद, मतभेदाच्च कुत्रचित् ॥२॥ —स्थानाङ्गवृत्ति प्रशस्ति

३ पचम स्थान के सूत्राङ्क ४१० मे केवली के पाँच अनुत्तर कहे हैं और दसम स्थान के सूत्राङ्क ७६३ मे केवली के दस अनुत्तर कहे गये हैं। दस अनुत्तरो म पाँच अनुत्तरो का समावेश हो जाता है फिर भी पाच और दस के दो भिन्न-भिन्न जो सूत्र कहे गये हैं वे विवक्षा भेद या अपेक्षा भेद से ही कहे गए होगे ?

४ अष्टम स्थान के सूत्राक ६१३ मे आठ प्रकार के तृण वनस्पतिकायो का कथन है और दसम स्थान के सूत्राक ७७३ मे दस प्रकार के तृण वनस्पतिकायो का कथन है। ऊपर के समान सूत्रद्वय की रचना का हेतु प्रकाश मे आना चाहिए।

५ सूत्राक १६३, २८६, ४६८ और ६०० मे क्रमश लोक स्थिति के ३, ४, ६ और ८ प्रकार कहे गए हैं किन्तु ५ और ७ प्रकार नही कहे गए हैं—ऐसी स्थिति मे हमारे सामने दो विकल्प आते हैं।

पहला विकल्प—पाच और सात प्रकार की लोक स्थिति के सूत्र बने ही नही होंगे।

दूसरा विकल्प—यदि बने थे तो विच्छिन्न हो गए होग।

फिर भी चार सूत्र किस-किस अपेक्षा से कहे गए हैं यह तो मालुम होना ही चाहिए।

६ सूत्राङ्क २८८, ४३१ और ४८४ मे क्रमश ४, ५ और ६ भेद तृण वनस्पतिकाय के कहे गए ह। एक-एक नाम बढाकर तीन सूत्रो की रचना करने का तात्पय क्या है ?—यह जिज्ञासा है।

इस प्रकार अनेक सूत्र समाधान के लिए प्रस्तुत किये जा सकते हैं यहाँ केवल कुछ सूत्र उदाहरणार्थ लिखे गए है।

स्थानाङ्ग मे इन सूत्रो को स्थान कैसे मिला—

तृतीय स्थान-द्वितीय उद्देशक के अन्तिम दो सूत्र १६६ और १६७ दु ख विषयक हैं।

प्रथम सूत्र मे दु ख सम्बन्धी प्रश्नोत्तर हैं।

द्वितीय सूत्र मे अन्यतीर्थियो की मान्यता है।

दोनो सूत्रो में कही सख्या का निर्देश नही हैं फिर भी गणना प्रधान स्थानाग मे ये सूत्र हैं यह विचारणीय प्रश्न है।

तृतीय स्थान के तृतीय उद्देशक के अन्तिम सूत्र १९० मे इग्यारह प्रश्नोत्तरो मे श्रमण को पयु पासना का फल कहा गया है। तीन की सख्या का कही उल्लेख नही है फिर भी तृतीय स्थान मे इस सूत्र का सकलन किया गया है।

नन्दीश्वर द्वीप वर्णन और भ० विमलवाहन का वर्णन आदि के कुछ सूत्र ऐसे हैं जो स्थानाङ्ग की सकलन शैली से मेल नही खाते है। यद्यपि ये सूत्र टीकाकार के सामने भी थे। किन्तु वे स्वय इस सम्बन्ध मे किसी निर्णय पर नही पहुचे है।[1]

---

१ सत्सम्प्रदायहीनत्वात्, सदूहस्य वियोगत। सव स्वपर शास्त्राणामदृष्टेरस्मृतेश्च मे ॥१॥ वाचनानामनेकत्वात्, पुस्तकानामशुद्धित। सूत्राणामति गाम्भीर्याद्, मतभेदाच्च कुत्रचित् ॥२॥ —स्थानाङ्गवृत्ति प्रशस्ति

क्या यह क्रम भग नही ?

सूत्राङ्क २९३ मे मान, माया और लाभ के चार प्रकार कहे गये हैं और सूत्राङ्क ३११ मे चार प्रकार का क्रोध कहा गया है। सूत्राङ्क ३८७ मे भी चार प्रकार के कषाय कहे गये हैं। चार कपायो के क्रम के अनुसार सर्वप्रथम क्रोध पश्चात मान माया और लोभ का कथन होना चाहिए किन्तु सत्तरह सूत्र के पश्चात क्रोध सूत्र का सकलन क्रम भग नही है क्या ? अन्यथा प्रस्तुत सकलन क्रम की सगति सिद्ध करना चाहिये।

प्राचीन काल के गणित प्रयोग

१ "सय" (शत-१००) के स्थान मे "दस दसाइ" का प्रयोग है।[1]

२ "एग सहस्स" (एक सहस्र १०००) के स्थान मे "दस सयाइ" का प्रयोग है।

३ "एग लक्ख" (एक लक्ष १०००००) के स्थान मे "दस सय सहस्साइ" का प्रयोग है।

४ तीन की सख्या के लिए "छच्च अद्ध" का प्रयोग है।[2]

५ नो से अधिक को अर्थात् ९। या ९॥ को नो मे ही गिन लिया है क्योकि इनमें ९ का ही उच्चारण है।

---

१ दसवें स्थान मे दस की सख्या वाले पदार्थो का ही कथन होता है अत सौ हजार और एक लाख को उक्त सख्याओ मे यहा कहा गया है।

२ देखिये सूत्राङ्क ४९३, ६६६, ७१९ और ७३५।

क्लिष्ट कल्पना

जम्बूद्वीप के भरत और ऐरवत वर्ष मे अतीत उत्सर्पिणी के सुषम-सुषमा कालवर्ती मनुष्यो की उत्कृष्ट आयु तीन पल्योपम काल का था यह कथन सूत्राङ्क ४९३ मे है—यहां विचारणीय यह है कि तीन पल्योपम काल को **"छच्च अद्ध पलिओवमाइ परमाउ पालइत्ता"** इन शब्दो मे सकलित करके छठे ठाणे मे कहा है।

तीन पल्योपम काल के आयु को छ का आधा कहकर छठे ठाणे मे कहना सूत्र सकलन काल की प्रचलित पद्धति के अनुसार उपयुक्त माना जा सकता है किन्तु आधुनिक पाठक इस प्रकार के सकलन को क्लिष्ट कल्पना की सज्ञा ही देते हैं।

वाचना भेद या विवक्षा भेद

सूत्राङ्क ४९१ मे छ प्रकार के ऋद्धि प्राप्त मनुष्य और छ प्रकार के अनऋद्धि प्राप्त (ऋद्धि रहित) मनुष्य कहे गये हैं। प्रज्ञापना प्रथम पद के सूत्र ६५ मे भी ऋद्धि प्राप्त मनुष्य छ प्रकार के ही कहे गये है किन्तु अनऋद्धि प्राप्त (रिद्ध रहित) मनुष्य ९ प्रकार के कहे गये है।

स्थानाग मे कथित छ प्रकार के रिद्धि रहित मनुष्यो से प्रज्ञपना मे कथित रिद्धिरहित मनुष्य सर्वथा भिन्न हैं। स्थानाग मे उक्त छ प्रकार के रिद्धिरहित मनुष्य अकर्म भूमिक है। जब कि प्रज्ञापना मे उक्त रिद्धि रहित मनुष्य कर्म भूमिक है। इस

क्या यह क्रम भंग नहीं ?

सूत्राङ्क २६३ मे मान, माया और लोभ के चार प्रकार कहे गये हैं और सूत्राङ्क ३११ मे चार प्रकार का क्रोध कहा गया है। सूत्राङ्क ३८५ मे भी चार प्रकार के कषाय कहे गये हैं। चार कषायो के क्रम के अनुसार सर्वप्रथम क्रोध पश्चात् मान माया और लोभ का कथन होना चाहिए किन्तु सत्तरह सूत्र के पश्चात क्रोध सूत्र का सकलन क्रम भंग नही है क्या ? अन्यथा प्रस्तुत सकलन क्रम की सगति सिद्ध करना चाहिये।

प्राचीन काल के गणित प्रयोग

१ "सय" (शत-१००) के स्थान मे "दस दसाइ" का प्रयोग है।[1]

२ "एग सहस्स" (एक सहस्र १०००) के स्थान मे "दस सयाइ" का प्रयोग है।

३ "एग लक्ख" (एक लक्ष १०००००) के स्थान मे "दस सय सहस्साइ" का प्रयोग है।

४ तीन की सख्या के लिए "छत्त अद्ध" का प्रयोग है।[2]

५ नो से अधिक को अर्थात् ९। या ९।। को नो मे ही गिन लिया है क्योकि इनमे ९ का ही उच्चारण है।

---

१ दसवें स्थान मे दस की सख्या वाले पदार्थो का ही कथन होता है अत सौ हजार और एक लाख को उक्त सख्याओ मे यहा कहा गया है।

२ देखिये सूत्राङ्क ४९३, ६६६, ७१९ और ७३५।

क्लिष्ट कल्पना

जम्बूद्वीप के भरत और ऐरवत वर्ष मे अतीत उत्सर्पिणी के सुषम-सुषमा कालवर्ती मनुष्यो की उत्कृष्ट आयु तीन पल्योपम काल का था यह कथन सूत्राङ्क ४९३ मे है—यहा विचारणीय यह है कि तीन पल्योपम काल को **"छच्च अद्ध पलिओवमाइ परमाउ पालइत्ता"** इन शब्दो मे सकलित करके छठे ठाणे में कहा है।

तीन पल्योपम काल के आयु को छ का आधा कहकर छठे ठाणे मे कहना सूत्र सकलन काल की प्रचलित पद्धति के अनुसार उपयुक्त माना जा सकता है किन्तु आधुनिक पाठक इस प्रकार के सकलन को क्लिष्ट कल्पना की सज्ञा ही देते हैं।

वाचना भेद या विवक्षा भेद

सूत्राङ्क ४९१ मे छ प्रकार के ऋद्धि प्राप्त मनुष्य और छ प्रकार के अनऋद्धि प्राप्त (ऋद्धि रहित) मनुष्य कहे गये हैं। प्रज्ञापना प्रथम पद के सूत्र ६५ मे भी ऋद्धि प्राप्त मनुष्य छ प्रकार के ही कहे गये हैं किन्तु अनऋद्धि प्राप्त (रिद्ध रहित) मनुष्य ९ प्रकार के कहे गये हैं।

स्थानाग मे कथित छ प्रकार के रिद्धि रहित मनुष्यो से प्रज्ञपना मे कथित रिद्धिरहित मनुष्य सर्वथा भिन्न हैं। स्थानांग मे उक्त छ प्रकार के रिद्धिरहित मनुष्य अकर्म भूमिक है। जब कि प्रज्ञापना मे उक्त रिद्धि रहित मनुष्य कर्म भूमिक है। इस

प्रकार के अनक विवक्षा भेद हैं जिनका स्वतन्त्र चिन्तन होना आवश्यक है।

लौकिक सूत्र

स्थानाग मे कुछ सूत्र ऐसे हैं जिन्हे लौकिक सूत्र कहे तो कोई असगति दिखाई नही देती, क्योकि इन सूत्रो से केवल लौकिक ज्ञान की वृद्धि होती है। साधक जीवन मे लौकिक ज्ञान भी यदा कदा लोकोत्तर ज्ञान का पूरक होता है। लौकिक ज्ञान-शून्य साधक लोकोत्तर साधना मे सहज सफलता प्राप्त नही कर पाता। लौकिक ग्रन्थो मे स्थानाग के लौकिक कहे जाने वाले सूत्रो का आधार स्थल शोधने का कार्य भी महत्त्वपूर्ण है।

यहाँ कुछ सूत्रो के सूत्राङ्क और विषय दिये जा रहे हैं जिन्हे देखकर पाठक यह समझ सकें कि ये सूत्र लौकिक ज्ञान की वृद्धि के लिये सकलित किये गये हैं।

सत्राङ्क	विषय निर्देश
२०९—	तीन पितृ अङ्ग और तीन मातृ अङ्ग।
३४३—(१)	चार प्रकार की व्याधिया।
(२)	चार प्रकार की चिकित्सा।
३४४—	चार प्रकार के चिकित्सक।
३७४—	चार प्रकार के वाद्य, नाट्य, गेय, माल्य, अलकार और अभिनय।
३७६—	चार प्रकार के उदकगभ।'
३७७—	चार प्रकार के मानुषी गभ।

३७९— चार प्रकार के काव्य ।
४१६—(१) गर्भ रहने के पाँच कारण ।
(२) गर्भ न रहने के पाच कारण ।
४४८— पाच प्रकार की निधि ।
४४९— पाच प्रकार के शौच ।
५३३—(१) छ प्रकार का भोजन परिणाम ।
(२) छ प्रकार का विष परिणाम ।
५५१— सात प्रकार के गोत्र ।
५६१— आयुक्षय के सात कारण ।
६११— आठ प्रकार के आयुर्वेद ।
६६७— रोगोत्पत्ति के नो कारण ।

इनके अतिरिक्त और भी अनेक सूत्र इस सूची मे सम्मिलित करने योग्य हैं किन्तु विस्तार भय से यहा अंकित नही किये गये हैं। लोकोत्तर साधना मे इन सूत्रों की उपादेयता सिद्ध करना बहुश्रुतो काय हैं। स्थानाङ्ग की विषय सूचियो मे इन लौकिक सूत्रो का उल्लेख नही है, अत ये सब प्रक्षिप्त हैं—यह आधुनिक विद्वानो का मत है।

हमारे बहुश्रुत इन सूत्रो को पर-सिद्धात के सूत्र मानते हैं किन्तु ये पर दर्शन के सूत्र नहीं है। उक्त सूत्रो मे आयुर्वेद से सबधित सूत्र ही अधिक हैं—इसलिये इन सूत्रो से लौकिक ज्ञान की वृद्धि ही होती है।

श्रुत पुरुष मे स्थानाग का स्थान

श्रुत पुरुष की कल्पना किस कल्पनाशील महापुरुष के मस्तिष्क की उपज है। और उस महापुरुष का कौन-सा युग है? इस विषय की तथ्यपूर्ण जानकारी प्राप्त करने के साधन सुलभ नही है अत निश्चित कुछ नही लिखा जा सकता, किन्तु यह सुनिश्चित है कि यह कल्पना आगम सकलन काल की नही है।[1]

आगम काल की कल्पनाय केवल दो हैं। पहली प्रवचन माता की कल्पना और दूसरी गणिपिटक की कल्पना। समवायाङ्ग भगवती सूत्र आदि आगमो म दोनो कल्पनाओ का उल्लेख है।[2]

श्रुत पुरुष और श्रुत देवता की कल्पना आगमोत्तर काल के ग्रन्थो म हैं। इसी प्रकार लोक पुरुष की कल्पना भी ग्रन्थो मे ही है।

श्रुत पुरुष की वाम और दक्षिण पिण्डलियो मे स्थानाङ्ग और समवायाङ्ग का स्थान है। इसलिये ये दोनो आगम स्तम्भ के समान सुदृढ एव महत्वपूण है।

---

१ अग आगम सकलना काल।

२ (क) समवायाग का ८ वा समवाय।

(ख) भगवती शतक १ उ० ४।

(ग) भगवती शतक २५ उ० ३।

स्थानाग का अध्ययन काल

दीक्षा पर्याय के आठवें वर्ष में स्थानाङ्ग की वाचना दी जानी चाहिये यह पूर्वाचार्यों की मान्यता है। यदि आठवें वर्ष से पूर्व कोई वाचना दे तो उसे आज्ञा भङ्गादि दोष लगते हैं।[1]

स्थानाङ्ग और समवायाङ्ग के ज्ञाता को ही आचार्य उपाध्याय और गणावच्छेदक का पद देने का विधान है अत प्रत्येक सयमी को इन अगो का स्वाध्याय करना चाहिए।[2]

क्रमिक विकास

१ सूत्राक ५८८ मे सातावेदनीय और असातावेदनीय के सात-सात अनुभाव कहे हैं किन्तु प्रज्ञापना पद २३ उ० १ सूत्राङ्क ६०४ मे सातावेदनीय और असातावेदनीय के आठ-आठ अनुभाव कहे हैं।

आधुनिक विद्वान् इस प्रकार के कथनो को चिन्तन का क्रमिक विकास मानते हैं किन्तु कायिक सुख और कायिक दुख को छोड कर स्थानाग मे सात-सात अनुभाव कहने का तात्पर्य क्या है ? यह जिज्ञासा बनी हुई है। स्थानाग के सकलन कर्ता ने किसी विशेष अपेक्षा को लेकर ही सात-सात अनुभाव कहे हैं।

---

१ ठाण-समवाओऽवि य अगे ते अट्ठवासस्स—अन्यथादानेऽस्याज्ञाभङ्गादयो दोषा—स्थानाङ्ग टीका

२ ठाण-समवायधरे कप्पइ आयरियत्ताए उवज्झायत्ताए गणावच्छेइयत्ताए उद्दिसित्तए—व्यवहारसूत्र उ० ३ सूत्र ६८

प्रज्ञापना मे उक्त कायिक सुख और दुख का अनुभाव तो स्थानाग के सकलन कर्ता गणधर भगवान को ज्ञात तो था ही, फिर भी आठ अनुभाव न कहकर सात अनुभाव ही कहे हैं तो किसी विशेष अपेक्षा को लेकर ही कहे हैं—ऐसा मानना चाहिए।

२ सूत्रांक ६४८ मे ईषत् प्राग्भारा पृथ्वी के ८ नाम हैं और उववाई तथा प्रज्ञापना पद-२ मे १२ नाम हैं। इस सम्बन्ध मे विचारणीय यह है कि स्थानाग में दस स्थान हैं इसलिये १२ नामो में मे १० नाम दसवें स्थान मे कहे जा सकते थे, किन्तु आठवें स्थान मे आठ नामो का ही कथन है, अत वाचना भेद मे बारह नाम और आठ नाम कहे गये हैं—यही मानना चाहिये।

उपसहार

स्थानाङ्ग एक बृहद् अङ्ग आगम है इसकी विशालता के अनुरूप अनेक विषय अचर्चित रह गये है। इसका एक मात्र कारण है समय और साधनो का अभाव। आगम अनुयोग प्रकाशन के कार्यकर्ता चिरप्रतीक्षित स्थानाङ्ग के प्रकाशन को और अधिक दिनो तक स्थगित रखना भी नही चाहते हैं, अत इस समय इतना ही लिखना पर्याप्त है।

—मुनि कन्हैयालाल "कमल"

स्थानाग सूत्र विषय सूची

—एक स्थान—(पहला ठाणा)

एक समय की स्थिति वाले—यावत्—असख्य समय की स्थिति वाले पुद्गलो की वगणा,
एक गुण काले—यावत—अनन्त गुण रुक्ष पुद्गलो की वर्गणा,
जघन्य आदि प्रदेशस्थित पुद्गल स्कधो की वर्गणा,
जघन्य आदि अवगाहना वाले पुद्गल स्कधो की वगणा,
जघन्य आदि स्थिति वाले पुद्गल स्कधो की वगणा,
जघन्य आदि गुण काले—यावत अजघन्योत्कृष्ट गुण रुक्ष पुद्गल-स्कधो की वर्गणा।

५२ जम्बूद्वीप की परिधि,
५३ भगवान महावीर का एकाकी निर्वाण,
५४ अनुत्तरोपपातिक देवो के शरीर की ऊचाई,
५५ आर्द्रा, चित्रा, और स्वाति नक्षत्र के तारे,
५६ एक प्रदेशावगाढ पुद्गल,
एक समय स्थिति वाले पुद्गल,
एक गुण काले—यावत्—एक गुण रुक्ष पुद्गल।



द्विस्थान (दूसरा ठाणा)

प्रथम उद्देशक

सूत्राक विषय

५७ लोक मे सभी पदार्थो का द्वैविध्य,
जीव की विभिन्न दो दो विवक्षाए,
५८ अजीव की विभिन्न दो दो विवक्षाए,

द्वितीय उद्देशक

भाषा, आहार, परिणमन, वेदन और निर्जरा करने के दो-दो स्थान,
मरुत प्रमुख देवो के दो प्रकार के शरीर,

तृतीय उद्देशक

८१ दो-दो प्रकार के शब्द और शब्द की उत्पत्ति,

८२ पुद्गलो का सम्मीलन, भेदन, परिशाटन, पतन और विध्वस- स्वय और परकृत,
दो-दो प्रकार के पुद्गल,

८३ इसी प्रकार दो दो प्रकार के शब्द, रूप, रस, गध और स्पर्श,

८४ दो-दो प्रकार के आचार,
दो-दो प्रकार की प्रतिमा 'तप'
दो प्रकार की सामायिक।

८५ देव और नारक इन दो के जन्म की उपपात सज्ञा है
नारक और भवनवासी देव इन दो के मरण की उद्वर्तन सज्ञा है,
ज्योतिषी और वैमानिक इन दो के मरण की च्यवन सज्ञा है,
मनुष्य और तिर्यञ्च पचेन्द्रिय इन दो के जन्म की गर्भ व्युत्क्रान्ति सज्ञा है।
गर्भावस्था मे आहार वृद्धि, हानि, विकुर्वणा, गति परिवतन, समुद्घात, काल प्रभाव, जन्म मरण आदि भिन्न-भिन्न परिणतियां,

चतुर्थ उद्देशक



त्रि स्थान (तीसरा ठाणा)

प्रथम उद्देशक

द्वितीय उद्देशक

तृतीय उद्देशक

द्वितीय उद्देशक

तृतीय उद्देशक

चतुर्थ उद्देशक



चतुर्थ स्थान

प्रथम उद्देशक

२४६ निर्ग्रन्थी (साध्वी) को कल्पनीय चार सघाटी (साडी)।
२४७ ध्यान के चार-चार भेद, लक्षण, आलम्बन और अनुप्रेक्षा।
२४८ देवो की चार प्रकार की स्थिति और सवास।
२४९ चौवीस दण्डक मे चार कपाय,
चौवीस दण्डक मे क्रोधादि का चार प्रकार का प्रतिष्ठान
क्रोधादि की चार प्रकार की उत्पत्ति,
अनन्तानुबधी आदि क्रोधादि के चार भेद,
आभोग निर्वर्तित आदि क्रोध के चार भेद।

२५० अष्ट कर्मप्रकृति के चयनादि के चार स्थान।
२५१ समाधि आदि चार प्रतिमा।
२५२ चार अजीव (अधर्मास्तिकायादि) काय।
२५३ चार अरूपी काय,
फल की उपमा और पुरुप।

२५४ चार प्रकार के सत्य,
चार प्रकार का झूठ,
चौवीस दण्डक मे चार प्रकार के प्रणिधान,
चार प्रकार के सुप्रणिधान,
चौवीस दण्डक मे चार प्रकार के दुष्प्रणिधान।

२५५ भद्र और अभद्र पुरुप,
दोषदर्शी पुरुष,
दोष प्रकाशक पुरुप,
दोष शामक पुरुप,

द्वितीय उद्देशक

तृतीय उद्देशक

३२४ चार कारणों से होने वाला लोकान्धकार और उद्योत,
लोकान्तिक देवों के आगमन के चार कारण।

३२५ चार प्रकार की दुखशय्या,
चार प्रकार की सुखशय्या।

३२६ वाचना देने योग्य और वाचना न देने योग्य के चार चार प्रकार।

३२७ आत्मभरी और परम्भरी की चतुर्भंगी,
दुर्गतादि चतुर्भंगिया—यावत्—सिंहत्व शृगालत्व की चतुर्भंगी।

३२८ लोक मे चार समान जम्बूद्वीप, अप्रतिष्ठान नरक, पालक-विमान, सीमंतकादि चार समान सपक्ष।

३२९ ऊर्ध्वलोक अधोलोक और तिर्यक्लोक मे चार-चार द्विशरीरी।

३३० लज्जावान आदि चार प्रकार के पुरुष।

३३१ शय्या, वस्त्र, पात्र, स्थान की चार चार प्रतिमा।

३३२ जीव स्पृष्ट चार शरीर, कार्मणोन्मिश्र चार शरीर।

३३३ लोक मे चार अस्तिकाय लोक स्पृष्ट,
लोक स्पृष्ट चार बादरकाय।

३३४ प्रदेश की अपेक्षा से चार का तुल्यत्व।

३३५ चार का दुर्दृश्य प्रत्येक शरीर।

३३६ चार प्राप्यकारी इन्द्रियाँ।

तृतीय उद्देशक

चतुर्थ उद्देशक

३६५ चार प्रकार के ससारी जीव,
चार प्रकार के सर्व जीव ।

३६६ मित्रादि पुरुष चतुर्भंगिया ।

३६७ तिर्यच और मनुष्य-पचेन्द्रिय की चार गति और चार अगति ।

३६८ वेइन्द्रिय का आरम्भ न करने से होने वाला चार प्रकार का सयम, वेइन्द्रिय का आरम्भ करने से होने वाला चार प्रकार का असयम ।

३६९ सम्यग्दृष्टि नैरयिक को यावत् वैमानिको को लगने वाली चार क्रियाएँ ।

३७० गुणो के नाश और दीपन के चार-चार कारण ।

३७१ चौबीस दण्डको मे शरीरोत्पत्ति के कारण ।

३७२ धर्म के चार द्वार ।

३७३ नरकायु, तिर्यचायु, मनुष्यायु और देवायु के चार-चार कारण ।

३७४ चार प्रकार के वाद्य,
चार प्रकार के नृत्य,
चार प्रकार के गेय,
चार प्रकार की मालाएँ,
चार प्रकार के अलकार,
चार प्रकार का अभिनय ।

पच स्थान (पाँचवाँ ठाणा)

प्रथम उद्देशक

द्वितीय उद्देशक

तृतीय उद्देशक

षट्स्थान (छठा ठाणा)

जवूद्वीप मे छह महाह्रद और छह उनकी नदिया,
जवूद्वीप मे छह महानदिया मेरु के उत्तर मे छह महानदिया,
मेरु के दक्षिण मे, मीता, मीतोदा महानदी के उभयकूल मे छह अन्तर नदिया,
घातकीखण्ड आदि के पूर्वार्ध मे भी इसी प्रकार।

५२३ छह ऋतुए।

५२४ छह अवमरात्रि,
छह अतिरात्रि।

५२५ छह प्रकार का अर्थावग्रह।

५२६ अवधिज्ञान के छह भेद।

५२७, साधु के लिए नही वोलने योग्य छह प्रकार के वचन।

५२८ षड् कल्प प्रस्तार।

५२९ कल्प के विरोधी।

५३० छह प्रकार की कल्पस्थिति।

५३१ श्रमण भगवान् महावीर षष्ठभक्त करके प्रव्रजित हुए,
षष्ठ भक्त करके केवली हुए,
षष्ठ भक्त करके सिद्ध हुए।

५३२ सनत्कुमार-माहेन्द्र कल्प के विमान छह सौ योजन के और उनके देवो की अवगाहना (भवधारणीय) उत्कृष्ट छह हाथ।

५३३ छह प्रकार का भोजन परिणाम,
छह प्रकार विष परिणाम।

सप्त स्थान (सातवां ठाणा)

प्रथम उद्देशक

अष्टस्थान (आठवाँ ठाणा)

६३७ सीता महानदी के दोनो कूलो पर आठ-आठ वक्षस्कार पर्वत। सीता महानदी के उत्तर मे और दक्षिण मे आठ-आठ चक्रवर्ती विजय।
सीतोदा महानदी के उत्तर और दक्षिण मे आठ-आठ चक्रवर्ती विजय।
इन दोनो नदियो के उत्तर और दक्षिण मे आठ-आठ राजधानियाँ।

६३८ सीता महानदी के उत्तर तथा दक्षिण मे उत्कृष्ट आठ-आठ अर्हन्त, आठ-आठ चक्रवर्ती, आठ बलदेव वासुदेव होते हैं।
इसी तरह सीतोदा महानदी के दक्षिण और उत्तर मे भी,
सीता महानदी के उत्तर तथा दक्षिण मे आठ-आठ दीर्घ-वेताढ्य।
आठ-आठ तिमिस्रगुहा,
आठ-आठ खण्डप्रपात गुफा,
आठ-आठ कृतमालक देव,
आठ गगा सिन्धु कुण्ड-यावत्-आठ-आठ ऋृषभकूट देव है।

६३९ सीतोदा महानदी के उत्तर में आठ दीर्घ वैताढ्य-यावत् नृत्यमालदेव आठ रक्ता रक्तावती यावत् ऋृषभकूट देव हैं।

६४० मेरुपर्वत चूलिका मध्यभागमे आठ योजन विष्कम्भवाली है।

६४१ धातकीवृक्ष आदि का उच्चत्व आदि भी इसी तरह जानना चाहिए।

नव-स्थान (नौवाँ ठाणा)

दस-स्थान (दसवाँ ठाणा)

दस-स्थान (दशवाँ ठाणा)

स्थानांग सूत्र

(मूल पाठ)



संपादक

मुनि कन्हैयालाल "कमल"

णमो सिद्धाण

तइयं ठाणंगं

एगट्ठाण

१ सुय मे आउस ! तेण भगवया एवमक्खाय—

२ एगे आया

३ एगे दडे

४ एगा किरिया

५ एगे लोए ६ एगे अलोए

७ एगे धम्मे ८ एगे अधम्मे

९ एगे बधे १० एगे मोक्खे

११ एगे पुण्णे १२ एगे पावे

१३ एगे आसवे १४ एगे सवरे

१५ एगा वेयणा १६ एगा णिज्जरा

१७ एगे जीवे पाडिक्कएण सरीरएण

१८ एगा जीवाण अपरियाइत्ता विगुव्वणा

१९ एगे मणे २० एगा वइ २१ एगे कायवायामे

२२ एगा उप्पा २३ एगा वियती २४ एगा वियच्चा

२५ एगा गइ २६ एगा आगइ

२७ एगे चवणे २८ एगे उववाए

२९ एगा तक्का ३० एगा सन्ना ३१ एगा मन्ना ३२ एगा विन्नू

३३ एगा वेयणा ३४ एगा छेयणा ३५ एगा भेयणा

३६ एगे मरणे अतिमसारीरियाण

३७ एगे ससुद्धे अहाभूए पत्ते

३८ एगे दुक्खे जीवाण एगभूए २

३९ एगा अहम्मपडिमा ज से आया परिकिलेसइ

४० एगा धम्मपडिमा ज से आया पज्जवजाए

४१ एगे मणे देवासुरमणुयाण तसि तसि समयसि
एगा वइ देवासुरमणुयाण तसि तसि समयसि
एगे कायवायामे देवासुरमणुयाण तसि तसि समयसि ३

४२ एगे उट्ठाण-कम्म-बल-वीरिय-पुरिसकारपरक्कमे-
देवासुरमणुयाण तसि तसि समयसि

४३ एगे नाणे एगे दसणे एगे चरित्ते ३

४४ एगे समए

४५ एगे पएसे एगे परमाणु २

४६ एगा सिद्धी एगे सिद्धे एगे परिनिव्वाणे एगे परिनिव्वुए ४

४७ एगे सद्दे एगे रूवे एगे गधे एगे रसे एगे फासे
एगे सुब्भिसद्दे एगे दुब्भिसद्दे
एगे सुरूवे एगे दुरूवे
एगे दीहे एगे हस्से
एगे वट्टे एगे तसे एगे चउरसे एगे पिहुले एगे परिमडले
एगे किण्हे एगे नीले एगे लोहिए एगे हालिद्दे एगे सुक्किले

एगे सुब्भिगंधे एगे दुब्भिगंधे
एगे तित्ते एगे कडुए एगे कसाए एगे अंबिले एगे महुरे
एगे कक्खडे एगे मउए एगे गरुए एगे लहुए
एगे सीए एगे उण्हे एगे निद्धे एगे लुक्खे ३६

४८ एगे पाणाइवाए —जाव— एगे परिग्गहे
एगे कोहे —जाव— एगे लोहे
एगे पेज्जे —जाव— एगे परपरिवाए
एगा अरइरइ
एगे मायामोसे एगे मिच्छादंसणसल्ले १८

४९ एगे पाणाइवायवेरमणे —जाव— एगे परिग्गहवेरमणे
एगे कोहविवेगे —जाव— एगे मिच्छादंसणसल्लविवेगे १८

५० एगा ओसप्पिणी एगा सुसमसुसमा —जाव—
एगा दूसमदूसमा ७
एगा उस्सप्पिणी एगा दूसमदूसमा —जाव—
एगा सुसमसुसमा ७

५१ (१) एगा नेरइयाणं वग्गणा एगा असुरकुमाराणं वग्गणा
चउवीसदंडओ —जाव—
एगा वेमाणियाणं वग्गणा २४
(२) एगा भवसिद्धियाणं वग्गणा
एगा अभवसिद्धियाणं वग्गणा
एगा भवसिद्धियाणं नेरइयाणं वग्गणा
एगा अभवसिद्धियाणं नेरइयाणं वग्गणा
एवं—जाव—एगा भवसिद्धियाणं वेमाणियाणं

वग्गणा एगा अभवसिद्धियाण वेमाणियाण वग्गणा ५०

(३) एगा सम्मदिट्ठियाण वग्गणा एगा मिच्छदिट्ठियाण वग्गणा एगा सम्मचिच्छदिट्ठियाण वग्गणा

एगा सम्मदिट्ठियाण नेरइयाण वग्गणा एगा मिच्छ-दिट्ठियाण नेरइयाण वग्गणा एगा सम्ममिच्छदिट्ठियाण नेरइयाण वग्गणा

एव—जाव—सम्मनिच्छदिट्ठियाण थणियकुमाराण वग्गणा

एगा मिच्छदिट्ठियाण पुढविकाइयाण वग्गणा

एव —जाव— मिच्छदिट्ठियाण वणस्सइकाइयाण वग्गणा एगा सम्मदिट्ठियाण बेइदियाण वग्गणा एगा मिच्छदिट्ठियाण बेइदियाण वग्गणा

एव तेइदियाण वि चउरिंदियाण वि

सेसा जहा नेरइया—जाव—एगा सम्ममिच्छदिट्ठि-याण वेमाणियाण वग्गणा ६२

(४) एगा कण्हपक्खियाण वग्गणा

एगा सुक्कपक्खियाण वग्गणा

एगा कण्हपक्खियाण नेरइयाण वग्गणा

एगा सुक्कपक्खियाण नेरइयाण वग्गणा

एव चउवीसदडओ भाणियव्वो ५०

(५) एगा कण्हलेस्साण वग्गणा एगा नीललेस्साण वग्गणा

एव—जाव—एगा सुक्कलेस्साण वग्गणा

एगा कण्हलेस्साण नेरइयाण वग्गणा —जाव—
एगा काउलेस्साण नेरइयाण वग्गणा
एव जस्स जइ लेस्साओ
भवणवइ-वाणमतर-पुढवि-आउ-वणस्सइकाइयाण च
चत्तारि लेस्साओ
तेउ-वाउ-बेइदिय-तेइदिय-चउरिदियाण तिण्णि
लेस्साओ
पचेदियतिरिक्खजोणियाण मणुस्साण छल्लेसाओ
जोइसियाण एगा तेउलेसा वेमाणियाण तिण्णि उवरिम
लेसाओ ९६

(६) एगा कण्हलेस्साण भवसिद्धियाण वग्गणा
एगा कण्हलेस्साण अभवसिद्धियाण वग्गणा
एव छसु वि लेसासु दो दो पदाणि भाणियव्वाणि
एगा कण्हलेस्साण भवसिद्धियाण नेरइयाण वग्गणा
एगा कण्हलेस्साण अभवसिद्धियाण नेरइयाण वग्गणा
एव जस्स जति लेसाओ तस्स तत्तियाओ भाणियव्वाओ
—जाव— एगा सुक्कलेस्साण अभवसिद्धियाण
वेमाणियाण वग्गणा १२०

(७) एगा कण्हलेस्साण सम्मदिट्ठियाण वग्गणा
एगा कण्हलेस्साण मिच्छदिट्ठियाण वग्गणा
एगा कण्हलेस्साण सम्मामिच्छदिट्ठियाण वग्गणा
एव छसु वि लेसासु —जाव— एगा सुक्कलेसाण
सम्मामिच्छदिट्ठियाणं वेमाणियाण वग्गणा

जेसि जइ दिट्ठीओ २२७

(८) एगा कण्हलेस्साण कण्हपक्खियाण वग्गणा —जाव—
एगा सुक्कलेस्साण सुक्कपक्खियाण वेमाणियाण वग्गणा
जस्स जइ लेस्साओ ५०
एए अट्ठ चउवीसदडया
एगा तित्थसिद्धाण वग्गणा एव —जाव— एगा
एक्कसिद्धाण वग्गणा एगा अणिक्कसिद्धाण वग्गणा
एगा पढम-समय-सिद्धाण वग्गणा
एव —जाव— एगा अणत-समय-सिद्धाण वग्गणा
एगा परमाणुपोग्गलाण वग्गणा
एव—जाव– एगा अणतपएसियाण खधाण वग्गणा
एगा एगपएसोगाढाण पोग्गलाण वग्गणा —जाव—
एगा असखेज्जपएसोगाढाण पोग्गलाण वग्गणा
एगा एगसमयठिइयाण पोग्गलाणं वग्गणा —जाव—
एगा असखेज्ज-समय-ठिइयाण पोग्गलाण वग्गणा
एगा एग-गुण-कालगाण पोग्गलाण वग्गणा —जाव—
एगा असखेज्ज-गुण-कालगाण पोग्गलाण वग्गणा
एगा अणत-गुण-कालगाण पोग्गलाण वग्गणा
एव वण्णा गधा रसा फासा भाणियव्वा —जाव—
एगा अणत-गुण लुक्खाण पोग्गलाण वग्गणा
एगा जहन्नपएसियाण खधाण वग्गणा एगा उक्कोस-
पएसियाण खधाण वग्गणा एगा अजहन्नुक्कोसपए-
सियाण खधाण वग्गणा

एव जहन्नोगाहणयाण उक्कोसोगाहणयाण अजहन्नुक्कोसोगाहणयाण

जहन्नठिइयाण उक्कोसठिइयाण अजहन्नुक्कोसठिइयाण

जहन्नगुणकालयाण उक्कोसगुणकालयाण अजहन्नुक्कोसगुणकालयाण

एव वण्ण-गध-रस-फासाण वग्गणा भाणियव्वा —जाव— एगा अजहन्नुक्कोस-गुण-लुक्खाण पोग्गलाण वग्गणा ३६४।१०७२

५२ एगे जबुद्दीवे दीवे सव्वदीवसमुद्दाण —जाव— अद्धगुल च किंचि विसेसाहिए परिक्खेवेण

५३ एगे समणे भगव महावीरे इमीसे ओसप्पिणीए चउव्वीसाए तित्थगराण चरमतित्थयरे सिद्धे बुद्धे मुत्ते अतकडे परिनिव्वुडे सव्वदुक्खपहीणे

५४ अणुत्तरोववाइयाण देवाण एगा रयणी उड्ढ उच्चत्तेण पन्नत्ता

५५ अद्दानक्खत्ते एगतारे पण्णत्ते चित्ता नक्खत्ते एगतारे पण्णत्ते साती नक्खत्ते एगतारे पण्णत्ते ३

५६ एगपएसावगाढा पोग्गला अणता पण्णत्ता

एवमेगसमयठिइया एगगुणकालगा पोग्गला अणता पण्णत्ता —जाव— एगगुणलुक्खा पोग्गला अणता पण्णत्ता २२

॥एगट्ठाणस्स सव्वसुत्ताइ १२४२॥

दुट्ठाण

दुट्ठाणस्स पढमो उद्देसो

५७ जदत्थि ण लोगे त सव्व दुपडोआर त जहा-

जीवच्चेव अजीवच्चेव

तसे चेव थावरे चेव

सजोणियच्चेव अजोणियच्चेव

साउयच्चेव अणाउयच्चेव

सइंदियच्चेव अणिंदियच्चेव

सवेयगा चेव अवेयगा चेव

सरूवि चेव अरूवि चेव

सपोग्गला चेव अपोग्गला चेव

ससारसमावन्नगा चेव असंसारसमावन्नगा चेव

सासया चेव असासया चेव १०

५८ आगासे चेव नो आगासे चेव

धम्मे चेव अधम्मे चेव २

५९ बधे चेव मोक्खे चेव

पुन्ने चेव पावे चेव

आसवे चेव सवरे चेव

वेयणा चेव निज्जरा चेव ४

६० दो किरियाओ पण्णत्ताओ त जहा-
जीवकिरिया चेव अजीवकिरिया चेव

जीवकिरिया दुविहा पण्णत्ता त जहा-
सम्मत्तकिरिया चेव मिच्छत्तकिरिया चेव

अजीवकिरिया दुविहा पण्णत्ता त जहा-
इरियावहिया चेव सपराइया चेव

दो किरियाओ पण्णत्ताओ त जहा-
काइया चेव अहिगरणिया चेव

काइया किरिया दुविहा पण्णत्ता त जहा-
अणुवरयकायकिरिया चेव दुप्पउत्तकायकिरिया चेव

अहिगरणिया किरिया दुविहा पण्णत्ता त जहा-
सजोयणाहिगरणिया चेव णिव्वत्तणाहिगरणिया चेव

दो किरियाओ पण्णत्ताओ त जहा-
पाउसिया चेव पारियावणिया चेव

पाउसिया किरिया दुविहा पण्णत्ता त जहा-
जीवपाउसिया चेव अजीवपाउसिया चेव

पारियावणिया किरिया दुविहा पण्णत्ता त जहा-
सहत्थपारियावणिया चेव परहत्थपारियावणिया चेव

दो किरियाओ पण्णत्ताओ त जहा-
पाणाइवायकिरिया चेव अपच्चक्खाणकिरिया चेव

पाणाइवायकिरिया दुविहा पण्णत्ता त जहा-

सहत्थपाणाइवायकिरिया चेव परहत्थपाणाइवायकिरिया चेव-

अपच्चक्खाणकिरिया दुविहा पण्णत्ता त जहा-
जीवअपच्चक्खाणकिरिया चेव
अजीवअपच्चक्खाणकिरिया चेव

दो किरियाओ पण्णत्ताओ त जहा-
आरभिया चेव परिग्गहिया चेव

आरभिया किरिया दुविहा पण्णत्ता त जहा-
जीवआरभिया चेव अजीवआरभिया चेव

परिग्गहिया किरिया दुविहा पण्णत्ता त जहा-
जीवपरिग्गहिया चेव अजीवपरिग्गहिया चेव

दो किरियाओ पण्णत्ताओ त जहा-
मायावत्तिया चेव मिच्छादसणवत्तिया चेव

मायावत्तिया किरिया दुविहा पण्णत्ता त जहा-
आयमाववकणया चेव परमाववकणया चेव

मिच्छादसणवत्तिया किरिया दुविहा पण्णत्ता त जहा-
ऊणाइरित्तमिच्छादसणवत्तिया चेव
तव्वइरित्तमिच्छादसणवत्तिया चेव

दो किरियाओ पण्णत्ताओ त जहा-
दिट्ठिया चेव पुट्ठिया चेव

दिट्ठिया किरिया दुविहा पण्णत्ता त जहा-
जीवदिट्ठिया चेव अजीवदिट्ठिया चेव

पुट्ठिया किरिया दुविहा पण्णत्ता त जहा-
जीवपुट्ठिया चेव अजीवपुट्ठिया चेव

दो किरियाओ पण्णत्ताओ त जहा-
पाडुच्चिया चेव सामतोवणिवाइया चेव

पाडुच्चिया किरिया दुविहा पण्णत्ता त जहा-
जीवपाडुच्चिया चेव अजीवपाडुच्चिया चेव

सामतोवणिवाइया किरिया दुविहा पण्णत्ता त जहा-
जीवसामतोवणिवाइया चेव अजीवसामतोवणिवाइया चेव

दो किरियाओ पण्णत्ताओ त जहा-
साहत्थिया चेव नेसत्थिया चेव

साहत्थिया किरिया दुविहा पण्णत्ता त जहा-
जीवसाहत्थिया चेव अजीवसाहत्थिया चेव

नेसत्थिया किरिया दुविहा पण्णत्ता त जहा-
जीवणेसत्थिया चेव अजीवणेसत्थिया चेव

दो किरियाओ पण्णत्ताओ त जहा-
आणवणिया चेव वेयारणिया चेव
जहेव नेसत्थियाओ

दो किरियाओ पण्णत्ताओ त जहा-
अणाभोगवत्तिया चेव अणवकखवत्तिया चेव

अणाभोगवत्तिया किरिया दुविहा पण्णत्ता त जहा-
अणाउत्तआइयणया चेव अणाउत्तपमज्जणया चेव

अणवकखवत्तिया किरिया दुविहा पण्णत्ता त जहा-
आयसरीअणवकखवत्तिया चेव परसरीरअणवकखवत्तिया चेव

दो किरियाओ पण्णत्ताओ त जहा-
पेज्जवत्तिया चेव दोसवत्तिया चेव

पेज्जवत्तिया किरिया दुविहा पण्णत्ता त जहा-
मायावत्तिया चेव लोभवत्तिया चेव

दोसवत्तिया किरिया दुविहा पण्णत्ता त जहा-
कोहे चेव माणे चेव ३६

६१ दुविहा गरहा पण्णत्ता त जहा-
मणसा वेगे गरहइ वयसा वेगे गरहइ

अहवा–गरहा दुविहा पण्णत्ता त जहा-
दीहं वेगे अद्ध गरहइ रहस्स वेगे अद्ध गरहइ २

६२ दुविहे पच्चक्खाणे पण्णत्ते त जहा-
मणसा वेगे पच्चक्खाइ वयसा वेगे पच्चक्खाइ

अहवा–पच्चक्खाणे दुविहे पण्णत्ते त जहा-
दीह वेगे अद्ध पच्चक्खाइ रहस्स वेगे अद्ध पच्चक्खाइ २

६३ दोहि ठाणेहि अणगारे सपन्ने अणादिय अणवदग्ग दीहमद्ध-
चाउरतससारकतार वीइवएज्जा त जहा-
विज्जाए चेव चरणेण चेव

६४ दो ठाणाइं अपरियाणित्ता आया नो केवलिपण्णत्त धम्म लभेज्ज
सवणयाए त जहा-

आरभे चेव परिग्गहे चेव

दो ठाणाइ अपरियाइत्ता आया नो केवल बोहिं बुज्झेज्जा-
त जहा-

आरभे चेव परिग्गहे चेव

दो ठाणाइ अपरियाइत्ता आया नो केवल मुडे भवित्ता अगाराओ
अणगारिय पव्वइज्जा त जहा-

आरभे चेव परिग्गहे चेव

एव नो केवलेण बभचेरवासमावसेज्जा

नो केवलेण सजमेण सजमेज्जा

नो केवल सवरेण सवरेज्जा

नो केवल आभिणिबोहियणाण उप्पाडेज्जा

एव केवल सुयणाण उप्पाडेज्जा

एव ,, ओहिणाण उप्पाडेज्जा

एव ,, मणपज्जवणाण उप्पाडेज्जा

एव ,, केवलणाण उप्पाडेज्जा ११

६५ दो ठाणाइ परियाइत्ता आया केवलिपण्णत्त धम्म लभेज्ज
सवणयाए त जहा-

आरभे चेव परिग्गहे चेव

एव —जाव— केवलणाणमुप्पाडेज्जा ११

६६ दोहिं ठाणेहिं आया केवलिपण्णत्त धम्म लभेज्ज सवणयाए-
त जहा-

सोच्चा चेव अभिसमेच्चा चेव

एव —जाव— केवलणाणमुप्पाडेज्जा ११

६७ दो समाओ पण्णत्ताओ त जहा-
ओसप्पिणी समा चेव उस्सप्पिणी समा चेव

६८ दुविहे उम्माए पण्णत्ते त जहा-
जक्खावेसे चेव मोहणिज्जस्स कम्मस्स उदएण चेव
तत्थ ण जे से जक्खावेसे से ण सुहवेयतराए चेव
सुहविमोयतराए चेव
तत्थ ण जे से मोहणिज्जस्स कम्मस्स उदएण से ण दुहवेयतराए
चेव दुहविमोयतराए चेव

६९ दो दडा पण्णत्ता त जहा-
अट्ठादडे चेव अणट्ठादडे चेव
नेरइयाण दो दडा पण्णत्ता त जहा
अट्ठादडे य अणट्ठादडे य
एव चउवीसदडओ —जाव— वेमाणियाण २५

७० दुविहे दसणे पण्णत्ते त जहा-
सम्मद्दसणे चेव मिच्छादसणे चेव
सम्मद्दसणे दुविहे पण्णत्ते त जहा-
निसग्गसम्मद्दसणे चेव अभिगमसम्मद्दसणे चेव
निसग्गसम्मद्दसणे दुविहे पण्णत्ते त जहा
पडिवाइ चेव अपडिवाइ चेव
अभिगमसम्मद्दसणे दुविहे पण्णत्ते त जहा-

पडिवाइ चेव अपडिवाइ चेव

मिच्छादसणे दुविहे पण्णत्ते त जहा-
अभिगहिय-मिच्छादसणे चेव अणभिगहिय-मिच्छादसणे चेव

अभिगहिय-मिच्छादसणे दुविहे पण्णत्ते त जहा-
सपज्जवसिए चेव अपज्जवसिए चेव

अणभिगहिय-मिच्छादसणे दुविहे पण्णत्ते त जहा-
सपज्जवसिए चेव अपज्जवसिए चेव (७)

७१ दुविहे नाणे पण्णत्ते त जहा-
पच्चक्खे चेव परोक्खे चेव

पच्चक्खे नाणे दुविहे पण्णत्ते त जहा-
केवलनाणे चेव नो केवलनाणे चेव

केवलणाणे दुविहे पण्णत्ते त जहा-
भवत्थ केवलनाणे चेव सिद्ध-केवलनाणे चेव

भवत्थ-केवलनाणे दुविहे पण्णत्ते त जहा-
सजोगि-भवत्थ-केवलनाणे चेव
अजोगि-भवत्थ-केवलनाणे चेव

सजोगि-भवत्थ केवलनाणे दुविहे पण्णत्ते त जहा-
पढमसमय-सजोगि-भवत्थ-केवलनाणे चेव
अपढमसमय-सजोगि-भवत्थ केवलनाणे चेव
अहवा—चरिमसमय सजोगि-भवत्थ केवलनाणे चेव
अचरिमसमय-सजोगि-भवत्थ-केवलनाणे चेव

एव अजोगि-भवत्थ-केवलनाणे वि

सिद्ध-केवलनाणे दुविहे पण्णत्ते त जहा-
अणतर-सिद्ध-केवलनाणे चेव परपर-सिद्ध-केवलनाणे चेव.

अणतर सिद्ध-केवलनाणे दुविहे पण्णत्ते त जहा-
एक्काणतर-सिद्ध-केवलनाणे चेव
अणेक्काणतर-सिद्ध-केवलनाणे चेव

परपर-सिद्ध-केवलनाणे दुविहे पण्णत्ते त जहा-
एक्क-परपर-सिद्ध-केवलनाणे चेव
अणेक्क-परपर-सिद्ध-केवलनाणे चेव

नो केवलनाणे दुविहे पण्णत्ते त जहा-
ओहिणाणे चेव मणपज्जणाणे चेव

ओहिणाणे दुविहे पण्णत्ते त जहा-
भवपच्चइए चेव खओवसमिए चेव

दोण्ह भवपच्चइए पण्णत्ते त जहा-
देवाण चेव नेरइयाण चेव

दोण्ह खओवसमिए पण्णत्ते त जहा-
मणुसाण चेव पचिदिय-तिरिक्खजोणियाण चेव

मणपज्जवणाणे दुविहे पण्णत्ते त जहा-
उज्जुमई चेव विउलमई चेव

परोक्खे नाणे दुविहे पण्णत्ते त जहा-
आभिणिबोहियनाणे चेव सुयणाणे चेव

आभिणिबोहियणाणे दुविहे पण्णत्ते त जहा-
सुयनिस्सिए चेव असुयनिस्सिए चेव

सुयनिस्सिए दुविहे पण्णत्ते त जहा-
अत्थोग्गहे चेव वजणोग्गहे चेव
असुयनिस्सिए वि एवमेव

सुयणाणे दुविहे पण्णत्ते त जहा-
अगपविट्ठे चेव अगबाहिरे चेव

अगबाहिरे दुविहे पण्णत्ते त जहा-
आवस्सए चेव आवस्सय-वइरित्ते चेव

आवस्सय-वइरित्ते दुविहे पण्णत्ते त जहा-
कालिए चेव उक्कालिए चेव २२

७२ दुविहे धम्मे पण्णत्ते त जहा-
सुयधम्मे चेव चरित्तधम्मे चेव

सुयधम्मे दुविहे पण्णत्ते त जहा-
सुत्त-सुयधम्मे चेव अत्थ-सुयधम्मे चेव

चरित्तधम्मे दुविहे पण्णत्ते त जहा-
अगार-चरित्तधम्मे चेव अणगार-चरित्तधम्मे चेव.

दुविहे सजमे पण्णत्ते त जहा-
सरागसजमे चेव वीतरागसजमे चेव

सरागसजमे दुविहे पण्णत्ते त जहा-
सुहुमसपराय-सरागसजमे चेव

बादरसपराय-सरागसजमे चेव

सुहुमसपराय सरागसजमे दुविहे पण्णत्ते त जहा-
पढमसमय सुहुमसपराय-सरागसजमे चेव
अपढमसमय-सुहुम-सपराय-सरागसजमे चेव
अहवा–चरमसमय-सुहुमसपराय-सरागसजमे चेव
अचरमसमय-सुहुमसपराय-सरागसजमे चेव

अहवा–सुहुमसपराय-सरागसजमे दुविहे पण्णत्ते त जहा-
सकिलेसमाणए चेव विसुज्झमाणए चेव

बादरसपराय-सरागसजमे दुविहे पण्णत्ते त जहा-
पढमसमय बादर-सपराय-सरागसजमे चेव
अपढमसमय-बादर-सपराय-सरागसजमे चेव
अहवा–चरमसमय-बादरसपराय सरागसजमे चेव
अचरमसमय-बादरसपराय-सरागसजमे चेव

अहवा–बादरसपराय-सरागसजमे दुविहे पण्णत्ते त जहा-
पडिवाइ चेव अपडिवाइ चेव

वीयरागसजमे दुविहे पण्णत्ते त जहा-
उवसतकसाय-वीयरागसजमे चेव
खीणकसाय-वीयरागसजमे चेव

उवसतकसाय-वीयरागसजमे दुविहे पण्णत्ते त जहा-
पढमसमय-उवसतकसाय-वीयरागसजमे चेव
अपढमसमय-उवसतकसाय-वीयरागसजमे चेव
अहवा–चरमसमय-उवसतकसाय वीयरागसजमे चेव

अचरमसमय-उवसतकसाय-वीयरागसजमे चेव

खीणकसाय-वीतरागसजमे दुविहे पण्णत्ते त जहा-
छउमत्थ-खीणकसाय-वीयरागसजमे चेव
केवली-खीणकसाय-वीयरागसजमे चेव

छउमत्थ खीणकसाय-वीयरागसजमे दुविहे पण्णत्ते त जहा-
सयबुद्ध-छउमत्थ-खीणकसाय-वीयरागसजमे चेव
बुद्धबोहिय-छउमत्थ-खीणकसाय-वीयरागसजमे चेव

सयबुद्ध-छउमत्थ-खीणकसाय-वीयरागसजमे दुविहे पण्णत्ते त जहा-
पढमसमय-सयबुद्ध-छउमत्थ-खीणकसाय-वीयरागसजमे चेव
अपढमसमय-सयबुद्ध-छउमत्थ-खीणकसाय-वीयरागसजमे चेव
अहवा—चरमसमय सयबुद्ध-छउमत्थ-खीणकसाय-वीयरागसजमे चेव
अचरमसमय-सयबुद्ध-छउमत्थ-खीणकसाय-वीयराग सजमे चेव

बुद्धबोहिय-छउमत्थ-खीणकसाय-वीयरागसजमे दुविहे पण्णत्ते त जहा-
पढमसमय-बुद्धबोहिय-छउमत्थ-खीणकसाय-वीयरागसजमे चेव
अपढमसमय-बुद्धबोहिय-छउमत्थ-खीणकसाय-वीयरागसजमे चेव
अहवा—चरमसमय-बुद्धबोहिय-छउमत्थ-खीणकसाय-वीयराग-

सजमे चेव
अचरमसमय-बुद्धबोहिय-छउमत्थ-खीणकसाय-वीयरागसजमे चेव

केवलि-खीणकसाय-वीयरागसजमे दुविहे पण्णत्ते त जहा-
सजोगीकेवलि-खीणकसाय-वीयरागसजमे चेव
अजोगीकेवलि-खीणकसाय-वीयरागसजमे चेव

सजोगीकेवलि-खीणकसाय वीयरागसजमे दुविहे पण्णत्ते त जहा-
पढमसमय सजोगीकेवलि-खीणकसाय-वीयरागसजमे चेव
अपढमसमय-सजोगीकेवलि-खीणकसाय-वीयरागसजमे चेव
अहवा—चरमसमय-सजोगीकेवलि-खीणकसाय-वीयरागसजमे चेव
अचरमसमय-सजोगीकेवलि-खीणकसाय-वीयरागसजमे चेव

अजोगीकेवलि-खीणकसाय वीयरागसजमे दुविहे पण्णत्ते त जहा-
पढमसमय-अजोगीकेवलि-खीणकसाय-वीयरागसजमे चेव
अपढमसमय अजोगीकेवलि-खीणकसाय-वीयरागसजमे चेव
अहवा—चरमसमय-अजोगीकेवलि-खीणकसाय वीयरागसजमे चेव
अचरमसमय-अजोगीकेवलि-खीणकसाय-वीयरागसजमे चेव २५

७३ (१) दुविहा पुढविकाइया पण्णत्ता त जहा-
सुहुमा चेव बायरा चेव

एव —जाव— दुविहा वणस्सइकाइया पण्णत्ता
त जहा-
सुहुमा चेव बायरा चेव ५

(२) दुविहा पुढविकाइया पण्णत्ता त जहा-
पज्जत्तगा चेव अपज्जत्तगा चेव

एव —जाव— दुविहा वणस्सइकाइया पण्णत्ता
त जहा-
पज्जत्तगा चेव अपज्जत्तगा चेव ५

(३) दुविहा पुढविकाइया पण्णत्ता त जहा-
परिणया चेव अपरिणया चेव

एव —जाव — दुविहा वणस्सइकाइया पण्णत्ता
त जहा-
परिणया चेव अपरिणया चेव ५

(१) दुविहा दव्वा पण्णत्ता त जहा-
परिणया चेव अपरिणया चेव

(४) दुविहा पुढविकाइया पण्णत्ता त जहा-
गइसमावन्नगा चेव अगइसमावन्नगा चेव

एव —जाव— दुविहा वणस्सइकाइया पण्णत्ता
त जहा-
गइसमावन्नगा चेव अगइसमावन्नगा चेव ५

(२) दुविहा दव्वा पण्णत्ता त जहा-

गइसमावन्नगा चेव अगइसमावन्नगा चेव

(५) दुविहा पुढविकाइया पण्णत्ता त जहा-
अणतरोगाढा चेव परपरोगाढा चेव
एव —जाव— दुविहा वणस्सइकाइया पण्णत्ता.
त जहा-
अणतरोगाढा चेव परपरोगाढा चेव ५

(३) दुविहा दव्वा पण्णत्ता त जहा-
अणतरोगाढा चेव परपरोगाढा चेव २८

७४ दुविहे काले पण्णत्ते त जहा-
ओसप्पिणी काले चेव उस्सप्पिणी काले चेव

दुविहे आगासे पण्णत्ते त जहा-
लोगागासे चेव अलोगागासे चेव २

७५ (१) नेरइयाण दो सरीरगा पण्णत्ता त जहा-
अब्भतरए चेव बाहिरए चेव
अब्भतरए कम्मए बाहिरए वेउव्विए
एव देवाण भाणियव्व

पुढविकाइयाण दो सरीरगा पण्णत्ता त जहा-
अब्भतरए चेव वाहिरए चेव
अब्भतरए कम्मए वाहिरए ओरालिए —जाव—
वणस्सइकाइयाण

बेइंदियाणं दो सरीरगा पण्णत्ता त जहा-

अब्भतरए चेव बाहिरए चेव
अब्भतरए कम्मए अट्ठि-मस-सोणियबद्धे बाहिरए
ओरालिए —जाव— चउरिंदियाण
पंचिदियतिरिक्खजोणियाण दो सरीरगा पण्णत्ता
त जहा-
अब्भतरए चेव बाहिरए चेव
अब्भतरए कम्मए अट्ठि-मस-सोणिय-ण्हारु-छिराबद्धे
बाहिरए ओरालिए
मणुस्साण वि एव चेव २४

(२) विग्गहगइसमावन्नगाण नेरइयाण दो सरीरगा पण्णत्ता
तं जहा-
तेयए चेव कम्मए चेव
निरतर —जाव— वेमाणियाण २४

(३) नेरइयाण दोहिं ठाणेहिं सरीरुप्पत्ती सिया त जहा-
रागेण चेव दोसेण चेव —जाव— वेमाणियाणं २४

(४) नेरइयाण दुट्ठाणनिव्वत्तिए सरीरगे पण्णत्ते तं जहा-
रागनिव्वत्तिए चेव दोसनिव्वत्तिए चेव —जाव—
वेमाणियाण २४

दो काया पण्णत्ता त जहा-
तसकाए चेव थावरकाए चेव
तसकाए दुविहे पण्णत्ते त जहा-
भवसिद्धिए चेव अभवसिद्धिए चेव

गइसमावन्नगा चेव अगइसमावन्नगा चेव

(५) दुविहा पुढविकाइया पण्णत्ता त जहा-
अणतरोगाढा चेव परपरोगाढा चेव
एव —जाव— दुविहा वणस्सइकाइया पण्णत्ता-
त जहा-
अणतरोगाढा चेव परपरोगाढा चेव ५

(३) दुविहा दव्वा पण्णत्ता त जहा-
अणतरोगाढा चेव परपरोगाढा चेव २८

७४ दुविहे काले पण्णत्ते त जहा-
ओसप्पिणी काले चेव उस्सप्पिणी काले चेव

दुविहे आगासे पण्णत्ते त जहा-
लोगागासे चेव अलोगागासे चेव २

७५ (१) नेरइयाण दो सरीरगा पण्णत्ता त जहा-
अब्भतरए चेव बाहिरए चेव

अब्भतरए कम्मए बाहिरए वेउव्विए
एव देवाण भाणियव्व

पुढविकाइयाण दो सरीरगा पण्णत्ता त जहा-
अब्भतरए चेव बाहिरए चेव
अब्भतरए कम्मए बाहिरए ओरालिए —जाव—
वणस्सइकाइयाण

बेइंदियाणं दो सरीरगा पण्णत्ता त जहा-

अब्भतरए चेव बाहिरए चेव
अब्भतरए कम्मए अट्ठि-मस-सोणियबद्धे बाहिरए
ओरालिए —जाव— चउरिदियाण
पचिदियतिरिक्खजोणियाण दो सरीरगा पण्णत्ता
त जहा-
अब्भतरए चेव बाहिरए चेव
अब्भतरए कम्मए अट्ठि-मस-सोणिय-ण्हारु-छिराबद्धे
बाहिरए ओरालिए
मणुस्साण वि एव चेव २४

(२) विग्गहगइसमावन्नगाण नेरइयाण दो सरीरगा पण्णत्ता
त जहा-
तेयए चेव कम्मए चेव
निरतर—जाव—वेमाणियाण २४

(३) नेरइयाण दोहि ठाणेहि सरीरुप्पत्ती सिया त जहा-
रागेण चेव दोसेण चेव —जाव—वेमाणियाण २४

(४) नेरइयाण दुट्ठाणनिव्वत्तिए सरीरगे पण्णत्ते त जहा-
रागनिव्वत्तिए चेव दोसनिव्वत्तिए चेव —जाव—
वेमाणियाण २४

दो काया पण्णत्ता त जहा-
तसकाए चेव थावरकाए चेव
तसकाए दुविहे पण्णत्ते त जहा-
भवसिद्धिए चेव अभवसिद्धिए चेव

एव थावरकाए वि ६६

७६ दो दिसाओ अभिगिज्झ कप्पइ निग्गथाण वा निग्गथीण वा पव्वावित्तए त जहा-

पाईण चेव उदीण चेव

एव मु डावित्तए सिक्खावित्तए उवट्ठावित्तए सभुजित्तए सवसित्तए सज्झाय उद्दिसित्तए सज्झाय समुद्दिसित्तए सज्झाय अणुजाणित्तए आलोइत्तए पडिक्कमित्तए निदित्तए गरहित्तए विउट्टित्तए विसोहित्तए अकरणयाए अब्भुट्ठित्तए अहारिह पायिच्छत्त तवोकम्म पडिवज्जित्तए

दो दिसाओ अभिगिज्झ कप्पइ निग्गथाण वा, निग्गथीण वा अपच्छिम-मारणतिय-सलेहणा-झूसणा-झूसियाण भत्त-पाण-पडियाइक्खित्ताण पाओवगयाण काल अणवकखमाण विहरित्तए त जहा-

पाईण चेव उदीण चेव १८

दुट्ठाणस्स बीओ उद्देसो

७७ जे देवा उड्ढोववन्नगा कप्पोववन्नगा विमाणोववन्नगा चारोववन्नगा चारट्ठितीया गइरइया गइसमावन्नगा तेसि ण देवाण सया समिय जे पाव कम्मे कज्जइ तत्थेगया वि एगइया वेयण वेदेंति अण्णत्थगया वि एगइया वेयण वेदेंति

नेरइयाण सया समिय जे पावे कम्मे कज्जइ

तत्थगया वि एगइया वेयण वेदेंति
अन्नत्थगया वि एगइया वेयण वेदेंति —जाव—
पचेंदियतिरिक्खजोणियाण
मणुस्सा ण सया समिय जे पावे कम्मे कज्जइ
इहगया वि एगइया वेयण वेदेंति
अण्णत्यगया वि एगइया वेयण वेदेंति
मणुस्सवज्जा सेसा एक्कगमा २३

७८ नेरइया दु गतिया दु आगतिया पण्णत्ता त जहा-
(१) नेरइए नेरइएसु उववज्जमाणे मणुस्सेहिंतो वा
पंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो वा उववज्जेज्जा
से चेव ण से नेरइए नेरइयत्त विप्पजहमाणे
मणुस्सत्ताए वा पचेंदियतिरिक्खजोणियत्ताए वा
गच्छेज्जा
एव असुरकुमारा वि णवर-से चेव ण से असुरकुमारे
असुरकुमारत्त विप्पजहमाणे मणुस्सत्ताए वा
तिरिक्खजोणियत्ताए वा गच्छेज्जा एव सव्व देवा
पुढविकाइया दु गतिया दु आगतिया पण्णत्ता त जहा-
पुढविकाइए पुढविकाइएसु उववज्जमाणे पुढविकाइए-
हिंतो वा नो पुढविकाइएहिंतो वा उववज्जेज्जा
से चेव ण से पुढविकाइए पुढविकाइयत्त विप्पजहमाणे
पुढविकाइयत्ताए वा नो पुढविकाइयत्ताए वा गच्छेज्जा
एव—जाव—मणुस्सा २४

७६ (१) दुविहा नेरइया पण्णत्ता त जहा-
भवसिद्धिया चेव अभवसिद्धिया चेव
—जाव वेमाणिया २४

(२) दुविहा नेरइया पण्णत्ता त जहा-
अणतरोववण्णा चेव परपरोववण्णगा चेव —जाव—
वेमाणिया २४

(३) दुविहा नेरइया पण्णत्ता त जहा-
गइसमावण्णगा चेव अगइसमावण्णगा चेव —जाव—
वेमाणिया २४

(४) दुविहा नेरइया पण्णत्ता त जहा-
पढमसमयोववण्णगा चेव अपढमसमयोववण्णगा चेव-
—जाव— वेमाणिया २४

(५) दुविहा नेरइया पण्णत्ता त जहा-
आहारगा चेव अणाहारगा चेव —जाव—
वेमाणिया २४

(६) दुविहा नेरइया पण्णत्ता त जहा-
उस्सासगा चेव नो उस्सासगा चेव —जाव—
वेमाणिया २४

(७) दुविहा नेरइया पण्णत्ता त जहा-
सइंदिया चेव अणिदिया चेव —जाव—
वेमाणिया २४

(८) दुविहा नेरइया पण्णत्ता त जहा-
पज्जत्तगा चेव अपज्जत्तगा चेव —जाव—
वेमाणिया २४

(९) दुविहा नेरइया पण्णत्ता त जहा-
सन्नि चेव असन्नि चेव
एव पचेदिया सव्वे
विगलिदियवज्जा —जाव— वेमाणिया १६

(१०) दुविहा नेरइया पण्णत्ता त जहा-
भासगा चेव अभासगा चेव एवमेगेंदियवज्जा
सव्वे १९

(११) दुविहा नेरइया पण्णत्ता त जहा-
सम्मदिट्ठिया चेव मिच्छदिट्ठिया चेव एवमेगेंदियवज्जा
सव्वे १९

(१२) दुविहा नेरइया पण्णत्ता त जहा-
परित्तससारिया चेव अणतससारिया चेव —जाव—
वेमाणिया २४

(१३) दुविहा नेरइया पण्णत्ता त जहा-
सखेज्जकालसमयठिइया चेव असखेज्जकालसमयठि-
इया चेव एव पचेदिया एगिदिय-विगलिदियवज्जा
—जाव— वाणवतरा १४

(१४) दुविहा नेरइया पण्णत्ता त जहा-

भासासद्दे चेव नो भासासद्दे चेव

भासासद्दे दुविहे पण्णत्ते त जहा-
अक्खरसबद्धे चेव नो अक्खरसबद्धे चेव

नो भासासद्दे दुविहे पण्णत्ते त जहा-
आउज्जसद्दे चेव नो आउज्जसद्दे चेव

आउज्जसद्दे दुविहे पण्णत्ते त जहा-
तते चेव वितते चेव

तते दुविहे पण्णत्ते त जहा
घणे चेव झुसिरे चेव
एव वितते वि

नो आउज्जसद्दे दुविहे पण्णत्ते त जहा-
भूसणसद्दे चेव नो भूसणसद्दे चेव

नो भूसणसद्दे दुविहे पण्णत्ते त जहा-
तालसद्दे चेव लत्तिआसद्दे चेव

दोहि ठाणेहि सद्दुप्पाए सिया त जहा-
साहन्नताण चेव पुग्गलाण सद्दुप्पाए सिया
भिज्जताण चेव पोग्गलाण सद्दुप्पाए सिया ६

८२ दोहि ठाणेहि पोग्गला साहण्णति त जहा-
सइ वा पोग्गला साहण्णति
परेण वा पोग्गला साहण्णति

दोहि ठाणेहि पोग्गला भिज्जति त जहा-

सइ वा पोग्गला भिज्जति
परेण वा पोग्गला भिज्जति
दोहिं ठाणेहिं पोग्गला परिसडति त जहा-
सइ वा पोग्गला परिसडति
परेण वा पोग्गला परिसडति
एव परिवडति
विद्धसति
दुविहा पोग्गला पण्णत्ता त जहा-
भिन्ना चेव अभिन्ना चेव
दुविहा पोग्गला पण्णत्ता त जहा-
भिउरधम्मा चेव नो भिउरधम्मा चेव
दुविहा पोग्गला पण्णत्ता त जहा-
परमाणु-पोग्गला चेव नो परमाणु-पोग्गला चेव
दुविहा पोग्गला पण्णत्ता त जहा-
सुहुमा चेव बायरा चेव
दुविहा पोग्गला पण्णत्ता त जहा-
बद्धपासपुट्ठा चेव नो बद्धपासपुट्ठा चेव
दुविहा पोग्गला पण्णत्ता त जहा-
परियाइयच्चेव अपरियाइयच्चेव
दुविहा पोग्गला पण्णत्ता त जहा-
अत्ता चेव अणत्ता चेव

दुविहा पोग्गला पण्णत्ता त जहा-
इट्ठा चेव अणिट्ठा चेव
एव कता पिया मणुन्ना मणामा १७

८३ दुविहा सद्दा पण्णत्ता त जहा-
अत्ता चेव अणत्ता चेव
एवमिट्ठा —जाव— मणामा

दुविहा रूवा पण्णत्ता त जहा-
अत्ता चेव अणत्ता चेव
एवमिट्ठा —जाव— मणामा
एव गधा रसा फासा
एवमिक्केक्के छ छ आलावगा भाणियव्वा ३०

८४ दुविहे आयारे पण्णत्ते त जहा-
नाणायारे चेव नो नाणायारे चेव

नो नाणायारे दुविहे पण्णत्ते त जहा-
दसणायारे चेव नो दसणायारे चेव

नो दसणायारे दुविहे पण्णत्ते त जहा-
चरित्तायारे चेव नो चरित्तायारे चेव

नो चरित्तायारे दुविहे पण्णत्ते त जहा-
तवायारे चेव वीरियायारे चेव

दो पडिमाओ पण्णत्ताओ त जहा-
समाहि-पडिमा चेव उवहाण-पडिमा चेव

दो पडिमाओ पण्णत्ताओ त जहा-
विवेग-पडिमा चेव विउस्सग्ग-पडिमा चेव

दो पडिमाओ पण्णत्ताओ त जहा-
भद्दा चेव सुभद्दा चेव

दो पडिमाओ पण्णत्ताओ त जहा-
महाभद्दा चेव सव्वओ भद्दा चेव

दो पडिमाओ पण्णत्ताओ त जहा-
खुड्डिया चेव मोय पडिमा महल्लिया चेव मोय-पडिमा

दो पडिमाओ पण्णत्ताओ त जहा-
जवमज्झा चेव चद-पडिमा वइरमज्झा चेव चद-पडिमा

दुविहे सामाइए पण्णत्ते त जहा-
अगार-सामाइए चेव अणगार-सामाइए चेव ११

८५ दोण्ह उववाए पण्णत्ते त जहा-
देवाण चेव नेरइयाण चेव

दोण्ह उव्वट्टणा पण्णत्ता त जहा-
नेरइयाण चेव भवणवासीण चेव

दोण्ह चयणे पण्णत्ते त जहा-
जोइसियाण चेव वेमाणियाण चेव

दोण्ह गब्भवक्कती पण्णत्ता त जहा-
मणुस्साण चेव पचिदिय-तिरिक्खजोणियाण चेव

दोण्ह गब्भत्थाण आहारे पण्णत्ते त जहा-

मणुस्साण चेव पंचिंदिय-तिरिक्खजोणियाण चेव

दोण्ह गब्भत्थाण वुड्ढी पण्णत्ता त जहा-
मणुस्साण चेव पंचिंदिय-तिरिक्खजोणियाण चेव
एव निव्वुड्ढी विगुव्वणा गइपरियाए
समुग्घाए कालसजोगे आयाती मरणे

दोण्ह छविपव्वा पण्णत्ता त जहा-
मणुस्साण चेव पंचिंदिय-तिरिक्खजोणियाण चेव

दो सुक्क-सोणियसभवा पण्णत्ता त जहा-
मणुस्सा चेव पंचिंदिय-तिरिक्खजोणिया चेव

दुविहा ठिई पण्णत्ता त जहा-
कायट्ठिई चेव भवट्ठिई चेव

दोण्ह कायट्ठिई पण्णत्ता त जहा-
मणुस्साण चेव पंचिंदिय-तिरिक्खजोणियाण चेव

दोण्ह भवट्ठिई पण्णत्ता त जहा-
देवाण चेव नेरइयाण चेव

दुविहे आउए पण्णत्ते त जहा-
अद्धाउए चेव भवाउए चेव

दोण्ह अद्धाउए पण्णत्ते त जहा-
मणुस्साण चेव पंचिंदिय-तिरिक्खजोणियाण चेव

दोण्ह भवाउए पण्णत्ते त जहा-
देवाण चेव नेरइयाण चेव

दुविहे कम्मे पण्णत्ते त जहा-
पएसकम्मे चेव अणुभावकम्मे चेव

दो अहाउय पालेंति त जहा-
देवच्चेव नेरइयच्चेव

दोण्ह आउयसवट्टए पण्णत्ते त जहा-
मणुस्साण चेव पचिदिय-तिरिक्खजोणिखयाण चेव २४

८६ जबुद्दीवे दीवे मदरपव्वयस्स उत्तर-दाहिणेण दो वासा बहुसमतुल्ला अविसेसमणाणत्ता अण्णमण्ण नाइवट्टति आयाम-विक्खम-सठाण-परिणाहेण त जहा-
भरहे चेव एरवए चेव
एवमेएणमहिलावेण हिमवए चेव हेरण्णवए चेव
हरिवासे चेव रम्मयवासे चेव

जबुद्दीवे दीवे मदरपव्वयस्स पुरच्छिम पच्चच्छिमेण दो खेत्ता बहुसमतुल्ला अविसेसमणाणत्ता अण्णमण्ण नाइवट्टति आयाम-विक्खम-सठाण-परिणाहेण त जहा-
पुव्व-विदेहे चेव अवर-विदेहे चेव

जबुद्दीवे दीवे मदरपव्वयस्स उत्तर दाहिणेण दो कुराओ बहुसम-तुल्लाओ अविसेसमणाणत्ताओ अण्णमण्ण नाइवट्टति आयाम-विक्खम-सठाण-परिणाहेण त जहा-
देवकुरा चेव उत्तरकुरा चेव

तत्थ ण दो महइमहालया महद्दुमा बहुसमतुल्ला अविसेसम-णाणत्ता अण्णमण्ण नाइवट्टति आयाम-विक्खभुच्चत्तोव्वेह-

सठाण-परिणाहेण त जहा-

कूडसामली चेव सुदसणा चेव

तत्थ ण दो देवा महिड्ढिया महज्जुइया महाणुभागा महायस

महाबला महासोक्खा पलिओवमट्ठिइया परिवसति त जहा

गरुले चेव वेणुदेवे अणाढिए चेव जबुद्दीवाहिवई ७

८७ जबुद्दीवे दीवे मदरपव्वयस्स उत्तर-दाहिणेण दो वासहरपव्वया

बहुसमतुल्ला —जाव— परिणाहेण त जहा-

चुल्लहिमवते चेव सिहरि चेव

एव महाहिमवते चेव रुप्पि चेव एव निसढे चेव नीलवते चेव

जबुद्दीवे दीवे मदरपव्वयस्स उत्तर-दाहिणेण हेमवतेरण्णवए

वासेसु दो वट्टवेयड्ढपव्वया बहुसमतुल्ला — जाव — परि

णाहेण त जहा-

सद्दावाई चेव वियडावाई चेव

तत्थ ण दो देवा महिड्ढिया चेव —जाव — पलिओवमट्ठि

इया परिवसति त जहा-

साई चेव पभासे चेव

जबुद्दीवे दीवे मदरपव्वयस्स उत्तर-दाहिणेण हरिवास-रम्मएसु

वासेसु दो वट्टवेयड्ढपव्वया बहुसमतुल्ला —जाव— परि

णाहेण त जहा-

गधावाई चेव मालवतपरियाए चेव

तत्थ ण दो देवा महिड्ढिया चेव —जाव पलिओवमट्ठि

इया परिवसति त जहा-

अरुणे चेव पउमे चेव

जम्बुद्दीवे दीवे मंदरपव्वयस्स दाहिणेण देवकुराए पुव्वावरे पासे एत्थ ण आसक्खंधगसरिसा अद्धचंद-संठाणसंठिया दो वक्खार-पव्वया बहुसमतुल्ला —जाव— परिणाहेण त जहा-
सोमणसे चेव विज्जुप्पभे चेव

जम्बुद्दीवे दीवे मंदरपव्वयस्स उत्तरेण उत्तरकुराए पुव्वावरे पासे एत्थ ण आसक्खंधगसरिसा अद्धचंद-संठाणसंठिया दो वक्खार-पव्वया बहुसमतुल्ला —जाव— परिणाहेण त जहा-
गंधमायणे चेव मालवंते चेव

जम्बुद्दीवे दीवे मंदरपव्वयस्स उत्तर-दाहिणेण दो दीहवेयड्ढ-पव्वया बहुसमतुल्ला —जाव— परिणाहेण त जहा-
भारहे चेव दीहवेयड्ढे एरावए चेव दीहवेयड्ढे

भारहए ण दीहवेयड्ढे दो गुहाओ बहुसमतुल्लाओ अविसेस-मणाणत्ताओ अण्णमण्ण नाइवट्टंति आयाम-विक्खम्भुच्चत्त-संठाण-परिणाहेण त जहा-
तिमिसगुहा चेव खंडप्पवायगुहा चेव

तत्थ ण दो देवा महिड्ढिया —जाव— पलिओवमट्ठिइया परिवसंति त जहा-
कयमालए चेव नट्टमालए चेव
एरावयए ण दीहवेयड्ढे दो गुहाओ बहुसमतुल्लाओ —जाव—
कयमालए चेव नट्टमालए चेव

जबुद्दीवे दीवे मदरपव्वयस्स दाहिणेण चुल्लहिमवते वासहर पव्वए दो कूडा बहुसमतुल्ला अविसेसमणाणत्ता अण्णमण्ण नाइवट्टति आयाम-विक्खभुच्चत्त-सठाण-परिणाहेण त जहा चुल्लहिमवतेकूडे चेव वेसमणकूडे चेव

जबुद्दीवे दीवे मदरपव्वयस्स दाहिणेण महाहिमवते वासहर पव्वए दो कूडा बहुसमतुल्ला अविसेसमणाणत्ता अण्णमण्ण नाइवट्टति आयाम-विक्खभुच्चत्तसठाणपरिणाहेण त जहा महाहिमवतकूडे चेव वेरुलियकूडे चेव

एव निसढे वासहरपव्वए दो कूडा बहुसमतुल्ला —जाव— परिणाहेण त जहा-
निसढकूडे चेव रुयगप्पभे चेव

जबुद्दीवे दीवे मदरपव्वयस्स उत्तरेण नीलवते वासहरपव्वए दो कूडा बहुसमतुल्ला - जाव— परिणाहेण त जहा-
नीलवतेकूडे चेव उवदसणकूडे चेव

एव रुप्पिम्मि वासहरपव्वए दो कूडा बहुसमतुल्ला —जाव— परिणाहेण त जहा-
रुप्पिकूडे चेव मणिकचणकूडे चेव

एव सिहरिम्मि वासहरपव्वए दो कूडा बहुसमतुल्ला —जाव— परिणाहेण त जहा-
सिहरिकूडे चेव तिगिच्छकूडे चेव १६

८८ जबुद्दीवे दीवे मदरपव्वयस्स उत्तर-दाहिणेण चुल्लहिमवत-

सिहरीसु वासहरपव्वएसु दो महद्दहा बहुसमतुल्ला अविसेसम-
णाणत्ता अण्णमण्ण नाइवट्टति आयाम-विक्खभ-उव्वेह-सठाण-
परिणाहेण त जहा-
परमद्दहे चेव पुडरीयद्दहे चेव

तत्थ ण दो देवयाओ महिड्ढियाओ महज्जुइयाओ महाणुभा-
गाओ महायसाओ महाबलाओ महासोक्खाओ पलिओवम-
ट्ठिइयाओ परिवसति त जहा-
सिरिचेव लच्छी चेव

एव महाहिमवत-रुप्पीसु वासहरपव्वएसु दो महद्दहा बहुसम-
तुल्ला —जाव — परिणाहेण त जहा-
महापउमद्दहे चेव महापोडरीयद्दहे चेव

तत्थ ण दो देवयाओ महिड्ढियाओ —जाव— पलिओवम-
ट्ठिइयाओ परिवसति त जहा-
हिरि चे बुद्धि चेव

एव नीस-नीलवतेसु वासहरपव्वएसु दो महद्दहा बहुसमतुल्ला
—जाव— परिणाहेण त जहा-
तिगिछद्द्हे चेव केसरिद्दहे चेव

तत्थ ण द देवयाओ महिड्ढियाओ —जाव— पलिओवम-
ट्ठिइयाओ परिवसति त जहा-
धिती चेव किति चेव

जबुद्दीवे वे मदरपव्वयस्स दाहिणेण महाहिमवताओ

वासहरपव्वयाओ महापउमद्दहाओ दो महाणईओ पवहति त जहा
रोहियच्चेव हरिकतच्चेव

एव निसढाओ वासहरपव्वयाओ तिगिछद्दहाओ दो महाणईओ पवहति त जहा-
हरिच्चेव सीओअच्चेव

जबुद्दीवे दीवे मदरपव्वयस्स उत्तरेण नीलवताओ वासहरपव्वयाओ केसरिद्दहाओ दो महाणईओ पवहति त जहा-
सीता चेव नारिकता चेव

एव रुप्पीओ वासहरपव्वयाओ महापोंडरीयद्दहाओ दो महाणईओ पवहति त जहा-
णरकता चेव रुप्पकूला चेव

जबुद्दीवे दीवे मदरपव्वयस्स दाहिणेण भरहे वासे दो पवायद्दहा बहुसमतुल्ला – जाव— परिणाहेण त जहा-
गगप्पवायद्दहे चेव सिधुप्पवायद्दहे चेव

एव हिमवए वासे दो पवायद्दहा बहुसमतुल्ला —जाव— परिणाहेण त जहा-
रोहियप्पवायद्दहे चेव रोहियसप्पवायद्दहे चेव

जबुद्दीवे दीवे मदरपव्वयस्स दाहिणेण हरिवासे दो पवायद्दहा बहुसमतुल्ला — जाव— परिणाहेण त जहा-
हरिप्पवायद्दहे चेव हरिकतप्पवायद्दहे चेव

जबुद्दीवे दीवे मदरपव्वयस्स उत्तर-दाहिणेण महाविदेहवासे दो पवायद्दहा वहुसमतुल्ला —जाव— परिणाहेण त जहा-
सीअप्पवायद्दहे चेव सीओअप्पवायद्दहे चेव

जबुद्दीवे दीवे मदरपव्वयस्स उत्तरेण रम्मए वासे दो पवायद्दहा वहुसमतुल्ला —जाव— परिणाहेण त जहा-
नरकतप्पवायद्दहे चेव नारीकतप्पवायद्दहे चेव

एव हेरण्णवए वासे दो पवायद्दहा वहुसमतुल्ला —जाव— परिणाहेण त जहा-
सुवन्नकूलप्पवायद्दहे चेव रुप्पकूलप्पवायद्दहे चेव

जबुद्दीवे दीवे मदरपव्वयस्स उत्तरेण एरवए वासे दो पवायद्दहा वहुसमतुल्ला —जाव— परिणाहेण त जहा-
रत्तप्पवायद्दहे चेव रत्तावईप्पवायद्दहे चेव

जबुद्दीवे दीवे मदरपव्वयस्स दाहिणेण भरहे वासे दो महाणईओ वहुसमतुल्लाओ अविसेसमणाणत्ताओ अण्णमण्ण नाइवट्टति आयाम-विक्खभ-उव्वेह-सठाण परिणाहेण पवहति त जहा-
गगा चेव सिंधू चेव

एव जहा पवायद्दहा एव णईओ भाणियव्वाओ —जाव— एरवए वासे दो महाणईओ वहुसमतुल्लाओ —जाव— रत्ता चेव रत्तवई चेव ३१

८६ जबुद्दीवे दीवे भरहेरवएसु वासेसु तीआए उस्सप्पिणीए सुसम दुसमाए समाए दो सागरोवमकोडाकोडीओ कालो होत्या

एवमिमीसे ओसप्पिणीए — जाव— काले पण्णत्ते

एव आगमिस्साए उस्सप्पिणीए — जाव— कालो भविस्सइ

जबुद्दीवे दीवे भरहेरवएसु वासेसु तीआए उस्सप्पिणीए सुसमाए समाए मणुया दो गाउयाइ उड्ढ उच्चत्तण होत्था

जबुद्दीवे दीवे भरहेरवएसु वासेसु तीआए उस्सप्पिणीए सुसमाए समाए मणुया दोन्नि य पलिओवमाइ परमाउ पालइत्था

एवमिमीसे ओसप्पिणीए —जाव— पालइत्था

एवमागमिस्साए उस्सप्पिणीए - जाव — पालिस्सति

जबुद्दीवे दीवे भरहेरवएसु वासेसु एगसमए एगजुगे दो अरिहतवसा उप्पज्जिसु वा उप्पज्जति वा उप्पज्जिस्सति वा

एव चक्कवट्टिवसा एव दसारवसा

जबुद्दीवे दीवे भरहेरवएसु वासेसु एगसमए एगजुगे दो दो अरहता उप्पज्जिसु वा उप्पज्जति वा उप्पज्जिस्सति वा

एव चक्कवट्टिणो एव बलदेवा एव वासुदेवा

जबुद्दीवे दीवे दोसु कुरासु मणुया सया सुसमसुसमुत्तमिड्ढि पत्ता पच्चणुब्भवमाणा विहरति त जहा-

देवकुराए चेव उत्तरकुराए चेव

जबुद्दीवे दीवे दोसु वासेसु मणुया सया सुसमुत्तमिड्ढि पत्ता पच्चणुब्भवमाणा विहरति त जहा-

हरिवासे चेव रम्मगवासे चेव

जबुद्दीवे दीवे दोसु वासेसु मणुया सया सुसमदुसमुत्तमिड्ढि पत्ता पच्चणुब्भवमाणा विहरति त जहा-
हेमवए चेव एरण्णवए चेव

जबुद्दीवे दीवे दोसु खित्तेसु मणुया सया दुसमसुसमुत्तमिड्ढि पत्ता पच्चणुब्भवमाणा विहरति त जहा-
पुव्वविदेहे चेव अवरविदेहे चेव

जबुद्दीवे दीवे दोसु वासेसु मणुया छव्विहपि काल पच्चणुब्भवमाणा विहरति त जहा-
भरहे चेव एरवए चेव १६

९० जबुद्दीवे दीवे दो चदा पभासिसु वा पभासति वा पभासिस्सति वा
दो सूरिया तविसु वा तवति वा तविस्सति वा
एव दो कत्तियाओ, दो रोहिणीओ, दो मगसिराओ, दो अद्दाओ
गाहाओ—

कत्तिय रोहिणि मगसिर अद्दा य पुणव्वसु अ पूसो य ।
तत्तो ऽवि अस्सलेस्सा महा य दो फग्गुणीओ य ॥१॥
हत्थो चित्ता साई विसाहा तह य होइ अणुराहा ।
जेट्ठा मूलो पुव्वा य आसाढा उत्तरा चेव ॥२॥
अभिई सवण धणिट्ठा सयभिसया दो य होंति भद्दवया ।
रेवइ अस्सिणि भरिणी णेयव्वा आणुपुव्वीए ॥३॥

एव गाहाणुसारेण णेयव्व —जाव— दो भरणीओ

दो अग्गी दो पयावई दो सोमा दो रुद्दा
दो अदई दो वहस्सई दो सप्पी दो पीई
दो भगा दो अज्जमा दो सविया वो तद्वा
वो वाउ वो इदग्गी दो मित्ता दो इदा
दो निरइ दो आउ दो विम्सा दो बम्हा
दो विण्हु दो वसु दो वरुणा दो अया
दो विविद्धी दो पुस्सा दा अस्सा दो यमा
वो इगालगा दो वियालगा दो लोहियक्खा दो सणिच्चरा
दो आहुणिया दो पाहुणिया दो कणा दो कणगा दो कणकणगा
दो कणगवियाणगा दो कणगसताणगा दो सोमा वो सहिया
दो आसासणा दो कज्जोवगा दो कब्बडगा दो अयकरगा
दो दुदुभगा वो सखा दो सखवण्णा दो सखवण्णाभा दो कसा
दो कसवण्णा दो कसवण्णाभा दो रुप्पी दो रुप्पाभासा
दो नीला वो नीलोभासा दो भासा दो भासरासी
दो तिला वो तिलपुप्फवण्णा दो दगा दो दगपचवण्गा
दो काका वो कक्कधा दो इदग्गी दा दो धूमकेऊ दो हरी
दो पिंगला दो बुहा दो सुक्का दो वहस्सई दो राहू
दो अगत्थी दो माणवगा दो कासा दो फासा दो धुरा
दो पमुहा दो वियडा दो विसधी दो नियल्ला दो पइल्ला
दो जडियाइलगा दो अरुणा दो अग्गिल्ला वो काला
दो महा कालगा दो सोत्थिया दो सोवत्थिया
दो वद्धमाणगा दो पलवा दो निच्चालोगा वो निच्चुज्जोया
दो सयपभा दो ओभासा दो सेयकरा दो खेमकरा

दो आभकरा दो पभकरा दो अपराजिया दो अरया
दो असोगा दो विगयसोगा दो विमला दो वितता
दो वितत्था दो विसाला दो साला दो सुव्वया
दो अणियट्टी दो एगजडी दो दुजडी दो करकरिगा
दो रायग्गला दो पुप्फकेऊ दो भावकेऊ १४६

६१ जबुद्दीवस्स ण दीवस्स वेइया दो गाउयाइ उड्ढ उच्चत्तेण पण्णत्ता

लवणे ण समुद्दे दो जोयण-सयसहस्साइ चक्कवाल-विक्खभेण पण्णत्ते

लवणस्स ण समुद्दस्स वेइया दो गाउयाइ उड्ढ उच्चत्तेण पण्णत्ता ३

६२ धायइसडे दीवे पुरच्छिमद्धेण मदरस्स पव्वयस्स उत्तर-दाहिणेण दो वासा बहुसमतुल्ला —जाव— परिणाहेण त जहा-

भरहे चेव एरवए चेव

एव जहा जबुद्दीवे तहा एत्थ वि भाणियव्व —जाव— दोसु वासेसु मणुया छव्विह पि काल पच्चणुब्भवमाणा विहरति त जहा-

भरहे चेव एरवए चेव

नवर कूडसामली चेव धायइरुक्खे चेव

देवा गरुले वेणुदेवे चेव सुदसणे चेव

धायइसडे दीवे पच्चत्थिमद्धे ण मदरस्स पव्वयस्स उत्तर-

धायइसडे ण दीवे दो खीरोयाओ
,, दो सीहसोयाओ
,, दो अंतोवाहिणीओ
,, दो उम्मिमालिणीओ
,, दो फेणमालिणीओ
,, दो गंभीरमालिणीओ
,, दो कच्छा (३२ विजयाओ)
,, दो सुकच्छा
,, दो महा कच्छा
,, दो कच्छगावई
,, दो आवत्ता
,, दो मंगलावत्ता
,, दो पुक्खला
,, दो पुक्खलावई
,, दो वच्छा
,, दो सुवच्छा
,, दो महा वच्छा
,, दो वच्छगावई
,, दो रम्मा
,, दो रम्मगा
,, दो रमणिज्जा
,, दो मंगलावई
,, दो पम्हा

धायइसडे ण दीवे दो सुपम्हा

,, दो महा पम्हा

,, दो पम्हगावई

,, दो सखा

,, दो नलिना

,, दो कुमुया

,, दो सलिलावई

, दो वप्पा

,, दो सुवप्पा

,, दो महा वप्पा

,, दो वप्पगावई

,, दो वग्गू

,, दो सुवग्गू

,, दो गधिला

,, दो गधिलावई (३२ विजय)

,, दो खेमाओ (रायहाणीओ)

,, दो खेमपुरीओ

,, दो रिट्ठाओ

,, दो रिट्ठपुरीओ

,, दो खग्गीओ

,, दो मजुसाओ

,, दो ओसहीओ

,, दो पोंडरगिणीओ

धायइसडे ण दीवे दो खीरोयाओ
,, दो सीहसोयाओ
,, दो अंतोवाहिणीओ
,, दो उम्मिमालिणीओ
,, दो फेणमालिणीओ
,, दो गभीरमालिणीओ
,, दो कच्छा (३२ विजयाओ)
,, दो सुकच्छा
,, दो महा कच्छा
,, दो कच्छगावई
,, दो आवत्ता
,, दो मंगलावत्ता
,, दो पुक्खला
,, दो पुक्खलावई
,, दो वच्छा
,, दो सुवच्छा
,, दो महा वच्छा
,, दो वच्छगावई
,, दो रम्मा
,, दो रम्मगा
,, दो रमणिज्जा
,, दो मंगलावई
,, दो पम्हा

घायइसड्डे ण दोवे दो सुपम्हा
,, दो महा पम्हा
,, दो पम्हगावई
,, दो सखा
,, दो नलिना
,, दो कुमुया
,, दो सलिलावई
,, दो वप्पा
,, दो सुवप्पा
,, दो महा वप्पा
,, दो वप्पगावई
,, दो वग्गू
,, दो सुवग्गू
,, दो गधिला
,, दो गधिलावई (३२ विजय)
,, दो खेमाओ (रायहाणीओ)
,, दो खेमपुरीओ
,, दो रिट्ठाओ
,, दो रिट्ठपुरीओ
,, दो खग्गीओ
,, दो मजुसाओ
,, दो ओसहीओ
,, दो पोंडरगिणीओ

धायइसंडे ण दीवे दो सुसीमाओ

,, दो कुंडलाओ

,, दो अपराजियाओ

,, दो पभंकराओ

,, दो अंकावईओ

,, दो पम्हावईओ

,, दो सुभाओ

,, दो रयणसंचाओ

,, दो आसपुराओ

,, दो सीहपुराओ

,, दो महापुराओ

,, दो विजयपुराओ

,, दो अपराजआओ

,, दो अवराओ

,, दो असोगाओ

,, दो विगयसोगाओ

,, दो विजयाओ

,, दो वेजयंतीओ

,, दो जयंतीओ

,, दो अपराजियाओ

,, दो चक्कपुराओ

,, दो खग्गपुराओ

,, दो अवज्झाओ

धायइसडे ण दीवे दो अउज्झाओ (३२ रायहाणीओ)

,, वो भद्दसालवणाइ

,, दो नदणवणाइ

,, दो सोमणसवणाइ

,, दो पडगवणाइ

,, दो पडुकवलसिलाओ

,, दो अइपडुकवलसिलाओ

,, दो रत्तकबलसिलाओ

,, दो अइरत्तकवलसिलाओ

,, वो मदरा (पव्वया)

,, दो मदरचूलियाओ

धायइसडस्स ण दीवस्स वेइया वो गाउयाइ उड्ढ उच्चत्तेण पण्णत्ता २०९

९३ कालोदस्स ण समुद्दस्स वेइया दो गाउयाइ उड्ढ उच्चत्तेणं पण्णत्ता

पुक्खरवरदीवड्ढ-पुरच्छिमद्धे ण मदरस्स पव्वयस्स उत्तर-दाहिणेण वो वासा बहुसमतुल्ला —जाव— परिणाहेण त जहा-

भरहे चेव एरवए चेव

तहेव —जाव— वो कुराओ पण्णत्ताओ त जहा-

देवकुरा चेव उत्तरकुरा चेव

तत्थ ण दो महइमहालया महद्दुमा पण्णत्ता

कूडसामली चेव पउमरुक्खे चेव
देवा गरुले चेव वेणुदेवे पउमे चेव —जाव— छव्विहं पि
कालं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति
पुक्खरवरदीवड्ढ-पच्चत्थिमद्धे णं मंदरस्स पव्वयस्स उत्तर-
दाहिणेणं दो वासा बहुसमतुल्ला तहेव
णाणत्तं-कूडसामली चेव महा पउमरुक्खे चेव देवा गरुले चेव
वेणुदेवे पुंडरीए चेव
पुक्खरवरदीवड्ढे णं दीवे दो भरहाइं दो एरवयाइं
—जाव— दो मंदरा, दो मंदरचूलियाओ
पुक्खरवरस्स णं दीवस्स वेइया दो गाउयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं
पण्णत्ता
सव्वेसिं पि णं दीव-समुद्दाणं वेइयाओ दो गाउयाइं उड्ढं
उच्चत्तेणं पण्णत्ताओ २५७

९४ दो असुरकुमारिंदा पण्णत्ता तं जहा-
चमरे चेव बली चेव
दो नागकुमारिंदा पण्णत्ता तं जहा
धरणे चेव भूयाणंदे चेव
दो सुवण्णकुमारिंदा पण्णत्ता तं जहा-
वेणुदेवे चेव वेणुदाली चेव
...नकुमारिंदा पण्णत्ता तं जहा-
... हरिस्सहे चेव
... मारिंदा पण्णत्ता तं जहा-

अग्गिसीहे चेव अग्गिमाणवे चेव

दो दीवकुमारिंदा पण्णत्ता त जहा-
पुण्णे चेव विसिट्ठे चेव.

दो उदहिकुमारिंदा पण्णत्ता त जहा-
जलकते चेव जलप्पभे चेव

दो दिसाकुमारिंदा पण्णत्ता त जहा-
अमियगई चेव अमियवाहणे चेव

दो वायुकुमारिंदा पण्णत्ता त जहा-
वेलबे चेव पभजणे चेव

दो थणियकुमारिंदा पण्णत्ता त जहा-
घोसे चेव महा घोसे चेव

दो पिसाइदा पण्णत्ता त जहा-
काले चेव महा काले चेव

दो भूइदा पण्णत्ता त जहा-
सुरूवे चेव पडिरूवे चेव

दो जक्खिदा पण्णत्ता त जहा-
पुण्णभद्दे चेव माणिभद्दे चेव

दो रक्खसिंदा पण्णत्ता त जहा-
भीमे चेव महा भीमे चेव

दो किन्नरिंदा पण्णत्ता त जहा-
किन्नरे चेव- किंपुरिसे चेव

दो किंपुरिसिंदा पण्णत्ता त जहा-
सप्पुरिसे चेव महा पुरिसे चेव
दो महोरगिंदा पण्णत्ता त जहा
अइकाए चेव महा काए चेव
दो गधव्विंदा पण्णत्ता त जहा-
गीयरइ चेव गीयजसे चेव
दो अणपन्निदा पण्णत्ता त जहा-
सनिहिए चेव सामण्णे चेव
दो पणपण्णिदा पण्णत्ता त जहा-
धाए चेव विहाए चेव
दो इसिवाइंदा पण्णत्ता त जहा-
इसिच्चेव इसिवालए चेव
दो भूतवाइंदा पण्णत्ता त जहा-
इस्सरे चेव महिस्सरे चेव
दो कंदिंदा पण्णत्ता त जहा-
सुवच्छे चेव विसाले चेव
दो महा कंदिंदा पण्णत्ता त जहा-
हस्से चेव हस्सरई चेव
दो कुहंडिंदा पण्णत्ता त जहा-
सेए चेव महा सेए चेव
दो पतइंदा पण्णत्ता त जहा-

पतए चेव पतयवई चेव

जोइसियाण देवाण दो इदा पण्णत्ता त जहा-
चदे चेव सूरे चेव

सोहम्मीसाणेस ण कप्पेसु दो इदा पण्णत्ता त जहा-
सक्के चेव ईसाणे चेव

एव सणकुमार-माहिदेसु कप्पेसु दो इदा पण्णत्ता त जहा-
सणकुमारे चेव माहिदे चेव

बभलोग-लतएसु ण कप्पेसु दो इदा पण्णत्ता त जहा-
बभे चेव लतए चेव

महासुक्क सहस्सारेसु ण कप्पेसु दो इदा पण्णत्ता त जहा-
महासुक्के चेव सहस्सारे चेव

आणय पाणयारण-च्चुएसु ण कप्पेसु दो इदा पण्णत्ता त जहा-
पाणए चेव अच्चुए चेव

महासुक्क-सहस्सारेसु ण कप्पेसु विमाणा दुवण्णा पण्णत्ता त जहा-
हालिद्दा चेव सुक्किला चेव

गेविज्जगाण देवाण दो रयणीओ उड्ढ उच्चत्तेण पण्णत्ता ३४

दुट्ठाणस्स चउत्थो उद्देसो

२५ समयाइ वा आवलियाइ वा-
जीवाइ या अजीवाइ या पवुच्चइ

आणापाणूइ वा थोवेइ वा
जीवाइ या अजीवाइ या पवुच्चइ

खणाइ वा लवाइ वा
जीवाइ वा अजीवाइ या पवुच्चइ

एवं मुहुत्ताइ वा अहोरत्ताइ वा
जीवाइ वा अजीवाइ वा पवुच्चइ

पक्खाइ वा मासाइ वा
जीवाइ वा अजीवाइ वा पवुच्चइ

उउइ वा अयणाइ वा
जीवाइ वा अजीवाइ वा पवुच्चइ

संवच्छराइ वा जुगाइ वा
जीवाइ वा अजीवाइ वा पवुच्चइ

वासयाइ वा वाससहस्साइ वा
जीवाइ वा अजीवाइ वा पवुच्चइ

वाससयसहस्साइ वा वासकोडीइ वा
जीवाइ वा अजीवाइ वा पवुच्चइ वा

पुव्वंगाइ वा पुव्वाइ वा
जीवाइ वा अजीवाइ वा पवुच्चइ

तुडियंगाइ वा तुडियाइ वा
जीवाइ वा अजीवाइ वा पवुच्चइ

अडडंगाइ वा अडडाइ वा

जीवाइ वा अजीवाइ वा पवुच्चइ

अववगाइ वा अववाइ वा
जीवाइ वा अजीवाइ वा पवुच्चइ

हूहूअगाइ वा हूहूयाइ वा
जीवाइ वा अजीवाइ वा पवुच्चइ

उप्पलगाइ वा उप्पलाइ वा
जीवाइ वा अजीवाइ वा पवुच्चइ

पउमगाइ वा पउमाइ वा
जीवाइ वा अजीवाइ वा पवुच्चइ

नलिणगाइ वा नलिणाइ वा
जीवाइ वा अजीवाइ वा पवुच्चइ

अच्छणिकुरगाइ वा अच्छणिकुराइ वा
जीवाइ वा अजीवाइ वा पवुच्चइ

अउअगाइ वा अउआइ वा
जीवाइ वा अजीवाइ वा पवुच्चइ

नउअगाइ वा नउआइ वा
जीवाइ वा अजीवाइ वा पवुच्चइ

पउअगाइ वा पउआइ वा
जीवाइ वा अजीवाइ वा पवुच्चइ

चूलिअगाइ वा चूलिआइ वा
जीवाइ वा अजीवाइ वा पवुच्चइ

सीसपहेलियंगाइ वा सीसपहेलियाइ वा
जीवाइ वा अजीवाइ वा पव्वुच्चइ

पलिओवमाइ वा सागरोवमाइ वा
जीवाइ वा अजीवाइ वा पव्वुच्चइ

उस्सप्पिणीइ वा ओसप्पिणीइ वा
जीवाइ वा अजीवाइ वा पव्वुच्चइ

गामाइ वा नगराइ वा
जीवाइ वा अजीवाइ वा पव्वुच्चइ

निगमाइ वा रायहाणीइ वा
जीवाइ वा अजीवाइ वा पव्वुच्चइ

खेडाइ वा कव्वडाइ वा
जीवाइ वा अजीवाइ वा पव्वुच्चइ

मडंवाइ वा दोणमुहाइ वा
जीवाइ वा अजीवाइ वा पव्वुच्चइ

पट्टणाइ वा आगराइ वा
जीवाइ वा अजीवाइ वा पव्वुच्चइ

आसमाइ वा - सवाहाइ वा
जीवाइ वा अजीवाइ वा पव्वुच्चइ

सन्निवेसाइ वा घोसाइ वा
जीवाइ वा अजीवाइ वा पव्वुच्चइ

आरामाइ वा उज्जाणाइ वा

जीवाइ वा अजीवाइ वा पव्वुच्चइ

घणाइ वा घणसडाइ वा

जीवाइ वा अजीवाइ वा पव्वुच्चइ

वावीइ वा पुक्खरिणीइ वा

जीवाइ वा अजीवाइ वा पव्वुच्चइ

सराइ वा सरपतीइ वा

जीवाइ वा अजीवाइ वा पव्वुच्चइ

अगडाइ वा तलागाइ वा

जीवाइ वा अजीवाइ वा पव्वुच्चइ

दहाइ वा णईइ वा

जीवाइ वा अजीवाइ वा पव्वुच्चइ

पुढवीइ वा उदहीइ वा

जीवाइ वा अजीवाइ वा पव्वुच्चइ

वातखधाइ वा उवासतराइ वा

जीवाइ वा अजीवाइ वा पव्वुच्चइ

वलयाइ वा विग्गहाइ वा

जीवाइ वा अजीवाइ वा पव्वुच्चइ

दीवाइ वा समुद्दाइ वा

जीवाइ वा अजीवाइ वा पव्वुच्चइ

वेलाइ वा वेइयाइ वा

जीवाइ वा अजीवाइ वा पव्वुच्चइ

दाराइ वा तोरणाइ वा
जीवाइ वा अजीवाइ वा पव्वुच्चइ

नेरइयाइ वा नेरइयावासाइ वा —जाव—
वेमाणियाइ वा, वेमाणियावासाइ वा
जीवाइ वा अजीवाइ वा पव्वुच्चइ

कप्पाइ वा कप्पविमाणावासाइ वा
जीवाइ वा अजीवाइ वा पव्वुच्चइ

वासाइ वा वासधरपव्वयाइ वा
जीवाइ वा अजीवाइ वा पव्वुच्चइ

कूडाइ वा कूडागाराइ वा
जीवाइ वा अजीवाइ वा पव्वुच्चइ

विजयाइ वा रायहाणीइ वा
जीवाइ वा अजीवाइ वा पव्वुच्चइ

छायाइ वा आतपाइ वा
जीवाइ वा अजीवाइ वा पव्वुच्चइ

दोसिणाइ वा अधगाराइ वा
जीवाइ वा अजीवाइ वा पव्वुच्चइ

ओमाणाइ वा उम्माणाइ वा
जीवाइ वा अजीवाइ वा पव्वुच्चइ

अइयाणागिहाइ वा उज्जाणगिहाणि वा
जीवाइ वा अजीवाइ वा पव्वुच्चइ

अवलिबाइ वा सणिप्पवायाइ वा
जीवाइ वा अजीवाइ वा पवुच्चइ
दो रासी पण्णत्ता त जहा-
जीवरासी चेव अजीवरासी चेव ७८

९६ दुविहे बधे पण्णत्ते त जहा-
पेज्जबधे चेव दोसबधे चेव
जीवाण दोहिं ठाणेहिं पावकम्म बधति त जहा-
रागेण चेव दोसेण चेव
जीवा ण दोहिं ठाणेहिं पावकम्म उदीरेंति त जहा-
अबभोवगमियाए चेव वेयणाए उवक्कमियाए चेव वेयणाए
एव ण दोहिं पावकम्म वेदेंति त जहा-
अब्भोवआमिगए चेव वेयणाए उकवकमियाए चेव वेयाणाए
एव ण दोहिं ठाणेहिं पावकम निज्जरेंति त जहा-
अब्भोवगमियाए चेव वेयणाए उवक्कमियाए चेव वेयणाए ५

९७ दोहिं ठाणेहिं आया सरीर फुसित्ता ण णिज्जाति त जहा
देसेण वि आया सरीर फुसित्ता ण णिज्जाति
सव्वेण वि आया सरीर फुसित्ता ण णिज्जाति
एव फुरित्ता ण० एव फुडित्ता ण० एव सवट्टित्ता ण०
एव निव्वट्टइत्ता ण० ५

९८ दोहिं ठाणेहिं आया केवलिपण्णत्त धम्म लभेज्ज सवणयाए
त जहा- खएण चेव, उवसमेण चेव
एव —जाव— मणपज्जवणाण उप्पाडेज्जा त जहा-

खएण चेव उवसमेण चेव

९९ दुविहे अद्धोवमिए त जहा-
पलिओवमे चेव सागरोवमे चेव

प्र० से कि त पलिओवमे ?

उ० पलिओवमे —
गाहाओ —

ज जोयणविच्छिन्न पल्ल एगाहियप्परूढाण ।
होज्ज निरतरणिचिय भरिय वालग्गकोडीण ।।१।।
वाससए वाससए एकेक्के अवहडमि जो कालो ।
सो कालो बोद्धव्वो उवमा एगस्स पल्लस ।।२।।
एएसि पल्लाण कोडाकोडी हवेज्ज दसगुणिया ।
त सागरोवमस्स उ एगस्स भवे परिमाण ।।३।।

१०० दुविहे कोहे पण्णत्ते त जहा-
आयपइट्ठे चेव परपइट्ठे चेव
एव नेरइयाण — जाव वेमाणियाण
एव — जाव — मिच्छादसणसल्ले २

१०१ दुविहा ससारसमावन्नगा जीवा पण्णत्ता त जहा-
तसा चेव थावरा चेव

दुविहा सव्वजीवा पण्णत्ता त जहा-
सिद्धा चेव असिद्धा चेव

दुविहा सव्वजीवा पण्णत्ता त जहा-

एव एसा गाहा फासेयव्वा — जाव — ससरीरी चेव
असरीरी चेव १३
गाहा—सिद्ध-सइदिय-काए जोए वेए कसाय लेसा य।
णाणुवओगाहारे भासग चरीमे य ससरीरी ॥१॥

१०२ दो मरणाइ समणेण भगवया महावीरेण समणाण निग्गथाण-
नो निच्च वण्णियाइ, नो निच्च कित्तियाइ, नो निच्च बुइयाइ,
नो निच्च पसत्थाइ, नो निच्च अब्भणुण्णाइ भवति त जहा-
वलायमरणे चेव, वसट्टमरणे चेव -

एव नियाणमरणे चेव, तब्भवमरणे चेव
एव गिरिपडणे चेव, तरुपडणे चेव
एव जलप्पवेसे चेव, जलणप्पवेसे चेव
एव विसभक्खणे चेव, सत्थोवडणे चेव

दो मरणाइ —जाव— नो निच्च अब्भणुण्णायइ भवति
कारणेण पुण अप्पडिकुट्ठाइ त जहा-
वेहाणसे चेव, गिद्धपिट्ठे चेव -

दो मरणाइ समणेण भगवया महावीरेण समणाण निग्गथाण-
निच्च वण्णियाइ, निच्च कित्तियाइ, निच्च पसत्थाइ,
निच्च अब्भणुण्णयाइ भवति त जहा-
पाओवगमणे चेव, भत्तपच्चक्खाणे चेव

पाओवगमणे दुविहे पण्णत्ते त जहा-
नीहारिमे चेव, अनीहारिमे चेव णियम अपडिकम्मे

भत्तपच्चक्खाणे दुविहे पण्णत्ते त जहा-
नीहारिमे चेव, अनीहारिमे चेव णियम सपडिकम्मे ६

१०३ प्र० के अय लोगे ?
उ० जीवच्चेव, अजीवच्चेव

प्र० के अणता लोए ?
उ० जीवच्चेव, अजीवच्चेव

प्र० के सासया लोगे ?
उ० जीवच्चेव, अजीवच्चेव ३

१०४ दुविहा बोही पण्णत्ता त जहा-
णाणबोही चेव, दसणबोही चेव
दुविहा बुद्धा पण्णत्ता त जहा-
णाणबुद्धा चेव, दसणबुद्धा चेव
एव मोहे, मूढा ४

१०५ नाणावरणिज्जे कम्मे दुविहे पण्णत्ते त जहा-
देसणाणावरणिज्जे चेव, सव्वणाणावरणिज्जे चेव
दरिसणावणिज्जे कम्मे दुविहे पण्णत्ते त जहा-
देस-दसणावरणिज्जे चेव, सव्व-दसणावरणिज्जे चेव
वेयणिज्जे कम्मे दुविहे पण्णत्ते त जहा-
सायावेयणिज्जे चेव, असायावेयणिज्जे चेव
मोहणिज्जे कम्मे दुविहे पण्णत्ते त जहा-

दसणमोहणिज्जे चेव, चरित्तमोहणिज्जे चेव

आउए कम्मे दुविहे पण्णत्ते त जहा
अद्धाउए चेव, भवाउए चेव

नामे कम्मे दुविहे पण्णत्ते त जहा-
सुभणामे चेव, असुभणामे चेव

गोत्ते कम्मे दुविहे पण्णत्ते त जहा-
उच्चागोए चेव, णीयागोए चेव

अतराइए कम्मे दुविहे कम्मे पण्णत्ते त जहा-
पडुप्पण्णविणासिए चेव, पिहियागामिपह चेव ८

१०६ दुविहा मुच्छा पण्णत्ता त जहा-
पेज्जवत्तिया चेव, दोसवत्तिया चेव

पेज्जवत्तिया मुच्छा दुविहा पण्णत्ता त जहा-
माए चेव, लोभे चेव

दोसवत्तिया मुच्छा दुविहा पण्णत्ता त जहा-
कोहे चेव, माणे चेव ३

१०७ दुविहा आराहणा पण्णत्ता त जहा-
धम्मियाराहणा चेव, केवलि-आराहणा चेव

धम्मियाराहणा दुविहा पण्णत्ता त जहा-
सुयधम्माराहणा चेव, चरित्तधम्माराहणा चेव

केवलि-आराहणा दुविहा पण्णत्ता त जहा-
अतकिरिया चेव, कप्पविमाणोववत्तिया चेव ३

१०८ दो तित्थगरा नीलुप्पलसमा वण्णेण पण्णत्ता त जहा-
मुणिसुव्वए चेव अरिट्ठनेमी चेव

दो तित्थगरा पियगुसमा वण्णेण पण्णत्ता त जहा-
मल्ली चेव, पासे चेव

दो तित्थगरा पउमगोरा वण्णेण पण्णत्ता त जहा-
पउमप्पहे चेव, वासुपुज्जे चेव

दो तित्थगरा चदगोरा वण्णेण पण्णत्ता त जहा-
चदप्पभे चेव, पुप्फदते चेव ४

१०९ सच्चप्पवायपुव्वस्स ण दुवे वत्थू पण्णत्ता

११० पुव्वाभद्दवया-णक्खत्ते दुतारे पण्णत्ते
उत्तराभद्दवया-णक्खत्ते दुतारे पण्णत्ते
एव पुव्व-फग्गुणी उतरा फग्गुणी ४

१११ अतो ण मणुस्स-खेत्तस्स दो समुद्दा पण्णत्ता त जहा
लवणे चेव, कालोदे चेव

११२ दो चक्कवट्टी अपरिचत्त-काम-भोगा कालमासे काल किच्च
अहे सत्तमाए पुढवीए अप्पइट्ठाणे नरए नेरईयत्ताए उववण्णा
त जहा-
सुभूमे चेव, बभदत्ते चेव

११३ असुरिंदवज्जियाण भवणवासीण देवाण देसूणाइ दो पलिओ
वमाई ठिई पण्णत्ता

सोहम्मे कप्पे देवाणं उक्कोसेण दो सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता

ईसाणे कप्पे देवाण उक्कोसेण साइरेगाइ दो सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता

सणकुमारे कप्पे देवाण जहन्नेण दो सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता

माहिदे कप्पे देवाण जहन्नेण साइरेगाइ दो सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ५

११४ दोसु कप्पेसु कप्पत्थियाओ पण्णत्ताओ त जहा-
सोहम्मे चेव ईसाणे चेव

११५ दोसु कप्पेसु देवा तेउलेस्सा पण्णत्ता त जहा-
सोहम्मे चेव ईसाणे चेव

११६ दोसु कप्पेसु देवा कायपरियारगा पण्णत्ता त जहा-
सोहम्मे चेव ईसाणे चेव

दोसु कप्पेसु देवा फासपरियारगा पण्णत्ता त जहा-
सणकुमारे चेव माहिदे चेव

दोसु कप्पेसु देवा रूवपरियारगा पण्णत्ता त जहा-
बंभलोगे चेव लतगे चेव

दोसु कप्पेसु देवा सद्दपरियारगा पण्णत्ता त जहा-
महासुक्के चेव सहस्सारे चेव

दो इदा मणपरियारगा पण्णत्ता त जहा-
पाणए चेव अच्चुए चेव ५

११७ जीवा ण दुट्ठाण णिव्वत्तिए पोग्गले पावकम्मत्ताए चिणिसु वा,

चिणति वा, चिणिस्सति वा त जहा-
तसकायणिवत्तिए चेव, थावरकायणिवत्तिए चेव
एव उवचिणिसु वा, उवचिणति वा, उवचिणिस्सति वा
एव बधिसु वा, बधति वा, बधिस्सति वा
एव उदीरिसु वा, उदीरेति वा, उदीरिस्सति वा
एव वेदेंसु वा, वेदेति वा, वेदिस्सति वा
एव णिज्जरिसु वा णिज्जरिति वा णिज्जरिस्सति वा ६

११८ दुप्पएसिया खधा अणता पण्णत्ता
दुपएसावगाढा पुग्गला अणता पण्णत्ता
दुसमयठिइया पुग्गला अणता पण्णत्ता
दोगुण-कालगा पुग्गला अणता पण्णत्ता
एव —जाव— दुगुण-लुक्खा पुग्गला अणता पण्णत्ता २३

तिट्ठाण

तिट्ठाणस्स पढमो उद्देसो

११९ तओ इदा पण्णत्ता त जहा-
नामिदे, ठवणिदे, दव्विदे

तओ इदा पण्णत्ता त जहा-
नाणिदे, दसणिदे, चरित्तिदे

तओ इदा पण्णत्ता त जहा-
देविदे, असुरिदे, मणुस्सिदे ३

१२० तिविहा विगुव्वणा पण्णत्ता त जहा-
बाहिरए पोग्गलए परियाइत्ता एगा विगुव्वणा,
बाहिरए पोग्गलए अपरियाइत्ता एगा विगुव्वणा,
बाहिरए पोग्गलए परियाइत्ता वि, अपरियाइत्ता वि एगा विगुव्वणा

तिविहा विगुव्वणा पण्णत्ता त जहा-
अब्भतरए पोग्गलए परियाइत्ता एगा विगुव्वणा,
अब्भतरए पोग्गलए अपरियाइत्ता एगा विगुव्वणा,
अब्भतरए पोग्गलए परियाइत्ता वि, अपरियाइत्ता वि एगा विगुव्वणा

तिविहा विगुव्वणा पण्णत्ता त जहा-
वाहिरब्भतरए पोग्गलए परियाइत्ता एगा विगुव्वणा,
वाहिरब्भतरए पोग्गलए अपरियाइत्ता एगा विगुव्वणा,
वाहिरब्भतरए पोग्गलए परियाइत्ता वि, अपरियाइत्ता वि
एगा विगुव्वणा ३

१२१ तिविहा नेरइया पण्णत्ता त जहा-
कतिसचिया, अकतिसचिया, अवतव्वगसचिया
एवमेगेंदियवज्जा —जाव— वेमाणिया

१२२ तिविहा परियारणा पण्णत्ता त जहा-
एगे देवे अन्ने देवे अन्नेसि देवाण देविओ य अभिजुजिय
२ परियारेइ,
अप्पणिज्जिआओ देवीओ अभिजुजिय २ परियारेइ,
अप्पणामेव अप्पणा विउव्विय २ परियारेइ

तिविहा परियारणा पण्णत्ता त जहा-
एगे देवे नो अन्ने देवा नो अन्नेसि देवाण देवीओ अभि
जुजिय २ परियारेइ,
अप्पणिज्जियाओ देवीओ अभिजुजिय २ परियारेइ,
अप्पाणमेव अप्पणा विउव्विय २ परियारेइ

तिविहा परियारणा पण्णत्ता त जहा-
एगे देवे नो अन्ने देवा नो अन्नेसि देवाण देवीओ अभि-
जुजिय २ परियारेइ,
नो अप्पणिज्जिआओ देवीओ अभिजुजिय २ परियारेइ,

अप्पाणमेव अप्पाण विउव्विय २ परियारेइ ३

१२३ तिविहे मेहुणे पण्णत्ते त जहा-
दिव्वे, माणुस्सए, तिरिक्खजोणिए

तओ मेहुण गच्छति त जहा-
देवा, मणुस्सा, तिरिक्खिजोणिया

तओ मेहुण सेवति त जहा-
इत्थी, पुरिसा, नपुसगा ३

१२४ तिविहे जोगे पण्णत्ते त जहा-
मणजोगे, वइजोगे, कायजोगे
एव नेरइयाण विगलिदियवज्जाण —जाव— वेमाणियाण

तिविहे पओगे पण्णत्ते त जहा-
मणपओगे, वइप्पओगे, कायपओगे
जहा जोगो विगलिदियवज्जाण तहा पओगो वि

तिविहे करणे पण्णत्ते त जहा-
मणकरणे, वइकरणे, कायकरणे
एव विगलिदियवज्ज —जाव— वेमाणियाण

तिविहे करणे पण्णत्ते त जहा-
आरभकरणे, सरभकरणे, समारभकरणे
निरतर —जाव— वेमाणियाण ४

१२५ तिहि ठाणेहि जीवा अप्पाउअत्ताए कम्म पगरेंति त जहा-
पाणे अइवाइत्ता भवइ,

मुस वइत्ता भवइ,

तहारूव समण वा, माहण वा अफासुएण अणेसणिज्जेण असण-पाण-खाइम-साइमेण पडिलाभित्ता भवइ

इच्चेएहि तिहि ठाणेहि जीवा अप्पाउअत्ताए कम्म पगरेंति

तिहि ठाणेहि जीवा दीहाउअत्ताए कम्म पगरेंति त जहा

नो पाणे अइवाइत्ता भवइ

नो मुसं वइत्ता भवइ,

तहारूव समण वा, माहण वा फासु-एसणिज्जेण असण पाण-खाइम-साइमेण पडिलाभित्ता भवइ

इच्चेएहि तिहि ठाणेहि जीवा दीहाउअत्ताए कम्म पगरेंति

तिहि ठाणेहि जीवा असुभ-दीहाउअत्ताए कम्म पगरेंति त जहा-

पाणे अइवाइत्ता भवइ,

मुस वइत्ता भवइ,

तहारूव समण वा, माहण वा हीलेत्ता, निंदित्ता, खिसित्ता, गरहित्ता, अवमाणित्ता अन्नयरेण अमणुण्णेण अपीइकारएण असण-पाण खाइम-साइमेण पडिलाभित्ता भवइ

इच्चेएहि तिहि ठाणेहि जीवा असुभ-दीहाउअत्ताए कम्म पगरेंति

तिहि ठाणेहि जीवा सुभ-दीहाउअत्ताए कम्म पगरेंति तं जहा-

नो पाणे अइवाइत्ता भवइ,

नो मुसं वइत्ता भवइ,

तहारूव समण वा, माहण वा वदित्ता, नमसित्ता, सक्का-
रित्ता, सम्माणित्ता, कल्लाण, मगल, देवय, चेइय, पज्जु-
वासेत्ता मणुण्णेण पीइकारएण असण-पाण-खाइम-साइमेण
पडिलाभित्ता भवइ

इच्चेएहि तिहि ठाणेहि जीवा सुभ-दीहाउअत्ताए कम्म
पगरेंति ४

१२६ तओ गुत्तीओ पण्णत्ताओ त जहा-
मणगुत्ती, वइगुत्ती, कायगुत्ती

सजय-मणुस्साण तओ गुत्तीओ पण्णत्ताओ त जहा-
मणगुत्ती, वइगुत्ती, कायगुत्ती

तओ अगुत्तीओ पण्णत्ताओ त जहा-
मण-अगुत्ती, वइ-अगुत्ती, काय-अगुत्ती

एव नेरइयाण —जाव— थणियकुमाराण, पचिंदिय-
तिरिक्ख-जोणियाण, असजय-मणुस्साण, वाणमतराण,
जोइसियाण, वेमाणियाण

तओ दडा पण्णत्ता, तं जहा-
मण-दडे, वय-दडे, काय दडे

नेरइयाण तओ दडा पण्णत्ता त जहा-
मण-दडे, वय दडे, काय-दडे
विगलिंदियवज्ज —जाव — वेमाणियाण ६

१२७ तिविहा गरहा पण्णत्ता त जहा-

मणसा वेगे गरहइ, वयसा वेगे गरहइ, कायसा वेगे गरहइ पावाण कम्माण अकरणयाए

अहवा—गरहा तिविहा पण्णत्ता त जहा-

दीहपेगे अद्ध गरहइ, रहस्सपेगे अद्ध गरहइ, कायपेगे पडिसाहरइ पावाण कम्माण अकरणयाए

तिविहे पच्चक्खाणे पण्णत्ते, त जहा-

मणसा वेगे पच्चक्खाइ, वयसा वेगे पच्चक्खाइ, कायसा वेगे पच्चक्खाइ पावाण कम्माण अकरणयाए ४

अहवा—पच्चक्खाणे तिविहे पण्णत्ते त जहा-

दीहपेगे अद्ध पच्चक्खाइ, रहस्सपेगे अद्ध पच्चक्खाइ, कायपेगे पडिसाहरइ पावाण कम्माण अकरणयाए

१२८ तओ रुक्खा पण्णत्ता त जहा-

पत्तोवए, फलोवए, पुप्फोवए

एवामेव तओ पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-

पत्तो वा रुक्खसमाणा, पुप्फो वा रुक्खसमाणा, फलो वा रुक्खसमाणा

तओ पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-

नाम-पुरिसे, ठवण पुरिसे, दव्व-पुरिसे

तओ पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-

नाण-पुरिसे, दसण पुरिसे, चरित्त-पुरिसे

तओ पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-

वेद-पुरिसे, चिण्ह पुरिसे, अभिलाव-पुरिसे

तओ पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
उत्तम-पुरिसा, मज्झिम-पुरिसा, जहण्ण-पुरिसा

उत्तम-पुरिसा तिविहा पण्णत्ता, त जहा-
धम्म-पुरिसा, भोग पुरिसा, कम्म-पुरिसा
धम्म-पुरिसा अरिहता, भोग-पुरिसा चक्कवट्टी, कम्म-पुरिसा वासुदेवा

मज्झिम-पुरिसा तिविहा पण्णत्ता त जहा-
उग्गा, भोगा, रायन्ना

जहण्ण-पुरिसा तिविहा पण्णत्ता त जहा-
दासा, भयगा, भाइल्लगा ९

१२९ तिविहा मच्छा पण्णत्ता त जहा-
अडया, पोयया, समुच्छिमा

अडया मच्छा तिविहा पण्णत्ता त जहा-
इत्थी, पुरिसा, नपुसगा

पोयया मच्छा तिविहा पण्णत्ता त जहा-
इत्थी, पुरिसा, नपुसगा

तिविहा पक्खी पण्णत्ता त जहा-
अडया, पोयया, समुच्छिमा

अडया पक्खी तिविहा पण्णत्ता त जहा-
इत्थी, पुरिसा, नपुसगा

पोयया पक्खी तिविहा पण्णत्ता त जहा-
इत्थी, पुरिसा, नपुंसगा
एवमेएण अभिलावेण उरपरिसप्पा वि भाणियव्वा
एवमेएणं अभिलावेण भुयपरिसप्पा वि भाणियव्वा ८

१३० एव चेव तिविहा इत्थीओ पण्णत्ताओ त जहा-
तिरिक्ख-जोणित्थीओ देवित्थीओ

तिरिक्खजोणिणीओ इत्थीओ तिविहाओ पण्णत्ताओ त जहा-
जलचरीओ, थलचरीओ, खहचरीओ

मणुस्सित्थीओ तिविहाओ पण्णत्ताओ त जहा-
कम्मभूमिआओ, अकम्मभूमिआओ, अतरदीविआओ

तिविहा पुरिसा पण्णत्ता त जहा-
तिरिक्खजोणी-पुरिसा, मणुस्स-पुरिसा, देव पुरिसा

तिरिक्खजोणी-पुरिसा तिविहा पण्णत्ता त जहा-
जलचरा, थलचरा, खेचरा

मणुस्स पुरिसा तिविहा पण्णत्ता त जहा-
कम्मभूगिमा, अकम्मभूगिमा, अतरवीवगा

तिविहा नपुसगा पण्णत्ता त जहा-
नेरइय-णपुसगा, तिरिक्खजोणिय णपुसगा, मणुस्स णपुसगा

तिरिक्खजोणिय णपुसगा तिविहा पण्णत्ता त जहा-
जलचरा, थलचरा, खहचरा

मणुस्स-णपुसगा तिविहा पण्णत्ता त जहा-
कम्मभूमिगा, अकम्मभूमिगा, अतरदीवगा ९

३१ तिविहा तिरिक्खजोणिया पण्णत्ता त जहा-
इत्थी, पुरिसा, नपुसगा

३२ नेरइयाण तओ लेसाओ पण्णत्ताओ त जहा
कण्हलेसा, नीललेसा, काउलेसा

असुरकुमाराण तओ लेसाओ सकिलिट्ठाओ पण्णत्ताओ त जहा-
कण्हलेसा, नीललेसा, काउलेसा एव —जाव— थणियकुमाराण
एव पुढविकाइयाण, आउ-वणस्सइकाइयाण वि
तेउकाइयाण, वाउकाइयाण, बेइदियाण, तेदियाण, चउरिदियाण वि तओ लेस्सा जहा नेरइयाण

पचिदिय-तिरिक्ख-जोणियाण तओ लेसाओ सकिलिट्ठाओ पण्णत्ताओ त जहा-
कण्हलेसा, नीललेसा, काउलेसा

पचिदिय-तिरिक्ख-जोणियाण तओ लेसाओ असकिलिट्ठाओ पण्णत्ताओ त जहा-
तेउलेसा, पम्हलेसा, सुक्कलेसा
एव मणुस्साण वि
वाणमतराण जहा असुरकुमाराण

वेमाणियाण तओ लेस्साओ पण्णत्ताओ त जहा-
तेउलेसा, पम्हलेसा, सुक्कलेसा

१३३ तिहि ठाणेहि ताराख्वे चलिज्जा त जहा-
विकुव्वमाणे वा, परियारेमाणे वा, ठाणाओ ठाण सकम-
माणे ताराख्वे चलेज्जा

तिहि ठाणेहि देवे विज्जुयार करेज्जा त जहा-
विकुव्वमाणे वा, परियारेमाणे वा, तहारूवस्स समणस्स
वा, माहणस्स वा इड्ढि, जुइ, जस, बल, वीरिय, पुरि
सक्कारपरक्कम उवदसेमाणे देवे विज्जुयार करेज्जा

तिहि ठाणेहि देवे थणिय-सद्द करेज्जा त जहा-
विकुव्वमाणे वा, परियारेमाणे वा
तहारूवस्स समणस्स वा, माहणस्स वा —जाव— देवे
थणिय सद्द करेज्जा ३

१३४ तिहि ठाणेहि लोगधयारे सिया त जहा-
अरिहतेहि वोच्छिज्जमाणेहि
अरिहतपण्णत्ते धम्मे वोच्छिज्जमाणे
पुव्वगए वोच्छिज्जमाणे

तिहि ठाणेहि लोगुज्जोए सिया त जहा-
अरहतेहि जायमाणेहि
अरहतेसु पव्वयमाणेसु
अरहताण णाणुप्पाय महिमासु

तिहिं ठाणेहिं देवधयारे सिया तं जहा-
अरहतेहिं वोच्छिज्जमाणेहिं,
अरहतपण्णत्ते धम्मे वोच्छिज्जमाणे,
पुव्वगए वोच्छिज्जमाणे

तिहिं ठाणेहिं देवुज्जोए सिया त जहा-
अरिहतेहिं जायमाणेहिं,
अरिहतेहिं पव्वयमाणेहिं,
अरहताण णाणुप्पायमहिमासु

तिहिं ठाणेहिं देवसनिवाए सिया त जहा-
अरिहतेहिं जायमाणेहिं,
अरिहतेहिं पव्वयमाणेहिं,
अरिहताण णाणुप्पायमहिमासु
एव देवुक्कलिया देवकहकहे

तिहिं ठाणेहिं देविंदा माणुस लोग हव्वमागच्छति त जहा-
अरिहतेहिं जायमाणेहिं,
अरिहतेहिं पव्वयमाणेहिं,
अरहताण णाणुप्पायमहिमासु
एव सामाणिया तायत्तीसगा लोगपाला देवा अग्गम-
हिसीओ देवीओ परिसोववण्णगा देवा अणियाहिवई देवा
आयरक्खा देवा माणुस लोग हव्वमागच्छति

तिहिं ठाणेहिं देवा अब्भुट्ठिज्जा त जहा-
अरिहतेहिं जायमाणेहिं — जाव — त चेव

एव आसणाइ चलेज्जा सीहणाय करेज्जा चेलुक्खेव करेज्जा

तिहि ठाणेहि देवाण चेइय-रुक्खा चलेज्जा त जहा-
अरिहतेहि जायमाणेहि जाव— त चेव

तिहि ठाणेहि लोगतिया देवा माणुस लोग हव्वमागच्छेज्जा त जहा-
अरिहतेहि जायमाणेहि,
अरिहतेहि पव्वयमाणेहि,
अरिहताण णाणुप्पायमहिमासु २१

१३५ तिण्ह दुप्पडियार समणाउसो ! त जहा-
अम्मापिउणो, भट्टिस्स, धम्मायरियस्स
सपाओ वि य ण केइ पुरिसे अम्मा-पियर सयपाग-सहस्स पागेहि तिल्लेहि अब्भगेत्ता, सुरभिणा गधट्टएण उव्वट्टित्ता, तिहि उदगेहि मज्जावित्ता, सव्वालकारविभूसिय करेत्ता, मणुन्न थालीपागसुद्ध अट्ठारसवजणाउल भोयण भोयावेत्ता, जावज्जीव पिट्ठिवडेंसियाए परिवहेज्जा, तेणावि तस्स अम्मा-पिउस्स दुप्पडियार भवइ

अहे ण से त अम्मापियर केवलिपण्णत्ते धम्मे आघवइत्ता पण्णवित्ता परूवित्ता ठावित्ता भवइ, तेणामेव तस्स अम्मा पिउस्स सुप्पडियार भवइ समणाउसो !
केइ महच्चे दरिद्द समुक्कसेज्जा, तए ण से दरिद्दे समुक्किट्ठे समाणे पच्छा पुर च ण विउलभोगसमिइसमण्णागए यावि

विहरेज्जा, तए ण से महच्चे अण्णया कयाइ दरिद्दीभूए समाणे तस्स दरिद्दस्स अतिए हव्वमागच्छेज्जा, तए ण से दरिद्दे तस्स भट्टिस्स सव्वस्समवि दलयमाणे तेणावि तस्स दुप्पडियार भवइ

अहे ण से त भट्टि केवलिपण्णत्ते धम्मे आघवइत्ता पण्णवइत्ता परूवइत्ता ठावइत्ता भवइ, तेणामेव तस्स भट्टिस्स सुप्पडियार भवइ

केइ तहारूवस्स समणस्स वा, माहणस्स वा अतिए एगमवि आयरिय धम्मिय सुवयण सोच्चा निसम्म कालमासे काल किच्चा अण्णयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववण्णे, तए ण से देवे त धम्मायरिय दुब्भिक्खाओ वा देसाओ सुभिक्ख देस साहरेज्जा, कताराओ वा णिक्कतार करेज्जा, दीहकालिएण वा रोगायकेण अभिभूय समाण विमोएज्जा, तेणावि तस्स धम्मायरियस्स दुप्पडियार भवइ

अहे ण से त धम्मायरिय केवलिपण्णत्ताओ धम्माओ भट्ठ समाण भुज्जो विकेवलिपण्णत्ते धम्मे आघवइत्ता—जाव—ठावइत्ता भवइ, तेणामेव तस्स धम्मायरियस्स सुप्पडियार भवइ

१३६ तिहि ठाणेहि सपण्णे अणगारे अणादीय अणवदग्ग दीहमद्ध चाउरत ससारकतार वीईवएज्जा त जहा-

अणिदाणयाए, दिट्ठिसपण्णयाए, जोगवाहियाए

१३७ तिविहा ओसप्पिणी पण्णत्ता त जहा-

उक्कोसा, मज्झिमा, जहन्ना

एव छप्पि समाओ भाणियव्वाओ —जाव— दुसम दूसमा

तिविहा उस्सप्पिणी पण्णत्ता त जहा-

उक्कोसा, मज्झिमा, जहन्ना

एव छप्पि समाओ भाणियव्वाओ —जाव— सुसमसुसमा

१३८ तिहि ठाणेहि अच्छिण्णे पोग्गले चलेज्जा त जहा-

आहारिज्जमाणे वा पोग्गले चलेज्जा,

विकुव्वमाणे वा पोग्गले चलेज्जा,

ठाणाओ वा ठाण सकामिज्जमाणे पोग्गले चलेज्जा

तिविहा उवही पण्णत्ता त जहा-

कम्मोवही, सरीरोवही, बाहिर-भड-मत्तोवही

एव असुरकुमाराण भाणियव्व

एव एगिंदिय-नेरइयवज्ज — जाव— वेमाणियाण

अहवा तिविहा उवही पण्णत्ता त जहा-

सचित्ता, अचित्ता, मीसया

एव नेरइयाण निरतर — जाव— वेमाणियाण

तिविहे परिग्गहे पण्णत्ते त जहा-

कम्मपरिग्गहे, सरीरपरिग्गहे, बाहिरभडमत्तपरिग्गहे

एव असुरकुमाराण

एव एगिंदिय-नेरइयवज्ज —जाव— वेमाणियाणं

अहवा तिविहे परिग्गहे पण्णत्ते त जहा-

सचित्ते, अचित्ते, मीसए
एव नेरइयाण निरतर —जाव— वेमाणियाण ५

१३६ तिविहे पणिहाणे पण्णत्ते त जहा-
मणपणिहाणे, वयपणिहाणे, कायपणिहाणे
एव पचिदियाण —जाव— वेमाणियाण

तिविहे सुप्पणिहाणे पण्णत्ते त जहा-
मणसुप्पणिहाणे, वयसुप्पणिहाणे, कायसुप्पणिहाणे
सजयमणुस्साण तिविहे सुप्पणिहाणे पण्णत्ते त जहा-
मणसुप्पणिहाणे, वइसुप्पणिहाणे, कायसुप्पणिहाणे

तिविहे दुप्पणिहाणे पण्णत्ते त जहा-
मणदुप्पणिहाणे, वयदुप्पणिहाणे, कायदुप्पणिहाणे
एव पचिदियाण —जाव— वेमाणियाण ४

१४० तिविहा जोणी पण्णत्ता त जहा-
सीया, उसिणा, सीओसिणा
एव एगिदियाण —जाव— विगलिदियाण तेउकाइय-
वज्जाण समुच्छिमपचिदियतिरिक्खजोणियाण समुच्छिम-
मणुस्साण य

तिविहा जोणी पण्णत्ता त जहा-
सचित्ता, अचित्ता, मीसिया
एव एगिदियाण, विगलिदियाण, समुच्छिमपचिदियति-
रिक्खजोणियाण समुच्छिममणुस्साण य

तिविहा जोणी पण्णत्ता त जहा-
सवुडा, वियडा, सवुडवियडा
तिविहा जोणी पण्णत्ता त जहा-
कुम्मुन्नया, सखावत्ता, वसीपत्तिया
कुम्मुन्नया ण जोणी उत्तमपुरिसमाऊण
कुमुण्णयाए ण जोणीए तिविहा उत्तमपुरिसा गब्भ वक्कमति त जहा-
अरहता, चक्कवट्टी, बलदेव-वासुदेवा
सखावत्ता जोणी इत्थीरयणस्स, सखावत्ताए ण जोणीए बहवे जीवा य पोग्गला य वक्कमति विउक्कमति चयति उववज्जति नो चेव ण निप्फज्जति,
वसीपत्ता ण जोणी पिहज्जणस्स, वसीपत्ताए ण जोणीए बहवे पिहज्जणे गब्भ वक्कमति ५

१४१ तिविहा तणवणस्सइकाइया पण्णत्ता त जहा-
सखेज्जजीविया, असखेज्जजीविया, अणतजीविया

१४२ जबुद्दीवे दीवे भारहे वासे तओ तित्था पण्णत्ता त जहा-
मागहे, वरदामे, पभासे
एव एरवए वि
जबुद्दीवे दीवे महाविदेहवासे एगमेगे चक्कवट्टिविजये तओ तित्था पण्णत्ता त जहा-
मागहे, वरदामे, पभासे
एव धायइसडे दीवे पुरच्छिमद्धेवि, पच्चत्थिमद्धे वि

पुक्खरवरदीवड्ढपुरच्छिमद्धेवि, पच्चत्थिमद्धे वि ७

१४३ जबुद्दीवे दीवे भरहेरवएसु वासेसु तीताए उस्सप्पिणीए सुस-
माए समाए तिण्णि सागरोवमकोडाकोडीओ कालो हुत्था

एव ओसप्पिणीए, आगमिस्साए उस्सप्पिणीए भविस्सइ

एव धायइसडे पुरच्छिमद्धे, पच्चत्थिमद्धे वि

एव पुक्खरवरदीवड्ढपुरच्छिमद्धे पच्चत्थिमद्धेवि कालो
भाणियव्वो

जबुद्दीवे दीवे भरहेरवएसु वासेसु तीताए उस्सप्पिणीए सुसम-
सुसमाए समाए मणुया तिण्णि गाउयाइ उड्ढ उच्चत्तेण
तिण्णि पलिओवमाइ परमाउ पालइत्था

एव इमीसे ओसप्पिणीए

आगमिस्साए उस्सप्पिणीए

एव —जाव— पुक्खरदीवड्ढ-पच्चत्थिमद्धे

जबुद्दीवे दीवे देवकुरु-उत्तरकुरासु मणुया तिण्णि गाउआइ
उड्ढ उच्चत्तेण तिण्णि पलिओवमाइ परमाउ पालयति

एव —जाव— पुक्खरवरदीवड्ढ-पच्चत्थिमद्धे

जबुद्दीवे दीवे भरहेरवएसु वासेसु एगमेगासु ओसप्पिणि
उस्सप्पिणीए तओ वसाओ उप्पज्जिसु वा, उप्पज्जति वा, उप्प-
ज्जिसति वा त जहा-

अरहतवसे, चक्कवट्टिवसे, दसारवसे

एव —जाव— पुक्खरवरदीवड्ढपच्चत्थिमद्धे

जबुद्दीवे दीवे भरहेरवएसु वासेसु एगमेगाए ओसप्पिणी-

उस्सप्पिणीए तओ उत्तमपुरिसा उप्पज्जिसु वा, उप्पज्जति वा, उप्पज्जिस्सति वा त जहा-

अरहता, चक्कवट्टी, बलदेव-वासुदेवा

एव —जाव— पुक्खरवरद्धपच्चत्थिमद्धे

तओ अहाउय पालयति त जहा-

अरहता, चक्कवट्टी, बलदेव-वासुदेवा

तओ मज्झिमाउय पालयति त जहा-

अरहता, चक्कवट्टी, बलदेव-वासुदेवा ४७

१४४ बायरतेउकाइयाण उक्कोसेण तिण्णी राइंदियाइं ठिई पण्णत्ता बायरवाउकाइयाण उक्कोसेण तिण्णि वाससहस्साइ ठिई पण्णत्ता २

१४५ प्र० अह भंते ! सालीणं वीहीण गोधूमाण जवाण जव जवाण एएसिण धन्नाण कोट्ठाउत्ताण पल्लाउत्ताण मचाउत्ताण मालाउत्ताण ओलित्ताण लित्ताण लछियाण मुद्दियाणं पिहियाण केवइय काल जोणी सचिट्ठति ?

उ० गोयमा ! जहण्णेण अतोमहुत्त उक्कोसेण तिण्णि सवच्छराइ, तेण पर जोणी पमिलायइ, तेण पर जोणी पविद्धसइ, तेण पर जोणी विद्धसइ, तेण पर बीए अबीए भवइ, तेण पर जोणीवोच्छेदो पण्णत्तो

१४६ दोच्चाए ण सक्करप्पभाए पुढवीए णेरइयाण उक्कोसेण तिण्णि सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता

तच्चाए ण वालुयप्पभाए पुढवीए जहन्नेण णेरइयाण तिण्णि सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता

१४७ पचमाए ण धूमप्पभाए पुढवीए तिण्णि निरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता

तिसु ण पुढवीसु णेरइयाण उसिणवेयणा पण्णत्ता त जहा-
पढमाए, दोच्चाए, तच्चाए

तिसुणं पुढवीसु णेरइया उसिणवेयण पच्चणुभवमाणा विहरति-
पढमाए, दोच्चाए, तच्चाए ३

१४८ तओ लोगे समा सपक्खि सपडिदिसि पण्णत्ते त जहा-
अप्पइट्ठाणे नरए, जबुद्दीवे दीवे, सव्वट्ठसिद्धे महाविमाणे

तओ लोगे समा सपक्खि सपडिदिसि पण्णत्ते त जहा-
सीमतए ण नरए, समयक्खेत्ते, ईसीपब्भारा पुढवी २

१४९ तओ समुद्दा पगईए उदगरसेण पण्णत्ता त जहा-
कालोदे, पुक्खरोदे, सयभुरमणे

तओ समुद्दा बहुमच्छकच्छभाइण्णा पण्णत्ता त जहा-
लवणे, कालोदे, सयभुरमणे २

१५० तओ लोगे निस्सीला निव्वया निग्गुण निम्मेरा निप्पच्चक्खाणपोसहोववासा कालमासे काल किच्चा अहे सत्तमाए पुढवीए अप्पइट्ठाणे नरए नेरइयत्ताए उववज्जति त जहा-
रायाणो, मडलीया, जे य महारभा कोडुबी

तओ लोए सुसीला सुव्वया सगुणा समेरा सपच्चक्खाण-पोसहोववासा कालमासे कालं किच्चा सव्वट्ठसिद्धे महाविमाणे देवत्ताए उववत्तारो भवंति तं जहा-

रायाणो परिच्चत्तकामभोगा, सेणावइ, पसत्थारो २

१५१ बंभलोग-लंतएसु णं कप्पेसु विमाणा तिवण्णा पण्णत्ता तं जहा-

किण्हा, नीला, लोहिया

आणय-पाणयारणच्चुएसु णं कप्पेसु देवाणं भवधारणिज्ज-सरीरा उक्कोसेणं तिण्णि रयणीओ उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता २

१५२ तओ पण्णत्तीओ कालेणं अहिज्जंति तं जहा-

चंदपण्णत्ती, सूरपण्णत्ती, दीवसागरपण्णत्ती

तिट्ठाणस्स बीओ उद्देसो

१५३ तिविहे लोगे पण्णत्ते तं जहा-

नामलोगे, ठवणलोगे, दव्वलोगे

तिविहे भावलोगे पण्णत्ते तं जहा-

नाणलोगे, दंसणलोगे, चरित्तलोगे

तिविहे लोगे पण्णत्ते तं जहा-

उड्ढलोगे, अहोलोगे, तिरियलोगे ३

१५४ चमरस्स णं असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो तओ परिसाओ पण्णत्ताओ तं जहा-

समिया, चंडा, जाया

अब्भतरिया समिया, मज्झिमया चडा, बाहिरया जाया

चमरस्स ण असुरिंदस्स असुरकुमाररन्नो सामाणियाण देवाण तओ परिसाओ पण्णत्ताओ त जहा-

जहेव चमरस्स

एव तायत्तीसगाणवि

चमरस्स लोगपालाण तओ परिसाओ पण्णत्ताओ त जहा-

तुबा, तुडिया, पव्वा

एव अग्गमहिसीण वि

बलिस्सवि एव चेव —जाव— अग्गमहिसीण

धरणस्स य सामाणिय-तायत्तीसगाण-

समिया, चडा, जाया

लोगपालाण अग्गमहिसीण-

ईसा, तुडिया दढरहा

जहा धरणस्स तहा सेसाण भवणवासीण

कालस्स ण पिसाइदस्स पिसायरण्णो तओ परिसाओ पण्णत्ताओ त जहा

ईसा, तुडिया, दढरहा

एव सामाणिय-अग्गमहिसीण

एव —जाव— गीयरइ-गीयजसाण

चदस्स ण जोइसिदस्स जोइसरण्णो तओ परिसाओ पण्णत्ताओ त जहा-

तओ थेरभूमीओ पण्णत्ताओ त जहा-
जाइथेरे, सुयथेरे, परियायथेरे
सट्ठिवासजाए समणे निग्गथे जाईथेरे,
ठाणग समवायधरे ण समणे निग्गथे सुयथेरे,
वीसवासपरियाए ण समणे निग्गथे परियायथेरे २

१६० तओ पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
सुमणे, दुम्मणे, नो सुमणे नो दुम्मणे

तओ पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
गता नामेगे सुमणे भवइ,
गता नामेगे दुम्मणे भवइ,
गता नामेगे नो सुमणे नो दुम्मणे भवइ

तओ पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
जामीतेगे सुमणे भवइ,
जामीतेगे दुम्मणे भवइ,
जामीतेगे नो सुमणे नो दुम्मणे भवइ
एव जाइस्सामीतेगे सुमणे भवइ
जाइस्सामीतेगे दुम्मणे भवइ
जाइस्सामीतेगे नो सुमणे नो दुम्मणे भवइ

तओ पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
अगता नामेगे सुमणे भवइ
अगता नामेगे दुम्मणे भवइ
अगता नामेगे नो सुमणे नो दुम्मणे भवइ

तओ पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-

न जामि एगे सुमणे भवइ

न जामि एगे दुम्मणे भवइ

न जामि एगे नो सुमणे नो दुम्मणे भवइ

तओ पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-

न जाइस्सामि एगे सुमणे भवइ

न जाइस्सामि एगे दुम्मणे भवइ

न जाइस्सामि एगे नो सुमणे नो दुम्मणे भवइ

एव आगता नामेगे सुमणे भवइ

आगता नामेगे दुम्मणे भवइ

आगता नामेगे नो सुमणे नो दुम्मणे भवइ

एतिमेगे सुमणे भवइ

एतिमेगे दुम्मणे भवइ

एतिमेगे नो सुमणे नो दुम्मणे भवइ

एस्सामीति एगे सुमणे भवइ

एस्सामीति एगे दुम्मणे भवइ

एस्सामीति एगे नो सुमणे नो दुम्मणे भवइ

गाहाओ-

गता य अगता य, आगता खलु तहा अणागता ।
चिट्ठित्तमचिट्ठित्ता, णिसिइत्ता चेव नो चेव ।।१।।
हता य अहता य, छिंदित्ता खलु तहा अछिंदित्ता ।
वइत्ता अवइत्ता, भासित्ता चेव णो चेव ।।२।।

समुग्घाए, कालसयोगे, दसणाभिगमे, नाणाभिगमे, जीवा भिगमे

तिर्हि दिसाहि जीवाण अजीवाभिगमे पण्णत्ते त जहा-

उड्ढाए, अहाए, तिरियाए

एव पचिदियतिरिक्खजोणियाण

एव मणुस्साण वि १७

१६४ तिविहा तसा पण्णत्ता त जहा-

तेउकाइया, वाउकाइया, उराला तसा पाणा

तिविहा थावरा पण्णत्ता त जहा-

पुढविकाइया, आउकाइया, वणस्सइकाइया २

१६५ तओ अच्छेज्जा पण्णत्ता त जहा-

समए, पएसे, परमाणू

एवमभेज्जा, अडज्झा, अगिज्झा, अणड्ढा, अमज्झा, अपएसा,

तओ अविभाइमा पण्णत्ता त जहा-

समए, पएसे, परमाणू ८

१६६ अज्जोत्ति समणे भगव महावीरे गोयमाइ समणे निग्गथे आमतेत्ता एव वयासी-

प्र० किं भया पाणा ? समणाउसो !

गोयमाइ समणा निग्गथा समण भगव महावीर उव सकमति उवसकमित्ता वदति नमसति वदित्ता नमसित्ता एव वयासी-

नो खलु वय देवाणुप्पिया ! एयमट्ठ जाणामो वा, पासामो वा त जइ ण देवाणुप्पिया एयमट्ठ नो गिलायति परिकहित्तए तमिच्छामो ण देवाणुप्पियाण अतिए एयमट्ठ जाणित्तए

उ० अज्जोत्ति समणे भगव महावीरे गोयमाइ समणे निग्गथे आमतेत्ता एव वयासी-दुक्खभया पाणा समणाउसो !

प्र० से ण भते ! दुक्खे केण कडे ?

उ० जीवेण कडे पमादेण

प्र० से ण भते ! दुक्खे कह वेइज्जइ ?

उ० अप्पमाएण

१६७ अण्णउत्थिया ण भते ! एव आइक्खति, एव भासति, एव पण्णवेंति, एव परूवेंति-

प्र० कहण्ण समणाण निग्गथाण किरिया कज्जइ ?
तत्थ जा सा कडा कज्जइ नो त पुच्छति,
तत्थ जा सा कडा नो कज्जइ नो त पुच्छति,
तत्थ जा सा अकडा नो कज्जइ नो त पुच्छति,
तत्थ जा सा अकडा कज्जइ त पुच्छति से एव वत्तव्व सिया ?
अकिच्च दुक्ख, अफुस दुक्ख, अकज्जमाणकड दुक्ख अकट्टु अकट्टु पाणा भूया जीवा सत्ता वेयण वेयतित्ति

वत्तव्वं, जे ते एवमाहंसु मिच्छा ते एवमाहंसु

उ० अहं पुण एवमाइक्खामि, एवं भासामि, एवं पण्णवेमि, एवं परूवेमि-
किच्चं दुक्खं, फुस्सं दुक्खं, कज्जमाणकडं दुक्खं कट्टु-कट्टु पाणा भूया जीवा सत्ता वेयणं वेयंतित्ति वत्तव्वं सिया

तिट्ठाणस्स तइओ उद्देसो

१६८ तिहिं ठाणेहिं मायी मायं कट्टु नो आलोएज्जा, नो पडिक्कमेज्जा, नो निंदिज्जा, नो गरहिज्जा, नो विउट्टेज्जा, नो विसोहेज्जा, नो अकरणाए अब्भुट्ठेज्जा, नो अहारिहं पायच्छित्तं तवोकम्मं पडिवज्जेज्जा तं जहा-
अकरिंसु वाऽहं, करोमि वाऽहं, करिस्सामि वाऽहं

तिहिं ठाणेहिं मायी मायं कट्टु नो आलोएज्जा, नो पडिक्कमिज्जा, —जाव— नो पडिवज्जेज्जा
अकित्ती वा मे सिया,
अवण्णे वा मे सिया,
अविणए वा मे सिया

तिहिं ठाणेहिं मायी मायं कट्टु नो आलोएज्जा —जाव— नो पडिवज्जेज्जा तं जहा-
कित्ती वा मे परिहाइस्सइ,

जसो वा मे परिहाइस्सइ,

पूयासक्कारे वा मे परिहाइस्सइ

तिहिं ठाणेहिं मायी मायं कट्टु आलोएज्जा पडिक्कमेज्जा —जाव— पडिवज्जेज्जा तं जहा-

मायिस्स णं अस्सि लोगे गरहिए भवइ,

उववाए गरहिए भवइ,

आयाइ गरहिया भवइ

तिहिं ठाणेहिं मायी मायं कट्टु आलोएज्जा —जाव— पडिवजेज्जा तं जहा-

अमाइस्स णं अस्सि लोगे पसत्थे भवइ,

उववाए पसत्थे भवइ,

आयाइ पसत्था भवइ

तिहिं ठाणेहिं मायी मायं कट्टु आलोएज्जा —जाव— पडिवज्जेज्जा तं जहा-

नाणट्ठयाए, दंसणट्ठयाए, चरित्तट्ठयाए ६

१६९ तओ पुरिसजाया पण्णत्ता तं जहा-

सुत्तधरे, अत्थधरे, तदुभयधरे

१७० कप्पइ निग्गंथाण वा, निग्गंथीण वा तओ वत्थाइं धारित्तए वा, परिहरित्तए वा तं जहा-

जंगिए, भंगिए, खोमिए

कप्पइ निग्गंथाण वा, निग्गंथीण वा तओ पायाइं धारित्तए वा परिहरित्तए वा तं जहा-

वत्तव्व, जे ते एवमाहसु मिच्छा ते एवमाहसु

उ० अह पुण एवमाइक्खामि, एव भासामि, एव पण्णवेमि, एव परूवेमि-

किच्च दुक्ख, फुस्स दुक्ख, कज्जमाणकड दुक्ख कट्टू-कट्टु पाणा भूया जीवा सत्ता वेयण वेयतित्ति वत्तव्व सिया

तिट्ठाणस्स तइओ उद्देसो

१६८ तिहि ठाणेहि मायी माय कट्टु नो आलोएज्जा, नो पडिक्कमेज्जा, नो निदिज्जा, नो गरहिज्जा, नो विउट्टेज्जा, नो विसोहेज्जा, नो अकरणाए अब्भुट्ठेज्जा, नो अहारिह पायच्छित्त तवोकम्म पडिवज्जेज्जा त जहा-

अकरिसु वाऽह, करेमि वाऽह, करिस्सामि वाऽह

तिहि ठाणेहि मायी माय कट्टु नो आलोएज्जा, नो पडिक्कमिज्जा, —जाव— नो पडिवज्जेज्जा

अकित्ती वा मे सिया,
अवण्णे वा मे सिया,
अविणए वा मे सिया

तिहि ठाणेहि मायी माय कट्टु नो आलोएज्जा —जाव— नो पडिवज्जेज्जा त जहा-

कित्ती वा मे परिहाइस्सइ,

जसो वा मे परिहाइस्सइ,

पूयासक्कारे वा मे परिहाइस्सइ

तिहिं ठाणेहिं मायी माय कट्टु आलोएज्जा पडिक्कमेज्जा —जाव— पडिवज्जेज्जा त जहा-

मायिस्स ण अस्सि लोगे गरहिए भवइ,

उववाए गरहिए भवइ,

आयाइ गरहिया भवइ

तिहिं ठाणेहिं मायी माय कट्टु आलोएज्जा —जाव— पडिवजेज्जा त जहा-

अमाइस्स ण अस्सि लोगे पसत्थे भवइ,

उववाए पसत्थे भवइ,

आयाइ पसत्था भवइ

तिहिं ठाणेहिं मायी माय कट्टु आलोएज्जा —जाव— पडिवज्जेज्जा त जहा-

नाणट्ठयाए, दसणट्ठयाए, चरित्तट्ठयाए ६

१६९ तओ पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-

सुत्तधरे, अत्थधरे, तदुभयधरे

१७० कप्पइ निग्गथाण वा, निग्गथीण वा तओ वत्थाइ धारित्तए वा, परिहरित्तए वा त जहा-

जगिए, भगिए, खोमिए

कप्पइ निग्गथाण वा, निग्गथीण वा तओ पायाइ धारित्तए वा परिहरित्तए वा त जहा-

लाउयपाए वा, दारुपाए वा, मट्टियापाए वा २

१७१ तिहिं ठाणेहिं वत्थ धरेज्जा त जहा-

हिरिपत्तिय, दुगुछापत्तिय, परीसहवत्तिय

१७२ तओ आयरक्खा पण्णत्ता त जहा-

धम्मियाए पडिचोयणाए पडिचोएत्ता भवइ,

तुसिणीओ वा सिया,

उट्ठित्ता वा आयाए एगतमतमवक्कमेज्जा

निग्गथस्स ण गिलायमाणस्स कप्पति तओ वियडदत्तीओ पडिग्गाहित्तए त जहा-

उक्कोसा, मज्झिमा, जहन्ना २

१७३ तिहिं ठाणेहिं समणे निग्गथे साहम्मिय सभोगिय करेमाणे नाइक्कमइ त जहा-

सय वा दट्ठु,

सड्ढस्स वा निसम्म,

तच्च मोस आउट्टइ चउत्थ नो आउट्टइ

१७४ तिविहा अणुन्ना पण्णत्ता त जहा-

आयरियत्ताए, उवज्झायत्ताए, गणित्ताए

तिविहा समणुन्ना पण्णत्ता त जहा-

आयरियत्ताए, उवज्झायत्ताए, गणित्ताए

एव उवसपया, एव विजहणा ४

१७५ तिविहे वयणे पण्णत्ते त जहा-

तस्वयणे, तदन्नवयणे, नो अवयणे

तिविहे अवयणे पण्णत्ते त जहा-
नो तव्वयणे, नो तदन्नवयणे, अवयणे

तिविहे मणे पण्णत्ते त जहा-
तम्मणे, तयन्नमणे, नो अमणे

तिविहे अमणे पण्णत्ते त जहा-
नो तम्मणे, नो तयन्नमणे, अमणे ४

१७६ तिहिं ठाणेहिं अप्पवुट्ठिकाए सिया त जहा-
तस्सि च ण देससि वा पदेससि वा नो बहवे उदगजोणिया जीवा य, पोग्गला य उदगत्ताए वक्कमति विउक्कमति चयति उववज्जति,

देवा नागा जक्खा भूया नो सम्ममाराहिया भवति तत्थ समुट्ठिय उदगपोग्गल परिणय वासिउकाम अन्न देस साहरति,

अब्भवद्दलग च ण समुट्ठित परिणय वासिउकाम वाउकाए विधुणइ

इच्चेएहिं तिहिं ठाणेहिं अप्पवुट्ठिकाए सिया

तिहिं ठाणेहिं महावुट्ठीकाए सिया त जहा-
तस्सि च ण देससि वा पदेससि वा बहवे उदगजोणिया जीवा य, पोग्गला य उदगत्ताए वक्कमति विउक्कमति चयति उववज्जति,

देवा जक्खा नागा भूया सम्ममाराहिया भवति अन्नत्थ समुट्ठिय उदगपोग्गल परिणय वासिउकाम तं देस साहरति,

अब्मवद्दलग च ण समुट्ठिय परिणय वासिउकाम नो वाउआओ विधुणइ

इच्चेएहिं तिहिं ठाणेहिं महावुट्ठिकाए सिया २

१७७ तिहिं ठाणेहिं अहुणोववन्ने देवे देवलोगेसु इच्छेज्ज माणुस्स लोग हव्वमागच्छित्तए, नो चेव ण सचाएइ हव्वमागच्छित्तए तं जहा-

अहुणोववन्ने देवे देवलोगेसु दिव्वेसु कामभोगेसु मुच्छिए गिद्धे गढिए अज्झोववन्ने से ण माणुस्सए कामभोगे नो आढाइ, नो परियाणाइ, नो अट्ठ बधइ, नो नियाण पगरेइ, नो ठिइपकप्प पकरेइ,

अहुणोववन्ने देवे देवलोगेसु दिव्वेसु कामभोगेसु, मुच्छिए, गिद्धे गढिए, अज्झोववन्ने तस्स ण माणुस्सए पेम्मे वोच्छिन्ने दिव्वे सकते भवइ,

अहुणोववन्ने देवे देवलोगेसु दिव्वेसु कामभोगेसु मुच्छिए —जाव— अज्झोववन्ने तस्स ण एव भवइ– 'इयाणि न गच्छ मुहुत्त गच्छ'' तेण कालेण अप्पाउया मणुस्सा काल-धम्मुणा सजुत्ता भवति,

इच्चेएहिं तिहिं ठाणेहिं अहुणोववन्ने देवे देवलोगेसु इच्छेज्जा

माणुस लोग हव्वमागच्छित्तए णो चेव ण सचाएइ हव्व-
मागच्छित्तए

१७७ तिहिं ठाणेहिं देवे अहुणोववन्ने देवलोगेसु इच्छेज्जा माणूस
लोग हव्वमागच्छित्तए, सचाएइ हव्वमागच्छित्तए-

अहुणोववन्ने देवे देवलोगेसु दिव्वेसु कामभोगेसु अमुच्छिए
अगिद्धे अगढिए अणज्झोववन्ने तस्स ण एव भवइ–
"अत्थि ण मम माणुस्सए भवे आयरिएइ वा, उवज्झाएइ
वा, पवत्ती इ वा, थेरेइ वा, गणीइ वा, गणधरेइ वा,
गणावच्छेइए वा, जेसिं पभावेण मए इमा एयारूवा दिव्वा
देविड्ढी, दिव्वा देवजुइ, दिव्वे देवाणुभावे लद्धे पत्ते
अभिसमन्नागए" त गच्छामि ण ते भगवते वदामि,
णमसामि, सक्कारेमि, सम्माणेमि, कल्लाण, मगल, देवय,
चेइय, पज्जुवासामि,

अहुणोववन्ने देवे देवलोगेसु दिव्वेसु कामभोगेसु अमुच्छिए
—जाव— अणज्झोववन्ने तस्स ण एव भवइ-एस ण माणु-
स्सए भवे नाणीइ वा, तवस्सीइ वा, अइदुक्करकारए त
गच्छामि ण भगवत वदामि, णमसामि —जाव— पज्जु-
वासामि,

अहुणोववन्ने देवे देवलोएसु—जाव—अणज्झोववन्ने, तस्स
ण एव भवइ–"अत्थि ण मम माणुस्सए भवे मायाइ वा,
—जाव—सुण्हाइ वा, त गच्छामि ण तेसिमतिय पाउब्भ-
वामि पासतु ता मे इम एयारूव दिव्व देविड्ढि, दिव्व

देवजुइ, दिव्व देवाणुभाव लद्ध पत्त अभिसमण्णागय,

इच्चेएहि तिहि ठाणेहि अहुणोववन्ने देवे देवलोगेसु इच्छेज्ज माणूस लोग हव्वमागच्छित्तए, सचाएइ हव्वमागच्छित्तए

१७८ तओ ठाणाइ देवे पीहेज्जा त जहा-

माणुस भव, आरिए खेत्ते जम्म, सुकुलपच्चायाइ

तिहि ठाणेहि देवे परितप्पेज्जा त जहा-

अहो ण मए, सते बले, सते वीरिए, सते पुरिसक्कारपरक्कमे, खेमसि सुभिक्खसि आयरिय-उवज्झाएहि विज्जमाणेहि कल्लसरीरेण नो बहुए सुए अहीए,

अहो ण मए इहलोयपडिबद्धेण परलोयपरम्मुहेण विसयतिसिएण नो दीहे सामण्णपरियाए अणुपालिए,

अहो ण मए इड्ढिरससायगरुएण भोगासिसगिद्धेण नो विसुद्धे चरित्ते फासिए

इच्चेएहि तिहि ठाणेहि देवे परितप्पेज्जा २

१७९ तिहि ठाणेहि देवे चइस्सामित्ति जाणइ त जहा-

विमाणाभरणाइ णिप्पभाइ पासित्ता,

कप्परुक्खग मिलायमाण पासित्ता,

अप्पणो तेयलेस्स परिहायमाण जाणित्ता

इच्चेएहि तिहि ठाणेहि देवे चइस्सामित्ति जाणइ

तिहि ठाणेहि देवे उव्वेगमागच्छेज्जा त जहा-

अहो ण मए इमाओ एयारूवाओ दिव्वाओ देविड्ढीओ,

दिव्वाओ देवजुइओ, दिव्वाओ देवाणुभावाओ पत्ताओ लद्धाओ अभिसमण्णागयाओ चइयव्व भविस्सइ,

अहो ण मए माउओय पिउसुक्क त तदुभयससट्ठ तप्पढम- याए आहारो आहारेयव्वो भविस्सइ

अहो ण मए कलमलजबालाए असुइए उव्वेयणियाए भीमाए गब्भवसहीए वसियव्व भविस्सइ

इच्चेएहि तिहि ठाणेहि देवे उव्वेगमागच्छेज्जा २

१८० तिसठिया विमाणा पण्णत्ता त जहा-

वट्टा, तसा, चउरसा

तत्थ ण जे ते वट्टा विमाणा ते ण पुक्खरकण्णियासठाण- सठिया सव्वओ समता पागारपरिक्खित्ता एगदुवारा पण्णत्ता-

तत्थ ण जे ते तसा विमाणा ते ण सिघाडगसठाणसठिया दुहाओ पागारपरिक्खित्ता एगओ वेइया परिक्खित्ता तिदुवारा पण्णत्ता-

तत्थ ण जे ते चउरसविमाणा ते ण अक्खाडगसठाण- सठिया, सव्वओ समता वेइया परिक्खत्ता चउदुवारा पण्णत्ता-

तिपइट्ठिया विमाणा त जहा-

घणोदधिपइट्ठिया, घणवायपइट्ठिया ओवासतरपइट्ठिया

तिविहा विमाणा पण्णत्ता त जहा-

अवट्ठिया, चेउच्चिया, परिजाणिया ३

१८१ तिविहा नेरइया पण्णत्ता त जहा-

सम्माविट्ठी, मिच्छाविट्ठी, सम्मामिच्छाविट्ठी

एव विर्गालदियवज्ज —जाव – वेमाणियाण

तओ दुग्गइओ पण्णत्ताओ त जहा-

नेरइयदुग्गई, तिरिक्खजोणीयदुग्गई, मणुयदुग्गई

तओ सुगइओ पण्णत्ताओ त जहा-

सिद्धिसोगई, देवसोगई, मणुस्ससोगई

तओ दुग्गया पण्णत्ता तं जहा-

नेरइयदुग्गया, तिरिक्खजोणियदुग्गया, मणुस्सदुग्गया

तओ सुगया पण्णत्ता त जहा-

सिद्धसुग्गया, मणुस्ससुग्गया, देवसुग्गया ५

१८२ चउत्थभत्तियस्स ण भिक्खुस्स कप्पति तओ पाणगाइ पडि गाहित्तए त जहा-

उस्सेइमे, ससेइमे, चाउलधोवणे

छट्ठभत्तियस्स ण भिक्खुस्स कप्पति तओ पाणगाइ पडिगा हित्तए त जहा-

तिलोदए, तुसोदए, जवोदए

अट्ठमभत्तियस्स ण भिक्खुस्स कप्पति तओ पाणगाइं पडिगा- हित्तए त जहा-

आयामए, सोवीरए, सुद्धवियडे

तिविहे उवहडे पण्णत्ते त जहा-

फलिओवहडे, सुद्धोवहडे, ससट्ठोवहडे

तिविहे उग्गहिए पण्णत्ते त जहा-

ज च ओगिण्हइ,

ज च साहरइ,

ज च आसगसि पक्खिवइ

तिविहा ओमोयरिया पण्णत्ता त जहा-

उवगरणोमोयरिया, भत्तपाणोमोयरिया, भावोमोयरिया

उवगरणोमोयरिया तिविहा पण्णत्ता त जहा-

एगे वत्थे, एगे पाए, चियत्तोवहिसाहिज्जणया

तओ ठाणा निग्गथाण वा, निग्गथीण वा अहियाए असुहाए अक्खमाए अणिस्सेएसाए अणाणुगामियत्ताए भवति त जहा-

कूअणया, कक्करणया, अवज्झाणया

तओ ठाणा निग्गथाण वा, निग्गथीण वा हियाए सुहाए खमाए णिस्सेयसाए आणुगामिअत्ताए भवति त जहा-

अकूअणया, अकक्करणया, अणवज्झाणया

तओ सल्ला पण्णत्ता त जहा-

मायासल्ले, नियाणसल्ले, मिच्छादसणसल्ले

तिहि ठाणेहि समणे निग्गथे सखित्तविउलतेउलेस्से भवइ त जहा-

आयावणयाए, खतिखमाए, अपाणगेण तवोकम्मेण ११

अणिड्डिया, वेउव्वियया, परिजाणिया ३

१८१ तिविहा नेरइया पण्णत्ता त जहा-

सम्माविट्ठी, मिच्छाविट्ठी, सम्मामिच्छाविट्ठी

एव विगलिदियवज्ज — जाव — वेमाणियाण

तओ दुग्गइओ पण्णत्ताओ त जहा-

नेरइयदुग्गई, तिरिक्खजोणीयदुग्गई, मणुयदुग्गई

तओ सुगइओ पण्णत्ताओ त जहा-

सिद्धिसोगई, देवसोगई, मणुस्ससोगई

तओ दुग्गया पण्णत्ता त जहा-

नेरइयदुग्गया, तिरिक्खजोणियदुग्गया, मणुस्सदुग्गया

तओ सुगया पण्णत्ता त जहा-

सिद्धसुग्गया, मणुस्ससुग्गया, देवसुग्गया ५

१८२ चउत्थभत्तियस्स ण भिक्खुस्स कप्पति तओ पाणगाइ पडि-
गाहित्तए त जहा-

उस्सेइमे, ससेइमे, चाउलधोवणे

छट्ठभत्तियस्स ण भिक्खुस्स कप्पति तओ पाणगाइ पडिगा
हित्तए त जहा-

तिलोदए, तुसोदए, जवोदए

अट्ठमभत्तियस्स णं भिक्खुस्स कप्पति तओ पाणगाइ पडिगा-
हित्तए त जहा-

आयामए, सोवीरए, सुद्धवियडे

तिविहे उवहडे पण्णत्ते त जहा-

फलिओवहडे, सुद्धोवहडे, ससट्ठोवहडे

तिविहे उग्गहिए पण्णत्ते त जहा-

ज च ओगिण्हइ,

ज च साहरइ,

ज च आसगसि पक्खिवइ

तिविहा ओमोयरिया पण्णत्ता त जहा-

उवगरणोमोयरिया, भत्तपाणोमोयरिया, भावोमोयरिया

उवगरणोमोयरिया तिविहा पण्णत्ता त जहा-

एगे वत्थे, एगे पाए, चियत्तोवहिसाहिज्जणया

तओ ठाणा निग्गथाण वा, निग्गथीण वा अहियाए असुहाए अखमाए अणिस्सेसाए अणाणुगामियत्ताए भवति त जहा-

कूअणया, कक्करणया, अवज्झाणया

तओ ठाणा निग्गथाण वा, निग्गथीण वा हियाए सुहाए खमाए णिस्सेयसाए आणुगामिअत्ताए भवति त जहा-

अकूअणया, अकक्करणया, अणवज्झाणया

तओ सल्ला पण्णत्ता त जहा-

मायासल्ले नियाणसल्ले, मिच्छादसणसल्ले

तिहिं ठाणेहिं समणे निग्गथे सखित्तविउलतेउलेस्से भवइ त जहा-

आयावणयाए, खतिखमाए, अपाणगेण तवोकम्मेण ११

उम्माय वा लभिज्जा,

दीहकालिय वा रोगायक पाउणेज्जा,

केवलिपन्नत्ताओ वा धम्माओ भसेज्जा

एगराइय भिक्खुपडिम सम्म अणुपालेमाणस्स अ
तओ ठाणा हियाए सुहाए खमाए णिस्सेसाए आणु
त्ताए भवति त जहा-

ओहिणाणे वा से समुप्पज्जेज्जा,

मणपज्जवनाणे वा से समुप्पज्जेज्जा,

केवलणाणे वा से समुप्पज्जेज्जा ३

१८३ जबुद्दीवे दीवे तओ कम्मभूमीओ पण्णत्ताओ

भरहे, एरवए, महाविदेहे

एव धायइसडे दीवे पुरच्छिमद्धे —जाव -

पुक्खरवरदीवड्ढे पच्चत्थिमद्धे ५

१८४ तिविहे दसणे पण्णत्ते, त जहा-

सम्मद्दसणे, मिच्छदसणे, सम्मामिच्छदसणे

तिविहा रुई पण्णत्ता त जहा-

सम्मरुई, मिच्छरुई, सम्मामिच्छरुई

तिविहे पओगे पण्णत्ते त जहा-

सम्मपओगे, मिच्छपओगे, सम्मामिच्छपओगे ३

१८५ तिविहे ववसाए पण्णत्ते त जहा-

धम्मिए ववसाए,

अधम्मिए ववसाए,

धम्मियाधम्मिए ववसाए

अहवा तिविहे ववसाए पण्णत्ते त जहा-

पच्चक्खे, पच्चइए, आणुगामिए

अहवा तिविहे ववसाए पण्णत्ते त जहा-

इहलोइए, परलोइए, इहलोइएपरलोइए

इहलोइए ववसाए तिविहे पण्णत्ते त जहा-

लोइए, वेइए, सामइए

लोइए ववसाए तिविहे पण्णत्ते त जहा-

अत्थे, धम्मे, कामे

वेइए ववसाए तिविहे पण्णत्ते त जहा-

रिउव्वेदे, जउव्वेदे, सामवेदे

सामइए ववसाए तिविहे पण्णत्ते त जहा-

नाणे, दसणे, चरित्ते

तिविहा अत्थजोणी पण्णत्ता त जहा-

सामे, दडे, भेए ८

१८६ तिविहा पोग्गला पण्णत्ता त जहा-

उम्माय वा लभिज्जा,

दीहकालिय वा रोगायक पाउणेज्जा,

केवलिपन्नत्ताओ वा धम्माओ भसेज्जा

एगराइय भिक्खुपडिम सम्म अणुपालेमाणस्स अणगारस्स तओ ठाणा हियाए सुहाए खमाए णिस्सेसाए आणुगामिय त्ताए भवति त जहा-

ओहिणाणे वा से समुप्पज्जेज्जा,

मणपज्जवनाणे वा से समुप्पज्जेज्जा,

केवलणाणे वा से समुप्पज्जेज्जा २

१८३ जबुद्दीवे दीवे तओ कम्मभूमीओ पण्णत्ताओ त जहा

भरहे, एरवए, महाविदेहे

एव धायइसडे दीवे पुरच्छिमद्धे —जाव— पुक्खरवरदीवड्ढे पच्चत्यिमद्धे ५

१८४ तिविहे दसणे पण्णत्ते, त जहा-

सम्मद्दसणे, मिच्छदसणे, सम्मामिच्छदसणे

तिविहा रुई पण्णत्ता त जहा-

सम्मरुई, मिच्छरुई, सम्मामिच्छरुई

तिविहे पओगे पण्णत्ते त जहा-

सम्मपओगे, मिच्छपओगे, सम्मामिच्छपओगे ३

१८५ तिविहे वयसाए पण्णत्ते त जहा-

धम्मिए ववसाए,

अधम्मिए ववसाए,

धम्मियाधम्मिए ववसाए

अहवा तिविहे ववसाए पण्णत्ते त जहा-

पच्चक्खे, पच्चइए, आणुगामिए

अहवा तिविहे ववसाए पण्णत्ते त जहा-

इहलोइए, परलोइए, इहलोइएपरलोइए

इहलोइए ववसाए तिविहे पण्णत्ते त जहा-

लोइए, वेइए, सामइए

लोइए ववसाए तिविहे पण्णत्ते त जहा-

अत्थे, धम्मे, कामे

वेइए ववसाए तिविहे पण्णत्ते त जहा-

रिउव्वेदे, जउव्वेदे, सामवेदे

सामइए ववसाए तिविहे पण्णत्ते त जहा-

नाणे, दसणे, चरित्ते

तिविहा अत्थजोणी पण्णत्ता त जहा-

सामे, दडे, भेए ८

१८६ तिविहा पोग्गला पण्णत्ता त जहा-

१

प्र० से णं भंते ! सवणे किं फले ?

उ० णाणफले

प्र० से णं भंते ! णाणे किं फले ?

उ० विण्णाणफले

एवमेएणं अभिलावेणं इमा गाहा अणुगंतव्वा-

सवणे णाणे य विण्णाणे, पच्चक्खाणे य संजमे ।
अणण्हए तवे चेव, वोदाणे अकिरिय निव्वाणे ॥

प्र० —जाव— से णं भंते ! अकिरिया किं फला ?

उ० निव्वाणफला

प्र० से णं भंते ! निव्वाणे किं फले ?

उ० सिद्धिगइगमणपज्जवसाणफले पण्णत्ते, समणाउसो !

तिट्ठाणस्स चउत्थो उद्देसो

१९१ पडिमापडिवन्नस्स अणगारस्स कप्पंति तओ उवस्सया पडि-लेहित्तए तं जहा-

अहे आगमणगिहंसि वा,
अहे वियडगिहंसि वा,
अहे रुक्खमूलगिहंसि वा
एवमणुन्नवित्तए, उवाइणित्तए

पडिमापडिवन्नस्स अणगारस्स कप्पति तओ सथारगा पडि-
लेहित्तए त जहा-
पुढविसिला, कट्ठसिला, अहासथडमेव
एव अणुण्णवित्तए उवाइणित्तए ४

१९२ तिविहे काले पण्णत्ते त जहा-
तीए, पडुप्पण्णे, अणागए

तिविहे समए पण्णत्ते त जहा-
तीए, पडुप्पण्णे, अणागए
एव आवलिया, आणापाणू, थोवे, लवे, मुहुत्ते, अहोरत्ते,
—जाव— वाससयसहस्से, पुव्वगे, पुव्वे —जाव—
ओसप्पिणी

तिविहे पोग्गलपरियट्टे पण्णत्ते त जहा-
तीए, पडुप्पन्ने, अणागए ५४

१९३ तिविहे वयणे पण्णत्ते त जहा-
एगवयणे, दुवयणे, बहुवयणे

अहवा तिविहे वयणे पण्णत्ते त जहा-
इत्थिवयणे, पुवयणे, नपुसगवयणे

अहवा तिविहे वयणे पण्णत्ते त जहा-
तीयवयणे, पडुप्पन्नवयणे, अणागयवयणे ३

१९४ तिविहा पन्नवणा पण्णत्ता त जहा-
नाणपन्नवणा, दसणपन्नवणा, चरित्तपन्नवणा

तिविहे सम्मे पण्णत्ते तं जहा-
नाणसम्मे, दसणसम्मे, चरित्तसम्मे

तिविहे उवघाए पण्णत्ते त जहा-
उग्गमोवघाए, उप्पायणोवघाए, एसणोवघाए
एव विसोही ४

१९५ तिविहा आराहणा पण्णत्ता त जहा-
णाणाराहणा, दसणाराहणा, चरित्ताराहणा

नाणाराहणा तिविहा पण्णत्ता त जहा-
उक्कोसा, मज्झिमा, जहन्ना
एव दसणाराहणा वि, चरित्ताराहणा वि

तिविहे सकिलेसे पण्णत्ते त जहा-
नाणसकिलेसे, दसणसकिलेसे, चरित्तसकिलेसे
एव असकिलेसे वि
एवमइक्कमे वि, वइक्कमे वि, अइयारे वि, अणायारे वि

तिण्हमइक्कमाण आलोएज्जा, पडिक्कमेज्जा, निंदेज्जा, गरहिज्जा —जाव— पडिवज्जिज्जा त जहा-
नाणाइक्कमस्स, दसणाइक्कमस्स, चरित्ताइक्कमस्स
एव वइक्कमाण वि अइयाराण, अणायाराण १८

१९६ तिविहे पायच्छित्ते पण्णत्ते त जहा-
आलोयणारिहे, पडिक्कमणारिहे, तदुभयारिहे

१९७ जबुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं तओ अकम्मभू-

मिओ पण्णत्ताओ त जहा-

हेमवए, हरिवासे, देवकुरा

जबूद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स उत्तरेण तओ अकम्मभू-
मीओ पण्णत्ताओ त जहा-

उत्तरकुरा, रम्मगवासे, एरण्णवए

जबूमदरस्स दाहिणेण तओ वासा पण्णत्ता त जहा-

भरहे, हेमवए, हरिवासे

जबूमदरस्स उत्तरेण तओ वासा पण्णत्ता त जहा-

रम्मगवासे, हेरण्णवए, एरवए

जबुमदरदाहिणेण तओ वासहरपव्वया पण्णत्ता त जहा-

चुल्लहिमवते, महाहिमवते, णिसढे

जबूमदरउत्तरेण तओ वासहरपव्वया पण्णत्ता त जहा-

नीलवते, रुप्पी, सिहरी

जबूमदरदाहिणेण तओ महा दहा पण्णत्ता त जहा-

पउमदहे, महापउमदहे, तिगिछदहे

तत्थ ण तओ देवयाओ महिड्ढियाओ —जाव— पलिओव-
मट्ठिइयाओ परिवसति त जहा-

सिरी, हिरी, धिती

एव उत्तरेण वि नवर-केसरिदहे, महापोंडरीयदहे,
पोंडरीयदहे देवयाओ-कित्ती, बुद्धि, लच्छी

जबूमदरदाहिणेण चुल्लहिमवताओ वासहरपव्वयाओ पउ-

तिविहे सम्मे पण्णत्ते तं जहा-
नाणसम्मे, दसणसम्मे, चरित्तसम्मे

तिविहे उवघाए पण्णत्ते त जहा-
उग्गमोवघाए, उप्पायणोवघाए, एसणोवघाए
एव विसोही ४

१९५ तिविहा आराहणा पण्णत्ता त जहा-
णाणाराहणा, दसणाराहणा, चरित्ताराहणा

नाणाराहणा तिविहा पण्णत्ता त जहा-
उक्कोसा, मज्झिमा, जहन्ना
एव दसणाराहणा वि, चरित्ताराहणा वि

तिविहे सकिलेसे पण्णत्ते त जहा-
नाणसकिलेसे दसणसकिलेसे, चरित्तसकिलेसे
एव असकिलेसे वि
एवमइक्कमे वि, वइक्कमे वि, अइयारे वि, अणायारे वि

तिण्हमइक्कमाण आलोएज्जा, पडिक्कमेज्जा, निंदेज्जा, गरहिज्जा —जाव— पडिवज्जिज्जा त जहा-
नाणाइक्कमस्स, दसणाइक्कमस्स, चरित्ताइक्कमस्स
एव वइक्कमाण वि अइयाराण, अणायाराण १४

१९६ तिविहे पायच्छित्ते पण्णत्ते त जहा-
आलोयणारिहे, पडिक्कमणारिहे, तदुभयारिहे

१९७ जबुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स दाहिणेण तओ अकम्मभू-

मिओ पण्णत्ताओ त जहा-

हेमवए, हरिवासे, देवकुरा

जबूद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स उत्तरेण तओ अकम्मभू-
मीओ पण्णत्ताओ त जहा-

उत्तरकुरा, रम्मगवासे, एरण्णवए

जबूमदरस्स दाहिणेण तओ वासा पण्णत्ता त जहा-

भरहे, हेमवए, हरिवासे

जबूमदरस्स उत्तरेण तओ वासा पण्णत्ता त जहा-

रम्मगवासे, हेरण्णवए, एरवए

जबुमदरदाहिणेण तओ वासहरपव्वया पण्णत्ता त जहा-

चुल्लहिमवते, महाहिमवते, णिसढे

जबूमदरउत्तरेण तओ वासहरपव्वया पण्णत्ता त जहा-

नीलवते, रुप्पी, सिहरी

जबूमदरदाहिणेण तओ महा दहा पण्णत्ता त जहा-

पउमदहे, महापउमदहे, तिगिछदहे

तत्थ ण तओ देवयाओ महिड्ढियाओ —जाव— पलिओव-
मट्ठिइयाओ परिवसति त जहा-

सिरी, हिरी, धिती

एव उत्तरेण वि नवर-केसरिदहे, महापोंडरीयदहे,
पोंडरीयदहे देवयाओ-कित्ती, बुद्धि, लच्छी

जबूमदरदाहिणेण चुल्लहिमवताओ वासहरपव्वयाओ पउ-

तिविहे सम्मे पण्णत्ते त जहा-
नाणसम्मे, दसणसम्मे, चरित्तसम्मे

तिविहे उवघाए पण्णत्ते त जहा-
उग्गमोवघाए, उप्पायणोवघाए, एसणोवघाए
एव विसोही ८

१९५ तिविहा आराहणा पण्णत्ता त जहा-
णाणाराहणा, दसणाराहणा, चरित्ताराहणा

नाणाराहणा तिविहा पण्णत्ता त जहा-
उक्कोसा, मज्झिमा, जहन्ना
एव दसणाराहणा वि, चरित्ताराहणा वि

तिविहे सकिलेसे पण्णत्ते त जहा-
नाणसकिलेसे, दसणसकिलेसे, चरित्तसकिलेसे
एव असकिलेसे वि
एवमइक्कमे वि, वइक्कमे वि, अइयारे वि, अणायारे वि

तिण्हमइक्कमाण आलोएज्जा, पडिक्कमेज्जा, निंदेज्जा, गरहिज्जा —जाव— पडिवज्जिज्जा त जहा-
नाणाइक्कमस्स, दसणाइक्कमस्स, चरित्ताइक्कमस्स
एव वइक्कमाण वि अइयाराण, अणायाराण १४

१९६ तिविहे पायच्छित्ते पण्णत्ते त जहा-
आलोयणारिहे, पडिक्कमणारिहे, तदुभयारिहे

१९७ जबुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स दाहिणेण तओ अकम्मभू-

मिओ पण्णत्ताओ त जहा-

हेमवए, हरिवासे, देवकुरा

जवूद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स उत्तरेण तओ अकम्मभूमीओ पण्णत्ताओ त जहा-

उत्तरकुरा, रम्मगवासे, एरण्णवए

जबूमदरस्स दाहिणेण तओ वासा पण्णत्ता त जहा-

भरहे, हेमवए, हरिवासे

जबूमदरस्स उत्तरेण तओ वासा पण्णत्ता त जहा-

रम्मगवासे, हेरण्णवए, एरवए

जबुमदरदाहिणेण तओ वासहरपव्वया पण्णत्ता त जहा-

चुल्लहिमवते, महाहिमवते, णिसढे

जबूमदरउत्तरेण तओ वासहरपव्वया पण्णत्ता त जहा-

नीलवते, रुप्पी, सिहरी

जबूमदरदाहिणेण तओ महा दहा पण्णत्ता त जहा-

पउमदहे, महापउमदहे, तिगिछदहे

तत्थ ण तओ देवयाओ महिड्ढियाओ —जाव— पलिओवमट्ठिइयाओ परिवसति त जहा-

सिरी, ह्रिरी, धिती

एव उत्तरेण वि नवर-केसरिदहे, महापोंडरीयदहे, पोंडरीयदहे देवयाओ-कित्ती, बुद्धि, लच्छी

जबूमदरदाहिणेण चुल्लहिमवताओ वासहरपव्वयाओ पउ-

मदहाओ महादहाओ तओ महाणईओ पवहति त जहा-

गगा, सिधू, रोहितसा

जबूमदरउत्तरेण सिहरीओ वासहरपव्वयाओ पोडरीयदहाओ महादहाओ तओ महानईओ पवहति त जहा-

सुवन्नकूला, रत्ता, रत्तवती

जबूमदरपुरच्छिमेण सीयाए महाणईए उत्तरेण तओ अतरणईओ पण्णत्ताओ त जहा-

गाहावई, दहवई, पकवई

जबूमदरपुरच्छिमेण सीयाए महाणईए दाहिणेण तओ अतरणईओ पण्णत्ताओ त जहा-

तत्तजला, मत्तजला, उम्मत्तजला

जबूमदरपच्चत्थिमेण सीओदाए महाणईए दाहिणेण तओ अतरणईओ पण्णत्ताओ त जहा-

खीरोदा, सीयसोता, अतोवाहिणी

जबूमदरपच्चत्थिमेण सीओदाए महाणईए उत्तरेण तओ अतरणईओ पण्णत्ताओ त जहा-

उम्मिमालिणी, फेणमालिणी, गभीरमालिणी

एव धायइसडे दीवे पुरच्छिमद्धे वि अकम्मभूमीओ आढवेत्ता —जाव— अतरणईओ णिरवसेस भाणियव्व —जाव— पुक्खरवरदीवड्ढपच्चत्थिमड्ढे तहेव निरवसेस भाणियव्व १६

१६८ तिहि ठाणेहि देसे पुढवीए चलेज्जा त जहा-

अहे ण इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उराला पोग्गला णिवत्तेज्जा, तए ण ते उराला पोग्गला णिवत्तमाणा देस पुढवीए चलेज्जा,

महोरगे वा महिड्ढीए —जाव— महेसक्खे इमीसे रयणप्पमाए पुढवीए अहे उम्मज्ज-णिमज्जिय करेमाणे देस पुढवीए चलेज्जा,

नाग-सुवन्नाण वा सगामसि वट्टमाणसि देसे पुढवीए चलेज्जा

इच्चेएहि तिहि ठाणेहि देसे पुढवीए चलेज्जा

तिहि ठाणेहि केवलकप्पा पुढवी चलेज्जा त जहा-

अहे ण इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए घणवाए गुप्पेज्जा, तए ण से घणवाए गुविए समाणे घणोवहिमेएज्जा, तए ण से घणोवही एइए समाणे केवलकप्प पुढवि चलेज्जा,

देवे वा महिड्ढिए —जाव— महेसक्खे तहारूवस्स समणस्स माहणस्स वा, इड्ढि जुइ जस बल वीरिय पुरिसक्कारपरक्कम उवदसेमाणे केवलकप्प पुढवि चलेज्जा,

देवासुरसगामसि वा वट्टमाणसि केवलकप्पा पुढवी चलेज्जा

इच्चेएहि तिहि ठाणेहि केवलकप्पा पुढवी चलेज्जा २

१९९ तिविहा देवकिब्बिसिया पण्णत्ता त जहा-

तिपलिओवमट्ठिइया,
तिसागरोवमट्ठिइया,
तेरससागरोवमट्ठिइया

प्र० कहिण भते ! तिपलिओवमट्ठिइया देवकिब्बिसिया परिवसति ?

उ० उप्पि जोइसियाण हिट्ठि सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु एत्थ ण तिपलिओवमट्ठिइया देवा किब्बिसिया परिवसति

प्र० कहि ण भते ! तिसागरोवमट्ठिइया देवा किब्बिसिया परिवसति ?

उ० उप्पि सोहम्मीसाणाण कप्पाण हेट्ठि सणकुमार-माहिंदे कप्पे एत्थ ण तिसागरोवमट्ठिइया देवकिब्बिसिया परिवसति

प्र० कहि ण भते ! तेरससागरोवमट्ठिइया देवकिब्बिसिया परिवसति ?

उ० उप्पि बभलोगस्स कप्पस्स हिट्ठि लतगे कप्पे एत्थ ण तेरससागरोवमट्ठिइया देवकिब्बिसिया परिवसति

२०० सक्कस्स ण देविंदस्स देवरण्णो बाहिरपरिसाए देवाण तिन्नि पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता

सक्कस्स ण देविंदस्स देवरन्नो अब्भितरपरिसाए देवीण तिन्नि पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता

ईसाणस्स ण देविंदस्स देवरन्नो बाहिरपरिसाए देवीण तिन्नि पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ३

२०१ तिविहे पायच्छित्ते पण्णत्ते त जहा-

नाणपायच्छित्ते, दसणपायच्छित्ते, चरित्तपायच्छित्ते

तओ अणुग्घाइमा पण्णत्ता त जहा-

हत्थकम्म करेमाणे, मेहुण सेवमाणे, राइभोयण भुजमाणे

तओ पारचिया पण्णत्ता त जहा-

दुट्ठपारचिए,
पमत्तपारचिए,
अन्नमन्न करेमाणे पारचिए

तओ अणवट्ठप्पा पण्णत्ता त जहा-

साहम्मियाण तेण करेमाणे,
अन्नधम्मियाण तेण करेमाणे,
हत्थाताल दलयमाणे ४

२०२ तओ नो कप्पति पव्वावेत्तए त जहा-

पडए, वाइए, कीवे
एव मुडावित्तए, सिक्खावित्तए, उवट्ठावित्तए, सभुजित्तए सवासित्तए ६

२०३ तओ अवायणिज्जा पण्णत्ता त जहा-

अविणीए, विगइपडिबद्धे अविओसियपाहुडे

तओ कप्पति वाइत्तए त जहा-

विणीए, अविगइपडिबद्धे, विउसियपाहुडे

तओ दुसन्नप्पा पण्णत्ता त जहा-
दुट्ठे, मूढे, वुग्गहिए

तओ सुसन्नप्पा पण्णत्ता त जहा-
अदुट्ठे, अमूढे, अवुग्गाहिए ४

२०४ तओ मडलिया पव्वया पण्णत्ता त जहा-
माणुसुत्तरे, कुडलवरे, रुअगवरे

२०५ तओ महइमहालया पण्णत्ता त जहा-
जबूद्दीवे मदरे मदरेसु,
सयभूरणे समुद्दे समुद्देसु,
बभलोए कप्पे कप्पेसु

२०६ तिविहा कप्पठिई पण्णत्ता त जहा-
सामाइयकप्पठिई,
छेदोवट्ठावणियकप्पट्ठिई,
निव्विसमाणकप्पट्ठिई

अहवा तिविहा कप्पट्ठिई पण्णत्ता त जहा-
निव्विट्ठकप्पट्ठिई, जिणकप्पठिई, थेरकप्पठिई २

२०७ नेरइयाण तओ सरीरगा पण्णत्ता त जहा-
वेउव्विए, तेयए, कम्मए

असुरकुमाराण तओ सरीरगा पण्णत्ता त जहा-
एव चेव, एव सव्वेसिं देवाण

पुढविकाइयाण तओ सरीरगा पण्णत्ता त जहा-
ओरालिए, तेयए, कम्मए
एव वाउकाइयवज्जाण —जाव— चउरिंदियाण

२०८ गुरु पडुच्च तओ पडिणीया पण्णत्ता त जहा-
आयरियपडिणीए, उवज्झायपडिणीए, थेरपडिणीए

गइ पडुच्च तओ पडिणीया पण्णत्ता त जहा-
इहलोगपडिणीए, परलोगपडिणीए, दुहओ लोगपडिणीए

समूह पडुच्च तओ पडिणीया पण्णत्ता त जहा-
कुलपडिणीए, गणपडिणीए, सघपडिणीए

अणुकप पडुच्च तओ पडिणीया पण्णत्ता त जहा-
तवस्सिपडिणीए, गिलाणपडिणीए, सेहपडिणीए

भाव पडुच्च तओ पडिणीया पण्णत्ता त जहा-
नाणपडिणीए, दसणपडिणीए, चरित्तपडिणीए

सुय पडुच्च तओ पडिणीया पण्णत्ता त जहा-
सुत्तपडिणीए, अत्थपडिणीए, तदुभयपडिणीए ६

२०९ तओ पिइयगा पण्णत्ता त जहा-
अट्ठी, अट्ठिमिजा, केस-मसु-रोम-नहे

तओ माउयगा पण्णत्ता त जहा-
मसे, सोणिए, मत्थुलिगे २

२१० तिहिं ठाणेहिं समणे निग्गथे महानिज्जरे महापज्जवसाणे भवइ त जहा-

कया ण अह अप्प वा, बहुय वा, सुय अहिज्जिस्सामि,

कया ण अह एकल्लविहारपडिम उवसपज्जित्ता ण विह रिस्सामि,

कया ण अह अपच्छिममारणतियसलेहणाझूसणाझूसिए भत्तपाणपडियाइक्खित्ते पाओवगए काल अणवकखमाणे विहरिस्सामि

एव समणसा, सवयसा, सकायसा पागडेमाणे निग्गथे महानिज्जरे महापज्जवसाणे भवइ

तिहि ठाणेहि समणोवासए महानिज्जरे महापज्जवसाणे भवइ त जहा-

कया ण अह अप्प वा, बहुय वा, परिग्गह परिचइस्सामि,

कया ण अह मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइ स्सामि,

कया ण अह अपच्छिममारणतियसलेहणाझूसणाझूसिए भत्तपाणपडियाइक्खए पाओवगए काल अणवकखमाणे विहरिस्सामि

एव समणसा, सवयसा, सकायसा पागडेमाणे समणोवासए महानिज्जरे महापज्जवसाणे भवइ २

२११ तिविहे पोग्गलपडिघाए पण्णत्ते त जहा-

परमाणुपोग्गले परमाणुपोग्गल पप्प पडिहन्निज्जा,

लुक्खत्ताए वा पडिहन्निज्जा,

लोगते वा पडिहन्निज्जा

२१२ तिविहे चक्खू पण्णत्ता त जहा-
एगचक्खू, बिचक्खू, तिचक्खू
छउमत्थे ण मणुस्से एगचक्खू,
देवे बिचक्खू,
तहारूवे समणे वा, माहणे वा उप्पन्न-नाण दसणधरे से ण
तिचक्खूत्ति वत्तव्व सिया २

२१३ तिविहे अभिसमागमे पण्णत्ते त जहा-
उड्ढ, अह, तिरिय

जया ण तहारूवस्स समणस्स वा, माहणस्स वा अइसेसे
नाणदसणे समुप्पज्जइ से ण तप्पढमयाए उड्ढमभिसमेइ,
तओ तिरिय,
तओ पच्छा अहे
अहोलोगे ण दुरभिगमे पण्णत्ते समणाउसो !

२१४ तिविहा इड्ढी पण्णत्ता त जहा-
देविड्ढी, राइड्ढी, गणिड्ढी

देविड्ढी तिविहा पण्णत्ता त जहा-
विमाणिड्ढी, विगुव्वणिड्ढी, परियारणिड्ढी
अहवा देविड्ढी तिविहा, पण्णत्ता त जहा-
सचित्ता, अचित्ता, मीसिया

राइड्ढी तिविहा पण्णत्ता त जहा-
रन्नो अइयाणिड्ढी,
रन्नो निज्जाणिड्ढी,

रन्नो बल वाहण-कोस-कोट्ठागारिड्ढी

अहवा राइड्ढी तिविहा पण्णत्ता त जहा-
सचित्ता, अचित्ता, मीसिया

गणिड्ढी तिविहा पण्णत्ता त जहा-
नाणिड्ढी, दसणिड्ढी, चरित्तिड्ढी

अहवा गणिड्ढी तिविहा पण्णत्ता त जहा-
सचित्ता, अचित्ता, मीसिया ७

२१५ तओ गारवा पण्णत्ता त जहा-
इड्ढीगारवे, रसगारवे, सायागारवे

२१६ तिविहे करणे पण्णत्ते त जहा-
धम्मिए करणे,
अधम्मिए करणे,
धम्मियाधम्मिए करणे

२१७ तिविहे भगवया धम्मे पण्णत्ते त जहा-
सुअहिज्झिए, सुझाइए, सुतवस्सिए
जया सुअहिज्झिय भवइ तहा सुझाइय भवइ,
जया सुझाइय भवइ तया सुतवस्सिय भवइ,
से सुअहिज्झिए, सुझाइए, सुतवस्सिए सुयक्खाए ण
भगवयाधम्मे पण्णत्ते

२१८ तिविहा वावत्ती पण्णत्ता त जहा-
जाणू, अजाणू, विइगिच्छा

एवमज्झोववज्जणा, परियायज्जणा ३

२१९ तिविहे अते पण्णत्ते त जहा-
लोगते, वेयते, समयते

२२० तओ जिणा पण्णत्ता त जहा-
ओहिणाणजिणे,
मणपज्जवणाणजिणे,
केवलणाणजिणे

तओ केवली पण्णत्ता त जहा-
ओहिनाणकेवली,
मणपज्जवनाणकेवली,
केवलनाणकेवली

तओ अरहा, पण्णत्ता त जहा-
ओहिनाणअरहा,
मणपज्जवनाणअरहा,
केवलनाणअरहा ३

२२१ तओ लेसाओ दुब्भिगधाओ पण्णत्ताओ त जहा-
कण्हलेसा, नीललेसा, काउलेसा

तओ लेसाओ सुब्भिगधाओ पण्णत्ताओ त जहा-
तेऊलेसाओ, पम्हलेसाओ, सुक्कलेसाओ
एव दोग्गतिगामिणीओ, सोगतिगामिणीओ, सकिलिट्ठाओ, असकिलिट्ठाओ, अमणुण्णाओ, मणुण्णाओ, अविसुद्धाओ, विसुद्धाओ, अप्पसत्थाओ, पसत्थाओ, सीतलुक्खाओ,

निद्धुण्हाओ १४

२२२ तिविहे मरणे पण्णत्ते त जहा-
बालमरणे, पंडियमरणे, बालपंडियमरणे

बालमरणे तिविहे पण्णत्ते त जहा-
ठियलेसे, संकिलिट्ठलेसे, पज्जवजायलेसे

पंडियमरणे तिविहे पण्णत्ते त जहा-
ठियलेसे, असंकिलिट्ठलेसे, पज्जवजायलेसे

बालपंडितमरणे तिविहे पण्णत्ते त जहा-
ठियलेसे, असंकिलिट्ठलेसे, अपज्जवजायलेसे ४

२२३ तओ ठाणा अव्ववसियस्स अहियाए असुभाए अखमाए अणिस्सेसाए अणाणुगामियत्ताए भवति त जहा-

से ण मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइए निग्गंथे, पावयणे, संकिए, कंखिए, वितिगिंछिए, भेदसमावन्ने, कलुससमावन्ने निग्गंथ पावयण नो सद्दहइ, नो पत्तियइ, नो रोएइ, त परिस्सहा अभिजुंजिय, अभिजुंजिय अभिभवंति, नो से परिस्सहे अभिजुंजिय अभिजुंजिय अभिभवइ,

से ण मुंडे भवित्ता अगाराओ, अणगारिय पव्वइए पर्चाहि महव्वएहि संकिए –जाव– कलुससमावन्ने पच महव्वयाइ नो सद्दहइ – जाव— नो से परिस्सहे अभिजुंजिय, अभिजुंजिय अभिभवइ,

से ण मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइए छहि

जीवनिकाएहिं —जाव— अभिभवइ

तओ ठाणा ववसियस्स हियाए —जाव— आणुगामियत्ताए भवति त जहा-

से ण मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइए निग्गथे पावयणे, निस्सकिए, निक्कखिए —जाव— नो कलुससमावन्ने निग्गथे पावयणे सद्दहइ, पत्तियइ, रोएइ से परिस्सहे अभिजुजिय अभिजुजिय अभिभवइ, नो त परिस्सहा अभिजुजिय अभिजुजिय अभिभवति,

से ण मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए समाणे पचहिं महव्वएहिं निस्सकिए निक्कखिए —जाव— परिस्सहे अभिजुजिय, अभिजुजिय अभिभवइ, नो त परिस्सहा अभिजुजिय अभिजुजिय अभिभवति,

से ण मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइए छहिं जीवनिकाएहिं निस्सकिए —जाव— परिस्सहे अभिजुजिय अभिजुजिय अभिभवइ, नो त परिस्सहा अभिजुजिय, अभिजुजिय अभिभवति

२२४ एगमेगा ण पुढवी तिहिं वलएहिं सव्वओ समता सपरिक्खित्ता त जहा-

घणोदधिवलएण, घणवायवलएण, तणुवायवलएण

२२५ नेरइया ण उक्कोसेण तिसमइएण विग्गहेण उववज्जति, एगिदियवज्ज —जाव— वेमाणियाण

२२६ खीणमोहस्स ण अरहओ तओ कम्मसा जुगव खिज्जति जहा-

नाणावरणिज्ज, दसणावरणिज्ज, अतराइय

२२७ अभिइणक्खत्ते तितारे पण्णत्ते

एव सवणो, अस्सिणी, भरणी, मगसिरे, पूसे, जेट्ठा ६

२२८ धम्माओ ण अरहाओ सती अरहा तिहिं सागरोवमेहिं ति चउब्भागपलिओवमऊणएहिं वीइक्कतेहिं समुप्पन्ने

२२९ समणस्स ण भगवओ महावीरस्स —जाव— तच्चाओ पुरिसजुगाओ जुगतकरभूमी,

मल्ली णं अरहा तिहिं पुरिससएहिं सद्धि मुडे भवित्ता —जाव— पव्वइए एव पासे वि ३

२३० समणस्स ण भगवओ महावीरस्स तिन्नि सया चउद्दसपुव्वीण अजिणाण जिणसकासाण सव्वक्खरसन्निवाइण जिण इव अवितहवागरमाणाण उक्कोसिया चउद्दसपुव्विसपया हुत्था

२३१ तओ तित्थयरा चक्कवट्टी होत्था त जहा-

सती, कुथू, अरो

२३२ तओ गेविज्ज-विमाण-पत्थडा पन्नत्ता त जहा-

हिट्ठिम-गेविज्ज-विमाण-पत्थडे,

मज्झिम-गेविज्ज-विमाण-पत्थडे,

उवरिम-गेविज्ज-विमाण पत्थडे

हिट्ठिम-गेविज्ज-विमाण-पत्थडे तिविहे पण्णत्ते त जहा-

हेट्ठिम हेट्ठिम-गेविज्ज विमाणपत्थडे,
हेट्ठिम-मज्झिम-गेविज्ज-विमाण-पत्थडे,
हेट्ठिम उवरिम-गेविज्ज-विमाण-पत्थडे

मज्झिम-गेविज्ज-विमाण-पत्थडे तिविहे पण्णत्ते त जहा-
मज्झिम-हेट्ठिम-गेविज्ज-विमाण-पत्थडे,
मज्झिम-मज्झिम-गेविज्ज-विमाण-पत्थडे,
मज्झिम-उवरिम गेविज्ज-विमाण-पत्थडे

उवरिम-गेविज्ज-विमाण-पत्थडे, तिविहे पण्णत्ते त जहा-
उवरिम-हेट्ठिम-गेविज्ज-विमाण-पत्थडे,
उवरिम-मज्झिम-गेविज्ज-विमाण-पत्थडे,
उवरिम-उवरिम-गेविज्ज-विमाण-पत्थडे ४

२३३ जीवाण तिट्ठाणणिव्वत्तिए पोग्गले पावकम्मत्ताए चिणिसु वा,
चिणति वा, चिणिस्सति वा त जहा-
इत्थिनिव्वत्तिए, पुरिसनिव्वत्तिए, नपुसगनिव्वत्तिए
एव चिण-उवचिण-बध-उदीर-वेद-तह निज्जरा चेव ६

२३४ तिपएसिया खधा अणता पण्णत्ता,
एव —जाव— तिगुणलुक्खा पोग्गला अणता पण्णत्ता २३

चउट्ठाण

चउट्ठाणस्स पढमो उद्देसो

२३५ चत्तारि अतकिरियाओ पण्णत्ताओ त जहा-

तत्थ खलु पढमा इमा अतकिरिया,

अप्पकम्मपच्चायाए यावि भवइ,

से ण मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइए,

सजमबहुले, सवरबहुले, समाहिबहुले, लूहे, तीरट्ठी

उवहाणव, दुक्खक्खवे तवस्सी, तस्स ण नो तहप्पगारे

तवे भवइ, नो तहप्पगारा वेयणा भवइ

तहप्पगारे पुरिसजाए दीहेण परितावेण, सिज्झइ, बुज्झइ,

मुच्चइ, परिनिव्वायइ, सव्वदुक्खाणमत करेइ

जहा से भरहे राया चाउरतचक्कवट्टी,

पढमा अतकिरिया

अहावरा दोच्चा अतकिरिया,

महाकम्मे पच्चायाए यावि भवइ

से ण मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइए,

सजमबहुले, सवरबहुले, —जाव— उवहाणव दुक्ख

क्खवे तवस्सी तस्स ण तहप्पगारे तवे भवइ, तहप्पगारा

सेयणा भवइ

तहप्पगारे पुरिसजाए निरुद्धेण परितावेण सिज्झइ —जाव— अंत करेइ

जहा से गयसुउमाले अणगारे,

दोच्चा अतकिरिया

अहावरा तच्चा अतकिरिया,

महाकम्मे पच्चायाए यावि भवइ

से ण मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइए,

जहा दोच्चा नवर-दीहेण परितावेण सिज्झइ —जाव— सव्वदुक्खाणमत करेइ

जहा से सणकुमारे राया चाउरतचक्कवट्टी,

तच्चा अतकिरिया

अहावरा चउत्था अतकिरिया,

अप्पकम्मपच्चायाए यावि भवइ

से ण मुडे भवित्ता —जाव— पव्वइए सजमबहुले, —जाव— तस्स ण नो तहप्पगारे तवे भवइ, नो तहप्पगारा वेयणा भवइ,

तहप्पगारे पुरिसजाए निरुद्धेण परितावेण सिज्झइ —जाव— सव्वदुक्खाणमत करेइ

जहा सा मरुदेवा भगवई,

चउत्था अतकिरिया

२३६ चत्तारि रुक्खा पण्णत्ता त जहा-

उन्नए नामेगे उन्नए, उन्नए नामेगे पणए,
पणए नामेगे उन्नए, पणए नामेगे पणए

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
उन्नए नामेगे उन्नए,
तहेव —जाव— पणए नामेगे पणए

चत्तारि रुक्खा पण्णत्ता त जहा-
उन्नए नामेगे उन्नय-परिणए,
उन्नए नामेगे पणय-परिणए,
पणए नामेगे उन्नय-परिणए,
पणए नामेगे पणय-परिणए

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
उन्नए नामेगे उन्नय-परिणए
तहेव —जाव— पणए नामेगे पणय-परिणए

चत्तारि रुक्खा पण्णत्ता त जहा-
उन्नए नामेगे उन्नय रूवे, उन्नए नामेगे पणय रूवे,
पणए नामेगे उन्नय-रूवे, पणए नामेगे पणय रूवे

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
उन्नए नामेगे उन्नय रूवे,
तहेव —जाव— पणए नामेगे पणय-रूवे

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
उन्नए नामेगे उन्नय-मणे, उन्नए नामेगे पणय-मणे,

पणय नामेगे उन्नय-मणे, पणए नामेगे पणय-मणे

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-

उन्नए नामेगे उन्नय-सकप्पे,

उन्नए नामेगे पणय-सकप्पे,

पणय नामेगे उन्नय-सकप्पे,

पणय नामेगे पणय-सकप्पे

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-

उन्नए नामेगे उन्नय-पन्ने, उन्नए नामेगे पणय-पन्ने,

पणए नामेगे उन्नय-पन्ने, पणए नामेगे पणय-पन्ने

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-

उन्नए नामेगे उन्नय-विट्ठी,

उन्नए नामेगे पणय-विट्ठी,

पणए नामेगे उन्नय-विट्ठी,

पणए नामेगे पणय-विट्ठी

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-

उन्नए नामेगे उन्नय-सीलायारे,

उन्नए नामेगे पणय-सीलायारे,

पणए नामेगे उन्नय-सीलायारे,

पणए नामेगे पणय-सीलायारे

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-

उन्नए नामेगे उन्नय-ववहारे,

उन्नए नामेगे पणय-ववहारे,

पणए नामेगे उन्नय-ववहारे,
पणए नामेगे पणय-ववहारे

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
उन्नए नामेगे उन्नए-परक्कमे,
उन्नए नामेगे पणय-परक्कमे,
पणए नामेगे उन्नय-परक्कमे,
पणए नामेगे पणय-परक्कमे
एगे पुरिसजाए पडिवक्खो नत्थि

चत्तारि रुक्खा पण्णत्ता त जहा-
उज्जू नामेगे उज्जू, उज्जू नामेगे वके,
वके नामेगे उज्जू, वके नामेगे वके

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
उज्जू नामेगे उज्जू, तहेव —जाव— वके नामेगे वके
एव जहा उन्नय-पणएहि गमो, तहा उज्जू वकेहि ।
भाणियव्वो —जाव— परक्कमे १४

२३७ पडिमापडिवन्नस्स ण अणगारस्स कप्पति चत्तारि भासाओ
भासित्तए त जहा-
जायणी, पुच्छणी, अणुन्नवणी, पुट्ठस्स वागरणी

२३८ चत्तारी भासजाया पण्णत्ता त जहा-
सच्चमेग भासज्जाय, बीय मोस,
तइय सच्चमोस, चउत्थ असच्चमोस

२३९ चत्तारि वत्था पण्णत्ता त जहा-

सुद्धे नामेगे सुद्धे, सुद्धे नामेगे असुद्धे,
असुद्धे नामेगे सुद्धे असुद्धे नामेगे असुद्धे

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-

सुद्धे नामेगे सुद्धे,
तहेव —जाव— असुद्धे नामेगे असुद्धे
एव परिणय-रूवे वत्था सपडिवक्खा

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-

सुद्धे नामेगे सुद्ध-मणे, सुद्धे नामेगे असुद्ध-मणे,
असुद्धे नामेगे सुद्ध-मणे, असुद्धे नामेगे असुद्ध-मणे
एव सकप्पे —जाव— परक्कमे १०

२४० चत्तारि सुया पण्णत्ता त जहा-

अइजाए, अणुजाए, अवजाए, कुलिगाले

२४१ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-

सच्चे नामेगे सच्चे, सच्चे नामेगे असच्चे,
असच्चे नामेगे सच्चे, असच्चे नामेगे असच्चे
एव परिणए —जाव— परक्कमे १०

चत्तारि वत्था पण्णत्ता त जहा-

सुई नामेगे सुई, सुई नामेगे असुई,
असुई नामेगे सुई, असुई नामेगे असुई

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-

सुई नामेगे सुई,
तहेव —जाव— असुई नामेगे असुई
एव जहेव सुद्धेण वत्थेण भणिय तहेव सुइणावि —जाव—
परक्कमे १०

२४२ चत्तारि कोरवा पण्णत्ता त जहा-
अव-पलव-कोरवे, ताल पलव-कोरवे,
वल्लि-पलव-कोरवे, मेढ-विसाण-कोरवे

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
अव पलव-कोरवसमाणे, ताल-पलव-कोरवसमाणे,
वल्लि-पलव-कोरवसमाणे, मेढ-विसाण-कोरवसमाणे

२४३ चत्तारि घुणा पण्णत्ता त जहा-
तयक्खाए, छल्लिक्खाए, कट्ठक्खाए, सारक्खाए

एवामेव चत्तारि भिक्खागा पण्णत्ता त जहा-
तयक्खायसमाणे —जाव— सारक्खायसमाणे
तयक्खायसमाणस्स ण भिक्खागस्स सारक्खायसमाणे तवे
पण्णत्ते,
सारक्खायसमाणस्स ण भिक्खागस्स तयक्खायसमाणे तवे
पण्णत्ते,
छल्लिक्खायसमाणस्स ण भिक्खागस्स कट्ठक्खायसमाणे तवे
पण्णत्ते,
कट्ठक्खायसमाणस्स ण भिक्खागस्स छल्लिक्खायसमाणे

तवे पण्णत्ते

२४४ चउव्विहा तणवणस्सइकाइया पण्णत्ता त जहा-
अग्ग-बीया, मूल-बीया, पोर-बीया, खध-बीया

२४५ चउहि ठाणेहि अहुणोववण्णे नेरइए नेरइयलोगसि इच्छेज्जा माणुस लोग हव्वमागच्छित्तए नो चेव ण सचाएइ हव्वमागच्छित्तए

अहुणोववण्णे नेरइए निरयलोगसि समुब्भूय वेयण वेयमाणे इच्छेज्जा माणुस लोग हव्वमागच्छित्तए, नो चेव ण सचाएइ हव्वमागच्छित्तए,

अहुणोववण्णे नेरइए निरयलोगसि निरयपालेहि भुज्जो, भुज्जो अहिट्ठिज्जमाणे इच्छेज्जा माणुस लोग हव्वमागच्छित्तए, नो चेव ण सचाएइ हव्वमागच्छित्तए,

अहुणोववण्णे नेरइए णिरयवेयणिज्जसि कम्मसि अक्खीणसि अवेइयसि अणिज्जिण्णसि इच्छेज्जा माणुस लोग हव्वमागच्छित्तए, नो चेव ण सचाएइ हव्वमागच्छित्तए,

अहुणोववण्णे नेरइए निरयाउअसि कम्मसि अक्खीणसि अवेइयसि अणिज्जिण्णसि इच्छेज्जा माणुस लोग हव्वमागच्छित्तए, नो चेव ण सचाएइ हव्वमागच्छित्तए

इच्चेएहि चउहि ठाणेहि अहुणोववन्ने नेरइए —जाव— नो चेव ण सचाएइ हव्वमागच्छित्तए

२४६ कप्पति निग्गथीण चत्तारि सघाडीओ धारित्तए वा, परि-

हरित्तए वा त जहा-

एग वुहत्थवित्थार,

दो तिहत्थवित्थारा,

एग चउहत्थवित्थार

२४७ चत्तारि झाणा पण्णत्ता त जहा-

अट्टे झाणे, रोद्दे झाणे, धम्मे झाणे, सुक्के झाणे

अट्टे झाणे चउव्विहे पण्णत्ते त जहा-

अमणुन्न सपओग-सपउत्ते तस्स विप्पओग-सइ-समण्णागए याविं भवइ

मणुन्न-सपओग-सपउत्ते तस्स अविप्पओग-सइ समण्णागए यावि भवइ

आयक-सपओग-सपउत्ते तस्स विप्पओग-सइ समण्णागए यावि भवइ

परिजुसिय-काम-भोग-सपओग-सपउत्ते तस्स अविप्पओग सइ समण्णागए यावि भवइ

अट्टस्स ण झाणस्स चत्तारि लक्खणा पण्णत्ता त जहा-

कदणया, सोयणया, तिप्पणया, परिदेवणया

रोद्दे झाणे चउव्विहे पण्णत्ते त जहा-

हिंसाणुबधि, मोसाणुबधि,

तेणाणुबधि, सारक्खणाणुबधि

रुद्दस्स ण झाणस्स चत्तारि लक्खणा पण्णत्ता त जहा-

ओसण्णदोसे, बहुदोसे, अन्नाणदोसे, आमरणतदोसे

धम्मे झाणे चउव्विहे चउप्पडोयारे पण्णत्ते त जहा-

आणाविजए, अवायविजए,

विवागविजए, सठाणविजए

धम्मस्स ण झाणस्स चत्तारि लक्खणा पण्णत्ता त जहा-

आणारुई, णिसग्गरुई, सुत्तरुई, ओगाढरुई

धम्मस्स ण झाणस्स चत्तारि आलबणा पण्णत्ता त जहा-

वायणा, पडिपुच्छणा, परियट्टणा, अणुप्पेहा

धम्मस्स ण झाणस्स चत्तारि अणुप्पेहाओ पण्णत्ताओ त जहा-

एगाणुप्पेहा, अणिच्चाणुप्पेहा,

असरणाणुप्पेहा, ससाराणुप्पेहा

सुक्के झाणे चउव्विहे चउप्पडोयारे पण्णत्ते त जहा-

पुहुत्तवितक्के सवियारी,

एगत्तवितक्के अवियारी,

सुहुमकिरिए अणियट्टी,

समुच्छिन्नकिरिए अप्पडिवाई,

सुक्कस्स ण झाणस्स चत्तारि लक्खणा पण्णत्ता त जहा-

अव्वहे, असम्मोहे, विवेगे, विउस्सग्गे

सुक्कस्स ण झाणस्स चत्तारि आलबणा पण्णत्ता त जहा-

खती, मुत्ती, मद्दवे, अज्जवे

सुक्कस्स ण झाणस्स चत्तारि अणुप्पेहाओ पण्णत्ताओ त जहा-

अणतवत्तियाणुप्पेहा, विप्परिणामाणुप्पेहा,
असुभाणुप्पेहा, अवायाणुप्पेहा

२४८ चउव्विहा देवाण ठिई पण्णत्ता त जहा-
देव नामेगे, देवसिणाए नामेगे,
देवपुरोहिए नामेगे, देवपज्जलणे नामेगे

चउव्विहे सवासे पण्णत्ते त जहा-
देवे नामेगे देवीए सद्धि सवास गच्छेज्जा,
देवे नामेगे छवीए सद्धि सवास गच्छेज्जा,
छवी नामेगे देवीए सद्धि सवास गच्छेज्जा,
छवी नामेगे छवीए सद्धि सवास गच्छेज्जा २

२४९ चत्तारि कसाया पण्णत्ता त जहा-
कोहकसाए, माणकसाए, मायाकसाए, लोभकसाए
एव नेरइयाण —जाव— वेमाणियाण

चउपइट्ठिए कोहे पण्णत्ते त जहा-
आयपइट्ठिए, परपइट्ठिए, तदुभयपइट्ठिए, अपइट्ठिए
एव नेरइयाण —जाव— वेमाणियाण
एव माणे —जाव— लोभे वेमाणियाण

चउहि ठाणेहि कोहुप्पत्ती सिया त जहा
खेत्त पडुच्चा, वत्थु पडुच्चा,
सरीर पडुच्चा, उवहि पडुच्चा.
एव नेरइयाण —जाव— वेमाणियाण

एव माणे —जाव— लोभे वेमाणियाण

चउव्विहे कोहे पण्णत्ते त जहा-
अणताणुबधिकोहे, अपच्चक्खाणकोहे,
पच्चक्खाणावरणे कोहे, सजलणे कोहे
एव नेरइयाण —जाव — वेमाणियाण
एव माणे —जाव— लोभे वेमाणियाण

चउव्विहे कोहे पण्णत्ते त जहा-
आभोगणिव्वत्तिए, अणाभोगणिव्वत्तिए,
उवसते, अणुवसते
एव नेरइयाण जाव— वेमाणियाण
एव माणे —जाव — लोभे वेमाणियाण ५

२५० जीवा ण चउहि ठाणेहि अट्ठ कम्मपगडीओ चिणिसु त जहा-
कोहेण, माणेण, मायाए, लोभेण
एव नेरइयाण —जाव— वेमाणियाण
एव चिणति एस दडओ
एव चिणिस्सति एस दडओ एवमेएण तिण्णी दडगा
एव उवचिणिसु उवचिणति उवचिणिस्सति
बधिसु बधति बधिस्सति
उदीरिसु उदीरेंति उदीरिस्सति
वेदेंसु वेदेंति वेदीस्सति
निज्जरेंसु निज्जरेंति निज्जरिस्सति —जाव— वेमा-
णियाण

एवमेक्केक्के पए तिण्णि तिण्णि दडगा भाणियव्वा
— जाव— निज्जरिस्सति १८

२५१ चत्तारि पडिमाओ पण्णत्ताओ त जहा-
समाहिपडिमा, उवहाणपडिमा,
विवेगपडिमा, विउस्सग्गपडिमा

चत्तारि पडिमाओ पण्णत्ताओ त जहा-
भद्दा, सुभद्दा, महाभद्दा, सव्वओभद्दा

चत्तारि पडिमाओ पण्णत्ताओ त जहा-
खुड्डिया मोयपडिमा, महल्लिया-मोयपडिमा,
जवमज्झा, वइरमज्झा ३

२५२ चत्तारि अत्थिकाया अजीवकाया पण्णत्ता त जहा-
धम्मत्थिकाए, अधम्मत्थिकाए,
आगासत्थिकाए पोग्गलत्थिकाए

चत्तारि अत्थिकाया अरुविकाया पण्णत्ता त जहा-
धम्मत्थिकाए, अधम्मत्थिकाए,
आगासत्थिकाए, जीवत्थिकाए २

२५३ चत्तारि फला पण्णत्ता त जहा-
आमे नामेगे आममहुरे, आमे नामेगे पक्कमहुरे,
पक्के नामेगे आममहुरे, पक्के नामेगे पक्कमहुरे

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
आमे नामेगे आममहुरफलसमाणे

तहेव —जाव— पक्के नामेगे पक्कमहुरफलसमाणे

२५४ चउव्विहे सच्चे पण्णत्ते त जहा-

काउज्जुयया, भासुज्जुयया,

भावुज्जुयया, अविसवायणाजोगे

चउव्विहे मोसे पण्णत्ते त जहा-

कायअणुज्जुयया, भासअणुज्जुयया,

भावअणुज्जुयया, विसवायणाजोगे

चउव्विहे पणिहाणे पण्णत्ते त जहा-

मणपणिहाणे, वइपणिहाणे,

कायपणिहाणे, उवगरणपणिहाणे,

एव नेरइयाण पचिंवियाण —जाव— वेमाणियाणं.

चउव्विहे सुप्पणिहाणे पण्णत्ते त जहा-

मणसुप्पणिहाणे —जाव— उवगरणसुप्पणिहाणे.

एव सजयमणुस्साण वि

चउव्विहे दुप्पणिहाणे पण्णत्ते त जहा-

मणदुप्पणिहाणे —जाव— उवगरणदुप्पणिहाणे.

एव पचिंदियाण —जाव— वेमाणियाण ५

२५५ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा

आवायभद्दए नामेगे नो सवासभद्दए,

सवासभद्दए नामेगे नो आवायभद्दए,

एगे आवायभद्दए वि सवासभद्दए वि,

एगे नो आवायभद्दए नो सवासभद्दए

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
अप्पणो नामेगे वज्ज पासइ नो परस्स,
परस्स नामेगे वज्ज पासइ नो अप्पणो,
एगे अप्पणो वि वज्ज पासइ परस्स वि,
एगे नो अप्पणो वज्ज पासइ नो परस्स

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
अप्पणो नामेगे वज्ज उदीरेइ नो परस्स तहेव —जाव—
एगे नो अप्पणो वज्ज उदीरेइ नो परस्स

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
अप्पणो नामेगे वज्ज उवसामेइ तहेव —जाव—
एगे नो अप्पणो वज्ज उवसामेइ नो परस्स

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
अब्भुट्ठेइ नामेगे नो अब्भुट्ठावेइ,
अब्भुट्ठावेइ नामेगे नो अब्भुट्ठेइ,
एगे अब्भुट्ठेइ वि अब्भुट्ठावेइ वि,
एगे नो अब्भुट्ठेइ नो अब्भुट्ठावेइ

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
वदइ नामेगे, नो वदावेइ,
वदावेइ नामेगे, नो वदइ,
एगे वदइ वि, वदावेइ वि,
एगे नो वदइ नो वदावेइ
एव सक्कारेइ सम्माणेइ पूएइ वाएइ पडिपुच्छइ

पुच्छइ वागरेइ

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-

सुत्तधरे नामेगे नो अत्थधरे,

अत्थधरे नामेगे नो सुत्तधरे,

एगे सुत्तधरे वि अत्थधरे वि,

एगे नो सुत्तधरे नो अत्थधरे १४

२५६ चमरस्स ण असुरिंदस्स असुरकुमाररन्नो चत्तारि लोगपाला पण्णत्ता त जहा-

सोमे, जमे, वरुणे, वेसमणे

एव बलिस्स वि सोमे, जमे, वेसमणे, वरुणे

एव धरणस्स वि

कालपाले, कोलपाले, सेलपाले, सखपाले

एव भूयाणदस्स वि

कालपाले कोलपाले, सखपाले, सेलपाले

एव वेणुदेवस्स वि

चित्ते, विचित्ते, चित्तपक्खे, विचित्तपक्खे

एव वेणुदालिस्स वि

चित्ते, विचित्ते, विचित्तपक्खे, चित्तपक्खे

एव हरिकतस्स वि

पभे, सुपभे, पभकते, सुपभकते

एव हरिस्सहस्स वि

पभे, सुपभे, सुपभकते, पभकते

एव अग्गिसिहस्स वि

तेउ, तेउसिहे, तेउकते, तेउप्पभे

एव अग्गिमाणवस्स वि

तेऊ, तेऊसिहे, तेउप्पभे, तेउकते

एव पन्नस्स वि

रूए, रूयसे, रूयकते, रूयप्पभे

एव विसिट्ठस्स वि,

रूए, रूयसे, रूयप्पभे, रूयकते

एव जलकतस्स वि

जले, जलरए, जलकते, जलप्पभे

एव जलप्पहस्स वि

जले, जलरए, जलप्पभे, जलकते

एव अमितगतिस्स वि

तुरियगइ, खिप्पगइ, सीहगइ, सीहविक्कमगइ.

एव अमितवाहणस्स वि

तुरियगइ, खिप्पगइ, सीहविक्कमगइ, सीहगइ

एव वेलबस्स वि

काले, महाकाले, अजणे, रिट्ठे

एव पभजणस्स वि

काले, महाकाले, रिट्ठे, अजणे

एव घोसस्स वि

आवत्ते, वियावत्ते णदियावत्ते महाणदियावत्ते

एव महाघोसस्स वि

आवत्ते वियावत्ते, महाणवियावत्ते, णदियावत्ते

एव सक्कस्स वि

सोमे, जमे, वरुणे, वेसमणे

एव ईसाणस्स वि

सोमे, जमे, वेसमणे वरुणे

एव एगतरिया जाव अच्चुयस्स

चउव्विहा वाउकुमारा पण्णत्ता त जहा-

काले, महाकाले, वेलबे, पभजणे ३३

२५७ चउव्विहा देवा पण्णत्ता त जहा-

भवणवासी, वाणमतरा, जोइसिया, विमाणवासी

२५८ चउव्विहे पमाणे पण्णत्ते त जहा-

दव्वप्पमाणे, खेतप्पमाणे, कालप्पमाणे, भावप्पमाणे

२५९ चत्तारि दिसाकुमारिमहत्तरियाओ पण्णत्ताओ त जहा-

रूया, रूयसा, सुरूवा, रूपावती

चत्तारि विज्जुकुमारिमहत्तरियाओ पण्णत्ताओ त जहा-

चित्ता, चित्तकणगा, सएरा, सोयामणी २

२६० सक्कस्स ण देविंदस्स देवरन्नो मज्झिमपरिसाए देवा
चत्तारि पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता

ईसाणस्सण देविंदस्स देवरन्नो मज्झिमपरिसाए देवीण चत्तारि
पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता २

२६१ चउव्विहे ससारे पण्णत्ते त जहा-
दव्वससारे खेत्तससारे, कालससारे, भावससारे

२६२ चउव्विहे दिट्ठिवाए पण्णत्ते त जहा-
परिकम्म, सुत्ताइ, पुव्वगए, अणुजोगे

२६३ चउव्विहे पायच्छित्ते पण्णत्ते त जहा-
नाणपायच्छित्ते, दसणपायच्छित्ते,
चरित्तपायच्छित्ते, चियत्तकिच्चपायच्छित्ते

चउव्विहे पायच्छित्ते पण्णत्ते त जहा
परिसेवणापायच्छित्ते, सजोयणापायच्छित्ते,
आलोअणापायच्छित्ते, पलिउचणापायच्छित्ते २

२६४ चउव्विहे काले पण्णत्ते त जहा-
पमाणकाले, अहाउयनिव्वत्तिकाले,
मरणकाले, अद्धाकाले

२६५ चउव्विहे पोग्गलपरिणामे पण्णत्ते त जहा-
वण्णपरिणामे, गधपरिणामे,
रसपरिणामे, फासपरिणामे

२६६ भरहेरवएसु ण वासेसु पुरिम पच्छिमवज्जा मज्झिमग

बावीस अरहता भगवता चाउज्जाम धम्म पण्णवेंति त जहा-

सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमण,

सव्वाओ मुसावायाओ वेरमण,

सव्वाओ अदिण्णादाणाओ वेरमण,

सव्वाओ बहिद्धादाणाओ वेरमण

सव्वेसु ण महाविदेहेसु अरहता भगवता चाउज्जाम धम्म पण्णवेंति त जहा-

सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमण —जाव—

सव्वाओ बहिद्धादाणाओ वेरमण २

२६७ चत्तारि दुग्गइओ पण्णत्ताओ त जहा-

नेरइयदुग्गई, तिरिक्खजोणियदुग्गई,

मणुस्सदुग्गई, देवदुग्गई

चत्तारि सुगइओ पण्णत्ताओ त जहा-

सिद्धसुगई, देवसुगई,

मणुयसुगई, सुकुलपच्चायाई

चत्तारि दुग्गया पण्णत्ता त जहा-

नेरइयदुग्गया, तिरिक्खजोणियदुग्गया,

मणुयदुग्गया, देवदुग्गया

चत्तारि सुगया पण्णत्ता त जहा-

सिद्धसुगया —जाव— सुकुलपच्चायया ४

२६८ पढमसमयजिणस्स ण चत्तारि कम्मसा खीणा भवति त
जहा-

नाणावरणिज्ज, दसणावरणिज्ज,
मोहणिज्ज, अतराइय

उप्पण्णणाणदसणधरे ण अरहा जिणे केवली चत्तारि
कम्मसे वेदेंति त जहा-

वेयणिज्ज, आउय, नाम, गोत्त

पढमसमयसिद्धस्स ण चत्तारि कम्मसा जुगव खिज्जति त
जहा-

वेयणिज्ज, आउय, नाम, गोत्त ३

२६९ चउहि ठाणेहि हासुप्पत्ती सिया त जहा-

पासित्ता, भासेत्ता, सुणेत्ता, सभरेत्ता

२७० चउव्विहे अतरे पण्णत्ते त जहा-

कट्ठ तरे, पम्हतरे, लोहतरे, पत्थरतरे

इत्थिए वा पुरिसस्स वा चउव्विहे अतरे पण्णत्ते त जहा

कट्ठ तरसमाणे, पम्हतरसमाणे,
लोहतरसमाणे, पत्थरतरसमाणे २

२७१ चत्तारि भयगा पण्णत्ता त जहा-

दिवसभयए, जत्ताभयए,
उच्चत्तभयए, कब्बालभयए

२७२ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-

सपागडपडिसेवी नामेगे नो पच्छण्णपडिसेवी,
पच्छण्णपडिसेवी नामेगे नो सपागडपडिसेवी,
एगे सपागडपडिसेवी वि पच्छण्णपडिसेवी वि,
एगे नो सपागडपडिसेवी नो पच्छण्णपडिसेवी

२७३ चमरस्स ण असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो सोमस्स महारण्णो चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ त जहा-
कणगा, कणगलया, चित्तगुत्ता, वसुंधरा
एव जमस्स, वरुणस्स, वेसमणस्स

वलिस्स ण वइरोयणिंदस्स वइरोयणरण्णो सोमस्स महारण्णो चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ त जहा-
मितगा, सुभद्दा, विज्जुत्ता, असणी
एव जमस्स, वेसमणस्स, वरुणस्स

धरणस्स ण नागकुमारिंदस्स नागकुमाररण्णो कालवालस्स महारण्णो चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ त जहा-
असोगा, विमला, सुप्पभा, सुदसणा
एव —जाव— सखवालस्स

भूताणदस्स ण नागकुमारिंदस्स नागकुमाररण्णो कालवालस्स महारण्णो चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ त जहा-
सुणदा सुभद्दा, सुजाया, सुमणा
एव —जाव— सेलवालस्स जहा धरणस्स
एव सव्वेसि दाहिणिवलोगपालाण —जाव— घोसस्स जहा भूताणदस्स

एव —जाव— महाघोसस्स लोगपालाण

कालस्स ण पिसाइदस्स पिसायरण्णो चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ त जहा-

कमला, कमलप्पभा, उप्पला, सुदसणा

एव महाकालस्स वि

सुरूवस्स ण भूइदस्स भूयरण्णो चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ त जहा-

रूववई, बहुरूवा, सुरूवा, सुभगा

एव पडिरूवस्स वि

पुण्णभद्दस्स ण जक्खिदस्स जक्खरण्णो चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ त जहा-

पुत्ता, बहुपुत्तिया, उत्तमा, तारगा

एव मणिभद्दस्स वि

भीमस्स ण रक्खसिदस्स रक्खसरण्णो चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ त जहा-

पउमा, वसुमई, कणगा, रयणप्पभा

एव महाभीमस्स वि

किनरस्स ण किन्नरिंदस्स चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ त जहा-

वडेंसा, केतुमई, रइसेणा, रइप्पभा

एव किंपुरिसस्स वि

सप्पुरिसस्स ण किंपुरिसिंदस्स चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ त जहा-

रोहिणी, नवमिया, हिरी, पुप्फवई

एव महापुरिसस्स वि

अइकायस्स ण महोरगिंदस्स चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ त जहा-

भुयगा, भुयगवई, महाकच्छा, फुडा

एव महाकायस्स वि

गीयरइस्स ण गधव्विंदस्स चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ त जहा-

सुघोसा विमला, सुस्सरा, सरस्सई

एव गीयजसस्स वि

चदस्स ण जोइसिंदस्स जोइसरण्णो चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ त जहा-

चदप्पभा, दोसिणाभा, अच्चिमाली, पभकरा

एव सूरस्स वि णवर सूरप्पभा दोसिणाभा अच्चिमाली पभकरा

इगालस्स ण महागहस्स चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ त जहा-

विजया, वेजयति, जयति, अपराजिया

एव सव्वेसि महग्गहाण —जाव— भावकेउस्स

सक्कस्स ण देविंदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो चत्तारि

अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ त जहा-
रोहिणी, मयणा, चित्ता, सोमा
एव —जाव— वेसमणस्स

ईसाणस्स ण देविंदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो चत्तारि
अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ त जहा-
पुढवी, राई, रयणी, विज्जू
एव —जाव— वरुणस्स २३०

२७४ चत्तारि गोरसविगईओ पण्णत्ताओ त जहा-
खीर, दहि, सप्पि, णवणीय

चत्तारि सिणेहविगईओ पण्णत्ताओ त जहा-
तेल्ल, घय, वसा, नवणीय

चत्तारि महाविगईओ पण्णत्ताओ त जहा-
महु, मस, मज्ज, णवणीय ३

२७५ चत्तारि कूडागारा पण्णत्ता त जहा-
गुत्ते नामेगे गुत्ते, गुत्ते नामेगे अगुत्ते,
अगुत्ते नामेगे गुत्ते, अगुत्ते नामेगे अगुत्ते

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
गुत्ते नामेगे गुत्ते -जाव—
अगुत्ते नामेगे अगुत्ते

चत्तारि कूडागारसालाओ पण्णत्ताओ त जहा-
गुत्ता नामेगा गुत्तदुवारा,

गुत्ता नामेगा अगुत्तदुवारा,
अगुत्ता नामेगा गुत्तदुवारा,
अगुत्ता नामेगा अगुत्तदुवारा

एवामेव चत्तारित्थीओ पण्णत्ताओ त जहा-
गुत्ता नामेगा गुत्तिंदिया,
गुत्ता नामेगा अगुत्तिंदिया,
गुत्तिंदिया नामेगा अगुत्ता,
अगुत्तिंदिया नामेगा अगुत्ता ४

२७६ चउव्विहा ओगाहणा पण्णत्ता त जहा-
दव्वोगाहणा, खेत्तोगाहणा,
कालोगाहणा, भावोगाहणा

२७७ चत्तारि पण्णत्तीओ अगबाहिरियाओ पण्णत्ताओ त जहा-
चदपण्णत्ती, सूरपण्णत्ती,
जबुद्दीवपण्णत्ती, दीवसागरपण्णत्ती

चउट्ठाणस्स बीओ उद्देसो

२७८ चत्तारि पडिसलीणा पण्णत्ता त जहा-
कोहपडिसलीणे, माणपडिसलीणे,
मायापडिसलीणे, लोभपडिसलीणे

चत्तारि अपडिसलीणा पण्णत्ता त जहा-
कोहअपडिसलीणे —जाव— लोभअपडिसलीणे

चत्तारि पडिसलीणा पण्णत्ता त जहा-
मणपडिसलीणे, वइपडिसलीणे,
कायपडिसलीणे, इदियपडिसलीणे
चत्तारि अपडिसलीणा पण्णत्ता त जहा-
मणअपडिसलीणे —जाव— इदियअपडिसलीणे ४

२७९ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
दीणे नामेगे दीणे, दीणे नामेगे अदीणे,
अदीणे नामेगे दीणे, अदीणे नामेगे अदीणे
चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
दीणे नामेगे दीणपरिणए,
दीणे नामेगे अदीणपरिणए,
अदीणे नामेगे दीणपरिणए,
अदीणे नामेगे अदीणपरिणए
चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा
दीणे नामेगे दीणरूवे तहेव —जाव—
अदीणे नामेगे अदीणरूवे
एव दीणमणे, दीणसकप्पे, दीणपण्णे, दीणदिट्ठी, दीणसीलायारे, दीणववहारे
चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
दीणे नामेगे दीणपरक्कमे, तहेव —जाव—
अदीणे नामेगे अदीणपरक्कमे
एव सव्वेसि चउभगो भाणियव्वो

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
दीणे नामेगे दीणवित्ती, तहेव —जाव—
अदीणे नामेगे अदीणवित्ती

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
दीणे नामेगे दीणजाई, तहेव —जाव—
अदीणे नामेगे अदीणजाई

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
दीणे नामेगे दीणभासी, तहेव —जाव—
अदीणे नामेगे अदीणभासी

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
दीणे नामेगे दीणोभासी, तहेव —जाव—
अदीणे नामेगे अदीणोभासी

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
दीणे नामेगे दीणसेवी, तहेव —जाव—
अदीणे नामेगे अदीणसेवी

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
दीणे नामेगे दीण परियाए, तहेव —जाव—
अदीणे नामेगे अदीण परियाए

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
दीणे नामेगे दीणपरियाले, तहेव —जाव—
अदीणे नामेगे अदीणपरियाले

सव्वत्थ चउभगो १७

२८०　चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता तं जहा-

अज्जे नामेगे अज्जे, अज्जे नामेगे अणज्जे,

अणज्जे नामेगे अज्जे, अणज्जे नामेगे अणज्जे

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता तं जहा-

अज्जे नामेगे अज्जपरिणए, तहेव —जाव —

अणज्जे नामेगे अणज्जपरिणए

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता तं जहा-

अज्ज नामेगे अज्जरूवे, तहेव —जाव—

अणज्जे नामेगे अणज्जरूवे

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता तं जहा-

अज्जे नामेगे अज्जमणे, तहेव —जाव—

अणज्जे नामेगे अणज्जमणे

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता तं जहा-

अज्जे नामेगे अज्जसंकप्पे, तहेव —जाव—

अणज्जे नामेगे अणज्जसंकप्पे

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता तं जहा-

अज्जे नामेगे अज्जपण्णे, तहेव —जाव—

अणज्जे नामेगे अणज्जपण्णे

चत्तारिपुरिस जाया पण्णत्ता तं जहा-

अज्जे नामेगे अज्जदिट्ठी तहेव - जाव—

अणज्जे नामेगे अणज्जदिट्ठी

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता तं जहा-

अज्जे नामेगे अज्जसीलायारे, तहेव —जाव—
अणज्जे नामेगे अणज्जसीलायारे

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता तं जहा-

अज्जे नामेगे अज्जववहारे, तहेव —जाव—
अणज्जे नामेगे अणज्जववहारे

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता तं जहा-

अज्जे नामेगे अज्जपरक्कमे, तहेव —जाव—
अणज्जे नामेगे अणज्जपरक्कमे

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता तं जहा-

अज्जे नामेगे अज्जवित्ती, तहेव —जाव—
अणज्जे नामेगे अणज्जवित्ती

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता तं जहा-

अज्जे नामेगे अज्जजाई, तहेव —जाव—
अणज्जे नामेगे अणज्जजाई

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता तं जहा-

अज्जे नामेगे अज्जभासी, तहेव —जाव—
अणज्जे नामेगे अणज्जभासी

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता तं जहा-

अज्जे नामेगे अज्जओभासी, तहेव —जाव—
अणज्जे नामेगे अणज्जओभासी

२८० चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
अज्जे नामेगे अज्जे अज्जे नामेगे अणज्जे,
अणज्जे नामेगे अज्जे अणज्जे नामेगे अणज्जे

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
अज्जे नामेगे अज्जपरिणए, तहेव —जाव —
अणज्जे नामेगे अणज्जपरिणए

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
अज्ज नामेगे अज्जरूवे, तहेव —जाव—
अणज्जे नामेगे अणज्जरूवे

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
अज्जे नामेगे अज्जमणे, तहेव —जाव—
अणज्जे नामेगे अणज्जमणे

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
अज्जे नामेगे अज्जसकप्पे, तहेव —जाव—
अणज्जे नामेगे अणज्जसकप्पे

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
अज्जे नामेगे अज्जपण्णे, तहेव —जाव—
अणज्जे नामेगे अणज्जपण्णे

चत्तारिपुरिस जाया पण्णत्ता त जहा-
अज्जे नामेगे अज्जदिट्ठी तहेव —जाव—
अणज्जे नामेगे अणज्जदिट्ठी

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
अज्जे नामेगे अज्जसीलायारे, तहेव —जाव—
अणज्जे नामेगे अणज्जसीलायारे

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
अज्जे नामेगे अज्जववहारे, तहेव —जाव—
अणज्जे नामेगे अणज्जववहारे

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
अज्जे नामेगे अज्जपरक्कमे, तहेव —जाव—
अणज्जे नामेगे अणज्जपरक्कमे

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
अज्जे नामेगे अज्जवित्ती, तहेव —जाव—
अणज्जे नामेगे अणज्जवित्ती

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
अज्जे नामेगे अज्जजाई, तहेव —जाव—
अणज्जे नामेगे अणज्जजाई

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
अज्जे नामेगे अज्जभासी, तहेव —जाव—
अणज्जे नामेगे अणज्जभासी

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
अज्जे नामेगे अज्जओभासी, तहेव —जाव —
अणज्जे नामेगे अणज्जओभासी

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
अज्जे नामेगे अज्जसेवी, तहेव —जाव—
अणज्जे नामेगे अणज्जसेवी

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
अज्जे नामेगे अज्जपरियाए, तहेव —जाव—
अणज्जे नामेगे अणज्जपरियाए

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
अज्जे नामेगे अज्जपरियाले, तहेव —जाव—
अणज्जे नामेगे अणज्जपरियाले
एव सत्तर आलावगा जहा दीणेण भणिया तहा अज्जेण वि भाणियव्वा

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
अज्जे नामेगे अज्जभावे, अज्जे नामेगे अणज्जभावे,
अणज्जे नामेगे अज्जभावे, अणज्जे नामेगे अणज्जभावे १८

२८१ चत्तारि उसभा पण्णत्ता त जहा-
जाइसम्पन्ने, कुलसम्पन्ने,
बलसम्पन्ने, रूवसम्पन्ने

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
जाईसम्पन्ने —जाव— रूवसम्पन्ने

चत्तारि उसभा पण्णत्ता त जहा-
जाईसम्पन्ने नामेगे नो कुलसम्पन्ने,

कुलसम्पन्ने नामेगे नो जाईसम्पन्ने,
एगे जाई सम्पन्ने वि कुलसम्पन्ने वि,
एगे नो जाईसम्पन्ने नो कुलसम्पन्ने

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
जाईसम्पन्ने नामेगे नो कुलसम्पन्ने तहेव जाव
नो जाईसम्पन्ने नो कुलसम्पन्ने

चत्तारि उसभा पण्णत्ता त जहा-
जाईसम्पन्ने नामेगे नो बलसम्पन्ने,
बलसम्पन्ने नामेगे नो जाईसम्पन्ने,
एगे जाईसम्पन्ने वि बलसम्पन्ने वि,
एगे नो जाईसम्पन्ने नो बलसम्पन्ने

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
जाईसम्पन्ने नामेगे नो बलसम्पन्ने, तहेव —जाव—
एगे नो जाईसम्पन्ने नो बलसम्पन्ने

चत्तारि उसभा पण्णत्ता त जहा-
जाईसम्पन्ने नामेगे नो रूवसम्पन्ने,
रूवसम्पन्ने नामेगे नो जाईसम्पन्ने,
एगे जाईसम्प ने वि, रूवसम्पन्ने वि,
एगे नो जाइसम्पन्ने नो रूवसम्पन्ने

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
जाईसम्पन्ने नामेगे नो रूवसम्पन्ने, तहेव —जाव—

एगे नो जाईसम्प ने नो रूवसम्पन्ने

चत्तारि उसभा पण्णत्ता त जहा-
कुलसम्पन्ने नामेगे नो वलसम्पन्ने,
वलसम्पन्ने नामेगे नो कुलसम्पन्ने,
एगे कुलइसम्पन्ने वि वलसम्पन्ने वि,
एगे नो कुलसम्पन्ने नो वलसम्पन्ने

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
कुलसम्पन्ने नामेगे नो वलसम्पन्ने तहेव —जाव—
एगे नो कुलसम्पन्ने नो वलसम्पन्ने

चत्तारि उसभा पण्णत्ता त जहा-
कुलसम्पन्ने नामेगे नो रूवसम्पन्ने,
रूवसम्पन्ने नामेगे नो कुलसम्पन्ने
एगे कुलसम्पन्ने वि रूवसम्पन्ने वि,
एगे नो कुलसम्पन्ने नो रूवसम्पन्ने

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
कुलसम्पन्ने नामेगे नो रूवसम्पन्ने तहेव —जाव—
एगे नो कुलसम्पन्ने नो रूवसम्पन्ने

चत्तारि उसभा पण्णत्ता त जहा-
वलसम्पन्ने नामेगे नो रूवसम्पन्ने,
रूवसम्पन्ने नामेगे नो वलसम्पन्ने,
एगे वलसम्पन्ने वि रूवसम्पन्ने वि,
एगे नो वलसम्पन्ने नो रूवसम्पन्ने

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-

बलसम्पन्ने नामेगे नो रूवसम्पन्ने, तहेव —जाव—

एगे नो बलसम्पन्ने नो रूवसम्पन्ने

चत्तारि हत्थि पण्णत्ता त जहा-

भद्दे मदे, मिए संकिन्ने

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-

भद्दे —जाव संकिन्ने

चत्तारि हत्थि पण्णत्ता, त जहा-

भद्दे नामेगे भद्दमणे,

भद्दे नामेगे मदमणे,

भद्दे नामेगे मियमणे,

भद्दे नामेगे संकिण्णमणे

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-

भद्दे नामेगे भद्दमणे, तहेव —जाव

भद्दे नामेगे संकिण्णमणे

चत्तारि हत्थि पण्णत्ता त जहा-

मदे नामेगे भद्दमणे,

मदे नामेगे मदमणे,

मदे नामेगे मियमणे,

मंदे नामेगे संकिण्णमणे

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-

मदे नामेगे भद्दमणे, तहेव —जाव—
मदे नामेगे सकिण्णमणे

चत्तारि हत्थि पण्णत्ता त जहा-
मिए नामेगे भद्दमणे,
मिए नामेगे मदमणे,
मिए नामेगे मियमणे,
मिए नामेगे सकिण्णमणे

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
मिए नामेगे भद्दमणे, तहेव —जाव—
मिए नामेगे सकिण्णमणे

चत्तारि हत्थि पण्णत्ता त जहा-
सकिण्णे नामेगे भद्दमणे,
सकिण्णे नामेगे मदमणे,
सकिण्णे नामेगे मियमणे,
सकिण्णे नामेगे सकिण्णमणे

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
सकिण्णे नामेगे भद्दमणे, तहेव —जाव—
सकिण्णे नामेगे सकिण्णमणे २४

गाहाओ—मधुगुलियपिंगलक्खो ,
अणुपुव्वसुजायदीहलगूलो ।
पुरओ उदग्गधीरो ,
सव्वगसमाहिओ भद्दो ।१।

चलबहुलविसमचम्मो ,
थूलसिरो थूलएण पेएण ।
थूलणहदंतवालो ,
हरिपिंगललोयणो मंदो ।२।
तणुओ तणुअग्गीवो ,
तणुयतओ तणुयदंतणहवालो ।
भीरू तत्थुव्विग्गो ,
तासी य भवे मिए णाम ।३।
एएसिं हत्थीण ,
थोवं थोवं, तु जो हरइ हत्थी ।
रूवेण व सीलेण व ,
सो संकिण्णोत्ति नायव्वो ।४।
भद्दो मज्जइ सरए ,
मंदो पुण मज्जए वसंतम्मि ।
मिउ मज्जइ हेमंते ,
संकिण्णो सव्वकालम्मि ।५।

२८२ चत्तारि विकहाओ पण्णत्ताओ तं जहा-
इत्थिकहा, भत्तकहा, देसकहा, रायकहा

इत्थिकहा चउव्विहा पण्णत्ता तं जहा-
इत्थीणं जाइकहा, इत्थीणं कुलकहा,
इत्थीणं रूवकहा, इत्थीणं णेवत्थकहा

भत्तकहा चउव्विहा पण्णत्ता तं जहा-

भत्तस्स आवावकहा, भत्तस्स णिव्वावकहा,
भत्तस्स आरभकहा, भत्तस्स निट्ठाणकहा

देसकहा चउव्विहा पण्णत्ता त जहा-
देसविहिकहा, देसविकप्पकहा,
देसच्छदकहा, देसनेवत्थकहा

रायकहा चउव्विहा पण्णत्ता त जहा-
रण्णो अइयाणकहा, रण्णो निज्जाणकहा,
रण्णो बलवाहणकहा, रण्णो कोसकोट्ठागारकहा

चउव्विहा धम्मकहा पण्णत्ता त जहा-
अक्खेवणी, विक्खेवणी, सवेयणी, निव्वेयणी

अक्खेवणी कहा चउव्विहा पण्णत्ता त जहा-
आयारअक्खेवणी, ववहारअक्खेवणी,
पन्नत्तिअक्खेवणी, दिट्ठिवायअक्खेवणी

विक्खेवणी कहा चउव्विहा पण्णत्ता त जहा-
ससमय कहेइ, ससमय कहित्ता परसमय कहेइ,
परसमय कहेत्ता ससमय ठावइत्ता भवइ,
सम्मावाय कहेइ सम्मावाय कहेत्ता मिच्छावाय कहेइ,
मिच्छावाय कहेत्ता सम्मावाय ठावइत्ता भवइ

सवेयणी कहा चउव्विहा पण्णत्ता त जहा-
इहलोगसवेगणी, परलोगसवेगणी,
आयसरीरसवेगणी, परसरीरसवेगणी

निव्वेगणीकहा चउव्विहा पण्णत्ता त जहा-

इहलोगे दुच्चिण्णा कम्मा इहलोगे दुहफलविवागसजुत्ता भवति,

इहलोगे दुच्चिण्णा कम्मा परलोगे दुहफलविवागसजुत्ता भवति,

परलोगे दुच्चिण्णा कम्मा इहलोगे दुहफलविवागसजुत्ता भवति,

परलोगे दुच्चिण्णा कम्मा परलोगे दुहफलविवागसजुत्ता भवति,

इहलोगे सुचिण्णा कम्मा इहलोगे सुहफलविवागसजुत्ता भवति,

इहलोगे सुचिण्णा कम्मा परलोगे सुहफलविवागसजुत्ता भवति,

परलोगे सुच्चिण्णा कम्मा इहलोगे सुहफलविवागसजुत्ता भवति,

परलोगे सुचिण्णा कम्मा परलोगे सुहफलविवागसजुत्ता भवति ११

२८३ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-

किसे नामेगे किसे, किसे नामेगे दढे,

दढे नामेगे किसे, दढे नामेगे दढे ११

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-

किसे नामेगे किससरीरे,

किसे नामेगे दढसरीरे,
दढे नामेगे किससरीरे,
दढे नामेगे दढसरीरे

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
किससरीरस्स नामेगस्स नाणदसणे समुप्पज्जइ नो दढ-
सरीरस्स,
दढसरीरस्स नामेगस्स नाणदसणे समुप्पज्जइ नो किस-
सरीरस्स,
एगस्स किससरीरस्स वि नाणदसणे समुप्पज्जइ दढ-
सरीरस्स वि,
एगस्स नो किससरीरस्स नाणदसणे समुप्पज्जइ नो दढ
सरीरस्स ३

२८४ चउहिं ठाणेहिं निग्गथाण वा, निग्गथीण वा अँस्सि समयसि
अइसेसे नाणदसणे समुप्पज्जिउकामे वि न समुप्पज्जेज्जा
त जहा
अभिक्खण अभिक्खण इत्थिकह, भत्तकह, देसकह रायकह
कहेत्ता भवइ
विवेगेण विउस्सग्गेण नो सम्ममप्पाण भावित्ता भवइ,
पुव्वरत्तावरत्तकालसमयसि नो धम्मजागरिय जागरइत्ता
भवइ,
फासुयस्स एसणिज्जस्स उछस्स सामुदाणियस्स नो सम्म
गवेसिया भवइ

इच्चेएहिं चउहिं ठाणेहिं निग्गथाण वा, निग्गथीण वा —जाव— नो समुप्पज्जेज्जा

चउहिं ठाणेहिं निग्गथाण वा, निग्गथीण वा अइसेसे नाण-दसणे समुप्पज्जिउकामे समुप्पज्जेज्जा त जहा-

इत्थिकह भत्तकह देसकह रायकह नो कहेत्ता भवइ,
विवेगेण विउस्सगेण सम्ममप्पाण भावेत्ता भवइ,
पुव्वरत्तावरत्तकालसमयसि धम्मजागरिय जागरइत्ता भवइ,
फासुयस्स एसणिज्जस्स उछस्स सामुदाणियस्स सम्म गवेसिया भवइ,
इच्चेएहिं चउहिं ठाणेहिं निग्गथाण वा, निग्गथीण वा —जाव— समुप्पज्जेज्जा २

२८५ नो कप्पइ निग्गथाण वा, निग्गथीण वा चउहिं महापाडिव-एहिं सज्झाय करेत्तए त जहा-

आसाढपाडिवए, इदमहपाडिवए,
कत्तियपाडिवए, सुगिम्हपाडिवए

नो कप्पइ निग्गथाण वा, निग्गथीण वा चउहिं सझाहिं सज्झाय करेत्तए त जहा-

पढमाए, पच्छिमाए, मज्झण्हे, अड्ढरत्ते

कप्पइ निग्गथाण वा, निग्गथीण वा चाउक्काल सज्झाय करेत्तए त जहा

पुव्वण्हे, अवरण्हे, पओसे, पच्चूसे ३

२८६ चउव्विहा लोगट्ठिई पण्णत्ता त जहा-

आगासपइट्ठिए वाए,

वायपइट्ठिए उदही,

उदहिपइट्ठिया पुढवी,

पुढविपइट्ठिया तसा थावरा पाणा

२८७ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-

तहे नामेगे, नोतहे नामेगे,

सोवत्थी नामेगे, पहाणे नामेगे

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-

आयतकरे नामेगे नो परतकरे,

परतकरे नामेगे नो आयतकरे,

एगे आयतकरे वि परतकरे वि,

एगे नो आयतकरे नो परतकरे

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-

आयतमे नामेगे नो परतमे —जाव —

एगे नो आयतमे नो परतमे

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-

आयदमे नामेगे नो परदमे, —जाव—

एगे नो आयदमे नो परदमे ४

२८८ चउव्विहा गरहा पण्णत्ता त जहा-

उवसपज्जामित्तेगा गरहा,

घिइगिच्छामित्तेगा गरहा,

ज किचि मिच्छामीत्तेगा गरहा,

एव पि पन्नत्तेगा गरहा

२८६ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-

अप्पणो नामेगे अलमथु भवइ नो परस्स,

परस्स नामेगे अलमथु भवइ नो अप्पणो,

एगे अप्पणो वि अलमथु भवइ परस्स वि,

एगे नो अप्पणो अलमथु भवइ नो परस्स

चत्तारि मग्गा पण्णत्ता त जहा-

उज्जू नामेगे उज्जू, उज्जू नामेगे वके,

वके नामेगे उज्जू वके नामेगे वके

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-

उज्जू नामेगे उज्जू, — जाव —

वके नामेगे वके

चत्तारि मग्गा पण्णत्ता त जहा-

खेमे नामेगे खेमे, खेमे नामेगे अखेमे,

अखेमे नामेगे खेमे, अखेमे नामेगे अखेमे

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-

खेमे नामेगे खेमे —जाव—

अखेमे नामेगे अखेमे

चत्तारि मग्गा पण्णत्ता त जहा-

खेमे नामेगे खेमरूवे, खेमे नामेगे अखेमरूवे,
अखेमे नामेगे खेमरूवे, अखेमे नामेगे अखेमरूवे

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
खेमे नामेगे खेमरूवे, —जाव—
अखेमे नामेगे अखेमरूवे

चत्तारि सवुक्का पण्णत्ता त जहा-
वामे नामेगे वामावत्ते,
वामे नामेगे दाहिणावत्ते,
दाहिणे नामेगे वामावत्ते,
दाहिणे नामेगे दाहिणावत्ते

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
वामे नामेगे वामावत्ते, —जाव—
दहिणे नामेगे दाहिणावत्ते

चत्तारि धूमसिहाओ पण्णत्ताओ त जहा-
वामा नामेगा वामावत्ता, —जाव—
दाहिणा नामेगा दाहिणावत्ता

एवामेव चत्तारित्थीओ पण्णत्ताओ त जहा-
वामा नामेगा वामावत्ता, —जाव—
दाहिणा नामेगा दाहिणावत्ता

चत्तारि अग्गिसिहाओ पण्णत्ताओ त जहा-
वामा नामेगा वामावत्ता, —जाव—

दाहिणा नामेगा दाहिणावत्ता

एवामेव चत्तारित्थिओ पण्णत्ताओ त जहा-

वामा नामेगा वामावत्ता, —जाव—

दाहिणा नामेगा दाहिणावत्ता

चत्तारि वायमडलिया पण्णत्ता त जहा-

वामा नामेगा वामावत्ता, —जाव

दाहिणा नामेगा दाहिणावत्ता

एवामेव चत्तारित्थीओ पण्णत्ताओ त जहा-

वामा नामेगा वामावत्ता, —जाव

दाहिणा नामेगा दाहिणावत्ता

चत्तारि वणसडा पण्णत्ता त जहा-

वामे नामेगे वामावत्ते, —जाव—

दाहिणे नामेगे दाहिणावत्ते

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-

वामे नामेगे वामावत्ते, जाव—

दाहिणे नामेगे दाहिणावत्ते १७

२९० चउहि ठाणेहि निग्गथे निग्गथि आलवमाणे वा, सलवमाणे वा नाइक्कमइ त जहा-

पथ पुच्छमाणे वा, पथ देसमाणे वा,

असण वा —जाव साइम वा दलमाणे वा,

असण वा —जाव— साइम वा दलावेमाणे वा

२९१ तमुक्कायस्स ण चत्तारि नामधेज्जा पण्णत्ता त जहा-
तमिति वा, तमुक्कारेइ वा,
अधकारेइ वा, महधकारेइ वा

तमुक्कायस्स ण चत्तारि नामधेज्जा पण्णत्ता त जहा-
लोगधगारेइ वा, लोगतमसेइ वा,
देवधगारेइ वा, देवतमसेइ वा

तमुक्कायस्स ण चत्तारि नामधेज्जा पण्णत्ता त जहा-
वातफलिहेइ वा, वातफलिहखोमेइ वा,
देवरण्णेइ वा, देववूहेइ वा

तमुक्काए ण चत्तारि कप्पे आवरित्ता चिट्ठइ त जहा-
सोधम्म, ईसाण, सणकुमार, माहिंद ४

२९२ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
सपागडपडिसेवी नामेगे, पच्छन्नपडिसेवी नामेगे,
पडुप्पन्ननदी नामेगे, निस्सरणनदी नामेगे

चत्तारि सेणाओ पण्णत्ताओ त जहा-
जइत्ता नामेगे नो पराजिणित्ता,
पराजिणित्ता नामेगे नो जइत्ता,
एगा जइत्ता वि पराजिणित्ता वि,
एगा नो जइत्ता नो पराजिणित्ता

एवामेव पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
जइत्ता नामेगे नो पराजिणित्ता, —जाव—

एगा नो जइत्ता नो पराजिणित्ता

चत्तारि सेणाओ पण्णत्ताओ त जहा-

जइत्ता नामेगा जयइ,

जइत्ता नामेगा पराजिणइ,

पराजिणित्ता नामेगा जयइ,

पराजिणित्ता नामेगा पराजिणइ

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-

जइत्ता नामेगा जयइ —जाव— पराजिणित्ता नामेगा पराजिणइ ५

३ चत्तारि केयणा पण्णत्ता त जहा-

बसीमूलकेयणए, मेढविसाणकेयणए,

गोमुत्तिकेयणए, अवलेहणियकेयणए

एवामेव चउव्विहा माया पण्णत्ता त जहा-

बसीमूलकेयणासमाणा —जाव— अवलेहणियासमाणा,

वसीमूलकेयणासमाण माय अणुपविट्ठे जीवे काल करेइ नेरइएसु उववज्जइ,

मेढविसाणकेयणासमाण माय अणुप्पविट्ठे जीवे काल करेइ तिरिक्खजोणिएसु उववज्जइ,

गोमुत्तिकेयणासमाण माय अणुपविट्ठे जीवे काल करेइ मणुस्सेसु उववज्जइ,

अवलेहणियाकेयणासमाण माय अणुपविट्ठे जीवे काल करेइ देवेसु उववज्जइ

चत्तारि थभा पण्णत्ता त जहा-

सेलथभे, अट्ठिथभे, दारुथभे, तिणिसलयाथभे

एवामेव चउव्विहे माणे पण्णत्ते त जहा-

सेलथभसमाणे —जाव— तिणिसलयाथभसमाणे

सेलथभसमाण माण अणुपविट्ठे जीवे काल करेइ नेरइएसु उववज्जइ,

अट्ठिथभसमाण माण अणुपविट्ठे जीवे काल करेइ तिरिक्खजोणिएसु उववज्जइ,

दारुथभसमाण माण अणुपविट्ठे जीवे काल करेइ मणुस्सेसु उववज्जइ,

तिणिसलयाथभसमाण माण अणुपविट्ठे जीवे काल करेइ देवेसु उववज्जइ

चत्तारि वत्था पण्णत्ता त जहा-

किमिरागरत्ते, कद्दमरागरत्ते,

खजणरागरत्ते, हलिद्दरागरत्ते

एवामेव चउव्विहे लोभे पण्णत्ते त जहा-

किमिरागरत्तवत्थसमाणे,

कद्दमरागरत्तवत्थसमाणे,

खजणरागरत्तवत्थसमाणे,

हलिद्दरागरत्तवत्थसमाणे

किमिरागरत्तवत्थसमाण लोभ अणुपविट्ठे जीवे काल करेइ नेरइएसु उववज्जइ,

कद्दमरागरत्तवत्थसमाण लोभ अणुपविट्ठे जीवे काल करेइ तिरिक्खजोणिएसु उववज्जइ,
खजणरागरत्तवत्थसमाण लोभ अणुपविट्ठे जीवे काल करेइ मणुस्सेसु उववज्जइ,
हलिद्दरागरत्तवत्थसमाण लोभ अणुपविट्ठे जीवे काल करेइ देवेसु उववज्जइ ६

२९४ चउव्विहे ससारे पण्णत्ते त जहा-
नेरइएससारे, तिरिक्खजोणिएससारे,
मणुस्ससंसारे, देवससारे

चउव्विहे आउए पण्णत्ते त जहा-
नेरइअआउए, तिरिक्खजोणिए आउए,
मणुस्साउए देवाउए

चउव्विहे भवे पण्णत्ते त जहा-
नेरइए भवे, तिरिक्खजोणिए भवे,
मणुस्स भवे, देव भवे

२९५ चउव्विहे आहारे पण्णत्ते त जहा-
असणे, पाणे, खाइमे, साइमे

चउव्विहे आहारे पण्णत्ते त जहा-
उवक्खरसपण्णे, उवक्खडसपण्णे,
सभावसपण्णे, परिजुसियसपण्णे २

२९६ चउव्विहे बधे पण्णत्ते त जहा-

पगइबधे, ठिइबधे,

अणुभावबधे, पदेसबधे

चउव्विहे उवक्कमे पण्णत्ते त जहा-

बधणोवक्कमे, उदीरणोवक्कमे,

उवसमणोवक्कमे, विप्परिणामणोवक्कमे

बधणोवक्कमे चउव्विहे पण्णत्ते त जहा-

पगइबधणोवक्कमे, ठिइबधणोवक्कमे,

अणुभावबधणोवक्कमे, पदेसबधणोवक्कमे.

उदीरणोवक्कमे चउव्विहे पण्णत्ते त जहा-

पगइउदीरणोवक्कमे,

ठिइउदीरणोवक्कमे,

अणुभावउदीरणोवक्कमे,

पदेसउदीरणोवक्कमे

उवसमणोवक्कमे चउव्विहे पण्णत्ते त जहा-

पगइउवसामणोवक्कमे,

ठिइउवसामणोवक्कमे,

अणुभावउवसामणोवक्कमे,

पदेसुवसामणोवक्कमे

विप्परिणामणोवक्कमे चउव्विहे पण्णत्ते त जहा-

पगइविप्परिणामणोवक्कमे,

ठिइविप्परिणामणोवक्कमे,

अणुभावविप्परिणामणोवक्कमे,
पवेसविप्परिणामणोवक्कमे

चउव्विहे अप्पाबहुए पण्णत्ते त जहा-
पगइ-अप्पाबहुए, ठिइ-अप्पाबहुए,
अणुभाव-अप्पाबहुए, पएस-अप्पाबहुए

चउव्विहे सकमे पण्णत्ते त जहा-
पगइ-सकमे, ठिइ-सकमे,
अणुभाव-सकमे, पएस-सकमे

चउव्विहे निधत्ते पण्णत्ते त जहा-
पगइ-णिधत्ते, ठिइ-णिधत्ते,
अणुभाव-णिधत्ते, पएस-णिधत्ते

चउव्विहे निकाइए पण्णत्ते त जहा-
पगइ-णिकाइए, ठिइ-णिकाइए,
अणुभाव-णिकाइए, पएस-णिकाइए १०

२९७ चत्तारि एक्का पण्णत्ता त जहा-
दविए एक्कए, माउ एक्कए,
पज्जए एक्कए, सगहे एक्कए

२९८ चत्तारि कती पण्णत्ता त जहा-
दवियकती, माउयकती, पज्जवकती, सगहकती

२९९ चत्तारि सव्वा पण्णत्ता त जहा-
नामसव्वए, ठवणसव्वए,
आएससव्वए, निरवसेससव्वए

३०० माणुसुत्तरस्स ण पव्वयस्स चउदिसिं चत्तारि कूडा पण्णत्ता त जहा-

रयणे रयणुच्चए, सव्वरयणे, रयणसचए

३०१ जवुद्दीवे दीवे भरहेरवएसु वासेसु तीआए उस्सप्पिणीए सुसमसुसमाए समाए चत्तारि सागरोयमकोडाकोडीओ कालो हुत्था,

जबूद्दीवे दीवे भरहेरवए इमीसे ओसप्पिणीए सुसमसुसमाए समाए जहण्णपए ण चत्तारि सागरोवमकोडाकोडीओ कालो हुत्था,

जवुद्दीवे दीवे भरहेरवएसु वासेसु आगमेस्साए उस्सप्पिणीए सुसमसुसमाए समाए चत्तारि सागरोवमकोडाकोडीओ कालो भविस्सइ ३

३०२ जवुद्दीवे दीवे देवकुरु-उत्तरकुरुवज्जाओ चत्तारि अकम्मभूमीओ पण्णत्ताओ त जहा-

हेमवए, हेरण्णवए, हरिवासे रम्मगवासे

चत्तारि वट्टवेयड्ढपव्वया पण्णत्ता त जहा-

सद्दावइ, वियडावइ, गधावइ, मालवतपरियाए

तत्थ ण चत्तारि देवा महिड्ढिइया —जाव— पलिओवमट्ठिइया परिवसति त जहा-

साइ, पभासे, अरुणे, पउमे

जवुद्दीवे दीवे महाविवेहे वासे चउव्विहे पण्णत्ते त जहा

पुव्वविदेहे, अवरविदेहे, देवकुरा, उत्तरकुरा

सव्वेऽवि ण निसढणीलवतवासहरपव्वया चत्तारि जोयण-सयाइ उड्ढ उच्चत्तेण चत्तारि गाउयसयाइ उव्वेहेण पण्णत्ता

जबुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमेण सीयाए महा-नईए उत्तरे कूले चत्तारि वक्खारपव्वया पण्णत्ता त जहा-

चित्तकूडे, पम्हकूडे, नलिणकूडे एगसेले

जबुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमेण सीयाए महाण-ईए दाहिणकूले चत्तारि वक्खारपव्वया पण्णत्ता त जहा-

तिकूडे, वेसमणकूडे, अजणे, मातजणे

जबुद्दीवे दीवे मदरस्स पच्चत्थिमेण सीओआए महाणईए दाहिण कूले चत्तारि वक्खारपव्वया पण्णत्ता त जहा-

अकावई, पम्हावई, आसीविसे, सुहावहे

जबुद्दीवे दीवे मदरस्स पच्चत्थिमेण सीओआए महाणईए उत्तरकूले चत्तारि वक्खारपव्वया पण्णत्ता त जहा-

चदपव्वए, सूरपव्वए, देवपव्वए, नागपव्वए

जबुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स चउसु विदिसासु चत्तारि वक्खारपव्वया पण्णत्ता त जहा-

सोमणसे, विज्जुपभे, गधमायणे, मालवते

जबुद्दीवे दीवे महाविदेहे वासे जहण्णपए चत्तारि अरहता, चत्तारि चक्कवट्टी, चत्तारि बलदेवा, चत्तारि वासुदेवा उप्प-

ज्जिसु वा, उप्पज्जति वा, उप्पज्जिस्सति वा

जबुद्दीवे दीवे मदरपव्वए चत्तारि वणा पण्णत्ता त जहा-
भद्दसालवणे, नदणवणे, सोमणसवणे, पडगवणे

जबुद्दीवे दीवे मदरपव्वए पडगवणे चत्तारि अभिसेगसिलाओ, पण्णत्ताओ त जहा-

पडुकबलसिला, अइपडुकबलसिला,
रत्तकबलसिला, अइरत्तकबलसिला

मदरचूलिया ण उवरिं चत्तारि जोयणाइ विक्खभेण पण्णत्ता, एव धायइसडदीवपुरच्छिमद्धेऽवि काल आवि करेत्ता —जाव— पुक्खरवरदीवपच्चच्छिमद्धे —जाव— मदरचूलियत्ति

जबुद्दीवगआवस्सग तु कालाओ चूलिया —जाव— धाय इसडे पुक्खरवरे य पुव्वावरे पासे ४३

३०३ जबुद्दीवस्स ण दीवस्स चत्तारि दारा पण्णत्ता त जहा-
विजए, वेजयते, जयते, अपराजिए

ते ण दारा चत्तारि जोयणाइ विक्खभेण तावइय चेव पवेसेण पण्णत्ता

तत्थ ण चत्तारि देवा महिड्ढीया —जाव— पलिओवमट्ठिइया परिवसति त जहा-

विजए, वेजयते, जयते, अपराजिए २

३०४ जबुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स दाहिणेण चुल्लहिमवतस्स

वासहरपव्वयस्स चउसु विदिसासु लवणसमुद्द तिण्णि-तिण्णि जोयणसयाइ ओगाहित्ता एत्थ ण चत्तारि अतरदीवा पण्णत्ता त जहा-

एगूरूयदीवे, आभासियदीवे,
वेसाणियदीवे, नगोलियदीवे

तेसु ण दीवेसु चउव्विहा मणुस्सा परिवसति त जहा-
एगूरूया, आभासिया, वेसाणिया, णगोलिया

तेसि ण दीवाण चउसु विदिसासु लवणसमुद्द चत्तारि चत्तारि जोयणसयाइ ओगाहेत्ता एत्थ ण चत्तारि अतरदीवा पण्णत्ता त जहा-

हयकण्णदीवे, गयकण्णदीवे,
गोकण्णदीवे, सकुलिकण्णदीवे

तेसु ण दीवेसु चउव्विहा मणुस्सा परिवसति त जहा-
हयकण्णा, गयकण्णा, गोकण्णा, सकुलिकण्णा

तेसि ण दीवाण चउसु विदिसासु लवणसमुद्द पच पच जोयणसयाइ ओगाहित्ता एत्थ ण चत्तारि अतरदीवा पण्णत्ता त जहा-

आयसमुहदीवे, मेंढमुहदीवे,
अओमुहदीवे, गोमुहदीवे

तेसु ण दीवेसु चउव्विहा मणुस्सा भाणियव्वा

तेसि ण दीवाण चउसु विदिसासु लवणसमुद्द छ छ जोयण-

सयाइ ओगाहेत्ता एत्थ ण चत्तारि अतरदीवा पण्णत्ता त
जहा-

आसमुहदीवे, हत्थिमुहदीवे,
सीहमुहदीवे, वग्घमुहदीवे

तेसु ण दीवेसु चउव्विहा मणुस्सा भाणियव्वा

तेसि ण दीवाण चउसु विदिसु लवणसमुद्द सत्त सत्त जोयण-
सयाइ ओगाहेत्ता एत्थ ण चत्तारि अतरदीवा पण्णत्ता त
जहा-

आसकण्णदीवे, हत्थिकण्णदीवे,
अकण्णदीवे, कण्णपाउरणदीवे

तेसु ण दीवेसु चउव्विहा मणुस्सा भाणियव्वा

तेसि ण दीवाण चउसु विदिसासु लवणसमुद्द अट्ठट्ठ जोयण-
सयाइ ओगाहेत्ता एत्थ ण चत्तारि अतरदीवा पण्णत्ता त
जहा-

उक्कामुहदीवे, मेहमुहदीवे,
विज्जुमुहदीवे, विज्जुदतदीवे

तेसु ण दीवेसु चउव्विहा मणुस्सा भाणियव्वा

तेसु ण दीवाण चउसु विदिसासु लवणसमुद्द नव नव जोयण-
सयाइ ओगाहेत्ता एत्थ ण चत्तारि अतरदीवा पण्णत्ता त
जहा-

घणदतदीवे, लट्ठदतदीवे, गूढदतदीवे, सुद्धदतदीवे

तेसु ण दीवेसु चउव्विहा मणुस्सा परिवसति त जहा-

घणदता, लट्ठदता, गूढदता, सुद्धदता

जबुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स उत्तरेण सिहरिस्स वासहर-पव्वयस्स चउसु विदिसासु लवणसमुद्द तिण्णि तिण्णि जोयण-सयाइ ओगाहेत्ता एत्थ ण चत्तारि अतरदीवा पण्णत्ता त जहा-

एगोरूयदीवे —जाव— नगोलियदीवे

सेस तदेव निरवसेस भाणियव्व —जाव— सुद्धदता ३०

३०५ जबुद्दीवस्स ण दीवस्स बाहिरिल्लाओ वेइयताओ चउदिसि लवणसमुद्द पचाणउइ जोयणसहस्साइ ओगाहेत्ता एत्थ ण महइमहालया महालजरसठाणसठिया चत्तारि महापायाला पण्णत्ता त जहा-

वलयामुहे, केउए, जूवए, ईसरे

एत्थ ण चत्तारि देवा महिड्ढिया —जाव— पलिओव-मट्ठिइया परिवसति त जहा-

काले, महाकाले, वेलबे, पभजणे

जबुद्दीवस्स ण दीवस्स बाहिरिल्लाओ वेइयताओ चउद्दिसि लवणसमुद्द बायालीस बायालीस जोयणसहस्साइ ओगाहेत्ता एत्थ ण चउण्ह वेलधरनागराइण चत्तारि आवासपव्वया पण्णत्ता त जहा-

गोथूभे, उदयभासे, सखे, दगसीमे

तत्थ ण चत्तारि देवा महिड्ढिया जाव— पलिओव-

महिड्या परिवसति त जहा-

गोथूभे, सिवए, सखे, मणोसिलाए

जबुद्दीवस्स ण दीवस्स बाहिरिल्लाओ वेइयताओ चउसु विदिसासु लवणसमुद्द बायालीस बायालीस जोयणसहस्साइ ओगाहेत्ता एत्थ ण चउण्ह अणुवेलधरणागराईण चत्तारि आवासपव्वया पण्णत्ता त जहा-

कक्कोडए, विज्जुप्पभे, केलासे, अरुणप्पभे

तत्थ ण चत्तारि देवा महिड्ढीया —जाव— पलिओव-मट्ठिइया परिवसति त जहा-

कक्कोडए, कद्दमए, केलासे, अरुणप्पभे,

लवणे ण समुद्दे ण चत्तारि चदा पभासिसु वा, पभासति वा, पभासिस्सति वा

चत्तारि सूरिया तविसु वा, तवति वा, तविस्सति वा

चत्तारि कत्तियाओ - जाव— चत्तारि भरणीओ

चत्तारि अग्गी —जाव — चत्तारि जमा

चत्तारि अगारा —जाव— चत्तारि भावकेऊ

लवणस्स ण समुद्दस्स चत्तारि दारा पण्णत्ता त जहा-

विजए, वेजयते, जयते, अपराजिए

ते ण दारा ण चत्तारि जोयणाइ विक्खभेण तावइय चेव पवेसेण पण्णत्ते त जहा-

तत्थ ण चत्तारि देवा महिड्ढिया —जाव— पलिओव-मट्ठिइया परिवसति त जहा-

विजए, वेजयते, जयते, अपराजिए १०२

२०६ धायइसडे दीवे चत्तारि जोयणसयसहस्साइ चक्कवाल-विक्खभेण पण्णत्ते

जबुद्दीवस्स ण दीवस्स बहिया चत्तारि भरहाइ, चत्तारि एरवयाइ

एव जहा सद्देसए तहेव निरवसेस भाणियव्व —जाव— चत्तारि मदरा, चत्तारि मदरचूलिआओ २०६

नदीसरदीवस्स वण्णओ

२०७ नदीसरवरस्स ण दीवस्स चक्कवालविक्खभस्स बहुमज्झदेस-भाए चउद्दिसि चत्तारि अजणगपव्वया पण्णत्ता त जहा-

पुरित्थिमिल्ले अजणगपव्वए,
दाहिणिल्ले अजणगपव्वए,
पच्चत्थिमिल्ले अजणगपव्वए,
उत्तरिल्ले अजणगपव्वए

ते ण अजणगपव्वया चउरासीइ जोयणसहस्साइ उड्ढ उच्चत्तेण, एग जोयणसहस्स उव्वेहेण, मूले दस जोयण-सहस्साइ विक्खभेण, तदणतर च ण मायाए मायाए परि-हाएमाणा उवरिमेग जोयणसहस्स विक्खभेण पण्णत्ता, मूले

इक्कतीस जोयणसहस्साइ छच्च तेवीसे जोयणसए परिक्खे-
वण, उवरि तिण्णि तिण्णि जोयणसहस्साइ एग च छावट्ठ
जोयणसय परिक्खेवेण, मूले विच्छिण्णा, मज्झे सखित्ता,
उप्पि तणुया गोपुच्छसठाणसठिया सव्वअजणमया अच्छा
सण्हा लण्हा घट्ठा मट्ठा नीरया निप्पका निक्ककडच्छाया
सप्पभा समिरीया सउज्जोया पासाइया दरिसणीया अभि-
रूवा पडिरूवा, तेसि ण अजणगपव्वयाण उवरि वहुसमर-
मणिज्जभूमिभागा पण्णत्ता

तेसि ण वहुसमरमणिज्जभूमिभागाण वहुमज्झदेसभागे
चत्तारि सिद्धाययणा पण्णत्ता

ते ण सिद्धाययणा एग जोयणसय आयामेण पण्णत्ता, पण्णास
जोयणाइ विक्खभेण बावत्तरि जोयणाइ उड्ढ उच्चत्तेण,
तेसि सिद्धाययणाण चउदिसि चत्तारि दारा पण्णत्ता त जहा

देवदारे, असुरदारे, नागदारे, सुवण्णदारे

तेसु ण दारेसु चउव्विहा देवा परिवसति त जहा-

देवा, असुरा, नागा, सुवण्णा

तेसि ण दाराण पुरओ चत्तारि मुहमडवा पण्णत्ता

तेसि ण मुहमडवाण पुरओ चत्तारि पेच्छाघरमडवा पण्णत्ता

तेसि ण पेच्छाघरमडवाण वहुमज्झदेसभागे चत्तारि वइ-
रामया अक्खाडगा पण्णत्ता

तेसि ण वइरामयाण अक्खाडगाण वहुमज्झदेसभागे चत्तारि
मणिपेढियाओ पण्णत्ताओ

तासि ण मणिपेढियाण उवरि चत्तारि सीहासणा पण्णत्ता

तेसि ण सीहासणाण उवरि चत्तारि विजयदूसा पण्णत्ता

तेसि ण विजयदूसगाण बहुमज्झदेसभागे चत्तारि वइरामया अकुसा पण्णत्ता

तेसु ण वइरामएसु अकुसेसु चत्तारि कुभिका मुत्तादामा पण्णत्ता

ते ण कुभिका मुत्तादामा पत्तेय पत्तेय अन्नेहिं तदद्धउच्चत्त-पमाणमित्तेहिं चउहि अद्धकुभिकेहिं मुत्तादामेहिं सव्वओ समता सपरिक्खित्ता

तेसि ण पेच्छाघरमडवाण पुरओ चत्तारि मणिपेढियाओ पण्णत्ताओ

तासि ण मणिपेढियाण उवरि चत्तारि चत्तारि चेइयथूभा पण्णत्ता

तासि ण चेइयथूभाण पत्तेय पत्तेय चउद्दिसि चत्तारि मणि-पेढियाओ पण्णत्ताओ

तासि ण मणिपेढियाण उवरि चत्तारि जिणपडिमाओ सव्व-रयणामइओ सपलियकणिसण्णाओ थूभाभिमुहाहो चिट्ठ ति त जहा-

रिसभा, वद्धमाणा, चदाणणा, वारिसेणा

तेसि ण चेइयथूभाण पुरओ चत्तारि मणिपेढियाओ पण्णत्ताओ

तासि ण मणिपेढियाण उवरि चत्तारि चेइयरुक्खा पण्णत्ता

तेसि ण चेइयरुक्खाण पुरओ चत्तारि मणिपेढियाओ पण्णत्ताओ

तासि ण मणिपेढियाण उवरि चत्तारि महिंदज्झया पण्णत्ता

तेसि ण महिंदज्झयाण पुरओ चत्तारि नदाओ पुक्खरणीओ पण्णत्ताओ

तासि ण पुक्खरणीण पत्तेय पत्तेय चउदिसि चत्तारि वणसडा पण्णत्ता त जहा-

पुरत्थिमेण, दाहिणेण, पच्चत्थिमेण, उत्तरेण

गाहा—पुव्वेण असोगवण, दाहिणओ होइ सत्तवण्णवण ।
अवरेण चपगवण, चूयवण उत्तरे पासे ।।

तत्थ ण जे से पुरत्थिमिल्ले अजणगपव्वए तस्स ण चउद्दिसि चत्तारि नदाओ पुक्खरिणीओ पण्णत्ताओ त जहा-

नदुत्तरा, नदा, आणदा, नदीवद्धणा

ताओ नदाओ पुक्खरिणीओ एग जोयणसयसहस्स आयामेण, पण्णास जोयणसहस्साइ विक्खभेण, दस जोयणसयाइ उव्वेहेण, तासि ण पुक्खरिणीण पत्तेय पत्तेय चउद्दिसि चत्तारि तिसोवाणपडिरूवगा

तेसि ण तिसोवाणपडिरूवगाण पुरओ चत्तारि तोरणा पण्णत्ता त जहा-

पुरच्छिमेण, दाहिणेण, पच्चत्थिमेण, उत्तरेण

तासि ण पुक्खरणीण पत्तेय पत्तेय चउद्दिसिं चत्तारि वणसडा पण्णत्ता त जहा-

पुरओ, दाहिणओ, पच्चत्थिमेण, उत्तरेण

पुव्वेण असोगवण —जाव— चूयवण उत्तरे पासे

तासि ण पुक्खरिणीण बहुमज्झदेसभागे चत्तारि दहिमुहग-पव्वया पण्णत्ता

ते ण दहिमुहगपव्वया चउसट्ठि जोयणसहस्साइ उड्ढ उच्चत्तेण, एग जोयणसहस्स उव्वेहेण, सव्वत्थ समा पल्लग-सठाणसठिया, दस जोयणसहस्साइ विक्खभेण, एक्कतीस जोयणसहस्साइ छच्च तेवीसे जोयणसए परिक्खेवेण, सव्व-रयणामया अच्छा —जाव— पडिरूवा, तेसि ण दहिमुह-पव्वयाणं उवरिं बहुसमरमणिज्जा भूमिभागा पण्णत्ता

सेस जहेव अजणगपव्वयाण तहेव निरवसेस भाणियव्व —जाव— चूयवण उत्तरे पासे

तत्थ ण जे से दाहिणिल्ले अजणगपव्वए तस्स ण चउदिसिं चत्तारि नदाओ पुक्खरणीओ पण्णत्ताओ त जहा-

भद्दा, विसाला, कुमुदा, पोंडरिगिणी

ताओ नदाओ पुक्खरणीओ एग जोयणसयसहस्स सेस त चेव —जाव— दहिमुहगपव्वया —जाव— वणसडा, तत्थ ण जे से पच्चत्थिमिल्ले अजणगपव्वए तस्स ण चउद्दिसिं चत्तारि

तासि णं मणिपेढियाणं उवरिं चत्तारि चेइयरुक्खा पण्णत्ता

तेसि णं चेइयरुक्खाणं पुरओ चत्तारि मणिपेढियाओ पण्णत्ताओ

तासि णं मणिपेढियाणं उवरिं चत्तारि महिंदज्झया पण्णत्ता

तेसि णं महिंदज्झयाणं पुरओ चत्तारि नंदाओ पुक्खरणीओ पण्णत्ताओ

तासि णं पुक्खरणीणं पत्तेयं पत्तेयं चउदिसिं चत्तारि वणसंडा पण्णत्ता तं जहा-

पुरच्छिमेणं, दाहिणेणं, पच्चत्थिमेणं, उत्तरेणं

गाहा--पुव्वेणं असोगवणं, दाहिणओ होइ सत्तवण्णवणं ।
अवरेणं चंपगवणं, चूयवणं उत्तरे पासे ।।

तत्थ णं जे से पुरच्छिमिल्ले अंजणगपव्वए तस्स णं चउद्दिसिं चत्तारि नंदाओ पुक्खरिणीओ पण्णत्ताओ तं जहा-

नंदुत्तरा, नंदा, आणंदा, नंदीवद्धणा

ताओ नंदाओ पुक्खरिणीओ एगं जोयणसयसहस्सं आयामेणं, पण्णासं जोयणसहस्साइं विक्खंभेणं, दस जोयणसयाइं उव्वेहेणं, तासि णं पुक्खरिणीणं पत्तेयं पत्तेयं चउद्दिसिं चत्तारि तिसोवाणपडिरूवगा

तेसि णं तिसोवाणपडिरूवगाणं पुरओ चत्तारि तोरणा पण्णत्ता तं जहा-

पुरच्छिमेण, दाहिणेण, पच्चत्थिमेण, उत्तरेण

तासि ण पुक्खरणीण पत्तेय पत्तेय चउद्दिसि चत्तारि वणसडा पण्णत्ता त जहा-

पुरओ, दाहिणओ, पच्चत्थिमेण, उत्तरेण

पुव्वेण असोगवण —जाव— चूयवण उत्तरे पासे

तासि ण पुक्खरिणीण बहुमज्झदेसभागे चत्तारि दहिमुहग-पव्वया पण्णत्ता

ते ण दहिमुहगपव्वया चउसट्ठि जोयणसहस्साइ उड्ढ उच्चत्तेण, एग जोयणसहस्स उव्वेहेण, सव्वत्थ समा पल्लग-सठाणसठिया, दस जोयणसहस्साइ विक्खभेण, एक्कतीस जोयणसहस्साइ छच्च तेवीसे जोयणसए परिक्खेवेण, सव्व-रयणामया अच्छा —जाव— पडिरूवा, तेसि ण दहिमुह-पव्वयाणं उवरिं बहुसमरमणिज्जा भूमिभागा पण्णत्ता

सेस जहेव अजणगपव्वयाण तहेव निरवसेस भाणियव्व —जाव— चूयवण उत्तरे पासे

तत्थ ण जे से दाहिणिल्ले अजणगपव्वए तस्स ण चउदिसिं चत्तारि नदाओ पुक्खरणीओ पण्णत्ताओ त जहा-

भद्दा, विसाला, कुमुदा, पोंडरिगिणी

ताओ नदाओ पुक्खरणीओ एग जोयणसयसहस्स सेस त चेव —जाव— दहिमुहगपव्वया —जाव— वणसडा, तत्थ ण जे से पच्चत्थिमिल्ले अजणगपव्वए तस्स ण चउद्दिसिं चत्तारि

नदाओ पुक्खरणीओ पण्णत्ताओ तं जहा-

नविसेणा, अमोहा, गोथूभा, सुदसणा

सेस त चेव, तहेव दहिमुहगपव्वया तहेव सिद्धायणा —जाव – वणसडा

तत्थ ण जे से उत्तरिल्ले अजणगपव्वए तस्स ण चउद्दिसि चत्तारि नदाओ पुक्खरिणीओ पण्णत्ताओ त जहा-

विजया, वेजयती, जयती, अपराजिया

ताओ ण पुक्खरणीओ एग जोयणसहसहस्स त चेव पमाण तहेव दहिमुहगपव्वया तहेव सिद्धायणा —जाव— वणसडा

नदीसरवरस्स ण दीवस्स चक्कवालविक्खभस्स बहुमज्झदेस भागे चउसु विदिसासु चत्तारि रकइरगपव्वया पण्णत्ता त जहा-

उत्तरपुरच्छिमिल्ले रइकरगपव्वए,

दाहिणपुरच्छिमिल्ले रइकरगपव्वए,

दाहिणपच्चत्थिमिल्ले रइकरगपव्वए,

उत्तरपच्चत्थिमिल्ले रइकरगपव्वए

ते ण रइकरगपव्वया दस जोयणसयाइं उड्ढ उच्चत्तेण दस गाउयसयाइ उव्वेहेण, सव्वत्थ समा झल्लरिसठाणसठिया दस जोयणसहस्साइ विक्खभेण, एक्कतीस जोयणसहस्साइ छच्च तेवीसे जोयणसए परिक्खेवेण, सव्वरयणामया अच्छा —जाव— पडिरूवा तत्थ ण जे से उत्तरपुरच्छिमिल्ले रइ-

करगपव्वए तस्स ण चउद्दिसि ईसाणस्स देविवस्स देवरण्णो-चउण्हमग्गमहिसीण जबुद्दीवपमाणाओ चत्तारि रायहाणीओ पण्णत्ताओ त जहा-

नदुत्तरा, नदा, उत्तरकुरा, देवकुरा
कण्हाए, कण्हराइए, रामाए, रामरक्खियाए

तत्थ ण जे से दाहिणपुरच्छिमिल्ले रइकरगपव्वए, तस्स ण चउद्दिसि सक्कस्स देविदस्स देवरण्णो चउण्हमग्गमहिसीण जबुद्दीवपमाणाओ चत्तारि रायहाणीओ पण्णत्ताओ त जहा-

समणा, सोमणसा, अच्चिमाली, मणोरमा
पउमाए, सिवाए, सतीए, अजूए

तत्थ ण जे से दाहिण-पच्चत्थिमिल्ले रइकरगपव्वए तत्थ ण चउद्दिसि सक्कस्स देविदस्स देवरण्णो चउण्ह अग्गमहिसीण जबूद्दीवपमाणमेत्ताओ चत्तारि रायहाणीओ पण्णत्ताओ त जहा-

भूता, भूतवडेंसा, गोथूभा, सुदसणा
अमलाए, अच्छराए, नवमियाए, रोहिणीए

तत्थ ण जे से उत्तर-पच्चत्थिमिल्ले रइकरगपव्वए तत्थ ण चउदिसिमिसाणस्स देविदस्स देवरण्णो चउण्हमग्गमहिसीण जबुद्दीवप्पमाणमित्ताओ चत्तारि रायहाणीओ पण्णत्ता त जहा-

रयणा, रयणुच्चया, सव्वरयणा, रयणसचया
वसुए, वसुगुत्ताए, वसुमित्ताए, वसुधराए

३०८ चउव्विहे सच्चे पण्णत्ते त जहा-

नामसच्चे, ठवणसच्चे, दव्वसच्चे, भावसच्चे

३०९ आजीवियाण चउव्विहे तवे पण्णत्ते त जहा-

उग्गतवे, घोरतवे,

रसणिज्जूहणया, जिब्भिदियपडिसलीणया

३१० चउव्विहे सजमे पण्णत्ते त जहा-

मणसजमे, वइसजमे, कायसजमे, उवगरणसजमे

चउव्विहे चियाए पण्णत्ते त जहा-

मणचियाए, वइचियाए, कायचियाए, उवगरणचियाए

चउव्विहा अकिचणया पण्णत्ता त जहा-

मणअकिचणया, वइअकिचणया,

कायअकिचणया, उवगरणअकिचणया २

चउट्ठाणस्स तइओ उद्देसो

३११ चत्तारि राईओ पण्णत्ताओ त जहा-

पव्वयराई, पुढविराई, वालुयराई, उदगराई

एवामेव चउव्विहे कोहे पण्णत्ते त जहा-

पव्वयराइसमाणे, पुढविराइसमाणे,

वालुयराइसमाणे, उदगराइसमाणे

पव्वयराइसमाण कोह अणुपविट्ठे जीवे काल करेइ नेर-

इएसु उववज्जइ,

पुढविराइसमाण कोह अणुपविट्ठे जीवे काल करेइ तिरिक्खजोणिएसु उववज्जइ,
बालुयराइसमाण कोह अणुप्पविट्ठे समाणे जीवे काल करेइ मणुस्सेसु उववज्जइ,
उदगराइसमाण कोह अणुपविट्ठे समाणे जीवे काल करेइ देवेसु उववज्जइ,

चत्तारि उदगा पण्णत्ता त जहा-

कद्दमोदए, खजणोदए, बालुओदए, सेलोदए

एवामेव चउव्विहे भावे पण्णत्ते त जहा-

कद्दमोदगसमाणे, खजणोदगसमाणे,
वालुओदगसमाणे, सेलोदगसमाणे
कद्दमोदगसमाण भाव अणुपविट्ठे समाणे जीवे काल करेइ नेरइएसु उववज्जइ, एव — जाव —
सेलोदगसमाण भाव अणुपविट्ठे जीवे काल करेइ देवेसु उववज्जइ ४

३१२ चत्तारि पक्खी पण्णत्ता त जहा-

रुयसपण्णे नामेगे नो रूवसपण्णे,
रूवसपण्णे नामेगे नो रुयसपण्णे,
एगे रूवसपण्णे वि रुयसपण्णे वि,
नो रुयसपण्णे नो रूवसपण्णे

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-

रुयसपण्णे नामेगे, नो रूवसपण्णे —जाव—
नो रुयसपण्णे नो रूवसपण्णे

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
पत्तिय करेमीतेगे पत्तिय करेइ,
पत्तिय करेमीतेगे अपत्तिय करेइ,
अप्पत्तिय करेमीतेगे पत्तिय करेइ,
अप्पत्तिय करेमीतेगे अप्पत्तिय करेइ

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
अप्पणो नामेगे पत्तिय करेइ नो परस्स —जाव—
नो अप्पणो पत्तिय करेइ, नो परस्स अपत्तिय करेइ-

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
पत्तिय पवेसामीतेगे पत्तिय पवेसेइ —जाव—
अपत्तिय पवेसामीतेगे अप्पत्तिय पवेसेइ

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
अप्पणो नामेगे पत्तिय पवेसेइ नो परस्स —जाव—
नो अप्पणो पत्तिय पवेसेइ नो परस्स पत्तिय पवेसेइ ६

३१३ चत्तारि रुक्खा पण्णत्ता त जहा-
पत्तोवए, पुप्फोवए, फलोवए, छायोवए

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
पत्तो वा रुक्खसमाणे, पुप्फो वा रुक्खसमाणे,
फलो वा रुक्खसमाणे, छायो वा रुक्खसमाणे २

३१४ भारण्ह वहमाणस्स चत्तारि आसासा पण्णत्ता त जहा-

जत्थ ण असाओ अस साहरइ तत्थ वि य से एगे आसासे पण्णत्ते,

जत्थ वि य ण उच्चार वा, पासवण वा परिट्ठावेइ तत्थ वि य से एगे आसासे पण्णत्ते,

जत्थ वि य ण नागकुमारावाससि वा, सुवण्णकुमारा वाससि वा वास उवेइ तत्थ वि य से एगे आसासे पण्णत्ते,

जत्थ वि य ण आवकहाए चिट्ठइ तत्थ वि य से एग आसासे पण्णत्ते

एवामेव समणोवासगस्स चत्तारि आसासा पण्णत्ता त जहा-

जत्थ ण सीलव्वय-गुणव्वय-वेरमण-पच्चक्खाणपोसहोव-वासाइ पडिवज्जेइ तत्थ वि य से एगे आसासे पण्णत्ते,

जत्थ वि य ण सामाइय वेसावगासिय सम्ममणुपालेइ तत्थ वि य से एगे आसासे पण्णत्ते,

जत्थ वि य ण चाउद्दसट्ठमुद्दिट्ठपुण्णमासिणीसु पडिपुण्ण पोसह सम्म अणुपालेइ तत्थ वि य से एगे आसासे पण्णत्ते,

जत्थ वि य ण अपच्छिममारणतियसलेहणाझूसणाझूसिए भत्तपाणपडिआइक्खिए पाओवगए काल अणवकखमाणे विहरइ तत्थ वि य से एगे आसासे पण्णत्ते २

३१५ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-

उदीयोदिए नामेगे, उदियत्थमिए नामेगे,

अत्थमियोदिए नामेगे, अत्थमियत्थमिए नामेगे
भरहे राया चाउरतचक्कवट्टी ण उदिओदिए,
बभदत्ते ण राया चाउरतचक्कवट्टी उदिअत्थमिए,
हरिएसबले ण अणगारे ण अत्थमियोदिए,
काले ण सोयरिए अत्थमियत्थमिए

३१६ चत्तारि जुम्मा पण्णत्ता त जहा-
कडजुम्मे, तेओए, दावरजुम्मे, कलिओए
नेरइयाण चत्तारि जुम्मा पण्णत्ता त जहा-
कडजुम्मे, तेओए, दावरजुम्मे, कलिओए
एव असुरकुमाराण —जाव— थणियकुमाराण,
एव पुढविकाइयाण आउ-तेउ वाउ-वणस्सइ-बेंदियाण
तेंदियाण चउरिंदियाण, पंचिंदियतिरिक्खजोणियाण
मणुस्साण वाणमतर-जोइसियाण वेमाणियाण सव्वेसि
जहा नेरइयाण २

३१७ चत्तारि सूरा पण्णत्ता त जहा-
खतिसूरे, तवसूरे, दाणसूरे, जुद्धसूरे
खतिसूरा अरहता, तवसूरा अणगारा,
दाणसूरे वेसमणे, जुद्धसूरे वासुदेवे

३१८ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
उच्चे नामेगे उच्चच्छदे, उच्चे नामेगे नीयच्छदे,
नीए नामेगे उच्चच्छदे, नीये नामेगे नीयच्छदे

३१९ असुरकुमाराण चत्तारि लेसाओ पण्णत्ताओ त जहा-

कण्हलेसा, नीललेसा, काउलेसा, तेउलेसा
एव —जाव— थणियकुमाराण,
एव पुढविकाइयाण आउवणस्सइकाइयाण वाणमतराण
सव्वेसि जहा असुरकुमाराण

३२० चत्तारि जाणा पण्णत्ता त जहा-
जुत्ते नामेगे जुत्ते, जुत्ते नामेगे अजुत्ते,
अजुत्ते नामेगे जुत्ते, अजुत्ते नामेगे अजुत्ते

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
जुत्ते नामेगे जुत्ते —जाव—
अजुत्ते नामेगे अजुत्ते

चत्तारि जाणा पण्णत्ता त जहा-
जुत्ते नामेगे जुत्तपरिणए,
जुत्ते नामेगे अजुत्तपरिणए,
अजुत्ते नामेगे जुत्तपरिणए,
अजुत्ते नामेगे अजुत्तपरिणए

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
जुत्ते नामेगे जुत्तेपरिणए, —जाव—
अजुत्ते नामेगे अजुत्तपरिणए

चत्तारि जाणा पण्णत्ता त जहा-
जुत्ते नामेगे जुत्तरूवे, जुत्ते नामेगे अजुत्तरूवे,
अजुत्ते नामेगे जुत्तरूवे, अजुत्ते नामेगे अजुत्तरूवे

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
जुत्ते नामेगे जुत्तरूवे, —जाव—
अजुत्ते नामेगे अजुत्तरूवे

चत्तारि जाणा पण्णत्ता त जहा-
जुत्ते नामेगे जुत्त सोभे,
जुत्ते नामेगे अजुत्त सोभे,
अजुत्ते नामेगे जुत्त सोभे,
अजुत्ते नामेगे अजुत्त सोभे

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
जुत्ते नामेगे जुत्त सोभे, —जाव—
अजुत्त नामेगे अजुत्त सोभे

चत्तारि जुग्गा पण्णत्ता त जहा-
जुत्ते नामेग जुत्ते, —जाव—
अजुत्ते नामेगे अजुत्ते

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
जुत्ते नामेगे जुत्ते —जाव—
अजुत्ते नामेगे अजुत्ते

एव जहा जाणेण चत्तारि आलावगा तहा जुग्गेण वि,
पडिवक्खो तहेव पुरिसजाया —जाव— सोभेत्ति

चत्तारि सारही पण्णत्ता त जहा-
जोयावइत्ता नामेगे नो विजोयावइत्ता,

विजोयावइत्ता नामेगे नो जोयावइत्ता,
एगे जोयावइत्ता वि विजोयावइत्ता वि,
एगे नो जोयावइत्ता, नो विजोयावइत्ता

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
जोयावइत्ता नामेगे नो विजोयावइत्ता, —जाव—
एगे नो जोयावइत्ता नो विजोयावइत्ता

चत्तारि हया पण्णत्ता त जहा-
जुत्ते नामेगे जुत्ते, —जाव—
अजुत्ते नामेगे अजुत्ते

एवामेव पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
जुत्ते नामेगे जुत्ते, —जाव—
अजुत्ते नामेगे अजुत्ते
एव जुत्तपरिणए जुत्तरूवे जुत्तसोभे,
सव्वेसि पडिवक्खो पुरिसजाया

चत्तारि गया पण्णत्ता त जहा-
जुत्ते नामेगे जुत्ते, —जाव—
अजुत्ते नामेगे अजुत्ते

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
जुत्ते नामेगे जुत्ते, —जाव—
अजुत्ते नामेगे अजुत्ते
एव जहा हयाण तहा गयाण वि भाणियव्व पडिवक्खो
तहेव पुरिसजाया

चत्तारि जुग्गारिया पण्णत्ता त जहा-
पथजाई नाममेगे नो उप्पहजाई,
उप्पहजाई नामेगे नो पथजाई,
एगे पथ जाई वि उप्पहजाई वि,
एगे नो पथजाई नो उप्पहजाई

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
पथजाई नामेगे नो उप्पहजाई, —जाव—
एगे नो पथजाई नो उप्पहजाई

चत्तारि पुप्फा पण्णत्ता त जहा-
रूवसपण्णे नामेगे नो गधसपण्णे,
गधसपण्णे नामेगे नो रूवसपण्णे,
एगे रूवसपण्णे वि गधसपण्णे वि,
एगे नो रूवसपण्णे नो गधसपण्णे

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
रूवसपण्णे नामेगे नो सीलसपण्णे, —जाव—
नो रूवसपण्णे नो सीलसपण्णे

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
जाइसपण्णे नामेगे नो कुलसपण्णे,
कुलसपण्णे नामेगे नो जाइसपण्णे,
एगे जाइसपण्णे वि कुलसपण्णे वि,
एगे नो जाइसपण्णे नो कुलसपण्णे

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-

जाइसपण्णे नामेगे नो बलसपण्णे, —जाव—
एगे नो जाइसपण्णे नो बलसपण्णे
एव जाइरूवेण चत्तारि आलावगा
एव जाइसुएण चत्तारि आलावगा
एव जाइसोलेण चत्तारि आलावगा
एव जाइचरित्तेण चत्तारि आलावगा
एव कुलेण बलेण चत्तारि आलावगा
एव कुलेण रूवेण चत्तारि आलावगा
एव कुलेण सुएण चत्तारि आलावगा
एव कुलेण सीलेण चत्तारि आलावगा
एव कुलेण चरित्तेण चत्तारि आलावगा
एव बलेण रूवेण चत्तारि आलावगा
एव बलेण सुएण चत्तारि आलावगा
एव बलेण सीलेण चत्तारि आलावगा
एव बलेण चरित्तेण चत्तारि आलावगा,
एव रूवेण सुएण चत्तारि आलावगा
एव रूवेण सीलेण चत्तारि आलावगा
एव रूवेण चरित्तेण चत्तारि आलावगा
एव सुएण सीलेण चत्तारि आलावगा
एव सुएण चरित्तेण चत्तारि आलावगा
एव सीलेण चरित्तेण चत्तारि आलावगा
एव एक्कवीस भगा भाणियव्वा

चत्तारि फला पण्णत्ता तं जहा-
आमलगमहुरे, मुद्दियामहुरे, खीरमहुरे, खंडमहुरे

एवामेव चत्तारि आयरिया पण्णत्ता तं जहा-
आमलगमहुरफलसमाणे, मुद्दियामहुरफलसमाणे,
खीरमहुरफलसमाणे, खंडमहुरफलसमाणे

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता तं जहा-
आयवेयावच्चकरे नामेगे नो परवेयावच्चकरे,
परवेयावच्चकरे नामेगे नो आयवेयावच्चकरे,
एगे आयवेयावच्चकरे वि, परवेयावच्चकरे वि,
एगे नो आयवेयावच्चकरे नो परवेयावच्चकरे

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता तं जहा-
करेइ नामेगे वेयावच्चं नो पडिच्छइ,
पडिच्छइ नामेगे वेयावच्चं नो करेइ,
एगे पडिच्छइ वि वेयावच्चं करेइ वि,
एगे नो पडिच्छइ नो वेयावच्चं करेइ

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता तं जहा-
अट्ठकरे नामे नो माणकरे,
माणकरे नामेगे नो अट्ठकरे,
एगे अट्ठकरे वि माणकरे वि,
एगे नो अट्ठकरे नो माणकरे

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता तं जहा-
गणट्ठकरे नामेगे नो माणकरे, —जाव—

एगे नो गणट्ठकरे नो माणकरे

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
गणसगहकरे नामेगे नो माणकरे, —जाव—
एगे नो गणसगहकरे नो माणकरे

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
गणसोभकरे नामेगे नो माणकरे, —जाव -
एगे नो गणसोभकरे नो माणकरे

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
गणसोहीकरे नामेगे नो माणकरे, —जाव—
एगे नो गणसोहीकरे नो माणसोहीकरे

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
रूव नामेगे जहइ नो धम्म,
धम्म नामेगे जहइ नो रूव,
एगे रूव वि जहइ धम्म वि जहइ,
एगे नो रूव जहइ नो धम्म जहइ

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
धम्म नामेगे जहइ नो गणसठिइ, — जाव —
एगे नो धम्म जहइ नो गणसठिइ

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
पियधम्मे नामेगे नो दढधम्मे,
दढधम्मे नामेगे नो पियधम्मे,
एगे पियधम्मे वि दढधम्मे वि,

एगे नो पियधम्मे नो दढधम्मे

चत्तारि आयरिया पण्णत्ता त जहा-

पव्वायणायरिए नामेगे नो उवट्ठावणायरिए,

उवट्ठावणायरिए नामेगे नो पव्वायणायरिए,

एगे पव्वायणायरिए वि उवट्ठावणायरिए वि,

एगे नो पव्वयणाएरिए नो उट्ठावणायरिए धम्मायरिए.

चत्तारि आयरिया पण्णत्ता त जहा-

उद्देसणायरिए नामेगे नो वायणायरिए, —जाव—

एगे नो उद्देसणायरिए नो वायणायरिए

चत्तारि अतेवासी पण्णत्ता त जहा-

पव्वायणतेवासी नामेगे नो उवट्ठावणतेवासी,

उवट्ठावणतेवासी नामेगे नो पव्वायणतेवासी,

एगे पव्वायणतेवासी वि उवट्ठावणतेवासी वि,

एगे नो पव्वायणतेवासी नो उवट्ठावणतेवासी धम्मतेवासी

चत्तारि अतेवासी पण्णत्ता त जहा-

उद्देसणतेवासी नामेगे नो वायणतेवासी, —जाव—

एगे नो उद्देसणतेवासी नो वायणतेवासी धम्मतेवासी

चत्तारि निग्गथा पण्णत्ता त जहा-

राइणिए समणे निग्गथे महाकम्मे महाकिरिए अणायावी

असमिए धम्मस्स अणाराहए भवइ

राइणिए समणे निग्गथे अप्पकम्मे अप्पकिरिए आयावी

समिए धम्मस्स आराहए भवइ,

ओमराइणिए समणे निग्गथे महाकम्मे महाकिरिए अणा-
यावी असमिए धम्मस्स अणाराहए भवइ,
ओमराइणिए समणे निग्गथे अप्पकम्मे अप्पकिरिए
आयावी समिए धम्मस्स आराहए भवइ

चत्तारि निग्गथीओ पण्णत्ताओ त जहा-
राइणिया समणी निग्गथी महाकम्मा महाकिरिया अणा-
यावि समिया धम्मस्स अणाराहिया भवइ —जाव—
ओमराइणिया समणी निग्गथी अप्पकम्मा अप्पकिरिया
आयावि समिया धम्मस्स आराहिया भवइ

चत्तारि समणोवासगा पण्णत्ता त जहा-
राइणिए समणोवासए महाकम्मे महाकिरिए अणायावि
असमिए धम्मस्स अणाराहए भवइ —जाव—
ओमराइणिए समणोवासए अप्पकम्मे अप्पकिरिए
आयावि समिए धम्मस्स आराहए भवइ

चत्तारि समणोवासियाओ पण्णत्ताओ त जहा-
रायणिया समणोवासिया महाकम्मा महाकिरिया अणा-
यावि समिया धम्मस्स आराहिया भवइ —जाव—
ओमराइणिया समणोवासिया अप्पकम्मा अप्पकिरिया
आयावि समिया धम्मस्स आराहिया भवइ

३२१ चत्तारि समणोवासगा पण्णत्ता त जहा-
अम्मापिइसमाणे, भाइसमाणे,
मित्तसमाणे, सवत्तिसमाणे

चत्तारि समणोवासगा पण्णत्ता त जहा-

अद्दागसमाणे, पडागसमाणे,

खाणुसमाणे, खरकटयसमाणे २

३२२ समणस्स ण भगवओ महावीरस्स समणोवासगाण सोहम्म-कप्पे अरुणाभे विमाणे चत्तारि पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता

३२३ चउहिं ठाणेहिं अहुणोववण्णे देवे देवलोगेसु इच्छेज्जा माणुस लोग हव्वमागच्छित्तए नो चेव ण सचाएइ हव्वमागच्छित्तए त जहा-

अहुणोववण्णे देवे देवलोगेसु दिव्वेसु कामभोगेसु मुच्छिए गिद्धे गढिए अज्झोववण्णे से ण माणुस्सए कामभोगे नो आढाइ नो परियाणाइ नो अट्ठ बधइ, नो नियाण पग-रेइ, नो ठिइपगप्प पगरेइ,

अहुणोववण्णे देव देवलोगेसु दिव्वेसु कामभोगेसु मुच्छिए, गिद्धे, गढिए, अज्झोववण्णे तस्स ण माणुस्सए पेमे वोच्छि ण्णे दिव्वे सकते भवइ,

अहुणोववण्णे देवे देवलोगु दिव्वेसु कामभोगेसु मुच्छिए गिद्धे, गढिए अज्झोववण्णे, तस्स ण एव भवइ, इण्हि गच्छ, मुहुत्तेण गच्छ, तेण कालेण अप्पाउया मणुस्सा कालधम्मुणा सजुत्ता भवति,

अहुणोववण्णे देवे देवलोगेसु दिव्वेसु कामभोगेसु मुच्छिए, गिद्धे, गढिए अज्झोववण्णे तस्स ण माणुस्सए गधे पडि-कूले पडिलोमे या वि भवइ, उड्ढपि य ण माणुस्सए गधे

—जाव— चत्तारि पच जोयणसयाइ हव्वमागच्छइ, इच्चेएहि चउहि ठाणेहि अहुणोववण्णे देवे देवलोएसु इच्छेज्जा माणुस लोग हव्वमागच्छित्तए नो चेव ण सचाएइ हव्वमागच्छित्तए

चउहि ठाणेहि अहुणोववण्णे देवे देवलोएसु इच्छेज्जा माणुस लोग हव्वमागच्छित्तए सचाएइ हव्वमागच्छित्तए त जहा-

अहुणोववण्णे देवे देवलोगेसु दिव्वेसु कामभोगेसु अमुच्छिए —जाव – अणज्झोववण्णे, तस्स ण एव भवइ, "अत्थि खलु मम माणुस्सए भवे आयरिएइ वा, उवज्झाएइ वा, पवत्तीइ वा, थेरेइ वा, गणीइ वा, गणधरेइ वा, गणावच्छेएइ वा, जेसि पभावेण मए इमा एयारूवा दिव्वा देविड्ढी, दिव्वा देवजुई लद्धा पत्ता अभिसमण्णागया", गच्छामि ण ते भगवते वदामि —जाव— पज्जुवासामी

अहुणोववण्णे देवे देवलोएसु —जाव— अणज्झोववण्णे तस्स ण एव भवइ "एस ण माणुस्सए भवे नाणीइ वा तवस्सीइ वा अइदुक्करकारए" त गच्छामि ण ते भगवते वदामि —जाव— पज्जुवासामि

अहुणोववण्णे देवे देवलोएसु —जाव— अणज्झोववण्णे तस्स ण एव भवइ "अत्थि ण मम माणुस्सए भवे मायाइ वा —जाव— सुण्हाइ वा, त गच्छामि ण तेसिमंतिय पाउब्भवामि पासतु ता मे इममेयारूव दिव्व देविड्ढि दिव्व देवजुति लद्ध पत्त अभिसमण्णागय,

अहुणोववण्णे देवे देवलोएसु —जाव— अणज्झोववण्णे

तस्स ण एव भवइ—"अत्थि ण मम माणुस्सए भवे मित्तेइ वा, सहीइ वा, सहाएइ वा, सगएइ वा तेसि च ण अम्हे अण्णमण्णस्स सगारे पडिसुए भवइ" जो मे पुव्वि चयइ से सबोहेयव्वे,

इच्चेएहि —जाव— सचाएइ हव्वमागच्छित्तए २

३२४ चउहि ठाणेहि लोगधयारे सिया त जहा-

अरहतेहि वोच्छिज्जमाणेहि,

अरहतपण्णत्ते धम्मे वोच्छिज्जमाणे,

पुव्वगए वोच्छिज्जमाणे,

जायतेए वोच्छिज्जमाणे

चउहि ठाणेहि लोउज्जोए सिया त जहा-

अरहतेहि जायमाणेहि,

अरहतेहि पव्वयमाणेहि,

अरहताण नाणुप्पायमहिमासु,

अरहताण परिनिव्वाणमहिमासु

एव देवधगारे, देवुज्जोए, देवसण्णिवाए, देवुक्कलियाए, देवकहकहए

चउहि ठाणेहि देविदा माणुस्स लोग हव्वमागच्छति

एव जहा-तिठाणे —जाव— लोगतिया देवा माणुस्स लोग हव्वमागच्छेज्जा त जहा-

अरहतेहि जायमाणेहि —जाव—

अरिहताण परिनिव्वाणमहिमासु ३

३२५ चत्तारि दुहसेज्जाओ पण्णत्ताओ त जहा-

तत्थ खलु इमा पढमा दुहसेज्जा त जहा-

से ण मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइए निग्गथे पावयणे सकिए कखिए विइगिच्छिए भेयसमावण्णे कलुससमावण्णे निग्गथ पावयण नो सद्दहइ, नो पत्तियइ, नो रोएइ, निग्गथ पावयण असद्दहमाणे अपत्तियमाणे अरोएमाणे मण उच्चावय नियच्छइ विणिघायमावज्जइ पढमा दुहसेज्जा

अहावरा दोच्चा दुहसेज्जा-

से ण मुडे भवित्ता अगाराओ —जाव— पव्वइए सएण लाभेण नो तुस्सइ, परस्स लाभमासाएइ, पीहेइ, पत्थेइ, अभिलसइ परस्स लाभमासाएमाणे —जाव— अभिलसमाणे मण उच्चावय नियच्छइ, विणिघायमावज्जइ दोच्चा दुहसेज्जा

अहावरा तच्चा दुहसेज्जा-

से ण मुडे भवित्ता —जाव— पव्वइए दिव्वे माणुस्सए कामभोगे आसाएइ —जाव — अभिलसइ दिव्वे माणुस्सए कामभोगे आसाएमाणे —जाव— अभिलसमाणे मण उच्चावय नियच्छइ विणिघायमावज्जइ,

तच्चा दुहसेज्जा

अहावरा चउत्था दुहसेज्जा-

से ण मुडे —जाव— पव्वइए तस्स ण एव भवइ "जया ण अह अगारवास आवसामी तया ण अह सवाहणपरि-

मद्दणगातब्भगगातुच्छोलणाइ लभामि जप्पभिइ च ण अह मुडे —जाव— पव्वइए तप्पभिद च ण अह सवाहण जाव गातुच्छोलणाइ नो लभामि, से ण सवाहण - जाव गातुच्छोलणाइ आसाएइ —जाव— अभिलसइ", से ण सवाहण —जाव— गातुच्छोलणाइ आसाएमाणे जाव मण उच्चावय नियच्छइ विणिघायमावज्जइ

चउत्था दुहसेज्जा

चत्तारि सुहसेज्जाओ पण्णत्ताओ त जहा-

तत्थ खलु पढमा सुहसेज्जा-

से ण मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइए निग्गथे पावयणे ।नस्सकिए निक्कखिए निव्वितिगिच्छिए नो भेदसमावण्णे, नो कलुसमावण्णे निग्गथ पावयण सद्दहइ पत्तीयइ रोएइ निग्गथ पावयण सद्दहमाणे पत्तियमाणे रोएमाणे, नो मण उच्चावय नियच्छइ, नो विणिघायमावज्जइ

पढमा सुहसेज्जा

अहावरा दोच्चा सुहसेज्जा-

से ण मुडे —जाव— पव्वइए सएण लाभेण तुस्सइ परस्स लाभ नो आसाएइ, नो पीहेइ, नो पत्थेइ, नो अभिलसइ परस्स लाभमणासाएमाणे —जाव— अणभिलसमाणे, नो मण उच्चावय नियच्छइ, नो विणिघायमावज्जइ,

दोच्चा सुहसेज्जा

अहावरा तच्चा सुहसेज्जा-

से ण मुडे —जाव— पव्वइए दिव्वे माणुस्सए कामभोगे नो आसाएइ —जाव— नो अभिलसइ दिव्वे माणुस्सए कामभोगे अणासाएमाणे —जाव— अणभिलसमाणे नो मण उच्चावय नियच्छइ, नो विणिघायमावज्जइ,

तच्चा सुहसेज्जा

अहावरा चउत्था सहसेज्जा-

से ण मुडे —जाव— पव्वइए तस्स ण एव भवइ-जइ ताव अरहता भगवता हट्ठा आरोग्गा बलिया कल्लसरीरा अण्णयराइ ओरालाइ कल्लाणाइ विउलाइ पययाइ पग्गहियाइ महाणुभागाइं कम्मक्खयकारणाइ तवोकम्माइ पडिवज्जति किमग पुण अह अब्भोवगमिओवक्कमिय वेयण नो सम्म सहामि खमामि तितिक्खेमि अहियासेमि मम च ण अब्भोवगमिओवक्कमिय सम्ममसहमाणस्स अक्खममाणस्स अतितिक्खमाणस्स अणहियासेमाणस्स कि मण्णे कज्जति ? एगतसो मे पावे कम्मे कज्जइ मम च ण अब्भोवगमिओ —जाव— सम्म सहमाणस्स —जाव— अहियासेमाणस्स किं मण्णे कज्जइ ? एगतसो मे निज्जरा कज्जइ

चउत्था सुहसेज्जा २

३२६ चत्तारि अवायणिज्जा पण्णत्ता त जहा-

अविणीए, वीगइपडिबद्धे, ओसविएपाहुडे, माइ

मद्दणगातब्भगगातुच्छोलणाइ लभामि जप्पभिइ च ण अह मुडे —जाव— पव्वइए तप्पभिइ च ण अह सवाहण जाव गातुच्छोलणाइ नो लभामि, से ण सवाहण —जाव गातुच्छोलणाइ आसाएइ —जाव— अभिलसइ", से ण सवाहण —जाव— गातुच्छोलणाइ आसाएमाणे — जाव मण उच्चावय नियच्छइ विणिघायमावज्जइ

चउत्था दुहसेज्जा

चत्तारि सुहसेज्जाओ पण्णत्ताओ त जहा-

तत्थ खलु पढमा सुहसेज्जा-

से ण मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइए निग्गथे पावयणे निस्सकिए निक्कखिए निव्वितिगिच्छिए नो भेदसमावण्णे, नो कलुसमावण्णे निग्गथ पावयण सद्दहइ पत्तीयइ रोएइ निग्गथ पावयण सद्दहमाणे पत्तियमाणे रोएमाणे, नो मण उच्चावय नियच्छइ, नो विणिघायमावज्जइ

पढमा सुहसेज्जा

अहावरा दोच्चा सुहसेज्जा-

से ण मुडे —जाव— पव्वइए सएण लाभेण तुस्सइ परस्स लाभ नो आसाएइ, नो पीहेइ, नो पत्थेइ, नो अभिलसइ परस्स लाभमणासाएमाणे —जाव— अणभिलसमाणे, नो मण उच्चावय नियच्छइ, नो विणिघायमावज्जइ,

दोच्चा सुहसेज्जा

अहावरा तच्चा सुहसेज्जा-

से ण मुंडे —जाव— पव्वइए दिव्वे माणुस्सए कामभोगे नो आसाएइ —जाव— नो अभिलसइ दिव्वे माणुस्सए कामभोगे अणासाएमाणे —जाव— अणभिलसमाणे नो मण उच्चावय नियच्छइ, नो विणिघायमावज्जइ,

तच्चा सुहसेज्जा

अहावरा चउत्था सहसेज्जा-

से ण मुंडे —जाव— पव्वइए तस्स ण एव भवइ-जइ ताव अरहता भगवता हट्ठा आरोग्गा बलिया कल्लसरीरा अण्णयराइ ओरालाइ कल्लाणाइ विउलाइ पययाइ पग्गहियाइ महाणुभागाइ कम्मक्खयकारणाइ तवोकम्माइ पडिवज्जति किमग पुण अह अब्भोवगमि ओवक्कमिय वेयण नो सम्म सहामि खमामि तितिक्खेमि अहियासेमि मम च ण अब्भोवगमिओवक्कमिय सम्ममसहमाणस्स अक्खममाणस्स अतितिक्खमाणस्स अणहियासेमाणस्स कि मण्णे कज्जति ? एगतसो मे पावे कम्मे कज्जइ मम च ण अब्भोवगमिओ —जाव— सम्म सहमाणस्स —जाव— अहियासेमाणस्स कि मण्णे कज्जइ ? एगतसो मे निज्जरा कज्जइ

चउत्था सुहसेज्जा २

३२६ चत्तारि अवायणिज्जा पण्णत्ता त जहा-

अविणीए, वीगइपडिबद्धे, ओसविएपाहुडे, माइ

चत्तारि वायणिज्जा पण्णत्ता त जहा-
विणीए, अविगइपडिबद्धे,
विओसवियपाहुडे, अमाइ २

३२७ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
आयभरे नामेगे नो परभरे,
परभरे नामेगे नो आयभरे,
एगे आयभरे वि परभरे वि,
एगे नो आयभरे नो परभरे

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
दुग्गए नामेगे दुग्गए, दुग्गए नामेगे सुग्गए,
सुग्गए नामेगे दुग्गए, सुग्गए नामेगे सुग्गए

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
दुग्गए नामेगे दुव्वए, दुग्गए नामेगे सुव्वए,
सुग्गए नामेगे दुव्वए, सुग्गए नामेगे सुव्वए

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
दुग्गए नामेगे दुप्पडियाणदे,
दुग्गए नामेगे सुप्पडियाणदे,
सुग्गए नामेगे दुप्पडियाणदे,
सुग्गए नामेगे सुप्पडियाणदे

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा
दुग्गए नामेगे दुग्गइगामी,

दुग्गए नामेगे सुग्गइगामी,
सुग्गए नामेगे दुग्गइगामी,
सुग्गए नामेगे सुग्गइगामी

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
दुग्गए नामेगे दुग्गइगए,
दुग्गए नामेगे सुगइगए,
सुगए नामेगे दुग्गइगए,
सुगए नामेगे सुगइगए

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
तमे नामेगे तमे, तमे नामेगे जोई,
जोई नामेगे तमे, जोई नामेगे जोई

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
तमे नामेगे तमबले, तमे नामेगे जोइबले,
जोई नामेगे तमबले, जोई नामेगे जोइबले

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
तमे नामेगे तमबलपलज्जणे,
तमे नामेगे जोइबलपलज्जणे,
जोई नामेगे तमबलपलज्जणे,
जोई नामेगे जोइबलपलज्जणे

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
परिण्णायकम्मे नामेगे नो परिण्णायसण्णे,
परिण्णायसण्णे नामेगे नो परिण्णायकम्मे,

एगे परिण्णायकम्मे वि परिण्णायसण्णे वि,
एगे नो परिण्णायकम्मे नो परिण्णायसण्णे

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
परिण्णायकम्मे नामेगे नो परिण्णायगिहवासे,
परिण्णायगिहवासे नामेगे नो परिण्णायकम्मे,
एगे परिण्णायगिहवासे वि परिण्णायकम्मे वि,
एगे नो परिण्णायगिहवासे नो परिण्णायकम्मे

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
परिण्णायसण्णे नामेगे नो परिण्णायगिहवासे,
परिण्णायगिहवासे नामेगे नो परिण्णायसण्णे,
एगे परिण्णायसण्णे वि परिण्णायगिहवासे वि,
एगे नो परिण्णायसण्णे नो परिण्णायगिहवासे.

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
इहत्थे नामेगे नो परत्थे,
परत्थे नामेगे नो इहत्थे,
एगे इहत्थे वि परत्थे वि,
एगे नो इहत्थे नो परत्थे

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
एगेण नामेगे वड्ढइ एगेण हायइ,
एगेण नामेगे वड्ढइ दोहिं हायइ,
दोहिं नामेगे वड्ढइ एगेण हायइ,
एगे दोहिं नामेगे वड्ढइ दोहिं हायइ

चत्तारि कथगा पण्णत्ता त जहा-

आइण्णे नामेगे आइण्णे, आइण्णे नामेगे खलुके,

खलुके नामेगे आइण्णे, खलुके नामेगे खलुके

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-

आइण्णे नामेगे आइण्णे, —जाव—

खलुके नामेगे खलुके

चत्तारि कथगा पण्णत्ता त जहा

आइण्णे नामेगे आइण्णयाए विहरइ,

आइण्णे नामेगे खलुकत्ताए विहरइ,

खलुके नामेगे आइण्णयाए विहरई,

खलुके नामेगे खलुकत्ताए विहरइ

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-

आइण्णे नामेगे आइण्णत्ताए विहरइ, —जाव—

खलुके नामेगे खलुकत्ताए विहरइ

चत्तारि पकथगा पण्णत्ता त जहा-

जाइसपण्णे नामेगे नो कुलसपण्णे,

कुलसपण्णे नामेगे नो जाइसपण्णे,

एगे जाइसपण्ण वि कुलसपण्णे वि,

एगे नो जाइसपण्णे नो कुलसपण्णे

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-

जाइसपण्णे नामेगे नो कुलसपण्णे, —जाव—

एगे नो जाइसपण्णे नो कुलसपण्णे

अहो लोगे ण चत्तारि विसरीरा पण्णत्ता त जहा-
पुढविकाइया —जाव—
उराला तसा पाणा
एव तिरियलोए वि २

३३० चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
हिरिसत्ते, हिरिमणसत्ते, चलसत्ते, थिरसत्ते

३३१ चत्तारि सिज्जपडिमाओ पण्णत्ताओ

चत्तारि वत्थपडिमाओ पण्णत्ताओ

चत्तारि पायपडिमाओ पण्णत्ताओ

चत्तारि ठाणपडिमाओ पण्णत्ताओ ४

३३२ चत्तारि सरीरगा जीवफुडा पण्णत्ता त जहा
वेउव्विए, आहारए, तेयए, कम्मए

चत्तारि सरीरगा कम्मुम्मोसगा पण्णत्ता त जहा-
ओरालिए, वेउव्विए आहारए, तेउए २

३३३ चउहि अत्थिकाएहि लोगे फुडे पण्णत्ते त जहा-
धम्मत्थिकाएण, अधम्मत्थिकाएण,
जीवत्थिकाएण, पुग्गलत्थिकाएण

चउहि बादरकाएहि उववज्जमाणेहि लोगे फुडे पण्णत्ते त जहा-
पढविकाइएहि, आउकाइएहि,
वाउकाइएहि, वणस्सइकाइएहि २

३३४ चत्तारि पएसग्गेण तुल्ला पण्णत्ता त जहा-
धम्मत्थिकाए, अधम्मत्थिकाए,
लोगागासे, एगजीवे

३३५ चउण्हमेग सरीर नो सुपस्स भवइ त जहा-
पुढविकाइयाण, आउकाइयाण,
तेउकाइयाण, वणस्सइकाइयाण

३३६ चत्तारि इदियत्था पुट्ठा वेदेंति त जहा-
सोइदियत्थे, घाणिदियत्थे,
जिब्भिदियत्थे, फासिदियत्थे

३३७ चउहि ठाणेहि जीवा य पोग्गला य नो सचाएइ बहिया लोगता गमणयाए त जहा-
गइअभावेण, निरुवग्गहयाए,
लुक्खयाए, लोगाणुभावेण

३३८ चउव्विहे णाए पण्णत्ते त जहा-
आहरणे, आहरणतद्देसे,
आहरणतद्दोसे, उवण्णासोवणए

आहरणे चउव्विहे पण्णत्ते त जहा-
अवाए उवाए, ठवणाकम्मे, पडुपण्णविणासी

आहरणतद्देसे चउव्विहे पण्णत्ते त जहा-
अणुसिट्ठि, उवालभे, पुच्छा, निस्सावयणे

आहरणतद्दोसे चउव्विहे पण्णत्ते त जहा-

अधम्मजुत्ते, पडिलोमे, अत्तोवणीए, दुरुवणीए-

उवण्णासोवणए चउव्विहे पण्णत्ते त जहा-

तव्वत्थुए, तदण्णवत्थुए,

पडिनिभे, हेऊ

हेऊ चउव्विहे पण्णत्ते त जहा-

जावए, थावए, वंसए, लूसए

अहवा हेऊ चउव्विहे पण्णत्ते त जहा-

पच्चक्खे, अणुमाणे, ओवम्मे, आगमे

अहवा हेऊ चउव्विहे पण्णत्ते त जहा-

अत्थित्तं अत्थि सो हेऊ,

अत्थित्तं नत्थि सो हेऊ,

नत्थित्तं अत्थि सो हेऊ,

नत्थित्तं नत्थि सो हेऊ ८

३३९ चउव्विहे सखाणे पण्णत्ते त जहा-

पडिकम्मं, ववहारे, रज्जू, रासी

अहोलोगे ण चत्तारि अधगार करेंति त जहा-

नरगा, नेरइया,

पावाइ कम्माइ, असुभा पोग्गला

तिरियलोगे ण चत्तारि उज्जोयं करेंति त जहा-

चदा, सूरा, मणि, जोई

उड्ढलोगे ण चत्तारि उज्जोयं करेंति त जहा-

देवा, देवीओ, विमाणा, आभरणा ४

चउट्ठाणस्स चउत्थो उद्देसो

३४० चत्तारि पसप्पगा पण्णत्ता त जहा-

अणुप्पण्णाण भोगाण उप्पाएत्ता एगे पसप्पए,
पुव्वुप्पण्णाण भोगाण अविप्पओगेण एगे पसप्पए,
अणुप्पण्णाण सोक्खाण उप्पाइत्ता एगे पसप्पए,
पुव्वुप्पण्णाण सोक्खाण अविप्पओगेण एगे पसप्पए

३४१ नेरइयाण चउव्विहे आहारे पण्णत्ते त जहा-

इगालोवमे, मुम्मरोवमे, सीयले, हिमसीयले

तिरिक्खजोणियाण चउव्विहे आहारे पण्णत्ते त जहा-

ककोवमे, बिलोवमे, पाणमसोवमे, पुत्तमसोवमे

मणुस्साण चउव्विहे आहारे पण्णत्ते त जहा-

असणे —जाव – साइमे

देवाण चउव्विहे आहारे पण्णत्ते त जहा-

वण्णमते, गधमते, रसमते, फासमते ४

३४२ चत्तारि जाइआसीविसा पण्णत्ता त जहा-

बिच्छुयजाइआसीविसे, मडुक्कजाइआसीविसे,
उरगजाइआसीविसे, मणुस्सजाइआसीविसे.

प्र० विच्छुयजाइआसीविसस्स ण भते ! केवइए विसए पण्णत्ते ?

उ० पभू ण विच्छुयजाइआसीविसे अद्धभरहप्पमाणमेत्त वोंदि विसेण विसपरिणय विसट्टमाणि करित्तए
विसए से विसट्टयाए नो चेव ण सपत्तीए करेंसु वा, करेंति वा, करिस्सति वा

प्र० मडुक्कजाइ आसीविसस्स पुच्छा ?

उ० पभू ण मडुक्कजाइआसीविसे भरहप्पमाणमेत्त वोंदि विसेण विसपरिणय विसट्टमाणि करित्तए
सेस त चेव —जाव— करिस्सति वा

प्र० उरगजाइ पुच्छा ?

उ० पभू ण उरगजाइआसीविसे जबुद्दीवपमाणमेत्त वोंदि विसेण विसपरिणय विसट्टमाणि करित्तए
सेस त चेव —जाव— करिस्सति वा

प्र० मणुस्सजाइ पुच्छा ?

उ० पभू ण मणुस्सजाइआसीविसे समयखेत्तपमाणमेत्त वोंदि विसेण विसपरिणय विसट्टमाणि करेत्तए
विसए से विसट्टयाए नो चेव ण —जाव— करिस्सति वा

३४३ चउव्विहे वाही पण्णत्ता त जहा-

थाइए, विसिए, सिभिए, सण्णिवाइए

चउव्विहा तिगिच्छा पण्णत्ता त जहा-
विज्जो, ओसहाइ, आउरे, परिचारए २

३४४ चत्तारि तिगिच्छगा पण्णत्ता त जहा-
आयतिगिच्छए नामेगे नो परतिगिच्छए,
परतिगिच्छए नामेगे नो आयतिगिच्छए,
एगे आयतिगिच्छए वि परतिगिच्छए वि,
एगे नो आयतिगिच्छए नो परतिगिच्छए

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
वणकरे नामेगे नो वणपरिमासी,
वणपरिमासी नामेगे नो वणकरे,
एगे वणकरे वि वणपरिमासी वि,
एगे नो वणकरे नो वणपरिमासी,

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
वणकरे नामेगे नो वणसारक्खी —जाव—
एगे नो वणकरे नो वणसारक्खी

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
वणकरे नामेगे नो वणसरोही —जाव—
एगे नो वणकरे नो वणसरोही

चत्तारि वणा पण्णत्ता त जहा-
अतोसल्ले नामेगे नो बाहिसल्ले,

बाहिंसल्ले नामेगे नो अंतोसल्ले,
एगे अंतोसल्ले वि बाहिंसल्ल वि,
एगे नो अंतोसल्ले नो बाहिंसल्ले

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता तं जहा-
अंतोसल्ले नामेगे नो बाहिंसल्ले —जाव—
एगे नो अंतोसल्ले नो बाहिंसल्ले

चत्तारि वणा पण्णत्ता तं जहा-
अंतो दुट्ठे नामेगे नो बाहिं दुट्ठे,
बाहिं दुट्ठे नामेगे नो अंतो दुट्ठे,
एगे अंतो दुट्ठे वि बाहिं दुट्ठे वि,
एगे नो अंतो दुट्ठे नो बाहिं दुट्ठे

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता तं जहा-
सेयसे नामेगे सेयसे, सेयसे नामेगे पावसे,
पावसे नामेगे सेयसे, पावसे नामेगे पावसे

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता तं जहा-
सेयसे नामेगे सेयसेत्ति सालिसए,
सेयसे नामेगे पावसेत्ति सालिसए,
एगे सेयसे वि सेयसेत्ति सालिसए वि,
एगे नो सेयसे नो सेयसेत्ति सालिसए

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता तं जहा-
सेयसेत्ति नामेगे सेयसेत्ति मण्णइ,

सेयसेत्ति नामेगे पावसेत्ति मण्णइ,
एगे सेयसेत्ति वि सेयसेत्ति मण्णइ वि,
एगे नो सेयसेत्ति नो सेयसेत्ति मण्णइ

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
सेयसे नामेगे सेयसेत्ति सालिसए मण्णइ,
सेयसे नामेगे पावसेत्ति सालिसए मण्णइ,
एगे सेयसे वि सेयसेत्ति सालिसए मण्णइ वि,
एगे नो सेयसे नो सेयसेत्ति सालिसए मण्णइ

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
आघवइत्ता नामेगे नो परिभावइत्ता,
परिभावइत्ता नामेगे नो आघवइत्ता,
एगे आघवइत्ता वि परिभावइत्ता वि,
एगे नो आघवइत्ता नो परिभावइत्ता

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
आघवइत्ता नामेगे नो उछजीविसपण्णे,
उछजीविसपण्णे नामेगे नो आघवइत्ता,
एगे आघवइत्ता वि उछजीविसपण्णे वि,
एगे नो आघवइत्ता नो उछजीविसपण्णे

चउव्विहा रुक्खविगुव्वणा पण्णत्ता त जहा-
पवालत्ताए, पत्तत्ताए, पुप्फत्ताए, फलत्ताए १४

३४५ चत्तारि वाइसमोसरणा पण्णत्ता त जहा-

किरियावाई, अकिरियावाई,
अण्णाणियवाई, वेणइयवाई

नेरइयाण चत्तारि वाइसमोसरणा पण्णत्ता त जहा-
किरियावाई —जाव— वेणइयवाई
एव असुरकुमाराण वि —जाव— थणियकुमाराणं-
एव विगलिंदियवज्ज —जाव— वेमाणियाण २

३४६ चत्तारि मेहा पण्णत्ता त जहा-
गज्जित्ता नामेगे नो वासित्ता,
वासित्ता नामेगे नो गज्जित्ता,
एगे गज्जित्ता वि वासित्ता वि,
एगे नो गज्जित्ता नो वासित्ता

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा
गज्जित्ता नामेगे नो वासित्ता, —जाव—
एगे नो गज्जित्ता नो वासित्ता

चत्तारि मेहा पण्णत्ता त जहा-
गज्जित्ता नामेगे नो विज्जुयाइत्ता,
विज्जुयाइत्ता नामेगे नो गज्जित्ता,
एगे गज्जित्ता वि विज्जुयाइत्ता वि,
एगे नो गज्जित्ता नो विज्जुयाइत्ता

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
गज्जित्ता नामेगे नो विज्जुयाइत्ता —जाव—

एगे नो गज्जित्ता नो विज्जुयाइत्ता

चत्तारि मेहा पण्णत्ता त जहा-
वासित्ता नामेगे नो विज्जुयाइत्ता,
विज्जुयाइत्ता नामेगे नो वासित्ता,
एगे वासित्ता वि विज्जुयाइत्ता वि,
एगे नो वासित्ता नो विज्जुयाइत्ता

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
वासित्ता नामेगे नो विज्जुयाइत्ता —जाव—
एगे नो वासित्ता नो विज्जुयाइत्ता

चत्तारि मेहा पण्णत्ता त जहा-
कालवासी नामेगे नो अकालवासी,
अकालवासी नामेगे नो कालवासी,
एगे कालवासी वि अकालवासी वि,
एगे नो कालवासी नो अकालवासी

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
कालवासी नामेगे नो अकालवासी —जाव—
एगे नो कालवासी नो अकालवासी

चत्तारि मेहा पण्णत्ता त जहा-
खेत्तवासी नामेगे नो अखेत्तवासी,
अखेत्तवासी नामेगे नो खेत्तवासी,
एगे खेत्तवासी वि अखेत्तवासी वि,

किरियावाई, अकिरियावाई,
अण्णाणियवाई, वेणइयवाई

नेरइयाण चत्तारि वाइसमोसरणा पण्णत्ता त जहा-
किरियावाई —जाव— वेणइयवाई
एव असुरकुमाराण वि —जाव— थणियकुमाराणं-
एव विगलिदियवज्ज —जाव— वेमाणियाण २

३४६ चत्तारि मेहा पण्णत्ता त जहा-
गज्जित्ता नामेगे नो वासित्ता,
वासित्ता नामेगे नो गज्जित्ता,
एगे गज्जित्ता वि वासित्ता वि,
एगे नो गज्जित्ता नो वासित्ता

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
गज्जित्ता नामेगे नो वासित्ता, —जाव—
एगे नो गज्जित्ता नो वासित्ता

चत्तारि मेहा पण्णत्ता त जहा-
गज्जित्ता नामेगे नो विज्जुयाइत्ता,
विज्जुयाइत्ता नामेगे नो गज्जित्ता,
एगे गज्जित्ता वि विज्जुयाइत्ता वि,
एगे नो गज्जित्ता नो विज्जुयाइत्ता

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
गज्जित्ता नामेगे नो विज्जुयाइत्ता —जाव—

एगे नो गज्जित्ता नो विज्जुयाइत्ता

चत्तारि मेहा पण्णत्ता त जहा-
वासित्ता नामेगे नो विज्जुयाइत्ता,
विज्जुयाइत्ता नामेगे नो वासित्ता,
एगे वासित्ता वि विज्जुयाइत्ता वि,
एगे नो वासित्ता नो विज्जुयाइत्ता

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
वासित्ता नामेगे नो विज्जुयाइत्ता —जाव—
एगे नो वासित्ता नो विज्जुयाइत्ता

चत्तारि मेहा पण्णत्ता त जहा-
कालवासी नामेगे नो अकालवासी,
अकालवासी नामेगे नो कालवासी,
एगे कालवासी वि अकालवासी वि,
एगे नो कालवासी नो अकालवासी

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
कालवासी नामेगे नो अकालवासी —जाव—
एगे नो कालवासी नो अकालवासी

चत्तारि मेहा पण्णत्ता त जहा-
खेत्तवासी नामेगे नो अखेत्तवासी,
अखेत्तवासी नामेगे नो खेत्तवासी,
एगे खेत्तवासी वि अखेत्तवासी वि,

एगे नो खेत्तवासी नो अखेत्तवासी

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
खेत्तवासी नामेगे नो अखेत्तवासी, —जाव—
एगे नो खेत्तवासी नो अखेत्तवासी

चत्तारि मेहा पण्णत्ता त जहा-
जणइत्ता नामेगे नो निम्मवइत्ता,
निम्मवइत्ता नामेगे नो जणइत्ता,
एगे जणइत्ता वि निम्मवइत्ता वि,
एगे नो जणइत्ता नो निम्मवइत्ता

एवामेव चत्तारि अम्मापियरो पण्णत्ता त जहा-
जणइत्ता नामेगे नो निम्मवइत्ता, —जाव—
एगे नो जणइत्ता नो निम्मवइत्ता

चत्तारि मेहा पण्णत्ता त जहा-
देसवासी नामेगे नो सव्ववासी,
सव्ववासी नामेगे नो देसवासी,
एगे देसवासी वि सव्ववासी वि,
एगे नो देसवासी नो सव्ववासी

एवामेव चत्तारि रायाणो पण्णत्ता त जहा-
देसाहिवइ नामेगे सव्वाहिवइ, —जाव—
एगे नो देसाहिवइ नो सव्वाहिवइ १४

३४७ चत्तारि मेहा पण्णत्ता त जहा-

पुक्खलसवट्टए, पज्जुण्णे, जीमूए, जिम्हे
पुक्खलसवट्टए ण महामेहे एगेण वासेण दसवाससहस्साइ भावेइ,
पज्जुण्णे ण महामेहे एगेण वासेण दसवाससयाइ भावेइ,
जीमूए ण महामेहे एगेण वासेण दसवासाइ भावेइ,
जिम्हे ण महामेहे वहूहि वासेहि एग वास भावेइ वा, ण वा भावेइ

३४८ चत्तारि करडगा पण्णत्ता त जहा-
सोवागकरडए, वेसियाकरडए,
गाहावइकरडए, रायकरडए

एवामेव चत्तारि आयरिया पण्णत्ता त जहा-
सोवागकरडगसमाणे, वेसियाकरडगसमाणे,
गाहावइकरडगसमाणे, रायकरडगसमाणे २

३४९ चत्तारि रुक्खा पण्णत्ता त जहा
साले नामेगे सालपरियाए,
साले नामेगे एरडपरियाए,
एरडे नामेगे सालपरियाए,
एरडे नामेगे एरडपरियाए

एवामेव चत्तारि आयरिया पण्णत्ता त जहा-
साले नामेगे सालपरियाए — जाव —
एरडे नामेगे एरडपरियाए

एगे नो खेत्तवासी नो अखेत्तवासी

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता तं जहा-
खेत्तवासी नामेगे नो अखेत्तवासी, —जाव—
एगे नो खेत्तवासी नो अखेत्तवासी

चत्तारि मेहा पण्णत्ता तं जहा-
जणइत्ता नामेगे नो निम्मवइत्ता,
निम्मवइत्ता नामेगे नो जणइत्ता,
एगे जणइत्ता वि निम्मवइत्ता वि,
एगे नो जणइत्ता नो निम्मवइत्ता

एवामेव चत्तारि अम्मापियरो पण्णत्ता तं जहा-
जणइत्ता नामेगे नो निम्मवइत्ता, —जाव—
एगे नो जणइत्ता नो निम्मवइत्ता

चत्तारि मेहा पण्णत्ता तं जहा-
देसवासी नामेगे नो सव्ववासी,
सव्ववासी नामेगे नो देसवासी,
एगे देसवासी वि सव्ववासी वि,
एगे नो देसवासी नो सव्ववासी

एवामेव चत्तारि रायाणो पण्णत्ता तं जहा-
देसाहिवइ नामेगे सव्वाहिवइ, —जाव—
एगे नो देसाहिवइ नो सव्वाहिवइ १४

३४७ चत्तारि मेहा पण्णत्ता तं जहा-

पुक्खलसवट्टए, पज्जुण्णे, जीमूए, जिम्हे
पुक्खलसवट्टए ण महामेहे एगेण वासेण दसवाससहस्साइ भावेइ,
पज्जुण्णे ण महामेहे एगेण वासेण दसवाससयाइ भावेइ,
जीमूए ण महामेहे एगेण वासेण दसवासाइ भावेइ,
जिम्हे ण महामेहे बहूहि वासेहि एग वास भावेइ वा, ण वा भावेइ

३४८ चत्तारि करडगा पण्णत्ता त जहा-
सोवागकरडए, वेसियाकरडए,
गाहावइकरडए, रायकरडए

एवामेव चत्तारि आयरिया पण्णत्ता त जहा-
सोवागकरडगसमाणे, वेसियाकरडगसमाणे,
गाहावइकरडगसमाणे, रायकरडगसमाणे २

३४९ चत्तारि रुक्खा पण्णत्ता त जहा
साले नामेगे सालपरियाए,
साले नामेगे एरडपरियाए,
एरडे नामेगे सालपरियाए,
एरडे नामेगे एरडपरियाए

एवामेव चत्तारि आयरिया पण्णत्ता त जहा-
साले नामेगे सालपरियाए — जाव —
एरडे नामेगे एरडपरियाए

चत्तारि रुक्खा पण्णत्ता त जहा-

साले नामेगे सालपरिवारे,

साले नामेगे एरडपरिवारे,

एरडे नामेगे सालपरिवारे,

एरडे नामेगे एरडपरिवारे

एवामेव चत्तारि आयरिया पण्णत्ता त जहा-

साले नामेगे सालपरिवारे —जाव—

एरडे नामेगे एरडपरिवारे

गाहाओ—सालदुममज्झयारे ,

जह साले णाम होइ दुमराया ।

इ य सुदरआयरिए ,

सुदरसीसे मुणेयव्वे ॥१॥

एरडमज्झयारे ,

जह साले णाम होइ दुमराया ।

इ य सुदरआयरिए ,

मगुलसीसे मुणेयव्वे ॥२॥

सालदुममज्झयारे ,

एरडे णाम होइ दुमराया ।

इ य मगुलआयरिए ,

सुदरसीसे मुणेयव्वे ॥३॥

एरडमज्झयारे ,
एरडे णाम होइ दुमराया ।
इ य मगुलआयरिए ,
मगुलसीसे मुणेयव्वे ॥४॥

चत्तारि मच्छा पण्णत्ता त जहा-
अणुसोयचारी, पडिसोयचारी,
अतचारी, मज्झचारी

एवामेव चत्तारि भिक्खागा पण्णत्ता त जहा-
अणुसोयचारी, —जाव— मज्झचारी

चत्तारि गोला पण्णत्ता त जहा-
मधुसित्थगोले, जउगोले, दारुगोले, मट्टियागोले

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
मधुसित्थगोलसमाणे —जाव— मट्टियागोलसमाणे.

चत्तारि गोला पण्णत्ता त जहा-
अयगोले, तउगोले, तबगोले, सीसगोले

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
अयगोलसमाणे, —जाव— सीसगोलसमाणे

चत्तारि गोला पण्णत्ता त जहा-
हिरण्णगोले, सुवण्णगोले,
रयणगोले, वयरगोले

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
हिरण्णगोलसमाणे, —जाव— वइरगोलसमाणे

चत्तारि पत्ता पण्णत्ता त जहा-
असिपत्ते, करपत्ते, खुरपत्ते, कलबचीरियापत्ते

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
असिपत्तसमाणे, —जाव—
कलबचीरियापत्तसमाणे

चत्तारि कडा पण्णत्ता त जहा-
सुबकडे, विदलकडे, चम्मकडे, कबलकडे

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
सुबकडसमाणे — जाव— कंबलकडसमाणे १६

३५० चउव्विहा चउप्पया पण्णत्ता त जहा-
एगखुरा, दुखुरा, गडीपया, सणप्फया

चउव्विहा पक्खी पण्णत्ता त जहा-
चम्मपक्खी, लोमपक्खी, समुग्गपक्खी, विततपक्खी

चउव्विहा खुड्डपाणा पण्णत्ता त जहा-
बेइदिया, तेइदिया,
चउरिदिया, समुच्छिम-पचिदिय-तिरिक्खजोणिया,

३५१ चत्तारि पक्खी पण्णत्ता त जहा-
निवत्तित्ता नामेगे नो परिवत्तित्ता,
परिवत्तित्ता नामेगे नो निवत्तित्ता,

एगे निवत्तित्ता वि परिवत्तित्ता वि,
एगे नो निवत्तित्ता नो परिवत्तित्ता

एवामेव चत्तारि भिक्खागा पण्णत्ता त जहा-
निवत्तित्ता नामेगे नो परिवत्तित्ता —जाव—
एगे नो निवत्तित्ता नो परिमत्तित्ता २

३५२ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
निक्कट्ठे नामेगे निक्कट्ठे,
निक्कट्ठे नामेगे अनिक्कट्ठे,
अनिक्कट्ठे नामेगे निक्कट्ठे,
अनिक्कट्ठे नामेगे अनिक्कट्ठे

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
निक्कट्ठे नामेगे निक्कट्ठप्पा, —जाव—
अनिक्कट्ठे नामेगे अनिक्कट्ठप्पा

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
बुहे नामेगे बुहे, बुहे नामेगे अबुहे,
अबुहे नामेगे बुहे, अबुहे नामेगे अबुहे

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
बुहे नामेगे बुहहियए —जाव—
अबुहे नामेगे अबुहहियए

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
आयाणुकपए नामेगे नो पराणुकपए,

परांणुकंपए नामेगे नो आयाणुकंपए,
एगे आयाणुकंपए वि पराणुकंपए वि,
एगे नो आयाणुकंपए नो पराणुकंपए ५

३५३ चत्तारि संवासे पण्णत्ते तं जहा-
दिव्वे, आसुरे, रक्खसे, माणुसे

चउव्विहे संवासे पण्णत्ते तं जहा-
देवे नामेगे देवीए सद्धिं संवासं गच्छइ,
देवे नामेगे आसुरीए सद्धिं संवासं गच्छइ,
असुरे नामेगे देवीए सद्धिं संवासं गच्छइ,
असुरे नामेगे आसुरीए सद्धिं संवासं गच्छइ

चउव्विहे संवासे पण्णत्ते तं जहा-
देवे नामेगे देवीए सद्धिं संवासं गच्छइ,
देवे नामेगे रक्खसीए सद्धिं संवासं गच्छइ,
रक्खसे नामेगे देवीए सद्धिं संवासं गच्छइ,
रक्खसे नामेगे रक्खसीए सद्धिं संवासं गच्छइ

चउव्विहे संवासे पण्णत्ते तं जहा-
देवे नामेगे देवीए सद्धिं संवासं गच्छइ,
देवे नामेगे मणुस्सीहिं सद्धिं संवासं गच्छइ,
मणुस्से नामेगे देवीहिं सद्धिं संवासं गच्छइ,
मणुस्से नामेगे मणुस्सीहिं सद्धिं संवासं गच्छइ

चउव्विहे संवासे पण्णत्ते तं जहा-

असुरे नामेगे आसुरीए सद्धि सवास गच्छइ,
असुरे नामेगे रक्खसीए सद्धि सवास गच्छइ,
रक्खसे नामेगे आसुरीए सद्धि सवास गच्छइ,
रक्खसे नामेगे रक्खसीए सद्धि सवास गच्छइ

चउव्विहे सवासे पण्णत्ते त जहा-
असुरे नामेगे आसुरीए सद्धि सवास गच्छइ,
असुरे नामेगे मणुस्सीए सद्धि सवास गच्छइ,
मणुस्से नामेगे आसुरीए सद्धि सवास गच्छइ,
मणुस्से नामेगे मणुस्सीए सद्धि सवास गच्छइ

चउव्विहे सवासे पण्णत्ते त जहा-
रक्खसे नामेगे रक्खसीए सद्धि सवास गच्छइ,
रक्खसे नामेगे मणुस्सीए सद्धि सवास गच्छइ,
मणुस्से नामेगे रक्खसीए सद्धि सवास गच्छइ,
मणुस्से नामेगे मणुस्सीए सद्धि सवास गच्छइ ७

३५४ चउव्विहे अवद्धसे पण्णत्ते त जहा-
आसुरे, आभिओगे, समोहे, देवकिब्विसे

चउहि ठाणेहि जीवा आसुरत्ताए कम्म पगरेंति त जहा-
कोवसीलयाए, पाहुडसीलयाए,
ससत्ततवोकम्मेण, निमित्ताऽजीवयाए

चउहि ठाणेहि जीवा आभिओगत्ताए कम्म पगरेंति त जहा-
अत्तुक्कोसेण, परपरिवाएण,
भूइकम्मेण, कोउयकरणेण

चउहि ठाणेहि जीवा सम्मोहत्ताए कम्म पगरेंति त जहा-
उम्मग्गदेसणाए, मग्गतराएण,
कामाससप्पओगेण, भिज्जानियाणकरणेण

चउहि ठाणेहि जीवा देवकिब्विसियत्ताए कम्म पगरेंति त जहा-
अरहताण अवण्ण वयमाणे,
अरहतपण्णत्तस्स धम्मस्स अवण्ण वयमाणे,
आयरियउ-वज्झायाण अवण्ण वयमाणे,
चाउवण्णस्स सघस्स अवण्ण वयमाणे ५

३५५ चउव्विहा पव्वज्जा पण्णत्ता त जहा-
इहलोग-पडिवद्धा, परलोग-पडिवद्धा,
दुहओ लोगपडिवद्धा, अपडिवद्धा

चउव्विहा पव्वज्जा पण्णत्ता त जहा-
पुरओ पडिवद्धा, दुहओ पडिवद्धा,
मग्गओ पडिवद्धा, अपडिवद्धा

चउव्विहा पव्वज्जा पण्णत्ता त जहा
ओवायपव्वज्जा, अक्खायपव्वज्जा,
सगारपव्वज्जा, विहगगइपव्वज्जा

चउव्विहा पव्वज्जा पण्णत्ता त जहा-
तुयावइत्ता, पुयावइत्ता
मोयावइत्ता, परिपूयावइत्ता

चउव्विहा पव्वज्जा पण्णत्ता त जहा-
नडखइया, भडखइया,
सीहखइया, सीयालखइया

चउव्विहा किसी पण्णत्ता त जहा-
वाविया, परिवाविया,
निंदिया, परिणिंदिया

एवामेव चउव्विहा पव्वज्जा पण्णत्ता त जहा-
वाविया — जाव — परिणिंदिया

चउव्विहा पव्वज्जा पण्णत्ता त जहा-
धण्णपुंजियसमाणा, धण्णविरल्लियसमाणा,
धण्णविक्खित्तसमाणा, धण्णसकट्टियसमाणा ८

३५६ चत्तारि सण्णाओ पण्णत्ताओ त जहा-
आहारसण्णा, भयसण्णा,
मेहुणसण्णा, परिग्गहसण्णा

चउहिं ठाणेहिं आहारसण्णा समुप्पज्जइ त जहा-
ओमकोट्ठयाए,
छुहावेयणिज्जस्स कम्मस्स उदएण,
मइए,
तदट्ठोवओगेण

चउहिं ठाणेहिं भयसण्णा समुप्पज्जइ त जहा-
हीणसत्तताए,

भयवेयणिज्जस्स कम्मस्स उदएण,
मइए,
तदट्ठोवओगेण

चउहि ठाणेहि मेहुणसण्णा समुप्पज्जइ त जहा-
चियमस-सोणिययाए,
मोहणिज्जस्स कम्मस्स उदएण,
मइए,
तदट्ठोवओगेण

चउहि ठाणेहि परिग्गहसण्णा समुप्पज्जइ त जहा-
अविमुत्तयाए,
लोभवेयणिज्जस्स कम्मस्स उदएण,
मइए,
तदट्ठोवओगेण ५

३५७ चउव्विहा कामा पण्णत्ता त जहा-
सिगारा, कलुणा,
बीभत्सा, रोद्दा
सिगारा कामा देवाण,
कलुणा कामा मणुयाण,
बीभच्छा कामा तिरिक्खजोणियाण,
रोद्दा कामा णेरइयाण

३५८ चत्तारि उदगा पण्णत्ता त जहा-
उत्ताणे नामेगे उत्ताणोदए,

उत्ताणे नामेगे गभीरोदए,
गभीरे नामेगे उत्ताणोदए,
गभीरे नामेगे गभीरोदए

एवामेव पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
उत्ताणे नामेगे उत्ताणहियए — जाव—
गभीरे नामेगे गभीरहियए

चत्तारि उदगा पण्णत्ता त जहा-
उत्ताणे नामेगे उत्ताणोभासी,
उत्ताणे नामेगे गभीरोभासी,
गभीरे नामेगे उत्ताणोभासी,
गभीरे नामेगे गभीरोभासी

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
उत्ताणे नामेगे उत्ताणोभासी —जाव —
गभीरे नामेगे गभीरोभासी

चत्तारि उदहि पण्णत्ते त जहा-
उत्ताणे नामेगे उत्ताणोदही,
उत्ताणे नामेगे गभीरोदही,
गभीरे नामेगे उत्ताणोदही,
गभीरे नामेगे गभीरोदही

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
उत्ताणे नामेगे उत्ताणहियए, —जाव—

गभीरे नामेगे गभीरहियए

चत्तारि उवही पण्णत्ते त जहा-
उत्ताणे नामेगे उत्ताणोभासी,
उत्ताणे नामेगे गभीरोभासी,
गभीरे नामेगे उत्ताणोभासी,
गभीरे नामेगे गभीरोभासी

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
उत्ताणे नामेगे उत्ताणोभासी —जाव—
गभीरे नामेगे गभीरोभासी ८

३५९ चत्तारि तरगा पण्णत्ता त जहा-
समुद्द तरामीतेगे समुद्द तरइ,
समुद्द तरामीतेगे गोप्पय तरइ,
गोप्पय तरामीतेगे समुद्द तरइ,
गोप्पय तरामितेगे गोप्पय तरइ

चत्तारि तरगा पण्णत्ता त जहा-
समुद्द तरित्ता नामेगे समुद्दे विसीयइ,
समुद्द तरेत्ता नामेगे गोप्पए विसीयइ,
गोप्पय तरित्ता नामेगे समुद्दे विसीयइ,
गोप्पद तरित्ता नामेगे गोप्पए विसीयइ २

३६० चत्तारि कुभा पण्णत्ता त जहा-
पुण्णे नामेगे पुण्णे, पुण्णे नामेगे तुच्छे,
तुच्छे नामेगे पुण्णे, तुच्छे नामेगे तुच्छे

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
पुण्णे नामेगे पुण्णे, —जाव—
तुच्छे नामेगे तुच्छे

चत्तारि कुभा पण्णत्ता त जहा-
पुण्णे नामेगे पुण्णोभासी,
पुण्णे नामेगे तुच्छोभासी,
तुच्छे नामेगे पुण्णोभासी,
तुच्छे नामेगे तुच्छोभासी

एव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
पुण्णे नामेगे पुण्णोभासी, —जाव—
तुच्छे नामेगे तुच्छोभासी

चत्तारि कुभा पण्णत्ता त जहा-
पुण्णे नामेगे पुण्णरूवे, पुण्णे नामेगे तुच्छरूवे,
तुच्छे नामेगे पुण्णरूवे, तुच्छे नामेगे तुच्छरूवे

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
पुण्ण नामेगे पुण्णरूवे, — जाव—
तुच्छे नामेगे तुच्छरूवे

चत्तारि कुभा पण्णत्ता त जहा-
पुण्णे वि एगे पियट्ठे, पुण्णे वि एगे अवदले,
तुच्छे वि एगे पियट्ठे, तुच्छे वि एगे अवदले

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-

पुण्णे वि एगे पियट्ठे, —जाव—
तुच्छे वि एगे अवदले

चत्तारि कुभा पण्णत्ता त जहा
पुण्णे वि एगे विस्सदइ,
पुण्णे वि एगे नो विस्सदइ,
तुच्छे वि एगे विस्सदइ,
तुच्छे वि एगे नो विस्सदइ

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-
पुण्णे वि एगे विस्सदइ, —जाव—
तुच्छे वि एगे नो विस्सदइ

चत्तारि कुभा पण्णत्ता त जहा-
भिण्णे, जज्जरिए,
परिस्साइ, अपरिस्साइ

एवामेव चउव्विहे चरित्ते पण्णत्ते त जहा-
भिण्णे —जाव— अपरिस्साइ

चत्तारि कुभा पण्णत्ता त जहा
महुकुभे नामेगे महुपिहाणे,
महुकुभे नामेगे विसपिहाणे,
विसकुभे नामेगे महुपिहाणे,
विसकुभे नामेगे विसपिहाणे

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-

महुकुभे नामेगे महुपिहाणे, —जाव—
विसकुभे नामेगे विसपिहाणे १४

गाहाओ—हिययमपावमकलुस ,
जीहा वि य महुरभासिणी निच्च ।
जमि पुरिसमि विज्जइ ,
से महुकुभे महुपिहाणे ॥१॥
हिययमपावमकलुस ,
जीहा वि य कडुयभासिणी निच्च ।
जमि पुरिसमि विज्जइ ,
से महुकुभे विसपिहाणे ॥२॥
ज हियय कलुसमय ,
जीहा वि य महुरभासिणी निच्च ।
जमि पुरिसमि विज्जइ ,
से विसकुभे महुपिहाणे ॥३॥
ज हियय कलुसमय ,
जीहा वि य कडुयभासिणी निच्च ।
जमि पुरिसमि विज्जइ ,
से विसकुभे विसपिहाणे ॥४॥

३६१ चउव्विहा उवसग्गा पण्णत्ता त जहा-
दिव्वा, माणुसा,
तिरिक्खजोणिया, आयसचेयणिज्जा

दिव्वा उवसग्गा चउव्विहा पण्णत्ता त जहा
हासा, पाओसा,
वीमसा, पुढोवेमाया

माणुस्सा उवसग्गा चउव्विहा पण्णत्ता त जहा
हासा, पाओसा,
वीमसा, कुसीलपडिसेवणया

तिरिक्खजोणिया उवसग्गा चउव्विहा पण्णत्ता त जहा-
भया, पओसा,
आहारहेउ, अवच्चलेणसारक्खणया

आयसचेयणिज्जा उवसग्गा चउव्विहा पण्णत्ता त जहा-
घट्टणया, पवडणया,
थभणया, लेसणया ५

३६२ चउव्विहे कम्मे पण्णत्ते त जहा-
सुभे नामेगे सुभे, सुभे नामेगे असुभे,
असुभे नामेगे सुभे, असुभे नामेगे असुभे

चउव्विहे कम्मे पण्णत्ते त जहा-
सुभे नामेगे सुभविवागे,
सुभे नामेगे असुभविवागे,
असुभे नामेगे सुभविवागे,
असुभे नामेगे असुभविवागे,

चउव्विहे कम्मे पण्णत्ते त जहा-

पयडिकम्मे, ठिइकम्मे,
अणुभावकम्मे, पएसकम्मे ३

३६३ चउव्विहे सघे पण्णत्ते त जहा-
समणा, समणीओ,
सावगा, सावियाओ

३६४ चउव्विहा बुद्धी पण्णत्ता त जहा-
उप्पत्तिया, वेणइया,
कम्मिया, परिणामिया

चउव्विहा मई पण्णत्ता त जहा-
उग्गहमई, ईहामई,
अवायमई, धारणामई

अहवा चउव्विहा मई पण्णत्ता त जहा-
अरजरोदगसमाणा, वियरोदगसमाणा,
सरोदगसमाणा, सागरोदगसमाणा ३

३६५ चउव्विहा ससारसमावण्णगा जीवा पण्णत्ता त जहा-
नेरइया, तिरिक्खजोणीया,
मणुस्सा, देवा

चउव्विहा सव्वजीवा पण्णत्ता त जहा-
मणजोगी, वयजोगी,
कायजोगी, अजोगी

अहवा चउव्विहा सव्वजीवा पण्णत्ता त जहा-

३६८ बेइदिया ण जीवा असमारभमाणस्स चउव्विहे सजमे कज्जइ
त जहा-

जिब्भामयाओ सोक्खाओ अववरोवित्ता भवइ,
जिब्भामएण दुक्खेण असजोगेत्ता भवइ,
फासमयाओ सोक्खाओ अववरोवेत्ता भवइ,
फासमएण दुक्खेण असजोगेत्ता भवइ

बेइदियाण जीवा समारभमाणस्स चउव्विहे असजमे कज्जइ
त जहा-

जिब्भामयाओ सोक्खाओ ववरोवित्ता भवइ,
जिब्भामएण दुक्खेण सजोगित्ता भवइ,
फासमयाओ सोक्खाओ ववरोवित्ता भवइ,
फासमएण दुक्खेण सजोगित्ता भवइ २

३६९ सम्मद्दिट्ठियाण नेरइयाण चत्तारि किरियाओ पण्णत्ता
त जहा-

आरभिया, परिग्गहिया,
मायावत्तिया, अपच्चक्खाणकिरिया

सम्मद्दिट्ठियाण असुरकुमाराण चत्तारि किरियाओ पण्णत्ताओ
त जहा-

आरभिया —जाव— अपच्चक्खाणकिरिया
एव विगलिंदियवज्ज —जाव— वेमाणियाण

३७० चउहि ठाणेहि सते गुणे नासेज्जा त जहा-

कोहेण, पडिनिसेवेण,
अकयण्णुयाए, मिच्छत्ताभिनिवेसेण

चर्उहि ठाणेहि सते गुणे दीवेज्जा त जहा-
अब्भासवत्तिय, परच्छदाणुवत्तिय,
कज्जहेउ, कयपडिकइएइ वा २

३७१ नेरइयाण चउहि ठाणेहि सरीरुप्पत्ती सिया त जहा-
कोहेण, माणेण,
माणयाए, लोभेण
एव —जाव — वेमाणियाण

नेरइयाण चउहि ठाणेहि निव्वत्तिए सरीरे पण्णत्ते त जहा-
कोहनिव्वत्तिए, – जाव -- लोभनिव्वत्तिए
एव —जाव – वेमाणियाण २

३७२ चत्तारि धम्मदारा पण्णत्ता त जहा-
खती, मुत्ती, अज्जवे, मद्दवे

३७३ चउहि ठाणेहि जीवा नेरइयत्ताए कम्म पकरेंति त जहा-
महारभयाए, महापरिग्गहयाए,
पचिदियवहेण, कुणिमाहारेण

चउहि ठाणेहि जीवा तिरिक्खजोणियत्ताए कम्म पगरेंति-
त जहा-
माइल्लयाए, नियडिल्लयाए,
अलियवयणेण, कूडतुलकूडमाणेण

गज्जे, पज्जे, कत्थे, गेए

३८० नेरइयाण चत्तारि समुग्घाया पण्णत्ता त जहा-
वेयणासमुग्घाए, कसायसमुग्घाए,
मारणतियसमुग्घाए, वेउव्वियसमुग्घाए
एव वाउक्काइयाण वि

३८१ अरिहतो ण अरिट्ठनेमिस्स चत्तारि सया चोद्दसपुव्वीणमजि-णाण जिणसकासाण सव्वक्खरसण्णिवाइण जिणो इव अवितय-वागरमाणा उक्कोसिया चउद्दसपुव्विसपया हुत्था

३८२ समणस्स ण भगवओ महावीरस्स चत्तारि सया वावीण सदेवमणुयासुराए परिसाए अपराजियाण उक्कोसिया वाइ-सपया हुत्था

३८३ हेट्ठिल्ला चत्तारि कप्पा अद्धचदसठाणसठिया पण्णत्ता त जहा-
सोहम्मे, ईसाणे, सणकुमारे, माहिंदे

मज्झिल्ला चत्तारि कप्पा पडिपुण्णचदसठाणसठिया पण्णत्ता त जहा-
बभलोगे, लतए, महासुक्के, सहस्सारे

उवरिल्ला चत्तारि कप्पा अद्धचदसठाणसठिया पण्णत्ता त जहा-
आणए, पाणए, आरणे, अच्चुए ३

३८४ चत्तारि समुद्दा पत्तेयरसा पण्णत्ता त जहा-

लवणोदे, वरुणोदे खीरोदे, घतोदे

३८५ चत्तारि आवत्ता पण्णत्ता त जहा-

खरावत्ते, उण्णयात्ते, गूढावत्ते, आमिसावत्ते

एवामेव चत्तारि कसाया पण्णत्ता त जहा-

खरावत्तसमाणे कोहे,

उण्णयावत्तसमाणे माणे

गूढावत्तसमाणा माया,

आमिसावत्तसमाणे लोभे

खरावत्तसमाण कोह अणुपविट्ठे जीवे काल करेइ नेर-
इएसु उवज्जइ,

उण्णयावत्तसमाण माण एव चेव

गूढावत्तसमाण माय एव चेव

आमिसावत्तसमाण लोभ एव चेव २

३८६ अणुराहानक्खत्ते चउ तारे पण्णत्ते

पुव्वासाढे एव चेव,

उत्तरासाढे एव चेव ३

३८७ जीवाण चउट्ठाणणिव्वत्तिए पोग्गले पावकम्मत्ताए चिणिसु वा, चिणति वा, चिणिस्सति वा

नेरइयणिव्वत्तिए, तिरिक्खजोणियणिव्वत्तिए,
मणुस्सणिव्वत्तिए, देवणिव्वत्तिए

एव उवचिणिसु वा, उवचिणति वा, उवचिणिस्सति वा

एव चिय उवचिय बध-उदीर-वेय तह-निज्जरे चेव

३८८ चउपएसिया खंधा अणंता पण्णत्ता

चउपएसोगाढा पोग्गला अणंता

चउसमयट्ठिइया पोग्गला अणंता

चउगुणकालगा पोग्गला अणंता —जाव— चउगुणलुक्खा पोग्गला अणंता पण्णत्ता

पचट्ठाण

पचट्ठाणस्स पढमो उद्देसो

३८९ पच महव्वया पण्णत्ता त जहा-

सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमण

सव्वाओ मुसावायाओ वेरमण,

सव्वाओ अदिन्नादाणाओ वेरमण,

सव्वाओ मेहुणाओ वेरमण,

सव्वाओ परिग्गहाओ वेरमण

पचाणुव्वया पण्णत्ता त जहा-

थूलाओ पाणाइवायाओ वेरमण,

थूलाओ मुसावायाओ वेरमण,

थूलाओ अदिण्णादाणाओ वेरमण,

सदारसतोसे,

इच्छापरिमाणे २

३९० पच वण्णा पण्णत्ता त जहा-

किण्हा, —जाव— सुक्किल्ला

पच रसा पण्णत्ता त जहा-

तित्ता, —जाव— महुरा

पंच कामगुणा पण्णत्ता तं जहा

सद्दा, रूवा, गंधा, रसा, फासा

पंचहिं ठाणेहिं जीवा सज्जंति तं जहा-

सद्देहिं, —जाव— फासेहिं

एवं रज्जंति, मुच्छंति, गिज्झंति, अज्झोववज्जंति

पंचहिं ठाणेहिं जीवा विणिघायमावज्जंति तं जहा-

सद्देहिं —जाव— फासेहिं

पंच ठाणा अपरिण्णाया जीवाणं अहियाए असुभाए अखमाए अणिस्सेयाए अणाणुगामियत्ताए भवंति तं जहा

सद्दा, —जाव— फासा

पंच ठाणा सुपरिण्णाया जीवाणं हियाए सुभाए —जाव— आणुगामियत्ताए भवंति तं जहा-

सद्दा, —जाव— फासा

पंच ठाणा अपरिण्णाया जीवाणं दुग्गइगमणाए भवंति तं जहा-

सद्दा, —जाव— फासा

पंच ठाणा सुपरिण्णाया जीवाणं सुग्गइगमणाए भवंति तं जहा

सद्दा —जाव— फासा १३

३९१ पंचहिं ठाणेहिं जीवा दुग्गइं गच्छंति तं जहा-

पाणाइवाएणं, —जाव— परिग्गहेणं

पर्चाहि ठाणेहि जीवा सुगइ गच्छति त जहा-
पाणाइवायवेरमणेण, —जाव— परिग्गहवेरमणेण २

३९२ पचपडिमाओ पण्णत्ताओ त जहा-
भद्दा, सुभद्दा, महाभद्दा, सव्वओभद्दा, भद्दुत्तरपडिमा

३९३ पच थावरकाया पण्णत्ता त जहा-
इदे थावरकाए,
बभे थावरकाए,
सिप्पे थावरकाए,
समती थावरकाए,
पाजावच्चे थावरकाए

पच थावरकायाहिवई पण्णत्ता त जहा-
इदे थावरकायाहिवई, —जाव —
पाजावच्चे थावरकायाहिवई २

३९४ पर्चाहि ठाणेहि ओहिदसणे समुप्पज्जिउकामे वि तप्पढमयाए खभाएज्जा त जहा-
अप्पभूय वा पुढवि पासित्ता तप्पढमयाए खभाएज्जा,
कुथुरासिभूय वा पुढवि पासित्ता तप्पढमयाए खभाएज्जा,
महइमहालय वा महोरगसरीर पासित्ता तप्पढमयाए खभाएज्जा
देव वा महड्ढिय —जाव— महेसक्ख पासित्ता तप्पढमयाए खभाएज्जा,
पुरेसु वा पोराणाइ महइमहालयाइ महानिहाणाइ पहीणसा-

मियाइ पहीणसेउयाइ पहीणगुत्तागाराइं उच्छिण्णसामियाइ उच्छिण्णसेउयाइ उच्छिण्णगुत्तागाराइ जाइ इमाइ गामागर-नगर-खेड-कब्बड-दोणमुह पट्टणासम-सबाह-सण्णिवेसेसु सिघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह पहेसु नगरणिद्धमणेसु सुसाण-सुण्णागार-गिरि-कदर-सति सेलोवट्ठावण-भवणगिहेसु सणिक्खित्ताइ चिट्ठ ति ताइ वा पासित्ता तप्पढमयाए खभाएज्जा

इच्चेहि पचहि ठाणेहि ओहिदसणे समुप्पज्जिउकामे तप्पढमयाए खभाएज्जा

पचहि ठाणेहि केवलवरनाणदसणे समुप्पज्जिउकामे तप्पढमयाए नो खभाएज्जा त जहा-

अप्पभूय वा पुढवि पासित्ता तप्पढमयाए नो खभेज्जा, सेस तहेव —जाव— भवणगिहेसु सणिक्खित्ताइ चिट्ठ ति, ताइ वा पासित्ता तप्पढमयाए नो खभाएज्जा

इच्चेएहि पचहि ठाणेहि केवलवरणाणदसणे समुप्पज्जिउकामे तप्पढमयाए नो खभाएज्जा २

३६५ नेरइयाण सरीरगा पचवण्णा पचरसा पण्णत्ता त जहा-

किण्हा —जाव— सुक्किला

तित्ता —जाव— महुरा

एव निरतर —जाव— वेमाणियाण

पच सरीरगा पण्णत्ता त जहा

ओरालिए, वेउव्विए, आहारए, तेयए, कम्मए

ओरालिएसरीरे पचवण्णे पचरसे पण्णत्ते त जहा-

किण्हे —जाव— सुक्किल्ले

तित्ते —जाव— महुरे

एव ओरालिएसरीरे —जाव— कम्मगसरीरे

सव्वे वि ण बादरबोंदिधरा कलेवरा पचवण्णा, पचरसा, दुगधा, अट्ठफासा ७

३९६ पचहि ठाणेहि पुरिम-पच्छिमगाण जिणाण दुग्गम भवइ त जहा-

दुआइक्ख, दुविभज्ज, दुपस्स, दुइतिक्ख, दुरणुचर

पचहि ठाणेहि मज्झिमगाण जिणाण सुगम भवइ त जहा-

सुआइक्ख, सुविभज्ज, सुपस्स, सुइतिक्ख, सुरणुचर

पच ठाणाइ समणेण भगवया महावीरेण समणाण निग्गथाण निच्च वण्णियाइ, निच्च कित्तियाइ, निच्च बुइयाइ, निच्च पसत्थाइ, निच्चमब्भणुण्णायाइ भवति त जहा-

खती, मुत्ती, अज्जवे, मद्दवे, लाघवे

पच ठाणाइ समणेण भगवया महावीरेण —जाव— अब्भणुण्णायाइ भवति त जहा-

सच्चे, सजमे, तवे, चियाए, बभचेरवासे

पच ठाणाइ समणाण —जाव— अब्भणुण्णायाइ भवति त जहा

उक्खित्तचरए,
निक्खित्तचरए,
अतचरए,
पतचरए,
लूहचरए
पच ठाणाइ समणाण -जाव— अब्भणुण्णायाइ भवति
त जहा-
अण्णाएचरए,
अण्णइलायचरए
मोणचरए,
ससट्ठकप्पिए,
तज्जातससट्ठकप्पिए
पच ठाणाइ -जाव - अब्भणुण्णायाइ भवति त जहा-
उवनिहिए,
सुद्धेसणिए,
सखादत्तिए,
दिट्ठलाभिए,
पुट्ठलाभिए
पच ठाणाइ —जाव— अब्भणुण्णायाइ भवति त जहा-
आयबिलिए,
निव्वियए,
पुरिमड्ढिए,

परिमिए,
पिढवाइए,
भिण्णपिडवाइए

पच ठाणाइ समणाण —जाव— अब्भणुण्णायाइ भवति त जहा-

अरसाहारे विरसाहारे, अताहारे, पताहारे, लूहाहारे

पच ठाणाइ समणाण —जाव— अब्भणुण्णायाइ भवति त जहा-

अरसजीवी, विरसजीवी, अतजीवी, पतजीवी, लूहजीवी

पच ठाणाइ समणाण —जाव— अब्भणुण्णायाइ भवति त जहा-

ठाणाइए,
उक्कडुआसणिए,
पडिमट्ठाइ,
वीरासणिए,
नेसज्जिए

पच ठाणाइ समणाण —जाव— अब्भणुण्णायाइ भवति त जहा-

दडायतिए,
लगडसाइ,
आयावए,
अवाउडए,

अक्झयए १२

३६७ पचहि ठाणेहि समणे निग्गये महानिज्जरे महापज्जवसाणे भवइ त जहा-

अगिलाए आयरिय-वेयावच्च करेमाणे,
अगिलाए उवज्झाय-वेयावच्च करेमाणे,
अगिलाए थेर-वेयावच्च करेमाणे
अगिलाए तवस्सी-वेयावच्च करेमाणे,
अगिलाए गिलाण-वेयावच्च करेमाणे

पचहि ठाणेहि समणे निग्गये महानिज्जरे महापज्जवसाणे भवइ त जहा-

अगिलाए सेह वेयावच्च करेमाणे,
अगिलाए कुल वेयावच्च करेमाणे,
अगिलाए गण-वेयावच्च करेमाणे,
अगिलाए सघ-वेयावच्च करेमाणे,
अगिलाए साहम्मिय वेयावच्च करेमाणे २

३६८ पचहि ठाणेहि समणे निग्गये साहम्मिय सभोइय विसभोइय करेमाणे नाइक्कमइ त जहा-

सकिरियट्ठाण पडिसेवित्ता भवइ,
पडिसेवित्ता नो आलोएइ,
आलोइत्ता नो पट्ठवेइ
पट्ठवेत्ता नो निव्विसइ,
जाइ इमाइ थेराण ठिइपकप्पाइ भवति, ताइ अतियचिय

अतियचिय पडिसेवेइ से हद ह पडिसेवामि किं मे थेरा-
करिस्सति ?

पचहिं ठाणेहिं समणे निग्गथे साहम्मिय पारचिय करेमाणे नाइक्कमइ त जहा-

सकुले वसइ सकुलस्स भेदाए अब्भुट्ठित्ता भवइ,
गणे वसइ गणस्स भेदाए अब्भुट्ठित्ता भवइ,
हिंसप्पेही,
छिद्दप्पेही,
अभिक्खण पसिणाययणाइ पउजित्ता भवइ २

३९९ आयरिय-उवज्झायस्स ण गणसि पच वुग्गहट्ठाणा पण्णत्ता त जहा-

आयरिय-उवज्झाए ण गणसि आण वा, धारण वा नो सम्म पउजेत्ता भवइ
आयरिय-उवज्झाए ण गणसि अहाराइणियाए किइकम्म नो सम्म पउजित्ता भवइ,
आयरिय-उवज्झाए ण गणसि जे सुत्तपज्जवजाए धारेंति ते काले काले नो सम्म अणुप्पवाइत्ता भवइ,
आयरिय-उवज्झाए ण गणसि गिलाण सेह-वेयावच्च नो सम्ममब्भुट्ठित्ता भवइ,
आयरिय-उवज्झाए ण गणसि अणापुच्छियचारी या वि भवइ नो आपुच्छियचारी

आयरिय-उवज्झायस्स ण गणसि पच अवुग्गहट्ठाणा पण्णत्ता त जहा-

आयरिय-उवज्झाए ण गणसि आण वा, धारण वा सम्मं पउजित्ता भवइ,

आयरिय उवज्झाए ण गणसि अहाराइणियाए सम्म किइकम्म पउजित्ता भवइ,

आयरिय-उवज्झाए ण गणसि जे सुयपज्जवजाए धारेइ ते काले काले सम्म अणुप्पवाइत्ता भवइ,

आयरिय-उवज्झाए ण गणसि गिलाण सेह-वेयावच्चं सम्म अब्भुट्ठित्ता भवइ

आयरिय उवज्झाए ण गणसि आपुच्छियचारी यावि भवइ नो अणापुच्छियचारी २

४०० पच निसिज्जाओ पण्णत्ताओ त जहा-

उक्कुडुई,

गोदोहिया,

समपायपुता

पलियका,

अद्धपलियका

पच अज्जवट्ठाणा पण्णत्ता त जहा-

साहु-अज्जव,

साहु-मद्दव,

साहु-लाघव,

साहु-खत्ती,

साहु-मुत्ती २

४०१ पचविहा जोइसिया पण्णत्ता त जहा-

चदा, सूरा गहा, नक्खत्ता, ताराओ

पचविहा देवा पण्णत्ता त जहा-

भवियदव्वदेवा,

नरदेवा,

धम्मदेवा,

देवाहिदेवा,

भावदेवा २

४०२ पचविहा परियारणा पण्णत्ता त जहा-

काय-परियारणा,

फास-परियारणा,

रूव-परियारणा,

सद्द-परियारणा,

मण-परियारणा

४०३ चमरस्स ण असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो पच अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ त जहा-

काली, राई, रयणी, विज्जू, मेहा

बलिस्स ण वइरोयणिंदस्स वइरोयणरण्णो पच अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ त जहा-

सुभा, निसुभा, रभा, निरभा, मयणा २

४०४ चमरस्स ण असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो पच सगामिया अणिया पच सगामियाणियाहिवई पण्णत्ता त जहा-

पायत्ताणिए,
पीढाणिए,
कुजराणिए,
महिसाणिए,
रहाणिए

दुमे पायत्ताणियाहिवई,
सोदामी आसराया पीढाणियाहिवई,
कुथू हत्थिराया कुजराणियाहिवई,
लोहियक्खे महिसाणियाहिवई,
किण्णरे रहाणियाहिवई

बलिस्स ण वइरोयणिंदस्स वइरोयणरण्णो पच सगामिया अणिया, पच सगामियाणियाहिवई पण्णत्ता त जहा-

पायत्ताणिए — जाव — रहाणिए
महद्दुमे पायत्ताणियाहिवई,
महा सोदामो आसराया पीढाणियाहिवई,
मालकारो हत्थिराया कुजराणियाहिवई,
महा लोहिअक्खो महिसाणियाहिवई,
किंपुरिसे रहाणियाहिवई

धरणस्स ण नागकुमारिंदस्स नागकुमाररण्णो पच सगामिया

अणिया, पच सगामियाणियाहिवई पण्णत्ता त जहा-

पायत्ताणिए, —जाव— रहाणीए

भद्दसेणे पायत्ताणियाहिवई,

जसोधरे आसराया पीढाणियाहिवई,

सुदसणे हत्थिराया कुजराणियाहिवई,

नीलकठे महिसाणियाहिवई,

आणदे रहाणियाहिवई

भूयाणदस्स नागकुमारिंदस्स नागकुमाररण्णो पच सगामिया-
अणिया, पच सगामियाणियाहिवई पण्णत्ता त जहा-

पायत्ताणीए —जाव— रहाणीए

दक्खे पायत्ताणियाहिवई,

सुग्गीवे आसराया पीढाणियाहिवई,

सुविक्कमे हत्थिराया कुजराणियाहिवई,

सेयकठे महिसाणियाहिवई,

नवुत्तरे रहाणियाहिवई

वेणुदेवस्स ण सुवण्णिदस्स सुवण्णकुमाररण्णो पच सगामिया-
अणिया, पच सगामियाणियाहिवई पण्णत्ता त जहा-

पायत्ताणीए —जाव— रहाणिए

सेस जहा धरणस्स तहा वेणुदेवस्स वि,

वेणुदालियस्स जहा भूयाणदस्स,

जहा धरणस्स तहा सव्वेसिं दाहिणिल्लाण —जाव—
घोसस्स,

४०४ चमरस्स ण असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो पच सगामिया अणिया पच सगामियाणियाहिवई पण्णत्ता त जहा

पायत्ताणिए,
पीढाणिए,
कुजराणिए,
महिसाणिए,
रहाणिए

दुमे पायत्ताणियाहिवई,
सोदामी आसराया पीढाणियाहिवई,
कुथू हत्थिराया कुजराणियाहिवई,
लोहियक्खे महिसाणियाहिवई,
किण्णरे रहाणियाहिवई

बलिस्स ण वइरोयणिंदस्स वइरोयणरण्णो पच सगामिया अणिया, पच सगामियाणियाहिवई पण्णत्ता त जहा-

पायत्ताणिए —जाव— रहाणिए
महद्दुमे पायत्ताणियाहिवई,
महा सोदामो आसराया पीढाणियाहिवई,
मालकारो हत्थिराया कुजराणियाहिवई,
महा लोहिअक्खो महिसाणियाहिवई,
किंपुरिसे रहाणियाहिवई

धरणस्स ण नागकुमारिंदस्स नागकुमाररण्णो पच सगामिया

अणिया, पच सगामियाणियाहिवई पण्णत्ता त जहा-

पायत्ताणिए, —जाव— रहाणीए

भद्दसेणे पायत्ताणियाहिवई,

जसोधरे आसराया पीढाणियाहिवई,

सुदसणे हत्थिराया कुजराणियाहिवई,

नीलकठे महिसाणियाहिवई,

आणदे रहाणियाहिवई

भूयाणदस्स नागकुमारिदस्स नागकुमाररण्णो पच सगामिया-अणिया, पच सगामियाणियाहिवई पण्णत्ता त जहा-

पायत्ताणीए —जाव— रहाणीए

दक्खे पायत्ताणियाहिवई,

सुग्गीवे आसराया पीढाणियाहिवई,

सुविक्कमे हत्थिराया कुजराणियाहिवई,

सेयकठे महिसाणियाहिवई,

नदुत्तरे रहाणियाहिवई

वेणुदेवस्स ण सुवण्णिदस्स सुवण्णकुमाररण्णो पच सगामिया-अणिया, पच सगामियाणियाहिवई पण्णत्ता त जहा-

पायत्ताणीए —जाव— रहाणिए

सेस जहा धरणस्स तहा वेणुदेवस्स वि,

वेणुदालियस्स जहा भूयाणदस्स,

जहा धरणस्स तहा सव्वेसि दाहिणिल्लाण —जाव— घोसस्स,

जहा भूयाणदस्स तहा सव्वेसि उत्तरिल्लाण —जाव —
महाघोसस्स,

सक्कस्स ण देविदस्स देवरण्णो पच सगामिया अणिया, पच
सगामियाणियाहिवई पण्णत्ता त जहा-

पायत्ताणिए, —जाव— रहाणिए
हरिणेगमेसी पायत्ताणियाहिवई,
वाऊ आसराया पीढाणियाहिवई,
एरावणे हत्थिराया कुजराणियाहिवई,
दामड्ढी उसभाणियाहिवई,
माढरो रहाणियाहिवई

ईसाणस्स ण देविदस्स देवरण्णो पच सगामिया अणिया,
पच सगामियाणियाहिवई पण्णत्ता त जहा-

पायत्ताणिए, —जाव— रहाणिए
लहुपरक्कमे पायत्ताणियाहिवई,
महावाऊ आसराया पीढाणियाहिवई,
पुप्फदते हत्थिराया कुजराणियाहिवई,
महादामड्ढी उसभाणियाहिवई,
महामाढरे रहाणियाहिवई

जहा सक्कस्स तहा सव्वेसि दाहिणिल्लाण —जाव—
आरणस्स

जहा ईसाणस्स तहा सव्वेसि उत्तरिल्लाण —जाव—
अच्चुयस्स

४०५ सक्कस्स ण देविंदस्स देवरण्णो अब्भतरपरिसाए देवाण पच पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता,

ईसाणस्स ण देविंदस्स देवरण्णो अब्भतरपरिसाए देवीण पच पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता २

४०६ पचविहा पडिहा पण्णत्ता त जहा-

गइ-पडिहा,
ठिइ-पडिहा,
बधण-पडिहा,
भोग-पडिहा,
बल-वीरिय-पुरिसकारपरक्कम-पडिहा

४०७ पचविहे आजीविए पण्णत्ते त जहा-

जाइ-आजीवे,
कुल-आजीवे,
कम्म-आजीवे,
सिप्प-आजीवे,
लिग-आजीवे

४०८ पच राय ककुहा पण्णत्ता त जहा-

खग्ग, छत्त, उप्फेस, उपाणहाओ, वालवीअणी

४०९ पचहि ठाणेहि छउमत्थे ण उदिण्णे परिस्सहोवसग्गे सम्म सहेज्जा खमेज्जा तितिक्खेज्जा अहियासेज्जा त जहा-

उदिण्णकम्मे खलु अय पुरिसे उम्मत्तगभूए, तेण मे एस पुरिसे अक्कोसइ वा, अवहसइ वा णिच्छोडेइ वा,

निब्भच्छेइ वा, बधइ वा, रुभइ वा, छविच्छेयं करेइ वा, पमारं वा नेइ, उद्दवेइ वा, वत्थं वा, पडिग्गहं वा, कवलं वा, पायपुञ्छणं अच्छिंदइ वा, विच्छिंदइ वा, भिंदइ वा, अवहरइ वा,

जक्खाइट्ठे खलु अयं पुरिसे तेणं मे एस पुरिसे अक्कोसइ वा, तहेव —जाव— अवहरइ वा,

ममं च णं तब्भववेयणिज्जे कम्मे उइण्णे भवइ तेणं मे एस पुरिसे अक्कोसइ वा —जाव— अवहरइ वा,

ममं च णं सम्ममसहमाणस्स अखममाणस्स अतितिक्खमाणस्स अणहियासमाणस्स किं मण्णे कज्जइ ? एगतसो मे पावे कम्मे कज्जइ,

ममं च णं सम्मं सहमाणस्स —जाव— अहियासेमाणस्स किं मण्णे कज्जइ ? एगतसो मे निज्जरा कज्जइ

इच्चेएहिं पर्चाहं ठाणेहिं छउमत्थे उविण्णे परीसहोवसग्गे सम्मं सहेज्जा — जाव — अहियासेज्जा

पंचहिं ठाणेहिं केवली उविण्णे परिसहोवसग्गे सम्मं सहेज्जा —जाव— अहियासेज्जा तं जहा-

खित्तचित्ते खलु अयं पुरिसे तेणं मे एस पुरिसे अक्कोसइ वा, —जाव— अवहरइ वा,

दित्तचित्ते खलु अयं पुरिसे तेणं मे एस पुरिसे अक्कोसइ वा, —जाव— अवहरइ वा,

जक्खाइट्ठे खलु अयं पुरिसे तेणं मे एस पुरिसे

अक्कोसइ वा, —जाव— अवहरइ वा,

मम च ण तब्भववेयणिज्जे कम्मे उदिण्णे भवइ तेण मे एस पुरिसे अक्कोसइ वा, —जाव— अवहरइ वा,

मम च ण सम्म सहमाण खममाण तितिक्खमाण अहियासेमाण पासेत्ता बहवे अण्णे छउमत्था समणा निग्गथा उदिण्णे परीसहोवसग्गे एव सम्म सहिस्सति वा —जाव— अहियासिस्सति वा

इच्चेएहिं पचहिं ठाणेहिं केवली उदिण्णे परिसहोवसग्गे सम्म सहेज्जा —जाव— अहियासेज्जा २

४१० पच हेऊ पण्णत्ता त जहा-

हेउ न जाणइ,

हेउ न पासइ,

हेउ न बुज्झइ,

हेउ नाभिगच्छइ,

हेउ अण्णाणमरण मरइ

पच हेऊ पण्णत्ता त जहा-

हेउणा न जाणइ —जाव— हेउणा अण्णाणमरण मरइ

पच हेऊ पण्णत्ता त जहा-

हेउ जाणइ —जाव— हेउ छउमत्थमरण मरइ

पच हेऊ पण्णत्ता त जहा-

हेउणा जाणइ —जाव— हेउणा छउमत्थ-मरण मरइ

पच अहेऊ पण्णत्ता त जहा-

अहेउ न जाणइ —जाव— अहेउ छउमत्थ-मरण मरइ

पच अहेऊ पण्णत्ता त जहा-

अहेउणा न जाणइ —जाव— अहेउणा छउमत्थ-मरण मरइ

पच अहेऊ पण्णत्ता त जहा-

अहेउ जाणइ —जाव— अहेउ केवलि-मरण मरइ

पच अहेऊ पण्णत्ता त जहा-

अहेउणा जाणइ —जाव— अहेउणा केवलि-मरण मरइ

केवलिस्स ण पच अणुत्तरा पण्णत्ता त जहा-

अणुत्तरे नाणे,

अणुत्तरे दसणे,

अणुत्तरे चरित्ते,

अणुत्तरे तवे,

अणुत्तरे वीरिए ६

४११ पउमप्पहे ण अरहा पचचित्ते हुत्था पण्णत्ता त जहा-

चित्ताहि चुए चइत्ता गब्भ वक्कते,

चित्ताहि जाए,

चित्ताहि मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइए,

चित्ताहिं अणते अणुत्तरे निव्वाघाए निरावरणे कसिणे पडिपुण्णे केवलवरनाणदसणे समुप्पण्णे,
चित्ताहिं परिणिव्वुए

पुप्फदते ण अरहा पचमूले हुत्था
मूलेण चूए चइत्ता गब्भवक्कते,
मूलेहिं जाए,
मूलेण मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइए
मूलेहिं अणते —जाव— केवलवरनाणदसणे समुप्पण्णे
मूलेहिं समुप्पण्णे परिनिव्वुए

एवमेएण अभिलावेण इमाओ गाहाओ अणुगतव्वाओ
पउमप्पमस्स चित्ता, मूले पुण होइ पुप्फदतस्स ।
पुव्वाइ आसाढा, सीयलस्सुत्तर विमलस्स भद्दवया ॥१॥
रेवइया अणतजिणो, पूसो धम्मस्स सतिणो भरणी ।
कुथुस्स कत्तियाओ, अरस्स तह रेवइओ य ॥२॥
मुणिसुव्वयस्स सवणो,
आसिणि नमिणो य नेमिणो चित्ता ।
पासस्स विसाहाओ, पच य हत्थुत्तरो वीरे ॥३॥

समणे भगव महावीरे पच हत्थुत्तरे होत्था
हत्थुत्तराहिं चुए चइत्ता गब्भ वक्कते,
हत्थुत्तराहिं गब्भाओ गब्भ साहरिए,
हत्थुत्तराहिं जाए,

हत्युत्तराहि मुंडे भवित्ता —जाव— पव्वइए,
हत्युत्तराहि अणंते अणुत्तरे —जाव— केवलवरनाण-
दंसणे समुप्पण्णे १४

पंचट्ठाणस्स बीओ उद्देसो

४१२ नो कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा इमाओ उद्दिट्ठाओ गणियाओ वियंजियाओ पंच महण्णवाओ महाणईओ अंतो मासस्स दुक्खुत्तो वा, तिक्खुत्तो वा उत्तरित्तए वा, संतरित्तए वा तं जहा-

गंगा, जउणा, सरऊ, एरावई, मही

पंचहिं ठाणेहिं कप्पइ तं जहा-
भयंसि वा,
दुब्भिक्खंसि वा,
पव्वहेज्ज व णं कोइ,
दओघंसि वा एज्जमाणंसि महया वा,
अणारिएसु २

४१३ नो कप्पइ निग्गंथाण वा, निग्गंथीण वा पढमपाउसंसि गामाणुगामं दूइज्जित्तए

पंचहिं ठाणेहिं कप्पइ तं जहा-
भयंसि वा —जाव – अणारिएहिं

वासावास पज्जोसवियाण नो कप्पइ निग्गथाण वा निग्गथीण वा गामाणुगाम दुइज्जित्तए

पर्चाहि ठाणेहि कप्पइ त जहा-

नाणट्ठयाए,

दसणट्ठयाए,

चरित्तट्ठयाए,

आयरिय-उवज्झाया वा से वीसुभेज्जा,

आयरिय-उवज्झायाण वा वहिया वेयावच्च करणयाए २

४१४ पच अणुग्घाइया पण्णत्ता त जहा-

हत्थकम्म करेमाणे,

मेहुण पडिसेवेमाणे,

राइभोयण भुजेमाणे,

सागारियपिड भुजेमाणे,

रायपिड भुजेमाणे

४१५ पर्चाहि ठाणेहि समणे निग्गथे रायतेउर अणुपविसमाणे नाइक्कमइ त जहा-

नगर सिया सव्वओ समता गुत्ते गुत्तदुवारे, वहवे समण-माहणा नो सचाएइ भत्ताए वा, पाणाए वा, निक्खमित्तए वा, पविसित्तए वा, तेसि विण्णवणट्ठयाए रायतेउर अणुपवेसेज्जा,

पाडिहारिय वा पीढफलग-सेज्जा-सथारग पच्चप्पिणमाणे रायतेउर अणुपवेसेज्जा,

हयस्स वा, गयस्स वा, दुट्ठस्स आगच्छमाणस्स भीए रायतेउर अणुप्पवेसेज्जा,

परो व ण सहसा वा, बलसा वा बाहाए गहाए अतेउर अणुप्पवेसेज्जा,

बहिया ण आरामगय वा, उज्जाणगय वा रायतेउरजणो सव्वओ समता सपरिक्खिवित्ता ण निव्विसेज्जा,

इच्चेएहिं पचहिं ठाणेहिं समणे निग्गथे रायतेउर अणुपविसमाणे णाइक्कमइ

४१६ पचहिं ठाणेहिं इत्थी पुरिसेण सद्धि असवसमाणी वि गब्भ धरेज्जा त जहा-

इत्थी दुव्वियडा दुण्णिसण्णा सुक्कपोग्गले अहिट्ठिज्जा,

सुक्कपोग्गलससिट्ठे व से वत्थे अतो जोणीए अणुपवेसेज्जा,

सइ वा सा सुक्कपोग्गले अणुपवेसेज्जा,

परो व से सुक्कपोग्गले अणुपवेसेज्जा,

सीओदगवियडेण वा से आयममाणीए सुक्कपोग्गला अणुपवेसेज्जा

इच्चेएहिं पचहिं ठाणेहिं इत्थी पुरिसेणसद्धि असवसमाणि वि गब्भ धरेज्जा

पचहिं ठाणेहिं इत्थी पुरिसेण सद्धि सवसमाणी वि गब्भ नो धरेज्जा त जहा-

अप्पत्तजोवणा,

अइक्कतजोवणा,
जाइवञ्झा,
गेलण्णपुट्ठा,
दोमणसिया
इच्चेएहि पचहि ठाणेहि जाव नो धरेज्जा

पचहि ठाणेहि इत्थी पुरिसेण सद्धि सवसमाणी वि नो गब्भ धरेज्जा त जहा-
निच्चोउया,
अणोउया,
वावण्णसोया,
वाविद्धसोया,
अणगपडिसेवणी
इच्चेएहि पचहि ठाणेहि इत्थी पुरिसेण सद्धि सवसमाणी वि गब्भ नो धरेज्जा

पचहि ठाणेहि इत्थी पुरिसेण सद्धि सवसमाणी वि नो गब्भ धरेज्जा त जहा-
उउमि नो निगामपडिसेविणी यावि भवइ,
समागया वा से सुक्कपोग्गला पडिविद्धसइ,
उदिण्णो वा से पित्तसोणिए,
पुरा वा देवकम्मुणा,
पुत्तफले वा नो निद्दिट्ठे भवइ
इच्चेएहि पचहि ठाणेहि इत्थी पुरिसेण सद्धि सवसमाणी वि

गब्भ नो धरेज्जा ४

४१७ पचहिं ठाणेहिं निग्गथा निग्गथीओ य एगतओ ठाण वा, सिज्ज वा, निसिहिय वा चेएमाणे नाइक्कमति त जहा-

अत्थेगइया निग्गथा निग्गथीओ य एग मह अगामिय छिण्णावाय दीहमद्धमडविमणुपविट्ठा तत्थ एगइओ ठाण वा, सेज्ज वा, निसीहिय वा चेएमाणे णाइक्कमति

अत्थेगइया निग्गथा निग्गथीओ य गामसि वा नगरसि वा —जाव— रायहाणिसि वा वास उवागया एगतिया जत्थ उवस्सय लभति एगतिया नो लभति तत्थ एगइओ ठाण —जाव— नाइक्कमति,

अत्थेगइया निग्गथा निग्गथीओ य नागकुमारावाससि वा वास उवागया तत्थेगयओ —जाव— नाइक्कमति,

आमोसगा दीसति ते इच्छति निग्गथीओ चीवरपडियाए पडिगाहित्तए तत्थेगयओ ठाण वा —जाव— नाइक्कमति,

जुवाणा दीसति ते इच्छति निग्गथीओ मेहुणपडियाए पडिगाहित्तए तत्थएगइओ ठाण वा —जाव— नाइक्कमति

इच्चेएहिं पचहिं ठाणेहिं —जाव— नाइक्कमति

पचहिं ठाणेहिं समणे निग्गथे अचेलए सचेलियाहिं निग्गथीहिं सद्धि सवसमाणे नाइक्कमइ त जहा-

खित्तचित्ते समणे निग्गथे निग्गथेहिं अविज्जमाणेहिं अचे-

लए सचेलियाहिं निग्गथीहिं सद्धि सवसमाणे नाइक्कमइ,
एवमेएण गमएण-
दित्तचित्ते-
जक्खाइट्ठे-
उम्मायपत्ते-
निग्गथीपव्वावियए समणे निग्गथेहिं अविज्जमाणेहिं अचे-
लए सचेलियाहिं निग्गथीहिं सद्धि सवसमाणे नाइक्कमइ २

४१८ पच आसवदारा पण्णत्ता त जहा-
मिच्छत्त, अविरइ, पमाए, कसाया, जोगा

पच सवरदारा पण्णत्ता त जहा-
सम्मत्त, विरइ, अपमाओ, अकसाइय, अजोगीत्त

पच दडा पण्णत्ता त जहा-
अट्ठादडे,
अणट्ठादडे,
हिंसादडे,
अकम्हादडे,
दिट्ठीविप्परियासियादडे ३

४१९ पच किरियाओ पण्णत्ता त जहा-
आरभिया,
परिग्गहिया,
मायावत्तिया,
अपच्चक्खाणकिरिया,

मिच्छादसणवत्तिया

मिच्छद्दिट्ठियाण नेरइयाण पच किरियाओ पण्णत्ताओ तजहा-

आरभिया —जाव — मिच्छादसणवत्तिया

एव सव्वेसि निरतर —जाव— मिच्छद्दिट्ठियाण वेमाणियाण, नवर-विगलिंदिया मिच्छद्दिट्ठिया ण भण्णति सेस तहेव

पच किरियाओ पण्णत्ताओ त जहा-

काइया,
अहिगरिणया,
पाओसिया,
पारितावणिया,
पाणाइवाइकिरिया

नेरइयाण पच किरिया एव चेव निरतर —जाव— वेमाणियाण

पच किरियाओ पण्णत्ताओ त जहा-

आरभिया —जाव— मिच्छादसणवत्तिया

नेरइयाण पच किरिया निरतर —जाव— वेमाणियाण

पच किरियाओ पण्णत्ताओ त जहा-

दिट्ठिया,
पुट्ठिया,
पाडोचिया,

सामतोवणिवाइया,

साहत्थिया

एव नेरइयाण —जाव— वेमाणियाण

पच किरियाओ पण्णत्ताओ त जहा-

नेसत्थिया,

आणवणिया,

वेयारणिया,

अणाभोगवत्तिया,

अणवकखवत्तिया

एव नेरइयाण —जाव— वेमाणियाण

पचकिरियाओ पण्णत्ताओ त जहा-

पेज्जवत्तिया,

दोसवत्तिया,

पओगकिरिया,

समुवाणकिरिया,

ईरियावहिया

एव मणुस्साण वि सेसाण नत्थि ५

४२० पचविहा परिण्णा पण्णत्ता त जहा-

उवहि-परिण्णा,

उवस्सय-परिण्णा,

कसाय-परिण्णा,

जोग-परिण्णा,

भत्त-पाण-परिण्णा

४२१ पचविहे ववहारे पण्णत्ते त जहा-

आगमे, सुए, आणा, धारणा, जीए

जहा से तत्थ आगमे सिया आगमेण ववहार पट्ठवेज्जा,

नो से तत्थ आगमे सिया-

जहा से तत्थ सुए सिया सुएण ववहार पट्ठवेज्जा,

नो से तत्थ सुए सिया

जहा से तत्थ आणा सिया आणाए ववहार पट्ठवेज्जा,

नो से तत्थ आणा सिया-

जहा से तत्थ धारणा सिया धारणाए ववहार पट्ठवेज्जा,

नो से तत्थ धारणा सिया-

जहा से तत्थ जीए सिया जीएण ववहार पट्ठवेज्जा

इच्चेएहिं पचहिं ववहार पट्ठवेज्जा त जहा-

आगमेण, सुएण, आणाए, धारणाए, जीएण,

जहा जहा से आगमे सुए आणा धारणा जीए तहा तहा ववहार पट्ठवेज्जा,

प्र० से किमाहु भते ! आगम-बलिया समणा निग्गथा ?

उ० इच्चेय पचविह ववहार जहा जहा जहिं जहिं तहा तहा तहिं तहिं अणिस्सिओस्सिवय सम्म ववहरमाणे समणे निग्गथे आणाए आराहए भवइ

४२२ सजयमणुस्साण सुत्ताण पच जागरा पण्णत्ता त जहा-

सद्दा, —जाव— फासा

सजयमणुस्साण जागराण पच सुत्ता पण्णत्ता त जहा-
सद्दा, —जाव— फासा

असजयमणुस्साण सुत्ताण वा, जागराण वा पच जागरा पण्णत्ता त जहा-
सद्दा, —जाव— फासा ३

४२३ पर्चांह ठार्णेहि जीवा रय आइज्जति त जहा-
पाणाइवाएण, —जाव— परिग्गहेण

पर्चांह ठार्णेहि जीवा रय वमति त जहा-
पाणाइवायवेरमणेण, —जाव— परिग्गहवेरमणेण २

४२४ पचमासिय ण भिक्खुपडिम पडिवण्णस्स अणगारस्स कप्पति पच वत्तीओ भोयणस्स पडिगाहित्तए पच पाणगस्स

४२५ पचविहे उवघाए पण्णत्ते त जहा-
उग्गमोवघाए,
उप्पायणोवघाए,
एसणोवघाए,
परिकम्मोवघाए,
परिहरणोवघाए

पचविहा विसोही पण्णत्ता त जहा-
उग्गमविसोही,
उप्पायणविसोही,

एसणाविसोही,
परिकम्मविसोही,
परिहरणविसोही २

४२६ पचहिं ठाणेहिं जीवा दुल्लभवोहियत्ताए कम्म पगरेंति त जहा-

अरहताण अवण्ण वयमाणे,
अरहतपण्णत्तस्स धम्मस्स अवण्ण वयमाणे,
आयरिय-उवज्झायाण अवण्ण वयमाणे,
चाउवण्णस्स सघस्स अवण्ण वयमाणे,
विविक्क तव-वभचेराण देवाण अवण्ण वयमाणे

पचहिं ठाणेहिं जीवा सुलभवोहियत्ताए कम्म पगरेंति त जहा-

अरहताण वण्ण वयमाणे, —जाव—
विविक्क-तव वमचेराण देवाण वण्ण वयमाणे २

४२७ पच पडिसलीणा पण्णत्ता त जहा-

सोइदियपडिसलीणे, —जाव— फासिंदियपडिसलीणे

पच अप्पडिसलीणा पण्णत्ता त जहा-

सोइदियअप्पडिसलीणे, —जाव— फासिदियअप्पडि-सलीणे

पचविहे सवरे पण्णत्ते त जहा-

सोइदियसवरे, —जाव— फासिदियसवरे

पचविहे असवरे पण्णत्ते त जहा-

सोइदियअसवरे, —जाव— फासिदियअसवरे २

४२८ पचविहे सजमे पण्णत्ते त जहा-

सामाइयसजमे,

छेओवट्ठावणियसजमे,

परिहारविसुद्धिसजमे,

सुहुमसपरागसजमे,

अहक्खायचरित्तसजमे

४२९ एगिदिया ण जीवा असमारभमाणस्स पचविहे सजमे कज्जइ त जहा-

पुढविकाइयसजमे, —जाव— वणस्सइकाइयसजमे

एगिदिया ण जीवा समारभमाणस्स पचविहे असजमे कज्जइ त जहा-

पुढविकाइयअसजमे, —जाव— वणस्सइकाइयअसजमे २

४३० पचिदिया ण जीवा असमारभमाणस्स पचविहे सजमे कज्जइ त जहा-

सोइदियसजमे, —जाव— फासिदियसजमे

पचिदिया ण जीवा समारभमाणस्स पचविहे असजमे कज्जइ त जहा-

सोइदियअसजमे, —जाव— फासिदियअसजमे

सव्व-पाण भूय-जीव-सत्ता ण असमारभमाणस्स पचविहे सजमे कज्जइ त जहा-

एगिंदियसजमे —जाव— पचिंदियसजमे

सव्व-पाण-भूय-जीव-सत्ता ण असमारभमाणस्स पचवि
असजमे कज्जइ त जहा-

एगिंदियअसजमे, —जाव— पचिंदियअसजमे ४

४३१ पचविहा तणवणस्सइकाइया पण्णत्ता त जहा-

अग्गवीया, मूलवीया, पोरवीया, खधवीया, वीयरुहा

४३२ पचविहे आयारे पण्णत्ते त जहा-

नाणायारे,

दसणायारे,

चरित्तायारे,

तवायारे,

वीरियायारे

४३३ पचविहे आयारपकप्पे पण्णत्ते त जहा-

मासिए उग्घाइए,

मासिए अणुग्घाइए,

चउमासिए उग्घाइए,

चउमासिए अणुग्घाइए,

आरोवणा

आरोवणा पचविहा पण्णत्ता त जहा-

पट्ठविया, ठविया, कसिणा, अकसिणा, हाडहडा २

४३४ जबुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स पुत्थिमेण सीयाए मह
नईए उत्तरेण पच वक्खारपव्वया पण्णत्ता त जहा-

मालवते, चित्तकूडे, पम्हकूडे, नलिणकूडे, एगसेले

जबुमदरस्स पुरओ सीयाए महानईए दाहिणेण पच वक्खार-पव्वया पण्णत्ता त जहा-

तिकूडे, वेसमणकूडे, अजणे, मायजणे, सोमणसे

जबुमदर-पच्चत्थिमेण सीओआए महानईए दाहिणेण पच वक्खारपव्वया पण्णत्ता त जहा-

विज्जुप्पभे, अकावती, पम्हावती, आसीविसे, सुहावहे

जबुमदर पच्चत्थिमेण सीओआए महानईए उत्तरेण पच वक्खारपव्वया पण्णत्ता त जहा-

चदपव्वए, सूरपव्वए, नागपव्वए, देवपव्वए गधमायणे

जबुमदर-दाहिणेण देवकुराए कुराए पच महद्दहा पण्णत्ता त जहा-

निसहदहे, देवकुरुदहे, सूरदहे, सुलसदहे, विज्जुप्पभदहे

जबुमदर-उत्तरेण उत्तरकुराए कुराए पच महद्दहा पण्णत्ता त जहा

नीलवतदहे

उत्तरकुरुदहे,

चददहे,

एरावणदहे,

मालवतदहे

सव्वे वि ण वक्खारपव्वया सीया सीओयाओ महाणईओ मदर वा पव्वयतेण पच जोयणसयाइ उड्ढ उच्चत्तेण

पचगाउयसयाइ उव्वेहेण

घायइसडे दीवे पुरच्छिमद्धे ण मदरस्स पव्वयस्स पुरच्छिमे ण सीयाए महाणईए उत्तरेण पच वक्खारपव्वया पण्णत्ता त जहा-

मालवते — जाव— एगसेले

एव जहा जबुद्दीवे तहा —जाव— पुक्खरवरदीवड्ढ पच्चत्थिमद्धे वक्खारा, दहा य उच्चत्त भाणियव्व

समयक्खेत्ते ण पच भरहाइ, पच एरवयाइ

एव जहा चउट्ठाणे वितीयउद्देसे तहा एत्थ वि भाणियव्व —जाव— पच मदरा, पच मदरचूलियाओ, नवर उसुयारा नत्थि ६

४३५ उसभे ण अरहा कोसलिए पच धणु सयाइ उड्ढ उच्चत्तेण होत्था

भरहेण राया चाउरत-चक्कवट्टी पच धणु-सयाइ उड्ढ उच्चत्तेण होत्था

बाहुबली ण अणगारे, एव चेव

बभीणी अज्जा, एव चेव

एव सुदरी वि ५

४३६ पचहि ठाणेहि सुत्ते विबुज्झेज्जा त जहा-

सद्देण,

फासेण,

भोयणपरिणामेण,
निद्दक्खएण,
सुविणवसणेण

४३७ पचहि ठाणेहि समणे निग्गथे निग्गथि गिण्हमाणे वा, अव-
लबमाणे वा नाइक्कमइ त जहा-

निग्गथि च ण अण्णयरे पसुजाइए वा, पक्खिजाइए वा ओहाएज्जा तत्थ निग्गथे निग्गथि गिण्हमाणे वा, अलबमाणे वा नाइक्कमइ,

निग्गथे निग्गथि दुग्गसि वा, विसमसि वा, पक्खलमाणि वा, पवडमाणि वा, गिण्हमाणे वा, अवलबमाणे वा नाइक्कमइ,

निग्गथे निग्गथि सेयसि वा, पकसि वा, पणगसि वा, उदगसि वा, उक्कसमाणी वा, उवुज्झमाणी वा, गिण्ह-माणे वा, अवलबमाणे वा नाइक्कमइ,

निग्गथे निग्गथि नाव आरुहमाणे वा, ओरोहमाणे वा नाइक्कमइ,

खित्तचित्त दित्तचित्त जक्खाइट्ठ उम्मायपत्त उवसग्गपत्त साहिगरण सपायच्छित्त —जाव— भत्तपाणपडिया-इक्खिय अट्ठजाय वा निग्गथे निग्गथि गिण्हमाणे वा, अवलबमाणे वा णाइक्कमइ

४३८ आयरिय-उवज्झायस्स ण गणसि पच अइसेसा पण्णत्ता त जहा-

पचगाउयसयाइ उव्वेहेण

धायइसडे दीवे पुरच्छिमद्धे ण मदरस्स पव्वयस्स पुरच्छिमे ण सीयाए महाणईए उत्तरेण पच वक्खारपव्वया पण्णत्ता त जहा-

मालवते — जाव— एगसेले

एव जहा जबुद्दीवे तहा —जाव— पुक्खरवरदीवड्ढ-पच्चत्थिमद्धे वक्खारा, दहा य उच्चत्त भाणियव्व

समयक्खेत्ते ण पच भरहाइ, पच एरवयाइ

एव जहा चउट्ठाणे वितीयउद्देसे तहा एत्थ वि भाणियव्व —जाव— पच मदरा, पच मदरचूलियाओ, नवर उसुयारा नत्थि ९

४३५ उसभे ण अरहा कोसलिए पच-धणु सयाइ उड्ढ उच्चत्तेण होत्था

भरहेण राया चाउरत-चक्कवट्टी पच धणु-सयाइ उड्ढ उच्चत्तेण होत्था

बाहुबली ण अणगारे एव चेव

बभीणी अज्जा, एव चेव

एव सुदरी वि ५

४३६ पचहि ठाणेहि सुत्ते विबुज्झेज्जा त जहा-

सद्देण,

फासेण,

भोयणपरिणामेण,

निद्दक्खएण,

सुविणदसणेण

४३७ पचहिं ठाणेहिं समणे निग्गथे निग्गथि गिण्हमाणे वा, अवलबमाणे वा नाइक्कमइ त जहा-

निग्गथि च ण अण्णयरे पसुजाइए वा, पक्खिजाइए वा ओहाएज्जा तत्थ निग्गथे निग्गथि गिण्हमाणे वा, अलबमाणे वा नाइक्कमइ,

निग्गथे निग्गथि दुग्गसि वा, विसमसि वा, पक्खलमाणि वा, पवडमाणि वा, गिण्हमाणे वा, अवलबमाणे वा नाइक्कमइ,

निग्गथे निग्गथि सेयसि वा, पकसि वा, पणगसि वा, उदगसि वा, उवकसमाणी वा, उवुज्झमाणी वा, गिण्हमाणे वा, अवलबमाणे वा नाइक्कमइ,

निग्गथे निग्गथि नाव आरुहमाणे वा, ओरोहमाणे वा नाइक्कमइ,

खित्तचित्त दित्तचित्त जक्खाइट्ठ उम्मायपत्त उवसग्गपत्त साहिगरण सपायच्छित्त —जाव— भत्तपाणपडियाइक्खिय अट्ठजाय वा निग्गथे निग्गथि गिण्हमाणे वा, अवलबमाणे वा णाइक्कमइ

४३८ आयरिय-उवज्झायस्स ण गणसि पच अइसेसा पण्णत्ता त जहा-

आयरिय-उवज्झाए अतो उवस्सगस्स पाए निगिज्झिय निगिज्झिय पप्फोडेमाणे वा, पमज्जेमाणे वा नाइक्कमइ,

आयरिय उवज्झाए अतो उवस्सगस्स उच्चार-पासवण विगिंचमाणे वा विसोहेमाणे वा नाइक्कमइ,

आयरिय-उवज्झाए पभू इच्छा वेयावडिय करेज्जा, इच्छा नो करेज्जा,

आयरिय-उवज्झाए अतो उवस्सगस्स एगराय वा, दुराय वा एगागी वसमाणे नाइक्कमइ,

आयरिय-उवज्झाए बाहिं उवस्सगस्स एगराय वा, दुराय वा वसमाणे नाइक्कमइ

४३६ पचहिं ठाणेहिं आयरिय-उवज्झायस्स गणावक्कमणे पण्णत्ते त जहा-

आयरिय-उवज्झाए य गणसि आण वा, धारण वा नो सम्म पउजित्ता भवइ,

आयरिय-उवज्झाए गणसि अहारायणियाए किइकम्म वेणइय नो सम्म पउजित्ता भवइ,

आयरिय उवज्झाए गणसि जे सुयपज्जवजाए धारिति ते काले नो सम्ममणुप्पवाएत्ता भवइ,

आयरिय-उवज्झाए गणसि सगणियाए वा, परगणियाए वा निग्गथीए बहिल्लेसे भवइ,

मित्ते नाइगणे वा से गणाओ अवक्कमेज्जा तेसि सगहोवग्गहट्ठयाए गणावक्कमणे पण्णत्ते

४४० पचविहा इड्ढीमता मणुस्सा पण्णत्ता त जहा-
अरहता,
चक्कवट्टी,
बलदेवा,
वासुदेवा,
भावियप्पाणो अणगारा

पचट्ठाणस्स तइओ उद्देसो

४४१ पच अत्थिकाया पण्णत्ता त जहा-
धम्मत्थिकाए,
अधम्मत्थिकाए,
आगासत्थिकाए,
जीवत्थिकाए,
पोग्गलत्थिकाए

धम्मत्थिकाए अवण्णे अगधे अरसे अफासे अरूवी अजीवे सासए अवट्ठिए लोगदव्वे, से समासओ पचविहे पण्णत्ते त जहा-
दव्वओ, खित्तओ, कालओ, भावओ, गुणओ
दव्वओ ण धम्मत्थिकाए एग दव्व,
खेत्तओ लोगप्पमाणमेत्ते,
कालओ न कयाइ नासी, न कयाइ न भवइ, न कयाइ न भविस्सइ त्ति, भुवि भवइ य भविस्सइ य धुवे निअए

सासए अक्खए अव्वए अवट्ठिए निच्चे,
भावओ अवण्णे अगधे अरसे अफासे,
गुणओ गमणगुणे य

अधम्मत्थिकाए अवण्णे —जाव— लोगदव्वे, से समासओ पचविहे पण्णत्ते त जहा-

दव्वओ —जाव— गुणओ सेस तहेव

नवर-गुणओ ठाणगुणे

आगासत्थिकाए अवण्णे, एव चेव

नवर-खेत्तओ लोगालोगप्पमाणमित्तए

गुणओ अवगाहणगुणे, सेस त चेव

जीवत्थिकाए णं अवण्णे, एव चेव

नवर-दव्वओ ण जीवत्थिकाए अणताइं दव्वाइ, अरूवी जीवे सासए, गुणओ उवओगगुणे, सेस त चेव

पोग्गलत्थिकाए पचवण्णे पचरसे दुगधे अट्ठफासे रूवी अजीवे सासए अवट्ठिए लोगदव्वे, से समासओ पचविहे पण्णत्ते त जहा-

दव्वओ ण पोग्गलत्थिकाए अणताइ दव्वाइ,

खेत्तओ लोगपमाणमेत्ते,

कालओ न कयाइ नासि —जाव— निच्चे,

भावओ वण्णमते गधमते रसमते फासमते,

गुणओ गहणगुणे ५

४४२ पच गइओ पण्णत्ताओ त जहा-

निरयगइ, तिरियगइ, मणुयगइ, देवगइ, सिद्धिगइ

४४३ पच इदियत्था पण्णत्ता त जहा-

सोइदियत्थे —जाव— फासिदियत्थे

पच मुडा पण्णत्ता त जहा-

सोइदियमुडे —जाव— फासिदियमुडे

अहवा पच मुडा पण्णत्ता त जहा-

कोहमुडे, माणमुडे, मायामुडे, लोभमुडे, सिरमुडे ३

४४४ अहोलोगे ण पच बायरा पण्णत्ता त जहा-

पुढविकाइया,

आउकाइया,

वाउकाइया,

वणस्सइकाइकाया,

ओराला तसा पाणा

उड्ढलोगे ण पच बायरा पण्णत्ता त जहा-

पुढविकाइया तहेव —जाव— ओराला तसा पाणा

तिरियलोगे ण पच बायरा पण्णत्ता त जहा-

एगिंदिया —जाव— पचिंदिया

पचविहा बायरतेउकाइया पण्णत्ता त जहा-

इगाले, जाला, मुम्मुरे, अच्ची, अलाए

पचविहा बायरवाउकाइया पण्णत्ता त जहा-

उण्णिए, उट्टिए, साणए, पच्चापिच्चियए, मुजापिच्चिए २

४४७ धम्म चरमाणस्स पच निस्साठाणा पण्णत्ता त जहा-

छक्काए, गणे, राया, गिहवई, सरीर

४४८ पच निहि पण्णत्ता त जहा-

पुत्तनिही, मित्तनिही, सिप्पनिही, धणनिही, धण्णनिही

४४९ सोए पचविहे पण्णत्ते त जहा-

पुढविसोए, आउसोए, तेउसोए, मतसोए, बमसोए

४५० पच ठाणाइ छउमत्थे सव्वभावेण न जाणइ न पासइ त जहा-

धम्मत्थिकाय,
अधम्मत्थिकाय,
आगासत्थिकाय,
जीव असरीरपडिवद्ध,
परमाणुपोग्गल

एयाणि चेव उप्पण्ण-नाण दसणधरे अरहा जिणे केवली सव्वभावेण जाणइ पासइ त जहा-

धम्मत्थिकाय —जाव— परमाणुपोग्गल

४५१ अहोलोगे ण पच अणुत्तरा महइमहालया महानिरया पण्णत्ता त जहा-

काले, महाकाले, रोरुए, महारोरुए, अप्पइट्ठाणे

उड्ढलोगे ण पच अणुत्तरा महइमहालया महा विमाणा

पण्णत्ता त जहा-

विजये, विजयते, जयते, अपराजिए, सव्वट्ठसिद्धे २

४५२ पच पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-

हिरिसत्ते, हिरिमणसत्ते, चलसत्ते, थिरसत्ते, उदयणसत्ते.

४५३ पच मच्छा पण्णत्ता त जहा-

अणुसोयचारी,

पडिसोयचारी,

अतचारी,

मज्झचारी,

सव्वचारी

एवामेव पच भिक्खागा पण्णत्ता त जहा-

अणुसोयचारी —जाव— सव्वसोयचारी २

४५४ पच वणीमगा पण्णत्ता त जहा-

अतिहि-वणीमए,

किविण-वणीमए,

माहण-वणीमए,

साण वणीमए,

समण-वणीमए

४५५ पचहि ठाणेहि अचेलए पसत्थे भवइ त जहा-

अप्पा पडिलेहा,

लाघविए पसत्थे,

रूवे वेसासिए,

उण्णिए, उट्टिए, साणए, पच्चापिच्चियए, मुंजापिच्चिए २

४४७ धम्म चरमाणस्स पच निस्साठाणा पण्णत्ता त जहा-

छक्काए, गणे, राया, गिहवई, सरीर

४४८ पच निहि पण्णत्ता त जहा-

पुत्तनिही, मित्तनिही, सिप्पनिही, धण निही, धण्णनिही

४४९ सोए पचविहे पण्णत्ते त जहा-

पुढविसोए, आउसोए, तेउसोए, मतसोए, बभसोए

४५० पच ठाणाइ छउमत्थे सव्वभावेण न जाणइ न पासइ त जहा-

धम्मत्थिकाय,
अधम्मत्थिकाय,
आगासत्थिकाय,
जीव असरीरपडिबद्ध,
परमाणुपोग्गल

एयाणि चेव उप्पण्ण-नाण-दसणधरे अरहा जिणे केवली सव्वभावेण जाणइ पासइ त जहा-

धम्मत्थिकाय —जाव— परमाणुपोग्गल

४५१ अहोलोगे ण पच अणुत्तरा महइमहालया महा निरया पण्णत्ता त जहा-

काले, महाकाले, रोरुए, महारोरुए, अप्पइट्ठाणे

उड्ढलोगे ण पच अणुत्तरा महइमहालया महा विमाणा

पण्णत्ता त जहा-

विजये, विजयते, जयते, अपराजिए, सव्वट्ठसिद्धे २

४५२ पच पुरिसजाया पण्णत्ता त जहा-

हिरिसत्ते, हिरिमणसत्ते, चलसत्ते, थिरसत्ते, उदयणसत्ते.

४५३ पच मच्छा पण्णत्ता त जहा-

अणुसोयचारी,

पडिसोयचारी,

अतचारी,

मज्झचारी,

सव्वचारी

एवामेव पच भिक्खागा पण्णत्ता त जहा-

अणुसोयचारी —जाव— सव्वसोयचारी २

४५४ पच वणीमगा पण्णत्ता त जहा-

अतिहि-वणीमए,

किविण-वणीमए,

माहण-वणीमए,

साण वणीमए,

समण-वणीमए

४५५ पचहि ठाणेहि अचेलए पसत्थे भवइ त जहा-

अप्पा पडिलेहा,

लाघविए पसत्थे,

रूवे वेसासिए,

तवे अणुण्णाए,
विउले इदियनिग्गहे

४५६ पच उक्कला पण्णत्ता त जहा-
दडुक्कले, रज्जुक्कले, तेणुक्कले, देसुक्कले, सव्वुक्कले

४५७ पच समिइओ पण्णत्ताओ त जहा-
ईरियासमिई —जाव— परिट्ठावणियासमिई

४५८ पचविहा ससारसमावण्णगा जीवा पण्णत्ता त जहा-
एगिदिया —जाव— पचिदिया

एगिदिया पच गइया, पच आगइया पण्णत्ता त जहा-
एगिदिया एगिदिएसु उववज्जमाणे एगिदिएहितो —जाव— पचिदियहितो वा उववज्जेज्जा

से चेव ण से एगिदिए एगिदियत्त विप्पजहमाणे एगिदियत्ताए वा, —जाव— पचिदियत्ताए वा गच्छेज्जा
बेंदिया पच गइया पच आगइया एव चेव,
एव —जाव — पचिदिया पचगइया पच आगइया

पचविहा सव्वजीवा पण्णत्ता त जहा-
कोहकसाइ —जाव— लोभकसाइ, अकसाइ

अहवा पचविहा सव्वजीवा पण्णत्ता त जहा-
नेरइया —जाव— देवा, सिद्धा ६

४५९ प्र० अह भते ! कल-मसूर-तिल-मुग्ग मास णिप्फाव-कुलत्थ-
आलिसदग-सतीण-पलिमथगाण एएसि ण धण्णाण कुट्ठा-

उत्ताण जहा सालीण —जाव— केवइय काल जोणी सचिट्ठइ ?

उ० गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्त, उक्कोसण पच सवच्छराइ, तेण पर जोणी पमिलायइ —जाव— तेण पर जोणीवोच्छेदे, पण्णत्ते

४६० पच सवच्छरा पण्णत्ता, त जहा-

नक्खत्त-सवच्छरे,
जुग-सवच्छरे,
पमाण-सवच्छरे,
लक्खण-सवच्छरे,
सणिचर-सवच्छरे

जुग-सवच्छरे पचविहे पण्णत्ते त जहा-

चदे, चदे, अभिवड्ढिए, चदे, अभिवड्ढिए चेव

पमाण-सवच्छरे पचविहे पण्णत्ते त जहा-

नक्खत्ते, चदे, ऊऊ, आदिच्चे, अभिवड्ढिए

लक्खण-सवच्छरे पचविहे पण्णत्ते त जहा-

गाहाओ—समग नक्खत्ता जोग,
जोयति समग उदू परिणमति ।
नच्चुण्ह नाइसीओ,
बहूदओ होइ नक्खत्ते ॥१॥
ससिसगलपुण्णमासी,
जोएइ विसमचारणक्खत्ते ।

फडुओ बहूदओ तमाहु ,
सवच्छर चद ॥२॥
विसम पवालिणो ,
परिणमति अणुदूसु देंति पुप्फफल ।
वास ण सम्म वासइ ,
तमाहु सवच्छर कम्म ॥३॥
पुढविदगाण तु रस ,
पुप्फफलाण तु देइ आविच्चो ।
अप्पेण वि वासेण ,
सम्म निप्फज्जए सस्स ॥४॥
आविच्चतेयतविया ,
खण-लव-दिसा-उऊ परिणमति ।
पूरिति रेणुथलताइ ,
तमाहु अभिवड्ढित जाण ॥५॥ ४

४६१ पचविहे जीवस्स निज्जाणमग्गे पण्णत्ते त जहा-
पाएहि, ऊरूहि, उरेण, सिरेण, सव्वगेहि
पाएहि निज्जायमाणे निरयगामी भवइ,
ऊरूहि निज्जायमाणे तिरियगामी भवइ,
उरेण निज्जायमाणे मणुयगामी भवइ,
सिरेण निज्जायमाणे देवगामी भवइ,
सव्वगेहि निज्जायमाणे सिद्धिगइपज्जवसाणे पण्णत्ते-

४६२ पचविहे छेयणे पण्णत्ते त जहा-

उप्पाच्छेयणे,

वियच्छेयणे,

बधच्छेयणे,

पएसच्छेयणे,

दोधारच्छेयणे

पचविहे आणतरिए पण्णत्ते त जहा-

उप्पायणतरिए,

वियणतरिए,

पएसाणतरिए,

समयाणतरिए,

सामण्णाणतरिए

पचविहे अणते पण्णत्ते त जहा-

नामाणतए,

ठवणाणतए,

दव्वाणतए,

गणणाणतए,

पदेसाणतए

अहवा पचविहे अणतए पण्णत्ते त जहा-

एगओणतए,

दुहतोणतए,

देसवित्थाराणतए,

सव्ववित्थाराणतए,

सासयाणतए ४

४६३ पचविहे नाणे पण्णत्ते त जहा-
आभिणिबोहियणाणे,
सुयनाणे,
ओहिणाणे,
मणपज्जवणाणे,
केवलणाणे

४६४ पचविहे नाणावरणिज्जे कम्मे पण्णत्ते त जहा-
आभिणिबोहियनाणावरणिज्जे —जाव -
केवलनाणावरणिज्जे

४६५ पचविहे सज्झाए पण्णत्ते, त जहा-
वायणा, पुच्छणा, परियट्टणा, अणुप्पेहा, धम्मकहा

४६६ पचविहे पच्चक्खाणे पण्णत्ते त जहा-
सद्दहणसुद्धे,
विणयसुद्धे,
अणुभासणासुद्धे,
अणुपालणासुद्धे,
भावसुद्धे

४६७ पचविहे पडिक्कमणे पण्णत्ते त जहा-
आसवदारपडिक्कमणे,
मिच्छत्तपडिक्कमणे,
कसायपडिक्कमणे,

नेरइया ण पचवण्णे पचरसे पोग्गले बधिस्सु वा, बधति वा, बधिस्सति वा त जहा-

किण्हे —जाव— सुक्किल्ले

तित्ते, —जाव— महुरे

एव —जाव — वेमाणिया ४

४७० जबुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स दाहिणेण गगा महानई पच महानईओ समप्पेंति त जहा-

जउणा, सरऊ, आई, कोसी, मही

जबूमदरस्स दाहिणेण सिधुमहाणई पच महानईओ समप्पेंति त जहा-

सतद्दू, विभासा, वितत्था, एरावई, चदभागा

जबूमदरस्स उत्तरेण रत्ता महानई पच महानईओ समप्पेंति त जहा-

किण्हा, महाकिण्हा, नीला, महानीला, महातीरा

जबूमदरस्स उत्तरेण रत्तावई महानई पच महानईओ समप्पेंति त जहा-

इदा, इदसेणा, सुसेणा, वारिसेणा, महाभोया ४

४७१ पच तित्थगरा कुमारवासमज्झे वसित्ता मुडा —जाव— पव्वइया त जहा-

वासुपुज्जे, मल्ली, अरिट्ठनेमी, पासे, वीरे

४७२ चमरचचाए रायहाणीए पच सभा पण्णत्ता त जहा-

सुहम्मासभा,

उववायसभा,
अभिसेयसभा,
अलकारियसभा,
ववसायसभा

एगमेगे ण इदट्ठाणे ण पच सभाओ पण्णत्ताओ त जहा-
सुहम्मासभा —जाव— ववसायसभा २

४७३ पच नक्खत्ता पच तारा पण्णत्ता त जहा-
घणिट्ठा, रोहिणी, पुणब्वसू, हत्थो, विसाहा

४७४ जीवाण पचट्ठाणणिव्वित्तिए पोग्गले पावकम्मत्ताए चिणिसु वा, चिणति वा, चिणिस्सति वा त जहा-
एगिदिएनिव्वत्तिए —जाव— पचिदियनिव्वत्तिए

एव चिण-उवचिण बध-उदीर-वेद-तह निज्जरा चेव

पचपएसिया खधा अणता पण्णत्ता

पचपएसोगाढा पोग्गला अणता पण्णत्ता, —जाव—

पचगुणलुक्खा पोग्गला अणता पण्णत्ता २३

छट्ठाण

४७५ छहिं ठाणेहिं सपण्णे अणगारे अरिहइ गण धारित्तए त जहा-

सड्ढी पुरिसजाए, सच्चे पुरिसजाए,
मेहावी पुरिसजाए, बहुस्सुए पुरिसजाए,
सत्तिम, अप्पाधिकरणे

४७६ छहिं ठाणेहिं निग्गथे निग्गथिं गिण्हमाणे वा, अवलबमाणे वा नाइक्कमइ त जहा-

खित्तचित्त, दित्तचित्त,
जक्खाइट्ठ, उम्मायपत्त,
उवसग्गपत्त, साहिगरण

४७७ छहिं ठाणेहिं निग्गथा निग्गथीओ य साहम्मिय कालगय समायरमाणा णाइक्कमति त जहा-

अतोहिंतो वा बाहिं णीणेमाणा,
बाहीहिंतो वा निब्बाहिं णीणेमाणा,
उवेहमाणा वा,
उवासमाणा वा,
अणुण्णवेमाणा वा,
तुसिणीए वा सपव्वयमाणा

४७८ छ ठाणाइ छउमत्थे सव्वभावेण न जाणइ न पासइ, त जहा-

धम्मत्थिकाय अधम्मत्थिकाय,
आगास, जीव असरीरपडिवद्ध,
परमाणुपोग्गल, सद्द

एयाणि चेव उप्पण्ण-णाण-दसणधरे अरहा जिणे —जाव— सव्वभावेण जाणइ, पासइ त जहा-

धम्मत्थिकाय —जाव— सद्द २

४७९ छहि ठाणेहि सव्वजीवाण नत्थि इड्ढीइ वा, जुत्तीइ वा, जसेइ वा, बलेइ वा, वीरिएइ वा, पुरिसक्कारपरक्कमेइ वा त जहा-

जीव वा अजीव करणयाए,
अजीव वा जीव करणयाए,
एगसमएण वा दो भासाओ भासित्तए,
सय कड वा कम्म वेएमि वा, मा वा वेएमि,
परमाणुपोग्गल छिदित्तए वा भिदित्तए वा अगणिकाएण वा समोदहित्तए
बहिया वा लोगता गमणयाए

४८० छज्जीवनिकाया पण्णत्ता त जहा-

पुढविकाइया —जाव— तसकाइया

४८१ छ तारग्गहा पण्णत्ता त जहा-

सुक्के, बुहे, बहस्सइ,
अगारए, सनिच्चरे, केऊ

४८२ छव्विहा ससारसमावण्णगा जीवा पण्णत्ता त जहा-
पुढविकाइया —जाव— तसकाइया

पुढविकाइया छ गइया, छ आगइया पण्णत्ता त जहा-
पुढविकाइए पुढविकाइएसु उववज्जमाणे पुढविकाइएहिंतो वा —जाव— तसकाइएहिंतो वा उववज्जेज्जा
सो चेव ण से पुढविकाइए पुढविकाइयत्त विप्पजहमाणे पुढविकाइयत्ताए वा —जाव— तसकाइयत्ताए वा गच्छेज्जा
आउकाइया वि छ गइया छ आगइया
एव चेव —जाव— तसकाइया २

४८३ छव्विहा सव्वजीवा पण्णत्ता त जहा-
आभिणिबोहियणाणी —जाव— केवलणाणी, अण्णाणी

अहवा छव्विहा सव्वजीवा पण्णत्ता त जहा-
एगिंदिया —जाव— पंचिंदिया, अणिंदिया

अहवा छव्विहा सव्वजीवा पण्णत्ता त जहा-
ओरालियसरीरी —जाव— कम्मगसरीरी, असरीरी ३

४८४ छव्विहा तणवणस्सइकाइया पण्णत्ता त जहा-
अग्गबीया, मूलबीया, पोरबीया,
खधबीया, बीयरुहा, समुच्छिमा

४८५ छट्ठाणाइ सव्वजीवाण नो सुलभाइ भवति त जहा-
माणुस्सए भवे,
आयरिए खेत्ते जम्म,

सुकुले पच्चायाइ,
केवलिपण्णत्तस्स धम्मस्स सवणया,
सुयस्स वा सद्दहणया,
सद्दहियस्स वा, पत्तियस्स वा, रोइयस्स वा सम्म काएण फासणया

४८६ छ इदियत्था पण्णत्ता त जहा-
सोइदियत्थे —जाव— फासिदियत्थे, नोइदियत्थे

४८७ छव्विहे सवरे पण्णत्ते त जहा-
सोइदियसवरे —जाव— फासिदियसवरे, नो इदिय-सवरे

छव्विहे असवरे पण्णत्ते त जहा-
सोइदियअसवरे —जाव— फासिदियअसवरे, नो इदिय-असवरे २

४८८ छव्विहे साए पण्णत्ते त जहा-
सोइदियसाए —जाव— नो इदियसाए

छव्विहे असाए पण्णत्ते त जहा-
सोइदियअसाए —जाव— नो इदियअसाए २

४८९ छव्विहे पायच्छित्ते पण्णत्ते त जहा-
आलोयणारिहे, पडिक्कमणारिहे,
तदुभयारिहे, विवेगारिहे,
विउस्सग्गारिहे, तवारिहे

४६० छव्विहा मणुस्सगा पण्णत्ता त जहा-
जबूदीवगा,
धायइसडदीवपुरच्छिमद्धगा,
धायइसडदीवपच्चत्थिमद्धगा,
पुक्खरवरदीवड्ढपुरत्थिमद्धगा,
पुक्खरवरदीवड्ढपच्चत्थिमद्धगा,
अतरदीवगा

अहवा छव्विहा मणुस्सा पण्णत्ता त जहा-

सम्मुच्छिममणुस्सा,
कम्मभूमगा, अकम्मभूमगा, अतरदीवगा

गब्भवक्कतिअमणुस्सा-
कम्मभूमगा, अकम्मभूमगा, अतरदीवगा २

४६१ छव्विहा इड्ढीमता मणुस्सा पण्णत्ता त जहा-
अरहता, चक्कवट्टी, बलदेवा,
वासुदेवा, चारणा, विज्जाहरा

छव्विहा अणिड्ढीमता मणुस्सा पण्णत्ता त जहा-
हेमवतगा, हेरण्णवतगा, हरिवसगा,
रम्मगवसगा, कुरुवासिणो, अतरदीवगा २

४६२ छव्विहा ओसप्पिणी पण्णत्ता त जहा-
सुसमसुसमा —जाव— दुसमदूसमा

छव्विहा उसप्पिणी पण्णत्ता त जहा-

दुसमदुसमा —जाव— सुसमसुसमा २

४९३ जबुद्दीवे दीवे भरहेरवएसु वासेसु तीयाए उस्सप्पिणीए सुसमसुसमाए समाए मणुया छच्च धणुसहस्साइ उड्ढ उच्चत्तेण हुत्था

छच्च अद्धपलिओवमाइ परमाउ पालइत्था

जबुद्दीवे दीवे भरहेरवएसु वासेसु इमीसे ओसप्पिणीए सुसमसुमाए समाए एव चेव

जबुद्दीवे दीवे भरहेरवए आगमेस्साए उस्सप्पिणीए सुसम-सुसमाए समाए एव चेव —जाव— छच्च अद्धपलिओवमाइ परमाउ पालइस्सति

जबुद्दीवे दीवे देवकुरुउत्तरकुरासु मणुया छ धणुसहस्साइ उड्ढ उच्चत्तेण पण्णत्ता

छच्च अद्धपलिओवमाइ परमाउ पालेंति

एव धायइसडदीवपुरच्छिमद्धे चत्तारि आलावगा —जाव— पुक्खरवरदीवड्ढपच्चत्थिमद्धे चत्तारि आलावगा ६

४९४ छव्विहे सघयणे पण्णत्ते त जहा-

वइरोसभणारायसघयणे,	उसभणारायसघयणे,
नारायसघयणे,	अद्धनारायसघयणे,
खीलियासघयणे,	छेवट्ठसघयणे

४९५ छव्विहे सठाणे पण्णत्ते त जहा-

समचउरसे,	नग्गोहपरिमडले,	साइ,
खुज्जे,	वामणे	हुडे

मज्जपमाए, निद्दपमाए,
विसयपमाए, कसायपमाए,
जूयपमाए, पडिलेहणापमाए

५०३ छव्विहा पमायपडिलेहणा पण्णत्ता त जहा-
गाहा—आरभडा समद्दा,
वज्जेयव्वा य मोसली तइया।
पप्फोडणा चउत्थी,
वक्खित्ता वेइया छट्ठी ॥१॥

छव्विहा अप्पमायपडिलेहणा पण्णत्ता त जहा-
गाहा—अणच्चाविय अवलिय
अणाणुबधि अमोसलि चेव।
छप्पुरिमा नव खोडा,
पाणी पाणविसोहणी ॥१॥

५०४ छ लेसाओ पण्णत्ताओ त जहा-
कण्हलेसा —जाव— सुक्कलेसा
पचिदियतिरिक्खजोणियाण छ लेसाओ पण्णत्ताओ त जहा
कण्हलेसा —जाव— सुक्कलेसा
एव मणुस्सदेवाण वि २

५०५ सक्कस्स ण देविदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो छ अग्ग-
महिसीओ पण्णत्ताओ

सक्कस्स ण देविदस्स देवरण्णो जमस्स महारण्णो छ अग्ग-
महिसीओ पण्णत्ताओ २

५०६ ईसाणस्स ण देविंदस्स मज्झिमपरिसाए देवाण छ पलिओव-
माइ ठिई पण्णत्ता

५०७ छ दिसिकुमारिमहत्तरियाओ पण्णत्ताओ त जहा-
रूया, रूयसा, सुरूवा,
रूपवई, रूपकता, रूपप्पभा

छ विज्जुकुमारिमहत्तरियाओ पण्णत्ताओ त जहा-
आला, सक्का, सतेरा,
सोयामणी, इदा, घणविज्जुया २

५०८ धरणस्स ण नागकुमारिदस्स नागकुमाररण्णो छ अग्गमहि-
सीओ पण्णत्ताओ त जहा-
आला —जाव— घणविज्जुया

भूयाणदस्स ण नागकुमारिदस्स नागकुमाररण्णो छ अग्गम-
हिसीओ पण्णत्ताओ त जहा-
रूया —जाव— रूवप्पभा

जहा धरणस्स तहा सव्वेसि दाहिणिल्लाण —जाव—
घोसस्स

जहा भूयाणदस्स तहा सव्वेसि उत्तरिल्लाण —जाव—
महाघोसस्स ४

५०९ धरणस्स ण नागकुमारिदस्स नागकुमाररण्णो छ सामाणिय-
साहस्सीओ पण्णत्ताओ

एव भूयाणदस्स वि —जाव— महाघोसस्स

५१० छव्विहा उग्गहमई पण्णत्ता त जहा-

मज्जपमाए, निद्दपमाए,
विसयपमाए, कसायपमाए,
जूयपमाए, पडिलेहणापमाए

५०३ छव्विहा पमायपडिलेहणा पण्णत्ता त जहा-

गाहा—आरभडा समद्दा ,
वज्जेयव्वा य मोसली तइया ।
पप्फोडणा चउत्थी ,
वक्खित्ता वेइया छट्ठी ॥१॥

छव्विहा अप्पमायपडिलेहणा पण्णत्ता त जहा-

गाहा—अणच्चाविय अवलिय
अणाणुबंधि अमोसलि चेव ।
छप्पुरिमा नव खोडा ,
पाणी पाणविसोहणी ॥१॥

५०४ छ लेसाओ पण्णत्ताओ त जहा-

कण्हलेसा — जाव — सुक्कलेसा

पंचिदियतिरिक्खजोणियाण छ लेसाओ पण्णत्ताओ त जहा
कण्हलेसा —जाव— सुक्कलेसा
एव मणुस्सदेवाण वि २

५०५ सक्कस्स ण देविदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो छ अग्ग-
महिसीओ पण्णत्ताओ

सक्कस्स ण देविदस्स देवरण्णो जमस्स महारण्णो छ अग्ग-
महिसीओ पण्णत्ताओ २

५०६ ईसाणस्स ण देविंदस्स मज्झिमपरिसाए देवाण छ पलिओव-
माइ ठिई पण्णत्ता

५०७ छ दिसिकुमारिमहत्तरियाओ पण्णत्ताओ त जहा-
रूया, रूयसा, सुरूवा,
रूपवई, रूपकता, रूपप्पभा

छ विज्जुकुमारिमहत्तरियाओ पण्णत्ताओ त जहा-
आला, सक्का, सतेरा,
सोयामणी, इदा, घणविज्जुया २

५०८ धरणस्स ण नागकुमारिंदस्स नागकुमाररण्णो छ अग्गमहि-
सीओ पण्णत्ताओ त जहा-
आला —जाव — घणविज्जुया

भूयाणदस्स ण नागकुमारिंदस्स नागकुमाररण्णो छ अग्गम-
हिसीओ पण्णत्ताओ त जहा-
रूवा —जाव— रूवप्पभा
जहा धरणस्स तहा सव्वेसि दाहिणिल्लाण —जाव—
घोसस्स
जहा भूयाणदस्स तहा सव्वेसि उत्तरिल्लाण —जाव —
महाघोसस्स ४

५०९ धरणस्स ण नागकुमारिंदस्स नागकुमाररण्णो छ सामाणिय-
साहस्सीओ पण्णत्ताओ
एव भूयाणदस्स वि — जाव — महाघोसस्स

५१० छव्विहा उग्गहमई पण्णत्ता त जहा-

पुव्वाभद्दवया, कत्तिया, महा,
पुव्वाफग्गुणी, मूलो, पुव्वासाढा

चदस्स ण जोईसिदस्स जोइसरण्णो छ नक्खत्ता नत्तभागा अवड्ढक्खेत्ता पण्णरसमुहुत्ता पण्णत्ता त जहा-

सयभिसया, भरणी, अद्दा,
अस्सेसा, साई, जेट्ठा

चदस्स ण जोइसिदस्स जोइसरण्णो छ नक्खत्ता उभयभागा दिवड्ढखेत्ता पणयालीसमुहुत्ता पण्णत्ता त जहा-

रोहिणी, पुणव्वसू, उत्तराफग्गुणी,
विसाहा, उत्तारासढा, उत्तराभद्दवया ३

५१८ अभिचदे ण कुलकरे छ धणुसयाइ उड्ढ उच्चत्तेण हुत्था

५१९ भरहे ण राया चाउरतचक्कवट्टी छ पुव्वसयसहस्साइ महा राया हुत्था

५२० पासस्स ण अरहओ पुरिसादाणियस्स छ सया वादीण सदेव मणुयासुराए परिसाए अपराजियाण सपया होत्था

वासुपुज्जे ण अरहा छहिं पुरिससएहिं सद्धि मुडे —जाव— पव्वइए

चदप्पभे ण अरहा छम्मासे छउमत्थे हुत्था ३

५२१ तेइदिया ण जीवाण असमारभमाणस्स छव्विहे सजमे कज्जइ त जहा-

घाणमयाओ सोक्खाओ अववरोवेत्ता भवइ,

घाणमएण दुक्खेण असजोएत्ता भवइ,
जिब्भामयाओ सोक्खाओ अववरोवेत्ता भवइ,
जिब्भामएण दुक्खेण असजोएत्ता भवइ,
फासमयाओ सोक्खाओ अववरोवेत्ता भवइ,
फासमएण दुक्खेण असजोएत्ता भवइ

तेइदियाण जीवाण समारभमाणस्स छव्विहे असजमे कज्जइ त जहा-

घाणमयाओ सोक्खाओ ववरोवेत्ता भवइ —जाव—
फासमएण दुक्खेण सजोगेत्ता भवइ २

५२२ जबुद्दीवे दीवे छ अकम्मभूमीओ पण्णत्ताओ त जहा-

हेमवए, हेरण्णवए, हरिवासे,
रम्मगवासे, देवकुरा, उत्तरकुरा

जबुद्दीवे दीवे छव्वासा पण्णत्ता त जहा-

भरहे, हेरवए, हेमवए,
हेरण्णवए, हरिवासे, रम्मगवासे

जबुद्दीवे दीवे छ वासहरपव्वया पण्णत्ता त जहा-

चुल्लहिमवते, महाहिमवते, निसढे,
नीलवते, रुप्पि, सिहरी

जबूमदरदाहिणेण छ कूडा पण्णत्ता त जहा-

चुल्लहिमवत-कूडे, वेसमण-कूडे,
महाहिमवत-कूडे, वेरुलिय-कूडे,
निसढ-कूडे, रुयग-कूडे

जबूमदर उत्तरे ण छ कूडा पण्णत्ता त जहा-

नीलवत-कूडे, उवदसण-कूडे,
रुप्पि-कूडे, मणिकचण-कूडे,
सिहरि-कूडे, तिगिच्छ-कूडे

जबुद्दीवे दीवे छ महद्दहा पण्णत्ता त जहा-

पउम-द्दहे, महापउम-द्दहे, तिगिच्छ द्दहे,
केसरि-द्दहे, महापोंडरिय-द्दहे, पुडरीय द्दहे

तत्थ ण छ देवयाओ महड्ढियाओ —जाव— पलिओव मट्ठियाओ परिवसति त जहा-

सिरि, हिरि, धिति, कित्ति, बुद्धि, लच्छी

जबूमदरदाहिणे ण छ महानईओ पण्णत्ताओ त जहा-

गगा, सिघू रोहिया, रोहितसा, हरी, हरिकता

जबूमदरउत्तरेण छ महानईओ पण्णत्ताओ त जहा-

नरकता, नारीकता, सुवण्णकूला,
रुप्पकूला, रत्ता, रत्तवती

जबूमदरपुरत्थिमे ण सीताए महाणईए उभयकूले छ अतर नईओ पण्णत्ताओ त जहा-

गाहावई, दहावई, पकवई,
तत्तजला मत्तजला, उम्मत्तजला

जबूमदरपच्चत्थिमे ण सीतोदाए महाणईए उभयकूले छ अतरनईओ पण्णत्ताओ त जहा

खीरोदा, सीहसोता,
अतोवाहिणी, उम्मिमालिणी,
फेणमालिणी, गभीरमालिणी

धायइसडदीवपुरच्छिमद्धे ण छ अकम्मभूमीओ पण्णत्ताओ त जहा-

हेमवए —जाव— उत्तरकुरा

एव जहा जबूद्दीवे दीवे तहा नई —जाव— अतरनईओ —जाव— पुक्खरवरदीवद्धपच्चत्यिमद्धे भाणियव्व २४

५२३ छ उऊ पण्णत्ता त जहा-

पाउसे, वारिसारत्ते, सरए, हेमते, वसते, गिम्हे

५२४ छ ओमरत्ता पण्णत्ता त जहा-

तइए पव्वे, सत्तमे पव्वे,
एक्कारसमे पव्वे, पण्णरसमे पव्वे,
एगूणवीसइमे पव्वे, तेवीसइमे पव्वे

छ अइरत्ता पण्णत्ता त जहा-

चउत्थे पव्वे, अट्ठमे पव्वे,
दुवालसमे पव्वे, सोलसमे पव्वे,
वीसइमे पव्वे, चउवीसइमे पव्वे २

५२५ आभिणिबोहियणाणस्स ण छव्विहे अत्योग्गहे पण्णत्ते त जहा-

सोइदियत्थोग्गहे —जाव— नोइदियत्थोग्गहे

५२६ छव्विहे ओहिणाणे पण्णत्ते त जहा-

आणुगामिए, अणाणुगामिए,
वड्ढमाणए, हीयमाणए,
पडिवाई, अपडिवाई

५२७ नो कप्पइ निग्गथाण वा, निग्गथीण वा इमाइ छ अवयणाइं वइत्तए त जहा-

अलियवयणे, हीलिअवयणे,
खिसियवयणे, फरुसवयणे,
गारत्थियवयणे विउसविय वा पुणो उदीरित्तए

५२८ छ कप्पस्स पत्थारा पण्णत्ता त जहा-

पाणाइवायस्स वाय वयमाणे,
मुसावायस्स वाय वयमाणे,
अदिण्णादाणस्स वाय वयमाणे,
अविरइवाय वयमाणे,
अपुरिसवाय वयमाणे,
दासवाय वयमाणे

इच्चेते छ कप्पस्स पत्थारे पत्थरेत्ता सम्ममपरिपूरेमाणो तट्ठाणपत्ते

५२९ छ कप्पस्स पलिमथू पण्णत्ता त जहा-

कोकुइए सजमस्स पलिमथू,
मोहरिए सच्चवयणस्स पलिमथू,
चक्खुलोलुए ईरियावहियाए पलिमथू,

तितिणिए एसणागोयरस्स पलिमथू,
इच्छालोभिए मोत्तिमग्गस्स पलिमथू,
भिज्जाणियाणकरणे मोक्खमग्गस्स पलिमथू

सव्वत्थ भगवया अणियाणया पसत्था

५३० छव्विहा कप्पट्ठिई पण्णत्ता त जहा-
सामाइयकप्पट्ठिई,
छेओवट्ठावणियकप्पट्ठिई,
निव्विसमाणकप्पट्ठिई,
निव्विट्ठकप्पट्ठिई,
जिणकप्पट्ठिई,
थविरकप्पट्ठिई

५३१ समणे भगव महावीरे छट्ठेण भत्तेण अपाणएण मुडे —जाव— पव्वइए

समणस्स ण भगवओ महावीरस्स छट्ठेण भत्तेण अपाणएण अणते अणुत्तरे —जाव— समुप्पण्णे

समणे भगव महावीरे छट्ठेण भत्तेण अपाणएण सिद्धे —जाव— सव्वदुक्खप्पहीणे ३

५३२ सणकुमार-माहिदेसु ण कप्पेसु विमाणा छ जोयणसयाइ उड्ढ उच्चत्तेण पण्णत्ता

सणकुमार-माहिदेसु ण कप्पेसु देवाण भवधारणिज्जगा सरीरगा उक्कोसेण छ रयणीओ उड्ढ उच्चत्तेण पण्णत्ता २

५३३ छव्विहे भोयणपरिणामे पण्णत्ते तं जहा-

मणुण्णे, रसिए, पीणणिज्जे,
विंहणिज्जे, मयणिज्जे, दीवणिज्जे

छव्विहे विसपरिणामे पण्णत्ते तं जहा-

डक्के, भुत्ते,
निवइए, मसाणुसारी,
सोणियाणुसारी, अट्ठिमिंजाणुसारी २

५३४ छव्विहे पट्ठे पण्णत्ते तं जहा-

ससयपट्ठे, वुग्गहपट्ठे, अणुजोगी,
अणुलोमे, तहणाणे, अतहणाणे

५३५ चमरचंचा णं रायहाणी उक्कोसेणं छम्मासा विरहिए उववाएणं

एगमेगे णं इंदट्ठाणे उक्कोसेणं छम्मासा विरहिए उववाएणं
अहेसत्तमा णं पुढवी उक्कोसेणं छम्मासा विरहिया उववाएणं

सिद्धिगई णं उक्कोसेणं छम्मासा विरहिया उववाएणं ४

५३६ छव्विहे आउयबंधे पण्णत्ते तं जहा-

जाइणामणिधत्ताउए,
गइणामणिधत्ताउए,
ठिइणामणिधत्ताउए
ओगाहणाणामणिधत्ताउए,

पएसणामणिधत्ताउए,
अणुभावणामणिधत्ताउए

नेरइयाण छव्विहे आउयबधे पण्णत्ते त जहा-
जाइणामणिधत्ताउए —जाव— अणुभावणामणिधत्ताउए

एव —जाव— वेमाणियाण

नेरइया णियमा छम्मासावसेसाउया परभवियाउय पगरेंति
एयामेव असुरकुमारा वि —जाव— थणियकुमारा
असखेज्जवासाउया सण्णिपचिदियतिरिक्खजोणिया णियम छम्मासावसेसाउया परभवियाउय पगरेंति

असखेज्जवासाउया सण्णि मणुस्सा णियम जाव पगरिंति

वाणमतरा, जोइसिया, वेमाणिया जहा नेरइया ३

५३७ छव्विहे भावे पण्णत्ते त जहा-

ओदइए, उवसमिए,
खइए, खओवसमिए,
पारिणामिए, सण्णिवाइए

५३८ छव्विहे पडिक्कमणे पण्णत्ते त जहा-

उच्चारपडिक्कमणे, पासवणपडिक्कमणे,
इत्तरिए, आवकहिए,
ज किंचि मिच्छा, सोमणतिए

५३९ कत्तियाणक्खत्ते छत्तारे पण्णत्ते

असिलेसाणक्खत्ते छत्तारे पण्णत्ते २

५४० जीवाण छट्ठाण-निव्वत्तिए पोग्गले पावकम्मत्ताए चिणिसु वा, चिणति वा, चिणिस्सति वा त जहा-

पुढविकायनिवत्तिए —जाव— तसकायणिवत्तिए

एव चिण, उवचिण, बध, उदीर, वेय तह णिज्जरा चेव

छप्पएसिया ण खधा अणता पण्णत्ता

छप्पएसोगाढा पोग्गला अणता पण्णत्ता

छसमयट्ठिइया पोग्गला अणता

छगुणकालगा पोग्गला —जाव- छगुणलुक्खा पोग्गला अणता पण्णत्ता २६

सत्तट्ठाण

५४१ सत्तविहे गणावक्कमणे पण्णत्ते त जहा-

सव्वधम्मा रोएमि,

एगइया रोएमि एगइया नो रोएमि,

सव्वधम्मा वितिगिच्छामि,

एगइया वितिगिच्छामि एगइया नो वितिगिच्छामि,

सव्वधम्मा जुहुणामि,

एगइया जुहुणामि एगइया नो जुहुणामि,

इच्छामि ण भते ! एगल्लविहारपडिम उवसपज्जित्ता णं विहरित्तए

५४२ सत्तविहे विभगणाणे पण्णत्ते, त जहा—

एगदिसिलोगाभिगमे,

पचदिसिलोगाभिगमे,

किरियावरणे जीवे,

मुदग्गे जीवे,

अमुदग्गे जीवे,

रूवी जीवे,

सव्वमिण जीवा

तत्थ खलु इमे पढमे विभगणाणे

जया ण तहारूवस्स समणस्स वा, माहणस्स वा विभगनाणे समुप्पज्जइ, से ण तेण विभगणाणेण समुप्पण्णेण पासइ पाईण वा, पडिण वा, दाहिण वा उदीण वा, उड्ढ वा —जाव— सोहम्मे कप्पे, तस्स ण एव भवइ "अत्थि ण मम अइसेसे नाण दसणे समुप्पण्णे एग दिसि लागाभिगमे, सतेगइया समणा वा माहणा वा एवमाहसु पचदिसि लोगाभिगमे" जे ते एवमाहसु मिच्छ ते एवमाहसु

इइ पढमे विभगणाणे

अहावरे दोच्चे विभगणाणे

जया ण तहारूवस्स वा, माहणस्स वा विभगणाणे समुप्पज्जइ, से ण तेण विभगणाणेण समुप्पण्णेण पासइ पाईण वा, पडिण वा, दाहिण वा, उदीण वा, उड्ढ वा —जाव— सोहम्मे कप्पे, तस्स ण एव भवइ "अत्थि ण मम अइसेसे णाण-दसणे समुप्पण्णे पचदिसि लोगाभिगमे", सतेगइया समणा वा, माहणा वा एवमाहसु—"एगदिसि लोगाभिगमे जे ते एवमाहसु मिच्छ ते एवमाहसु"

इइ दोच्चे विभगणाणे

अहावरे तच्चे विभगणाणे

जया ण तहारूवस्स समणस्स वा, माहणस्स वा विभगणाणे

समुप्पज्जइ, से ण तेण विभगणाणेण पासइ-पाणे अइवा-एमाणे, मुस वयमाणे, अदिण्णमादियमाणे, मेहुण पडिसेवमाणे, परिग्गह परिगिण्हमाणे, राइभोयण भजमाणे वा, पाव च ण कम्म कीरमाण नो पासइ, तस्स ण एव भवइ "अत्थि ण मम अइसेसे णाण-दसणे समुप्पण्णे किरियावरणे जीवे सतेगइया समणा वा, माहणा वा एवमाहसु—नो किरियावरणे जीवे" जे ते एवमाहसु मिच्छ ते एवमाहसु

इइ तच्चे विभगणाणे

अहावरे चउत्थे विभगणाणे

जया ण तहारूवस्स समणस्स वा, माहणस्स वा विभगणाणे समुप्पज्जइ, से ण तेण विभगणाणेण समुप्पण्णेण देसामेव पासइ, बाहिरब्भतरए पोग्गले परियाइत्ता पुढेगत्त णाणत्त फुसिया फुरेत्ता फुट्टित्ता विकुव्वित्ताण, विकुव्वित्ताण चिट्ठित्तए तस्स ण एव भवइ "अत्थि ण मम अइसेसे नाण-दसणसमुप्पण्णे, मुदग्गे जीवे, सतेगइया समणा वा, माहणा वा एवमाहसु—अमुदग्गे जीवे" जे ते एवमाहसु मिच्छ ते एवमाहसु

इइ चउत्थे विभगणाणे

अहावरे पचमे विभगणाणे

जया ण तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा विभगणाणे

समुप्पज्जइ, से ण तेण विभगणाणेण समुप्पण्णेण देवामेव पासइ, बाहिरब्भतरए पोग्गले अपरियाविइत्ता पुढेगत्त —जाव— विकुव्वित्ताण चिट्ठित्तए तस्स ण एव भवइ "अत्थि —जाव— समुप्पण्णे अमुदग्गे जीवे," सतेगइया समणा वा, माहणा वा एवमाहसु-मुदग्गे जीवे", जे ते एवमाहसु मिच्छ ते एवमाहसु

इइ पचमे विभगणाणे

अहावरे छट्ठे विभगणाणे

जया ण तहारूवस्स समणस्स वा, माहणस्स वा विभगणाणे समुप्पज्जइ से ण तेण विभगणाणेण समुप्पण्णेण देवामेव पासइ बाहिरब्भतरए पोग्गले परियाइत्ता वा, अपरियाइत्ता वा, पुढेगत्त णाणत्त फुसेत्ता —जाव— विकुव्वित्ताण चिट्ठित्तए, तस्स ण एव भवइ "अत्थि ण मम अइसेसे णाण-दसणे समुप्पण्णे, रूवी जीवे, सतेगइया समणा वा, माहणा वा एवमाहसु अरूवी जीवे" जे ते एवमाहसु मिच्छ ते एवमाहसु

इइ छठ्ठे विभगणाणे

अहावरे सत्तमे विभगणाणे

जया ण तहारूवस्स समणस्स वा, माहणस्स वा विभगणाणे वा समुप्पज्जइ, से ण तेण विभगणाणेण समुप्पण्णेण पासइ सुहुमेण वाउकाएण फुड पोग्गलकाय एयत वेयत चलत

खुब्भत फवत घट्टत उदीरेंत त त भाव परिणमत तस्स ण एव भवइ "अत्थि ण मम अइसेसे णाण-दसणे समुप्पण्णे सव्वमिण जीवा सतेगइया समणा वा, माहणा वा एवमाहसु-"जीवा चेव अजीवा चेव" जे ते एवमाहसु मिच्छ ते एवमाहसु

तस्स ण इमे चत्तारि जीवनिकाया णो सम्ममुवगया भवति, त जहा-

पुढविकाइया, आउकाइया, तेउकाइया, वाउकाइया,

इच्चेएहि चउहि जीवनिकाएहि मिच्छावड पवत्तेइ

छइ सत्तमे विभगणाणे

५४३ सत्तविहे जोणिसगहे पण्णत्ते, त जहा—

अडया,

पोयया,

जराउया,

रसया,

ससेइमा,

सम्मुच्छिमा,

उब्भिया

अडया सत्त गइया सत्त आगइया पण्णत्ता त जहा-

अडए अडएसु उववज्जमाणे अडएहितो वा, पोयएहितो वा —जाव— उब्भिएहितो वा उववज्जेज्जा

से चेव ण से अडए अडयत्त विप्पजहमाणे अडयत्ताए वा,

पोययाए वा —जाव— उब्भियत्ताए वा गच्छेज्जा
पोयया सत्त गइया सत्त आगइया
एव चेव सत्तण्हवि गइरागइ भाणियव्वा —जाव—
उब्भियत्ति २

५४४ आयरिय-उवज्झायस्स ण गणसि सत्त सगहट्ठाणा पण्णत्ता
त जहा-
आयरिय-उवज्झाए गणसि आण वा, धारण वा
सम्म पउजित्ता भवइ
एव जहा पचट्ठाणे —जाव— आयरिय-उवज्झाए
गणसि आपुच्छियचारि यावि भवइ
नो अणापुच्छियचारी या वि भवइ
आयरिय-उवज्झाए गणसि अणुप्पण्णाइ उवगरणाइ
सम्म उप्पाइत्ता भवइ
आयरिय-उवज्झाए गणसि पुव्वुप्पण्णाइ उवगरणाइ
सम्म सारक्खेत्ता सगोवित्ता भवइ नो असम्म सारक्खेत्ता
सगोवित्ता भवइ
आयरिय-उवज्झायस्स ण गणसि सत्त असगहट्ठाणा
पण्णत्ता, त जहा-
आयरिय-उवज्झाए गणसि आण वा, धारण वा नो सम्म
पउजित्ता, भवइ एव —जाव—
उवगरणाण नो सम्म सारक्खेत्ता सगोवेत्ता भवइ २

५४५ सत्त पिंडेसणाओ पण्णत्ताओ

सत्त पाणेसणाओ पण्णत्ताओ
सत्त उग्गहपडिमाओ पण्णत्ताओ
सत्त सत्तिक्कया पण्णत्ता
सत्त महज्झयणा पण्णत्ता
सत्तसत्तमिया ण भिक्खुपडिमा एगूणपण्णयाए राइदिएहिं
एगेण य छण्णउएण भिक्खासएण अहासुत्त —जाव—
आराहिया वि भवइ ६

५४६ अहेलोगे ण सत्त पुढवीओ पण्णत्ताओ
सत्त घणोदहिओ पण्णत्ताओ
सत्त घणवाया, सत्त तणुवाया पण्णत्ता
सत्त उवासतरा पण्णत्ता
एएसु ण सत्तसु उवासतरेसु सत्त तणुवाया पइट्ठिया
एएसु ण सत्तसु तणुवाएसु सत्त घणवाया पइट्ठिया
एएसु ण सत्तसु घणवाएसु सत्त घणोवहि पइट्ठिया
एएसु ण सत्तसु घणोवहिसु पिडलगपिहुणसठाणसठियाओ
सत्त पुढवीओ पण्णत्ताओ त जहा-
पढमा —जाव— सत्तमा

एयासि ण सत्तण्ह पुढवीण सत्त नामधेज्जा पण्णत्ता
त जहा-
घम्मा, वसा, सेला, अजणा, रिट्ठा, मघा, माघवइ
एयासि ण सत्तण्ह पुढवीण सत्त गोत्ता पण्णत्ता त जहा-
रयणप्पभा,

सक्करप्पभा,
वालुअप्पभा,
पकप्पभा,
धूमप्पभा,
तमा,
तमतमा, ११

५४७ सत्तविहा बायरवाउकाइया पण्णत्ता त जहा-

पाईणवाए,
पडीणवाए,
दाहिणवाए,
उदीणवाए,
उड्ढवाए,
अहोवाए,
विदिसिवाए

५४८ सत्त सठाणा पण्णत्ता त जहा-

दीहे, हस्से, वट्टे, तसे, चउरसे, पिहुले, परिमडले

५४९ सत्त भयट्ठाणा पण्णत्ता त जहा-

इहलोगभए,
परलोगभए,
आदाणभए,
अकम्हाभए,
वेयणभए,

मरणभए,

असिलोगभए

५५० सत्तहिं ठाणेहिं छउमत्थ जाणेज्जा त जहा-

पाणे अइवाइत्ता भवइ,

मुस वइत्ता भवइ,

अदिण्णमाइत्ता भवइ,

सद्द-फरिस-रस-रूव-गधे आसाएत्ता भवइ,

पूया-सक्कार अणुबूहेत्ता भवइ,

इम सावज्ज ति पण्णवेत्ता पडिसेवित्ता भवइ,

नो जहावाइ तहाकारी यावि भवइ

सत्तहिं ठाणेहिं केवली जाणेज्जा त जहा-

नो पाणे अइवाएत्ता भवइ, —जाव— जहावाइ तहाकारी यावि भवइ २

५५१ सत्त मूलगोत्ता पण्णत्ता त जहा-

कासवा,

गोतमा,

वच्छा,

कोच्छा,

कोसिया,

मडवा,

वासिट्ठा

जे कासवा ते सत्तविहा पण्णत्ता त जहा

ते कासवा,

ते सढेल्ला,

ते गोल्ला,

ते वाला,

ते मुंजतिणो,

ते पव्वपेच्छतिणो,

ते वरिसकण्हा

जे गोयमा ते सत्तविहा पण्णत्ता तं जहा-

ते गोयमा,

ते गग्गा,

ते भारद्दा,

ते अंगिरसा,

ते सक्कराभा,

ते भक्खराभा,

ते उदगत्ताभा

जे वच्छा ते सत्तविहा पण्णत्ता तं जहा-

ते वच्छा,

ते अग्गेया,

ते मित्तिया,

ते सामिलिणो,

ते सेलतया,

ते अट्ठिसेणा,

ते वीयकम्हा,

जे कोच्छा ते सत्तविहा पण्णत्ता त जहा-

ते कोच्छा,

ते मोग्गलायणा,

ते पिंगलायणा,

ते कोडीणा,

ते मडलिणो,

ते हारिता

ते सोमया,

जे कोसिया ते सत्तविहा पण्णत्ता, त जहा-

ते कोसिया,

ते कच्चातणा,

ते सालकायणा,

ते गोलिकायणा,

ते पक्खिकायणा,

ते अग्गिच्चा,

ते लोहिया

जे मढवा ते सत्तविहा पण्णत्ता त जहा-

ते मढवा,

ते अरिट्ठा,

ते समुता,

ते तेला,

ते एलावच्चा,

ते कंडिल्ला,

ते खारातणा

जे वासिट्ठा ते सत्तविहा पण्णत्ता तं जहा-

ते वासिट्ठा,

ते उंजायणा,

ते जारेकण्हा,

ते वग्घावच्चा,

ते कोंडिण्णा,

ते सण्णी,

ते पारासरा ८

५५२ सत्त मूलनया पण्णत्ता तं जहा-

नेगमे,

संगहे,

ववहारे,

उज्जुसुए,

सद्दे,

समभिरूढ,

एवंभूए

५५३ सत्त सरा पण्णत्ता तं जहा-

गाहा—सज्जे रिसभे गंधारे

मज्झिमे पंचमे सरे ।

धेवए चेव णिसाए ,
सरा सत्त वियाहिया ॥१॥

एएसि ण सत्तण्ह सराण सत्त सरट्ठाणा पण्णत्ता त जहा-

गाहाओ—सज्ज तु अग्गजिब्भाए ,
उरेण रिसभ सर ।
कठुग्गएण गधार ,
मज्झजिब्भाए मज्झिम ॥१॥
णासाए पचम बूया ,
दतोठ्ठेण य धेवय ।
मुद्धाणेण य णेसाय ,
सरट्ठाणा वियाहिया ॥२॥

सत्त सरा जीवनिस्सिया पण्णत्ता त जहा-

गाहाओ—सज्ज रवइ मयूरो ,
कुक्कुडो रिसह सर ।
हसो णयइ गधार ,
मज्झिम तु गवेलगा ॥१॥
अह कुसमसमये काले ,
कोइला पचम सर ।
छट्ठ च सारसा कोंचा ,
णिसाय सत्तम गया ॥२॥

सत्त सरा अजीवनिस्सिया पण्णत्ता त जहा-

गाहाओ—सज्ज रवइ मुइगो ,
गोमुही रिसभ सर ।
सखो णयइ गधार ,
मज्झिम पुण झल्लरी ॥१॥

चउचलणपइट्ठाणा ,
गोहिया पचम सर ।
आडबरो रेवइय ,
महाभेरी य सत्तम ॥२॥

एएसि ण सत्तसराण सत्त सरलक्खणा पण्णत्ता त जहा-

गाहाओ—सज्जेण लभइ वित्ति ,
कय च ण विणस्सइ ।
गावो मित्ता य पुत्ता य
णारीण चेव वल्लभो ॥१॥

रिसभेण उ एसज्ज ,
सेणावच्च धणाणि य ।
वत्थगधमलकार ,
इत्थिओ सयणाणि य ॥२॥

गधारे गीयजुत्तिण्णा ,
वज्जवित्ती कलाहिया ।
भवति कइणो पण्णा ,
जे अण्णे सत्थपारगा ॥३॥

मज्झिमसरसपण्णा ,
भवंति सुहजीविणो ।
खायती पीयती देइ ,
मज्झिम सरमस्सिओ ॥४॥

पंचमसरसपण्णा ,
भवंति पुढवीपई ।
सूरा संगहकत्तारो ,
अणेग-गण-णायगा ॥५॥

रेवयसरसपण्णा ,
भवंति कलहप्पिया ।
साउणिया वग्गुरिया ,
सोयरिया मच्छबंधा य ॥६॥

चंडाला मुट्ठिया सेया ,
जे अण्णे पावकम्मिणो ।
गोघायगा य जे चोरा ,
णिसायं सरमस्सिया ॥७॥

एतेसिं सत्तण्हं सराणं तओ गामा पण्णत्ता तं जहा-
सज्जगामे, मज्झिमगामे, गंधारगामे

सज्जगामस्स णं सत्त मुच्छणाओ पण्णत्ताओ तं जहा-
गाहा—मंगी कोरव्वीया हरी य ,
रयतणी य सारकंता य ।

छट्ठी य सारसी णाम,
सुद्धसज्जा य सत्तमा ॥१॥

मज्झिमगामस्स णं सत्त मुच्छणाओ पण्णत्ताओ त जहा-

गाहा—उत्तरमदा रयणी,
उत्तरा उत्तरासमा।
आसोकता य सोवीरा,
अभिरु हवइ सत्तमा ॥१॥

गधारगामस्स ण सत्त मुच्छणाओ पण्णत्ताओ त जहा-

गाहाओ—नदी य खुड्डिमा पूरिमा,
य चउत्थी य सुद्धगधारा।
उत्तरगधारा वि य,
पचमिया हवइ मुच्छा उ ॥१॥

सुट्ठुत्तरमायामा,
सा छट्ठी नियमसो उ णायव्वा।
अह उत्तरायया,
कोडीमायसा सत्तमी मुच्छा ॥२॥

सत्त सराओ कओ,
सभवति गेयस्स का भवति जोणी।
कइसमया उस्सासा,
कइ सा गेयस्स आगारा ॥३॥

सत्त सरा णाभीओ,
भवति गीय च रुयजोणीय।

पादसमा ऊसासा ,
तिण्णि य गीयस्स आगारा ॥४॥
आइमिउ आरभया ,
समुव्वहृता य मज्झगारंमि ।
अवसाणे तज्जवितो ,
तिण्णि य गेयस्स आगारा ॥५॥
छद्दोसे अट्ठगुणे ,
तिण्णि य वित्ताइ दो भणितोओ ।
जाणाहिइ सो गाहिइ ,
सुसिक्खिओ रंगमज्झम्मि ॥६॥
भीय दुत रहस्स ,
गायतो मा य गाहि उत्ताल ।
काकस्सरमणुनास च ,
होंति गेयस्स छद्दोसा ॥७॥
पुण्ण रत्त च अलकिय च ,
वत्त तहा अविघुट्ठ ।
महुर सम सुउमार ,
अट्ठ गुणा होंति गेयस्स ॥८॥
उरकठसिरपसत्थ च ,
गेज्जते मउरिभिअपदबद्ध ।
समतालपडुक्खेव ,
सत्तसरसीहर गीय ॥९॥
निद्दोस सारवत च ,

जबुद्दीवे दीवे सत्त वासहरपव्वया पण्णत्ता त जहा
चुल्लहिमवते,
महाहिमवते,
निसढे,
नीलवते,
रुप्पी,
सिहरी,
मदरे

जबुद्दीवे दीवे सत्त महानईओ पुरत्थाभिमुहीओ लवणसमुद्द समप्पेंति त जहा-
गगा,
रोहिया,
हिरी,
सिया,
नरकता,
सुवण्णकूला,
रत्ता

जबुद्दीवे दीवे सत्त महानईओ पच्चत्थाभिमुहीओ लवण समुद्द समुप्पेंति त जहा-
सिधु,
रोहितसा,
हरिकता,

सीतोवा,
नारीकता,
रुप्पकूला,
रत्तवई

धायइसडदीवपुरच्छिमद्धे ण सत्त वासा पण्णत्ता त जहा-
मरहे —जाव— महाविदेहे

धायइसडदीवपुरच्छिमद्धे ण सत्त वासहरपव्वया पण्णत्ता त जहा-
चुल्लहिमव ते —जाव— मवरे

धायइसडदीवपुरच्छिमद्धे ण सत्त महाणईओ पुरच्छामिमुहीओ कालोयसमुद्द समप्पेंति त जहा-
गगा —जाव— रत्ता

धायइसडदीवपुरच्छिमद्धे ण सत्त महानईओ पच्चत्थाभिमुहीओ लवणसमुद्द समप्पेंति त जहा-
सिधू —जाव— रत्तवई

धायइसडदीवे पच्छत्थिमद्धे ण सत्त वासा एव चेव, नवर पुरत्थाभिमुहीओ लवणसमुद्द समप्पेंति पच्चत्थाभिमुहीओ कालोद सेस त चेव

पुक्खरवरदीवड्ढपुरच्छिमद्धे ण सत्त वासा तहेव
नवर-पुरत्थाभिमुहीओ पुक्खरोद समुद्द समप्पेंति
पच्छत्थाभिमुहीओ कालोद समुद्द समप्पेंति सेस त चेव

असिरयणे,
मणिरयणे,
काकणिरयणे

एगमेगस्स ण रण्णो चाउरतचक्कवट्टिस्स सत्त पंचिदिय रयणा पण्णत्ता त जहा-

सेणावइरयणे,
गाहावइरयणे,
वड्ढइरयणे,
पुरोहियरयणे,
इत्थिरयणे,
आसरयणे,
हत्थिरयणे २

५५६ सत्तहि ठाणेहि ओगाढ दुसम जाणेज्जा त जहा-

अकाले वरिसइ,
काले न वरिसइ,
असाहू पुज्जति,
साहू न पुज्जति,
गुरुहि जणो मिच्छ पडिवण्णो,
मणोदुहया,
वइदुहया

सत्तहि ठाणेहि ओगाढ सुसम जाणेज्जा त जहा-

अकाले न वरिसइ,

काले वरिसइ,

असाहू न पुज्जंति,

साहू पुज्जंति,

गुरुहिं जणो सम्मं पडिवण्णो,

मणोसुहया,

वइसुहया २

५६० सत्तविहा संसारसमावण्णगा जीवा पण्णत्ता तं जहा-

नेरइया,

तिरिक्खजोणिया,

तिरिक्खजोणिणीओ,

मणुस्सा,

मणुस्सीओ,

देवा,

देवीओ

५६१ सत्तविहे आउभेदे पण्णत्ते तं जहा-

गाहा – अज्झवसाणनिमित्ते, आहारे वेयणा पराघाए ।

फासे आणापाणू, सत्तविहं भिज्जए आउं ॥१॥

५६२ सत्तविहा सव्वजीवा पण्णत्ता तं जहा-

पुढविकाइया —जाव— तसकाइया अकाइया

अहवा सत्तविहा सव्वजीवा पण्णत्ता तं जहा-

कण्हलेसा —जाव— सुक्कलेसा, अलेसा २

५६३ बमदत्ते ण राया चाउरतचक्कवट्टी सत्त धणूइ उड्ढ उच्चत्तेण सत्त य वाससयाइ परमाउ पालइत्ता कालमासे काल किच्चा अहे सत्तमाए पुढवीए अप्पतिटठाणे नरए नेरइयत्ताए उववण्णे

५६४ मल्ली ण अरहा अप्पसत्तमे मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइए त जहा-

मल्ली विदेहरायवरकण्णगा,
पडिवुद्धि इक्खागराया,
चदच्छाये अगराया,
रुप्पी कुणालाहिवइ,
सखे कासीराया,
अदीणसत्तू कुरुराया
जितसत्तू पचालराया

५६५ सत्तविहे दसणे पण्णत्ते त जहा-

सम्मद्दसणे,
मिच्छदसणे,
सम्मामिच्छदसणे,
चक्खुदसणे
अचक्खुदसणे,
ओहिदसणे,
केवलदसणे

५६६ छउमत्थवीयरागे ण मोहणिज्जवज्जाओ सत्त कम्मपयडीओ

वेयइ त जहा-

नाणावरणिज्ज,

दसणावरणिज्ज,

वेयणिय,

आउय,

नाम,

गोत्त,

अतराइय

५६७ सत्त ठाणाइ छउमत्थे सव्वभावेण न जाणइ, न पासइ त जहा-

धम्मत्थिकाय,

अधम्मत्थिकाय

आगासत्थिकाय,

जीव असरीरपडिबद्ध,

परमाणुपोग्गल,

सद्द,

गध

एयाणि चेव उप्पण्णणाणे — जाव — जाणइ, पासइ त जहा-

धम्मत्थिकाय —जाव— गध २

५६८ समणे भगव महावीरे वयरोसभणारायसघयणे समचउरस-सठाणसठिए सत्त रयणीओ उड्ढ उच्चत्तेण हुत्था

५६९ सत्त विकहाओ पण्णत्ताओ त जहा-

इत्थिकहा,
भत्तकहा,
देसकहा,
रायकहा,
मिउकालणिया,
दसणभेयणी,
चरित्तभेयणी

५७० आयरिय-उवज्झायस्स ण गणसि सत्त अइसेसा पण्णता त जहा-

आयरिय उवज्झाए अतो उवस्सगस्स पाए निगिज्झिय निगिज्झिय पप्फोडेमाणे वा, पमज्जमाणे वा नाइक्कमइ,
एव जहा पचटठाणे — जाव –
बाहि उवस्सगस्स एगराय वा, दुराय वा वसमाणे नाइक्कमइ,
उवकरणाइसेसे भत्तपाणाइसेसे

५७१ सत्तविहे सजमे पण्णत्ते त जहा-

पुढविकाइयसजमे — जाव तसकाइयसजमे, अजीवकायसजमे

सत्तविहे असजमे पण्णत्ते त जहा-

पुढविकायअसजमे जाव — तसकाइयअसजमे, अजीवकाइय असजमे

सत्तविहे आरभे पण्णत्ते त जहा-

पुढविकाइयआरभे — जाव— अजीवकाइयआरभे

एव अणारभे वि, एव सारभे वि, एव असारभे वि, एव समारभे वि एव असमारभे वि —जाव— अजीवकाय-असमारभे ६

५७२ अह भते ! अयसि-कुसुम-कोद्दव-कगुरालग-सण-सरिसव-मूल-बीयाण एएसि ण धण्णाण कोटठाउत्ताण पल्लाउत्ताण —जाव— पिहियाण केवइय काल जोणी सचिट्ठइ ?

गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण सत्त सवच्छराइ,

तेण पर जोणी पमिलायइ —जाव— जोणीवोच्छेदे पण्णत्ते

५७३ बायरआउकाइयाण उक्कोसेण सत्त वाससहस्साइ ठिई पण्णत्ता

तच्चाए ण वालुयप्पभाए पुढवीए उक्कोसेण नेरइयाण सत्त सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता

चउत्थिए ण पकप्पभाए पुढवीए जहण्णेण नेरइयाण सत्त-सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ३

५७४ सक्कस्स ण देविदस्स देवरण्णो वरुणस्स महारण्णो सत्त अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ

ईसाणस्स ण देविदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो सत्त अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ

ईसाणस्स ण देविदस्स देवरण्णो जमस्स महारण्णो सत्त अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ ३

इत्थिकहा,
भत्तकहा,
देसकहा,
रायकहा,
मिउकालुणिया,
दंसणभेयणी,
चरित्तभेयणी

५७० आयरिय उवज्झायस्स णं गणंसि सत्त अइसेसा पण्णत्ता तं जहा-
आयरिय उवज्झाए अंतो उवस्सगस्स पाए निगिज्झिय निगिज्झिय पप्फोडेमाणे वा, पमज्जमाणे वा नाइक्कमइ, एवं जहा पंचट्ठाणे — जाव —
बाहिं उवस्सगस्स एगरायं वा, दुरायं वा वसमाणे नाइक्कमइ,
उवकरणाइसेसे भत्तपाणाइसेसे

५७१ सत्तविहे संजमे-पण्णत्ते तं जहा-
पुढविकाइयसंजमे — जाव — तसकाइयसंजमे, अजीव कायसंजमे

सत्तविहे असंजमे पण्णत्ते तं जहा-
पुढविकायअसंजमे — जाव — तसकाइयअसंजमे, अजीवकाइय असंजमे

सत्तविहे आरंभे पण्णत्ते तं जहा-

पुढविकाइयआरंभे — जाव— अजीवकाइयआरंभे

एवं अणारंभे वि, एवं सारंभे वि, एवं असारंभे वि, एवं समारंभे वि एवं असमारंभे वि —जाव— अजीवकाय-असमारंभे ६

५७२ अह भंते ! अयसि-कुसुंभ-कोद्दव-कंगु-रालग-सण-सरिसव-मूल-बीयाणं एएसिं णं धण्णाणं कोट्ठाउत्ताणं पल्लाउत्ताणं —जाव— पिहियाणं केवइयं कालं जोणी संचिट्ठइ ?

गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं सत्त संवच्छराइं, तेणं परं जोणी पमिलायइ —जाव— जोणीवोच्छेदे पण्णत्ते

५७३ बायरआउकाइयाणं उक्कोसेणं सत्त वाससहस्साइं ठिई पण्णत्ता

तच्चाए णं वालुयप्पभाए पुढवीए उक्कोसेणं नेरइयाणं सत्त सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता

चउत्थिए णं पंकप्पभाए पुढवीए जहण्णेणं नेरइयाणं सत्त-सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ३

५७४ सक्कस्स णं देविंदस्स देवरण्णो वरुणस्स महारण्णो सत्त अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ

ईसाणस्स णं देविंदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो सत्त अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ

ईसाणस्स णं देविंदस्स देवरण्णो जमस्स महारण्णो सत्त अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ ३

दुहओवक्का,
एगओखुहा,
दुहओखुहा,
चक्कवाला,
अद्धचक्कवाला

५८२ चमरस्स ण असुरिदस्स असुरकुमाररण्णो सत्त अणिया सत्त अणियाहिवई पण्णत्ता त जहा-
पायत्ताणिए,
पीढाणिए
कुजराणिए,
महिसाणिए,
रहाणिए,
नट्टाणिए,
गधव्वाणिए

दुमे पायत्ताणियाहिवइ,
एव जहा पचट्ठाणे —जाव—
किनरे रहाणियाहिवइ,
रिट्ठे नट्टाणियाहिवइ,
गीइरइ गधव्वाणियाहिवइ

वलिस्स ण वइरोयणिदस्स वइरोयणरण्णो सत्ताणिया, सत्त अणियाहिवइ पण्णत्ता त जहा-
पायत्ताणिए —जाव— गधव्वाणिए

महद् मे पायत्ताणियाहिवइ —जाव— किंपुरिसे रहाणियाहिवइ,

महारिट्ठे नट्टाणियाहिवइ, गीइजसे गंधव्वाणियाहिवइ

धरणस्स ण नागकुमारिंदस्स नागकुरमारण्णो सत्त अणिया, सत्त अणियाहिवइ पण्णत्ता त जहा-

पाइत्ताणिए — जाव — गंधव्वाणिए

रुद्दसेणे पायत्ताणियाहिवइ —जाव— आणंदे रहाणियाहिवइ,

नंदणे नट्टाणियाहिवइ, तेतली गंधव्वाणियाहिवइ

भूयाणंदस्स सत्त अणिया, सत्त अणियाहिवइ पण्णत्ता त जहा-

पायत्ताणिए, — जाव — गंधव्वाणिए,

दक्खे पायत्ताणियाहिवइ —जाव— नंदुत्तरे रहाणियाहिवइ, रती नट्टाणियाहिवई, माणसे गंधव्वाणियाहिवइ

एव —जाव— घोस-महाघोसाण नेयव्व

सक्कस्स ण देविंदस्स देवरण्णो सत्त अणिया, सत्त अणियाहिवइणो पण्णत्ताओ त जहा-

पायत्ताणिए, —जाव— गंधव्वाणिए,

हरिणेगमेसी पायत्ताणियाहिवइ — जाव— माढरे रहाणियाहिवइ,

सेते नट्टाणियाहिवइ, तंबुरु गंधव्वाणियाहिवइ

ईसाणस्स ण देविंदस्स देवरण्णो सत्त अणिया, सत्त अणिया-

चरित्तविणए,
मणविणए,
वइविणए,
कायविणए,
लोगोवयारविणए

पसत्थमणविणए सत्तविहे पण्णत्ते त जहा-
अपावए,
असावज्जे,
अकिरिए,
निरुवक्केसे,
अणण्हयकरे,
अच्छविकरे,
अभूयाभिसंकमणे

अपसत्थमणविणए सत्तविहे पण्णत्ते, त जहा
पावए,
सावज्जे
सकिरिए,
सउवक्केसे,
अण्हयकरे,
छविकरे,
भूयाभिसंकमणे

पसत्थवइविणए सत्तविहे पण्णत्ते त जहा-

अपावए —जाव— अभूयाभिसकमणे

अपसत्यवइविणए सत्तविहे पण्णत्ते त जहा-

पावए —जाव— भूयाभिसकमणे

पसत्थकायविणए सत्तविहे पण्णत्ते त जहा-

आउत्त गमण,

आउत्त ठाण,

आउत्त निसीयण,

आउत्त तुअट्टण,

आउत्त उल्लघण,

आउत्त पल्लघण,

आउत्त सव्विदियजोगजुजणया

अपसत्थकायविणए सत्तविहे पण्णत्ते त जहा-

अणाउत्त गमण —जाव— अणाउत्त सव्विदियजोगजुजणया

लोगोवयारविणए सत्तविहे पण्णत्ते त जहा-

अब्भासवत्तिय,

परच्छदाणुवत्तिय,

कज्जहेउ,

कयपडिकिइया,

अत्तगवेसणया,

देसकालण्णुया,

सव्वत्थेसु अ पडिलोमया ८

५८६ सत्त समुग्घाया पण्णत्ता त जहा-
वेयणासमुग्घाए,
कसायसमुग्घाए,
मारणंतियसमुग्घाए
वेउव्वियसमुग्घाए,
तेजससमुग्घाए,
आहारगसमुग्घाए,
केवलिसमुग्घाए

मणुस्साण सत्त समुग्घाया पण्णत्ता एव चेव-

५८७ समणस्स ण भगवओ महावीरस्स तित्थसि सत्त पवयण णिण्हगा पण्णत्ता त जहा-
बहुरया
जीवपएसिया,
अवत्तिया,
समुच्छेइया,
दोकिरिया,
तेरासिया,
अबद्धिया

एएसि ण सत्तण्ह पवयणनिण्हगाण सत्त धम्मायरिया हुत्था त जहा-
जमालि,
तीसगुत्ते,

आसाढे,

आसमित्ते,

गगे,

छलुए,

गोट्ठामाहिल्ले

एएसि ण सत्तण्ह पवयणनिण्हगाण सत्तुप्पत्तिनगरा होत्या त जहा-

गाहा—सावत्थी उसभपुर, सेयविया मिहिलमुल्लगातीर।
पुरिमतरजि वसपुर निण्हगउप्पत्तिनगराइ।१। ३

५८८ सायावेयणिज्जस्स कम्मस्स सत्तविहे अणुभावे पण्णत्ते त जहा-

मणुण्णा सद्दा —जाव— मणुण्णा फासा।
मणोसुहया, वइसुहया

असायावेयणिज्जस्स ण कम्मस्स सत्तविहे अणुभावे पण्णत्ते त जहा-

अमणुण्णा सद्दा, —जाव—वइदुहया २

५८९ महाणक्खत्ते सत्ततारे पण्णत्ते

अभीइयादिया ण सत्त नक्खत्ता पुव्वदारिया पण्णत्ता त जहा-

अभीइ,

सवणो,

धणिट्ठा,

सतभिसया,
पुव्वाभद्दवया,
उत्तराभद्दवया,
रेवइ

अस्सिणियादिया ण सत्त नक्खत्ता दाहिणदारिया पण्णत्ता त जहा

अस्सिणी,
भरणी,
कित्तिता,
रोहिणी,
मिगसिरे,
अद्दा,
पुणव्वसू

पुस्सादिया ण सत्त नक्खत्ता अवरदारिया पण्णत्ता त जहा

पुस्सो,
असिलेसा,
मघा,
पुव्वाफग्गुणी,
उत्तराफग्गुणी,
हत्थो,
चित्ता,

साइयाइया ण सत्त नक्खत्ता उत्तरदारिया पण्णत्ता त जहा

साइ,

विसाहा,

अणुराहा,

जेट्ठा,

मूलो,

पुव्वासाढा,

उत्तरासाढा ५

५९० जबुद्दीवे दीवे सोमणसे वक्खारपव्वए सत्त कूडा पण्णत्ता त जहा-

गाहा—सिद्धे सोमणसे तह, बोद्धव्वे मगलावइकूडे ।
देवकुरु विमल कचण, विसिट्ठकूडे य बोद्धव्वे ॥१॥

जबुद्दीवे दीवे गधमायणे वक्खारपव्वए सत्त कूडा पण्णत्ता त जहा-

गाहा—सिद्धे य गधमायण, बोद्धव्वे गधिलावइकूडे ।
उत्तरकुरू फलिहे, लोहितक्ख अणदणे चेव ॥१॥ २

५९१ बिइदियाण सत्त जाइकुलकोडिजोणीपमुहसयसहस्सा पण्णत्ता

५९२ जीवा ण सत्तट्ठाणणिव्वत्तिए पोग्गले पावकम्मत्ताए चिणिसु वा, चिणति वा, चिणिस्सति वा त जहा-
नेरइयनिव्वत्तिए —जाव— देवनिव्वत्तिए
एव चिण —जाव— निज्जरा चेव ६

५६३ सत्तपएसिया खधा अणता पण्णत्ता

सत्तपएसोगाढा पोग्गला —जाव— सत्तगुणलुक्खा पोग्गला अणता पण्णत्ता २३

अट्ठट्ठाण

५९४ अट्ठहिं ठाणेहिं सपण्णे अणगारे अरिहइ एगल्लविहारपडिम उवसपज्जित्ताण विहरित्तए त जहा-

सड्ढी पुरिसजाए, सच्चे पुरिसजाए,

मेहावी पुरिसजाए, बहुस्सुए पुरिसजाए,

सत्तिम, अप्पाहिकरणे,

धिइम, वीरियसपण्णे

५९५ अट्ठविहे जोणिसगहे पण्णत्ते त जहा-

अडया पोयया —जाव— उब्भिया उववाइया

अडगा अट्ठगइया अट्ठागइआ पण्णत्ता त जहा-

अडए अडएसु उववज्जमाणे अडएहितो वा, पोयएहितो वा —जाव— उववाइएहितो वा उववज्जेज्जा

से चेव ण से अडए अडगत्त विप्पजहमाणे अडगत्ताए वा, पोयगत्ताए वा —जाव— उववाइयत्ताए वा गच्छेज्जा

एव पोयया वि जराउया वि सेसाण गइरागइ नत्थि ४

५९६ जीवा ण अट्ठ कम्मपगडीओ चिणिसु वा, चिणति वा, चिणिस्सति वा त जहा-

नाणावरणिज्ज, दरिसणावरणिज्ज,

वेयणिज्ज, मोहणिज्ज,

आउय, नाम,
गोत्त अतराइय

नेरइया ण अट्ठ कम्मपगडीओ चिणिसु वा, एव चेव

एव निरतर —जाव— वेमाणियाण

जीवा ण अट्ठ कम्मपगडीओ उवचिणिसु वा, एव चेव

एव चिण उवचिण-बध-उदीर-वेय तह निज्जरा चेव

एए छ चउवीस-दडगा भाणियव्वा ६

५९७ अट्ठहिं ठाणेहिं माई माय कट्टु नो आलोएज्जा, नो पडिक्कमेज्जा —जाव— नो पडिवज्जेज्जा त जहा-
करिसु वा ह, करेमि वा ह,
करिस्सामि वा ह अकित्ती वा मे सिया,
अवण्णे वा मे सिया, अवणए वा मे सिया,
कित्ती वा मे परिहाइस्सइ, जसे वा मे परिहाइस्सइ

अट्ठहिं ठाणेहिं माई माय कट्टु आलोएज्जा —जाव— पडिवज्जेज्जा त जहा-
माइस्स ण अस्सि लोए गरहिए भवइ,
उववाए गरहिए भवइ,
आजाइ गरहिया भवइ,
एगमवि माई माय कट्टु नो आलोएज्जा —जाव— नो पडिवज्जेज्जा नत्थि तस्स आराहणा,
एगमवि माई माय कट्टु आलोएज्जा —जाव—

पडिक्कज्जेज्जा नत्थि तस्स आराहणा,
बहुओवि माई माय कट्टु नो आलोएज्जा —जाव—
नो पडिवज्जेज्जा नत्थि तस्स आराहणा,
बहुओवि माई माय कट्टु आलोएज्जा —जाव—
पडिवज्जेज्जा नत्थि तस्स आराहणा,
आयरिय उवज्झायस्स वा मे अइसेसे नाण-दसणे समुप्प-
ज्जेज्जा, सेत्त मम आलोएज्जा माई ण एसे

माई ण माय कट्टु से जहा नामए अयागरेइ वा, तंबागरेइ वा, तउआगरेइ वा, सीसागरेइ वा, रुप्पागरेइ वा, सुवण्णागरेइ वा, तिलागणीइ वा, तुसागणीइ वा, बुसागणीइ वा, नलागणीइ वा, दलागणीइ वा, सोंडियालिच्छाणि वा, भंडियालिच्छाणि वा, गोलियालिच्छाणि वा, कुंभारावाएइ वा, कवेल्लुवाएइ वा, इट्टा वाएइ वा, जतवाडवुल्लीइ वा, लोहारबरिसाणि वा तत्ताणि समजोइभूयाणि किंसुकफुल्लसमाणाणि उक्कासहस्साइ विणिम्मुयमाणाइ विणिम्मुयमाणाइ जालासहस्साइ पमुचमाणाइ इंगालसहस्साइ परिकिरमाणाइ अतो अतो झियायंति एवामेव मायी माय कट्टु अतो अतो झियायइ जइवि य ण अण्णे केइ वदइ त पि य ण माई जाणइ अहमेसे अभिसकिज्जामि अभिसकिज्जामि

माई ण माय कट्टु अणालोइयअपडिक्कते कालमासे काल किच्चा अण्णयरेसु देवलोगेसु देवत्ताए उववत्तारो भवति

त जहा-

नो महिड्ढिएसु —जाव— नो दूर गइएसु नो चिरट्ठिइएसु से ण तत्थ देवे भवइ, नो महिड्ढिए — जाव— नो चिर ट्ठिइए जावि य से तत्थ वाहिरब्भतरिया परिसा भवइ सावि य ण नो आढाइ, नो परियाणाइ, नो महरिहेण आसणेण उवनिमतेति, भास पि य से भासमाणस्स —जाव— चत्तारि पच देवा अवुत्ता चेव अब्भुट्ठ ति मा वहु देव ! भासउ

से ण ततो देवलोगाओ आउक्खएण भवक्खएण ठिइक्खएण अणतर चय चइत्ता इहेव माणुस्सए भवे जाइ इमाइ कुलाइ भवति त जहा-

अतकुलाणि वा, पतकुलाणि वा, तुच्छकुलाणि वा, दरिद्द-कुलाणि वा, भिक्खागकुलाणि वा, किवणकुलाणि वा, तहप्पगारेसु कुलेसु पुमत्ताए पच्चायाइ, से ण तत्थ पुमे भवइ, दुरूवे, दुवण्णे, दुग्गधे, दुरसे, दुफासे, अणिट्ठे, अकते अप्पिए, अमणुण्णे, अमणामे, हीणस्सरे, दीणस्सरे, अणिट्ठसरे अकतसरे, अप्पियसरे, अमणुण्णस्सरे अमणामस्सरे, अणाए ज्जवयणपच्चायाए, जावि य से तत्थ वाहिरब्भतरिया परिसा भवइ सावि य ण नो आढाइ, नो परियाणाइ, नो महरिहेण आसणेण उवणिमतेति, भास पि य से भासमाणस्स —जाव— चत्तारि पच जणा अवुत्ता चेव अब्भुट्ठेंति—मा बहु अज्जउत्तो ! भासउ, भासउ

माई ण माय कटट्ट आलोइयपडिक्कते कालमासे काल किच्चा अण्णयरेसु देवलोगेसु देवत्ताए उववत्तारो भवति त जहा-

महिड्ढिएसु —जाव— चिरट्ठिइएसु से ण तत्थ देवे भवइ महिड्ढीए —जाव— चिरट्ठिइए हारविराइयवच्छे कडक-तुडिय-थभियभुए अगद-कुण्डल-मउड-गडतल-कण्णपीढधारी विचित्तहत्थाभरणे विचित्तवत्थाभरणे विचित्तमालामउली कल्लाणग-पवर-वत्थ-परिहिए, कल्लाणग-पवर-गध-मल्लाणु-लेवणाधरे, भासुरबोंदी, पलबवणमालधरे, दिव्वेण वण्णेण, दिव्वेण गधेण, दिव्वेण रसेण, दिव्वेण फासेण, दिव्वेण सघाए ण, दिव्वेण सठाणेण, दिव्वाए इड्ढीए, दिव्वाए जूतीए, दिव्वाए पभाए, दिव्वाए छायाए, दिव्वाए अच्चीए, दिव्वेण तेएण दिव्वाए लेस्साए दस दिसाओ उज्जो-वेमाणा पभासेमाणा महयाहतणट्टगीयवाइयतती-तल-ताल-तुडिय-घण-मुइग-पडुप्प-वाइयरवेण दिव्वाइ भोग भोगाइ भुजमाणे विहरइ जावि य से तत्थ बाहिरब्भतरिया परिसा भवइ, सावि य ण आढाइ परियाणाइ महरिहेण आसणेण उवनिमतेति भासपि य से भासमाणस्स —जाव— चत्तारि पच देवा अवुत्ता चेव अब्भुट्ठति-बहु देवे 1 भासउ भासउ

से ण तओ देवलोगाओ आउक्खएण —जाव— चइत्ता इहेव माणुस्सए भवे जाइ इमाइ कुलाइ भवति, अड्ढाइ

—जाव— वहुजणस्स अपरिभूयाइ तहप्पगारेसु कुलेसु पुमत्ताए पच्चायाइ

से ण तत्थ पुमे भवइ सुरूवे, सुवण्णे, सुगघे, सुरसे, सुफासे, इट्ठे कते - जाव— मणामे अहीणस्सरे —जाव— मणामस्सरे आदेज्जवयणे पच्चायाए जा वि य से तत्थ वाहिरब्भतरिया परिसा भवइ सा वि य ण आढाइ —जाव—वहु अज्जउत्ते ! भासउ भासउ ५

५६८ अट्ठविहे सवरे पण्णत्ते त जहा-

सोइदियसवरे —जाव—फासिदियसवरे,

मणसवरे, वयणसवरे, कायसवरे

अट्ठविहे असवरे पण्णत्ते त जहा-

सोइदियअसवरे —जाव— कायअसवरे २

५६६ अट्ठ फासा पण्णत्ता त जहा-

कक्खडे, मउए, गरुए, लहुए,

सीए, उसीणे, निद्धे, लुक्खे

६०० अट्ठविहा लोगट्ठिई पण्णत्ता त जहा-

आगासपइट्ठिए वाए, एव जहा छट्ठाणे — जाव — जीवा कम्मपइट्ठिया

अजीवाजीवसगहीया, जीवाकम्मसगहीया

६०१ अट्ठविहा गणिसपया पण्णत्ता त जहा-

आचारसपया, सुयसुपया,

सरीरसपया, वयणसपया,

वायणासपया, मइसपया,
पओगसपया, सगहपरिण्णा णाम अट्ठमा

६०२ एगमेगेण महाणिही अट्ठचक्कवालपइट्ठाण अट्ठट्ठजोयणाइ उड्ढ उच्चत्तेण पण्णत्ते

६०३ अट्ठ समिईओ पण्णत्ताओ त जहा-
इरिया समिई,
भासा समिई,
एसणा समिई,
आयाण भड-मत्त निक्खेवणा समिई,
उच्चार-पासवण खेल-जल्ल - मल-सघाणपरिट्ठावणिया समिई
मण समिई,
वय समिई,
काय समिई

६०४ अट्ठहि ठाणेहि सपण्णे अणगारे अरिहइ आलोयणा पडिच्छित्तए त जहा-
आयारव, आहारव, ववहारव, ओवीलए
पकुव्वए, अपरिस्साइ, निज्जावए, अवायदसी
अट्ठहि ठाणेहि सपण्णे अणगारे अरिहइ अत्तदोसमालोइत्तए त जहा-
जाइसपण्णे, कुलसपण्णे,
विणयसपण्णे, नाणसपण्णे,

दसणसपण्णे, चरित्तसपण्णे,
खते, दते २

६०५ अट्ठविहे पायच्छित्ते पण्णत्ते त जहा

आलोयणारिहे, पडिक्कमणारिहे,
तदुभयारिहे, विवेगारिहे,
विउसग्गारिहे, तवारिहे,
छेयारिहे, मूलारिहे

६०६ अट्ठ मयट्ठाणा पण्णत्ता

जाइमए, कुलमए, बलमए, रूवमए,
तवमए, सुयमए, लाभमए, इस्सरियमए

६०७ अट्ठ अकिरियावाई पण्णत्ता

एगावाई, अणेगावाई,
मियवाई, निम्मियवाई,
सायवाई, समुच्छेयवाई,
नियावाई, न सति परलोगवाई

६०८ अट्ठविहे महानिमित्ते पण्णत्ते त जहा-

भोमे, उप्पाए सुविणे, अतलिक्खे,
अगे, सरे, लक्खणे, वजणे

६०९ अट्ठविहा वयणविभत्ती पण्णत्ता त जहा

गाहाओ–निद्देसे पढमा होइ, बीइया उवएसणे ।
तईया करणमि कया, चउत्थी सपदावणे ।।१।।

पचमी य अवायाणे, छट्ठी सस्सामिवादणे ।
सत्तमी सण्णिहाणत्थे, अट्ठमी आमतणी भवे ॥२॥
तत्थ पढमा विभत्ती, निद्देसेसो इमो अह वत्ति ।
वितीया पुण उवएसे, भण कुण व तिम व त वत्ति ॥३॥
तइया करणमि कया, णीय च कय च तेण व मए वा ।
हदि नमो साहए, हवइ चउत्थी पदाणमि ॥४॥
अवणे गिण्हसु तत्तो, इत्तोत्ति व पचमी अवावाणे ।
छट्ठी तस्स इमस्स व, गयस्स वा सामिसबधे ।।५॥
हवइ पुण सत्तमी तमि, म मि आहारकालभावे य ।
आमतणी भवे अट्ठमी, उ जह हे जुवाणत्ती ॥६॥

६१० अट्ठ ठाणाई छउमत्थेण सव्वभावेण न जाणइ न पासइ त जहा

धम्मत्थिकाय —जाव— गध, वाय

एयाणि चेव उप्पण्णनाण-दसणधरे अरहा जिणे केवली जाणइ पासइ त जहा-

धम्मत्थिकाय —जाव— गध, वाय २

६११ अट्ठविहे आउवेए पण्णत्ते त जहा-

कुमारभिच्चे,	कायतिगिच्छा
सालाइ,	सलहत्ता
जगोली,	भूतवेज्जा
खारतते,	रसायणे

६१२ सक्कस्स ण देविदस्स देवरण्णो अट्ठ अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ त जहा-

पउमा, सिवा, सती, अजु,
अमला, अच्छरा, नवमिया, रोहिणो

ईसाणस्स ण देविदस्स देवरण्णो अट्ठ अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ त जहा-

कण्हा, कण्हराइ, रामा, रामरक्खिया,
वसू वसुगुत्ता वसुमित्ता, वसु घरा

सक्कस्स ण देविदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो अट्ठ अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ

ईसाणस्स ण देविदस्स देवरण्णो वेसमणस्स महारण्णो अट्ठ अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ ४

अट्ठ महग्गहा पण्णत्ता त जहा

चदे, सूरे, सुक्के, बुहे,
बहस्सइ, अगारे, सणिचरे, केउ

६१३ अट्ठविहा तणवणस्सइकाइया पण्णत्ता, त जहा-

मूले, कदे, खधे, तया,
साले, पवाले, पत्ते, पुप्फे

६१४ चउरिंदिया ण जीवा असमारभमाणस्स अट्ठविहे सजमे कज्जइ त जहा-

चक्खुमाओ सोक्खाओ अववरोवित्ता भवइ,
चक्खुमएण दुक्खेण असजोएत्ता भवइ, एव —जाव—

फासमाओ सोक्खाओ अववरोवेत्ता भवइ,
फासमएण दुक्खेण असजोगेत्ता भवइ

चउरिंदिया ण जीवा समारभमाणस्स अट्ठविहे असजमे कज्जइ त जहा-

चक्खुमाओ सोक्खाओ ववरोवेत्ता भवइ,
चक्खुमएण दुक्खेण सजोगेत्ता भवइ, एव —जाव—
फासमाओ सोक्खाओ ववरोवेत्ता भवइ,
फासमएण दुक्खेण सजोगेत्ता भवइ २

६१५ अट्ठ सुहुमा पण्णत्ता त जहा-

पाणसुहुमे, पणगसुहुमे,
बीयसुहुमे, हरियसुहुमे,
पुप्फसुहुमे, अडसुहुमे,
लेणसुहुमे, सिणेहसुहुमे

६१६ भरहस्स ण रण्णो चाउरतचक्कवट्टिस्स अट्ठ पुरिसजुगाइ अणुबद्ध सिद्धाइ —जाव— सव्वदुक्खप्प-हीणाइ त जहा-

आदिच्चजसे, महाजसे, अइबले, महाबले,
तेतोवीरिए, कित्तवीरिए, दडवीरिए, जलवीरिए

६१७ पासस्स ण अरहओ पुरिसादाणियस्स अट्ठ गणा अट्ठ गणहरा होत्था त जहा-

सुभे, अज्जघोसे, वसिट्ठे, बभचारी,
सोमे, सिरिधरिए, वीरिए, भद्दजसे

६१८ अट्ठविहे दसणे पण्णत्ते त जहा-

सम्मद्दसणे, मिच्छदसणे,
सम्मामिच्छदसणे, चक्खुदसणे,
अचक्खुदसणे, ओहीदसणे,
केवलदसणे, सुविणदसणे

६१९ अट्ठविहे अद्धोवमिए पण्णत्ते त जहा-

पलिओवमे, सागरोवमे,
उस्सप्पिणी, ओसप्पिणी,
पोग्गलपरियट्टे, तीतद्धा,
अणागयद्धा, सव्वद्धा

६२० अरहओ ण अरिट्ठनेमिस्स —जाव— अट्ठमाओ पुरिसजुगाओ जुगतकरभूमी दुवासपरियाए अतमकासी

६२१ समणेण भगवया महावीरेण अट्ठ रायाणो मुडे भवेत्ता अगाराओ अणगारिय पव्वाविया त जहा

गाहा—वीरगय वीरजसे, सजय एणिज्जए य रायरिसी ।
सेय-सिवे उदायणे, तह सखे कासिवद्धणे ॥१॥

६२२ अट्ठविहे आहारे पण्णत्ते त जहा-

मणुण्णे असणे, पाणे, खाइमे, साइमे,
अमणुण्णे असणे, पाणे, खाइमे, साइमे

६२३ उप्पि सणकुमार-माहिदाण कप्पाण हेट्ठि बमलोगे कप्पे रिट्ठविमाणे पत्थडे एत्य ण अक्खाडग समचउरस-सठियाओ

अट्ठ कण्हराइओ पण्णत्ताओ त जहा-

पुरच्छिमेण दो कण्हराइओ,
दाहिणेण दो कण्हराइओ,
पच्चच्छिमेण दो कण्हराइओ,
उत्तरेण दो कण्हराइओ

पुरच्छिमा अब्भतरा कण्हराइ दाहिण बाहिर कण्हराइ पुट्ठा
दाहिणा अब्भतरा कण्हराइ पच्छच्छिमग बाहिर कण्हराइ पुट्ठा
पच्चच्छिमा अब्भतरा कण्हराइ उत्तर बाहिर कण्हराइ पुट्ठा
उत्तरा अब्भतरा कण्हराइ पुरच्छिम बाहिर कण्हराइ पुट्ठा
पुरच्छिम-पच्चच्छिमिल्लाओ बाहिराओ दो कण्हराईओ छलसाओ
उत्तर-दाहिणाओ बाहिराओ दो कण्हराईओ तसाओ
सव्वाओ वि ण अब्भतरकण्हराईओ चउरसाओ
एयासि ण अट्ठण्ह कण्हराईण अट्ठ नामधेज्जा पण्णत्ता त जहा-

कण्हराईइ वा, मेहराईइ वा,
मघाई वा, माघवई वा,
वायफलिहेइ वा, वायपलिक्खोभेइ वा,
देवपलिहेइ वा, देवपलिक्खोभेइ वा

एयासि ण अट्ठण्ह कण्हराइण अट्ठसु उवासतरेसु अट्ठ लोगतियविमाणा पण्णत्ता त जहा-

अच्ची, अच्चिमाली,
वइओअणे, पभकरे,
चदाभे, सुराभे,
सुपइट्ठाभे, अग्गिच्चाभे

एएसु ण अट्ठसु लोगतियविमाणेसु अट्ठविहा लोगतिया देवा पण्णत्ता त जहा-

गाहा—सारसयमाइच्चा, वण्ही वरुणा य गद्दतोया य।
तुसिया अव्वाबाहा, अग्गिच्चा चेव बोद्धव्वा ॥१॥

एएसि ण अट्ठण्ह लोगतियदेवाण अजहण्णमणुक्कोसेण अट्ठ सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ५

६२४ अट्ठ धम्मत्थिकायमज्झपएसा पण्णत्ता,
अट्ठ अधम्मत्थिकायमज्झपएसा पण्णत्ता,
अट्ठ आगासत्थिकायमज्झपएसा पण्णत्ता,
अट्ठ जीवमज्झपएसा पण्णत्ता ४

६२५ अरहता ण महापउमे अट्ठ रायाणो मुडा भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वावेस्सइ त जहा-

पउम, पउमगुम्म, नलिन, नलिनगुम्म,
पउमद्धय, धणुद्धय, कणगरह, भरह

६२६ कण्हस्स ण वासुदेवस्स अट्ठ अग्गमहिसीओ अरहओ ण

अरिट्ठनेमिस्स अंतिए मुंडा भवेत्ता आगाराओ अणगारियं पव्वइया सिद्धाओ —जाव— सव्वदुक्खप्पहीणाओ तं जहा-

पउमावई, गोरी,
गंधारी, लक्खणा,
सुसीमा, जंबवई,
सच्चभामा रुप्पिणी

कण्हअग्गमहिसीओ

६२७ वीरियपुव्वस्स णं अट्ठ वत्थु, अट्ठ चूलिआवत्थु पण्णत्ता

६२८ अट्ठ गइओ पण्णत्ताओ तं जहा-

निरयगइ, तिरियगइ,
मणुयगइ, देवगइ,
सिद्धगइ, गुरुगइ,
पणोल्लणगइ, पब्भारगइ

६२९ गंगा-सिंधु-रत्ता-रत्तवइदेवीणं दीवा अट्ठट्ठ जोयणाइं आयाम-विक्खंभेणं पण्णत्ता

६३० उक्कामुह-मेहमुह-विज्जुमुह विज्जुदंतदीवाणं दीवा अट्ठट्ठ जोयणसयाइं आयामविक्खंभेणं पण्णत्ता

६३१ कालोदे णं समुद्दे अट्ठ जोयणसयसहस्साइं चक्कवालविक्खंभेणं पण्णत्ते

६३२ अब्भंतरपुक्खरद्धे णं अट्ठ जोयणसयसहस्साइं चक्कवालविक्खंभेणं पण्णत्ते एवं बाहिरपुक्खरद्धे वि

६३३ एगमेगस्स ण रण्णो चाउरन्तचक्कवट्टिस्स अट्ठसोवण्णिए काकिणिरयणे छत्तले दुवालससिए अट्ठकण्णिए अहिकरणि सठिए पण्णत्ते

६३४ मागहस्स ण जोयणस्स अट्ठ धणुसहस्साइ निधत्ते पण्णत्ते

६३५ जबू ण सुदसणा अट्ठ जोयणाइ उड्ढ उच्चत्तेण बहुमज्झदेसभाए, अट्ठ जोयणाइ विक्खभेण साइरेगाइ अट्ठ जोयणाइ सव्वग्गेण पण्णत्ता कूडसामली ण अट्ठ जोयणाइ एव चेव

६३६ तिमिसगुहा ण अट्ठ जोयणाइ उड्ढ उच्चत्तेण खडप्पवायगुहा ण अट्ठ जोयणाइ उड्ढ उच्चत्तेण २

६३७ जबूमदरस्स पव्वयस्स पुरच्छिमेण सीयाए महानईए उभओ कूले अट्ठ वक्खार-पव्वया पण्णत्ता त जहा-

चित्तकूडे, पम्हकूडे, नलिणकूडे, एगसेले, तिकूडे, वेसमणकूडे, अजणे, मायजणे

जबूमदरपच्चच्छिमेण सीओयाए महाणईए उभओकूले अट्ठ वक्खारपव्वया पण्णत्ता त जहा-

अकावई, पम्हावई, आसीविसे, सुहावहे, चदपव्वए, सूरपव्वए, नागपव्वए, देवपव्वए

जबूमदरपुरच्छिमेण सीयाए महाणईए उत्तरेण अट्ठ चक्कवट्टिविजया पण्णत्ता त जहा-

कच्छे, सुकच्छे महाकच्छे कच्छगावइ आवत्ते, मगलावत्ते, पुक्खला पुक्खलावइ

जबूमदरपुरिच्छमेण सीयाए महाणईए दाहिणेण अट्ठ चक्क-वट्टिविजया पण्णत्ता तं जहा-

वच्छे — जाव — मगलावई

जबूमदरपच्चच्छिमेण सीओयए महाणईए दाहिणेण अट्ठ चक्कवट्टिविजया पण्णत्ता त जहा-

पम्हे —जाव— सलिलावई

जबूमदरपच्चच्छिमेण सीओयाए महाणईए उत्तरेण अट्ठ चक्कवट्टिविजया पण्णत्ता त जहा-

वप्पे —जाव— गधिलावई

जबूमदरपुरच्छिमेण सीयाए महाणईए उत्तरेण अट्ठ राय-हाणीओ पण्णत्ताओ त जहा-

खेमा —जाव— पुडरीगिणी

जबूमदरपुरच्छिमेण सीयाए महाणईए दाहिणेण अट्ठ राय-हाणीओ पण्णत्ताओ त जहा-

सुसीमा —जाव— रयणसचया

जबूमदरपच्चच्छिमेण सीओदाए महाणईए दाहिणेण अट्ठ रायहाणीओ पण्णत्ताओ त जहा-

आसपुरा —जाव— वीतसोगा

जबूमदरपच्चच्छिमेण सीओदाए महाणईए उत्तरेण अट्ठ रायहाणीओ पण्णत्ताओ त जहा-

विजया —जाव— अउज्झा १०

जवमदरउत्तरेण रुप्पिमि वासहरपव्वए अट्ठ कूडा पण्णत्ता त जहा-

गाहा—सिद्धे य रुप्पी रम्मग, नरकता बुद्धि रुप्पकूडे य ।
हिरण्णवए मणिकचणे य रुप्पि कूडा उ ॥१॥

जवमदरपुरच्छिमेण रुयगवरे पव्वए अट्ठ कूडा पण्णत्ता त जहा-

गाहा—रिट्ठे तवणिज्ज चण, रयत दिसासोत्थिए पलबे य ।
अजण अजणपुलए, रुयगस्स पुरच्छिमे कूडा ॥१॥

तत्थ ण अट्ठ दिसाकुमारिमहत्तरियाओ महिड्ढियाओ —जाव— पलिओवमट्ठिइयाओ परिवसति त जहा

गाहा—नदुत्तरा नदा, आणदा नदीवद्धणा ।
विजया य वेजयती, जयती अपराजिया ॥२॥

जवमदरदाहिणेण रुयगवरे पव्वए अट्ठ कूडा पण्णत्ता त जहा-

गाहा—कणए कचणे पउमे, नलिणे ससि दिवायरे चेव ।
वेसमणे वेरुलिए, रुयगस्स उ दाहिणे कूडा ॥१॥

तत्थ ण अट्ठ दिसाकुमारिमहत्तरियाओ महिड्ढियाओ —जाव— पलिओवमट्ठिइयाओ परिवसति त जहा

गाहा—समाहारा सुप्पतिण्णा,
सुप्पबुद्धा जसोहरा ।
लच्छिवइ सेसवइ,
चित्तगुत्ता वसुधरा ॥१॥

जबुमदरपच्चच्छिमेण रुयगवरे पव्वए अट्ठ कूडा पण्णत्ता त जहा-

गाहा—सोत्थिय अमोहे य, हिमव मदरे तहा।
रुअगे रुअगुत्तमे, चदे अट्ठमे य सुदसणे ॥१॥

तत्थ ण अट्ठ दिसाकुमारिमहत्तरियाओ महिड्ढियाओ —जाव— पलिओवमट्ठिइयाओ परिवसति त जहा-

गाहा—इलादेवी सुरादेवी, पुढवी पउमावइ।
एगनासा नवमिया, सीता भद्दा य अट्ठमा ॥१॥

जबुमदरउत्तररुअगवरे पव्वए अट्ठ कूडा पण्णत्ता त जहा-

गाहा—रयणे रयणुच्चए या, सव्वरयण रयणसचए चेव।
विजये य विजयते, जयते अपराजिए ॥१॥

तत्थ ण अट्ठदिसाकुमारिमहत्तरियाओ महिड्ढियाओ —जाव— पलिओवमट्ठिइयाओ परिवसति त जहा-

गाहा—अलबुसा मितकेसी पोंडरिगीतवारुणी।
आसा य सव्वगा चेव, सिरी हिरी चेव उत्तरओ ॥१॥

अट्ठ अहेलोगवत्थव्वाओ दिसाकुमारिमहत्तरियाओ पण्णत्ताओ, त जहा-

गाहा—भोगकरा भोगवई, सुभोगा भोगमालिणी।
सुवच्छा वच्छमित्ता य, वारिसेणा बलाहगा ॥१॥

अट्ठ उड्ढलोगवत्थव्वाओ दिसाकुमारिमहत्तरियाओ पण्णत्ताओ त जहा-

गाहा–मेघकरा मेघवइ, सुमेघा मेघमालिणी।
तोयधारा विचित्ता य, पुप्फमाला अणिदिया ॥१॥ १२

६४४ अट्ठ कप्पा तिरितमिस्सोववण्णगा पण्णत्ता त जहा-
सोहम्मे —जाव— सहस्सारे

एएसु ण अट्ठसु कप्पेसु अट्ठ इदा पण्णत्ता त जहा-
सक्के - जाव सहस्सारे

एएसि ण अट्ठण्ह इदाण अट्ठ परियाणिया विमाणा पण्णत्ता त जहा-

पालए,	पुप्फए,	सोमणसे,	सिरिवच्छे,
नदावत्ते,	कामकमे,	पीतिमणे	विमले ३

६४५ अट्ठट्ठमियाण भिक्खुपडिमाण चउसट्ठीए राइदिएहिं दोहि य अट्ठासीएहिं भिक्खासएहिं अहासुत्ता —जाव— अणुपालिया वि भवइ

६४६ अट्ठविहा ससारसमावण्णगा जीवा पण्णत्ता त जहा-
पढमसमयनेरइया —जाव— अपढमसयदेवा

अट्ठविहा सव्वजीवा पण्णत्ता त जहा-

नेरइया,	तिरिक्खजोणिया
तिरिक्खजोणीणिओ	मणुस्सा,
मणुस्सीओ,	देवा,
देवीओ,	सिद्धा

अहवा अट्ठविहा सव्वजीवा पण्णत्ता त जहा-

आभिणिबोहियनाणी —जाव — विभगनाणी ३

६४७ अट्ठविहे सजमे पण्णत्ते त जहा-

पढम समय-सुहुम-सपराय-सराग-सजमे,
अपढम-समय-सुहुम-सपराय-सराग-सजमे,
पढम समय बादर-सजमे,
अपढम समय-बादर-सजमे,
पढम-समय उवसत-कसाय-वीयराग-सजमे,
अपढम-समय-उवसत-कसाय-वीयराग-सजमे,
पढम समय-खीण-कसाय-वीतराग-सजमे,
अपढम-समय खीणकसाय वीतराग-सजमे

६४८ अट्ठ पुढवीओ पण्णत्ताओ त जहा-

रयणप्पभा —जाव — अहे सत्तमा इसिपब्भारा

इसीपब्भाराए ण पुढवीए बहुमज्झदेसभाए अट्ठजोयणिए खेत्ते अट्ठ जोयणाइ बाहल्लेण पण्णत्ते

इसिपब्भाराए ण पुढवीए अट्ठ नामधेज्जा पण्णत्ता- त जहा-

इसिइ वा	इसिपब्भाराइ वा,
तणूइ वा,	तणुतणूइ वा
सिद्धिइ वा,	सिद्धालएइ वा,
मुत्तीइ वा,	मुत्तालएइ वा ३

६४९ अट्ठट्ठाणेहिं सम सघडितव्व जइतव्व परक्कमितव्वं अस्सि च अट्ठे नो पमाएयव्व भवइ

असुयाण धम्माण सम्म सुणणयाए अब्भुट्ठे यव्व भवइ
सुयाण धम्माण ओगिण्हणयाए अवधारणयाए अब्भुट्ठे यव्व भवइ
पावाण कम्माण सजमेण अकरणयाए अब्भुट्ठे यव्व भवइ
पोराणाण कम्माण तवसा विगिचणयाए विसोहणयाए अब्भुट्ठे यव्व भवइ
असगहीयपरितणस्स सगिण्हणयाए अब्भुट्ठे यव्व भवइ
सेह आयारगोयरगहणयाए अब्भुट्ठे यव्व भवइ
गिलाणस्स अगिलाए वेयावच्चकरणयाए अब्भुट्ठे यव्व भवइ
साहम्मियाणमधिकरणसि उप्पण्णसि तत्थ अनिस्सितो वस्सिओ अपक्खग्गाही मज्झत्थ भावभूए कह णु साहम्मिया अप्पसद्दा अप्पझझा अप्पतुमतुमा उवसामणयाए अब्भुट्ठे यव्व भवइ

६५० महासुक्क सहस्सारेसु ण कप्पेसु विमाणा अट्ठ जोयणसयाइ उड्ढ उच्चत्तेण पण्णत्ता

६५१ अरहओ ण अरिट्ठनेमिस्स अट्ठसया वादीण सदेवमणुयासुराए परिसाए वादे अपराजियाण उक्कोसिया वादिसपया हुत्था

६५२ अट्ठसामइए केवलिसमुग्घाए पण्णत्ते त जहा-
पढमे समए दड करेइ,

बीए समए कवाड करेइ,
तइए समए मथाण करेइ,
चउत्थे समए लोग पुरेइ,
पचमे समए लोग पडिसाहरइ,
छट्ठे समए मथ पडिसाहरइ,
सत्तमे समए कवाड पडिसाहरइ,
अट्ठमे समए दड पडिसाहरइ

६५३ समणस्स ण भगवओ महावीरस्स अट्ठ सया अणुत्तरोववाइयाण गइकल्लाणाण —जाव— आगमेसिभद्दाण उक्कोसिया अणुत्तरोववाइयसपया हुत्था

६५४ अट्ठविहा वाणमतरा देवा पण्णत्ता त जहा-
पिसाया, भूया, जक्खा, रक्खसा,
किण्णरा, किंपुरिसा, महोरगा, गधव्वा

एएसि ण अट्ठण्ह वाणमतरदेवाण अट्ठ चेइयरुक्खा पण्णत्ता त जहा-

गाहाओ—कलबो अ पिसायाण, वडो जक्खाण चेइय ।
तुलसी भूयाण भवे, रक्खसाण च कडओ ॥१॥
असोओ किण्णराण च, किंपुरिसाण य चपओ ।
नागरुक्खो भुयगाण, गधव्वाण य तेंदुओ ॥२॥

६५५ इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ अट्ठजोयणसए उड्ढबाहाए सूरविमाणे चार चरइ

६५६ अट्ठ नक्खत्ता चदेण-सिद्धि पमद्द जोग जोएति त जहा
कत्तिया, रोहिणी, पुणव्वसू, महा,
चित्ता, विस्साहा, अणुराधा, जेट्ठा

६५७ जबुद्दीवस्स ण दीवस्स दारा अट्ठ जोयणाइ उड्ढ उच्चत्तेण पण्णत्ता

सव्वेसि पि दीवसमुद्दाण दारा अट्ठ जोयणाइ उड्ढ उच्चत्तेण पण्णत्ता २

६५८ पुरिसवेय'णिज्जस्स ण कम्मस्स जहण्णेण अट्ठसवच्छराइ बधठिई पण्णत्ता

जसोकित्तीनामएण कम्मस्स जहण्णेण अट्ठ मुहुत्ताइ बधठिई पण्णत्ता

उच्चगोयस्स ण कम्मस्स ण एव चेव ३

६५९ तेइदियाण अट्ठ जाइकुलकोडीजोणीपमुहसयसहस्सा पण्णत्ता

६६० जीवा ण अट्ठट्ठाणणिव्वत्तिए पोग्गले पावकम्मत्ताए चिणिसु वा, चिणति वा, चिणिस्सति वा, त जहा-

पढम-समय नेरइय-निव्वत्तिए —जाव— अपढम समय देव-'नव्वत्तिए

एव चिण उवचिण —जाव— निज्जरा चेव

अट्ठपएसिया खधा अणता पण्णत्ता

अट्ठपएसोगाढा पोग्गला अणता पण्णत्ता —जाव— अट्ठगुणलुक्खा पोग्गला अणता पण्णत्ता २९

नवट्ठाण

६६१ नवहिं ठाणेहिं समणे निग्गथे सभोइय विसभोइय करेमाणे नाइक्कमइ त जहा-

आयरिय-पडिणीय,

उवज्झाय-पडिणीय,

थेर-पडिणीय,

कुल-पडिणीय,

गण-पडिणीय,

सघ-पडिणीय,

नाण-पडिणीय,

दसण-पडिणीय,

चरित्त-पडिणीय

६६२ नव बभचेरा पण्णत्ता त जहा-

सत्यपरिण्णा —जाव— महापरिण्णा

६६३ नव बभचेरगुत्तीओ पण्णत्ताओ त जहा-

विवित्ताइ सयणासणाइ सेवित्ता भवइ-

नो इत्थिससत्ताइ नो पसुससत्ताइ, नो पडगससत्ताइ

नो इत्थीण कहं कहेत्ता भवइ,

नो इत्थीट्ठाणाइ सेवित्ता भवइ,

नो इत्थीण इदियाइ मणोहराइ मणोरमाइ आलोइत्ता
निज्झाइत्ता भवइ,
नो पणीयरसभोई,
नो पाण भोयणस्स अइमत्त आहारए भवइ,
नो पुव्वरय पुव्वकीलिय समरेत्ता भवइ,
नो सद्दाणुवाई, नो रूवाणुवाई, नो सिलोगाणुवाई,
नो सायासुक्खपडिवद्धे यावि भवइ

नव बभचेरअगुत्तीओ पण्णत्ताओ त जहा-
नो विवित्ताइ सयणासणाइ सेवित्ता भवइ
इत्थीससत्ताइ, पसुससत्ताइ, पडगससत्ताइ
इत्थीण कह कहेत्ता भवइ,
इत्थीण ठाणाइ सेवित्ता भवइ,
इत्थीण इदियाइ —जाव— निज्झाइत्ता भवइ,
पणीयरसभोई,
पाण-भोयणस्स अइमायमाहारए सया भवइ,
पुव्वरय पुव्वकीलिय सरित्ता भवइ,
सद्दाणुवाई, रूवाणुवाई, सिलोगाणुवाई,
सायासुक्खपडिवद्धे यावि भवइ २

६६४ अभिणदणाओ ण अरहाओ सुमइ अरहा नवहि सागरोवम-
कोडी-सयसहस्सेहि विइक्कतेहि समुप्पण्णे

६६५ नव सब्भावपयत्था पण्णत्ता त जहा-

जीवा, अजीवा, पुण्ण,
पावो, आसवो, सवरो,
निज्जरा, बधो, मोक्खो

६६६ नवविहा ससारसमावण्णगा जीवा पण्णत्ता त जहा-
पुढविकाइया —जाव— पचिंदियत्ति

पुढविकाइया नवगइया नवआगइया पण्णत्ता त जहा-
पुढविकाइए पुढवीकाइएसु उववज्जमाणे पुढविकाइएहिंतो वा —जाव – पचिंदिएहिंतो वा उववज्जेज्जा

से चेव ण पुढविकाइए पुढविकायत्त विप्पजहमाणे पुढविकाइयत्ताए वा जाव पचिंदियत्ताए वा गच्छेज्जा
एवमाउकाइया वि जाव— पचिंदियत्ति

नवविहा सव्वजीवा पण्णत्ता त जहा-
एगिंदिया, बेइंदिया, तेइदिया,
चउरिंदिया, नेरइया, पचेंदियतिरिक्खजोणिया,
मणुस्सा, देवा, सिद्धा

अहवा नवविहा सव्वजीवा पण्णत्ता त जहा-
पढम-समय-नेरइया —जाव—अपढम-समय देवा, सिद्धा

नवविहा सव्वजीवोगाहणा पण्णत्ता त जहा-
पुढविकाइओगाहणा —जाव पचिंदियओगाहणा
जीवाण नवहिं ठाणेहिं ससार वत्तिसु वा वत्तति वा, वत्तिस्सति वा, त जहा-

पुढविकाइत्ताए —जाव— पंचिदियत्ताए ६

६६७ नवहिं ठाणेहिं रोगुप्पत्ती सिया त जहा-

अच्चासणाए,

अहियासणाए,

अइणिद्दाए

अइजागरिएण,

उच्चारनिरोहेण,

पासवणनिरोहेण,

अद्धाणगमणेण,

भोयणपडिकूलयाए,

इदियत्थविकोवणयाए

६६८ नवविहे दरिसणावरणिज्जे कम्मे पण्णत्ते त जहा

निद्दा,

निद्दानिद्दा,

पयला,

पयलापयला,

थीणगिद्धी,

चक्खुदसणावरणे,

अचक्खुदसणावरणे,

ओहिदसणावरणे,

केवलदसणावरणे

६६९ अभीई ण नक्खत्ते साइरेगे नव मुहुत्ते चंदेण सद्धि जोग जोएइ,
अभीइ आइआ ण नव नक्खत्ता ण चवस्स उत्तरेण जोग जोएंति त जहा-

अभीई —जाव— भरणी

६७० इमीसे ण रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ नवजोअणसयाइ उद्ध अबाहाए उवरिल्ले ताराख्वे चार चरइ

६७१ जबूद्दीवे ण दीवे नवजोयणिआ मच्छा पविसिसु वा, पविसंति वा, पविसिस्सति वा

६७२ जबूद्दीवे दीवे भारहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए नवबलदेव-वासुदेवपियरो हुत्था त जहा-

गाहा–पयावइ य बभे य, रोहे सोमे सिवेइया ।
महासीहे अग्गिसीहे, दसरहे नवमे य वसुदेवे ॥१॥

इत्तो आढत्त जहा समवाए निरवसेस —जाव—एगा से गब्भवसही सिज्झिस्सति आगमेस्सेण

जबूद्दीवे दीवे भारहे वासे आगमेस्साए उस्सप्पिणीए नव बलदेव-वासुदेव-पियरो भविस्सति

नव बलदेव-मायरो भविस्सति

एव जहा समवाए निरवसेस —जाव—महाभीमसेण सुग्गीवे य अपच्छिमे

गाहा—एए खलु पडिसत्तू कित्तीपुरिसाण वासुदेवाण ।
सव्वे चि चक्कजोही, हम्मेहती सचक्केहि ॥१॥ ३

६७३ एगमेगे ण महानिही ण नव नव जोयणाइ विक्खंभेण पण्णत्ते

एगमेगस्स ण रण्णो चाउरतचक्कवट्टिस्स नव महानिहिओ पण्णत्ताओ त जहा-

गाहाओ—नेसप्पे पडुयए,
पिंगलए सव्वरयण महापउमे ।
काले य महाकाले,
माणवग महानिही सखे ॥१॥
नेसप्पमि निवेसा,
गामागरनगरपट्टणाण च ।
दोणमुहमडवाण,
खधाराण गिहाण च ॥२॥
ग.णियस्स य बीयाण,
माणुम्माणस्स ज पमाण च ।
धण्णस्स य बीयाण,
उप्पत्ती पडुए भणिया ॥३॥
सव्वा आभरणविही,
पुरिसाण जा य होई महिलाण ।
आसाण य हत्थीण य,
पिंगलगनिहिमि सा भणिया ॥४॥

गाहा—एए खलु पडिसत्तू, कित्तीपुरिसाण वासुदेवाण ।
सव्वे वि चक्कजोही, हम्मेहंती सचक्केहिं ॥१॥ ३

६७३ एगमेगे णं महानिही णं नव नव जोयणाइं विक्खंभेणं पण्णत्ते
एगमेगस्स णं रण्णो चाउरंतचक्कवट्टिस्स नव महानिहिओ पण्णत्ताओ तं जहा-

गाहाओ—नेसप्पे पंडुयए,
पिंगलए सव्वरयण महापउमे ।
काले य महाकाले,
माणवग महानिही संखे ॥१॥
नेसप्पंमि निवेसा,
गामागरनगरपट्टणाणं च ।
दोणमुहमडंवाणं,
खंधाराणं गिहाणं च ॥२॥
गणियस्स य बीयाणं,
माणुम्माणस्स जं पमाणं च ।
धण्णस्स य बीयाणं,
उप्पत्ती पंडुए भणिया ॥३॥
सव्वा आभरणविही,
पुरिसाणं जा य होई महिलाणं ।
आसाण य हत्थीण य,
पिंगलगनिहिंमि सा भणिया ॥४॥

सखे महानिहिम्मी ,
तुडियगाण च सव्वेसि ॥१०॥
चयकट्ठपइट्ठाणा ,
अट्ठुस्सेहा य नव य विक्खभे ।
बारसदीहा मजूसमठियया ,
जण्हवीई मुहे ॥११॥
वेरुलियमणिकवाडा ,
कणगमया विविधरयणपडिपुण्णा ।
ससि-सूर-चक्क-लक्खण ,
अणुसम-जुगबाहुवतणा य ॥१२॥
पलिओवमट्ठितीया ,
निहिसरिणामा य तेसु खलु देवा ।
जेसि ते आवासा ,
अक्किज्जा आहिवच्चा वा ॥१३॥
एए ते नवनिहिओ ,
पभूत धण-रयण-सचय-समिद्धा ।
जे वसमुवगच्छती ,
सव्वेसि चक्कवट्टी ण ॥१४॥ २

६७४ नव विगईओ पण्णत्ताओ त जहा-

खीर, दहि, नवणीय,
सप्पि, तेल, गुलो,
महु, मज्ज, मस

६७५ नव सोयपरिस्सवा बोंदी पण्णत्ता त जहा-

दो सोत्ता, दो नेत्ता, दो घाणा
मुह, पोसे, पाऊ

६७६ नवविहे पुण्णे पण्णत्ते त जहा-

अण्णपुण्णे, पाणपुण्णे, वत्थपुण्णे,
लेणपुण्णे, सयणपुण्णे, मणपुण्णे
वइपुण्णे, कायपुण्णे, नमोक्कारपुण्णे

६७७ नव पावस्सायतणा पण्णत्ता त जहा-

पाणाइवाए —जाव— लोभे

६७८ नवविहे पावसुयपसगे पण्णत्ते त जहा-

गाहा—उप्पाए निमित्ते मते, आतिक्खए तिगिच्छए ।
कला आवरणे अण्णाणे, मिच्छापावतणेइ य ॥१॥

६७९ नव नेउणिया वत्थु पण्णत्ता त जहा-

सखाणे, निमित्ते, काइए,
पोराणे, पारिहत्थिए, परपडिए,
वाइए, भूईकम्मे, तिगिच्छए

६८० समणस्स ण भगवओ महावीरस्स नव गणा हुत्था त जहा-

गोदासे गणे,
उत्तरबलिस्सहगणे,
उद्देहगणे,

चारणगणे,
उद्दवाइयगणे
विस्सवाइयगणे,
कामड्डियगणे,
माणवगणे,
कोडयगणे

६८१ समणेण भगवया महावीरेण समणाण निग्गथाण नवको डिपरिसुद्धे भिक्खे पण्णत्ते त जहा-

न हणइ, न हणावइ, हणत नाणुजाणइ,
न पयइ, न पयावेइ, पचत नाणुजाणइ,
न किणइ न किणावेइ, किणत नाणुजाणइ

६८२ ईसाणस्स ण देविदस्स देवरण्णो वरुणस्स महारण्णो नव अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ

६८३ ईसाणस्स ण देविदस्स देवरण्णो अग्गमहिसीण नव पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता

ईसाणे कप्पे उक्कोसेण देवीण नव पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता २

६८४ नव देवनिकाया पण्णत्ता त जहा-

गाहा—सारस्सयमाइच्चा ,
वण्ही वरुणा य गद्दतोया य ।
तुसिया अव्वाबाहा ,
अग्गिच्चा चेव रिट्ठा य ।।१।।

अव्वाबाहाण देवाण नव देवा नव देवसया पण्णत्ता

एव अग्गिच्चा वि एव रिट्ठा वि

६८५ नव गेवेज्ज-विमाण-पत्थडा पण्णत्ता, त जहा-

हेट्ठिम-हेट्ठिम-गेविज्ज-विमाण-पत्थडे,
हेट्ठिम-मज्झिम-गेविज्ज-विमाण-पत्थडे
हेट्ठिम-उवरिम-गेविज्ज-विमाण-पत्थडे,
मज्झिम-हेट्ठिम-गेविज्ज-विमाण-पत्थडे,
मज्झिम मज्झिम-गेविज्ज-विमाण-पत्थडे,
मज्झिम-उवरिम-गेविज्ज-विमाण-पत्थडे,
उवरिम हेट्ठिम-गेविज्ज-विमाण-पत्थडे,
उवरिम मज्झिम-गेविज्ज-विमाण-पत्थडे,
उवरिम-उवरिम-गेविज्ज-विमाण-पत्थडे,

एएसि ण नवण्ह गेविज्ज-विमाण-पत्थडाण नव नामधिज्जा पण्णत्ता त जहा-

गहा–भद्दे सुभद्दे सुजाते, सोमणसे पियदरिसणे ।
सुदसणे अमोहे य, सुप्पबुद्धे जसोधरे ॥१॥

६८६ नवविहे आउपरिणामे पण्णत्ते त जहा–

गइपरिणामे,
गइबधणपरिणामे,
ठिइपरिणामे,
ठिइबधणपरिणामे,
उड्ढगारवपरिणामे,

अहेगारवपरिणामे,
तिरियगारवपरिणामे,
दीहगारवपरिणामे,
रहस्सगारवपरिणामे

६८७ नवनवमिया ण भिक्खुपडिमा एगासिए राइदिएहि चर्गाहे य पचुत्तरेहि भिक्खासएहि अहासुत्ता —जाव— आराहिया यावि भवइ

६८८ नवविहे पायच्छित्ते पण्णत्ते त जहा-
आलोयणारिहे —जाव— मूलारिहे, अणवठप्पारिहे

६८९ जबूमदरदाहिणेण भरहे दीहवेयड्ढे नव कूडा पण्णत्ता त जहा-
गाहा—सिद्धे भरहे खडग,
माणी वेयड्ढ पुण्ण तिमिसगुहा ।
भरहे वेसमणे या,
भरहे कूडाण नामाइं ॥१॥

जबूमदरदाहिणेण निसभे वासहरपव्वए नव कूडा पण्णत्ता त जहा-
गाहा—सिद्धे निसहे हरिवास,
विदेह हरि धिहि अ सीतोदा ।
अवरविदेहे रुयगे,
निसभे कूडाण नामाणी ॥१॥

जबूमदरपव्वए णदणवणे नव कूडा पण्णत्ता त जहा-

गाहा—नदणे मदरे चेव, निसहे हेमवए रयय रुयए य ।
सागरचित्ते वइरे बलकूडे चेव बोद्धव्वे ॥१॥

जबूमालवतवक्खारपव्वए नव कूडा पण्णत्ता त जहा-

गाहा—सिद्धे य मालवते ,
उत्तरकुरु कच्छ सागरे रयए ।
सीता तह पुण्णणामे ,
हरिस्सहकूडे य बोद्धव्वे ॥१॥

जबूमदरपव्वय कच्छे दीहवेयड्ढे नव कूडा पण्णत्ता त जहा-

गाहा—सिद्धे कच्छे खडग ,
माणी वेयड्ढ पुण तिमिसगुहा ।
कच्छे वेसमणे या ,
कच्छे कूडाण णामाइ ॥१॥

जबू सूकच्छे दीहवेयड्ढे नव कूडा पण्णत्ता त जहा-

सिद्धे सुकच्छे खडग ,
माणी वेयड्ढ पुण तिमिसगुहा ।
सुकच्छे वेसमणे ,
सुकच्छि कूडाण नामाइ ॥१॥

एव —जाव— पोक्खलावतिमि दीहवेयड्ढे

एव वच्छे दीहवेयड्ढे

एव —जाव— मगलावइमि दीहवेयड्ढे

अहेगारवपरिणामे,
तिरियगारवपरिणामे,
दीहगारवपरिणामे,
रहस्सगारवपरिणामे

६८७ नवनवमिया ण भिक्खुपडिमा एगासिए राइदिएहि चउहि य पचुत्तरेहि भिक्खासएहि अहासुत्ता — जाव — आराहिया यावि भवइ

६८८ नवविहे पायच्छित्ते पण्णत्ते त जहा-
आलोयणारिहे —जाव— मूलारिहे, अणवठप्पारिहे

६८९ जबूमदरदाहिणेण भरहे दीहवेयड्ढे नव कूडा पण्णत्ता त जहा-

गाहा—सिद्धे भरहे खडग,
माणी वेयड्ढ पुण्ण तिमिसगुहा।
भरहे वेसमणे या,
भरहे कूडाण नामाइं ॥१॥

जबूमदरदाहिणेण निसभे वासहरपव्वए नव कूडा पण्णत्ता त जहा-

गाहा—सिद्धे निसहे हरिवास,
विदेह हरि धिहि अ सीतोदा।
अवरविदेहे रुयगे,
निसभे कूडाण नामाणी ॥१॥

जबूमदरपव्वए णदणवणे नव कूडा पण्णत्ता त जहा-

गाहा—नदणे मदरे चेव, निसहे हेमवए रयय रुयए य ।
सागरचित्ते वइरे बलकूडे चेव बोद्धव्वे ॥१॥

जबूमालवतवक्खारपव्वए नव कूडा पण्णत्ता त जहा-

गाहा—सिद्धे य मालवते,
उत्तरकुरु कच्छ सागरे रयए ।
सीता तह पुण्णणामे,
हरिस्सहकूडे य बोद्धव्वे ॥१॥

जबूमदरपव्वय कच्छे दीहवेयड्ढे नव कूडा पण्णत्ता त जहा-

गाहा—सिद्धे कच्छे खडग,
माणी वेयड्ढ पुण तिमिसगुहा ।
कच्छे वेसमणे या,
कच्छे कूडाण णामाइ ॥१॥

जबू सुकच्छे दीहवेयड्ढे नव कूडा पण्णत्ता त जहा-

सिद्धे सुकच्छे खडग,
माणी वेयड्ढ पुण तिमिसगुहा ।
सुकच्छे वेसमणे,
सुकच्छि कूडाण नामाइ ॥१॥

एव —जाव— पोक्खलावतिमि दीहवेयड्ढे

एव वच्छे दीहवेयड्ढे

एव —जाव— मगलावइमि दीहवेयड्ढे

जवू विज्जुप्पभे वक्खारपव्वए नव कूडा पण्णत्ता त जहा
गाहा—सिद्धे अ विज्जुणामे, ,
देवकूरा पम्ह कणग सोवत्थी ।
सीतोदाए सजले ,
हरिकूडे चेव बोद्धव्वे ॥१॥

जवू पम्हे दीहवेयड्ढे नव कूडा पण्णत्ता त जहा-
गाहा—सिद्धे पम्हे खडे माणी वेयड्ढे
एव चेव —जाव— सलिलावइमि दीहवेयड्ढे

एव वप्पे दीहवेयड्ढे एव —जाव— गधिलावइमि दीहवेयड्ढे
नव कूडा पण्णत्ता त जहा-
गाहा—सिद्धे गधिल खडग ,
माणी वेयड्ढ पुण तिमिसगुहा ।
गधिलावई वेसमण ,
कूडाण होंति नामाइ ॥१॥

एव सव्वेसु दीहवेयड्ढेसु दो कूडा सरिसणामगा सेसा ते चेव
जवूमदरेण उत्तरेण नीलवते वासहरपव्वए नव कूडा
पण्णत्ता त जहा-
गाहा—सिद्धे नीलवत विदेह ,
सीता कित्ती य नारिकता य ।
अवरविदेहे ,
रम्मगकूडे उवदसणे चेव ॥१॥

जबूमदरउत्तरेण एरवए दीहवेयड्ढे नव कूडा पण्णत्ता.
त जहा-

गाहा–सिद्धे रयणे खडग ,
माणी वेयड्ढे पुण तिमिसगुहा ।
एरवए वेसमणे ,
एरवए कूडणामाइ ॥१॥ १०

६९० पासे ण अरहा पुरिसादाणिए वज्जरिसहणारायसघयणे समचउरससठाणसठिए नव रयणीओ उड्ढ उच्चत्तेण हुत्था

६९१ समणस्स ण भगवओ महावीरस्स तित्थसि नवहि जीवेहि तित्थगरणामगोत्ते कम्मे निव्वत्तिए त जहा-

सेणिएण, सुपासेण, उदाइणा,
पोट्टिलेण अणगारेण, दढाउणा, सखेण,
सतएण, सुलसाए, साविआए रेवतीए

६९२ एस ण अज्जो !

कण्हे वासुदेवे,
रामे बलदेवे,
उदये पेढालपुत्ते,
पुट्टिले -
सतए गाहावइ,
दारुए नियठे,
सच्चइ नियठीपुत्ते,
सावियवुद्धे अवडे परिव्वायए,

अज्जा वि णं सुपासा पासावच्चिज्जा

आगमेस्साए उस्सप्पिणीए चाउज्जामं धम्मं पण्णवतित्ता सिज्झिहिंति —जाव— अंतं काहिंति

६९३ एस णं अज्जो ! सेणिए राया भिंभिसारे कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए सीमंतए नरए चउरासीइ-वास सहस्स-ट्ठिइयंसि निरयंसि नेरइयत्ताए उववज्जिहिंति

से णं तत्थ नेरइए भविस्सइ काले कालोभासे —जाव— परमकिण्हे वण्णेणं से णं तत्थ वेयणं वेदिहिई उज्जलं —जाव— दुरहियासं

से णं तओ नरयाओ उव्वट्टेत्ता आगमेस्साए उस्सप्पिणीए इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे वेयड्ढगिरिपायमूले पुंडेसु जणवएसु सतदुवारे नयरे संमुइस्स कुलकरस्स भद्दाए भारियाए कुच्छिसि पुमत्ताए पच्चायाहिइ

तए णं सा भद्दा भारिया नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं अद्धट्ठमाण य राइंदियाणं वितिक्कंताणं सुकुमालपाणिपायं अहीणपडिपुण्णपंचिंदियसरीरं लक्खणवंजण —जाव— सुरूवं दारगं पयाहिई

जं रयणिं च णं से दारए पयाहिई तं रयणिं च णं सतदुवारे नगरे सब्भितरबाहिरए भारग्गसो य कुंभग्गसो य पउमवासे य रयणवासे य वासे वासिहिइ

तए ण तस्स दारयस्स अम्मापियरो एक्कारसमे दिवसे विइक्कते —जाव— बारसाहे दिवसे अयमेयारूव गोण्ण गुण-णिप्फण्ण नामधिज्ज काहिति

जम्हा ण अम्ह इमसि दारगसि जायसि समाणसि सयदुवारे नगरे सब्भितरबाहिरए भारग्गसो य, कुभग्गसो य, पउमवासे य, रयणवासे य वासे वुट्ठे, त होऊ ण अम्ह इमस्स दारगस्स नामधिज्ज महापउमे

तए ण तस्स दारगस्स अम्मापियरो नामधिज्ज काहिति-महापउमेत्ति

तए ण महापउम दारग अम्मापियरो साइरेग अट्ठवा-सजायग जाणित्ता महया रायाभिसेएण अभिसिचिहिति

से ण तत्थ राया भविस्सइ महता हिमवतमहतमलय-मदरराय वण्णओ —जाव— रज्ज पसाहेमाणे विहरिस्सइ

तए ण तस्स महापउमस्स रण्णो अण्णया कयाइ दो देवा महिड्ढिया —जाव— महेसक्खा सेणाकम्म काहिति त जहा-पुण्णभद्दए, माणिभद्दए

तए ण सतदुवारे नगरे बहवे राइसर-तलवर-माडबिय-कोडुबिय-इब्भसेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाहप्पभियओ अण्णमण्ण सद्दाविहिति एव वइस्सति

जम्हा ण देवाणुप्पिया ! अम्ह महापउमस्स रण्णो दो देवा महिड्ढिया —जाव— महेसक्खा सेणाकम्म करेंति त जहा-पुण्णभद्दे य माणिभद्दे य

त होऊ ण अम्ह देवाणुप्पिया ! महापउमस्स रण्णो दोच्चे वि नामधेज्जे देवसेणे

तए ण तस्स महापउमस्स दोच्चे वि नामधेज्जे भविस्सइ

तए ण तस्स देवसेणस्स रण्णो अण्णया कयाइ सेयसखतल-विमलसण्णिकासे चउद्दते हत्थिरयणे समुप्पज्जिहिइ

तए ण से देवसेणे राया त सेय सखतलविमलसण्णिकास चउद्दत हत्थिरयण दुरूढे समाणे सतदुवार नगर मज्झ मज्झेण अभिक्खण अभिक्खण अइज्जाहि य निज्जाहि य

तए ण सतदुवारे नगरे वहवे राइसरतलवर —जाव— अण्णमण्ण सद्दाविति एव वइस्सति-जम्हा ण देवाणुप्पिया ! अम्ह देवसेणस्स रण्णो सेए सखतलविमलसण्णिकासे चउद्दते हत्थिरयणे त होऊ ण अम्ह देवाणुप्पिया ! देवसेणस्स रण्णो तच्चे वि नामधेज्जे विमलवाहणे

तए ण तस्स देवसेणस्स रण्णो तच्चे वि नामधेज्जे भविस्सइ विमलवाहणे

तए ण से विमलवाहणे राया तीस वासाइ अगारवासमज्झे वसित्ता अम्मापिईहि देवत्तगएहि गुरुमहत्तरएहि अब्भणुण्णाए समाणे उदुम्मि सरए सबुद्धे अणुत्तरे मोक्खमग्गे पुणरवि लोगतिएहि जीयकप्पितेहि देवेहि ताहि इट्ठाहि कताहि पियाहि मणुण्णाहि मणामाहि उरालाहि कल्लाणाहि धण्णाहि सिवाहि मगल्लाहि सस्सिरीआहि वग्गूहि अभिण-

दिज्जमाणे अभिथुवमाणे य बहिया सुभूमिभागे उज्जाणे एग देवदूसमादाय मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वयाहिइ तस्स ण भगवतस्स साइरेगाइ दुवालस वासाइ निच्च वोसट्ठकाए चियत्तदेहे जे केइ उवसग्गा उप्पज्जिस्संति त जहा-

दिव्वा वा, माणुसा वा, तिरिक्खजोणिया वा ते उप्पण्णे सम्म सहिस्सइ, खमिस्सइ, तितिक्खिस्सइ, अहियासिस्सइ

तए ण से भगव ईरियासमिए भासासमिए —जाव— गुत्तबभयारि अममे अकिचणे छिण्णगथे निरुवलेवे कसपाइ व मुक्कतोए जहा भावणाए —जाव— सुहुयहुयासणे इव तेयसा जलते

गाहाओ–कसे सखे जीवे, गगणे वाए य सारए सलिले ।
पुक्खरपत्ते कुमे, विहगे खग्गे य भारडे ॥१॥
कुजर वसहे सीहे, नगराया चेव सागरमखोभे ।
चदे सूरे कणगे, वसुधरा चेव सुहुयहुए ॥२॥

नत्थि ण तस्स भगवतस्स कत्थइ पडिबधे भवइ

से य पडिबधे चउव्विहे पण्णत्ते त जहा-

अडएइ वा, पोयएइ वा, उग्गहिएइ वा, पग्गहिएइ वा

ज ण ज ण दिस इच्छइ त ण त ण दिस अपडिबद्धे सुचिभूए लहुभूए अणप्पगथे सजमेण अप्पाण भावेमाणे विहरिस्सइ तस्स ण भगवतस्स अणुत्तरेण नाणेण, अणुत्तरेण दसणेण, अणुत्तरेण चरित्तएण एव आलएण विहारेण अज्जवे मद्दवे

लाघवे खंती मुत्ती गुत्ती सच्च-संजम-तव-गुणसुचरियसोव चियफलपरिनिव्वाणमग्गेणं अप्पाणं भावेमाणस्स झाणंतरियाए वट्टमाणस्स अणंते अणुत्तरे निव्वाघाए —जाव— केवलवरनाणदंसणे समुप्पज्जिहिंति तए णं से भगवं अरहे जिणे भविस्सइ केवली सव्वण्णु सव्वदरिसी सदेवमणुआसुरस्स लोगस्स परियागं जाणइ पासइ सव्वलोए सव्वजीवाणं आगइं गइं ठिइं चवणं उववायं तक्कं मणो माणसियं भुत्तं कडं परिसेवियं आवीकम्मं रहोकम्मं अरहा अरहस्स भागी तं तं कालं मणं सवय-सकाइए जोगे वट्टमाणाणं सव्वलोए सव्वजीवाणं सव्वभावे जाणमाणे पासमाणे विरहइ

तए णं से भगवंतेणं अणुत्तरेणं केवलवरनाण-दंसणेणं सदेवमणुआसुरलोगं अभिसमिच्चा समणाणं निग्गंथाणं जे केइ उवसग्गा उप्पज्जंति तं जहा

दिव्वा वा, माणुसा वा, तिरिक्खजोणिया वा ते उप्पण्णे सम्मं सहिस्सइ, खमिस्सइ, तितिक्खिस्सइ, अहियासिस्सइ तए णं से भगवं अणगारे भविस्सइ ईरियासमिए भासासमिए एवं जहा- वद्धमाणसामी तं चेव निरवसेसं —जाव— अव्वावारविउसजोगजुत्ते

तस्स णं भगवंतस्स एएणं विहारेणं विहरमाणस्स दुवालसहिं संवच्छरेहिं विइक्कंतेहिं तेरसहि य पक्खेहिं तेरसमस्स णं संवच्छरस्स अंतरा वट्टमाणस्स अणुत्तरेणं नाणेणं जहा

भावणाए केवलवरनाणदसणे समुप्पज्जिहिति जिणे भविस्सइ केवली सव्वण्णू सव्वदरिसी सणेरइए —जाव— पच महव्वयाइ समावणाइ छच्च जीवनिकायधम्म देसेमाणे विहरिस्सइ

से जहा णामए अज्जो ! मए समणाण निग्गथाण एगे आरभठाणे पण्णत्ते

एवामेव महापउमे वि अरहा समणाण निग्गथाण एग आरभठाण पण्णवेहिइ

से जहा णामए अज्जो ! मए समणाण दुविहे बधणे पण्णत्ते त जहा-

पेज्जबधणे, दोसबधणे

एवामेव महापउमे वि अरहा समणाण निग्गथाण दुविह बधण पण्णवेहिइ त जहा-

पेज्जबधण च, दोसबधण च

से जहा णामए अज्जो ! मए समणाण निग्गथाण तओ दडा पण्णत्ता त जहा-

मणदडे —जाव— कायदडे

एवामेव महापउमे वि अरहा समणाण निग्गथाण तओ दडे पण्णवेहिइ त जहा मणदड —जाव— कायदड

से जहा णामए एएग अभिलावेण चत्तारि कसाया पण्णत्ता त जहा-

कोहकसाए —जाव— लोहकसाए
पंच कामगुणे पण्णत्ते तं जहा-
सद्दे —जाव— फासे
छज्जीवनिकाया पण्णत्ता तं जहा-
पुढविकाइया —जाव— तसकाइया
एवामेव पुढविकाइया —जाव— तसकाइया
से जहा णामए एएणं अभिलावेणं सत्त भयट्ठाणा पण्णत्ता तं जहा-
इह लोगभए —जाव— असिलोगभए
एवामेव महापउमे वि अरहा समणाणं सत्त भयट्ठाणा पण्णवेहिइ
एवं अट्ठ मयट्ठाणे
नव बंभचेरगुत्तीओ
दसविहे समणधम्मे
एवं —जाव— तेत्तीसमासातणाउत्ति

से जहा णामए अज्जो ! मए समणाणं निग्गंथाणं नग्गभावे, मुंडभावे, अण्हाणए, अदंतवणे, अच्छत्तए, अणुवाहणए, भूमिसेज्जा, फलगसेज्जा, कट्ठसेज्जा, केसलोए, बंभचेरवासे, परघरपवेसे —जाव— लद्धावलद्धवित्तीओ पण्णत्ताओ एवामेव महापउमे वि अरहा समणाणं निग्गंथाणं नग्गभावं —जाव— लद्धावलद्धवित्ती पण्णवेहिइत्ति

से जहा णामए अज्जो ! मए समणाण निग्गथाण आधा-कम्मिएइ वा, उद्देसिएइ वा, मीसज्जाएइ वा, अज्झोयरेइ वा, पूइए कोए, पामिच्चे, अच्छेज्जे, अणिसट्ठे, अभिहडे वा कतारभत्तेइ वा दुब्भिक्खभत्तेइ वा, गिलाणभत्तेइ वा वद्दलियाभत्तेइ वा, पाहुणभत्तेइ वा, मूलभोयणेइ वा, कदभोयणेइ वा फलभोयणेइ वा बीयभोयणेइ वा, हरिय-भोयणेइ वा पडिसिद्धे

एवामेव महापउमे वि अरहा समणाण आधाकम्मिय वा —जाव— हरियभोयण वा पडिसेहिस्सइ

से जहा णामए अज्जो ! मए समणाण पचमहव्वइए सपडि-क्कमणे अचेलए धम्मे पण्णत्ते

एवामेव महापउमे वि अरहा समणाण निग्गथाण पचमहव्वइय —जाव— अचेलग धम्म पण्णविहिइ

से जहा णामए अज्जो ! मए पचाणुव्वइए सत्तसिक्खावइए दुवालसविहे सावगधम्मे पण्णत्ते,

एवामेव महापउमे वि अरहा पचाणुव्वइय —जाव— सावगधम्म पण्णवेस्सइ

से जहा णामए अज्जो ! मए समणाण निग्गथाण सेज्जायर-पिंडेइ वा, रायपिंडेइ वा पडिसिद्धे

एवामेव महापउमे वि अरहा समणाण निग्गथाण सेज्जायरपिंडे इ वा, रायपिंडेइ वा पडिसेहिस्सइ

से जहा णामए अज्जो ! मम नव गणा, एगारस गणधरा

एवामेव महापउमस्स वि अरिहओ नव गणा, एगारस गणधरा भविस्सति

से जहा णामए अज्जो ! अहं तीसं वासाइं अगारवासमज्झे वसित्ता मुंडे भवित्ता —जाव— पव्वइए, दुवालस संवच्छराइं तेरस पक्खा छउमत्थपरियागं पाउणित्ता, तेरसहिं पक्खेहिं ऊणगाइं तीसं वासाइं केवलिपरियागं पाउणित्ता, बायालीसं वासाइं सामण्णपरियागं पाउणित्ता, बावत्तरि वासाइं सव्वाउयं पालइत्ता, सिज्झिस्सं —जाव— सव्व दुक्खाणमंतं करेस्सं

एवामेव महापउमे वि अरहा तीसं वासाइं अगारवासमज्झे वसित्ता —जाव— पव्वहिइ

दुवालस संवच्छराइं —जाव— बावत्तरिवासाइं सव्वाउयं पालइत्ता सिज्झिहिइ —जाव— सव्वदुक्खाणमंतं काहिइ

गाहा—जं सीलसमायारो, अरहा तित्थकरो महावीरो ।
तस्सीलसमायारो, होइ उ अरहा महापउमे ॥१॥

इइ महापउमचरियं

६९४ नव नक्खत्ता चंदस्स पच्छंभागा पण्णत्ता तं जहा-

गाहा—अभिई सवणो धणिट्ठा,
रेवइ अस्सिणि मग्गसिर पूसो ।
हत्थो चित्ता य तहा,
पच्छंभागा नव हवंति ॥१॥

६९५ आण-पाणय-आरणच्चुएसु कप्पेसु विमाणाइं नव जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेण पण्णत्ते

६९६ विमलवाहणे ण कुलकरे नव धणुसयाइं उड्ढं उच्चत्तेण हुत्था

६९७ उसभेण अरहा कोसलिए ण इमीसे ओसप्पिणीए नवहिं सागरोवमकोडाकोडीहिं विइक्कताहिं तित्थे पवत्तिए

६९८ घणदत-लट्ठदत-गूढदत-सुद्धदतदीवाण दीवा नव नव जोयणसयाइं आयाम-विक्खभेण पण्णत्ता

६९९ सुक्कस्स ण महागहस्स नव वीहीओ पण्णत्ताओ त जहा-

हयवीही, गयवीही, नागवीही,
वसहवीही, गोवीही, उरगवीही,
अयवीही, मियवीही, वेसाणरवीही

७०० नवविहे नोकसायवेयणिज्जे कम्मे पण्णत्ते त जहा-

इत्थिवेए, पुरिसवेए, नपुसगवेए,
हासे, रइ, अरइ,
भये, सोगे, दुगुछे

७०१ चउरिंदियाण नव जाइकुलकोडीजोणिपमुहसयसहस्सा पण्णत्ता

भुयगपरिसप्प-थलयरपचिदियतिरिक्खजोणियाण नव जाइ कुलकोडीजोणिपमुहसयसहस्सा पण्णत्ता २

७०२ जीवा णं नवट्ठाणनिव्वत्तिए पोग्गले पावकम्मत्ताए चिणिंसु वा, चिणंति वा, चिणिस्संति वा, पुढविकाइयनिव्वत्तिए —जाव— पंचिंदियनिव्वत्तिए

एवं चिण-उवचिण —जाव— निज्जरा चेव ६

७०३ नव पएसिया खंधा अणंता पण्णत्ता

नवपएसोगाढा पोग्गला अणंता पण्णत्ता —जाव—

नवगुणलुक्खा पोग्गला अणंता पण्णत्ता २३

दसट्ठाण

७०४ दसविहा लोगट्ठिई पण्णत्ता त जहा-

जण्ण जीवा उद्दाइत्ता तत्थेव तत्थेव भुज्जो भुज्जो पच्चायति एव एगा लोगट्ठिई पण्णत्ता,

जण्ण जीवाण सया समिय पावे कम्मे कज्जइ एव पेगा लोगट्ठिई पण्णत्ता,

जण्ण जीवा सया समिय मोहणिज्जे पावे कम्मे कज्जइ एव पेगा लोगट्ठिई पण्णत्ता,

न एव भूय वा, भव्व वा, भविस्सइ वा ज जीवा अजीवा भविस्सति, अजीवा वा जीवा भविस्सति एव पेगा लोगट्ठिई पण्णत्ता,

न एव भूय वा, भव्व वा, भविस्सइ वा ज तसा पाणा वोच्छिज्जिस्सति, थावरा पाणा वोच्छिज्जिस्सति, तसा पाणा भविस्सति, थावरा पाणा भविस्सति एव पेगा लोगट्ठिई पण्णत्ता,

न एव भूय वा, भव्व वा, भविस्सइ वा ज लोए अलोए भविस्सइ, अलोए वा लोए भविस्सइ एव पेगा लोगट्ठिई पण्णत्ता,

न एव भूय वा, भव्व वा, भविस्सइ वा ज लोए अलोए पविस्सइ अलोए वा लोए पविस्सइ एव पेगा लोगट्ठिई पण्णत्ता,

जाव ताव लोए ताव ताव जीवा, जाव ताव जीवा ताव ताव लोए एवं पेगा लोगट्ठिई पण्णत्ता,
जाव ताव जीवाण य पोग्गलाण य गइ परियाए ताव ताव लोए, जाव ताव लोए ताव ताव जीवाण य पोग्गलाण य गइपरियाए एवं पेगा लोगट्ठिई पण्णत्ता,
सव्वेसु वि णं लोगंतेसु ज अबद्धपासपुट्ठा पोग्गला लुक्खत्ताए कज्जइ जेणं जीवा य पोग्गला य नो संचायंति बहिया लोगंता गमणयाए एवं पेगा लोगट्ठिई पण्णत्ता

७०५ दसविहे सद्दे पण्णत्ते त जहा-

गाहा नीहारि पिंडिमे लुक्खे,
भिण्णे जज्जरिए इ य ।
दीहे रहस्से पुहुत्ते य,
काकणी खिंखिणिस्सरे ॥१॥

७०६ दस इंदियत्थातीता पण्णत्ता त जहा-

देसेण वि एगे सद्दाइं सुणिंसु,
सव्वेण वि एगे सद्दाइं सुणिंसु,
देसेण वि एगे रूवाइं पासिंसु,
सव्वेण वि एगे रूवाइं पासिंसु,
देसेण वि एगे गंधाइं अग्घिंसु,
सव्वेण वि एगे गंधाइं अग्घिंसु,
देसेण वि एगे रसाइं आसाइंसु,
सव्वेण वि एगे रसाइं आसाइंसु,

देसेण वि एगे फासाइं पडिसवेदेंसु,
सव्वेण वि एगे फासाइं पडिसवेदेंसु

दस इंदियत्था पडुप्पण्णा पण्णत्ता तं जहा-
देसेण वि एगे सद्दाइं सुणेंति,
सव्वेण वि एगे सद्दाइं सुणेंति एवं —जाव —
देसेण वि एगे फासाइं पडिसवेदेंति,
सव्वेण वि एगे फासाइं पडिसवेदेंति

दस इंदियत्था अणागया पण्णत्ता तं जहा-
देसेण वि एगे सद्दाइं सुणिस्संति,
सव्वेण वि एगे सद्दाइं सुणिस्संति एवं —जाव—
देसेण वि एगे फासाइं पडिसवेदेस्संति,
सव्वेण वि एगे फासाइं पडिसवेदेस्संति ३

७०७ दसहिं ठाणेहिं अच्छिण्णे पोग्गले चलेज्जा पण्णत्ता तं जहा-
आहारिज्जमाणे वा चलेज्जा,
परिणामेज्जमाणे वा चलेज्जा,
उस्ससिज्जमाणे वा चलेज्जा,
निस्ससिज्जमाणे वा चलेज्जा,
वेदेज्जमाणे वा चलेज्जा,
निज्जरिज्जमाणे वा चलेज्जा,
विउव्विज्जमाणे वा चलेज्जा,
परियारिज्जमाणे वा चलेज्जा,
जक्खाइट्ठे वा चलेज्जा,

जाव ताव लोए ताव ताव जीवा, जाव ताव जीवा ताव ताव लोए एव पेगा लोगट्ठिई पण्णत्ता,

जाव ताव जीवाण य पोग्गलाण य गइ परियाए ताव ताव लोए, जाव ताव लोए ताव ताव जीवाण य पोग्गलाण य गइपरियाए एव पेगा लोगट्ठिई पण्णत्ता,

सव्वेसु वि ण लोगतेसु ज अबद्धपासपुट्ठा पोग्गला लुक्खत्ताए कज्जइ जेण जीवा य पोग्गला य नो सचायति बहिया लोगता गमणयाए एव पेगा लोगट्ठिई पण्णत्ता

७०५ दसविहे सद्दे पण्णत्ते त जहा-

गाहा नीहारि पिडिमे लुक्खे,
भिण्णे जज्जरिए इ य।
दीहे रहस्से पुहुत्ते य,
काकणी खिखिणिस्सरे ॥१॥

७०६ दस इदियत्थातीता पण्णत्ता त जहा-

देसेण वि एगे सद्दाइ सुणिसु,
सव्वेण वि एगे सद्दाइ सुणिसु,
देसेण वि एगे रूवाइ पासिसु,
सव्वेण वि एगे रूवाइ पासिसु,
देसेण वि एगे गधाइ अग्घिसु,
सव्वेण वि एगे गधाइ अग्घिसु,
देसेण वि एगे रसाइ आसाद्दसु,
सव्वेण वि एगे रसाइ आसाइसु,

देसुण वि एगे फासाइ पडिसवेदेंसु,
सव्वेण वि एगे फासाइ पडिसवेदेंसु

दस इदियत्था पडुप्पण्णा पण्णत्ता त जहा-
देसेण वि एगे सद्दाइ सुणेंति,
सव्वेण वि एगे सद्दाइ सुणेंति एव —जाव —
देसेण वि एगे फासाइ पडिसवेदेंति,
सव्वेण वि एगे फासाइ पडिसवेदेंति

दस इदियत्था अणागया पण्णत्ता त जहा-
देसेण वि एगे सद्दाइ सुणिस्सति,
सव्वेण वि एगे सद्दाइ सुणिस्सति एव —जाव—
देसेण वि एगे फासाइ पडिसवेदेस्सति,
सव्वेण वि एगे फासाइ पडिसवेदेस्सति ३

७०७ दसहि ठाणेहि अच्छिण्णे पोग्गले चलेज्जा पण्णत्ता त जहा-
आहारिज्जमाणे वा चलेज्जा,
परिणामेज्जमाणे वा चलेज्जा,
उस्ससिज्जमाणे वा चलेज्जा,
निस्ससिज्जमाणे वा चलेज्जा,
वेदेज्जमाणे वा चलेज्जा,
निज्जरिज्जमाणे वा चलेज्जा,
विउव्विज्जमाणे वा चलेज्जा,
परियारिज्जमाणे वा चलेज्जा,
जक्खाइट्ठे वा चलेज्जा,

वायपरिग्गणे वा चलेज्जा

७०८ दसहि ठाणेहि कोहुप्पत्ती सिया त जहा-

मणुण्णाइ मे सद्द-फरिस-रस-रूव-गधाइ अवहरिसु,
अमणुण्णाइ मे सद्द-फरिस-रस रूव गधाइ उवहरिसु,
मणुण्णाइ मे सद्द फरिस-रस रूव गधाइ अवहरइ,
अमणुण्णाइ मे सद्द-फरिस-रस-रूव-गधाइ उवहरइ,
मणुण्णाइ मे सद्द-फरिस-रस रूव-गधाइ अवहरिस्सइ,
अमणुण्णाइ मे सद्द-फरिस रस-रूव गधाइ उवहरिस्सइ,
मणुण्णाइ मे सद्द-फरिस-रस-रूव गधाइ अवहरिसु, अवहरइ, अवहरिस्सइ,
अमणुण्णाइ मे सद्द-फरिस रस-रूव गधाइ उवहरिसु, उवहरइ, उवहरिस्सइ,
मणुण्णामणुण्णाइ सद्द-फरिस-रस-रूव गधाइ अवहरिसु, अवहरइ, अवहरिस्सइ उवहरिसु, उवहरइ, उवहरिस्सइ,
अह च ण आयरिय उवज्झायाण सम्म वट्टामि, मम च ण आयरिय-उवज्झाया मिच्छ पडिवण्णा

७०९ दसविहे सजमे पण्णत्ते त जहा-

पुढविकाइय-सजमे जाव वणस्सइकाइय सजमे, बेइदिय सजमे, तेंदिय-सजमे, चउरिंदिय सजमे, पचिदिय-सजमे, अजीवकाय सजमे

दसविहे असजमे पण्णत्ते त जहा-

पुढविकाइय-असजमे —जाव — अजीवकाय-असजमे

दसविहे सवरे पण्णत्ते त जहा-

सोइदियसवरे —जाव— फासिदियसवरे,

मणसवरे, वयसवरे, कायसवरे,

उवगरणसवरे, सूईकुसग्गसवरे

दसविहे असवरे पण्णत्ते त जहा-

सोइदियअसवरे, —जाव— सूईकुसग्गअसवरे

७१० दसहि ठाणेहि अहमतीति थभिज्जा त जहा-

जाइमएण वा —जाव— इस्सरियमएण वा,

नाग सुवण्णा वा मे अतिय हव्वमागच्छति,

पुरिसधम्माओ वा मे उत्तरिए अहोहिए नाण-दसणे समुप्पण्णे

७११ दसविहा समाही पण्णत्ता त जहा-

पाणाइवाय-वेरमणे —जाव— परिग्गह-वेरमणे,

इरियासमिई —जाव— उच्चार पासवण खेल-सिघाणग-परिट्ठावणियासमिई

दसविहा असमाही पण्णत्ता त जहा-

पाणाइवाए —जाव— उच्चार-पासवण-खेल-सिघाणग-परिट्ठावणिया असमिई

७१२ दसविहा पव्वज्जा पण्णत्ता त जहा-

गाहा—छदा रोसा परिजुण्णा,

सुविणा पडिस्सुया चेव ।

७१७ जबू-मदर-दाहिणेण गगासिधुमहाणईओ दस महाणईओ समप्पेंति त जहा-

जउणा,	सरऊ,
आवी,	कोसी,
मही,	सिधू,
वितत्था,	विभासा,
एरावइ,	चदभागा

जबू मदर उत्तरेण रत्तारत्तवईओ महाणईओ दस महाणईओ समप्पेंति त जहा-

किण्हा, —जाव – महाभागा २

७१८ जबूद्दीवे दीवे भरहे वासे दस रायहाणीओ पण्णत्ताओ त जहा

गाहा–चपा महुरा वाराणसी य, सावत्थी तह य साएय ।
हत्थिणउर कपिल्ल, मिहिला कोसबि रायगिह ॥१॥

एयासु ण दसरायहाणीसु दस रायाणो मुडा भवेत्ता, — जाव — पव्वइया त जहा-

भरहो,	सागरो,
मघव,	सणकुमारो,
सती,	कुथू,
अरे,	महापउमे,
हरिसेणो,	जयणामे २

७१९ जबूद्दीवे दीवे मदरे पव्वए दस जोयणसयाइ उव्वेहेणं धरणितले, दस जोयणसहस्साइ विक्खभेण, उवरि दस-जोयणसयाइ विक्खभेण, दसदसाइ जोयणसहस्साइ सव्व-ग्गेण पण्णत्ते

७२० जबूद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स बहुमज्झदेसभागे इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उवरिमहेट्ठिल्लेसु खुड्डगपयरेसु, एत्थ ण अट्ठपएसिए रुयगे पण्णत्ते

जओ ण इमाओ दस दिसाओ पवहति त जहा-

पुरच्छिमा,	पुरच्छिमदाहिणा,
दाहिणा,	दाहिणपच्चत्थिमा,
पच्चत्थिमा,	पच्चत्थिमुत्तरा,
उत्तरा,	उत्तरपुरच्छिमा,
उड्ढा,	अहो

एयासि ण दसण्ह दिसाण दस नामधिज्जा पण्णत्ता त जहा-
गाहा--इदा अग्गीइ जमा, नेरइ वारुणी य वायव्वा ।
सोमा ईसाणा वि य, विमला य तमा य बोद्धव्वा ॥१॥

लवणस्स ण समुद्दस्स दस जोयणसहस्साइ गोतित्थविरहिए खेत्ते पण्णत्ते,

लवणस्स ण समुद्दस्स दस जोयणसहस्साइ उदगमाले पण्णत्ते

सव्वे वि ण महापायाला दसदसाइ जोयणसहस्साइ उव्वेहेण पण्णत्ता,

मूले दस जोयाणसहस्साइ विक्खभेण पण्णत्ता,
बहुमज्झदेसभागे एगपएसियाए सेढीए दसदसाइ जोयण सहस्साइं विक्खभेण पण्णत्ता,
उवरिं मुहमूले दस जोयणसहस्साइ विक्खभेण पण्णत्ता,
तेसि ण महापायालाण कुड्डा सव्ववइरामया सव्वत्थसमा दस जोयणसयाइ बाहल्लेण पण्णत्ता,
सव्वे वि ण खुड्डा पायाला दस जोयणसयाइ उव्वेहेण पण्णत्ता,
मूले दसदसाइ जोयणाइ विक्खभेण, बहुमज्झदेसभाए एगपएसियाए सेढीए दस जोयणसयाइ विक्खभेण पण्णत्ता,
उवरिं मुहमूले दसदसाइ जोयणाइ विक्खभेण पण्णत्ता
तेसि ण खुड्डापायालाण कुड्डा सव्ववइरामया सव्वत्थ समा दस जोयणाइ बाहल्लेण पण्णत्ता ६

७२१ धायइसडगा ण मदरा दस जोयणसयाइ उव्वेहेण, धरणितले देसूणाइ दस जोयणसहस्साइ विक्खभेण उवरिं दस जोयण सयाइ विक्खभेण पण्णत्ता
पुक्खरवरदीवड्ढगा ण मदरा दस जोयण० एव चेव २

७२२ सव्वे वि ण वट्टवेयड्ढपव्वया दस जोयणसयाइ उड्ढ उच्चत्तेण, दस गाउयसयाइ उव्वेहेण, सव्वत्थ समा पल्लगसठाणसठिया, दस जोयणसयाइ विक्खभेण पण्णत्ता

७२३ जम्बूद्दीवे दीवे दस खेत्ता पण्णत्ता त जहा-

भरहे, एरवए,
हेमवए, हेरण्णवए,
हरिवस्से, रम्मगवस्से,
पुव्वविदेहे, अवरविदेहे,
देवकुरा, उत्तरकुरा

७२४ माणुसुत्तरे ण पव्वए मूले दस बावीसे जोयणसए विक्खभेण पण्णत्ते

७२५ सव्वे वि ण अजणगपव्वया दस जोयणसयाइ उव्वेहेण, मूले दस जोयणसहस्साइ विक्खभेण, उवरि दस जोयणसयाइ विक्खभेण पण्णत्ता,

सव्वे वि ण दहिमुहपव्वया दस जोयणसयाइ उव्वेहेण, सव्वत्थ समा पल्लगसठाणसठिया दस जोयणसहस्साइ विक्खभेण पण्णत्ता,

सव्वे वि ण रइकरग-पव्वया दस जोयणसयाइ उड्ढ उच्चत्तेण, दसगाउयसयाइ उव्वेहेण, सव्वत्थ समा झल्लरिसठिया दस जोयणसहस्साइ विक्खभेण पण्णत्ता ३

७२६ रुयगवरे ण पव्वए दस जोयण-सयाइ उव्वेहेण, मूले दस जोयणसहस्साइ विक्खभेण, उवरि दस जोयण-सयाइ विक्खभेण पण्णत्ते

एव कुडलवरे वि २

७२७ दसविहे दवियाणुओगे पण्णत्ते त जहा-

दवियाणुओगे,	माउयाणुओगे,
एगट्ठियाणुओगे,	करणाणुओगे,
अप्पियणप्पिए,	भाविताभाविए,
बाहिराबाहिरे,	सासयासासए,
तहणाणे,	अतहणाणे

७२८ चमरस्स ण असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो तिगिच्छकूडे उप्पायपव्वए मूले दसबावीसे जोयणसए विक्खभेण पण्णत्ते,

चमरस्स ण असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो सोमस्स महारण्णो सोमप्पभे उप्पायपव्वए दस जोयणसयाइ उड्ढ उच्चत्तेण, दस गाउयसयाइ उव्वेहेण, मूले दस जोयणसयाइ विक्खभेण पण्णत्ते,

चमरस्स ण असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो जमस्स महारण्णो जमप्पभे उप्पायपव्वए दस जोयणसयाइ उड्ढ उच्चत्तेण, दस गाउयसयाइ उव्वेहेण, मूले दस जोयणसयाइ विक्खभेण पण्णत्ते,

एव वरुणस्स वि, एव वेसमणस्स वि

बलिस्स ण वइरोयणिदस्स वइरोयणरण्णो रुअगिदे उप्पायपव्वए मूले दसबावीसे जोयणसए विक्खभेण पण्णत्ते,

बलिस्स ण वइरोयणिदस्स सोमस्स एव चेव

जहा चमरस्स लोगपालाण त चेव बलिस्स वि

धरणस्स ण नागकुमारिंदस्स नागकुमाररण्णो धरणप्पभे

उप्पायपव्वए दस जोयणसयाइ उड्ढ उच्चत्तेण, दस गाउय-सयाइ उव्वेहेण, मूले दस जोयणसयाइ विक्खभेण पण्णत्ते,

धरणस्स नागकुमारिंदस्स ण नागकुमाररण्णो कालवालस्स महारण्णो महाकालप्पभे उप्पायपव्वए जोयणसयाइ उड्ढ एव चेव,

एव —जाव - सखवालस्स, एव भूयाणदस्स वि, एव लोगपालाण वि से जहा धरणस्स एव —जाव— थणिय-कुमाराण सलोगपालाण भाणियव्व,

सव्वेसि उप्पायपव्वया भाणियव्वा सरिसणामगा,

सक्कस्स ण देविंदस्स देवरण्णो सक्कप्पभे उप्पायपव्वए दस जोयणसहस्साइ उड्ढ उच्चत्तेण दस गाउयसहस्साइ उव्वेहेण, मूले दस जोयणसहस्साइ विक्खभेण पण्णत्ते,

सक्कस्स ण देविंदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो जहा सक्कस्स तहा सव्वेसि लोगपालाण, सव्वेसि च इदाण —जाव— अच्चुयत्ति सव्वेसि पमाणमेग १५०

७२९ बायरवणस्सइकाइयाण उक्कोसेण दस जोयणसयाइ सरीरो-गाहणा पण्णत्ता

जलचर पचदियतिरिक्खजोणियाण उक्कोसेण दस जोयण-सयाइ सरीरोगाहणा पण्णत्ता

उरपरिसप्प-थलचर-पचिदियतिरिक्खजोणियाण उक्कोसेण एव चेव ३

७३० संभवाओ णं अरहाओ अभिनंदणे अरहा दसहिं सागरोवम-
कोडिसयसहस्सेहिं विइक्कतेहिं समुप्पण्णे

७३१ दसविहे अणंतए पण्णत्ते तं जहा

नामाणंतए, ठवणाणंतए
दव्वाणंतए, गणणाणंतए,
पएसाणंतए, एगओणंतए,
दुहओणंतए, देसवित्थाराणंतए,
सव्ववित्थाराणंतए, सासयाणंतए

७३२ उप्पायपुव्वस्स णं दस वत्थु पण्णत्ता
अत्थि णत्थिप्पवायपुव्वस्स णं दस चूलवत्थु पण्णत्ता

७३३ दसविहा पडिसेवणा पण्णत्ता तं जहा-

गाहा—दप्प पमाय णाभोगे,
आउरे आवतीसु य।
संकिए सहसक्कारे,
भयप्पओसा य वीमंसा ॥१॥

दस आलोयणादोसा पण्णत्ता तं जहा

गाहा—आकंपइत्ता अणुमाणइत्ता,
जं दिट्ठं बायरं च सुहुमं वा।
छण्णं सद्दाउलगं,
बहुजण अव्वत्त तस्सेवी ॥१॥

दसहिं ठाणेहिं संपण्णे अणगारे अरिहइ अत्तदोसमालोएत्तए
तं जहा-

जाइसपण्णे —जाव— अट्ठट्ठाणे —जाव— खते दते,
अमाई, अपच्छाणुतावि

दसहिं ठाणेहिं सपण्णे अणगारे अरिहइ आलोयण पडिच्छित्तए
त जहा-

आयारव —जाव— अवायदसी
पियधम्मे दढधम्मे

दसविहे पायच्छित्ते पण्णत्ते त जहा-

आलोयणारिहे —जाव— अणवट्ठप्पारिहे,
पारचियारिहे ५

७३४ दसविहे मिच्छत्ते पण्णत्ते त जहा-

अधम्मे धम्मसण्णा, धम्मे अधम्मसण्णा,
अमग्गे मग्गसण्णा मग्गे उम्मग्गसण्णा,
अजीवेसु जीवसण्णा, जीवेसु अजीवसण्णा,
असाहुसु साहुसण्णा, साहुसु असाहुसण्णा,
अमुत्तेसु मुत्तसण्णा, मुत्तेसु अमुत्तसण्णा

७३५ चदप्पभे ण अरहा दस पुव्वसयसहस्साइ सव्वाउय पालइत्ता
सिद्धे —जाव— सव्वदुक्खप्पहीणे

धम्मे ण अरहा दस वाससयसहस्साइ सव्वाउय पालइत्ता
सिद्धे —जाव— सव्वदुक्खप्पहीणे

नमी ण अरहा दस वाससहस्साइ सव्वाउय पालइत्ता सिद्धे
—जाव— सव्वदुक्खप्पहीणे

७३० सभवाओ ण अरहाओ अभिनदणे अरहा दसहि सागरोवम कोडिसयसहस्सेहि विइक्कतेहि समुप्पण्णे

७३१ दसविहे अणतए पण्णत्ते त जहा

नामाणतए, ठवणाणतए
दव्वाणतए, गणणाणतए
पएसाणतए, एगओणतए,
दुहओणतए, देसवित्थाराणतए,
सव्ववित्थाराणतए, सासयाणतए

७३२ उप्पायपुव्वस्स ण दस वत्थु पण्णत्ता
अत्थि णत्थिप्पवायपुव्वस्स ण दस चूलवत्थु पण्णत्ता

७३३ दसविहा पडिसेवणा पण्णत्ता त जहा-

गाहा—दप्प पमाय णाभोगे,
आउरे आवतीसु य ।
सकिए सहसक्कारे,
भयप्पओसा य वीमसा ॥१॥

दस आलोयणादोसा पण्णत्ता त जहा-

गाहा—आकपइत्ता अणुमाणइत्ता,
ज दिट्ठ बायर च सुहुम वा ।
छण्ण सद्दाउलग,
वहुजण अव्वत्त तस्सेवी ॥१॥

दसहि ठाणेहि सपण्णे अणगारे अरिहइ अत्तदोसमालोएत्तए त जहा-

जाइसपण्णे —जाव— अट्ठट्ठाणे —जाव— खते दते,
अमाई, अपच्छाणुतावि

दसहिं ठाणेहिं सपण्णे अणगारे अरिहइ आलोयण पडिच्छित्तए
त जहा-

आयारव —जाव— अवायदसी
पियधम्मे दढधम्मे

दसविहे पायच्छित्ते पण्णत्ते त जहा-
आलोयणारिहे —जाव— अणवट्ठप्पारिहे,
पारचियारिहे ५

७३४ दसविहे मिच्छत्ते पण्णत्ते त जहा-

अधम्मे धम्मसण्णा, धम्मे अधम्मसण्णा,
अमग्गे मग्गसण्णा मग्गे उम्मग्गसण्णा,
अजीवेसु जीवसण्णा, जीवेसु अजीवसण्णा,
असाहुसु साहुसण्णा, साहुसु असाहुसण्णा,
अमुत्तेसु मुत्तसण्णा, मुत्तेसु अमुत्तसण्णा

७३५ चदप्पभे ण अरहा दस पुव्वसयसहस्साइ सव्वाउय पालइत्ता
सिद्धे —जाव— सव्वदुक्खप्पहीणे

धम्मे ण अरहा दस वाससयसहस्साइ सव्वाउय पालइत्ता
सिद्धे —जाव— सव्वदुक्खप्पहीणे

नमी ण अरहा दस वाससहस्साइं सव्वाउय पालइत्ता सिद्धे
—जाव— सव्वदुक्खप्पहीणे

पुरिससीहे ण वासुदेवे दस वाससहस्साइ सव्वाउय पाल इत्ता छट्ठीए तमाए पुढवीए नेरइयत्ताए उववण्णे

नेमी ण अरहा दस धणूय उड्ढ उच्चत्तेण, दस य वाससयाइ सव्वाउय पालइत्ता सिद्धे —जाव— सव्वदुक्खप्पहीणे

कण्हे ण वासुदेवे दस धणूइ उड्ढ उच्चत्तेण, दस य वाससयाइ सव्वाउय पालइत्ता तच्चाए वालुप्पमाए पुढवीए नेरइयत्ताए उववण्णे ६

७३६ दसविहा भवणवासी देवा पण्णत्ता त जहा-

असुरकुमारा —जाव— थणियकुमारा

एएसि ण दसविहाण भवणवासीण देवाण दस चेइयरुक्खा पण्णत्ता त जहा-

गाहा—आसत्थ सत्तिवण्णे,
सामलि उबर सिरीस दहिवण्णे ।
वजुल पलास वप्पे,
तए य कणियाररुक्खे ॥१॥ २

७३७ दसविहे सोक्खे पण्णत्ते त जहा

गाहा--आरोग्ग दीहमाउ,
अड्ढेज्ज काम भोग सतोसे ।
अत्थि सुहभोग,
निक्खम्ममेव ततो अणाबाहे ॥१॥

७३८ दसविहे उवघाए पण्णत्ते त जहा-

उग्गमोवघाए, जहा पचट्ठाणे - जाव — परिहरणोवघाए
नाणोवघाए, दसणोवघाए, चरित्तोवघाए
अचियत्तोवघाए, सारक्खणोवघाए

दसविहा विसोही पण्णत्ता त जहा-
उग्गमविसोही —जाव — सारक्खणविसोही २

७३९ दसविहे सकिलेसे पण्णत्ते त जहा-
उवहिसकिलेसे, उवस्सयसकिलेसे,
कसायसकिलेसे, भत्तपाणसकिलेसे,
मणसकिलेसे वइसकिलेसे,
कायसकिलेसे, नाणसकिलेसे,
दसणसकिलेसे, चरित्तसकिलेसे

दसविहे असकिलेसे पण्णत्ते त जहा-
उवहिअसकिलेसे —जाव— चरित्तअसकिलेसे २

७४० दसविहे बले पण्णत्ते त जहा-
सोइन्दियबले - जाव — फासिदियबले,
नाणबले, दसणबले, चरित्तबले, तवबले, वीरियबले

७४१ दसविहे सच्चे पण्णत्ते त जहा-
गाहा--जणवय सम्मय ठवणा ,
नामे रूवे पडुच्च सच्चे य ।
ववहार भाव जोगे ,
दसमे ओवम्मसच्चे य ॥१॥

दसविहे मोसे पण्णत्ते त जहा-

गाहा -कोहे माणे माया,
लोभे पिज्जे तहेव दोसे य।
हास भए अक्खाइ य,
उवघायनिस्सिए दसमे ॥१॥

दसविहे सच्चामोसे पण्णत्ते त जहा-

उप्पण्णमीसए, विगयमीसए,
उप्पण्णविगयमीसए, जीवमीसए,
अजीवमीसए, जीवाजीवमीसए,
अणतमीसए, परित्तमीसए,
अद्धामीसए, अद्धद्धामीसए ३

७४२ दिट्ठिवायस्स ण दस नामधेज्जा पण्णत्ता त जहा-

विट्ठवाएइ वा, हेउवाएइ वा,
भूयवाएइ वा, तच्चावाएइ वा,
सम्मावाएइ वा, धम्मावाएइ वा,
भासाविजएइ वा, पुव्वगएइ वा,
अणुजोगगएइ वा, सव्वपाणभूयजीवसत्तसुहावहेइ वा

७४३ दसविहे सत्थे पण्णत्ते त जहा-

गाहा सत्थमग्गी विस लोण,
सिणेहो खारमबिल।
दुप्पउत्तो मणो वाया,
काया भावो य अविरई ॥१॥

दसविहे दोसे पण्णत्ते त जहा-

गाहा—तज्जायदोसे मइभगदोसे ,
पसत्थारदोसे परिहरणदोसे ।
सलक्खण क्कारण हेउदोसे ,
सकामण निग्गह वत्थुदोसे ॥१॥

दसविहे विसेसे पण्णत्ते त जहा

गाहा—वत्थु तज्जायदोसे य ,
दोसे एगट्ठिए इ य ।
कारणे य पडुप्पण्णे ,
दोसे निच्चेहि अट्ठमे ॥१॥
अत्ताणा उवणीए य ,
विसेसेइ य ते दस । २

७४४ दसविहे सुद्धवायाणुओगे पण्णत्ते त जहा-

चकारे, मकारे, पिकारे, सेयकारे, सायकारे, एगत्ते, पुहत्ते सजूहे, सकामिए, भिण्णे

७४५ दसविहे दाणे पण्णत्ते त जहा-

गाहा—अणुकपा सगहे चेव, भये कालुणिए इ य ।
लज्जाए गारवेण च, अहम्मे पुण सत्तमे ॥१॥
धम्मे य अट्ठमे वुत्ते, काहीइ य कतति य ।

दसविहा गइ पण्णत्ता त जहा-

निरयगइ, निरयविग्गहगइ,
तिरियगइ, तिरियविग्गहगइ,

मणुयगइ, मणुयविग्गहगइ,
देवगइ, देवविग्गहगइ,
सिद्धगइ, सिद्धविग्गहगइ,

७४६ दस मुडा पण्णत्ता त जहा-
सोइदियमुडे — जाव फासिदियमुडे
कोहमुडे —जाव – लोभमुडे, दसमे सिर मुडे

७४७ दसविहे सखाणे पण्णत्ते त जहा-
गाहा—परिकम्म ववहारो, रज्जू रासी कलासवण्णे य ।
जाव तावइ वग्गो घणो य तह वग्गवग्गो वि ॥१॥
कप्पो य , ।

७४८ दसविहे पच्चक्खाणे पण्णत्ते त जहा-
गाहा—अणागयमइक्कत, कोडीसहिय नियण्यि चेव ।
सागारमणागार परिमाणकड निरवसेस ॥१॥
सकेय चेव अद्धाए, पच्चक्खाण दसविह तु ।

७४९ दसविहा समायारी पण्णत्ता त जहा-
गाहा—इच्छा मिच्छा तहक्कारो आवस्सिया निसीहिया ।
आपुच्छणा य पडिपुच्छा, छदणा य निमतणा ॥१॥
उवसपया य काले, समायारी भवे दसविहा उ ।

७५० समणे भगव महावीरे छउमत्थकालियाए अतिमराइयसी इमे दस महासुमिणे पासित्ता ण पडिबुद्धे, त जहा-
एग च ण महाघोररूवदित्तधर तालपिसाय सुमिणे पराजिय पासित्ता ण पडिबुद्धे,

एग च ण मह सुक्किलपक्खग पुसकोइल सुमिणे पासित्ता ण पडिबुद्धे

एग च ण मह चित्तविचित्तपक्खग पुसकोइल सुमिणे पासित्ता ण पडिबुद्धे

एग च ण मह दामदुग सव्वरयणामय सुमिणे पासित्ता ण पडिबुद्धे

एग च ण मह सेय गोवग्ग सुमिणे पासित्ता ण पडिबुद्धे

एग च ण मह पउमसर सव्वओ समता कुसुमिय सुमिणे पासित्ता ण पडिबुद्धे

एग च ण महासागर उम्मीवीचीसहस्सकलिय भुयाहि तिण्ण सुमिणे पासित्ता ण पडिबुद्धे

एग च ण मह दिणयर तेयसा जलत सुमिणे पासित्ता ण पडिबुद्धे

एग च ण मह हरिवेरुलियवण्णाभेण नियतेणमतेण माणुसुत्तर पव्वय सव्वओ समता आवेढिय परिवेढिय सुमिणे पासित्ता ण पडिबुद्धे

एग च ण मह मदरे पव्वए मदरचूलियाओ उवरि सीहासणवरगयमत्ताण सुमिणे पासित्ता ण पडिबुद्धे

० ०

ज ण समणे भगव महावीरे एग मह घोररूवदित्तधर तालपिसाय सुमिणे पराइय पासित्ता ण पडिबुद्धे

त ण समणेण भगवया महावीरेण मोहणिज्जे मूलाओ उग्घाइए

ज ण समणे भगव महावीरे एग मह सुक्किलपक्खग

कोहसण्णा, - जाव— लोहसण्णा,
लोगसण्णा, ओघसण्णा

नेरइयाण दस सण्णाओ एव चेव,

एव निरतर —जाव— वेमाणियाण

७५३ नेरइया ण दसविह वेयण पच्चणुभवमाणा विहरति त जहा-

सीय, उसिण, खुह, पिवास, कडु,
परज्झ, भय, सोग, जर, वाहि

७५४ दस ठाणाइ छउमत्थे ण सव्वभावे ण न जाणइ न पासइ त जहा

धम्मत्थिकाय —जाव— वाउ,
अय जिणे भविस्सइ वा, न वा भविस्सइ,
अय सव्वदुक्खाणमत करेस्सइ वा, न वा करेस्सइ

एयाणि उप्पण्णनाण दसणधरे – जाव — अय सव्वदुक्खाण-मत करेस्सइ वा, न वा करेस्सइ

७५५ दस दसाओ पण्णत्ताओ त जहा-

कम्मविवागदसाओ, उवासगदसाओ,
अतगडदसाओ, अणुत्तरोववाइयदसाओ,
आयारदसाओ, पण्हावागरणदसाओ,
बधदसाओ, दोगिद्धिदसाओ,
दीहदसाओ, सखेवियदसाओ

कम्मविवागदसाण दस अज्झयणा पण्णत्ता, त जहा-

गाहा–मियापुत्ते य गोत्तासे, अडे सगडे इयावरे ।
माहणे नदिसेणे य, सोरियत्ति उदुबरे ॥१॥
सहसुद्दाहे आमलए कुमार लिच्छुइ इइ

उवासगदसाण दस अज्झयणा पण्णत्ता, त जहा-

गाह–आणदे कामदेवे अ, गाहावई चूलणीपिया ।
सुरादेवे चुल्लसयए, गाहावई कुडकोलियए ॥१॥
सद्दालपुत्ते महासयए, नदिणीपिया सालइयापिया ।

अतगडदसाण दस अज्झयणा पण्णत्ता, त जहा-

गाहा–नमि मातगे सोमिले, रामगुत्ते सुदसणे चेव ।
जमाली य भगाली य, किकिमे पल्लए इ य ॥१॥
फाले अवडपुत्ते य, एमेए दस आहिया ।

अणुत्तरोववाइयदसाण दस अज्झयणा पण्णत्ता त जहा-

गाहा–इसिदासे य धण्णे य, सुणक्खत्ते य काइए ।
सट्ठाणे सालिभद्दे य, आणदे तेतली इ य ॥१॥
दसण्णभद्दे अइमुत्त, एमेए दस आहिया ।

आयारदसाण दस अज्झयणा पण्णत्ता त जहा-

वीस असमाहीट्ठाणा, एगवीस सबला,
तेत्तीस आसायणाओ, अट्ठविहा गणिसपया,
दस चित्तसमाहिट्ठाणा, एगारस उवासगपडिमाओ,
बारस भिक्खुपडिमाओ, पज्जोसवणाकप्पो,
तीस मोहणिज्जट्ठाणा, आजाइट्ठाण

पण्हावागरणदसाणं दस अज्झयणा पण्णत्ता तं जहा-

उवमा, संखा,
इसिभासियाइं, आयरियभासियाइं,
महावीरभासियाइं, खोमगपसिणाइं,
कोमलपसिणाइं, अद्दागपसिणाइं,
अंगुट्ठपसिणाइं, बाहुपसिणाइं

बंधदसाणं दस अज्झयणा पण्णत्ता तं जहा-

गाहा—बंधे मोक्खे य देवद्धि,
दसारमंडले वि य आयरियविप्पडिवत्ती।
उवज्झायविपडिवत्ती,
भावणा विमुत्ती साओ कम्मे ॥१॥

दोगेहिदसाणं दस अज्झयणा पण्णत्ता तं जहा-

गाहा—वाए विवाए उववाए,
सुक्खित्तकसिणे बायालीसं सुमिणे।
तीसं महासुमिणा बावत्तरिं सव्वसुमिणा,
हारे रामे गुत्ते एमेए दस आहिया ॥१॥

दीहदसाणं दस अज्झयणा पण्णत्ता तं जहा-

गाहा—चंदे सूरे य सुक्के य सिरिदेवी,
पभावई दीवसमुद्दोववत्ती।
बहूपुत्ती मंदरेइ य थेरे य संभूयविजए,
थेरे पम्ह ऊसासनीसासे ॥१॥

संखेवियदसाणं दस अज्झयणा पण्णत्ता तं जहा-

खुड्डियाविमाणपविभत्ती,	महल्लियाविमाणपविभत्ती,
अगचूलिया,	वग्गचूलिया,
विवाहचूलिया,	अरुणोववाए,
वरुणोववाए,	गरुलोववाए,
वेलधरोववाए,	वेसमणोववाए, ११

७५६ दस-सागरोवम-कोडाकोडिओ कालो उस्सप्पिणीए

दस-सागरोवम-कोडाकोडिओ कालो ओसप्पिणीए २

७५७ दसविहा नेरइया पण्णत्ता, त जहा-

अणतरोववण्णा,	परपरोववण्णा,
अणंतरावगाढा,	परपरावगाढा,
अणतराहारगा,	परपराहारगा,
अणतरपज्जत्ता,	परपरपज्जत्ता,
चरिमा,	अचरिमा

एव निरतर —जाव— वेमाणिया

चउत्थीए ण पकप्पभाए पुढवीए दस-निरयावास-सयसहस्सा ठिई पण्णत्ता

रयणप्पभाए पुढवीए जहण्णेण नेरइयाण दसवाससहस्साइं ठिई पण्णत्ता

चउत्थीए ण पकप्पभाए पुढवीए उक्कोसेण नेरइयाण दस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता

पचमाए ण धूमप्पभाए पुढवीए जहण्णेण नेरइयाण दस

सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता

असुरकुमाराण जहण्णेण दस वाससहस्साइ ठिई पण्णत्ता एव —जाव— थणियकुमाराण

बायरवणस्सइकाइयाण उक्कोसेण दसवाससहस्साइ ठिई पण्णत्ता

वाणमतरदेवाण जहण्णेण दस वाससहस्साइ ठिई पण्णत्ता

बमलोगे कप्पे उक्कोसेण देवाण दस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता

लतए कप्पे देवाण जहण्णेण दस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता १०

७५८ दसहि ठाणेहि जीवा आगमेसिभद्दत्ताए कम्म पगरेंति, त जहा

अणिदाणयाए, दिट्ठिसपण्णयाए,
जोगवाहियत्ताए खतिखमणयाए,
जितिदिययाए, अमाइल्लयाए,
अपासत्थयाए, सुसामण्णयाए
पवयणवच्छल्लयाए, पवयणउब्भावणयाए,

७५९ दसविहे आससप्पओगे पण्णत्ते, त जहा-

इहलोगाससप्पओगे, परलोगाससप्पओगे,
दुहओलोगाससप्पओगे, जीवियाससप्पओगे
मरणाससप्पओगे, कामाससप्पओगे,
भोगाससप्पओगे, लाभाससप्पओगे,
पूयाससप्पओगे, सक्काराससप्पओगे,

७६० दसविहे धम्मे पण्णत्त त जहा -

गामधम्मे,	नगरधम्मे,
रट्ठधम्मे,	पासडधम्मे,
कुलधम्मे,	गणधम्मे,
सघधम्मे,	सुयधम्मे,
चरित्तधम्मे,	अत्थिकायधम्मे,

७६१ दस थेरा पण्णत्ता त जहा-

गामथेरा,	नगरथेरा,
रट्ठथेरा,	पसत्थारथेरा,
कुलथेरा,	गणथेरा,
सघथेरा,	जाइथेरा,
सुअथेरा,	परियायथेरा

७६२ दस पुत्ता पण्णा, त जहा-

अत्तए,	खेत्तए,
दिण्णए,	विण्णए
उरसे,	मोहरे,
सोंडीरे,	सबुद्धे,
उववाइए,	धम्मतेवासी,

७६३ केवलिस्स ण दस अणुत्तरा पण्णत्ता, त जहा-

अणुत्तरे नाणे,	अणुत्तरे दसणे,
अणुत्तरे चरित्ते,	अणुत्तरे तवे,
अणुत्तरे वीरिए	अणुत्तरा खती,

अणुत्तरा मुत्ती, अणुत्तरे अज्जवे,
अणुत्तरे मद्दवे, अणुत्तरे लाघवे

७६४ समयखेत्ते ण दस कुराओ पण्णत्ताओ त जहा-
पच देवकुराओ पच उत्तरकुराओ, तत्थ ण दस महइमहालया
महा दुमा पण्णत्ता त जहा-

जबू सुदसणा, धायइरुक्खे,
महाधायइरुक्खे, पउमरुक्खे,
महापउमरुक्खे, पच कूडसामलीओ

तत्थ ण दस देवा महड्ढिया-जाव परिवसति त जहा-

अणाढिए जबुद्दीवाहिवइ, सुदसणे,
पियदसणे, पोंडरिए,
महापोंडरीए, पच गरुला वेणुदेवा २

७६५ दसहि ठाणेहिं ओगाढ दुस्सम जाणेज्जा त जहा-

अकाले वरिसइ, काले न वरिसइ,
असाहू पूइज्जति, साहू न पूइज्जति,
गुरुसु जणो मिच्छ पडिवण्णो,
अमणुण्णा सद्दा —जाव— फासा

दसहि ठाणेहिं ओगाढ सुसम जाणेज्जा त जहा
अकाले न वरिसइ – जाव— मणुण्णा फासा २

७६६ सुसमसुसमाए ण समाए दसविहा रुक्खा उवभोगत्ताए हव्व-
मागच्छति त जहा-

मत्तगया य भिंगा, तुडियगा दीव जोइ चित्तगा ।
चित्तरसा मणियगा, गेहागारा अणियणा य ॥१॥

७६७ जंबूद्दीवे दीवे भारहे वासे तीताए उस्सप्पिणीए दस कुलगरा होत्था तं जहा-

गाहा—सयज्जले सयाऊ य, अणंतसेणे य अमियसेणे य ।
तक्कसेणे भीमसेणे महाभीमसेणे य सत्तमे ॥१॥

दढरहे दसरहे सयरहे ।

जंबूद्दीवे दीवे महाविदेहवासे आगमेसाए उस्सप्पिणीए दस कुलगरा भविस्संति तं जहा-

सीमंकरे, सीमंधरे,
खेमंकरे, खेमंधरे,
विमलवाहणे, संमुती,
पडिसुए, दढधणू,
दसधणू, सतधणू २

७६८ जंबूद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरच्छिमेणं सीयाए महाणईए उभओ कूले दस वक्खारपव्वया पण्णत्ता तं जहा-

मालवंते —जाव— सोमणसे

जंबूमंदरपच्चत्थिमे णं सीओयाए महाणईए उभओ कूले दस वक्खारपव्वया पण्णत्ता तं जहा-

विज्जुप्पभे —जाव— गंधमायणे

एवं धायइसंडपुरच्छिमद्धे वि वक्खारा भाणियव्वा —जाव— पुक्खरवरदीवड्ढपच्चत्थिमद्धे ६

७६९ दस कप्पा इंदाहिट्ठिया पण्णत्ता त जहा-

सोहम्मे —जाव— सहस्सारे

पाणए, अच्चुए

एएसु ण दससु कप्पेसु दस इंदा पण्णत्ता त जहा

सक्के —जाव— अच्चुए

एएसु ण सण्ह इदाण दस परिजाणियविमाणा पण्णत्ता त जहा-

पालए —जाव - विमलवरे, सव्वओभद्दे ३

७७० दस दसमिया ण भिक्खुपडिमा ण एगेण राइदियसएण अद्धछट्ठेहि य भिक्खासएहि अहासुत्ता-जाव-आराहिया भवेइ

७७१ दसविहा ससारसमावण्णगा जीवा पण्णत्ता त जहा

पढमसमयएगिंदिया जाव-अपढमसमयपचिंदिया

दसविहा सव्वजीवा पण्णत्ता त जहा-

पुढविकाइया-जाव-पचिंदिया, अणिंदिया

अहवा-दसविहा सव्वजीवा पण्णत्ता, त जहा-

पढमसमय-नेरइया-जाव अपढमसमयदेवा,

पढमसमयसिद्धा, अपढमसिमयसिद्धा ३

७७२ वाससयाउस्स ण पुरिसस्स दस दसाओ पण्णत्ताओ त जहा-

गाहा–बाला किड्डा य मदा य, बला पण्णा य हायणी ।

पवचा पब्भारा य, मुमुही सायणी तहा ॥१॥

७७३ दसविहा तणवणस्सइकाइया पण्णत्ता त जहा-
मूले —जाव — बीए

७७४ सव्वओ वि ण विज्जाहरसेढीओ दस दस जोयणाइ विक्खभेण पण्णत्ता

सव्वओ वि ण अभियोगसेढीओ दस दस जोयणाइ विक्खभेण पण्णत्ता २

७७५ गेविज्जगविमाणा ण दस जोयणसयाइ उड्ढ उच्चत्तेण पण्णत्ता

७७६ दसहि ठाणेहि सह तेयसा भास कुज्जा त जहा-

केइ तहारूव समण वा माहण वा, अच्चासाएज्जा, से य अच्चासाइए समाणे परिकुविए तस्स तेय निसिरेज्जा, से त परियावेइ, से त परियावेत्ता तामेव सह तेयसा भास कुज्जा,

केइ तहारूव समण वा माहण वा, अच्चासाएज्जा, से य अच्चासाइए समाणे देवे परिकुविए तस्स तेय निसिरेज्जा से त परितावेइ से त तमेव सह तेयसा भास कुज्जा,

केइ तहारूव समण वा, माहण वा अच्चासाएज्जा, से य अच्चासाइए समाणे परिकुविए, देवे य परिकुविए, दुहओ पडिवण्णा तस्स तेय निसिरेज्जा एय परियावितिए त परियावेत्ता तमेव सह तेयसा भास कुज्जा,

केइ तहारूव समण वा, माहण वा अच्चासाएज्जा से य अच्चासाइए परिकुविए तस्स तेय निसिरेज्जा तत्थ

फोडा समुच्छंति ते फोडा भिज्जंति ते फोडा भिण्णा समाणा तमेव सह तेयसा भासं कुज्जा,

केइ तहारूवं समणं वा, माहणं वा अच्चासाएज्जा से य अच्चासाएइ देवे परिकुविए तस्स तेयं निसिरेज्जा, तत्थ फोडा समुच्छंति, ते फोडा भिज्जंति, ते फोडा भिण्णा समाणा तमेव सह तेयसा भासं कुज्जा,

केइ तहारूवं समणं वा, माहणं वा अच्चासाएज्जा से य अच्चासाइए परिकुविए देवि वि य परिकुविए मा दुहओ पडिवण्णा तस्स तेयं निसिरेज्जा तत्थ फोडा समुच्छंति सेसं तहेव —जाव— भासं कुज्जा,

केइ तहारूवं समणं वा, माहणं वा अच्चासाएज्जा से य अच्चासाइए परिकुविए तस्स तेयं निसिरेज्जा, तत्थ फोडा समुच्छंति ते फोडा भिज्जंति, तत्थ पुला समुच्छिंति, ते पुला भिज्जंति ते पुला भिण्णा समाणा तमेव सह तेयसा भासं कुज्जा, एते तिण्णि आलावगा भाणियव्वा,

केइ तहारूवं समणं वा, माहणं वा अच्चासाएमाणे तेयं निसिरेज्जा से य तत्थ नो कम्मइ, नो पकम्मइ अंचियं करेइ करेत्ता आयाहिणं पयाहिणं करेइ करेत्ता उड्ढं वेहासं उप्पायइ उप्पाएत्ता से णं तओ पडिहए पडिणियत्तइ पडिनियत्तित्ता तमेव सरीरगं अणुदहमाणे अणुदहमाणे सह तेयसा भासं कुज्जा जहा वा गोसालस्स मंखलि पुत्तस्स तवे एए

७७७ दस अच्छेरगा पण्णत्ता त जहा-

गाहाओ-उवसग्ग-गब्भहरण इत्थीतित्थ ,
अभाविया परिसा ।
कण्हस्स अवरकका ,
उत्तरण चवसूराण ॥१॥
हरिवसकुलुप्पत्ती
चमरुप्पाओ य अट्ठसयसिद्धा,
अस्सजएसु पूआ
दस वि अणतेण कालेण ॥२॥

७७८ इमीसे ण रयणप्पभाए पुढवीए रयणे कण्डे दस जोअणसयाइ बाहल्लेण पण्णत्ते

इमीसे रयणप्पभाए पुढविए वयरे कण्डे दस जोयणसयाइ बाहल्लेण पण्णत्ते

एव वेरुलिए, लोहियक्खे, मसारगल्ले, हसगब्भे, पुलए, सोगधिए, जोइरसे, अजणे, अजणपुलए, रयए, जायरूवे, अके, फलिहे, रिट्ठे

जहा रयणे तहा सोलसविहा भाणियव्वा १६

७७९ सव्वे वि ण दीवसमुद्दा दसजोयणसयाइ उव्वेहेण पण्णत्ता

सव्वे वि ण महा दहा दस जोयणाइ उव्वेहेण पण्णत्ता

सव्वे वि ण सलिलकुडा दस जोयणाइ उव्वेहेण पण्णत्ता

सिया-सीओया ण महाणईओ मुहमूले दस दस जोयणाइ उव्वेहेण पण्णत्ताओ ४

७८० कत्तियाणक्खत्ते सव्वबाहिराओ मडलाओ दसमे मडले चार चरइ,

अणुराहाणक्खत्ते सव्वब्भतराओ मडलाओ दसमे मडले चार चरइ २

७८१ दस णक्खत्ता णाणस्स वुड्ढिकरा पण्णत्ता त जहा

गाहा—मिगसिरमद्दा पुस्सो, तिण्णि य पुव्वाइ मूलमस्सेसा ।
हत्थो चित्ता य तहा, दस वुड्ढिकराइ नाणस्स ॥१॥

७८२ चउप्पय थलयर-पचिदिय-तिरिक्खजोणियाण दस जाइ-कुल कोडी-जोणि-पमुह-सयसहस्सा पण्णत्ता

उरपरिसप्प-थलयर पचिदिय-तिरिक्खजोणियाण दस जाइ कुल-कोडि-जोणि पमुह-सय-सहस्सा पण्णत्ता २

७८३ जीवाण दसठाणनिव्वत्तिया पोग्गला पावकम्मत्ताए चिणिसु वा चिणति वा, चिणिस्सति वा त जहा

पढमसमयएगिदियनिव्वत्तिए — जाव — फासिदिय निव्वत्तिए

एव चिण उवचिण बध-उदीर-वेय तह निज्जरा चेव

दसपएसिया खधा अणता पण्णत्ता

दसपएसोगाढा पोग्गला अणता पण्णत्ता

दससमयठिइया पोग्गला अणता पण्णत्ता

दसगुणकालगा पोग्गला अणता पण्णत्ता

एव वण्णेहि गधेहि रसेहि फासेहि दसगुणलुक्खा पोग्गला अणता पण्णत्ता २९

सम्मत्त

स्थानांग सूत्र

[अनुवाद]



अनुवादक

मुनि कन्हैयालाल "कमल"

स्थानांग सूत्र

[हिन्दी-अनुवाद]

तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा

सुत्तघरे,
अत्थघरे,
तदुभयघरे । सू० १६६

पुरुप तीन प्रकार के कहे गये हैं, यथा-

सूत्रधर,
अथधर,
तदुभयधर ।

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा-

सुत्तघरे नामेगे नो अत्थघरे,
अत्थघरे नामेगे नो सुत्तघरे,
एगे सुत्तघरे वि अत्थघरे वि,
एगे नो सुत्तघरे नो अत्थघरे । सू० २२५

पुरुप चार प्रकार के कहे गये हैं, यथा

कोई पुरुप सूत्रधर होता है किन्तु अथधर नही होता,
कोई पुरुप अथधर होता है किन्तु सूत्रधर नही होता,
कोई पुरुप सूत्रधार भी होता है और अथधर भी होता है,
कोई पुरुप सूत्रधर भी नही होता और अथधर भी नहीं होता ।

णमो सिद्धाण

तृतीयअग

स्थानांग सूत्र

एक स्थान

१ हे आयुष्मन् शिष्य ! मैंने सुना है, उन भगवान् महावीर ने इस प्रकार कहा है।

२ आत्मा एक है।[1]

---

१ प्रत्येक वस्तु सामान्य विशेषात्मक है। सामान्य की अपेक्षा आत्मा एक है। क्योंकि उसका उपयोगरूप लक्षण प्रत्येक आत्मा मे पाया जाता है। विशेष की अपेक्षा आत्मा अनेक है। सामान्य विवक्षा से चैतन्यमय आत्मा एक है। इसी तरह सर्वत्र समझ लेना चाहिए। द्रव्यार्थिक नय की अपेक्षा से यहा विवक्षित पदार्थों का एकत्व जानना चाहिये।

३ दण्ड एक है।[1]
४ क्रिया एक है।[2]

५ लोक एक है। ६ अलोक एक है।
७ धर्मास्तिकाय एक है। ८ अधर्मास्तिकाय एक है।
९ बध एक है।[3] १० मोक्ष एक है।[4]
११ पुण्य एक है।[5] १२ पाप एक है।[6]
१३ आश्रव एक है।[7] १४ सवर एक है।[8]
१५ वेदना एक है।[9] १६ निजरा एक है।[1]

१७ प्रत्येक शरीर नाम कम के उदय से होने वाले शरीर म जीव एक है।

---

१ आत्मा जिस क्रिया से दडित हो अर्थात ज्ञानादि गुण हीन हो वह 'दड' है।
२ मन, वचन या काया का व्यापार 'क्रिया' है।
३ कषाय पूवक कम पुद्गलो को ग्रहण करना 'बध' है।
४ आत्मा का कर्म पुद्गलो से सवथा मुक्त होना 'मोक्ष' है।
५ शुभ कर्म प्रकृतियाँ पुण्य' रूप हैं।
६ अशुभ कम प्रकृतियाँ 'पाप रूप हैं।
७ कम बध के समस्त हेतु आश्रव' है।
८ आश्रव का निरोध सवर है।
९ आत्मा से कम पुद्गलो का हटाना 'निजरा' है।
१० अष्टकम वेदन की अपेक्षा से 'वेदना एक हैं।

१८ जीवों की बाह्य पुद्गलों को ग्रहण किये बिना की जाने वाली (भवधारणीय) विकुर्वणा एक है।[1]

१९ मन का व्यापार एक है। २० वचन का व्यापार एक है।

२१ काया का व्यापार एक है।

२२ उत्पाद एक है।[2] २३ विनाश एक है।

२४ मृतात्मा का शरीर एक है अथवा विशिष्ट उपपत्ति पद्धति अथवा विशिष्ट वेशभूषा एक है।[3]

२५ गति एक है। २६ आगति एक है।

२७ च्यवन-मरण[4] एक है। २८ उपपात[5] जन्म एक है।

२९ तर्क-विमर्श एक है। ३० संज्ञा एक है।[6]

३१ मनन-शक्ति एक है। ३२ विज्ञान एक है।

---

१ नारक और देवों का जीवन पर्यन्त रहनेवाला शरीर 'भवधारणीय' कहा जाता है। उत्पत्ति समय में इस शरीर से अनवगाहित आकाश प्रदेश में रहे हुए पुद्गल 'बाह्य कहे जाते हैं। इन बाह्य पुद्गलों का 'विकुर्वण' अर्थात् शरीर में उपयोग नहीं होता।

२ एक समय में एक पर्याय की अपेक्षा से एकत्व है।

३ 'विवच्चा' इस पाठान्तर के ये दो वैकल्पिक अर्थ हैं।

४ देवताओं का मरण 'च्यवन' कहा जाता है।

५ देवताओं का जन्म 'उपपात' कहा जाता है।

६ व्यंजनावग्रह के पश्चात् होनेवाला ज्ञान 'संज्ञा' है।

३३ वेदना एक है।[२] ३४ छेदन एक है।

३५ भेदन एक है।

३६ चरम शरीरो का मरण एक ही होता है।

३७ पूण शुद्ध तत्वज्ञ पात्र-अतिशय ज्ञानादि गुण रत्नो का पात्र अथवा गुणप्रकप को प्राप्त 'केवली या तीर्थकर' एक है।

३८ स्वकृत कम फल भोगी होने से जीवो का दुख एकसा है। [१] सब भूत–जीव सामान्य विवक्षा से एक है। [१ २]

३९ जिसके सेवन से आत्मा को क्लेश प्राप्त होता है वह अधम प्रतिज्ञा एक है।

४० जिसके आचरण मे आत्मा विशिष्ट ज्ञानादि पर्याय युक्त होता है वह धम प्रतिज्ञा एक है।

४१ देव[१], असुर[२] और मनुष्यों का एक समय मे मनोयोग एक ही होता है। वचन योग और काय योग भी एक ही होता है। [२]

४२ देव, असुर और मनुष्यो के एक समय म एक ही उत्थान, कम, बल, वीय और पौरुप पराक्रम होता है।

४३ ज्ञान एक है। दशन एक है। चारित्र एक है। [३]

---

१ ज्वर आदि रोगों के वेदन की अपेक्षा से 'वेदना' एक है।

२ ज्योतिषी और वैमानिक देवों को 'देव' सज्ञा है।

३ भवनपति और व्यन्तर देवो को 'असुर' सज्ञा है।

४४ समय एक है।

४५ प्रदेश एक है।

परमाणु एक है। [२]

४६ सिद्धि एक है, सिद्ध एक है।

परिनिर्वाण एक है, परिनिर्वृत एक है। [४]

४७ शब्द एक है। रूप एक है।

गंध एक है। रस एक है।

स्पर्श एक है। [५]

शुभ शब्द एक है। अशुभ शब्द एक है। [२]

सुरूप एक है। कुरूप एक है। [२]

दीर्घ एक है। ह्रस्व एक है। [२]

वर्तुलाकार 'लड्डू के समान गोल' एक है।

त्रिकोण एक है।

चतुष्कोण एक है।

पृथुल विस्तीर्ण एक है।

परिमडल-चूडी के समान गोल एक है। [५]

काला एक है। नीला एक है।

लाल एक है। पीला एक है।

श्वेत एक है। [५]

सुगन्ध एक है। दुर्गन्ध एक है। [२]

तिक्त एक है। कटुक एक है।

कषाय एक है। अम्ल एक है।

मधुर एक है। [५]
ककश — यावत्— रूक्ष एक है। [८]

४८ प्राणातिपात (हिसा) —यावत्— परिग्रह एक है।
क्रोध —यावत्— लोभ एक है।
राग एक है — यावत्—
परपरिवाद–निन्दा एक है।
रति-अरति एक है।
मायामृपा-कपटयुक्त झूठ एक है।
मिथ्यादशन शल्य एक है। [१८]

४९ प्राणातिपात-विरमण एक है — यावत — परिग्रह विरमण एक है। [५]
क्रोध-त्याग एक है — यावत्— मिथ्यादशन शल्य-त्याग एक है। [१३][१८]

५० अवसर्पिणी एक है।
सुपमसुपमा एक है — यावत्— दुपमदुपमा एक है। [७]
उत्सर्पिणी एक है।]७]
दुपमदुपमा एक है —यावत — सुपमसुपमा एक है। [१४]

५१ (१) नारकीय के जीवो की वगणा[1] एक है।
असुरकुमारो की वगणा एक है, —यावत—
वमानिक देवो की वगणा एक है। [२४]

---

१ समूह।

(२) भव्य जीवो की वगणा एक है।[1]
अभव्य जीवो की वगणा एक है।[2]
भव्य नरक जीवो की वगणा एक है।
अभव्य नरक जीवो की वगणा एक है।
इस प्रकार —यावत्— भव्य वैमानिक देवो की वगणा एक है।
अभव्य वैमानिक देवा की वगणा एक है। [५०]

(३) सम्यग्दृष्टियो की वगणा एक है।[3]
मिथ्यादृष्टियो की वगणा एक है।
मिश्रदृष्टि वालो की वर्गणा एक है।
सम्यग्दृष्टि वाले नरक जीवो की वर्गणा एक है।
मिथ्यादृष्टि वाले नरक जीवो की वर्गणा एक है।
मिश्रदृष्टि वाले नरक जीवो की वर्गणा एक है।
इसी प्रकार —यावत— स्तनित कुमारो की वगणा एक है।
मिथ्यादृष्टि पृथ्वीकाय के जीवो की वगणा एक है।
— यावत्— वनस्पतिकाय के जीवो की वगणा एक है।

---

१ जो जीव मुक्त होने योग्य है वह "भव्य" है।
२ जो जीव मुक्त होने योग्य नहीं है। "अभव्य" है।
३ क्षायिक क्षायोपशमिक और औपशमिक सम्यग्दृष्टि भी इसी के अन्तर्गत है।

सम्यग्दृष्टि द्वीन्द्रिय जीवो की वगणा एक है।
मिथ्यादृष्टि द्वीन्द्रिय जीवो की वगणा एक है।
इसी प्रकार त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय जीवो की वगणा एक है।

शेष नरक जीवो के समान —यावत्— मिश्रदृष्टि वाले वैमानिको की वगणा एक है। [६२]

(४) कृष्णपाक्षिक जीवा की वर्गणा एक है।[1]
शुक्लपाक्षिक जीवो की वगणा एक है।[2]
कृष्णपाक्षिक नरक जीवो की वगणा एक है।
शुक्ल-पाक्षिक नरक-जीवो का वर्गणा एक है।
इसी प्रकार चौवीस दण्डक में समझ लेना चाहिए। [५०]

(५) कृष्ण लेश्या वाले जीवो की वर्गणा एक है।
नील लेश्या वाले जीवो की वगणा एक है।
इसी प्रकार —यावत— शुक्ल लेश्या वाले जीवो की वगणा एक है।
कृष्णलेश्या वाले नैरयिको की वगणा —यावत— कापोतलेश्या वाले नैरयिको की वर्गणा एक है।

---

१ अर्धपुद्गल परावर्तन से अधिक भवभ्रमण करने वाला 'कृष्ण पाक्षिक' कहा जाता है।
२ अर्धपुद्गल परावर्तन से अल्प भवभ्रमण करनेवाला 'शुक्ल-पाक्षिक' कहा जाता है।

इस प्रकार जिसकी जितनी लेश्याए हैं उसकी उतनी वर्गणा समझ लेनी चाहिए।

भवनपति, वानव्यन्तर, पृथ्विकाय, अप्काय और वनस्पतिकाय में चार लेश्याए हैं।

तेजस्काय, वायुकाय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय मे तीन लेश्याए हैं।

तिर्यंच पचेन्द्रिय और मनुष्यो मे छ लेश्याए हैं।
ज्योतिष्क देवो मे एक तेजो लेश्या है।

वैमानिक देवो मे ऊपर की तीन लेश्याए हैं।
इनकी इतनी ही वर्गणा जाननी चाहिए। [१९१]

(६) कृष्णलेश्या वाले भव्य जीवो की वगणा एक है।
कृष्णलेश्या वाले अभव्य जीवो की वर्गणा एक है।
इसी प्रकार छहो लेश्याओ मे दो दो पद कहने चाहिए।
कृष्णलेश्या वाले भव्य नैरयिको की वगणा एक है।
कृष्णलेश्या वाले अभव्य नैरयिको की वगणा एक है।
इस प्रकार विमानवासी देव पर्यंत जिसकी जितनी लेश्याए है उसके उतने ही पद समझ लेने चाहिए। [१९२]

(७) कृष्णलेश्या वाले सम्यक्दृष्टि जीवो की वगणा एक है।
कृष्णलेश्या वाले मिथ्यादृष्टि जीवों की वर्गणा एक है।
कृष्णलेश्या वाले मिश्रदृष्टि जीवो की वगणा एक है।

तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा-

सुत्तधरे,
अत्थधरे,
तदुभयधरे ।

पुरुष तीन प्रकार के कहे गये हैं, यथा-

सूत्रधर,
अर्थधर,
तदुभयधर ।

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा-

सुत्तधरे नामेगे नो अत्थधरे,
अत्थधरे नामेगे नो सुत्तधरे,
एगे सुत्तधरे वि अत्थधरे वि,
एगे नो सुत्तधरे नो अत्थधरे ।

पुरुष चार प्रकार के कहे गये हैं, यथा-

कोई पुरुष सूत्रधर होता है किन्तु
कोई पुरुष अर्थधर होता है किन्त
कोई पुरुष सूत्रधार भी होता है
कोई पुरुष सूत्रधर भी नही ह
होता ।

एक गुण काले पुद्गलों की वगणा एक है —यावत्—
असख्य गुण काले पुद्गलो की वगणा एक है।
अनन्त गुण काले पुद्गलो की वर्गणा एक है। [१३]
इस प्रकार वण, गध, रस और स्पश का कथन करना चाहिए
—यावत्—
अनन्त गुण रूक्ष पुद्गलो की वगणा एक है। [२६०]
जघन्य प्रदेशी स्कन्धो की वगणा एक है।
उत्कृष्ट प्रदेशी स्कन्धो की वगणा एक है।
न जघन्य न उत्कृष्ट प्रदेशी स्कन्धो की वगणा एक है। [३]
इसी प्रकार जघन्यावगाढ, उत्कृष्टावगाढ और अज-
घन्योत्कृष्टावगाढ। [३]
जघन्यस्थिति वाले, उत्कृष्टस्थिति वाले, अजघन्योत्कृष्ट स्थिति
वाले। [३]
जघन्यगुण काले, उत्कृष्टगुण काले, अजघन्योत्कृष्टगुण
काले जानें।
इसी प्रकार वण गध, रम, स्पश वाले पुद्गलो की वर्गणा
एक है —यावत्—
अजघन्योत्कृष्ट गुण रूक्ष पुदगलो की वर्गणा एक है। [६०]
[१२८०]

५२ सब द्वीप समुद्रो के मध्य मे रहा हुआ —यावत्—
जम्बूद्वीप एक है।[1]

५३ इस अवसर्पिणी काल म चौबीस तीर्थंकरों मे से अन्तिम तीर्थंकर श्रमण भगवान् महावीर अकेले सिद्ध हुए, बुद्ध हुए, मुक्त हुए, निर्वाण को प्राप्त हुए एव सब दुखों से रहित हुए।

५४ अनुत्तरोपपातिक देवो की ऊचाई एक हाथ की है।

५५ आर्द्रा नक्षत्र का एक तारा कहा गया है।
चित्रा नक्षत्र का एक तारा कहा गया है।
स्वाति नक्षत्र का एक तारा कहा गया है। [३]

५६ एक प्रदेश मे रहे हुए पुद्गल अनन्त कहे गए हैं।
इसी प्रकार एक समय की स्थिति वाले—
एक गुण काले पुद्गल अनन्त कहे गए हैं —यावत्—
एक गुण रूक्ष पुद्गल अनन्त कहे गए हैं। [२१]

---

१ तीन लाख सोलह हजार दो सो सत्तावीस योजन तीन कोस एक सौ अट्ठावीस धनुष, साढ़े तेरह अगुल और कुछ अधिक परिधि वाला जम्बूद्वीप एक है।

दो स्थान

प्रथम उद्देशक

५७ लोक मे जो कुछ है वह सब दो प्रकार का है,[1] यथा-

जीव और अजीव ।

जीव का द्वैविध्य इस प्रकार है

त्रस और स्थावर,

सयोनिक और अयोनिक,

सायुष्य और निरायुष्य,

सेन्द्रिय और अनेन्द्रिय,

सवेदक और अवेदक,

सरूपी और अरूपी,

सपुद्गल और अपुद्गल,

ससार समापन्नक 'ससारी'

अससार-समापन्नक 'सिद्ध'

शाश्वत और अशाश्वत । [१०]

५८ अजीव का द्वैविध्य इस प्रकार है

आकाशास्तिकाय और नो आकाशास्तिकाय[2]

धर्मास्तिकाय और अधर्मास्तिकाय । [२]

---

१ स्वपक्ष और प्रतिपक्ष रूप से ।

२ धर्मास्तिकाय आदि ।

अन्य तत्वों का स्वपक्ष और प्रतिपक्ष इस प्रकार है

५६ बध और मोक्ष,
पुण्य और पाप,
आस्रव और सवर,
वेदना और निजरा। [४]

६० क्रिया दो प्रकार की कही गई है यथा-
जीव क्रिया और अजीव क्रिया[१]।
जीव क्रिया दो प्रकार की कही गई है, यथा-
सम्यक्त्व क्रिया और मिथ्यात्व क्रिया।
अजीव क्रिया दो प्रकार की कही गई है,यथा
ऐर्यापथिकी[२] और साम्परायिकी[३]।
क्रिया दो प्रकार की कही गई है, यथा-

---

१ अजीव पुद्गलों का कमरूप मे परिणमन।

[क] इस क्रिया का कर्ता यद्यपि जीव होता है किन्तु इसमे अजीव पुद्गलों का कर्मरूप मे परिणमन होता है इसलिये यह अजीवक्रिया कही जाती है।

[ख] उपशान्तमोह आदि तीन गुणस्थानवर्ती जीव केवल योग [मन, वचन, काय] द्वारा पुद्गलों को साता वेदनीय के रूप मे परिणत करता है वह ऐर्यापथिकी क्रिया है।

४ सपराय अर्थात् कषाय तज्जन्य व्यापार साम्परायिकी क्रिया है।

कायिकी और आधिकरणिकी[1]।
कायिकी क्रिया दो प्रकार की कही गई है, यथा-
अनुपरतकाय क्रिया और दुष्प्रयुक्तकाय क्रिया।
आधिकरणिकी क्रिया दो प्रकार की कही गई है, यथा-
सयोजनाधिकरणिकी और निवर्तनाधिकरणिकी।
क्रिया दो प्रकार की कही गई है, यथा-
प्राद्वेषिकी और पारितापनिकी।
प्राद्वेषिकी क्रिया दो प्रकार की कही गई है, यथा-
जीव-प्राद्वेषिकी और अजीव-प्राद्वेषिकी।
पारितापनिकी क्रिया दो प्रकार की कही गई है, यथा-
स्वहस्तपारितापनिकी और परहस्तपारितापनिकी।
क्रिया दो प्रकार की कही गई है, यथा-
प्राणातिपात क्रिया और अप्रत्याख्यान क्रिया।
प्राणातिपात क्रिया दो प्रकार की कही गई है, यथा-
स्वहस्त प्राणातिपात क्रिया,
परहस्त प्राणातिपात क्रिया।
अप्रत्याख्यान क्रिया दो प्रकार की कही गई है, यथा-
जीव अप्रत्याख्यान क्रिया,
अजीव अप्रत्याख्यान क्रिया।

---

१ (क) जिस क्रिया द्वारा आत्मा अधोगति मे जावे वह 'अधिकरणिकी क्रिया' कही जाती है।
(ख) शस्त्र को अधिकरण कहते हैं, उसके द्वारा होने वाली क्रिया भी अधिकरणिकी कही जाती है।

क्रिया दो प्रकार की कही गई है, यथा

आरम्भिकी[१] और पारिग्रहिकी ।

आरम्भिकी क्रिया दो प्रकार की कही गई है, यथा-

जीव आरम्भिकी और अजीव आरम्भिकी ।

इसी तरह पारिग्रहिकी क्रिया भी दो प्रकार की कही गई है, यथा-

जीव-पारिग्रहिकी और अजीव पारिग्रहिकी ।

क्रिया दो प्रकार की कही गई है, यथा-

माया-प्रत्ययिकी और मिथ्यादर्शन प्रत्ययिकी ।

माया-प्रत्ययिकी क्रिया दो प्रकार की कही गई है, यथा

आत्म-भाव-वक्रनता[२] और पर-भाव वक्रनता[३] ।

मिथ्यादर्शन प्रत्ययिकी क्रिया दो प्रकार की कही गई है, यथा-

ऊनातिरिक्त मिथ्यादर्शन, प्रत्ययिकी[४]

तद्व्यतिरिक्त मिथ्यादर्शन प्रत्ययिकी[५] ।

---

१ जीव हिंसादि सावद्य अनुष्ठान से होने वाली ।

२ श्रेष्ठ न होते हुए अपने आपको श्रेष्ठ कहना ।

३ मिथ्यालेख आदि से दूसरे को ठगना ।

४ [क] आत्मा को अंगुष्ठ प्रमाण कहना ऊन मिथ्या दर्शन है ।

[ख] आत्मा को सर्वव्यापक कहना अतिरिक्त मिथ्या दर्शन है ।

५ आत्मा को न मानने से लगने वाली क्रिया ।

क्रिया दो प्रकार की कही गई है, यथा-
दृष्टिजा और पृष्टिजा अथवा स्पृष्टिजा ।
दृष्टिजा क्रिया दो प्रकार की कही गई है, यथा-
जीव-दृष्टिजा और अजीव-दृष्टिजा ।
इसी प्रकार पृष्टिजा भी जाननी चाहिए ।
दो क्रियाए कही गई हैं, यथा-
प्रातीत्यिकी[1] और सामन्तोपनिपातिकी[2] ।
प्रातीत्यिकी क्रिया दो प्रकार की कही गई है, यथा-
जीव-प्रातीत्यिकी[3] और अजीव-प्रातीत्यिकी[4] ।
इसी प्रकार सामन्तोपनिपातिकी भी जाननी चाहिए ।
दो क्रियाए कही गई है, यथा-
स्वहस्तिकी[5] और नैसृष्टिकी[6] ।
स्वहस्तिकी क्रिया दो प्रकार की कही गई है, यथा-
जीव स्वहस्तिकी और अजीव-स्वहस्तिकी ।
नैसृष्टिकी क्रिया भी इसी प्रकार समझनी चाहिए ।

---

१ बाह्य वस्तु के निमित्त से होने वाली क्रिया ।
२ अनेक लोगों द्वारा की हुई प्रशसा सुनने से होने वाली ।
३ अश्व आदि जीव की प्रशसा सुनने से होने वाली ।
४ रथ आदि अजीव पदार्थों की प्रशसा सुनने से होने वाली ।
५ अपने हाथ से लगने वाली क्रिया ।
६ किसी पदार्थ के निक्षेपण से होने वाली ।

आरम्भ और परिग्रह ।

दो स्थान जाने बिना और त्यागे बिना आत्मा गृहवास का त्याग कर और मुण्डित होकर शुद्ध प्रव्रज्या अगीकार नहीं कर सकता है, यथा-

आरम्भ और परिग्रह ।

इसी प्रकार—

शुद्ध ब्रह्मचय का पालन नही कर सकता है,

शुद्ध सयम से अपने आपको सयत नही कर सकता है,

शुद्ध सवर से सवृत नही हो सकता है,

सम्पूण मतिज्ञान नही प्राप्त कर सकता है,

सम्पूण श्रुतज्ञान,

अवधिज्ञान,

मन पर्यायज्ञान और

केवल ज्ञान-

नही प्राप्त कर सकता है । [११]

६५ दो स्थानो को जान कर और त्याग कर आत्मा केवलि प्ररूपित धर्म सुन सकता है —यावत—केवलज्ञान प्राप्त कर सकता है, यथा-

आरम्भ और परिग्रह । [११]

६६ दो स्थानो से आत्मा केवलि प्ररूपित धर्म सुन सकता है —यावत— केवलज्ञान प्राप्त कर सकता है । यथा

श्रद्धापूवक 'धमकी उपादेयता' सुनकर और समझकर [११]

६७ दो प्रकार का समय कहा गया है, यथा-

अवसर्पिणी और उत्सर्पिणी ।

६८ उन्माद दो प्रकार का कहा गया है, यथा-

यक्ष के प्रवेश से होने वाला,

मोहनीय कर्म के उदय से होने वाला ।

इसमे जो यक्षावेश उन्माद है उसका सरलता से वेदन हो सकता है और उसे सरलता से दूर किया जा सकता है। तथा जो मोहनीय के उदय से होने वाला है उसका कठिनाई से वेदन होता है और उसे कठिनाई से ही दूर किया जा सकता है।

६९ दण्ड दो प्रकार के कहे गये हैं, यथा-

अर्थ दण्ड[1] और अनर्थ दण्ड[2] ।

नैरयिक जीवों के दो दण्ड कहे गये हैं, यथा-

अर्थ-दण्ड और अनर्थ-दण्ड ।

इसी तरह विमानवासी देव पर्यन्त चौबीस दण्डक समझ लेना चाहिये । [२]

७० दर्शन[3] दो प्रकार का कहा गया है, यथा-

---

१ प्रयोजन से की जाने वाली हिंसा अर्थदण्ड है ।

२ बिना प्रयोजन की जाने वाली हिंसा अनर्थ दण्ड है ।

३ दर्शन का अर्थ यहां श्रद्धा है ।

सम्यग्दशन[1] और मिथ्यादशन[2]।

सम्यग्दशन के दो भेद कहे गये हैं, यथा-
निसग सम्यग्दशन[3] और अभिगम सम्यग्दशन।[4]

निसग सम्यग्दशन के दो भेद गये कहे हैं, यथा-
प्रतिपाति[5] और अप्रतिपाति[6]।

अभिगम सम्यग्दशन के दो भेद कहे गये हैं, यथा-
प्रतिपाति और अप्रतिपाति। [४]

मिथ्यादशन दो प्रकार का कहा गया है, यथा-
अभिग्रहिक मिथ्यादशन और अनभिग्रहिक मिथ्या दशन।
अभिग्रहिक मिथ्यादशन दो प्रकार का कहा गया है, यथा
सपयवसित (सान्त) और अपयवसित (अनन्त),
इसी प्रकार अनभिग्रहिक मिथ्यादशन के भी दो भेद
जानने चाहिए। [३][७]

१, तत्त्वार्थ की सम्यक् श्रद्धा "सम्यग्दशन" है।
२ तत्त्वार्थ की विपरीत श्रद्धा "मिथ्यादशन" है।
३ बिना किसी उपदेश के होने वाली सम्यक श्रद्धा 'निसग सम्यग्दशन' है।
४ किसी के उपदेश, से होने वाली सम्यक श्रद्धा अभिगम सम्यग्दशन' है।
५ नष्ट होने वाला।
६ नष्ट न होने वाला।

७१ ज्ञान दो प्रकार का कहा गया है, यथा-
प्रत्यक्ष[1] और परोक्ष[2] ।
प्रत्यक्ष ज्ञान दो प्रकार का कहा गया है, यथा-
केवलज्ञान और नो केवलज्ञान ।
केवलज्ञान दो प्रकार का कहा गया है, यथा-
भवस्थ-केवलज्ञान और सिद्ध-केवलज्ञान ।
भवस्थ-केवलज्ञान दो प्रकार का कहा गया है, यथा-
सयोगी-भवस्थ-केवलज्ञान,
अयोगी-भवस्थ-केवलज्ञान ।
सयोगी-भवस्थ केवलज्ञान दो प्रकार का कहा गया है, यथा-
प्रथम-समय सयोगी भवस्थ केवलज्ञान,
अप्रथम-समयस-योगी-भवस्थ केवलज्ञान ।
अथवा -चरम-समय-सयोगी-भवस्थ-केवलज्ञान,
अचरम-समय-सयोगी-भवस्थ-केवलज्ञान ।
इसी प्रकार-अयोगी-भवस्थ-केवलज्ञान के भी दो भेद जानने चाहिए ।
सिद्ध-केवलज्ञान के दो भेद कहे गये हैं, यथा-
अनन्तर-सिद्ध केवलज्ञान और परम्पर-सिद्ध केवलज्ञान ।
अनन्तर सिद्ध केवलज्ञान दो प्रकार का कहा गया है, यथा-

---

१ आत्मा को इन्द्रियां और मन की सहायता के बिना होने वाला ज्ञान 'प्रत्यक्ष' ज्ञान है ।

२ इन्द्रियां और मन की सहायता से होने वाला ज्ञान 'परोक्ष' ज्ञान है ।

एकानन्तर सिद्ध केवलज्ञान,

अनेकानन्तर सिद्ध केवलज्ञान ।

परम्परसिद्ध केवल ज्ञान दो प्रकार का कहा गया है, यथा-

एक परम्पर सिद्ध केवल ज्ञान,

अनेक परम्पर सिद्ध केवल ज्ञान ।

नो केवलज्ञान दो प्रकार का कहा गया है, यथा

अवधि ज्ञान और मन पर्याय ज्ञान ।

अवधि ज्ञान दो प्रकार का कहा गया है, यथा

भवप्रत्ययिक और क्षायोपशमिक ।

दो का अवधिज्ञान भवप्रत्ययिक कहा गया है, यथा-

देवताओं का और नैरयिकों का ।

दो का अवधिज्ञान क्षायोपशमिक कहा गया है, यथा-

मनुष्यों का और तिर्यंच पंचेन्द्रियों का ।

मन पर्यायज्ञान दो प्रकार का कहा गया है, यथा-

ऋजुमति और विपुलमति ।

परोक्ष ज्ञान दो प्रकार का कहा गया है, यथा

आभिनिबोधिक ज्ञान और श्रुतज्ञान ।

आभिनिबोधिक ज्ञान दो प्रकार का कहा गया है, यथा-

श्रुतनिश्रित और अश्रुतनिश्रित ।

श्रुतनिश्रित दो प्रकार का कहा गया है, यथा-

अर्थावग्रह और व्यंजनावग्रह ।

अश्रुतनिश्रित के भी पूर्वोक्त दो भेद समझने चाहिए ।

श्रुतज्ञान दो प्रकार का कहा गया है, यथा

अग-प्रविष्ट और अग-वाह्य ।

अग-बाह्य के दो भेद कहे गये है, यथा-

आवश्यक और आवश्यक-व्यतिरिक्त ।

आवश्यक-व्यतिरिक्त दो प्रकार का कहा गया हैं, यथा-

कालिक और उत्कालिक ।[२२]

७२ धर्म दो प्रकार का कहा गया है, यथा-

श्रुत-धम और चारित्र-धर्म ।

श्रुत-धम दो प्रकार का कहा गया है, यथा-

सूत्र-श्रुत-धर्म और अर्थ-श्रुत-धर्म ।

चारित्र धम दो प्रकार का कहा गया है, यथा-

अगार चारित्र-धम और अनगार-चारित्र-धम । [३]

सयम दो प्रकार का कहा गया है, यथा-

सराग-सयम और वीतराग-सयम ।

सराग सयम दो प्रकार का कहा गया है, यथा-

सूक्ष्म-सम्पराय-सराग-सयम,

वादर-सम्परायसराग-सयम ।

सूक्ष्म-सम्पराय-सराग-सयम दो प्रकार का कहा गया है, यथा-

प्रथम-समय-सूक्ष्मसम्पराय-सराग-सयम,

अप्रथम-समय सूक्ष्मसम्पराय-सराग-सयम ।

अयवा चरम-समय-सूक्ष्म-सम्पराय-सराग-सयम,

अचरम समयसूक्ष्म -सम्पराय -सराग -सयम ।

अथवा सूक्ष्म-सम्पराय सराग सयम दो प्रकार का कहा गया है, यथा-

'सक्लिश्यमान' उपशम-श्रेणी से गिरते हुए जीव का,

'विशुध्यमान' उपशम-श्रेणी पर चढते हुए जीव का।

वादर सम्पराय-सराग-सयम दो प्रकार का कहा गया है, यथा

प्रथम-समय-बादर-सम्पराय सराग-सयम,

अप्रथम-समय-वादर-सम्पराय-सयम ।

अथवा—चरम-समय-बादर-सम्पराय- सराग-सयम,

अचरम-समय वादर-सम्पराय-सराग-सयम।

अथवा वादर-सम्पराय सराग-सयम दो प्रकार का कहा गया है, यथा-

प्रतिपाती और अप्रतिपाती ।

वीतराग-सयम दो प्रकार का कहा गया है, यथा

उपशान्त-कपाय-वीतराग-सयम,

क्षीण कपाय वीतराग-सयम ।

उपशान्तकपाय वीतराग सयम दो प्रकार का कहा गया है, यथा-

प्रथम-समय उपशान्त-कपाय वीतराग सयम

अप्रथम-समय-उपशान्त-कपाय-वीतराग-सयम ।

अथवा चरम-समय-उपशान्त-कपाय-वीतराग-सयम,

अचरम-समय-उपशान्त-कपाय-वीतराग-सयम।

क्षीण-कपाय-वीतराग-सयम दो प्रकार का कहा गया है, यथा-

छद्मस्थ क्षीण-कपाय-वीतराग सयम,

केवली-क्षीण-कषाय-वीतराग-सयम ।

छद्मस्थ क्षीण कषाय वीतराग सयम दो प्रकार का कहा गया है, यथा-

स्वय बुद्ध-छद्मस्थ क्षीण-कषाय-वीतराग-सयम,

बुद्ध-बोधित-छद्मस्थ-क्षीण-कषाय-वीतराग सयम ।

स्वयबुद्ध-छद्मस्थ-क्षीण-कषाय-वीतराग-सयम दो प्रकार का कहा गया है, यथा-

प्रथम समय-स्वयबुद्ध-छद्मस्थ-क्षीण-कपाय-वीतराग सयम,

अप्रथम-समय स्वयबुद्ध-छद्मस्थ-क्षीण-कषाय-वीतराग-सयम ।

अथवा चरम-समय-स्वयबुद्ध-छद्मस्थ-क्षीण-कषाय-वीतराग-सयम और अचरम समय-स्वयबुद्ध-छद्मस्थ क्षीण कषाय वीतराग-सयम ।

बुद्ध-बोधित-छद्मस्थ-क्षीण-कषाय वीतराग-सयम दो प्रकार का कहा गया है, यथा-

प्रथम-समय-बुद्ध-बोधित-छद्मस्थ-क्षीण-कपाय-वीतराग सयम और अप्रथम-समय-बुद्ध बोधित छद्मस्थ-क्षीण-कषाय वीतराग-सयम ।

अथवा चरम-समय और अचरम-समय-बुद्ध-बोधित-केवली

क्षीण-कपाय-वीतराग सयम दो प्रकार का कहा गया है।

यथा-

सयोगी-केवली-क्षीण-कपाय वीतराग-सयम,

अयोगी-केवली-क्षीण-कपाय-वीतराग सयम ।

सयोगी-केवली-क्षीण-कपाय-वीतराग-सयम दो प्रकार का कहा गया है, यथा-

प्रथम-समय-सयोगी-केवली-क्षीण-कपाय वीतराग-सयम,

अप्रथम-समय सयोगी-केवली-क्षीण-कपाय वीतराग सयम ।

अथवा

चरम समय सयोगी-केवली क्षीण-कपाय-वीतरागसयम,

अचरम-समय-सयोगी-केवली-क्षीण-कपाय-वीतराग-सयम।

अयोगी-केवली-क्षीण-कपाय वीतराग सयम दो प्रकार का कहा गया है, यथा-

प्रथम-समय-अयोगी-केवली क्षीण कपाय-वीतराग-सयम,

अप्रथम-समय-अयोगी-केवली-क्षीण-कपाय-वीतराग-सयम ।

अथवा

चरम-समय-अयोगी-केवली-क्षीण-कपाय-वीतगग-सयम,

अचरम-समय-अयोगी-केवली-क्षीण-कपाय वीतराग-सयम। [२१]

७३ पृथ्वीकायिक जीव दो प्रकार के कहे गये हैं, यथा-
सूक्ष्म और वादर ।

इस प्रकार —यावत्— दो प्रकार के वनस्पति कायिव जीव कहे गये हैं, यथा-
सूक्ष्म और वादर ।[५]

पृथ्वीकायिक जीव दो प्रकार के कहे गये हैं, यथा-
पर्याप्त और अपर्याप्त ।

इस प्रकार —यावत्— दो प्रकार के वनस्पतिकायिक जीव कहे गये हैं, यथा-
पर्याप्त और अपर्याप्त ।[५]

पृथ्वीकायिक जीव दो प्रकार के कहे गये है, यथा-
परिणत और अपरिणत ।

इस प्रकार —यावत्— दो प्रकार के वनस्पति कायिक जीव कहे गये हैं, यथा-
परिणत और अपरिणत ।[५]

द्रव्य दो प्रकार के कहे गये हैं, यथा-
परिणत और अपरिणत ।[१]

पृथ्वीकायिक जीव दो प्रकार के कहे गये हैं, यथा-
गतिसमापन्नक,
अगतिसमापन्नक (स्थित) ।

इस प्रकार —यावत्— वनस्पतिकायिक जीव दो प्रकार के कहे गये हैं, यथा-

क्षीण कपाय-वीतराग सयम दो प्रकार का कहा गया है।

यथा-

सयोगी-केवलो क्षीण-कपाय वीतराग-सयम,

अयोगी-केवली-क्षीण-कपाय वीतराग सयम।

सयोगी-केवली-क्षीण-कपाय-वीतराग-सयम दो प्रकार का कहा गया है, यथा-

प्रथम-समय-सयोगी-केवली-क्षीण-कपाय वीतराग-सयम,

अप्रथम-समय-सयोगी-केवली-क्षीण-कपाय वीतराग सयम।

अथवा

चरम समय सयोगी-केवली-क्षीण-कपाय-वीतरागसयम,

अचरम-समय-सयोगी-केवली-क्षीण-कपाय-वीतराग-सयम।

अयोगी-केवली-क्षीण कपाय वीतराग सयम दो प्रकार का कहा गया है, यथा-

प्रथम-समय-अयोगी-केवली क्षीण कपाय-वीतराग-सयम,

अप्रथम-समय-अयोगी-केवली-क्षीण-कपाय-वीतराग सयम।

अथवा

चरम-समय-अयोगी-केवली-क्षीण-कपाय-वीतराग-सयम,

अचरम-समय-अयोगी-केवली-क्षीण-कपाय-वीतराग-सयम। [२१]

७३ पृथ्वीकायिक जीव दो प्रकार के कहे गये हैं, यथा-
सूक्ष्म और बादर।

इस प्रकार —यावत्— दो प्रकार के वनस्पति कायिक जीव कहे गये है, यथा-
सूक्ष्म और बादर।[५]

पृथ्वीकायिक जीव दो प्रकार के कहे गये है, यथा-
पर्याप्त और अपर्याप्त।

इस प्रकार —यावत्— दो प्रकार के वनस्पतिकायिक जीव कहे गये हैं, यथा-
पर्याप्त और अपर्याप्त।[५]

पृथ्वीकायिक जीव दो प्रकार के कहे गये है, यथा-
परिणत और अपरिणत।

इस प्रकार —यावत्— दो प्रकार के वनस्पति कायिक जीव कहे गये हैं, यथा-
परिणत और अपरिणत।[५]

द्रव्य दो प्रकार के कहे गये हैं, यथा-
परिणत और अपरिणत।[१]

पृथ्वीकायिक जीव दो प्रकार के कहे गये हैं, यथा-
गतिसमापन्नक,
अगतिसमापन्नक (स्थित)।

इस प्रकार —यावत्— वनस्पतिकायिक जीव दो प्रकार के कहे गये हैं, यथा-

क्षीण कषाय-वीतराग-सयम दो प्रकार का कहा गया है।
यथा-

सयोगी-केवली-क्षीण-कपाय वीतराग-सयम,
अयोगी-केवली-क्षीण-कपाय-वीतराग सयम।

सयोगी-केवली-क्षीण-कपाय-वीतराग-सयम दो प्रकार का
कहा गया है, यथा-

प्रथम-समय-सयोगी-केवली-क्षीण-कपाय वीतराग-सयम,
अप्रथम-समय-सयोगी-केवली क्षीण-कपाय वीतराग
सयम।

अथवा

चरम-समय सयोगी-केवली क्षीण-कपाय-वीतरागसयम,
अचरम-समय-सयोगी-केवली-क्षीण-कपाय-वीतराग सयम।

अयोगी केवली क्षीण कपाय वीतराग सयम दो प्रकार का
कहा गया है, यथा-

प्रथम-समय-अयोगी-केवली-क्षीण-कपाय वीतराग सयम,
अप्रथम-समय-अयोगी-केवली-क्षीण-कपाय-वीतराग-
सयम।

अथवा

चरम-समय-अयोगी-केवली-क्षीण-कपाय-वीतराग-सयम,
अचरम समय-अयोगी-केवली-क्षीण-कपाय-वीतराग-
सयम। [२१]

७३ पृथ्वीकायिक जीव दो प्रकार के कहे गये है, यथा-
सूक्ष्म और वादर ।

इस प्रकार —यावत्— दो प्रकार के वनस्पति कायिक जीव कहे गये है, यथा-
सूक्ष्म और वादर ।[५]

पृथ्वीकायिक जीव दो प्रकार के कहे गये हैं, यथा-
पर्याप्त और अपर्याप्त ।

इस प्रकार —यावत्— दो प्रकार के वनस्पतिकायिक जीव कहे गये हैं, यथा-
पर्याप्त और अपर्याप्त ।[५]

पृथ्वीकायिक जीव दो प्रकार के कहे गये हैं, यथा-
परिणत और अपरिणत ।

इस प्रकार —यावत्— दो प्रकार के वनस्पति कायिक जीव कहे गये हैं, यथा-
परिणत और अपरिणत ।[५]

द्रव्य दो प्रकार के कहे गये हैं, यथा-
परिणत और अपरिणत ।[१]

पृथ्वीकायिक जीव दो प्रकार के कहे गये है, यथा-
गतिसमापन्नक,
अगतिसमापन्नक (स्थित) ।

इस प्रकार —यावत्— वनस्पतिकायिक जीव दो प्रकार के कहे गये हैं, यथा-

यथा-

राग से 'रागजन्य कम से' और द्वेप से 'द्वेपजन्य कम से'। [१]

नैरयिक जीवो के शरीर दो कारणो से पूण अवयव वाले होते हैं, यथा-

राग से 'रागजन्य कम से' पूर्ण अवयव वाल,

द्वेप 'द्वेप जन्य कर्म से' से पूण अवयव वाले।

इसी प्रकार वैमानिक पयन्त समझना चाहिए। [१]

दो काय—'जीव समुवाय' कहे गये हैं, यथा

त्रसकाय और स्थावरकाय।

त्रसकाय दो प्रकार का कहा गया है, यथा-

भवसिद्धिक और अभवसिद्धिक।

इसी प्रकार स्थावरकाय भी समझना चाहिये। [२] [७]

७६ दो दिशाओ के अभिमुख होकर निग्रन्थ और निग्रन्थियो का दीक्षा देना कल्पता है। यथा-

पूव और उत्तर।

इसी प्रकार—

प्रवजित करना, सूत्राथ सिखान। महाव्रतो का आरोपण करना, सहभोजन करना, सहनिवास करना,

स्वाध्याय करने के लिए कहना,

अभ्यस्तशास्त्र को स्थिर करने के लिए कहना,
अभ्यस्तशास्त्र अन्य को पढाने के लिए कहना,
आलोचना करना, प्रतिक्रमण करना,

अतिचारो की निन्दा करना,
गुरु समक्ष अतिचारो को गर्हा करना,
लगे हुए दोप का छेदन करना, दोप की शुद्धि करना,
पुन दोप न करने के लिए तत्पर होना,
यथायोग्य प्रायश्चित्त और
तपग्रहण करना कल्पता है।

दो दिशाओ के अभिमुख होकर निर्ग्रन्थ और निर्ग्रन्थियो को मारणान्तिक सलेखना-तप विशेष से कर्म शरीरको क्षीण करना, भोजन पानो का त्याग कर पादपोपगमन सथारा[1] स्वीकार कर मृत्यु की कामना नही करते हुए स्थित रहना कल्पता है, यथा-

पूव और उत्तर।

द्वितीय उद्देशक

७७ जो देव ऊर्ध्वलोक मे उत्पन्न हुए हैं—वे चाहे कल्पोपन्न[1]

---

१ वृक्ष की तरह निश्चेष्ट होकर अनशन करना।

(बाहर देव लोक मे उत्पन्न) हो चाहे विमानोपपन्न (ग्रैवेयक और अनुत्तर विमानों मे उत्पन्न) हो और जो ज्योतिश्चक्र मे स्थित हो वे चाहे गतिरहित हो या सतत गमनशील हो— वे जो सदा —सतत— पापकर्म ज्ञानावरणादि का बंध करते हैं उसका फल कतिपय देव तो उसी भव मे अनुभव कर लेते हैं और कतिपय देव अन्य भव मे वेदन करते है।
नैरयिक जीव जो सदा —सतत— पापकर्म का बंध करते हैं उसका फल कतिपय नैरयिक तो उसी भव मे अनुभव कर लेते हैं और कितनेक अन्य भव मे भी वेदना वेदते हैं।
पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिक जीव पर्यन्त ऐसा ही समझना चाहिए।
मनुष्यो द्वारा जो सदा —सतत— पापकर्म का बंध किया जाता है उसका फल कतिपय मनुष्य तो इसी मनुष्य भव में अनुभव कर लेते हैं और कतिपय अन्य भव मे अनुभव करते हैं। मनुष्य को छोड़कर शेष अभिलाप समान समझने चाहिए।

७८ नैरयिक जीवो की दो गति और दो आगति कही गई हैं, यथा
नैरयिक जीवो के बीच उत्पन्न होता हुआ या तो मनुष्यो मे से या पंचेन्द्रिय तिर्यंच जीवो मे से उत्पन्न होता है।
वही नैरयिक जीव नैरयिकत्व को छोड़ता हुआ मनुष्य अथवा पंचेन्द्रिय तिर्यंच के रूप मे उत्पन्न होता है।
इसी तरह असुरकुमार असुरकुमारत्व को छोड़ता हुआ मनुष्य अथवा तिर्यंच के रूप मे उत्पन्न होता है।

इसी तरह सब देवो के लिए समझना चाहिए ।

पृथ्वीकाय के जीव दो गति और दो आगति वाले कहे गये हैं, यथा-

पृथ्वीकायिक जीव पृथ्वीकाय मे उत्पन्न होता हुआ पृथ्वीकाय में या नो-पृथ्वीकाय में उत्पन्न होता है। वह पृथ्वीकायिक जीव पृथ्वीकायिकत्व को छोडता हुआ पृथ्वीकाय मे अथवा नो-पृथ्वीकाय मे उत्पन्न होता है ।

इसी प्रकार मनुष्य-पयन्त समझना चाहिए। [२]

७९ नैरयिक जीव दो प्रकार के कहे गये हैं, यथा-

भवसिद्धिक[१] और अभवसिद्धिक[२] ।

इस प्रकार वैमानिक पयन्त समझना चाहिए ।

नैरयिक जीव दो प्रकार के कहे गये हैं, यथा-

अनन्तरोपपन्नक[३] परम्परोपपन्नक[४] ।

इसी तरह वैमानिक पयन्त समझना चाहिए ।

नैरयिक जीव दो प्रकार के कहे गये हैं, यथा-

गतिसमापन्नक[५] और अगतिसमापन्नक[६] ।

इसी प्रकार वैमानिक पयन्त जानना चाहिए ।

---

१ भव्य ।

२ अभव्य ।

३ अन्तर रहित एक साथ उत्पन्न होने वाले ।

४ आगे पीछे उत्पन्न होने वाले ।

५ नरक मे जाते हुए ।

६ नरक मे स्थित ।

नैरयिक जीव दो प्रकार के कहे गये हैं, यथा-
प्रथमसमयोत्पन्न और अप्रथमसमयोत्पन्न ।
इसी प्रकार वैमानिक पर्यन्त जानना चाहिए ।

नैरयिक दो प्रकार के कहे गये हैं, यथा-
आहारक और अनाहारक ।
इस प्रकार वैमानिक पर्यन्त समझ लेना चाहिए ।

नैरयिक दो पकार के कहे गये हैं, यथा
उच्छवासक[1] और नोउच्छवासक ।[2]
यों वैमानिक पर्यन्त समझना चाहिये ।

नैरयिक दो प्रकार के कहे गये हैं, यथा-
सेन्द्रिय[3] और अनीन्द्रिय[4] ।
यों वैमानिक पर्यन्त जानना चाहिये ।

नैरयिक दो प्रकार के कहे गये हैं, यथा-
पर्याप्त और अपर्याप्त ।
यों वैमानिक पर्यन्त जानना चाहिये ।

नैरयिक दो प्रकार के कहे गये हैं, यथा-
संज्ञी और असंज्ञी ।

---

१ उच्छ्वास पर्याप्ति से पर्याप्त ।

२ उच्छ्वास पर्याप्ति पूर्ण न करनेवाले ।

३ इन्द्रियपर्याप्ति से पर्याप्त सेन्द्रिय ।

४ इन्द्रियपर्याप्ति पूर्ण न करनेवाले ।

यो विकलेन्द्रियो (पाच स्थावर और द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय एव चतुरिन्द्रिय) को छोडकर जो असज्ञी अवस्था से नैरयिक आदि के रूप मे उत्पन्न होते हैं वे असज्ञी व्यन्तर तक ही उत्पन्न होते हैं।

"ज्योतिष्क और वैमानिक में नही" इस विवक्षा से उनका यहा ग्रहण नही करके वानव्यन्तर पयन्त कहा गया है। जिसने मन पर्याप्ति पूण की हो वह सज्ञी और जिसने पूण न की हो वह असज्ञी वानव्यन्तर पयन्त सब पचेन्द्रियो के विपय मे यह जानना चाहिये।

नैरयिक दो प्रकार के कहे गये हैं, यथा-

भापक और अभापक।

यो एकेन्द्रिय को छाडकर शेप सब दण्डक मे समझ लेना चाहिये।

नैरयिक दो प्रकार के कहे गये है, यथा-

सम्यग्दृष्टि और मिथ्यादृष्टि।

इसी तरह एकेन्द्रिय को छोडकर शेप सब दण्डक मे समझना चाहिये।

नैरयिक दो प्रकार के कहे गये हैं, यथा-

परित्तसमारिक और अनन्तससारिक।

यो वैमानिक पयन्त समझना चाहिये।

नैरयिक दो प्रकार के कहे गये हैं, यथा-

सख्येयकाल की स्थितिवाले

असंख्यात काल की स्थितिवाले ।

इस प्रकार एकेन्द्रिय और विकलेन्द्रिय को छोडकर वानव्यन्तर पर्यन्त पंचेन्द्रिय जीव समझने चाहिये[1] ।

नैरयिक दो प्रकार के कहे गये हैं, यथा-

सुलभबोधिक और दुर्लभबोधिक ।

यावत् वैमानिक देव पर्यन्त जानना चाहिये ।

नैरयिक दो प्रकार के कहे गये है । यथा-

कृष्णपाक्षिक और शुक्लपाक्षिक ।

यावत् वैमानिक देव पर्यन्त जानना चाहिये ।

नैरयिक दो प्रकार के कहे गये हैं, यथा-

चरम[2] और अचरम[3] ।

इस प्रकार वैमानिक देव पर्यन्त जानना चाहिये ।

८० दो प्रकार से आत्मा अधोलोक को जानता और देखता है, यथा-

वैक्रिय-समुद्घातरूप आत्मस्वभाव से 'अवधिज्ञानी' आत्मा अधोलोक को जानता और देखता है और वैक्रिय-समुद्घात किये बिना ही आत्म-स्वभाव से आत्मा अधोलोक

---

१ ज्योतिष्क और वैमानिक असंख्येय काल की स्थिति वाले ही होते हैं । एकेन्द्रिय और विकलेन्द्रिय संख्यात काल की स्थिति वाले ही होते हैं ।

२ उस योनी मे अंतिम जन्म वाले।

३ उस योनी मे पुन जन्म लेने वाले।

को जानता और देखता है ।[1] (तात्पय यह है कि) अवधि-ज्ञानी वैक्रिय-समुद्घात करके या वैक्रिय-समुद्घात किये विना ही अधोलोक को जानता है और देखता है ।

इसी तरह तियक् लोक को जानता और देखता है ।

इसी तरह ऊर्ध्वलोक को जानता और देखता है ।

इसी तरह परिपूर्णलोक को जानता और देखता है ।

दो प्रकार से आत्मा अधोलोक का जानता और देखता है, यथा-

वैक्रिय शरीर बनाकर आत्मा (अवधिज्ञानी) अधोलोक को जानता और देखता है और वैक्रिय शरीर बनाए विना भी आत्मा अधोलोक को जानता और देखता है । (तात्पर्य यह है कि) अवधिज्ञानी वैक्रिय शरीर बनाकर अथवा वैक्रिय शरीर बनाए विना भी अधोलोक को जानता और देखता है ।

इसी तरह तियक् लोक आदि आलापक समझने चाहिये ।[८]

दो प्रकार से आत्मा शब्द सुनता है । यथा-

देश रूप से आत्मा शब्द सुनता है ।[2]

---

१ यह कथन शरीरस्थ आत्मा की अपेक्षा से हैं ।

२ केवल कान से होन हीं अपितु शरीर के किसी एक देश से शब्द सुना जा सकता हैं । यह शक्ति विषेश साधना द्वारा प्राप्त हो सकती है ।

और सर्व रूप से भी आत्मा शब्द सुनता है[१]।
इसी तरह रूप देखता है।
इसी तरह गंध सूंघता है।
इसी तरह रसों का आस्वादन करता है
इसी तरह स्पर्श का अनुभव करता है[२]। [५]

दो प्रकार से आत्मा प्रकाश करता है यथा-
देश रूप से आत्मा प्रकाश करता है,
सर्वरूप से भी आत्मा प्रकाश करता है।
इसी तरह विशेष रूप से प्रकाश करता है।
इसी तरह विशेष रूप से वैक्रिय करता है।
इसी तरह परिचार मैथुन करता है।
इसी तरह विशेष रूप से भाषा बोलता है।
इसी तरह विशेष रूप से आहार करता है।
इसी तरह विशेष रूप से परिणमन करता है।
इसी तरह विशेष रूप से वेदन करता है।
इसी तरह विशेष रूप से निर्जरा करता है।

---

१ केवल कान से ही नहीं अपितु सम्पूर्ण शरीर से भी शब्द सुना जा सकता है। यह शक्ति भी विशेष साधना द्वारा प्राप्त हो सकती है।

२ आधुनिक वैज्ञानिकों ने भी परीक्षण के पश्चात यह तथ्य स्वीकार कर लिया है।

ये नव सूत्र देश और सव दो प्रकार से है। [६]

देव दो प्रकार से शब्द सुनता है, यथा-

देव देश से भी शब्द सुनता है और सर्व से भी शब्द सुनता है —यावत्— निर्जरा करता है। [१४]

मरुत देव दो प्रकार के कहे गये है,[१] यथा-

एक शरीर वाले[२] और दो शरीर वाले[३]।

इसी तरह किन्नर, किंपुरुप, गंधर्व, नागकुमार, सुवर्णकुमार, अग्निकुमार, वायुकुमार—ये भी एक शरीर और दो शरीर वाले समझने चाहिए।

देव दो प्रकार के कहे गये हैं, यथा-

एक शरीर वाले और दो शरीर वाले। [६] [३६]

तृतीय उद्देशक

८१ शब्द दो प्रकार के कहे गये हैं, यथा-

भापा शब्द और नो-भापा शब्द।[४]

---

१ लोकान्तिक देव विषेश।

२ भवधारणीय शरीर की अपेक्षा।

३ उत्तर वैक्रिय की अपेक्षा।

४ अजीव से पैदा होने वाला शब्द।

भाषा शब्द दो प्रकार का कहा गया है, यथा-
अक्षर सम्बद्ध और नो-अक्षर सम्बद्ध।

नो भाषा शब्द दो प्रकार के कहे गये हैं, यथा-
आतोद्य[१] और नो आतोद्य[२]।

आतोद्य शब्द दो प्रकार का कहा गया है, यथा
तत[३] और वितत[४]

तत शब्द दो प्रकार के कहे गये हैं, यथा-
घन[५] और शुषिर[६]।

इसी तरह वितत शब्द भी दो प्रकार का जानना चाहिये।

नो आतोद्य शब्द दो प्रकार के कहे गये हैं। यथा-
भूषण शब्द और नो भूषण शब्द।

नो-भूषण शब्द दो प्रकार का कहा गया है, यथा-
ताल शब्द और कंसिका (वाद्य-विशेष का) शब्द
अथवा लात प्रहार का शब्द।]८]

शब्द की उत्पत्ति दो प्रकार से होती है, यथा-

---

१ ढोल आदि के शब्द।
२ बांस आदि के फटने से होने वाला शब्द।
३ तारबद्ध वीणा आदि से होने वाला शब्द।
४ नगारा आदि के शब्द।
५ ताल देने वाले वाद्य का शब्द।
६ मुंह से फूंक देकर बजाये जानेवाले वाद्यका शब्द।

पुद्गलों के परस्पर मिलने से शब्द की उत्पत्ति होती है,

पुद्गलो के भेद से शब्द की उत्पत्ति होती है, [१] [६]

८२ दो प्रकार से पुदगल परस्पर सम्बद्ध होते हैं, यथा-

स्वय (स्वभाव से) ही पुद्गल इकट्ठे हो जाते है,

अथवा अन्य के द्वारा पुद्गल इकट्ठ किय जाते हैं।

दो प्रकार से पुद्गल भिन्न भिन्न होते हैं, यथा-

स्वय ही पुदगल भिन्न होते हैं।

अथवा अन्य के द्वारा पुद्गल भिन्न किये जाते है।

दो प्रकार से पुद्गल सडते है, यथा-

स्वय ही पुदगल सडते है,

अथवा अन्य के द्वारा सडाये जाते हैं।

इसी तरह पुद्गल ऊपर गिरते है और

इसी तरह पुद्गल नष्ट होते है।

पुद्गल दो प्रकार के कहे गये है, यथा-

भिन्न और अभिन्न।

पुद्गल दो प्रकार के कहे गये हैं, यथा-

नष्ट होनेवाले और नही नष्ट होने वाले।

"द्गल दो प्रकार के कहे गये हैं, यथा-

परमाणु पुद्गल और परमाणु से भिन्न स्कन्ध आदि।

[गल दो प्रकार के कहे गये हैं, यथा-

सूक्ष्म और बादर।

पुद्ल दो प्रकार के कहे गये हैं, यथा-

भाषा शब्द दो प्रकार का कहा गया है, यथा
अक्षर सम्बद्ध और नो-अक्षर सम्बद्ध।
नो भाषा शब्द दो प्रकार के कहे गये हैं, यथा-
आतोद्य[1] और नो आतोद्य[2]।
आतोद्य शब्द दो प्रकार का कहा गया है, यथा
तत[3] और वितत[4]
तत शब्द दो प्रकार के कहे गये हैं, यथा
घन[5] और शुषिर[6]।
इसी तरह वितत शब्द भी दो प्रकार का जानना चाहिये।
नो आतोद्य शब्द दो प्रकार के कहे गये है। यथा-
भूषण शब्द और नो-भूषण शब्द।
नो-भूषण शब्द दो प्रकार का कहा गया है, यथा-
ताल शब्द और कंसिका (वाद्य-विशेष का) शब्द
अथवा लात-प्रहार का शब्द।]८]
शब्द की उत्पत्ति दो प्रकार से होती है, यथा-

---

१ ढोल आदि के शब्द।
२ बांस आदि के फटने से होने वाला शब्द।
३ तारबद्ध वीणा आदि से होने वाला शब्द।
४ नगारा आदि के शब्द।
५ ताल देने वाले वाद्य का शब्द।
६ मुह से फूंक देकर बजाये जानेवाले वाद्य का शब्द।

पुद्गलो के परस्पर मिलने से शब्द की उत्पत्ति होती है,

पुद्गलो के भेद से शब्द की उत्पत्ति होती है, [१] [६]

८२ दो प्रकार से पुद्गल परस्पर सम्बद्ध होते हैं, यथा-

स्वय (स्वभाव से) ही पुद्गल इकट्ठे हो जाते है,

अथवा अन्य के द्वारा पुद्गल इकट्ठे किये जाते हैं।

दो प्रकार से पुद्गल भिन्न भिन्न होते हैं, यथा-

स्वय ही पुदगल भिन्न होते हैं।

अथवा अन्य के द्वारा पुद्गल भिन्न किये जाते है।

दो प्रकार से पुद्गल सडते है, यथा-

स्वय ही पुद्गल सडते है,

अथवा अन्य के द्वारा सडाये जाते हैं।

इसी तरह पुद्गल ऊपर गिरते है और

इसी तरह पुद्गल नष्ट होते है।

पुद्गल दो प्रकार के कहे गये है, यथा-

भिन्न और अभिन्न।

पुद्गल दो प्रकार के कहे गये हैं, यथा-

नष्ट होनेवाले और नही नष्ट होने वाले।

पुद्गल दो प्रकार के कहे गये हैं, यथा-

परमाणु पुद्गल और परमाणु से भिन्न स्कन्ध आदि।

पुद्गल दो प्रकार के कहे गये हैं, यथा-

सूक्ष्म और बादर।

पुद्गल दो प्रकार के कहे गये हैं, यथा-

बद्धपार्श्व स्पृष्ट[1] और नो बद्धपार्श्व स्पृष्ट[2]।

पुद्गल दो प्रकार के कहे गये हैं, यथा-

पर्यायातीत (विवक्षित पर्याय से अतीत)

अपर्यायातीत।

अथवा कर्म पुद्गल की तरह समस्त रूप से गृहीत और असमस्त रूप से गृहीत।

पुद्गल दो प्रकार के कहे गये हैं, यथा-

जीव द्वारा गृहीत और अगृहीत।

पुद्गल दो प्रकार के कहे गये हैं, यथा-

इष्ट और अनिष्ट।

पुद्गल दो प्रकार के कहे गये है, यथा

कान्त और अकान्त।

पुद्गल दो प्रकार के कहे गये हैं, यथा-

प्रिय और अप्रिय।

पुद्गल दो प्रकार के कहे गये हैं, यथा

मनोज्ञ और अमनोज्ञ।

पुद्गल दो प्रकार के कहे गये है, यथा-

मनाम (मन प्रिय) और अमनाम। [१८]

---

१ त्वचा से स्पृष्ट और सम्बद्ध जैसे घ्राणेन्द्रियादि ग्राह्य रस और स्पर्श

२ त्वचा से स्पृष्ट हो किन्तु बद्ध न हो जैसे श्रोत्रेन्द्रि द्वारा पुद्गल।

८३ शब्द दो प्रकार के कहे गये है, यथा-
गृहीत और अगृहीत ।
इसी तरह इष्ट और अनिष्ट —यावत्— मनाम और अमनाम, शब्द जानने चाहिए ।
इसी तरह रूप, गध, रस और स्पश-प्रत्येक मे छ छ आलापक जानने चाहिये । [६] [३०]

८४ आचार दो प्रकार के कहे गये हैं, यथा-
ज्ञानाचार और नो-ज्ञानाचार ।
नो ज्ञानाचार दो प्रकार का कहा गया है, यथा-
दर्शनाचार और नो-दर्शनाचार ।
नो-दशनाचार दो प्रकार का कहा गया है, यथा-
चारित्राचार और नो चारित्राचार ।
नो चारित्राचार दो प्रकार का कहा गया है, यथा-
तपाचार और वीर्याचार, । [४]

प्रतिमाए (प्रतिज्ञाए) दो कही गई हैं, यथा-
समाधि प्रतिमा और उपधान प्रतिमा,
प्रतिमाए दो कही गई है, यथा-
विवेक प्रतिमा और व्युत्सर्ग प्रतिमा ।
ोमाए दो कही गई हैं, यथा-
दा और सुभद्रा ।

ाए दो कही गई हैं, यथा-
ाभद्र और सर्वतोभद्र ।
पुद् दो कही गई हैं, यथा-

दो प्रकार के जीव शुक्र (वीर्य) और शोणित (रक्त
उत्पन्न होते हैं, यथा-

मनुष्य और तिर्यंच पचेन्द्रिय। [१]

स्थिति दो प्रकार की कही गई है, यथा-

कायस्थिति और भवस्थिति।

दो प्रकार के जीवो की कायस्थिति कही गई है, यथा

मनुष्यो की और पचेन्द्रिय तियग्योनिको की[१]।

दो प्रकार के जीवो की भवस्थिति कही गई है, यथा

देवो की और नैरयिका की। [३]

आयु दो प्रकार की कही गई है, यथा-

अद्धायु (भव बदलने पर भी कालान्तरानुगामी जैसे मनु
ष्यायु) और भवायु (भव बदलने पर बदलनेवाली)

दो प्रकार के जीवो की अद्धायु कही गई है, यथा-

मनुष्यो की और पचेन्द्रिय तियग्योनिको की।

दो प्रकार के जीवा की भवायु कही गई है, यथा

देवो की और नैरयिको की।]३]

कम दो प्रकार के कहे गये है, यथा-

प्रदेश कम और अनुभाव कम। [१]

---

१ एकेन्द्रियादि की भी होती हैं लेकिन यहा दो की ही विवक्षा है।

२ बीच मे टूट सकने वाली

दो प्रकार के जीव यथाबद्ध आयुष्य पूर्ण करते हैं, यथा-
देव और नैरयिक । [१]

दो प्रकार के जीवो की आयु सापक्रमवाली कही है, यथा-
मनुष्यो की और पचेन्द्रिय तिर्यग्योनिको की । [१] [२८]

८६ जम्बूद्वीप मे मेरु पर्वत के उत्तर और दक्षिण मे अत्यन्त तुल्य, विशेषता रहित, विविधता रहित, लम्बाई-चौडाई आकार एव परिधि मे एक दूसरे का अतिक्रम नहीं करनेवाले दो वर्ष-क्षेत्र कहे गये हैं, यथा-
भरत और ऐरवत ।

इसी तरह हैमवत और हिरण्यवत, हरिवर्ष और रम्यक्वर्ष जानने चाहिए ।

इस जम्बूद्वीपवर्ती मेरु पर्वत के पूर्व और पश्चिम दिशा मे दो क्षेत्र कहे गये हैं जो अत्यन्त समान-विशेषता रहित हैं, यथा-
पूर्व विदेह और अपर विदेह,

जम्बूद्वीपवर्ती मेरु पर्वत के उत्तर और दक्षिण मे दो कुरु (क्षेत्र) कहे गये हैं जो परस्पर अत्यन्त समान हैं, यथा-
देवकुरु और उत्तरकुरु । [५]

वहा दो विशाल महावृक्ष हैं जो परस्पर सर्वथा तुल्य, विशेषता रहित विविधता रहित, लम्बाई, चौडाई, ऊँचाई, गहराई आकृति और परिधि मे एक दूसरे का अतिक्रम नहीं करते हैं, यथा-
कूट शाल्मली और जंबू सुदर्शना । [१]

वहा महाऋद्धि वाले-यावत महान् मुख वाले और पल्योपम की स्थिति वाले दो देव रहते हैं, यथा

वेणुदेव गरुड और अनाढिय ।

ये दोनो जम्बूद्वीप के अधिपति हैं । [१] [७]

८७ जम्बूद्वीप मे मेरु पवत के उत्तर और दक्षिण मे दो वप पवत कहे गये हैं, परस्पर सवथा समान, विशेपता रहि विविधता रहित, लम्बाई-चौडाई, ऊँचाई, गहराई, सस्थ और परिधि मे एक दूसरे का अतिक्रम नही करते है, यथ

लघु हिमवान् और शिखरी ।

इसी प्रकार महाहिमवान् और रुक्मि ।

निपध और नीलवान पवतो के सम्बन्ध म जानन चाहिये । [३]

जम्बूद्वीपवर्ती मेरु पवत के उत्तर और दक्षिण मे हैमवन और एरण्यवत क्षेत्र मे दो गोल वैताढ्य पवत हैं जो अति समान, विशेपता और विविधता रहित —यावत् — उनके नाम, यथा-

शब्दापाती और विकटपाती । [१]

वहा महा ऋद्धि वाले —यावत्— पल्यापम की स्थिति वाले दो देव रहते हैं यथा

स्वाति और प्रभास । [१]

जम्बूद्वीपवर्ती मेरु पवत क उत्तर और दक्षिण मे हरिवप और रम्यकवप मे दा गोल वैताढय पवत है जा अति समान हैं —यावत— जिनके नाम, यथा-

गन्धापाती और माल्यवत पर्याय । [१]

वहा महाऋद्धि वाले — यावत् पल्योपम की स्थिति वाले दो देव रहते हैं, यथा-

अरुण और पद्म । [१]

जम्बूद्वीपवर्ती मेरु पर्वत के दक्षिण मे और देवकुरु के पूर्व और पश्चिम मे अश्वस्कन्ध के समान अर्धचन्द्र की आकृति वाले दो वक्षस्कार पर्वत हैं जो परस्पर अति समान हैं —यावत्— उनके नाम ।

सौमनस और विद्युत्प्रभ ।

जम्बूद्वीपवर्त्ती मेरु पर्वत के उत्तर मे तथा कुरु के पूर्व और पश्चिम भाग मे अश्व स्कन्ध के समान, अर्धचन्द्र की आकृति वाले दो वक्षस्कार पर्वत है जो परस्पर अतिसमान है —यावत्–उनके नाम ।

गन्धमादन और माल्यवान ।

जम्बूद्वीपवर्त्ती मेरु पर्वत के उत्तर और दक्षिण में दो दो दीर्घ वैताढ्य पर्वत कहे गये हैं जो अतितुल्य हैं —यावत्— उनके नाम, यथा-

भरत दीर्घ वैताढ्य और ऐरवत दीर्घ वैताढ्य । [३]

उस भरत दीर्घ वैताढ्य मे दो गुफाए कही गई है जो अति तुल्य, अविशेष, विविधता रहित और एक दूसरी की लम्बाई, चौडाई, ऊचाई, सस्थान और परिधि में अतिक्रम न करनेवाली हैं, उनके नाम ।

तिमिस्र गुफा और खण्ड-प्रपात गुफा । [१]

वहा महर्धिक —यावत— पल्योपम की स्थिति वाले दं देव रहते है, उनके नाम ।

कृतमालक और नत्यमालक । [१]

ऐरवत-दीप वैताढ्य मे दो गुफाए हैं जो अतिसमान हैं —यावत्—वहां कृतमालक और नृत्यमालक देव रहते हैं।[

जम्बूद्वीपवर्ती मेरु पर्वत के दक्षिण मे लघुहिमवान वपध पवत पर दो कूट कहे गये है जो परस्पर अति तुल्य —यावत—लम्बाई-चोडाई, ऊचाई सस्थान और परिधि एक दूसर का अतिक्रमण नही करने वाले हैं, उनके नाम-यथा

लघुहिमवान्कूट और वैश्रमणकूट ।

जम्बूद्वीपवर्ती मेरु पवत के दक्षिण मे महाहिमवान वपधर पर्वत पर दो कूट कहे गये है जो परस्पर अनि तुल्य हैं उनके नाम-

महाहिमवन्कूट और वैडूयकूट ।

इसी तरह निपध वपधर पव त पर दो कूट कहे गये हैं जो अति तुल्य हैं —यावत्— उनके नाम ।

निपधकूट और रुचकप्रभकूट ।

जम्बूद्वीपवर्ती मेरु पवत के उत्तर में नीलवान वपधर पवत पर दो कूट हैं जो अति तुल्य हैं —यावत्— उनके नाम ।

नीलवतकूट और उपदशनकूट ।

इसी तरह रुक्मिकूट वपधर पर्वत पर दो कूट हैं जो अति

तुल्य है —यावत्— उनके नाम ।

रुक्मिकूट और मणिकाचनकूट ।

इसी तरह शिखरी वर्षधर पर्वत पर दो कूट है जो अति तुल्य हैं —यावत्— उनके नाम, यथा-

शिखरीकूट और तिगिच्छकूट । [६-१६]

८८ जम्बूद्वीपवर्ती मेरु पर्वत के उत्तर और दक्षिण में लघुहिमवान् और शिखरी वर्षधर पर्वतो मे दो महान् द्रह हैं जो अति सम, तुल्य, अविशेप, विचित्रतारहित और लम्बाई-चौडाई गहराई, सस्थान एव परिधि मे एक दूसरे का अतिक्रमण नहीं करने वाले है, उनके नाम ।

पद्म द्रह और पुण्डरीक द्रह । [१]

वहाँ महाऋद्धि वाली —यावत्— पल्योपम की स्थिति वाली दो देविया रहती है, उनके नाम ।

श्री देवी और लक्ष्मी देवी । [१]

इसी तरह महाहिमवान् और रुक्मि वर्षधर पर्वतो पर दो महाद्रह है जो अतिसमान हैं —यावत् — उनके नाम,

महापद्म द्रह और महापुण्डरिक द्रह । [१]

देवियो के नाम ।

ह्री देवी और बुद्धि देवी । [१]

इसी तरह निषध और नीलवान पर्वतो मे-

तिगिच्छ द्रह और केसरी द्रह । [१]

देवियाँ 'धृति' और कीर्ति । [१]

जम्बूद्वीपवर्ती मेरु पवत के दक्षिण मे महाहिमवान वपधर पवत के महापद्म दह मे से दो महानदिया प्रवाहित होती ह उनके नाम ।

राहिना और हरिकान्ता ।

इसी तरह निपध वपधर पवत के तिगिच्छ द्रह में से दो महानदियाँ प्रवाहित होनी हैं, उनके नाम ।

हरिता और शीतोदा ।

जम्बूद्वीपवर्ती मेरुपवत के उत्तर म नीलवान् वपधर पवत के केसरी द्रह मे से दो महानदिया प्रवाहित होती हैं, उनके नाम ।

शीता और नारीकान्ता ।

इसी तरह रुक्मि वपधर पवत क महापुण्डरीक द्रह मे मे दो महानदियाँ प्रवाहित होती हैं, उनके नाम ।

नरकान्ता और रूप्यकूला । [४]

जम्बूद्वीपवर्ती मेरु पवत के दक्षिण भरत क्षेत्र मे दो प्रपात दह है जो अतिसमान हैं —यावत— उनके नाम ।

गगाप्रपात द्रह और सिन्धुप्रपात द्रह ।

इसी तरह हैमवतवप म दो प्रपात द्रह है जो बहुसमान हैं —यावत— उनके नाम ।

रोहित प्रपात द्रह और रोहिताश-प्रपात द्रह ।

जम्बूद्वीपवर्ती मेरु पवत के दक्षिण मे हरिवष क्षेत्र मे दो प्रधान द्रह हैं जो अति समान है —यावत्— उनके नाम ।

हरि प्रपात द्रह और हरिकान्त प्रपात द्रह ।

जम्बूद्वीपवर्ती मेरु पवत के उत्तर और दक्षिण मे महाविदेह वर्ष मे दो प्रपात द्रह हैं जो अतिसमान हैं —यावत्— उनके नाम ।

शीता प्रपात द्रह और शीतोदा प्रपात द्रह ।

जम्बूद्वीपवर्ती मेरु पर्वत के उत्तर मे रम्यक् वप मे दो प्रपात द्रह है जो बहुसमान है —यावत्— उनके नाम ।

नरकान्त प्रपात द्रह और नारीकान्त प्रपात द्रह ।

इसी तरह हेरण्यवत मे दो प्रपात द्रह हैं उनके नाम ।

सुवणकूल प्रपात द्रह और रुप्यकूल प्रपात द्रह ।

जम्बूद्वीपवर्ती मेरु पवत के उत्तर मे ऐरवत वप मे दो प्रपात द्रह हैं और अतिसमान हैं —यावत्— उनके नाम

रक्त प्रपात द्रह और रक्तावती प्रपात द्रह । [७]

जम्बूद्वीपवर्ती मेरु पवत के दक्षिण मे भरत वप मे दो महानदियाँ हैं जो अतिसमान हैं । —यावत्— उनके नाम ।

गगा और सिन्धु ।

इसी तरह जितने प्रपात द्रह कहे गये हैं उतनी नदिया भी समझ लेनी चाहिए —यावत्—

ऐरवत वप मे दो महानदियाँ हैं जो अतिसमान तुल्य हैं

—यावत्— उनके नाम ।

रक्ता और रक्तवती [१४] [३१]

८९ जम्बूद्वीपवर्ती भरत और ऐरवत क्षेत्र मे अतीत उत्सर्पिणी के सुषम दु पम नामक आरे का काल दो क्रोडा क्रोडी सागरोपम का था ।

इसी तरह इस अवसर्पिणी के लिए भी समझना चाहिए ।

इसी तरह आगामी उत्सर्पिणी के —यावत् — सुषमदुषम आरे का काल दो क्रोडा क्रोडी सागरोपम होगा । [३]

जम्बूद्वीपवर्ती भरत-ऐरवत क्षेत्र मे गत उत्सर्पिणी के सुषम नामक आरे मे मनुष्य दो कोस की ऊ चाई वाले थे । [१]

तथा दो पल्योपम की आयु वाले थे । [१]

इसी तरह इस अवसर्पिणी म —यावत्— आयुष्य था । [२]

इसी तरह आगामी उत्सर्पिणी मे —यावत्— आयुष्य होगा । [२]

जम्बूद्वीप मे भरत और ऐरवत क्षेत्र मे एक समय मे एक युग मे दो अर्हत वश उत्पन्न हुये, उत्पन्न होते हैं और उत्पन्न होगे ।

इसी तरह चक्रवर्ती वश,

इसी तरह दशार वश । [३]

जम्बूद्वीपवर्ती भरत ऐरवत क्षेत्र मे एक समय मे दो अर्हन् उत्पन्न हुए, उत्पन्न होते हैं और उत्पन्न होगे ।

इसी तरह दशार और चक्रवर्ती ।

इसी तरह बलदेव और वासुदेव दशार वशी —यावत्

उत्पन्न हुए, उत्पन्न होते हैं और उत्पन्न होंगे। [३]
जम्बूद्वीपवर्ती दोनो कुरु क्षेत्र मे मनुष्य सदा सुषम-सुषम काल की उत्तम ऋद्धि को प्राप्त कर उनका अनुभव करते हुए रहते हैं, यथा-

देवकुरु और उत्तरकुरु।

जम्बूद्वीपवर्ती दो क्षेत्रो मे मनुष्य सदा सुषम काल की उत्तम ऋद्धि को प्राप्त करके उसका अनुभव करते हुए रहते हैं, यथा-

हरिवष और रम्यक्वर्ष।

जम्बूद्वीपवर्ती दो क्षेत्रो मे मनुष्य सदा सुषम दु षम की उत्तम ऋद्धि को प्राप्त करके उसका अनुभव करते हुए विचरते है, यथा-

हेमवत और हिरण्यवत।

जम्बूद्वीपवर्ती दो क्षेत्रो मे मनुष्य सदा दु षम सुषम की उत्तम ऋद्धि को प्राप्त करके उसका अनुभव करते हुए रहते है, यथा-

पूर्व-विदेह और अपर-विदेह।

जम्बूद्वीपवर्ती दो क्षेत्रो में मनुष्य छ प्रकार के काल का अनुभव करते हुए रहते हैं। यथा-

भरत और ऐरवत। [५-१७]

९० जम्बूद्वीप मे दो चन्द्रमा प्रकाशित होते थे, होते हैं और होते रहेंगे।

दो सूर्य तपते थे, तपते हैं और तपते रहेंगे।
दो कृत्तिका, दो रोहिणी, दो मृगशिर, दा आर्द्रा इस प्रकार निम्न गाथाओ के अनुसार सब वो दो जान लेने चाहिए।

अट्ठाइस नक्षत्र

१ दो कृत्तिका,	२ वो राहिणी,
३ दो मृगशिर,	४ दो आर्द्रा,
५ दो पुनवसु,	६ दो पुष्य,
७ दो अश्लेषा,	८ दो मघा,
९ दो पूर्वाफाल्गुनी,	१० दो उत्तराफाल्गुनी,
११ दो हस्त,	१२ दो चित्रा,
१३ दो स्वाती,	१४ दो विशाखा,
१५ दो अनुराधा,	१६ दो ज्येष्ठा,
१७ दो मूल,	१८ दा पूर्वाषाढा,
१९ दो उत्तराषाढा,	२० दो अभिजित,
२१ दो श्रवण,	२२ दो घनिष्ठा,
२३ दो शतभिशा,	२४ दो पूर्वा भाद्रापदा,
२५ दो उत्तारा भाद्रपदा,	२६ दो रेवती,
२७ दो अश्विनी,	२८ दो भरणी,

अट्ठाइस नक्षत्रो के देवता

१ दो अग्नि,	२ दो प्रजापति,

३ दो सोम, ४ दो रुद्र,
५ दो अदिति, ६ दो बृहस्पति,
७ दो सप, ८ दो पितृ,
९ दो भग, १० दो अयमन्,
११ दो सविता, १२ दो त्वष्टा,
१३ दो वायु, १४ दो इन्द्राग्नि,
१५ दो मित्र, १६ दो इन्द्र,
१७ दो निऋति, १८ दो आप,
१९ दो विश्व, २० दो ब्रह्मा,
२१ दो विष्णु, २२ दो वसु,
२३ दो वरुण, २४ दो अज,
२५ दो विवृद्धि, २६ दो पूषन्,
२७ दो अश्विन्, २८ दो यम

अठासी ग्रह

१ दो अगारक, २ दो विकालक,
३ दो लोहिताक्ष, ४ दो शनैश्चर,
५ दो आधुनिक, ६ दो प्राधुनिक,
७ दो कण, ८ दो कनक,
९ दो कनकनक १० दो कनकवितानक,
११ दो कनकसतानक, १२ दो सोम
१३ दो सहित १४ दो आससन,
१५ दो कार्योपग, १६ दो कवटक,

दो सूय तपते थे, तपते हैं और तपते रहेंगे।
दो कृत्तिका, दो रोहिणी, दो मृगशिर, दा आर्द्रा इस प्रकार निम्न गाथाओ के अनुसार सब दो दो जान लेने चाहिए।

अट्ठाइस नक्षत्र

१ दो कृत्तिका,
२ वो राहिणी,
३ दो मृगशिर,
४ दो आर्द्रा,
५ दो पुनवसु
६ दो पुष्य,
७ दो अश्लेषा,
८ दो मघा,
९ दो पूर्वाफाल्गुनी,
१० दो उत्तराफाल्गुनी,
११ दो हस्त,
१२ दो चित्रा,
१३ दो स्वाती,
१४ दो विशाखा,
१५ दो अनुराधा,
१६ दो ज्येष्ठा,
१७ दो मूल,
१८ दा पूर्वापाढा,
१९ दो उत्तरापाढा,
२० दो अभिजित्,
२१ दो श्रवण,
२२ दो धनिष्ठा,
२३ दो शतभिशा,
२४ दो पूर्वा भाद्रापदा,
२५ दो उत्तरा भाद्रपदा,
२६ दो रेवती,
२७ दो अश्विनी,
२८ दा भरणी,

अट्ठाइस नक्षत्रों के देवता

१ दो अग्नि,
२ दो प्रजापति,

३ दो सोम, ४ दो रुद्र,
५ दो अदिति, ६ दो बृहस्पति,
७ दो सर्प, ८ दो पितृ,
९ दो भग, १० दो अर्यमन्,
११ दो सविता, १२ दो त्वष्टा,
१३ दो वायु, १४ दो इन्द्राग्नि,
१५ दो मित्र, १६ दो इन्द्र,
१७ दो निर्ऋति, १८ दो आप,
१९ दो विश्व, २० दो ब्रह्मा,
२१ दो विष्णु, २२ दो वसु,
२३ दो वरुण, २४ दो अज,
२५ दो विवृद्धि, २६ दो पूषन्,
२७ दो अश्विन्, २८ दो यम

अठासी ग्रह

१ दो अंगारक, २ दो विकालक,
३ दो लोहिताक्ष, ४ दो शनैश्चर,
५ दो आधुनिक, ६ दो प्राधुनिक,
७ दो कण, ८ दो कनक,
९ दो कनकनक १० दो कनकवितानक,
११ दो कनकसतानक, १२ दो सोम
१३ दो सहित १४ दो आससन,
१५ दो कार्योपग, १६ दो कवटक,

१७ दो भजकरक,
१८ दो दुदुभग,
१९ दो शख,
२० दो शखवण,
२१ दो शखवर्णाभ,
२२ दो कस
२३ दो कसवण,
२४ दो कसवर्णाभ,
२५ दो रुक्मी,
२६ दो रुक्मीभास
२७ दो नील,
२८ दो नीलाभास,
२९ दो भास,
३० दो भासराशि,
३१ दो तिल,
३२ दो तिल पुष्पवण,
३३ दो उदक,
३४ दो उदकपचवण,
३५ दो काक,
३६ दो काकान्ध,
३७ दो इन्द्रग्रीव,
३८ दा धूमकेतु,
३९ दो हरि,
४० दो पिंगल,
४१ दो वुध,
४२ दो शुक्र,
४३ दो वृहस्पति,
४४ दा राहु,
४५ दो अगस्ति,
४६ दो माणवक
४७ दो कास,
४८ दा स्पश,
४९ दो धुरा,
५० दा प्रमुख,
५१ दो विकट,
५२ दो विसधि,
५३ दो नियल्ल,
५४ दा पदिक,
५५ दो जटिकादिलक,
५६ दो अरुण,
५७ दो अगिल,
५८ दा काल
५९ दो महाकाल,
६० दो स्वस्तिक,
६१ दो सौवस्तिक,
६२ दो वधमानक,

६३ दो पूपमानक ६४ दो अकुश)[1]
६५ दो प्रलब, ६६ दो नित्यालोक,
६७ दो नित्योद्योत, ६८ दो स्वयप्रभ,
६९ दो अवभाष, ७० दो श्रेयकर,
७१ दो क्षेमकर, ७२ दो आभकर,
७३ दो प्रभकर, ७४ दो अपराजित,
७५ दो अरत, ७६ दो अशोक
७७ दो विगतशोक ७८ दो विमल,
७९ दो व्यक्त, ८० दो वितथ्य,
८१ दो विशाल, ८२ दो शाल,
८३ दो सुव्रत, ८४ दो अनिवर्त,
८५ दो एकजटी, ८६ दो द्विजटी,
८७ दो करकरिक, ८८ दो राजार्गल,
८९ दो पुष्पकेतु और ९० दो भावकेतु। [१४८]

९१ जम्वुद्वीप की वेदिका दो कोस ऊची कही गई है। [१]
लवण समुद्र चक्रवाल विष्कभ से दो लाख योजन का कहा गया है। [१]
लवण समुद्र की वेदिका दो कोस की ऊची कही गई है। [१] [३]

९२ पूर्वार्ध घातकीखडवर्ती मेरु पर्वत के उत्तर और दक्षिण मे दो क्षेत्र कहे गये हैं जो अति समान है—यावत्—उनके नाम-
भरत और ऐरवत।
पहले जम्वूद्वीप के अधिकार मे कहा वैसे यहाँ भी कहना

१ ये नाम सूर्यप्रज्ञप्ति मे नहीं हैं।

चाहिए —यावत्— दो क्षेत्र मे मनुष्य छ प्रकार के काल का अनुभव करते हुए रहते हैं, उनके नाम-

भरत और ऐरवत । [५७]

विशेपता यह है कि वहाँ कूटशाल्मली और धातकी वक्ष हैं।

देवता गरुड (वेणुदेव) और सुदर्शन।

धातकी खड के पश्चिमार्ध मे और मेरु पर्वत के उत्तर-दक्षिण मे दो क्षेत्र कहे गये हैं जो परस्पर अति तुल्य हैं-यावत उनके नाम-

भरत और ऐरवत

—यावत्— दो क्षेत्रो मे मनुष्य छ प्रकार के काल का अनुभव करते हुए रहते हैं, यथा-

भरत और ऐरवत। [५७]

विशेपता यह है कि यहाँ कूटशाल्मली और महाधातकी वृक्ष हैं और देव गरुड वेणुदेव तथा प्रियदर्शन है।

धातकी खण्ड द्वीप की वेदिका दो कोस की ऊचाई वाली कही गई है। [१]

धातकीखड द्वीप मे

क्षेत्र

१ दो भरत, २ दो ऐरवत, ३ दो हिमवत,
४ दो हिरण्यवत, ५ दो हरिवर्ष, ६ दो रम्यकवर्ष,
७ दो पूर्व विदेह, ८ दो अपर विदेह, ९ दो देव कुरु।

वृक्ष

१० दो देवकुरु महावृक्ष, (कूटशाल्मली)

वृक्षवासी देव

११ दो देवकुरु महावृक्षवासी देव, (गरुडदेव)

क्षेत्र

१२ दो उत्तरकुरु,

वृक्ष

१३ दो उत्तरकुरु महावृक्ष,

वृक्षवासी देव

१४ दो उत्तरकुरु महावृक्षवासी देव,

वर्षधर पर्वत

१५ दो लघु हिमवत, १६ दो महा हिमवत,
१७ दो निषध, १८ दो नीलवत,
१९ दो रुक्मी, २०. दो शिखरी,

वृत्तवैताढ्य पर्वत

२१ दो शब्दापाती (हिमवत स्थित वृत्तवैताढ्य पर्वत)

पर्वतवासी देव

२२ दो शब्दापाती वासी "स्वातीदेव"

वृत्तवैताढ्य पर्वत

२३ दो विकटापाती (हिरण्यवत स्थित वृत्तवैताढ्य)

पवतवासी देव

२४ दो विकटापाती वासी "प्रभासदेव"

वृत्तवैताढ्य पवत

२५ दो गधापाती (हरिवर्ष स्थित वृत्त वैताढ्य पवत)

पर्वतवासी देव

२६ दो गधापाती वासी "अरुण देव"

वृत्तवैताढ्य पवत

२७ दो माल्यवान पवत (रम्यग्वष स्थित वृत्तवैताढ्य पवत)

पर्वतवासी देव

२८ दो माल्यवान वासी "पद्मदेव",

वक्षस्कार पवत

२९ दो माल्यवान (उत्तार कुरु के पूव पाश्व मे स्थित वक्षस्कार गजदत्त गिरि)।

३० दो चित्रकूट (शीता नदी के उत्तार तट पर स्थित वक्षस्कार पवत)।

३१ दो पद्मकूट (,, ,,)

३२ दो नलिनीकूट (,, ,,)

३३ दो एकशैल (,, ,,)

३४ दो त्रिकूट (शीतानदी के दक्षिण तट पर स्थित वक्षस्कार पवत)

३५ दो वैश्रमण कूट (,, ,,)

३६ दा अजन कूट (,, ,,)

३७ दो मातजनकूट (,, ,,)

३८ दो सौमनस (देवकुरु के पूव पार्वश मे स्थित्त वक्षस्कार गजदत गिरि)

३९ दो विद्युत्प्रभ (देवकुरु के पश्चिम पार्श्व मे स्थित ,,)

४० दो अकापाती कूट (शीतोदानदी के दक्षिण तट पर स्थित वक्षस्कार)

४१ दो पक्ष्मापाती कूट (,, ,,)

४२ दो आशीविष कूट (,, ,,)

४३ दो सुखावह कूट (,, ,,)

४४ दो चद्र पवत (शीतोदानदी के उत्तर तट पर स्थित वक्षस्कार)

४५ दो सूय पवत (,, ,,)

४६ दो नाग पवत (,, ,,)

४७ दो देव पर्वत (,, ,,)

४८ दो गधमादन (उत्तर कुरु के पश्चिम पार्श्व मे स्थित वक्षस्कार)

४९ दो इपुकार पर्वत[1] (धातकी खड को पूर्वाध और पश्चिमाध मे विभक्त करने वाला)

---

१ धातकी खड के मुख्य दो विभाग हैं—पूवार्ध और पश्चिमार्ध। उसे दो भागों मे विभक्त करने वाले दो इपुकार पवत हैं।

वपधर पवत कूट

५० दो लघु हिमवान कूट (हिमवान वपधर पवत का कूट)
५१ दो वैश्रमणकूट („ „)
५२ दो महाहिमवान कूट (महाहिमवान वपधर पवत का कूट)
५३ दो वैडय कूट („ „)
५४ दो निपध कूट (निपध वपधर पर्वत का कूट)
५५ दो रुचककूट (, „)
५६ दो नीलवत कूट (नीलवत वपधर पवत का कूट)
५७ दो उपदशन कूट („ „)

एक उत्तर मे और एक दक्षिण मे ।

उत्तर का 'इपुकार पवत" लवण समुद्र की जगती (प्राकार) मे उत्तर दिशा में रहे हुए "अपराजित द्वार" से लकर घातकी खड की जगती के उत्तर दिशा मे रहे हुए 'अपराजित द्वार" पयन्त लम्बा है। इसलिये वह चार लाख योजन (उत्तर दक्षिण मे) लम्बा फला हुआ है ।

दक्षिण का "इषुकार पवत" लवण समुद्र की जगती में दक्षिण दिशा मे रहे हुए, 'वैजयत द्वार" से लेकर घातकी खड की जगती मे दक्षिण दिशा मे रहे हुए वैजयत द्वार पयन्त लम्बा है । इसकी लम्बाई भी चार लाख योजन की है । इस प्रकार इन दो इषुकार पवतों से घातकी खड के पूर्वाध और पश्चिमाध ये दो विभाग हैं ।

५८ दो रुक्मीकूट (रुक्मी वर्षधर पवत का कूट)

५९ दो मणिकचन कूट („ „)

६० दो शिखरीकूट (शिखरी वषधर पर्वत का कूट „)

६१ दो तिगिच्छकूट („ „)

पर्वत-ह्रद

६२ दो पद्मह्रद (हिमवान वर्षघर पवत पर)

ह्रदवासी देवी

६३ दो पद्म ह्रदवासी "श्री देवी,"

पर्वत-ह्रद

६४ दो महापद्म ह्रद (महाहिमवान वषधर पवत पर)

ह्रदवासी देवी

६५ दो महापद्म ह्रदवासी "ह्री देवी",

पवत ह्रद

६६ दो पौंडरीक ह्रद (शिखरी वर्षधर पवत पर)

ह्रदवासी देवी

६७ दो पौंडरीक ह्रदवासी 'लक्ष्मी देवी",

पवत-ह्रद

६८ दो महा पौंडरीक ह्रद (रुक्मी वषधर पवत पर)

ह्रदवासी देवी

६९ दो महा पौंडरीक ह्रदवासी "बुद्धिदेवी"

पर्वत-ह्रद

७० दो तिगिञ्छ ह्रद (निषध वर्षधर पर्वत पर)

ह्रदवासी देवी

७१ दो तिगिञ्छ ह्रदवासी "धृतिदेवी",

पर्वत-ह्रद

७२ दो केसरी ह्रद (नीलवन वर्षधर पर्वत पर)

ह्रदवासी देवी

७३ दो केसरी ह्रदवासी "कीर्तिदेवी",

क्षेत्र-ह्रद

७४ दो गंगा प्रपात ह्रद	(भरत क्षेत्र मे)
७५ दो सिंधु प्रपात ह्रद	(,,)
७६ दो रोहिता प्रपात ह्रद	(हिमवत क्षेत्र मे)
७७ दो रोहितांश प्रपात ह्रद	(,,)
७८ दो हरि प्रपात ह्रद	(हरिवर्ष मे)
७९ दो हरिकांता प्रपात ह्रद	(,,)
८० दो शीता प्रपात ह्रद	(महाविदेह मे)
८१ दो शीतोदा प्रपात ह्रद	(,,)
८२ दो नरकांता प्रपात ह्रद	(रम्यक वर्ष में)
८३ दो नारीकांता प्रपात ह्रद	(,,)
८४ दो सुवर्ण कूला प्रपात ह्रद	(हिरण्यवत वर्ष मे)

८५ दो रूप्यकूला प्रपात ह्रद (,,)
८६ दो रक्ता प्रपात ह्रद (ऐरवत वर्ष मे)
८७ दो रक्तावती प्रपात ह्रद (,,)

महा नदियां[1]

८८ दो रोहिता महानदी (हिमवत वर्ष मे)
८९ दो हरिकांता ,, हरिवर्ष मे)
९० दो हरिसलिला ,, (,,)
९१ दो शीतोदा ,, (महाविदेह मे)
९२ दो शीता ,, (,,)
९३ दो नारीकांता ,, (रम्यग्वर्ष मे)
९४ दो नरकांता ,, (,,)
९५ दो रूप्यकूला ,, (हिरण्यवत वर्ष मे)

अंतर नदियां

९६ दो गाथावती (शीतानदी के उत्तर मे)
९७ दो द्रहवती (,,)
९८ दो पंकवती[2] (,,)
९९ दो तप्तजला (शीतानदी के दक्षिण मे)
१०० दो मत्तजला (,,)

---

१ गंगा, सिंधु, रोहितांशा, सुवर्णकूला, रक्ता और रक्तवती ये महानदियां भी धातकी खंड मे दो दो हैं—देखिये सूत्र ८८।
२ अन्य ग्रन्थों में इसका "वेगवती" नाम भी मिलता है।

१०१	दो उन्मत्त जला	(,,)
१०२	दो क्षारोदा[1]	(शीतोदा नदी के दक्षिण मे)
१०३	दो सिंह स्रोता[2]	(,,)
१०४	दो अन्तोवाहिनी	(,,)
१०५	दो उर्मिमालिनी	(शीता दानदी के उत्तर मे)
१०६	दो फेनमालिनी[3]	(,,)
१०७	दो गभीर मालिनी	(,,)

चक्रवर्ती विजय

१०८	दो कच्छ	(शीता नदी के	उत्तर मे)
१०९	दो सुकच्छ	(,,	,,)
११०	दो महाकच्छ	(,,	,,)
१११	दो कच्छकावती	(,,	,,)
११२	दो आवत	(,,	,,)
११३	दो मगलावर्त	(,,	,)
११४	दो पुष्कलावत	(,,	,,)
११५	दो पुष्कलावती	(,,	,,)

---

१ इसका "क्षीरोदा" नाम भी अन्य ग्रन्थों मे मिलता है।

२ इसका "शीत स्रोता" नाम भी अन्य ग्रथों मे मिलता है।

३ फेनमालिनी और गभीर मालिनी ये दोनो नाम क्रम व्यत्यय से भी मिलते हैं।

११६ दो वत्स	(शीता नदी के दक्षिण मे स्थित)	
११७ दो सुवत्स	(,, ,,)	
११८ दो महावत्स	(,, ,,)	
११९ दो वत्सावती	(,, ,,)	
१२० दो रम्य	(,, ,,)	
१२१ दो रम्यक्	(,, ,,)	
१२२ दो रमणिक	(,, ,,)	
१२३ दो मगलावती	(,, ,,)	
१२४ दो पद्म	(शीतोदा नदी के दक्षिण मे स्थित)	
१२५ दो सुपद्म	(,, ,,)	
१२६ दो महापद्म	(,, ,,)	
१२७ दो पद्मावती	(,, ,,)	
१२८ दो शख	(,, ,,)	
१२९ दो कुमुद	(,, ,,)	
१३० दो नलिन	(,, ,,)	
१३१ दो नलिनावती	(,, ,,)	
१३२ दो वप्र	(शीतोदा नदी के उत्तर मे स्थित)	
१३३ दो सुवप्र	(,, ,,)	
१३४ दो महावप्र	(,, ,,)	
१३५ दो वप्रावती	(,, ,,)	
१३६ दो वल्गु	(,, ,,)	

१३७ दो सुवल्गु	(,,	,,)	
१३८ दो गधिल	(,,	,,)	
१३९ दा गधिलावती	(,,	,,)	

चक्रवर्ती विजय-राजधानियाँ

१४० दो क्षेमा	(शीता नदी के उत्तर मे	स्थित)
१४१ दो क्षेमपुरी	(,,	,,)
१४२ दो रिष्टा	(,,	,,)
१४३ दा रिष्टपुरी	(,,	,,)
१४४ दा खड्गी	(,,	,)
१४५ दो मजुषा	(,,	,,)
१४६ दो औषधि	(,,	,,)
१४७ दा पौंडरिकिणी	(,,	,,)
१४८ दो सुसीमा	(,,	,,)
१४९ दो कुंडला	(,	,,)
१५० दो अपराजिता	(,,	,,)
१५१ दो प्रभकरा	(,,	,,)
१५२ दो अकावती	(,,	,,)
१५३ दो पद्मावती	(,,	,,)
१५४ दो शुभा	(,,	,,)
१५५ दो रत्नसचया	(,,	,,)

१५६ दो अश्वपुरा (शीतोदा नदी के दक्षिण मे स्थित)
१५७ दो सिंहपुरा (,, ,,)
१५८ दो महापुरा (,, ,,)
१५९ दो विजयपुरा (,, ,,)
१६० दो अपराजिता (,, ,,)
१६१ दो अपरा (, ,,)
१६२ दो अशोका (,, ,,)
१६३ दो वीतशोका (,, ,,)
१६४ दो विजया (शीतोदा नदी के उत्तर मे स्थित)
१६५ दो वैजयती (,, ,,)
१६६ दो जयती (,, ,,)
१६७ दो अपराजिता (,, ,,)
१६८ दो चक्रपुरा (,, ,,)
१६९ दो खड्गपुरा (,, ,,)
१७० दो अवध्या (, ,,)
१७१ दो अयोध्या (,, ,,)

मेरु पवत पर वन खड

१७२ दो भद्रशाल वन, १७३ दो नदन वन,
१७४ दो सौमनस वन, १७५ दो पढक वन,

मेरु पवत पर शिला

१७६ दो पाडुकवल शिला, १७७ दो अतिकवल शिला,

१७८ दो रक्तकबल शिला, १७९ दो अतिरक्तकबल शिला,

पवत

१८० दो मेरु पवत

पवत-चूलिका

१८१ दो मेरु पर्वत की चूलिका [२९६]

९३ कालोदधि समुद्र की वेदिका दो कोस की ऊचाई वाली कही गई है। [१]

पुष्करवर द्वीपाध के पूर्वाध मे मेरु पवत के उत्तर और दक्षिण मे दो क्षेत्र कहे गये हैं जो अति, तुल्य, हैं यावत उनके नाम—

भरत और ऐरवत।

इसी तरह —यावत्— दो कुरु कहे गये हैं, यथा-

देव कुरु और उत्तर कुरु।

वहाँ दो विशाल महाद्रुम कह गये हैं, उनके नाम-

कूटशाल्मली और पद्म वृक्ष

देव गरुड वेणुदेव और पद्म —यावत्— वहाँ मनुष्य छ प्रकार के काल का अनुभव करते हुए रहते हैं। [५७]

पुष्करवर द्वीपार्ध के पश्चिमाध मे और मेरु पवत के उत्तर दक्षिण में दो क्षेत्र कहे गये हैं इत्यादि पूर्ववत्।

विशेषता यह है कि वहाँ कूटशाल्मली और महापद्म वृक्ष है और देव गरुड (वेणुदेव) और पुण्डरिक हैं।

पुष्करवरद्वीपार्ध मे दो भरत, दो ऐरवत —यावत्— दो मेरु और दो मेरु चूलिकाए है। [५७]
पुष्करवर द्वीप की वेदिका दो कोस की ऊची कही गई है। सब द्वीप-समुद्रो की वेदिकाए दो कोस की ऊचाई वाली कही गई हैं। [२] [१७७]

दस भवनपती के बीस इन्द्र

९४ असुर कुमारेन्द्र दो कहे गये हैं, यथा-
चमर और बलि।
नागकुमारेन्द्र दो कहे गये हैं, यथा-
धरन और भूतानन्द।
सुवर्णकुमारेन्द्र दो कहे गये हैं, यथा-
वेणुदेव और वेणुदाली।
विद्युत्कुमारेन्द्र दो कहे गये हैं, यथा-
हरि और हरिसह।
अग्निकुमारेन्द्र दो कहे गये है, यथा-
अग्निशिख और अग्निमाणव।
द्वीपकुमारेन्द्र दो कहे गये हैं, यथा-
पूर्ण और वाशिष्ठ।
उदधिकुमारेन्द्र दो कहे गये है, यथा-
जलकान्त और जलप्रभ।
दिक्कुमारेन्द्र दो कहे गये हैं, यथा-
अमितगति और अमितवाहन।

वायुकुमारेन्द्र दा कहे गये है, यथा
वेलम्ब और प्रभजन ।
स्तनितकुमारेन्द्र दो कहे गय है, यथा-
घोप और महाघोप । [१०]

सोलह व्यन्तरो के बत्तीस इन्द्र

पिशाचेन्द्र दो कहे गये हैं, यथा-
काल और महाकाल ।
भूतेन्द्र दो कहे गये है, यथा-
सुरूप और प्रतिरूप ।
यक्षेन्द्र दो कहे गये है, यथा-
पूणभद्र और माणिभद्र ।
राक्षसेन्द्र दो कहे गये हैं, यथा-
भीम और महाभीम ।
किन्नरेन्द्र दो कहे गये है, यथा-
किन्नर और किंपुरुष ।
किंपुरुषेन्द्र दो कहे गये है, यथा-
सत्पुरुष और महापुरुष ।
महोरगेन्द्र दो कहे गये है, यथा-
अतिकाय और महाकाय ।
गन्धर्वेन्द्र दो कहे गये है, यथा-
गीतरति और गीतयश ।
अणपन्निकेन्द्र दो कहे गये हैं, यथा-

सन्निहित और समान्य ।

पणपन्निकेन्द्र दो कहे गये हैं, यथा-

धात और विहात ।

ऋषिवादीन्द्र दो कहे गये हैं, यथा-

ऋपि और ऋपिपालक ।

भूतवादीन्द्र दो कहे गये है, यथा-

ईश्वर और महेश्वर ।

क्रन्दितेन्द्र दो कहे गये है, यथा-

सुवत्स और विशाल ।

महाक्रन्दितेन्द्र दो कहे गये हैं, यथा-

हास्य और हास्यरति ।

कुभाडेन्द्र दो प्रकार के कहे गये हैं, यथा-

श्वेत और महाश्वेत ।

पतगेन्द्र दो कहे गये हैं, यथा-

पतय और पतयपति । [१६]

ज्योतिषी देवो के दो इन्द्र

ज्योतिष्क देवो के दो इन्द्र कहे गये हैं, यथा-

चन्द्र और सूय । [१]

बारह देवलोकों के दस इन्द्र

सौधर्म और ईशान कल्प मे दो इन्द्र कहे गये हैं, यथा-

शक्र और ईशान ।

सनत्कुमार और माहेन्द्र मे दो इन्द्र कहे गये हैं, यथा-

सनत्कुमार और माहेन्द्र ।

ब्रह्मलोक और लान्तक कल्प मे दो इन्द्र कहे गये है, यथा

ब्रह्म और लान्तक ।

महाशुक्र और सहस्रार कल्प मे दो इन्द्र कहे गये हैं, यथा

महाशुक्र और सहस्रार ।

आनत, प्राणत, आरण और अच्युत कल्प मे दो इन्द्र कहे गये हैं, यथा-

प्राणत और अच्युत [५]

इस प्रकार सब मिलकर चौसठ इन्द्र होते हैं

महाशुक्र और सहस्रार कल्प मे विमान दो वण के कहे गये हैं, यथा-

पीले और श्वेत । [१]

ग्रैवेयक देवो की ऊचाई दो हाथ की है । [१] [३४]

चतुर्थ उद्देशक

९५ समय[1] अथवा आवलिका[2] जीव[3] और अजीव[4] कहे

१ काल का सबसे सूक्ष्म भाग ।

२ असख्यात समय अथवा एक श्वास का सख्यातवां भाग

३ जीव का धर्म होने से ।

४ अजीव का धम होने से ।

जाते है ।[1]

श्वासोच्छ्वास अथवा स्तोक[2] जीव और अजीव कहे जाते है ।

इसी तरह—लव,

मुहूर्त[3] और अहोरात्र

पक्ष और मास

ऋतु और अयन

सवत्सर और युग

सौ वप और हजार वर्ष

लाख वप और क्रोड वर्ष

त्रुटिताग और त्रुटित

पूर्वांग[4] अथवा पूर्व[5]

---

१ जीव और अजीव का समयादि स्थिति लक्षण धर्म है धर्म और धर्मी मे अत्यन्त भेद नहीं है अत धम और धर्मी के अभेद को लक्ष्य में रखकर समयादि को जीव या अजीव रूप कहा जाता है ।

२ सात श्वासोच्छ्वास प्रमाणकाल ।

३ [क] सात स्तोकप्रमाण काल ।

[ख] ७७ लव अथवा दो घडी अथवा ३७७३ श्वासोच्छ्वास जितना काल ।

४ चोरासी लाख वष ।

५ चोरासी लाख पूव ।

अडडांग और अडड

अववांग और अवव

हूहूतांग और हूहूत

उत्पलांग और उत्पल

पद्मांग और पद्म

नलिनांग और नलिन

अक्षनिकुरांग और अक्षनिकुर

अयुतांग और अयुत

नियुतांग और नियुत

प्रयुतांग और प्रयुत,

चूलिकांग और चूलिक,

शीर्ष प्रहेलिकांग और शीर्ष प्रहेलिका,

पल्योपम और सागरोपम, [४६]

उत्सर्पिणी और अवसर्पिणी जीव और अजीव कहे जाते हैं।

ग्राम अथवा नगर,

निगम (वणिक निवास),

राजधानी

खेडा (ग्राम से बडा और नगर से छोटा, धूल की बाहर दीवारों युक्त)

कवट (कुत्सित नगर)

मडम्ब (जिसके चारों ओर एक योजन तक कोई गांव न

हो ऐसी वस्ती)
द्रोणमुख (जल और स्थल दोनो मार्ग वाला)
पत्तन (जहाँ जल या स्थल माग मे से कोई एक हो ऐसा श्रेष्ठ नगर)
आकर (खान)
आश्रम,
सवाह (जहाँ कृपक लोग धान्यादि को रक्षा के लिए ले जाकर रखते है ऐसे दुग-विशेष)
सन्निवेश (यात्रियोकाया सेनादि का पडाव)
गोकुल,
आराम (स्त्री पुरुपो के लिए उद्यान विशेप)
उद्यान (विविध वृक्षो से शोभित)
वन (एक जातीय वृक्षोका समूह)
वनखड (अनय जातीय वृक्ष)
वावडी (चतुष्कोण)
पुष्करिणी (गोल वावडी अयवा जिसमे कमल हो ऐसी वावडी)
सरोवर, सरवरो की पक्ति कूप, तालाब, ह्रद, नदी, रत्नप्रभादिक पृथ्वी, घनोदधि, वातस्कन्ध (घनवात तनुवात), अय पोलार (वातस्कन्ध के नीचे का आकाश जहाँ सूक्ष्म पृथ्वीकाय के जीव भरे हैं)
वलय (पृथ्वी के घनोदधि, घनवात, तनुवातरूप वेष्टन)

विग्रह (लोकनाडी)

द्वीप, समुद्र, वेला, (समुद्र के जल का बढना)

वेदिका, द्वार, तोरण,

नैरयिक (कम-पुदगल की अपेक्षा से अजीवत्व समझना चाहिये) नरकवास,

वैमानिक, वैमानिको के श्रावास, (देवलोक) कल्पविमाना वास,

वप (भरत आदि क्षेत्र) वर्षधर पवत, कूट, कूटागार,

विजय (चक्रवर्त्ती के जीते हुए कच्छादि क्षेत्र)

राजधानी ये सब जीवाजीवात्मक होने से) जीव और अजीव कहे जाते हैं।

छाया, आतप, ज्योत्स्ना (चांदनी), अ धकार, अवमान (क्षेत्रादि को मापने के हस्तादि साधन) उ मान (ताल वगैरह) अतियान गृह (राजा आदि के नगर म धमधाम से प्रवेश करने के गृह) उद्यानगृह, अवलिम्ब (स्थाना-विशेप) सणिप्पवाय (वस्तु विशेप) ये सब जीव और अजीव कहे जाते है, (जीव श्रौर अजीव से व्याप्त होने के कारण अभेदनय की अपेक्षा से जीव या श्रजीव कहे जाते है) । [५७]

९६ दो राशियां कही गयी है, यथा-

जीव-राशि और अजीव राशि । [१]

वध दो प्रकार के कहे गये है, यथा-

राग-वध और द्वेप-वघ।

जीव दो प्रकार से पाप कर्म बाधते हैं, यथा-

राग से और द्वेप से [२]

जीव दो प्रकार से पाप कर्मों की उदीरणा करते हैं, यथा-

आभ्युपगमिक (स्वेच्छा से स्वीकृत केशलुंचन तपश्चर्या आदि से होने वाली) वेदना से

औपक्रमिक (कर्मोदय के कारण ज्वर, अतिसार आदि से होने वाली) वेदना से। [१]

इसी तरह दो प्रकार से जीव कर्मों का वेदन करते है एव निजरा करते हैं, यथा-

आभ्युपगमिक वेदना से और औपक्रमिक वेदना से। [१-५]

६७ दो प्रकार से आत्मा शरीर का स्पश करके वाहर निकलती है, यथा

देश से-शरीर के अमुक भाग अथवा अमुक अवयव का स्पश करके आत्मा वाहर निकलती है।

सव से सम्पूर्ण शरीर का स्पश करके आत्मा वाहर निकलती है।

इसी तरह स्फुरण (स्पदन) करके

स्फोटन (फोडकर) करके,

सकोचन करके

शरीर से अलग होकर आत्मा वाहर निकलती है। [४]

६८ दो प्रकार से आत्मा को केवलि-प्ररूपित धम सुनने के लिए मिलता है, यथा-

कम कर्मों के क्षय से अथवा उपशम से ।

इसी प्रकार —यावत् — दो कारणो से जीव को मन पर्याय ज्ञान उत्पन्न होता है, यथा-

(आवरणीय कम के) क्षय से अथवा उपशम से । [१०]

९९ औपमिक (उपमा के द्वारा गम्य) काल दो प्रकार का कहा गया है, यथा —

प्रश्न—पल्योपम और सागरोपम,

उत्तर—पल्योपम का स्वरूप क्या है ?

पल्योपम का स्वरूप इस प्रकार है । यथा-

एक योजन विस्तार वाले पल्य (धान्य-मापने का पात्र) मे एक दिन के (यावत् उत्कृष्ट सात दिन के) उगे हुए बाल निरतर एव निविड रूप से ठूस ठूस कर भर दिए जाय और सो सो वर्ष मे एक एक बाल निकालने से जितने वर्षो मे वह पल्य खाली हो जाय उतने वर्षो के काल को एक पल्यापम समझना चाहिए । ऐसे दस क्रोडा क्रोडी पल्योपम का एक सागरोपम होता है । [१]

१०० क्रोध दो प्रकार का कहा गया है, यथा

आत्मप्रतिष्ठित और परप्रतिष्ठित ।

'अपने आप पर होने वाला या अपने द्वारा उत्पन्न किया हुआ क्रोध क्रोध आत्म प्रतिष्ठित है ।'

दुसरे पर होने वाला या उसके द्वारा उत्पन्न किया हुआ

क्रोध पर प्रतिष्ठित है ।

इसी प्रकार नारक —यावत्— वैमानको को उक्त दो प्रकार मान माया —यावत्— मिथ्यादर्शनशल्य भी दो प्रकार का समझना चाहिए । [१३]

१०१ ससार समापन्नक 'ससारी' जीव दो प्रकार कहे गये हैं, यथा-

त्रस और स्थावर,

सब जीव दो प्रकार के कहे गये हैं, यथा-

सिद्ध और असिद्ध ।

सब जीव दा प्रकार के कहे गये है, यथा-

सेन्द्रिय और अनिन्द्रिय ।

इस प्रकार सशरीरी और अशरीरी पयन्त निम्न गाथा से समझना चाहिए । यथा-

सिद्ध, सेन्द्रिय, सकाय, सयोगी, सवेदी, सकषायी, सलेश्य, ज्ञानी, साकारोपयुक्त, आहारक, भाषक, चरम, सशरीरी ये और प्रत्येक का प्रतिपक्ष इस रूप से दो-दो प्रकार समझन चाहिए । [२६]

१०२ श्रमण भगवान् महावीर ने श्रमण निग्रन्थो के लिए दो पकार के मरण सदा (उपादेय रूप से) नहीं कहे हैं, कीर्तित नहीं कहे हैं, व्यक्त नही कहे हैं, प्रशस्त नही कहे

है और उनके आचरण की अनुमति नही दी है, यथा-

वलदमरण (सयम से खेद पाकर मरना)

वशार्त मरण (इन्द्रिय-विषयो के वश होकर पतग की तरह मरना)।

इसी तरह निदान मरण (ऋद्धि भोग आदि की कामना करके मरना) और तदभव मरण (उसी गति का आयुष्य बाधकर मरना)।

पर्वत से गिरकर मरना और वृक्ष से गिरकर मरना।

पानी मे डूबकर मरना और अग्नि मे जलकर मरना।

विष का भक्षण कर मरना और शस्त्र का प्रहार कर मरना। [४]

दो प्रकार के मरण —यावत्— नित्य अनुज्ञात नही हैं किन्तु कारण-विशेष (शील रक्षा आदि के लिए) होने पर निषिद्ध नही है, वे इस प्रकार है, यथा-

वैहायस मरण (वृक्ष की शाखा वगैरह पर लटक कर गले मे फासी लगा लेना) और गृध्रपृष्ठ मरण (किसी बडे प्राणी के मृत कलेवर मे प्रवेश कर गीध आदि पक्षियो से शरीर नुचवा कर मरना)। [१]

श्रमण भगवान् महावीर ने दो मरण श्रमण निग्रन्थो के लिए सदा उपादेय रूप से वर्णित किये है —यावत— उनके लिए अनुमति दी है, यथा-

पादपोपगमन और भक्तप्रत्याख्यान ।

पादपोपगमन दो प्रकार का कहा गया है, यथा-

निर्हारिम (ग्राम नगर आदि मे मरना जहा मृत्यु सस्कार हो)

अनिर्हारिम (गिरि कन्दरादि मे मरना जहाँ मृत्यु सस्कार न हो) ।

भक्तप्रत्याख्यान दो प्रकार का कहा गया है, यथा-

निर्हारिम और अनिर्हारिम, [३]

१०३ **प्रश्न** — यह लोक क्या है ?

उत्तर—जीव और अजीव ही यह लोक है अर्थात् लोक जीवाजीवात्मक है ।

प्रश्न—लोक मे अनन्त क्या है ?

उत्तर—जीव और अजीव,

प्रश्न — लोक मे शाश्वत क्या है ?

उत्तर — जीव और अजीव (द्रव्यार्थिक नय की अपेक्षा से ।)

१०४ बोधि (सम्यक्त्व) दो प्रकार की है , यथा—

ज्ञान-बोधि और दर्शन बोधि । [१]

बुद्ध दो प्रकार के है, यथा-

ज्ञान बुद्ध और दर्शन-बुद्ध । [१]

इसी तरह मोह को समझना चाहिए । [१]

इसी तरह मूढ को समझना चाहिए । [१-४]

१०५ ज्ञानावरणीय कम दो प्रकार का है, यथा-

देश ज्ञानावरणीय और सव ज्ञानवरणीय।

दशनावरणीय कम भी इसी तरह दो प्रकार का है।

वेदनीय कम दो प्रकार का कहा गया है, यथा

सातावेदनीय और असातावेदनीय।

मोहनीय कम दो प्रकार का कहा गया है, यथा-

दशन मोहनीय और चारित्र मोहनीय।

आयुष्य कम दो प्रकार का कहा गया है यथा

अद्धायु (कायस्थति) और भवायु (भवस्थिति)।

नाम कम दो प्रकार का कहा गया है, यथा

शुभ नाम और अशुभ नाम।

गोत्र कम दो प्रकार का कहा गया है, यथा

उच्च गोत्र और नीच गोत्र।

अतराय कम दो प्रकार का कहा गया है, यथा-

प्रत्युत्पन्न विनाशी (वतमान मे होन वाले लाभ को नष्ट करन वाला)

पिहितागामीपथ (भविष्य मे होने वाले लाभ को रोकने वाला) [८]

१०६ मर्छा दो प्रकार की कही गया है यथा-

प्रेम-प्रत्यया 'राग से होने वाली'

द्वेष प्रत्यया 'द्वेष से होने वाली'

प्रेम प्रत्यया मूर्छा दो प्रकार का कहा गई है, यथा-

माया और लोभ ।

द्वेष प्रत्यया मूर्छा दो प्रकार की कही गई है, यथा-

क्रोध और मान । [३]

१०७ आराधना दो प्रकार की कही गई है । यथा-

धार्मिक आराधना और केवलि आराधना ।

धार्मिक आराधना दो प्रकार की कही गई है । यथा-

श्रुतधर्म आराधना और चारित्र धर्माराधना ।

केवलि आराधना दो प्रकार की कही गई है, यथा-

अन्तक्रिया (मोक्षगमन)

कल्पविमानोपपत्ति (सौधर्मादि देवलोक और नवग्रेवयक आदि निमान में जिसके द्वारा जन्म हो वह आराधना । यह आराधना श्रुतकेवली की होती है । [३]

१०८ दो तीर्थंकर नील-कमल के समान वर्ण वाले थे, यथा-

मुनिसुव्रत और अरिष्टनेमि ।

दो तीर्थङ्कर प्रियगु (वृक्ष-विशेप) के समान वर्ण वाले थे, यथा-

श्री मल्लिनाथ और पाश्वनाथ,

दो तीर्थङ्कर पद्म के समान गौर (लाल) वर्ण के थे, यथा-

पद्म प्रभ और वासुपुज्य ।

दो तीर्थङ्कर चन्द्र के समान गौर वर्ण शुक्ल वर्ण वाले थे, यथा-

चन्द्रप्रभ और पुष्पदन्त । [४]

१०९ सत्यप्रवाद पूर्व (छठा पूर्व) की दो वस्तुए (अध्ययन आदि की तरह विभाग) कही गई है ।

११० पूर्वभाद्रपद नक्षत्र के दो तारे कहे गये है ।
उत्तरभाद्रपद नक्षत्र के दो तारे कहे गये हैं ।
इसी तरह पूर्वफाल्गुन और उत्तरफाल्गुन के भी दो दो तारे कहे गये हैं, [४]

१११ मनुष्य-क्षेत्र के अन्दर दो समुद्र कहे गये है, यथा-
लवण समुद्र और कालोदधि समुद्र ।

११२ काम भोगो का त्याग नही करने वाले दो चक्रवर्ती मरण काल मे मरकर नीचे सातवी नरक-पृथ्वी के अप्रतिष्ठान नामक नरकवास म नारकरूप से उत्पन्न हुए, उनके नाम य है, यथा-

सुभूम और ब्रह्मदत्त ।

११३ असुरेन्द्रो को छोडकर भवनवासी देवो को किंचित न्यून दो पल्योपम की स्थिति कही गई है ।
सौधर्म कल्प मे देवताओ की उत्कृष्ट स्थितिदो सागरोपम की कही गई है ।
ईशान कल्प मे देवताओ की उत्कृष्ट किंचित् अधिक दो

सागरोपम की स्थिति कही गई है ।

सनत्कुमार कल्प मे देवों की जघन्य दो सागरोपम की स्थिति कही गई है ।

माहेन्द्र कल्प में देवो की जघन्य स्थिति किंचित् अधिक दो सागरोपम की कही गई है ।

११४ दो देवलोक मे देविया कही गई हैं, यथा-
सौधम और ईशान ।

११५ दो देवलोक मे तेजोलेश्या वाले देव कहे गये है, यथा-
सौधम और ईशान ।

११६ दो देवलोक मे देव कायपरिचारक (मनुष्य की तरह विषय सेवन करन वाले) कहे गये हैं, यथा-
सौधम और ईशान,

दो देवलोक मे देव स्पश परिचारक कहे गये हैं, यथा-
सनत्कुमार और माहेन्द्र ।

दो कल्प मे देवरूप-परिचारक कहे गये हैं, यथा-
ब्रह्म लोक और लान्तक ।

दो कल्प मे देव शब्द-परिचारक कहे गये हैं, यथा-
महाशुक्र और सहास्रर ।

दो इन्द्र मन परिचारक कहे गये है, यथा-
प्राणत और अच्युत ।

आनत, प्राणत, आरण और अच्युत इन चारो कल्पो मे

देव मन परिचारक हैं परन्तु यहाँ द्विस्थान का अधिकार होन से "दो इदा" ऐसा पद दिया है, क्योकि इन चारो कल्पो मे दो इन्द्र हैं अत उनके ग्रहणसे चारो कल्पो के देवो को ग्रहण करना चाहिए)

११७ जीव ने द्विस्थान निवतक (अथवा इन कथ्यमान स्थानो मे जन्म लेकर उपार्जित अथवा इन दो स्थानो मे जन्म लेने से निवत्ति होन वाले) पुद्गलो को पापकम रूप से एकत्रित किये हैं, एकत्रित करते हैं और एकत्रित करेंगे, वे इस प्रकार हैं, यथा-

त्रसकाय निर्वतित और स्थावरकाय निर्वतित।

इसी तरह उपचय किये, उपचय करते हैं और उपचय करेंगे,

बाधे, बाधते हैं और बाधेंगे,

उदीरणा की, उदीरणा करते हैं और उदीरणा करेंगे,

वेदन, वेदन करते है और वेदन करेंगे,

निजरा की निजरा करते है और निजरा करेगे। [७६]

११८ दो प्रदेश वाले स्कन्ध अनन्त कहे गये हैं।

दो प्रदेश मे रहने वाले पुदगल अनन्त कहे गय हैं।

इस प्रकार-यावत् द्विगुण रूक्ष पुद्गल अनन्त कहे गये हैं।

तीन स्थान

प्रथम उद्देशक

११९ इन्द्र तीन प्रकार के कहे गये है, यथा-

नाम इन्द्र, स्थापना इन्द्र, द्रव्य इन्द्र ।

इन्द्र तीन प्रकार के कहे गये हैं, यथा-

ज्ञान इन्द्र, दशन इन्द्र और चारित्र इन्द्र [1]

इन्द्र तीन प्रकार के कहे गये है, यथा-

देवेन्द्र, असुरेन्द्र और मनुष्येन्द्र[2] [३]

१२० विकुवणा तीन प्रकार की कही गई है, यथा-

एक वाह्य पुद्गलो को ग्रहण करके की जाने वाली विकुर्वणा,

एक वाह्य पुद्गलो को ग्रहण किये विना की जाने वाली विकुवणा,

एक वाह्य पुदगलो को ग्रहण करके और ग्रहण किये विना भी की जाने वाली विकुर्वणा ।

विकुवणा तीन प्रकार की कही गई है, यथा-

एक आभ्यन्तर पुदगलो को ग्रहण करके की जाने वाली विकुर्वणा,

---

१ आत्मिक ऐश्वय की अपेक्षा ।

२ वाह्य ऐश्वय की अपेक्षा ।

एक आभ्यन्तर पुद्गलो को ग्रहण किये विना की जाने वाली विकुवणा,

एक आभ्यन्तर पुदगलो को ग्रहण करके और ग्रहण किये बिना भी की जाने वाली विकुवणा।

विकुवणा तीन प्रकार की कही गई है, यथा-

एक बाह्य और आभ्यन्तर पुदगलो को ग्रहण करके की जाने वाली विकुवणा,

एक बाह्य आभ्यन्तर पुद्गलोको ग्रहण किये विना की जाने वाली विकुवणा

एक बाह्य तथा आभ्यन्तर पुदगलो को ग्रहण करके और विना ग्रहण किये भी की जाने वाली विकुवणा। [३]

२२१ नारक तीन प्रकार के कहे गये है, यथा-

कतिसचित—एक समय म दो से लेकर सख्यात तक उत्पन्न होने वाले,

अकतिसचित—एक समय मे असख्यात उत्पन्नहोने वाले,

अवक्तव्यक सचित—एक समय मे एक ही उत्पन्न होने वाले।

इस प्रकार एकेन्द्रिय को छोड कर शेप अकतिसचित ही हैं। क्योकि वे एक समय म असख्यात या अनन्त उत्पन्न होते हैं

इसी तरह वैमानिक पर्यन्त तीन भेद जानने चाहिए।

१२२ परिचारणा (देवो का विषय-सेवन) तीन प्रकार की कही गई है, यथा-

कोई देव अन्य देवो का या अन्य देवो की देवियो को वश मे करके या आलिगनादि करके विषय सेवन करता है, अपनी देवियो को आलिगन कर विषय-सेवन करता है और अपने शरीर की विकुर्वणा कर अपने आप से ही विषय सेवन करता है।

कोई देव अन्य देवो और अन्य देवो की देवियो को वश मे करके तो विषय सेवन नही करता है परन्तु अपनी देवियो का आलिगन कर विषय-सेवन करता है।

कोई देव अन्य देवो और अन्य देवो की देवियो को वश मे करके विषय सेवन नही करता है और न अपनी देवियो का आलिगनादि करके भी विषय-सेवन करता है

१२३ मैथुन तीन प्रकार का कहा गया है। यथा-

देवता सम्बन्धी,

मनुष्य सम्बन्धी

तिर्यच योनि सम्बन्धी।

तीन प्रकार के जीव मैथुन करते है, यथा-

देव, मनुष्य और तिर्यंच योनिक जीव।

तीन वेद वाले जीव मैथुन सेवन करते हैं, यथा-

स्त्री पुरुष और नपुसक। [३]

१२४ योग तीन प्रकार के कहे गये हैं, यथा-

मनोयोग, वचनयोग और काययोग।

इस प्रकार नारक जीवो के तीन योग होते हैं,

यो विकलेन्द्रिय को छोडकर वैमानिक पयन्त तीन याग

समझने चाहिए। [१]

तीन प्रकार के प्रयोग (प्रवृत्ति) कह गये हैं, यथा-

मन प्रयोग, वाक् प्रयोग और काय प्रयाग।

जैसे विकलेन्द्रिय को छोडकर योग का कथन किया वैसा

ही प्रयोग के विपय मे भी जानना चाहिये। [१]

करण तीन प्रकार के कहे गये है, यथा

मन करण, वचन करण और काय करण

इसी तरह विकलेन्द्रिय को छोडकर वैमानिक पयन्त

तीन करण जानने चाहिए। [१]

कारण तीन प्रकार के कहे गये है, यथा-

आरम्भ करण सरम्भ करण और समारम्भ करण।

यह अन्तर रहित वैमानिक पयन्त जानन चाहिए। [१-३]

१२५ तीन कारणो मे जीव अल्पायु रूप कम का बध करते हैं

यथा-

यदि वह प्राणियो की हिंसा करता है,

झूठ बोलता है,

और तथारूप श्रमण-माहन को (निग्रन्थ मुनि को) अप्रासुक अशन आहार, पान, खादिम तथा स्वादिम वहराता है,

इन तीन कारणो से जीव अल्पायु रूप कर्म का बंध करते हैं। [१]

तीन कारणो से जीव दीर्घायु रूप कर्मों का बंध करते हैं, यथा-

यदि वह प्राणियो की हिंसा नही करता है,

झूठ नहीं बोलता है,

तथारूप श्रमण-माहन को प्रासुक एषणीय अशन, पान, खादिम तथा स्वादिम का दान करता है, ।

इन तीन कारणो से जीव दीर्घायु रूप कर्म का बंध करते है। [१]

तीन कारणो से जीव अशुभ दीर्घायु रूप कर्म का बंध करते हैं। यथा

यदि वह प्राणियो की हिंसा करता हैं,

झूठ बोलता है,

तथारूप श्रमण-माहन की हीलना करके निन्दा करके, भत्सना करके, गर्हा करके और अपमान करके किसी प्रकार का अमनोज्ञ एव अप्रीतिकर अशनादि देता है, इन तीन कारणो से जीव अशुभ दीर्घायु रूप कर्म का बध करते हैं। [१]

तीन कारणो से जीव शुभ दीर्घायु रूप कर्म का बध करते है। यथा-

यदि वह प्राणियो की हिंसा नही करता है,

झूठ नही बोलता है

तथारूप श्रमण माहन को वन्दना करके, नमस्कार करके, सत्कार करके, सम्मान करके, कल्याणरूप, मंगलरूप, देवरूप और ज्ञानरूप मानकर तथा सेवा-शुश्रूषा करके मनोज्ञ प्रीतिकर, अशन, पान, खादिम, स्वादिम का दान करता है

इन तीन कारणो से जीव शुभदीर्घायुरूप कर्म का बध करते है। [१-४]

१२६ तीन गुप्तियाँ कही गई है यथा-

मनोगुप्ति वचनगुप्ति और कायगुप्ति।

सयत मनुष्यो की तीन गुप्तिया कही गई है, यथा-

मनोगुप्ति, वचनगुप्ति और कायगुप्ति। [२]

तीन अगुप्तिया कही गई हैं, यथा-

मन-अगुप्ति, वचन-अगुप्ति और काय-अगुप्ति,

इसी प्रकार नारक यावत्-स्तनितकुमारो की तीन अगुप्तिया कही गई हैं, यथा-

पचेन्द्रिय, तिर्यंच, योनिक, असयत, मनुष्य और वान-व्यन्तर, ज्योतिष्क वैमानिक देवो की तीन अगुप्तिया कही गई हैं। [२]

तीन दण्ड कहे गये है, यथा-

मन दण्ड, वचन दण्ड और काय दण्ड।

नारको के तीन दण्ड कहे गय हैं, यथा-

मन दण्ड, वचन दण्ड और काय दण्ड।

विकलेन्द्रियो (एकेन्द्रिय से चतुरिन्द्रिय तक) को छोड़ कर वैमानिक पयन्त तीन दण्ड जानने चाहिए। [२-६]

१२७ तीन प्रकार की गर्हा कही गई हैं, यथा-

कुछ व्यक्ति मन से गर्हा करते हैं,

कुछ व्यक्ति वचन से गर्हा करते हैं,

कुछ व्यक्ति पाप कम नही करके काया द्वारा गर्हा करते हैं (पाप कम मे प्रवृत्ति नही करना ही काय-गर्हा है)

अथवा गर्हा तीन प्रकार की कही गई है, यथा-

कितनेक दीघ काल की गर्हा करते है,

कितनेक थाडे काल की गर्हा करते हैं,

कितनेक पाप कम नही करने के लिए अपन शरीर को उनसे (पाप कर्मों से) दूर रखत है अर्थात पाप कम मे प्रवृत्ति नही करन। रूप गर्हा करते है । [२]

प्रत्याख्यान तीन प्रकार के हैं, यथा-

कुछ व्यक्ति मन के द्वारा प्रत्याख्यान करते है,

कुछ व्यक्ति वचन के द्वारा प्रत्याख्यान करते हैं,

कुछ व्यक्ति काया के द्वारा प्रत्याख्यान करते हैं।

जिस प्रकार गर्हा का कथन किया उसी प्रकार प्रत्याख्यान के विषय मे भी दो आलापक कहन चाहिए। [१४]

१२८ वृक्ष तीन प्रकार के कहे गये हैं यथा-

पत्रयुक्त, फलयुक्त और पुष्पयुक्त । [१]

इसी तरह तीन प्रकार के पुरुप कह गये ह, यथा-

पत्र वाले वृक्ष के समान,

फल वाले वृक्ष के समान,

फूल वाले वृक्ष के समान । [१]

तीन प्रकार के पुरुप कहे गये हैं यथा-

नाम पुरुप, स्थापना पुरुप और द्रव्य पुरुप । [१]

तीन प्रकार के पुरुप कहे गये है, यथा-

ज्ञान पुरुष, दर्शन पुरुष और चारित्र पुरुष। [१]

तीन प्रकार के पुरुष कहे गये है, यथा-

वेद पुरुष, चिन्ह पुरुष और अभिलाप पुरुष [१]

तीन प्रकार के पुरुष कहे गये है, यथा-

उत्तम पुरुष, मध्यम पुरुष और जघन्य पुरुष।

उत्तम पुरुष तीन प्रकार के कहे गये है, यथा

धर्म पुरुष, भोग पुरुष और कम पुरुष।

धर्म पुरुष अर्हन्त देव हैं,

भोग पुरुष चक्रवर्ती है,

कर्म पुरुष वासुदेव हैं।

मध्यम पुरुष तीन प्रकार के कहे गये है, यथा

उग्र वशी, भोग वशी, और राजन्य वशी।

जघन्य पुरुष तीन प्रकार के कहे गये है, यथा-

दास, भृत्य और भागीदार। [४-६]

१२९ मत्स्य (मच्छ) तीन प्रकार के कहे गये है, यथा-

अण्डे से उत्पन्न होने वाले,

पोत से (बिना किसी आवरण के) पैदा होने वाले,

सर्मूछिम (सयोग के बिना)स्वत उत्पन्न होने वाले।

अण्डज मत्स्य तीन प्रकार के है, यथा-

स्त्री मत्स्य, पुरुष मत्स्य और नपुसक मत्स्य।

कितनेक दीघ काल की गर्हा करते ह,

कितनेक थाडे काल की गर्हा करते हैं,

कितनेक पाप कम नही करने के लिए अपन शरीर को उनसे (पाप कर्मों से) दूर रखन ह अर्थात पाप कम मे प्रवृत्ति नही करना रूप गर्हा करते है। [२]

प्रत्याख्यान तीन प्रकार के है, यथा-

कुछ व्यक्ति मन के द्वारा प्रत्याख्यान करत ह

कुछ व्यक्ति वचन के द्वारा प्रत्याख्यान करत ह

कुछ व्यक्ति काया के द्वारा प्रत्याख्यान करत ह।

जिस प्रकार गर्हा का कथन किया उसी प्रकार प्रत्याख्यान के विषय मे भी दो आलापक कहन चाहिए। [१६]

१२८ वृक्ष तीन प्रकार के कह गय हैं यथा-

पत्रयुक्त, फलयुक्त और पुष्पयुक्त। [१]

इसी तरह तीन प्रकार के पुरुष कह गय ह यथा

पत्र वाले वृक्ष के समान

फल वाले वृक्ष के समान,

फूल वाल वृक्ष के समान। [२]

तीन प्रकार के पुरुष कह गये ह यथा-

नाम पुरुष, स्थापना पुरुष और द्रव्य पुरुष। [१]

तीन प्रकार के पुरुष कह गये ह, यथा-

ज्ञान पुरुष, दर्शन पुरुष और चारित्र पुरुष । [१]

तीन प्रकार के पुरुष कहे गये हैं, यथा-

वेद पुरुष, चिन्ह पुरुष और अभिलाप पुरुष [१]

तीन प्रकार के पुरुष कहे गये हैं, यथा-

उत्तम पुरुष, मध्यम पुरुष और जघन्य पुरुष ।

उत्तम पुरुष तीन प्रकार के कहे गये हैं यथा

धर्म पुरुष, भोग पुरुष और कर्म पुरुष ।

धर्म पुरुष अर्हन्त देव हैं,

भोग पुरुष चक्रवर्ती है,

कर्म पुरुष वासुदेव हैं ।

मध्यम पुरुष तीन प्रकार के कहे गये हैं, यथा-

उग्र वंशी, भोग वंशी, और राजन्य वंशी ।

जघन्य पुरुष तीन प्रकार के कहे गये हैं, यथा-

दास, भृत्य और भागीदार । [४-९]

१२९ मत्स्य (मच्छ) तीन प्रकार के कहे गये हैं, यथा-

अण्डे से उत्पन्न होने वाले,

पोत से (बिना किसी आवरण के) पैदा होने वाले,

सम्मूर्छिम (संयोग के बिना) स्वत उत्पन्न होने वाले ।

अण्डज मत्स्य तीन प्रकार के है, यथा-

स्त्री मत्स्य, पुरुष मत्स्य और नपुंसक मत्स्य ।

पोतज मत्स्य तीन प्रकार के हैं, यथा-
स्त्री, पुरुष और नपुसक। [३]
पक्षी तीन प्रकार के कहे गये है, यथा-
अण्डज, पोतज और सम्मूर्छिम।
अण्डज पक्षी तीन प्रकार के है, यथा-
स्त्री, पुरुष और नपुसक।
पोतज पक्षी तीन प्रकार के हैं, यथा-
स्त्री, पुरुष और नपुसक।
इस अभिलापक से उरपरिसप और भुजपरिसप का भी
कथन करना चाहिए। [३-१२]

१३० इसी प्रकार तीन प्रकार की स्त्रिया कही गई हैं, यथा
तिर्यंच योनिक स्त्रिया
मनुष्य योनिक स्त्रिया
देव-स्त्रिया। [१]
तिर्यंच स्त्रिया तीन प्रकार की कही गई है, यथा-
जलचर स्त्री, स्थलचर स्त्री, खेचर स्त्री। [१]
मनुष्य-स्त्रिया तीन प्रकार की है यथा-
कर्मभूमि मे पैदा होने वाली,
अकर्मभूमि मे पैदा होने वाली
अतर्द्वीप मे उत्पन्न होने वाली। [१]

पुरुष तीन प्रकार के कहे गये हैं, यथा-

तिर्यंचयोनिक पुरुष,

मनुष्ययोनिक पुरुष

देव पुरुष । [१]

तिर्यंचयोनिक पुरुष तीन प्रकार के कहे गये हैं, यथा

जलचर, स्थलचर और खेचर । [१]

मनुष्ययोनिक पुरुष तीन प्रकार के हैं, यथा

कर्मभूमि मे उत्पन्न होने वाले,

अकर्मभूमि मे उत्पन्न होने वाले,

अन्तर्द्वीपो मे पैदा होने वाले । [१]

नपुसक तीन प्रकार के हैं, यथा-

नैरयिक नपुंसक,

तिर्यंचयोनिक नपुसक,

मनुष्य नपुसक । [१]

तिर्यंचयोनिक नपुसक तीन प्रकार के हैं यथा

जलचर, स्थलचर और खेचर । [१-८]

मनुष्य नपुसक तीन प्रकार के हैं, यथा-

कर्मभूमिज अकर्मभूमिज और अन्तर्द्वीपिक । [१]

१३१ तिर्यंच योनिक तीन प्रकार के कहे गये हैं, यथा-

स्त्री, पुरुष और नपुसक ।

१३२ नारक जीवों की तीन लेश्याए कही गई है, यथा-

कृष्ण लेश्या, नील लेश्या और कापोत लेश्या।

असुरकुमारों की तीन अशुभ लेश्याए कही गई है,[1] यथा-

कृष्ण लेश्या, नील लेश्या और कापोत लेश्या।

इसी प्रकार स्तनितकुमार पर्यन्त जानना चाहिए।

इसी प्रकार पृथ्वीकायिक अप्कायिक और वनस्पति कायिक जीवो की लेश्या समझना चाहिए।

इसी प्रकार तेजस्काय और वायुकाय की लेश्या भी जाननी चाहिए।

द्वीन्द्रिय,

त्रीन्द्रिय,

और चतुरिन्द्रिया के भी तीन लेश्याए नारक जीवो के समान कही गई है।

पचेन्द्रिय तिर्यचयोनिकों के तीन अशुभ लेश्याए कही गई है। यथा-

कृष्णलेश्या नीललेश्या और कापोतलेश्या।

---

१ असुरकुमारो की चार लेश्याए होती हैं, परन्तु चौथी तेजोलेश्या अशुभ नहीं है अत यहा तीन अशुभ लेश्याए ही गिनाई गई है।

पचेन्द्रिय तिर्यचयोनिको के तीन लेश्याए शुभ कही गई है।

यथा-

तेजोलेश्या, पद्मलेश्या और शुक्ललेश्या।

इसी प्रकार मनुष्यों के भी तीन लेश्या समझनी चाहिए।

असुरकुमारो के समान वानव्यन्तरो के भी तीन लेश्या समझनी चाहिए।

वैमानिको के तीन लेश्याए कही गई है, यथा-

तेजोलेश्या, पद्मलेश्या और शुक्ललेश्या। [१]

१३३ तीन कारणों से तारे अपने स्थान से चलित होते हैं, यथा-

वैक्रिय करते हुए,
विपय-सेवन करते हुए,
एक स्थान से दूसरे स्थान पर सक्रमण करके जाते हुए
तारे चलित होते हैं। [१]

तीन कारणो से देव विद्युत् चमकाते हैं, यथा-

वैक्रिय करते हुए,
विपय-सेवन करते हुए
तथारूप श्रमण-माहन को ऋद्धि, द्युति, यश, वल, वीय, और पौरुप पराक्रम वताते हुए विद्युत् चमकाते है। [१]

तीन कारणो से देव मेघ गर्जना करते है, यथा-

वैक्रिय करते हुए जिस प्रकार विद्युत् चमकाने के लिए

कहा वैसा ही मेघ गजना के लिए भी समझना चाहिए । [१-३]

१३४ तीन कारणो से (तीन प्रसगो पर) लोक मे अधकार होता है, यथा-

अहन्त भगवान् के निर्वाण-प्राप्त होने पर[1]

अहन्त-प्ररूपित धम (तीथ) के विच्छिन्न होने पर,

पूवगत श्रुत के विच्छिन्न होने पर । [१]

तीन कारणो से लोक मे उद्योत होता है, यथा

अहन्त भगवान के जन्म धारण करते समय,

अहन्त के प्रव्रज्या अगीकार करते समय,

अहन्त भगवान् के केवल ज्ञान महोत्सव के समय । [१]

तीन कारणो से देव-भवनो मे भी अधकार होता है, यथा

अहन्त भगवान के निर्वाण प्राप्त होने पर,

अहन्त प्ररूपित धम का विच्छेद होने पर,

पूवगत श्रुत के विच्छिन्न होने पर ।

तीन प्रसगो पर देवलोक मे विशेष उद्योत होता है, यथा

अहन्त भगवतो के जन्म महोत्सव पर,

अहन्तो के दीक्षा महोत्सव पर,

अहन्तो के केवलज्ञान महोत्सव पर । [१]

तीन प्रसगो पर देव इस पृथ्वी पर आते हैं, यथा

---

१ लोक मे अहन्तरूप भाव सूय के न होने पर ।

अर्हन्तो के जन्म महोत्सव पर,

उनके दीक्षा महोत्सव पर,

उनके केवल ज्ञान महोत्सव पर। [१]

इसी तरह देवताओ का समूह रूप मे एकत्रित होना और देवताओ का हर्षनाद भी समझना चाहिए। [२]

तीन प्रसगो पर देवेन्द्र मनुष्य लोक मे शीघ्र आते है, यथा-

अर्हन्तों के जन्म महोत्सव पर,

उनके दीक्षा महोत्सव पर,

उनके केवल ज्ञान महोत्सव पर। [१]

इसी प्रकार—
सामानिक देव,
त्रायस्त्रिशक देव,
लोकपाल देव,
अग्रमहिषीदेवियो की पर्षद् (परिवार) के देव,
सेनाधिपति देव,
आत्मरक्षक देव मनुष्य लोक मे शीघ्र आते है। [६]

तीन प्रसगो पर देव सिंहासन से उठते हैं, यथा-

अर्हन्तों के जन्म महोत्सव पर,

उनके दीक्षा महोत्सव पर,

उनके केवलज्ञान-प्रसग महोत्सव पर।[१]

कहा वैसा ही मेघ गजना के लिए भी समझना चाहिए। [१-३]

१३४ तीन कारणो से (तीन प्रसगो पर) लोक मे अधकार होता है, यथा-

अर्हन्त भगवान् के निर्वाण-प्राप्त होने पर[1]
अर्हन्त-प्ररूपित धम (तीथ) के विच्छिन्न होने पर,
पूवगत श्रुत के विच्छिन्न होने पर। [१]

तीन कारणो से लोक मे उद्योत होता है, यथा-

अर्हन्त भगवान् के जन्म धारण करते समय,
अर्हन्त के प्रव्रज्या अगीकार करते समय,
अर्हन्त भगवान् के केवल ज्ञान महोत्सव के समय। [१]

तीन कारणो से देव-भवनो मे भी अन्धकार होता है, यथा

अर्हन्त भगवान् के निर्वाण प्राप्त होने पर,
अर्हन्त प्ररूपित धम का विच्छेद होने पर,
पूवगत श्रुत के विच्छिन्न होने पर।

तीन प्रसगो पर देवलाक में विशेप उद्योत होता है, यथा

अर्हन्त भगवतो के जन्म महोत्सव पर,
अर्हन्तो के दीक्षा महोत्सव पर,
अर्हन्तो के केवलज्ञान महोत्सव पर। [१]

तीन प्रसगो पर देव इस पृथ्वी पर आते हैं, यथा-

---

१ लोक मे अर्हन्तरूप भाव सूय के न होने पर।

अर्हन्तो के जन्म महोत्सव पर,

उनके दीक्षा महोत्सव पर,

उनके केवल ज्ञान महोत्सव पर। [१]

इसी तरह देवताओ का समूह रूप मे एकत्रित होना और देवताओ का हर्षनाद भी समझना चाहिए। [२]

तीन प्रसगो पर देवेन्द्र मनुष्य लोक मे शीघ्र आते है, यथा-

अर्हन्तो के जन्म महोत्सव पर,

उनके दीक्षा महोत्सव पर,

उनके केवल ज्ञान महोत्सव पर। [१]

इसी प्रकार—

सामानिक देव,

त्रायस्त्रिंशक देव,

लोकपाल देव,

अग्रमहिषीदेवियो की पर्षद् (परिवार) के देव,

सेनाधिपति देव,

आत्मरक्षक देव मनुष्य लोक में शीघ्र आते है। [६]

तीन प्रसगो पर देव सिंहासन से उठते हैं, यथा-

अर्हन्तो के जन्म महोत्सव पर,

उनके दीक्षा महोत्सव पर,

उनके केवलज्ञान-प्रसग महोत्सव पर।[१]

इसी तरह तीन प्रसगो पर उनके आसन चलायमान होते है, वे सिंह नाद करते हैं और वस्त्र-वृष्टि करते हैं। [३]

तीन प्रसगो पर देवताओ के चैत्यवृक्ष चलायमान होते हैं, यथा-

अर्हन्तो के जन्म महोत्सव पर। इत्यादि पूर्ववत् [१]

तीन प्रसगो पर लोकान्तिक देव मनुष्य-लोक मे शीघ्र आते है, यथा-

अर्हन्तो के जन्म महोत्सव पर,

उनके दीक्षा महोत्सव पर

उनके केवलज्ञान महोत्सव पर। [१ १९]

१३५ हे आयुष्मन् श्रमणो! तीन व्यक्तियो पर प्रत्युपकार कठिन है, यथा-

माता पिता स्वामी (पोषक) और धर्माचार्य।
कोई पुरुष (प्रतिदिन) प्रात काल होते ही माता पिता को शतपाक, सहस्रपाक तेल से मर्दन करके सुगन्धित उबटन लगाकर तीन प्रकार के (गन्धोदक उष्णोदक, शीतोदक) जल से स्नान करा कर, सब अलकारो से विभूषित करके मनोज्ञ, हाडी मे पकाया हुआ, शुद्ध अठारह प्रकार के व्यजनो (शाकादि) से युक्त भोजन जिमाकर यावज्जीवन कावड मे बिठाकर कधे पर

लेकर फिरता रहे तो भी उपकार का वदला नही चुका सकता है किन्तु वह माता पिता को केवलि प्ररूपित धम वताकर, समझाकर और प्ररूपणा कर उसमे स्थापित करे तो ऐसा करने से वह उन माता पिता के उपकार का सुचारु रूप से वदला चुका सकता है।

कोई महा ऋद्धिवाला पुरुप किसी दरिद्र को धन आदि देकर उन्नत वनाए तदनन्तर वह दरिद्र धनादि से समृद्ध बनने पर उस सेठ के असमक्ष अथवा समक्ष ही विपुल भोग सामग्री से युक्त होकर विचरता हो, इसके वाद वह ऋद्धिवाला पुरुप कदाचित् (दैवयोग से) दरिद्र वन कर उस (पूव के) दरिद्र के पास शीघ्र आवे उस समय वह (पहले का) दरिद्र (वतमान का श्रीमन्त) अपने इस स्वामी को सवस्व देता हुआ भी उसके उपकार का वदला नही चुका सकता है किन्तु वह अपन स्वामी को केवलिप्ररूपित धर्म वता कर समझाकर और प्ररूपणा कर उसमे स्थापित करता है तो इससे वह अपने स्वामी के उपकार का भलीभाति वदला चुका सकता है।

कोई व्यक्ति तथारूप श्रमण-माहन के पास से एक भी आय (श्रेष्ठ) धार्मिक सुवचन सुनकर समझकर मृत्यु

तीन प्रकार की उपधि समझनी चाहिये। [२]

अथवा तीन प्रकार की उपधि कही गई है, यथा

सचित्त, अचित्त और मिश्र।

इस प्रकार निरन्तर नैरयिक जीवो को यावत्-वैमानिको को तीनो ही प्रकार की उपधि होती है। [२४]

परिग्रह तीन प्रकार का कहा गया है, यथा-

कर्म परिग्रह,

शरीर परिग्रह

बाह्य-भाण्डोपकरण-परिग्रह।

असुरकुमारो का तीनो प्रकार का परिग्रह होता है। यो एकेन्द्रिय और नारक को छोड कर वैमानिक पर्यन्त समझना चाहिए। [२]

अथवा तीन प्रकार का परिग्रह कहा गया है, यथा

सचित्त, अचित्त और मिश्र।

निरन्तर नैरयिक यावत्—विमानवासी देवो को तीनो प्रकार का परिग्रह होता है। [२-४]

१३९ तीन प्रकार का प्रणिधान (एकाग्रता) कहा गया है यथा-

मन प्रणिधान, वचन प्रणिधान और काय-प्रणिधान।

यह तीन प्रकार का प्रणिधान पचेन्द्रियो से लेकर वैमा

निक पर्यन्त सब दण्डकों में पाया जाता है। [२]

नीन प्रकार का सुप्रणिधान कहा गया है, यथा-

मन का सुप्रणिधान,

वचन का सुप्रणिधान,

काय का सुप्रणिधान।

सयत मनुष्यो का तीन प्रकार का सुप्रणिधान कहा गया है, यथा—

मनका सुप्रणिधान

वचन का सुप्रणिधान

काय का सुप्रणिधान। [२]

तीन प्रकार का अशुभ प्रणिधान कहा गया है, यथा-

मन का अशुभ प्रणिधान

वचन का अशुभ प्रणिधान,

काय का अशुभ प्रणिधान।

यह पचेन्द्रिय से लेकर वैमानिक पर्यन्त होता है। [२०६]

१४० योनि तीन प्रकार की कही गई है, यथा-

शीत, उष्ण और शीतोष्ण।

यह तेजस्काय को छोड कर शेष एकेन्द्रिय, विकलेन्द्रिय सम्मूर्छिम तियञ्च योनिक पचेन्द्रिय और सम्मूर्छिम मनुष्यो को होती है। [२]

योनि तीन प्रकार की कही गई है, यथा-

सचित्त, अचित्त और मिश्र ।

यह एकेन्द्रियो, विकलेन्द्रियो सम्मूछिम तियचयोनिक पचेन्द्रियो और सम्मूछिम मनुष्यो को होती है । [२]

योनि तीन प्रकार की कही गई है, यथा —

सवृता, विवृता और सवृत-विवृना ।

योनि तीन प्रकार की कही गई है, यथा

कूर्मोन्नता, शखावर्त्ता और वशीपत्रिका ।

उत्तम पुरुपो की माताओ की कूर्मोन्नता योनि होती है। कूर्मोन्नता योनि मे तीन प्रकार के उत्तम पुरुप गभ रूप में उत्पन्न होते हैं, यथा-

अहन्त चक्रवर्ती और वलदेव-वासुदेव

चक्रवर्ती के स्त्रीरत्न की योनि शखावत्त होती है। शखावत्त यानि में बहुत से जीव और पुद्गल पैदा होते हैं, एव नष्ट होते हैं किन्तु जन्म धारण नही करते है ।

वशीपत्रिकायोनि सामान्य मनुष्यो की योनि है । वशी पत्रिका योनि मे बहुत से सामान्य मनुष्य गभरूप में उत्पन्न होते है । [२-६]

१४१ तृण (वादर) वनस्पतिकाय तीन प्रकार की कही गई है, यथा-

सख्यात जीव वाली, असख्यात जीव वाली, अनन्त जीव वाली ।

१४२ जम्बूद्वीपवर्ती भरतक्षेत्र मे तीन तीर्थ कहे गये है, यथा-
मागध, वरदाम और प्रभास ।
इसी तरह ऐरवत क्षेत्र मे भी समझने चाहिए ।
जम्बूद्वीपवर्ती महाविदेह क्षेत्र मे एक एक चक्रवर्ती विजय मे तीन तीर्थ कहे गये हैं,[1] यथा-

मागध, वरदाम और प्रभास ।

इसी तरह घातकीखण्ड द्वीप के पूर्वार्ध मे और पश्चिमार्ध में तथा अर्धपुष्करवरद्वीप के पूर्वार्ध में और पश्चिमार्ध मे भी इसी तरह जानना चाहिये । [७]

१४३ जम्बूद्वीपवर्ती भरत और ऐरवत क्षेत्र मे अतीत उत्सर्पिणी काल के सुषम नामक आरक का काल तीन कोडाकोडी सागरोपम था ।
इसी तरह इस अवसर्पिणी काल के सुषम आरक का काल इतना ही (तीन कोडाकोडी सागरोपम) कहा गया है ।
आगामी उत्सर्पिणी के सुषम आरक का काल इतना ही होगा । [६]

---

१ चक्रवर्ती के समुद्र तथा सीतादि महानदियों मे उतरने के मार्ग को तीर्थ कहते हैं ।

इसी तरह धातकीखण्ड के पूर्वार्ध मे और पश्चिमार्ध मे भी। [६]

इसी तरह अर्ध पुष्करवर द्वीप के पूर्वार्ध और पश्चिमार्ध मे भी काल का कथन करना चाहिए। [६]

जम्बूद्वीपवर्ती भरत ऐरवत क्षेत्र मे अतीत उत्सर्पिणी काल के सुषमसुषमा आरे मे मनुष्य तीन कोस की ऊचाई वाले और तीन पल्योपम के परमायुष्य[1] वाले थे।

इसी तरह इस अवसर्पिणी काल और आगामी उत्सर्पिणी काल मे भी समझना चाहिए। [६]

जम्बूद्वीपवर्ती देवकुरु और उत्तरकुरु मे मनुष्य तीन कोस की ऊचाई वाले कहे गये है तथा वे तीन पल्योपम की परमायु वाले है। [२]

इसी तरह अर्धपुष्करवर द्वीप के पश्चिमार्ध तक का कथन करना चाहिए। [२]

जम्बूद्वीप वर्ती भरत-ऐरवत क्षेत्र मे एक एक उत्सर्पिणी अवसर्पिणी मे तीन वश (उत्तम पुरुष परम्परा) उत्पन्न हुए, उत्पन्न होते हैं और उत्पन्न होगे, यथा-

अर्हन्तवश, चक्रवर्ती-वश और दशार्हवश।

---

१ निरुपक्रम आयु वाले होने से 'परमायु' कहा गया है।

इसी तरह अर्ध पुष्करवर द्वीप के पश्चिमार्ध तक कथन करना चाहिए। [४]

जम्बूद्वीप के भरत, ऐरवत क्षेत्र मे एक एक उत्सर्पिणी अवसर्पिणी काल मे तीन प्रकार के उत्तम पुरुष उत्पन्न हुए। उत्पन्न होते हैं और उत्पन्न होंगे, यथा-

अर्हन्त, चक्रवर्ती और बलदेव-वासुदेव।

इस प्रकार अर्धपुष्करवर द्वीप के पश्चिमार्ध तक समझना चाहिए। [४]

तीन यथायु का पालन करते हैं (निरुपक्रम आयुवाले होते हैं), यथा-

अर्हन्त, चक्रवर्ती और बलदेव वासुदेव। [१]

तीन मध्यमायु का पालन करते है (वृद्धत्व रहित आयु वाले होते हैं)। यथा-

अर्हन्त, चक्रवर्ती और बलदेव-वासुदेव। [१-३८]

१४४ बादर तेजस्काय के जीवो की उत्कृष्ट स्थिति तीन अहोरात्र की कही गई है,

बादरवायुकाय की उत्कृष्ट स्थिति तीन हजार वर्ष की कही गई है।

१४५ प्रश्न हे भदन्त! शालि (उत्तम चावल) व्रीहि (सामान्य चावल) गेहू, जौ, यवयव (विशेष प्रकार का जौ) इन

धान्यो को कोठो में सुरक्षित रखने पर, पल्य (धान्य भरने के पात्र विशेप) मे सुरक्षित रखने पर, मच पर सुरक्षित रखने पर, ढक्कन लगाकर, लीप कर, सब तरफ लीप कर, रेखादि के द्वारा लाच्छित करने पर, मिट्टी की मुद्रा लगाने पर अच्छी तरह बन्द रखने पर इनकी कितने काल तक योनि (उत्पादन शक्ति) रहती है ?

उत्तर हे गौतम ! जघन्य अन्तमुहूर्त और उत्कृष्ट तीन वर्ष तक योनि रहती है, इसके बाद योनि म्लान हो जाती है, इसके बाद ध्वसाभिमुख होती है, नष्ट हो जाती है, इसके बाद जीव अजीव हो जाता है और तत्पश्चात् योनि का विच्छेद हो जाता है ।

१४६ दूसरी शर्कराप्रभा नरक-पृथ्वी के नारको की तीन सागरोपम की उत्कृष्ट स्थिति कही गई है ।

तीसरी वालुकाप्रभा पृथ्वी मे नारको की तीन सागरोपम की जघन्य स्थिति कही गई है । [२]

१४७ पाचवी धूमप्रभा-पृथ्वी मे तीन लाख नरकावास कहे गये हैं ।

तीन नरक पृथ्वियो मे नारको को उष्णवेदना कही गई है, यथा-

पहली दूसरी और तीसरी नरक मे ।

तीन पृथ्वियो मे नारक उष्णवेदना का अनुभव करते है, यथा-

प्रथम, दूसरी और तीसरी नरक मे। [३]

१४८ लोक मे तीन समान प्रमाण (लम्बाई चौडाई) वाले, समान पार्श्व (आजू बाजू) वाले और सब विदिशाओ मे भी समान कहे गये हैं, यथा-

अप्रतिष्ठान नरक,

जम्बूद्वीप,

सर्वार्थसिद्ध महा विमान। [१]

लोक मे तीन समान प्रमाण वाले, समान पार्श्ववाले और सब विदिशाओ मे समान कहे गये हैं, यथा-

सीमन्त नरकावास, समयक्षेत्र, ईषत्प्राग्भारा पृथ्वी। [१]

१४९ तीन समुद्र प्रकृति से उदकरस वाले कहे गये हैं, यथा-

कालोदधि, पुष्करोदधि, और स्वयभूरमण। [१]

तीन समुद्रो मे मच्छ कच्छ आदि जलचर विशेष रूप से कहे गये हैं, यथा-

लवण, कालोदधि और स्वयभूरमण। [१] [२]

१५० शीलरहित, व्रतरहित, गुणरहित, मर्यादा रहित, प्रत्याख्यान पौषध-उपवास आदि नही करने वाले तीन प्रकार के व्यक्ति मृत्यु के समय मर कर नीचे सातवी नरक के अप्रतिष्ठान नामक नरकावास मे नारक रूप से उत्पन्न होते हैं, यथा —

चक्रवर्ती, वासुदेव आदि राजा,
माण्डलिक राजा (शेष सामान्य राजा)
महारम्भ करने वाले कुटुम्बी। [१]

सुशील, सुव्रती, सदगुणी मर्यादावाले प्रत्याख्यान पौषध उपवास करने वाले तीन प्रकार के व्यक्ति मृत्यु के समय मर कर सर्वार्थसिद्ध महाविमान मे देव रूप से उत्पन्न होते है, यथा

काम भोगो का त्याग करने वाले राजा,
काम भोग के त्यागी सेनापति,
प्रशास्ता-धर्माचार्य।

१५१ ब्रह्मलोक और लान्तक देवलोक मे विमान तीन वर्ण वाले कहे गये हैं। यथा-

काले नीले और लाल। [१]

आनत, प्राणत, आरण और अच्युत कल्प मे देवो के भवधारणीय शरीरो की ऊचाई तीन हाथ की कही गई है। [१४]

१५२ तीन प्रज्ञप्तिया नियत समय पर पढी जाती है, यथा चन्द्रप्रज्ञप्ति, सूर्यप्रज्ञप्ति और द्वीप सागर प्रज्ञप्ति।

द्वितीय उद्देशक

१५३ लोक तीन प्रकार के कहे गये है यथा-

नामलोक, स्थापनालोक, और द्रव्यलोक ।
भाव लोक तीन प्रकार का कहे गये हैं, यथा-
ज्ञानलोक, दर्शनलोक, और चारित्रलोक ।
लोक तीन प्रकार के कहे गये हैं यथा-
ऊर्ध्वलोक, अधोलोक और तिर्यग्लोक । [३]

१५४ असरकुमारराज असुरेन्द्र चमर की तीन प्रकार की परिषद् कही गई हैं, यथा-
समिता[1] चण्डा[2] और जाया[3] ।
समिता आभ्यन्तर परिषद् है,
चण्डा मध्यम परिषद् है,
जाया बाह्य परिषद् है ।

असुरकुमारराज असुरेन्द्र चमर के सामानिक देवो की तीन परिषद् है समिता आदि चमरेन्द्र की तरह ।
इसी तरह त्रायस्त्रिंशकों की भी परिषद् जानें ।
लोकपालों की तुम्बा, त्रुटिता और पर्वा ।
इसी तरह अग्रमहिषियों की भी परिषद् जानें ।
बलीन्द्र की भी इसी तरह तीन परिषद् समझनी चाहिये ।

---

१ जिसके सभासद बुलाने पर आते हैं ।

२ जिसके सभासद् बुलाने पर भी आते हैं और न बुलाने पर भी आते हैं ।

३ जिसके सभासद् विना बुलाये आते हैं ।

अग्रमहिषी पर्यन्त इसी तरह परिषद् जाननी चाहिये।
धरणेन्द्र की, उसके सामानिक और त्रायस्त्रिंशको की तीन
प्रकार की परिषद् कही गई है यथा-

समिता, चण्डा और जाया।

इसके लोकपाल और अग्रमहिषियो की तीन परिषद कही
गई है, यथा-

ईषा, त्रुटिता और दृढरथा।

धरणेन्द्र की तरह शेष भवनवासी देवो की परिषद् जाननी
चाहिए।

पिशाच राज, पिशाचेन्द्र काल की तीन परिषद कही गई
है, यथा-

ईषा, त्रुटिता और दृढरथा।

इसी तरह सामानिक देव और अग्रमहिषिया की भी
परिषद् जाने।

इसी तरह—यावत्—गीतरति और गीतयशा की भी
परिषद् जाननी चाहिय।

ज्योतिष्कराज ज्योतिष्केन्द्र चन्द्र की तीन परिषद् कही गई
है, यथा-

तुम्बा, त्रुटिता और पर्वा।

इसी तरह सामानिक देव और अग्रमहिषिया की भी
परिषद जाने।

इसी तरह सूय की भी परिपद् जानें ।

देवराज देवेन्द्र शक्र की तीन परिपद् कही गई हैं, यथा-
समिता, चण्डा और जाया ।

इसी प्रकार अग्रमहिपी पयन्त चमरेन्द्र के समान तीन परिपद कहना चाहिए ।

इसी तरह अच्युत के लोकपाल पयन्त तीन परिपद् समझनी चाहिए ।

१५५ तीन याम कहे गये है, यथा-

प्रथम याम, मध्यम याम और अन्तिम याम[1] । [१]

तीन यामो मे आत्मा केवलि-प्ररूपित धम सुनसकता है, यथा-

प्रथम याम मे, मध्यम याम मे और अन्तिम याम में ।

इसी तरह —यावत्— आत्मा तीन यामो में केवलज्ञान उत्पन्न करता है, यथा-

प्रथम याम में, मध्यम याम मे और अन्तिम याम मे । [११]

तीन वय कही गई है, यथा-

---

१ यद्यपि दिन और रात्रि के चतुर्थ भाग को सामान्यतया याम प्रहर कहा जाता है तथापि यहाँ पूर्वरात्रि, मध्यरात्रि और अन्तिमरात्रि तथा पूर्व दिन, मध्यदिन और अन्तिम दिन इसी विवक्षा से यहां ये तीन याम कहे गये हैं । इसी विवक्षा से रात्रि को त्रियामा कहा गया है ।

अग्रमहिषियों पर्यन्त इसी तरह परिषद् जाननी चाहिये।
धरणेन्द्र का उसके सामानिक और त्रायस्त्रिंशकों की तीन प्रकार की परिषद् कही गई है यथा-

समिता चण्डा और जाया।

उसके सामानिक और अग्रमहिषियों की तीन परिषद् कही गई है यथा-

ईशा त्रुटिता और दृढरथा।

धरणेन्द्र की तरह शेष भवनवासी देवों की परिषद् जाननी चाहिए।

पिशाच राज पिशाचेन्द्र काल की तीन परिषद कही गई है यथा

ईशा, त्रुटिता और दृढरथा।

इसी तरह सामानिक देव और अग्रमहिषियों की भी परिषद जाने।

इसी तरह—यावत—गीतरति और गीतयशा की भी परिषद् जाननी चाहिये।

ज्योतिष्कराज ज्योतिष्केन्द्र चन्द्र की तीन परिषद् कही गई है, यथा-

तुम्बा, त्रुटिता और पर्वा।

इसी तरह सामानिक देव और अग्रमहिषियों की भी परिषद जानें।

इसी तरह सूय की भी परिषद् जानें ।

देवराज देवेन्द्र शक्र की तीन परिपद् कही गई हैं, यथा-

समिता, चण्डा और जाया ।

इसी प्रकार अग्रमहिषी पयन्त चमरेन्द्र के समान तीन परिषद कहना चाहिए ।

इसी तरह अच्युत के लोकपाल पयन्त तीन परिपद् समझनी चाहिए ।

१५५ तीन याम कहे गये है, यथा-

प्रथम याम, मध्यम याम और अन्तिम याम[1] । [१]

तीन यामो मे आत्मा केवलि-प्ररूपित धम सुनसकता है, यथा-

प्रथम याम मे, मध्यम याम मे और अन्तिम याम में ।

इसी तरह —यावत्— आत्मा तीन यामो मे केवलज्ञान उत्पन्न करता है, यथा-

प्रथम याम मे, मध्यम याम मे और अन्तिम याम मे । [११]

तीन वय कही गई है, यथा-

---

१ यद्यपि दिन और रात्रि के चतुर्थ भाग को सामान्यतया याम प्रहर कहा जाता है तथापि यहाँ पूवरात्रि, मध्यरात्रि और अन्तिमरात्रि तथा पूर्व दिन, मध्यदिन और अन्तिम दिन इसी विवक्षा से यहाँ ये तीन याम कहे गये हैं । इसी विवक्षा से रात्रि को त्रियामा कहा गया है ।

प्रथम वय, मध्यम वय और अंतिम वय। [१]
इन तीनों वय में आत्मा केवलि-प्रज्ञप्त धर्म सुन पाता है यथा-

प्रथमवय, मध्यमवय और अन्तिमवय।
केवलज्ञान उत्पन्न होने तक का कथन पहले के समान ही जानना चाहिए। [१-२४]

१५६ बोधि तीन प्रकार की कही गई है। यथा-
ज्ञान बोधि दर्शन बोधि और चारित्र बोधि।
'सम्यग्ज्ञानदर्शन' का फल होने से बोधि कहा गया है। [१]
तीन प्रकार के बुद्ध कहे गये है, यथा-
ज्ञानबुद्ध, दर्शनबुद्ध और चारित्रबुद्ध। [१]
इसी तरह तीन प्रकार का मोह और-
तीन प्रकार के मूढ समझने चाहिए। [२-६]

१५७ प्रव्रज्या (दीक्षा) तीन प्रकार की कही गई है यथा-
इहलोकप्रतिबद्धा—इस लोक में उत्तम भोजनादि की इच्छा से ली गई।
परलोक प्रतिबद्धा—स्वर्ग आदि में सुख की इच्छा से ली गई।
उभय-लोकप्रतिबद्धा—दोनों जगह सुख की इच्छा से ली गई।
तीन प्रकार की प्रव्रज्या कही गई है, यथा-

पुरत प्रतिबद्धा,[1]
मागत प्रतिबद्धा[2]
उभयत प्रतिबद्धा।

तीन प्रकार की प्रव्रज्या कही गई है, यथा-
व्यथा उत्पन्न कर दी जाने वाली दीक्षा,
अन्यत्र ले जाकर दी जाने वाली दीक्षा,
धमतत्व समझा कर दी जाने वाली दीक्षा।

तीन प्रकार की प्रव्रज्या कही गई है, यथा
सद्‌गुरुओ की सेवा के लिए ली गई दीक्षा,
आख्यानप्रव्रज्य —धमदेशना के दियेजानेसे ली गई दीक्षा
सगार प्रव्रज्या—सकेत से ली गई दीक्षा
अथवा" तुम दीक्षा लोगे तो मे भी लूगा" इस प्रकार की
शत लगा कर ली गई दीक्षा।

१५८ तीन निग्रन्थ नोसज्ञोपयुक्त (पूर्वानुभूत आहारादि का स्मरण और अनागत की चिन्ता न करने वाले) कहे गये हैं, यथा-
पुलाक, निग्रन्थ और स्नातक।

तीन निग्रन्थ सज्ञ-नोसज्ञोपयुक्त (सज्ञा और नोसज्ञा दोनो से सयुक्त) कहे गये है। यथा-

---

१ दीक्षा लेने पर मेरे शिष्यादि होंगे इस आशा से ली गई दीक्षा पुरत प्रतिबद्धा है।

२ स्वजनादि से स्नेह का विच्छेद न हो इस भावना से ली गई दीक्षा मार्गत प्रतिबद्धा है।

बकुश, प्रतिसेवनाकुशील और कषायकुशील ।

१५९ तीन प्रकार की शैक्ष भूमि[1] कही गई है, यथा
उत्कृष्ट छः मास
मध्यम चार मास
जघन्य सात रात दिन ।

तीन स्थविर भूमियां कही गई है, यथा-
जातिस्थविर, सूत्रस्थविर और पर्यायस्थविर ।
साठ वर्ष की उमरवाला श्रमण निग्रन्थ सूत्रस्थविर है,
स्थानांग समवायांग का जानने वाला श्रमण निग्रन्थ सूत्रस्थविर है
बीस वर्ष की दीक्षा वाला श्रमणनिग्रन्थ पर्यायस्थविर है ।

१६० तीन प्रकार के पुरुष कहे गये हैं । यथा,
सुमना (हर्षयुक्त)
दुर्मना (दुःख या द्वेषयुक्त)
नो सुमना नो दुर्मना (समभाव रखने वाला) ।
तीन प्रकार के पुरुष कहे गये है, यथा-
कितनेक किसी स्थान पर जाकर सुमना होते है,
कितनेक किसी स्थान पर जाकर दुर्मना होते है,
कितनेक किसी स्थान पर जाकर नो सुमना नो दुर्मना होते हैं ।

---

१ नवदीक्षित को महाव्रतादि देने का समय अर्थात छेदोपस्थापनीय चारित्र बड़ी दीक्षा का समय

तीन प्रकार के पुरुष कहे गये हैं, यथा-

कितनेक 'किसी स्थान पर जाता हूँ' ऐसा मान कर सुमना होते है,

कितनेक 'किसी स्थान पर जाता हू' ऐसा मान कर दुमना होते हैं,

कितनेक 'किसी स्थान पर जाता हू' ऐसा मानकर नो-सुमना-नोदुर्मना होते हैं।

इसी तरह कितनेक 'जाऊगा'' ऐसा मानकर सुमना होते हैं इत्यादि पूर्ववत्।

तीन प्रकार के पुरुष कहे गये हैं, यथा-

कितनेक "नही जाकर" सुमना होते है, इत्यादि।

तीन प्रकार के पुरुष कहे गये हैं, यथा-

'नही जाता हू' ऐसा मानकर सुमना होते हैं इत्यादि।

तीन प्रकार के पुरुष कहे गये हैं, यथा-

'नही जाऊगा' ऐसा मानकर सुमना होते हैं, इत्यादि।

इसी तरह 'आकर' कितनेक सुमना होते हैं, इत्यादि।

'आताहू' ऐसा मानकर कितनेक सुमना होते हैं, इत्यादि।

'आऊगा' ऐसा मानकर कितनेक सुमना होते हैं, इत्यादि।

इस प्रकार इस अभिलापक से—

जाकर, नही जाकर।

खडे रह कर-खडे नही रह कर।

उसकी इस लोक में भी प्रशंसा होती है,
उसका उपपात भी प्रशंसनीय होता है
उसके बाद के जन्म में भी उसे प्रशंसा प्राप्त होती है। [१]

१६२ संसारी जीव तीन प्रकार के कहे गये हैं, यथा-
स्त्री पुरुष और नपुंसक। [१]

सब जीव तीन प्रकार के कहे गये हैं। यथा-
सम्यग्दृष्टि मिथ्यादृष्टि, और सम्यग्मिथ्यादृष्टि (मिश्र-दृष्टि)।

अथवा सब जीव तीन प्रकार के कहे गये हैं, यथा-
पर्याप्त, अपर्याप्त और नो-पर्याप्त नो-अपर्याप्त।
इसी तरह सम्यग्दृष्टि।
परित्त,
पर्याप्त,
सूक्ष्म,
संज्ञी, और भव्य,
इन में से जो ऊपर नहीं कहे गये हैं उनके भी तीन तीन प्रकार समझने चाहिए।

१६३ लोक-स्थिति तीन प्रकार की कही गई है, यथा-
आकाश के आधार पर वायु रहा हुआ है,
वायु के आधार पर उदधि
उदधि के आधार पर पृथ्वी।

दिशाए तीन कही गई हैं, यथा-
ऊर्ध्व दिशा, अधो दिशा और तिर्छी दिशा ।
तीन दिशाओ मे जीवो की गति होती है, यथा-
ऊर्ध्व दिशा में, अधोदिशा मे और तिर्छी दिशामे ।
इसी तरह आगति ।

उत्पत्ति,
आहार,
वृद्धि,
हानि,
गति पर्याय-हलन चलन,
समुद्घात,
कालसयोग,
अवधि दर्शन से देखना, अवधिज्ञान से जानना
और जीवो का ज्ञान अवधि ज्ञान से जानना चाहिए ।
तीन दिशाओ मे जीवो को अजीवो का ज्ञान होता है, यथा-

ऊर्ध्व दिशा मे, अधोदिशा मे और तिर्छी दिशा मे ।
(तीनों दिशाओ मे गति आदि तेरह पद समस्त रूप से चौवीस दण्डको मे से पचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक और मनुष्य मे ही होते हैं)

१६४ त्रस जीव तीन प्रकार के कहे गये हैं, यथा-

तेजस्काय, वायुकाय, और उदार (स्थूल) त्रस प्राणी।

स्थावर तीन प्रकार के कहे गये है, यथा-

पृथ्वीकाय, अप्काय और वनस्पतिकाय।

(यहा तेजस्काय और वायुकाय को गति के योग से त्रस माना गया है। [२]

१६५ तीन अच्छेद्य हैं-समय, प्रदेश और परमाणु।

इसी तरह—दो भाग नही किये जा सकने वाले। अभेद्य

अदाह्य—नही जलाये जा सकने वाले।

अग्राह्य—हाथ आदि से नहीं ग्रहण किये जा सकने वाले।

अमध्य—जिनका मध्यभाग नही हो सकता।

अप्रदेशी—निरवयव।

तीन अविभाज्य हैं, यथा-

समय, प्रदेश और परमाणु।

१६६ हे आर्यो! इस प्रकार श्रमण भगवान् महावीर गौतमादि श्रमण निर्ग्रंथो को सम्बोधित कर इस प्रकारबोले

प्रश्न-हे श्रमणो! हे आयुष्मन्तो! प्राणियो को किससे भय है?

(तब) गौतमादि श्रमणनिग्रन्थ श्रमण भगवान महावीर के समीप आते हैं और वन्दना नमस्कार करते हैं। वन्दना नमस्कार करके वे इस प्रकार बोले -

हे देवानुप्रिय ! यह अर्थ हम जानते नही हैं देखते नही हैं इसलिये यदि आपको कहने में कष्ट न होता हो तो हम यह बात आप श्री से जानना चाहते हैं।

उत्तर—आर्यो ! यो श्रमण भगवान् महावीर गौतमादि श्रमणनिग्रन्थो को सम्बोधित करके इस प्रकार बोले—हे श्रमणो ! हे आयुष्मन्तो ! प्राणी दु ख से डरने वाले हैं।

प्रश्न—(गौतमादि श्रमणो ने पूछा) हे भगवन् ! यह दु ख किस के द्वारा दिया गया है ?

उत्तर—(भगवान् बोले) जीव ने प्रमाद के द्वारा दु ख उत्पन्न किया है।

प्रश्न—(गौतमादि श्रमणो ने पूछा) हे भगवान् ! यह दु ख कैसे नष्ट होता है ?

उत्तर—(भगवान बोले) अप्रमाद से दु ख का क्षय होता है।

१६७ प्रश्न-हे भगवन् ! अन्य तीर्थिक इस प्रकार बोलते है, कहते हैं, प्रज्ञप्त करते हैं और प्ररूपणा करते हैं कि श्रमण-निग्रन्थों के मत मे कम किस प्रकार दु ख रूप होते है ? (चारभगो मे से जो पूर्वकृत कम दुख रूप होते हैं यह वे नहीं पूछते है, जो पूवकृत कम दुख रूप नहीं होते हैं यह भी वे नही

पूछते हैं, जो पूवकृत नही है परन्तु दुख रूप होते हैं उसके लिए वे पूछते हैं। (पूछने का आशय यह है कि जैसे अन्य तीर्थिक अकृतकम प्राणियो को दुख देते हं। यह मानते है क्या वैसा ही निग्रन्थ भी मानते है ?)

अकृतकम को दुख का कारण मानने वाले वादियो का यह कथन है कि

कम किये विना ही दु ख होता है,
कर्मो का स्पश (वध) किये विना ही दु ख होता है,
किये जाने वाले और किये हुए कर्मो के बिना ही दु ख होता है,
प्राणी, भूत,जीव और सत्व द्वारा कम किये विना ही वेदना का अनुभव करते हैं–ऐसा कहना चाहिये।

उत्तर—(भगवान् बोले) जो लोग ऐसा कहते हैं वे मिथ्या कहते हैं। मैं ऐसा कहता हू, वोलता हू और प्ररूपणा करता हू कि कम करने से दुख होता है
कर्मो का स्पश करने से दुख हाता है,
क्रियमाण और कृत कर्मों से दु ख होता है,
प्राण, भूत, जीव और सत्व कम करके वेदना का अनुभव करते हैं। ऐसा कहना चाहिए।

तृतीय उद्देशक

१६८ तीन कारणों से मायावी माया करके भी उसकी आलोचना 'गुरु-समक्ष निवेदन' नही करता है, प्रतिक्रमण नही करता है, आत्मसाक्षी से निन्दा नही करता है, गुरु के समक्ष गर्हा नही करता है, उस विचार को दूर नही करता है, उसकी शुद्धि नही करता है, उसे पुन नही करने के लिए तत्पर नहीं होता है और यथायोग्य प्रायश्चित्त और तपश्चर्या अगीकार नही करता है, यथा-

'मैंने यह काम किया है।" 'इस प्रकार आलोचना करने से मेरा मान महत्त्व कम हो जाएगा अत आलोचना न करू। 'इस समय भी मैं वैसा ही करता हू' इसलिये इसे निन्दनीय कैसे कहू ?

'भविष्य मे भी मैं वैसा ही करुगा' 'इसलिए आलोचना कैसे करू।

तीन कारणो से मायावी माया करके भी उसकी आलोचना नही करता है, प्रतिक्रमण नही करता है —यावत्— तपश्चर्या अगीकार नही करता है, यथा-

मेरी अपकीर्ति होगी,

मेरा अवर्णवाद होगा,

मेरा अविनय होगा ।[1]

तीन कारणो से मायावी माया करके भी आलोचना नही करता है —यावत्— तप अगीकार नही करता है, यथा-

मेरी कीर्ति[2] क्षीण होगी,

मेरा यश[3] हीन होगा,

मेरी पूजा व मेरा सत्कार कम होगा । [२]

तीन कारणो से मायावी माया करके उसकी आलोचना करता है, प्रतिक्रमण करता है —यावत— तप अगीकार करता है, यथा-

मायावी की इस लोक मे निन्दा होती है,

परलोक भी निन्दनीय होता है,

अ य जन्म भी गर्हित होता है ।

तीन कारणो से मायावी माया करके आलोचना करता है, यावत्— तप अगीकार करता है, यथा-

अमायी का यह लोक प्रशस्त होता है,

---

१ अवज्ञा ।

२ सीमित प्रवेश मे प्रसिद्धि 'किर्ति' ।

३ सर्वत्र प्रसिद्धि 'यश' ।

परलोक मे जन्म प्रशस्त होता है,

अन्य जन्म भी प्रशंसनीय होता है।

तीन कारणो से मायावी माया करके आलोचना करता है —यावत्— तप अंगीकार करता है, यथा-

ज्ञान के लिये, दर्शन के लिये, चारित्र के लिये। [२-४]

१६९ तीन प्रकार के पुरुष कहे गये हैं, यथा-

सूत्र के धारक, अर्थ के धारक, उभय के धारक।

१७० साधु और साध्वियो को तीन प्रकार के वस्त्र धारण करना और पहनना कल्पता है, यथा-

ऊन का, सन का और सूत का बना हुआ। [१]

साधु और साध्वियो को तीन प्रकार के पात्र धारण करने और परिभोग करने के लिये कल्पते हैं, यथा-

तुम्बे का पात्र, लकडी का पात्र और मिट्टी का पात्र। [१-२]

१७१ तीन कारणो से वस्त्र धारण करना चाहिये, यथा-

लज्जा के लिये,

प्रवचन की निन्दा न हो इसलिये,

शीतादि परिषह निवारण के लिये।

१७२ आत्मा को रागद्वेष से बचाने के तीन उपाय क ,दथा-

धार्मिक उपदेश का पालन करे,

उपेक्षा करे या मौन रहे,

हैं, नष्ट होते हैं और पैदा होते हैं ।

देव, यक्ष, नाग और भूतो की सम्यग् आराधना करने से अन्यत्र उठे हुए परिपक्व और बरसने वाले मेघ को उस प्रदेश मे ला देते हैं ।

उठे हुए, परिपक्व बने हुए और बरसने वाले मेघ को वायु नष्ट न करे ।

इन तीन कारणो से महावृष्टि होती है । [१-२]

१७७ तीन कारणो से देवलोक में नवीन उत्पन्न देव मनुष्य-लोक मे शीघ्र आने की इच्छा करने पर भी शीघ्र आने मे समर्थ नही होता है, यथा-

देवलोक मे नवीन उत्पन्न देव दिव्य कामभोगो मे मूर्छित होने से, गृद्धयुद्ध होने से, स्नेहपाश मे बधा हुआ होने से, तन्मय होने से वह मनुष्य-सम्बन्धी कामभोगों को आदर नही देता है, अच्छा नहीं समझता है, "उनसे कुछ प्रयोजन है"-ऐसा निश्चय नही करता है, उनकी इच्छा नही करता है, "ये मुझे मिलें "ऐसी भावना नही करता है ।

देवलोक मे नवीन उत्पन्न हुआ, देव दिव्य काम भोगो मे मूर्छित, गृद्ध, आसक्त और तन्मय होने से उसका मनुष्य सम्बन्धी प्रेमभाव नष्ट हो जाता है और दिव्य काम भोगो

नो तद्वचन,[1] नो तदन्य वचन[2] और अवचन[3] [२]

तीन प्रकार के मन कहे गये हैं, यथा-

तदमन, तदन्यमन और अमन। [१-३]

१७६ तीन कारणो से अल्पवृष्टि होती है, यथा-

उस, देश मे या प्रदेश मे बहुत से उदक योनि के जीव अथवा पुद्गल उदक रूप से उत्पन्न नही होते है, नष्ट नही होते हैं, समाप्त नही होते हैं, पैदा नही होते हैं।

नाग, देव, यक्ष और भूतो की सम्यग आराधना नहीं करने से वहा उठे हुए उदक पुद्गल-मेघ को जो बरसने वाला है उसे वे देव आदि अन्य देश मे लेकर चले जाते हैं।

उठे हुए परिपक्व और बरसने वाले मेघ का पवन बिखेर डालता है।

इन तीन कारणो से अल्पवृष्टि होतीहै। [१]

तीन कारणा से महावृष्टि होती है, यथा-

उस देश मे या प्रदेश मे बहुत से उदक योनि के जीव और पुद्गल उदक रूप से उत्पन्न होते हैं, समाप्त होते

---

१ घट को पट कहना।

२ घट को घट कहना।

३ निरथक वचन।

हैं, नष्ट होते हैं और पैदा होते हैं ।

देव, यक्ष, नाग और भूतों की सम्यग् आराधना करने से अन्यत्र उठे हुए परिपक्व और बरसने वाले मेघ को उस प्रदेश मे ला देते हैं ।

उठे हुए, परिपक्व बने हुए और बरसने वाले मेघ को वायु नष्ट न करे ।

इन तीन कारणो से महावृष्टि होती है । [१-२]

१७७ तीन कारणो से देवलोक में नवीन उत्पन्न देव मनुष्य-लोक मे शीघ्र आने की इच्छा करने पर भी शीघ्र आने में समर्थ नही होता है, यथा-

देवलोक मे नवीन उत्पन्न देव दिव्य कामभोगो मे मूर्छित होने से, गृद्धयुद्ध होने से, स्नेहपाश में बधा हुआ होने से, तन्मय होने से वह मनुष्य-सम्बन्धी कामभोगों को आदर नहीं देता है, अच्छा नही समझता है, "उनसे कुछ प्रयोजन है"-ऐसा निश्चय नही करता है, उनकी इच्छा नही करता है, "ये मुझे मिलें "ऐसी भावना नही करता है ।

देवलोक मे नवीन उत्पन्न हुआ, देव दिव्य काम भोगो मे मूर्छित, गृद्ध, आसक्त और तन्मय होने से उसका मनुष्य सम्बन्धी प्रेमभाव नष्ट हो जाता है और दिव्य काम भोगो

के प्रति आकर्षण होता है।

देवलोक मे नवीन उत्पन्न देव दिव्य काम भोगो मे मूर्छित –यावत्– तन्मय बना हुआ ऐसा सोचता है कि "अभी न जाऊँ एक मुहूर्त के बाद जब नाटकादि पूरा हो जाएगा तब जाऊँगा"। इतने काल म तो अल्प आयुष्य वाले मनुष्य मृत्यु को प्राप्त हो जाते हैं। इन तीन कारणो से नवीन उत्पन्न हुआ देव मनुष्य लोक मे शीघ्र आने की इच्छा करने पर भी शीघ्र नही आ सकता है। [१]

तीन कारणो से देवलोक मे नवीन उत्पन्न देव मनुष्यलोक मे शीघ्र आने की इच्छा करने पर शीघ्र आने मे समर्थ होता है, यथा-

देव लोक मे नवीन उत्पन्न हुआ देव दिव्य काम भोगों में मूर्छित नही होने से, गृद्ध नहीं होने से, आसक्त नही होने से उसे ऐसा विचार होता है कि-"मनुष्य-भव मे भी मेरे आचार्य, उपाध्याय, प्रवर्तक, स्थविर, गणी, गणधर अथवा गणावच्छेदक हैं जिनके प्रभाव से मुझे यह इस प्रकार की देवता की दिव्य ऋद्धि, दिव्य द्युति, दिव्य देवशक्ति (अचिन्त्य) वैक्रियादि की शक्ति मिली, प्राप्त हुई, सम्मुख उपस्थित हुई अत जाऊ और उन

भगवान् को वन्दन करु, नमस्कार करु, सत्कार करु, कल्याणकारी, मगलकारी, देव स्वरूप मानकर उनकी सेवा करू"

देवलोक मे उत्पन्न हुआ देव दिव्य कामभोगो मे मूर्छित नही होने से -यावत्- तन्मय नही होने से ऐसा विचार करता है कि -"इस मनुष्यभव मे ज्ञानी हैं, तपस्वी हैं और अति-दुष्कर क्रिया करने वाले हैं अत जाऊ और उन भगवतो को वन्दन करु, नमस्कार करु, -यावत्- उनकी सेवा करु"

देवलोक मे नवीन उत्पन्न हुआ देव दिव्य कामभोगो मे मुर्छित -यावत्- तन्मय नही होता हुआ ऐसा विचार करता है कि-"मनुष्यभव में मेरी माता -यावत्- मेरी पुत्रवधू है इसलिए जाऊ और उनके समीप प्रकट होऊ जिससे वे मेरी इस प्रकार की मिली हुई, प्राप्त हुई और सम्मुख उपस्थिति हुई दिव्य देवर्द्धि, धिव्य द्युति और दिव्य देवशक्ति को देखें।"

इन तीन कारणो से देवलोक मे नवीन उत्पन्न हुआ देव मनुष्य लोक मे शीघ्र आने की इच्छा करे तो शीघ्र आ सकता है। [१]

१७८ तीन स्थानों की देवता भी अभिलाषा करते हैं, यथा—

मनुष्यभव, आयक्षेत्र मे जन्म और उत्तम कुल में उत्पत्ति।

तीन कारणो से देव पश्चात्ताप करते हैं, यथा—

अहो! मैंने बल होते हुए, शक्ति होते हुए, पौरुष पराक्रम होते हुए भी निरुपद्रवता और सुभिक्ष होने पर भी आचार्य और उपाध्याय के विद्यमान होने पर और नीरोगी शरीर होने पर भी शास्त्रों का अधिक अध्ययन नहीं किया।

अहो! मैं विषयों का प्यासा बन कर इहलोक में ही फसा रहा और परलोक से विमुख बना रहा जिससे मैं दीर्घ श्रमण पर्याय का पालन नही कर सका।

अहो! ऋद्धि, रस और रूप के गर्व मे फसकर और भोगो मे आसक्त होकर मैंने विशुद्ध चारित्र का स्पर्श भी नही किया।

इन तीन कारणो से देव पश्चात्ताप करते हैं। [२]

१७९ तीन कारणो से देव-"मैं यहा से च्युत होऊगा" यह जानते है. यथा-

विमान और आभरणो को कान्तिहीन देख कर,

कल्पवृक्ष को म्लान होता हुआ देखकर,

अपनी तेजोलेश्या को क्षीण होती हुई जानकर।

इन तीन कारणो से देव अपना च्यवन होना जानते है।

तीन कारणो से देव उद्वेग पाते हैं, यथा-

अरे मुझे इस प्रकार की मिली हुई, प्राप्त हुई और सम्मुख आई हुई दिव्य देवर्द्धि, दिव्य देवद्युति और दिव्यशक्ति

छोडनी पडेगी ।

अरे मुझे माता के ऋतु और पिता के वीर्य के सम्मिश्रण का प्रथम आहार करना पडेगा,

अरे मुझे माता के जठर के मलमय अशुचिमय, उद्वेगमय और भयकर गर्भावास में रहना पडेगा ।

इन तीन कारणो से देव उद्वेग प्राप्त होते हैं । [१]

१८० विमान तीन प्रकार के कहे गये हैं यथा-

गोल, त्रिकोण और चतुष्कोण ।

इन मे जो गोल विमान हैं वे पुष्करकणिका के आकार के होते हैं उनके चारो ओर प्राकार होता है और प्रवेश के लिए एक द्वार होता है ।

उनमे जो त्रिकोण विमान हैं वे सिघाडे के आकार के, दोनो तरफ परकोटा वाले, एक तरफ वेदिका वाले और तीन द्वार वाले कहे गये हैं ।

उनमे जो चतुष्कोण विमान हैं वे अखाडे के आकार के हैं और सब तरफ वेदिका से घिरे हुए हैं तथा चार द्वारवाले कहे गये हैं ।

देव विमान तीन के आधारपर स्थित हैं, यथा-

घनोदधि प्रतिष्ठित,

घनवात प्रतिष्ठित,

आकाश प्रतिष्ठित ।

विमान तीन प्रकार के कहे गये है, यथा-

अवस्थित 'शाश्वत'

वैक्रेय के द्वारा निष्पादित,

पारियानिक आवागमन के लिए वाहन रूप मे काम आने वाले । [१]

१८१ नैरयिक तीन प्रकार के कहे गये हैं, यथा-

सम्यग्दृष्टि, मिथ्यादृष्टि और मिश्रदृष्टि ।

इस प्रकार विकलेन्द्रिय को छोड कर वैमानिक पर्यन्त समझ लेना चाहिए ।

तीन दुर्गतिया कही गई हैं, यथा-

नरक दुर्गति, तिर्यंचयोनिक दुर्गति और मनुष्य दुर्गति ।

तीन सद्गतिया कही गई हैं, यथा-

सिद्ध सद्गति, देव सद्गति और मनुष्य सद्गति ।

तीन दुर्गति प्राप्त कहे गये हैं, यथा-

नैरयिकदुर्गति प्राप्त,

तिर्यचयोनिक दुर्गति प्राप्त

मनुष्य दुर्गति प्राप्त ।

तीन सद्गति प्राप्त कहे गये है, यथा-

सिद्धसद्गति प्राप्त,

देवसद्गति प्राप्त,,
मनुष्यसद्गति प्राप्त। [ ]

१८२ चतुर्थभक्त 'एक उपवास करने' वाले मुनि को तीन प्रकार का जल लेना कल्पता है, यथा-
आटे का धोवन,
उबालीं हुई भाजी पर सिंचा गया जल,
चावल का धोवन।

छट्ठ भक्त 'दो उपवास' करने वाले मुनि को तीन प्रकार का जल लेना कल्पता है, यथा-
तिल का धोवन, तुप का धोवन, जो का धोवन।

अष्टभक्त 'तीन उपवास' करने वाले मुनि को तीन प्रकार का जल लेना कल्पता है, यथा-
ओसामन, छाछ के ऊपर का पानी, शुद्ध उष्ण जल। [३]

भोजन स्थान मे अर्पित किया हुआ आहार तीन प्रकार का है, यथा-
फलिखोपहृत[1], शुद्धोपहृत[2], ससृष्टोपहृत[3]।

---

१ भोजन करने के लिए बैठे हुए हैं और थाली आदि में भोजन सामग्री ली हुई है उसमें से आहारादि लेना फलिकोपहृत है। यह अवगृहीत नामक पचम पिण्डैषणा का विषय है।
२ तुष आदि से रहित तथा अल्प लेप युक्त शुद्ध ओदनादि भोजनस्थान मे दिये जाने पर लेना शुद्धोपहृत है।
३ भोजन करने की थाली में चावल आदि हैं और उसने कौर

उसे अवधिज्ञान उत्पन्न हो,

मन पर्यायज्ञान उत्पन्न हो,

केवलज्ञान उत्पन्न हो । [२] [१३]

१८३ जम्बूद्वीप मे तीन कर्मभूमियां कही गई है, यथा-

भरत, एरवत और महाविदेह ।

इसी प्रकार धातकी खण्ड द्वीप के पूर्वार्ध म—यावत—अर्धपुष्करवर द्वीप के पश्चिमार्द्ध मे भी तीन तीन कर्मभूमिया गई है । [३]

१८४ दर्शन तीन प्रकार के हैं, यथा-

सम्यग्दर्शन[1] मिथ्यादर्शन[2] और मिश्रदर्शन[3] । [१]

रुचि[4] तीन प्रकार की हैं, यथा

सम्यग्रुचि, मिथ्यारुचि और मिश्ररुचि । [१]

प्रयोग[5] तीन प्रकार के हैं, यथा-

सम्यग्प्रयोग, मिथ्याप्रयोग और मिश्रप्रयोग । [१ ३]

---

१ मिथ्यात्व मोहनीय के शुद्ध दलिक 'सम्यग्दर्शन ।

२ मिथ्यात्व मोहनीय के अशुद्ध दलिक 'मिथ्यादर्शन' ।

३ मिथ्यात्व मोहनी के अशुद्ध दलिक 'सम्यग्मिथ्यादर्शन' ।

४ सम्यक्त्वमोहनीय के क्षयोपशम आदि से तत्त्वश्रद्धान होना 'रुची है' ।

५ जीव का व्यापार ।

१८५ व्यवसाय[1] तीन प्रकार के हैं, यथा-

धार्मिक व्यवसाय,

अधार्मिक व्यवसाय,

मिश्र व्यवसाय। [१]

अथवा-तीन प्रकार के व्यवसाय 'ज्ञान' कहे गये हैं, यथा-

प्रत्यक्ष 'अवधि आदि'

प्रात्ययिक 'इन्द्रिय और मन के निमित्त' से होने वाला,

आनुगामिक 'अनुसरण करने वाला'। [१]

अथवा तीन प्रकार के व्यवमाय कहे गये है, यथा-

ऐहलौकिक व्यवसाय,

पारलौकिक व्यवसाय,

उभयलौकिक व्यवसाय।

ऐहलौकिक व्यवसाय तीन प्रकार का कहा गया है, यथा,

लौकिक, वैदिक और सामयिक।

लौकिक व्यवसाय तीन प्रकार का कहा गया है, यथा-

अर्थ, धम और काम,

वैदिकव्यवसाय तीन प्रकार का कहा गया है, यथा-

ऋग्वेद में कहा हुआ,

यजुर्वेद मे कहा हुआ,

---

१ कार्य सिद्धि के लिए उपयुक्त अनुष्ठान।

सामवेद मे कहा हुआ । [४]

सामयिक व्यवसाय तीन प्रकार का कहा गया है, यथा

ज्ञान, दर्शन और चारित्र । [१] [७]

तीन प्रकार की अर्थयोनि 'राजलक्ष्मी की प्राप्ति के उपाय' कही गई है, यथा-

साम, दण्ड और भेद । [१]

१८६ तीन प्रकार के पुद्गल कहे गये हैं, यथा-

प्रयोगपरिणत, मिश्रपरिणत और स्वत परिणत । [१]

नरकावास तीन के आधार पर रहे हुए हैं, यथा-

पृथ्वी के आधार पर,

आकाश के आधार पर,

स्वरूप के आधार पर ।

नैगम सग्रह और व्यवहार नय मे पृथ्वी प्रतिष्ठित ।

ऋजुसूत्र नय के अनुसार आकाश प्रतिष्ठित ।

तीन शब्दनयो के अनुसार आत्म प्रतिष्ठित । [१] [३]

१८७ मिथ्यात्व तीन प्रकार का कहा गया है, यथा-

अक्रिया मिथ्यात्व,

अविनय मिथ्यात्व

अज्ञान मिथ्यात्व ।

अक्रिया 'दुष्ट क्रिया' तीन प्रकार की कही गई है, यथा

प्रयोगक्रिया, सामुदानिक क्रिया, अज्ञान क्रिया ।

प्रयोग क्रिया तीन प्रकार की है, यथा-

मन प्रयोग क्रिया,

वचन प्रयोग क्रिया,

काय प्रयोग क्रिया ।

समुदान क्रिया तीन प्रकार की कही गई है, यथा-

अनन्तर समुदान क्रिया,

परम्पर समुदान क्रिया

तदुभय समुदान क्रिया ।

अज्ञान क्रिया तीन प्रकार की कही गई है, यथा-

मति-अज्ञान क्रिया,

श्रुत अज्ञान क्रिया

विभग-अज्ञान क्रिया

अविनय तीन प्रकार का कहा गया है, यथा-

देशत्यागी[1], निरालम्बनता[2], नाना प्रेम-द्वेष अविनय[3] [५]

अज्ञान तीन प्रकार का कहा गया है । यथा-

प्रदेश अज्ञान, सर्व अज्ञान, भाव अज्ञान ।

१८८ धर्म तीन प्रकार का कहा गया है, यथा-

श्रुतधर्म, चारित्रधर्म और अस्तिकाय-धर्म । [१]

उपक्रम[4] तीन प्रकार का कहा गया है, यथा

---

१ जिस अविनय के करने से जन्म-क्षेत्र आदि का त्याग करना

२ पडे । आश्रय लेने योग्य का आश्रय न लेना

३ आराध्य के प्रति प्रेम आराध्य के असम्मत के प्रति द्वेष नियत हो तो वह विनय है यदि ये दोनों अनियत हैं तो वह अविनय है । अत नाना प्रेम-द्वेष को अविनय कहा है ।

४ गुण विशेष करण अथवा विनाश ।

धार्मिक उपक्रम, अधार्मिक उपक्रम और मिश्र उपक्रम ।
अथवा तीन प्रकार का उपक्रम कहा गया है, यथा-
आत्मोपक्रम परोपक्रम और तदुभयोपक्रम ।
इसी तरह वैयावृत्य, अनुग्रह, अनुशासन और उपालम्भ ।
प्रत्येक के तीन-तीन आलापक उपक्रम के समान ही
कहने चाहिए । [७]

१८९ कथा तीन प्रकार की कही गई है यथा-
अर्थकथा, धर्मकथा और कामकथा । [१]
विनिश्चय तीन प्रकार के कहे हैं, यथा-
अर्थविनिश्चय, धर्मविनिश्चय और कामविनिश्चय [१ २]

१९० श्री गौतम स्वामी भगवान महावीर से पूछते हैं-
प्रश्न—हे भगवन् ! तथारूप श्रमण माहन की सेवा करने
वाले को सेवा का क्या फल मिलता है ?
भगवान् बोले-
उत्तर—हे गौतम उसे धर्मश्रवण करने का फल मिलता है ।
प्रश्न—हे भगवन् ! धर्मश्रवण का क्या फल होता है ?
उत्तर हे गौतम धर्मश्रवण करने से ज्ञान की प्राप्ति होती है।
प्रश्न—हे भगवन् ! ज्ञान का फल क्या है ?
उत्तर—हे गौतम ! ज्ञान का फल विज्ञान (हेय उपादेय का
विवेक) है इस प्रकार इस अभिलापक से यह गाथा जान
लेनी चाहिये ।

श्रवण का फल ज्ञान,

ज्ञान का फल विज्ञान,

विज्ञान का फल प्रत्याख्यान,

प्रत्याख्यान का फल सयम,

सयम का फल अनाश्रव कर्मों का रुक जाना'

अनाश्रव का फल 'तप'

तप का फल व्यवदान 'पूर्वकृत कर्म का विनाश'

व्यवदान का फल अक्रिया।

अक्रिया का फल निर्वाण है।

प्रश्न—हे भगवन् ! अक्रिया का क्या फल है ?

उत्तर— निर्वाण फल है।

प्रश्न —हे भगवन् ! निर्वाण का क्या फल है ?

उत्तर—हे श्रमणायुष्मन् ! सिद्धगति मे जाना हीनिर्वाण का सर्वान्तिम प्रयोजन है।

चतुर्थ उद्देशक

१९१ प्रतिमाधारी अनगार को तीन उपाश्रयो का प्रतिलेखन करना कल्पता है, यथा-

अतिथिगृह में, खुले मकान में,वृक्ष के नीचे ।

इसी प्रकार तीन उपाश्रयो की आज्ञा लेना और उनका ग्रहण करना कल्पता है। [३]

प्रतिमाधारी अनगार को तीन सस्तारका की प्रतिलेखना करना कल्पता है, यथा-

पृथ्वी-शिला, काष्ठ शिला और तृणादि।

इसी प्रकार तीन सस्तारको की आज्ञा लेना और ग्रहण करना कल्पता है। [३] [६]

१६२ काल तीन प्रकार के कहे गये हैं, यथा-

भूतकाल, वर्त्तमानकाल और भविष्यकाल।

समय तीन प्रकार का कहा गया है, यथा-

अतीत काल, वर्तमान काल और अनागत काल।

इसी तरह आवलिका[1], श्वासोच्छ्वास, स्तोक[2] क्षण[3] लव[4] मुहूर्त[5], अहोरात्र—यावत्—क्रोडवप, पूर्वांग[6],

---

१ आवलिका-असंख्यात समय का अथवा एक श्वासोच्छ्वास का संख्यातवा भाग।

२ स्तोक-सात श्वासोच्छ्वास प्रमाण काल।

३ क्षण-संख्यात श्वासोच्छ्वास प्रमाण काल।

४ लव-सात स्तोक प्रमाण काल।

५ मुहूर्त—७७ लव, दो घडी, अथवा ३७७३ श्वासोच्छ्वास।

६ पूर्वांग—८४ लाख वर्ष।

पूर्व[1], —यावत्— अवसर्पिणी । [ ]

पुद्गल परिवर्तन तीन प्रकार का कहा गया है, यथा-

अतीत, प्रत्युत्पन्न और अनागत । [१]

१६३ वचन तीन प्रकार के कहे गये हैं, यथा-

एकवचन, द्विवचन और बहुवचन ।

अथवा वचन तीन प्रकार के कहे गये हैं, यथा

स्त्री वचन, पुरुषवचन और नपुंसक वचन ।

अथवा तीन प्रकार के वचन कहे गये हैं यथा-

अतीत वचन, वर्तमान वचन और भविष्य वचन । [२]

१६४ तीन प्रकार की प्रज्ञापना कही गई है, यथा -

ज्ञान प्रज्ञापना, दर्शन प्रज्ञापना और चारित्र प्रज्ञापना ।

तीन प्रकार के सम्यक् कहे गये हैं, यथा-

ज्ञान सम्यक् दर्शन सम्यक् और चारित्र सम्यक् ।

तीन प्रकार के उपघात[2] कहे गये हैं, यथा

उद्गमोपघात, उत्पादनोपघात और एषणोपघात ।

इसी तरह तीन प्रकार की विशुद्धि कही गई है, यथा-

उद्गम-विशुद्धि आदि ।

---

१ पूर्व—८४ लाख पूर्वांग ।

२ आहारादि की अकल्पनीयता ।

१९५ तीन प्रकार की आराधना कही गई है, यथा-

ज्ञानाराधना, दर्शनाराधना और चारित्राराधना।

ज्ञानाराधना तीन प्रकार की कही गई है, यथा-

उत्कृष्ट, मध्यम और जघन्य।

इसी तरह दर्शन आराधना और चारित्र आराधना कहनी चाहिए। [३]

तीन प्रकार का संक्लेश[1] कहा गया है, यथा

ज्ञानसंक्लेश, दर्शनसंक्लेश और चारित्रसंक्लेश।

इसी तरह असंक्लेश, अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार और अनाचार भी समझने चाहिए। [६]

तीन का अतिक्रमण करने पर आलोचना करनी चाहिये, प्रतिक्रमण करना चाहिये, निन्दा करनी चाहिये, गर्हा करनी चाहिये —यावत—तप अंगीकार करना चाहिये, यथा

ज्ञान का अतिक्रमण करने पर,

दर्शन का अतिक्रमण करने पर,

चारित्र का अतिक्रमण करने पर।

इसी तरह व्यतिक्रम, अतिचार और अनाचार करने पर भी आलोचनादि करनी चाहिये। [३] [१२]

१९६ प्रायश्चित्त तीन प्रकार कहा गया है यथा

---

१ अशुभ परिणामों से होने वाली हानि।

आलोचना के योग्य,

प्रतिक्रमण के योग्य,

उभय योग्य।

१६७ जम्बूद्वीपवर्ती मेरु पवत के दक्षिण मे तीन अकर्मभूमिया कही गई हैं, यथा-

हेमवत, हरिवास और देवकुरु।

जम्बूद्वीपवर्ती मेरु पवत के उत्तर मे तीन अकर्मभूमिया कही गई हैं, यथा-

उत्तरकुरु, रम्यक्वास और हिरण्यवत।

जम्बूद्वीपवर्ती मेरु पर्वत के दक्षिण मे तीन क्षेत्र कहे गये हैं, यथा-

भरत, हेमवत और हरिवास।

जम्बूद्वीपवर्ती मेरु पवत के उत्तर में तीन क्षेत्र कहे गये हैं, यथा-

रम्यक्वास, हिरण्यवत और ऐरवत।

जम्बूद्वीपवर्ती मेरुपवत के दक्षिण मे तीन वर्षधर पवत है, यथा-

लघुहिमवान, महाहिमवान और निषध।

जम्बूद्वीपवर्ती मेरुपवत के उत्तर मे तीन वर्षधर पवत हैं, यथा-

नीलवान, रुक्मी और शिखरी ।

जम्बूद्वीपवर्ती मेरुपवत के दक्षिण मे तीन महाह्लद हैं, यथा
पद्मह्लद, महापद्मह्लद और तिगिच्छह्लद ।

वहा तीन महर्द्धिक–यावत्– पल्योपम की स्थिति वाली तीन देविया रहती हैं, यथा-
श्री, ह्री और धृति ।

इसी तरह उत्तर मे भी तीन ह्लद हैं, यथा–
केशरी ह्लद, महापुण्डरीक ह्लद और पुण्डरीक ह्लद ।

इन ह्लदो मे रहनेवाली देवियो के नाम, यथा
कीर्ति, वुद्धि और लक्ष्मी ।

जम्बूद्वीपवर्ती मेरु पवत के दक्षिण मे लघु हिमवान वषधर पवत के पद्मह्लद नामक महाह्लद से तीन महानदिया निकलती हैं, यथा-
गगा, सिन्धु और रोहिताशा ।

जम्बूद्वीपवर्ती मेरु पवत के उत्तर मे शिखरीवषधर पवत के पौण्डरीक नामक महाह्लद से तीन महानदिया निकलती हैं, यथा-
सुवणकूला, रक्ता और रक्तवती ।

जम्बूद्वीपवर्ती मेरु पवत के पूव मे सीता महानदी के उत्तर मे तीन अन्तर नदियां कही गई हैं, यथा-

तप्तजला, मत्तजला और उन्मत्तजला ।

जम्बूद्वीपवर्ती मेरु पर्वत के पश्चिम मे शीतोदा महानदी के दक्षिण मे तीन अन्तर नदिया कही गई है, यथा-

क्षीरोदा, शीतस्रोता, और अन्तर्वाहिनी ।

जम्बूद्वीपवर्ती मेरु पवत के पश्चिम मे शीतोदा महानदी के उत्तर मे तीन अन्तर नदिया कही गई है, यथा-

उर्मिमालिनी, फेनमालिनी और गभीरमालिनी । [१५]

इस प्रकार धातकी खण्डद्वीप के पूर्वार्ध मे अकर्मभूमियो से लगाकर अन्तर नदियो तक सब समान समझना चाहिए–यावत्–अर्धपुष्कर द्वीप के पश्चिमार्ध मे भी इसी प्रकार जानना चाहिये । [४५-६०]

१९८ तीन कारणो से पृथ्वी का थोडा भाग चलायमान होता है, यथा-

रत्नप्रभा पृथ्वी के नीचे बादर पुद्गल आकर लगे या वहा से अलग होवे तो वे लगने या अलग होने वाले बादर पुद्गल पृथ्वी के कुछ भाग को चलायमान करते है,

महा ऋद्धिवाला–यावत्–महेश कहा जानेवाला महोरग देव इस रत्नप्रभा पृथ्वी के नीचे आवागमन करे तो पृथ्वी चलायमान होती है,

नागकुमार तथा सुवर्णकुमार का सग्राम होने पर थोडी

पृथ्वी चलायमान होती है ।

इन तीन कारणो से पृथ्वी देशत कम्पित होती हैं ।

तीन कारणा से पूण पृथ्वी चलायमान होती है, यथा

इस रत्नप्रभा पृथ्वी के नीचे घनवात क्षुब्ध होने से घनोदधि कम्पित होता है ।

कम्पित होता हुआ घनोदधि समग्र पृथ्वी को चलायमान करता है ।

महर्धिमक—यावत्—महेश कहा जाने वाला देव तथारूप-श्रमण-माहन को ऋद्धि, यश, बल, वीय, पुरषाकार पराक्रम बताता हुआ समग्र पृथ्वी को चलायमान करता है ।

देव तथा असुरो का सग्राम होने पर समस्त पृथ्वी चलायमान होती है।

इन तीन कारणो से सारी पृथ्वी चलायमान होती है । [३]

१९९ किल्विषिक देव तीन प्रकार के कहे गये हैं, यथा-

तीन पल्योपम की स्थिति वाले,

तीन सागरोपम की स्थिति वाले,

तेरह सागरोपम की स्थिति वाले ।

प्रश्न—हे भगवन् ! तीन पल्योपम की स्थितिवाले किल्विषिक देव कहा रहते हैं ?

उत्तर—ज्योतिष्क देवो के ऊपर और सौधम-ईशानकल्प के नीचे तीन पल्योपम की स्थिति वाले किल्विषिक देव रहते हैं।

प्रश्न—हे भगवन् ! तीन सागरोपम की स्थिति वाले किल्विषिक देव कहा रहते हैं ?

उत्तर—सौधम ईशान देवलोक के ऊपर और सनत्कुमार-माहेन्द्रकल्प के नीचे तीन सागरोपम की स्थिति वाले किल्विषिक देव रहते हैं।

प्रश्न—तेरह सागरोपम स्थिति वाले किल्विषिक देव कहा रहते हैं ?

उत्तर—ब्रह्मलोक कल्प के ऊपर और लान्तक कल्पके नीचे तेरह सागरोपम की स्थिति वाले किल्विषिक देव रहते हैं।

२०० देवराज देवेन्द्र शक्र की बाह्य परिषद् के देवो की स्थिति तीन पल्योपम की कही गई है।

देवराज देवेन्द्र शक्र की आभ्यन्तर परिषद् की देवियो की स्थिति तीन पल्योपम की कही गई है।

देवराज देवेन्द्र ईशान के बाह्य परिपद् देवियो कीस्थिति तीन पल्योपम की कही गई है ।

२०१ प्रायश्चित्त तीन प्रकार के कहे गये हैं, यथा-

ज्ञानप्रायश्चित्त, दर्शनप्रायश्चित्त और चारित्र-प्रायश्चित्त।

तीन को अनुद्घातिक 'गुरु' प्रायश्चित्त कहा गयाहै, यथा

हस्तकम करने वाले को,

मैथुन सेवन करने वाले को,

रात्रिभोजन करने वाले को ।

तीन को पाराचिक[1] प्रायश्चित्त कहा गया है, यथा-

कषाय और विषय से अत्यन्त दुष्ट को[2] परस्पर स्त्यान गृद्धि निद्रावाले को[3] 'गुदा'मैथुन करने वालो को।

तीन को अनवस्थाप्य[4] प्रायश्चित्त कहा गया है, यथा

साधर्मिको की चोरी करने वाले को,

अन्यधार्मिको की चोरी करने वाले को,

हाथ आदि से मर्मान्तक प्रहार करने वाले को ।

२०२ तीन को प्रव्रजित करना नही कल्पता है, यथा-

पण्डक नपुंसक को,

---

१ यह अतिम प्रायश्चित्त है । विशेष जानने के लिए प्रायश्चित्त परिशिष्ट देखें ।

२ साधु या राजा आदि का वध या साध्वी या रानी वगैरह से विषय-सेवन सरीखे भयकर अपराध करने वाले को ।

३ जागृत अवस्था मे सोचे हुए काय को निद्रावस्था में पूरा करनेकी जिससे शक्ति प्राप्त हो ऐसी निद्रा होती है ।

४ पुन महाव्रत आरोपण के अयोग्य अर्थात् पुन दीक्षा देने के अयोग्य । विशेष जानने के लिए प्रायश्चित्त परिशिष्ट देखें ।

वातिक[1]

अथवा व्याधि-ग्रस्त को, क्लीव—असमर्थ को

इसी तरह 'उक्त तीन को' मुण्डित करना, शिक्षा देना महाव्रतो का आरोपण करना, एक साथ बैठ कर भोजन करना तथा साथ मे रखना नहीं कल्पता है।

२०३ तीन वाचना देने योग्य नही हैं, यथा-

अविनीत को,

दूध आदि विकृति के लोलुपी को,

अत्यन्त क्रोधी 'जिसका क्रोध कभी शान्त न हो उसको।

तीन को वाचना देना कल्पता है, यथा-

विनीत को

घी आदि विकृति मे लोलुप न होने वाले को,

क्रोध उपशान्त करने वाले को।

तीन को समझाना कठिन है, यथा-

दुष्ट को, मूढ को और दुराग्रही को

तीन को सरलता से समझाया जा सकता है, यथा-

अदुष्ट का, अमूढ को और अदुराग्रही को।

२०४ तीन माण्डलिक पवत कहे गये हैं, यथा-

---

१ जो विषयेच्छा होने पर अपने आपको रोक न सके।

मानुषोत्तर पर्वत,
कुण्डलवर पर्वत,
रूचकवर पर्वत।

२०५ तीन बडे से बडे कहे गये हैं, यथा-
सब मेरुपर्वतों में जम्बूद्वीप का मेरुपर्वत,
समुद्रों में स्वयंभुरमण समुद्र,
कल्पों में ब्रह्मलोक कल्प।

२०६ तीन प्रकार की कल्प स्थिति 'आचार-मर्यादा' कही गई है, यथा-
सामायिक कल्पस्थिति,
छेदोपस्थापनीय कल्पस्थिति
निर्विशमान 'परिहार विशुद्धि' कल्पस्थिति।

अथवा तीन प्रकार की कल्पस्थिति कही गई है, यथा-
निर्विष्ट कल्पस्थिति 'परिहार विशुद्धिक'
जिनकल्प स्थिति,
स्थविर कल्पस्थिति।

२०७ नारक जीवों के तीन शरीर कहे गये हैं, यथा-
वैक्रिय, तैजस और कार्मण।

असुरकुमारों के तीन शरीर नैरयिकों के समान कहे गये हैं,
इसी तरह सब देवों के।

पृथ्वीकाय के तीन शरीर कहे गये हैं, यथा-

औदारिक, तैजस और कार्मण।

इसी तरह वायुकाय को छोड कर चतुरिन्द्रिय पर्यन्त तीन शरीर समझने चाहिये।

२०८ गुरु सम्बन्धी तीन प्रत्यनीक 'प्रतिकूल आचरण करने वाले कहे गये हैं, यथा-

आचाय का प्रत्यनीक,

उपाध्याय का प्रत्यनीक,

स्थविर का प्रत्यनीक।

गति सम्बन्धी तीन प्रत्यनीक कहे गये है, यथा-

इहलोक-प्रत्यनीक,

परलोक प्रत्यनीक,

उभय लोक प्रत्यनीक

समूह की अपेक्षा से तीन प्रत्यनीक कहे गये हैं, यथा

कुल प्रत्यनीक,

गण प्रत्यनीक

सघ-प्रत्यनीक।

अनुकम्पा की अपेक्षा से तीन प्रत्यनीक कहे गये हैं, यथा-

तपस्वी-प्रत्यनीक,

ग्लान-प्रत्यनीक,

शैक्ष 'नवदीक्षित' प्रत्यनीक[1],

---

१ इन पर अनुकम्पा करना चाहिए परन्तु जो इन पर अनुकम्पा नहीं करता है वह इनका प्रत्यनीक कहा जाता है।

एक परमाणु पुद्गल का दूसरे परमाणु-पुद्गल से टक
राने के कारण गति मे प्रतिघात होता है,
रूक्ष होने से गति मे प्रतिघात होता है,
लोकान्त मे गति का प्रतिघात होता है[१]।

२१२ चक्षुष्मान् 'नेत्रवाले' तीन प्रकार के कहे गये हैं, यथा
एक नेत्रवाले, दो नेत्रवाले और तीन नेत्रवाले।
छद्मस्थ-श्रुतादि ज्ञान-रहित मनुष्य एक नेत्रवाले हैं[२]
देव दो नेत्रवाले हैं,[३]
तथारूप श्रमण-माहन तीन नेत्र वाले हैं।[४]

२१३ तीन प्रकार का अभिसमागम 'विशिष्ट ज्ञान' हैं, यथा-
ऊर्ध्व, अध और तिर्यक्।
जब किसी तथारूप श्रमण माहण को विशिष्ट ज्ञान दर्शन
'परम अवधिज्ञानादि' उत्पन्न होता है तब वह
सर्व प्रथम ऊर्ध्वलोक को जानता है
तदनन्तर तिर्यक् लोक को जानता है,
उसके पश्चात् अधोलोक को जानता है।
हे श्रमण आयुष्मन्! अधोलोक का ज्ञान कठिनाई से होता है

---

१ क्योंकि आगे धर्मास्तिकाय का अभाव होने से गति नहीं होती।
२ क्योंकि उनके विशिष्ट श्रुतज्ञानादि भावचक्षु नहीं है केवल चर्मचक्षु है।
३ क्योंकि उनके चक्षु रिन्द्रिय और अवधिज्ञान है।
४ विशिष्ट श्रुत अवधि ज्ञान और दर्शन उत्पन्न होने से उनके

२१४ ऋद्धि तीन प्रकार की कही गई है, यथा-

देवर्द्धि, राजर्द्धि और गणके अधिपति आचार्य की ऋद्धि।

देव की ऋद्धि तीन प्रकार की कही है, यथा-

विमानो की ऋद्धि,

वैक्रिय की ऋद्धि,

परिचार 'विषय भोग' की ऋद्धि ।

अथवा- देवर्द्धि तीन प्रकार की है यथा-

सचित्त, अचित्त और मिश्र ।

राजा की ऋद्धि तीन प्रकार की है, यथा-

राजा की अतियान ऋद्धि[1],

राजा कि नियान ऋद्धि[2],

राजा की सेना, वाहन कोष, कोष्ठागार (धान्यभाण्डागार) आदि की ऋद्धि ।

अथवा- राजा की ऋद्धि तीन प्रकार की है, यथा-

सचित्त, अचित्त और मिश्र ऋद्धि ।

गणी (आचार्य)की ऋद्धि तीन प्रकार की है, यथा-

द्रव्य चक्षु, परमश्रुत और अवधि ज्ञानदर्शन रूप तीन नेत्र हैं ।

१ नगर-प्रवेश के समय तोरण आदि की ऋद्धि ।

२ बाहर निकलने के समय हाथी सामन्त आदि की ऋद्धि ।

२२१ तीन लेश्याए दुर्गन्ध वाली कही गई हैं, यथा-
कृष्णलेश्या, नीललेश्या और कापोतलेश्या ।
तीन लेश्याए सुगधवाली कही गई हैं, यथा
तेजोलेश्या, पद्मलेश्या शुक्ललेश्या ।

इसी तरह दुर्गति में ले जानेवाली, सुगति मे ले जाते वाली लेश्या, अशुभ, शुभ, अमनोज्ञ, मनोज्ञ, अविशुद्ध, विशुद्ध, क्रमश अप्रशस्त, प्रशस्त, शीतोष्ण और स्निग्ध, रूक्ष समझनी चाहिए ।

२२२ मरण तीन प्रकार का कहा गया है, यथा-
बालमरण, पण्डितमरण और बाल पण्डितमरण ।

बालमरण तीन प्रकार का कहा गया है, यथा-
स्थितलेश्य[1] सक्लिष्ट लेश्य[2] पर्यवजात लेश्य[3]

पण्डितमरण तीन प्रकार का है, यथा-
स्थितलेश्य, असक्लिष्ट लेश्य और अपर्यवजात लेश्य ।

बालपण्डितमरण तीन प्रकार का है, यथा-
स्थितलेश्य, असक्लिष्टलेश्य और अपर्यवजात लेश्य ।

---

१ कृष्णादि लेश्या वाला होकर जब कृष्ण वाले नरकादि में उत्पन्न हो ।

२ नील लेश्यावाला होकर कृष्ण लेश्या वाले मे उत्पन्न हो ।

३ कृष्णलेश्या वाला होकर जब नीलादि लेश्या मे उत्पन्न हो ।

२२३ निश्चय नही करने वाले 'शकाशील' के लिए तीन स्थान अहित कर, अशुभरूप, अयुक्त, अकल्याण कारी और अशुभानुबन्धी होते हैं, यथा-

कोई मुण्डित होकर गृहस्थाश्रम से निकलकर अनागार धम मे दीक्षित होने पर निग्रन्थ प्रवचन में शका करता है, अन्यमत की इच्छा करता है, क्रिया के फल के प्रति शकाशील होता है, द्वैधीभाव 'ऐसा है या नही है' ऐसी बुद्धि को प्राप्त करता है, और कलुषित भाव वाला होता है और इस प्रकार वह निग्रन्थ प्रवचन मे श्रद्धा नही रखता है, विश्वास नही रखता है, रुचि नहीं रखता है तो उसे परीषह होते हैं और वे उसे पराजित कर देते है। परीषहो को पराजित नहीं कर सकता।

कोई व्यक्ति मुण्डित होकर अगार अवस्था से अनगार रूप मे दीक्षित होने पर पाच महाव्रतो मे शका करे —यावत्— कलुषित भाव वाला होता है और इस प्रकार वह कलुषित पच महाव्रतो मे श्रद्धा नही रखता, —यावत्— वह परीषहो को पराजित नही कर सकता है।

कोई व्यक्ति मुण्डित होकर और अगार से अनागार दीक्षा को अगीकार करने पर षट् जीव निकाय मे श्रद्धा नही करता है, —यावत्— वह परीषहो को पराजित नही कर सकता है,

सम्यक् निश्चय करने वाले के तीन स्थान हित कर —यावत्— शुभानुबंधी होते हैं, यथा-

कोई व्यक्ति मुण्डित होकर गृहस्थावस्था से अनागार धम मे प्रव्रजित होने पर निग्रन्थ प्रवचन मे शका नहीं लाता है अन्यमत की काक्षा नही करता है—यावत्—कलुषभाव को प्राप्त न होकर निर्ग्रन्थ प्रवचन मे श्रद्धा रखता है, विश्वास रखता है और रुचि रखता है तो वह परीषहो को पराजित कर देता है । परीषह उसे पराजित नही कर सकते हैं।

कोई व्यक्ति मुण्डित होकर और गृहस्थावस्था से अनगार धर्म मे प्रव्रजित होकर पाच महाव्रतो मे शका नही करता है, काक्षा नही करता है—यावत्—वह परीषहो को पराजित करता है, परीषह उसे पराजित नही कर सकते हैं।

कोई व्यक्ति मुण्डित होकर गृहस्थावस्था से अनगार अवस्था मे प्रव्रजित होकर षट् जीवनिकाय मे शका नही करता है—यावत्—वह परीषहो को पराजित कर देता उसे परीषह पराजित नहीं कर सकते है।

२२४ रत्नप्रभादि प्रत्येक पृथ्वी तीन वलयो के द्वारा चारो तरफ से घिरी हुई है, यथा-

घनोदधिवलय से, घनवातवलय से और तनुवातवलय से।

२२५ नैरयिक जीवन उत्कृष्ट तीन समय वाली विग्रह-गति से उत्पन्न होते हैं।

एकेन्द्रिय को छाडकर वैमानिक पर्यन्त ऐसा जानना चाहिए[1]

२२६ क्षीण मोह वाले अर्हन्त तीन कर्मप्रकृतियो का एक साथ क्षय करते हैं, यथा-

ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय और अन्तराय।

२२७ अभिजित् नक्षत्र के तीन तारे कहे गये हैं।

इसी तरह श्रवण, अश्विनी, भरणी, मृगशिर, पुष्य और ज्येष्ठा के भी तीन तीन तारे हैं।

२२८ श्री धर्मनाथ तीर्थंकर के पश्चात् त्रिचतुर्थांश 'पौने, पल्योपम न्यून सागरोपम व्यतीत हो जाने के बाद श्री शान्तिनाथ भगवान् उत्पन्न हुए।

---

१ एकेन्द्रिय जीव, एकेन्द्रिय मे उत्पन्न होते हुए त्रसनाडी से बाहर भी उत्पन्न होते हैं अत पांच समय भी लग सकते हैं)।

२२९ श्रमण "भगवान्" महावीर से लेकर तीसरे युगपुरुष (जम्बू स्वामी) पर्यन्त मोक्षगमन कहा गया है[1]।

मल्लिनाथ भगवान् ने तीन सौ पुरुषो के साथ मुण्डित होकर प्रव्रज्या धारण की थी ।

इसी तरह पार्श्वनाथ भगवान् ने भी ।

२३० श्रमण भगवान् महावीर के जिन नही किन्तु जिन के समान, सर्वाक्षरसन्निपाती 'सब भाषाओ के वेत्ता' और जिन के समान यथातथ्य कहने वाले चौदह पूर्वधर मुनियो की उत्कृष्ट सम्पदा 'सख्या' तीन सौ थी।

२३१ तीन तीर्थकर चक्रवर्त्ती थे, यथा-

शान्तिनाथ, कुन्थुनाथ और अरनाथ ।

२३२ ग्रैवेयक विमान प्रस्तर 'समूह' तीन कह कहे गये हैं, यथा-

अधस्तन ग्रैवेयक विमान प्रस्तर,
मध्यम ग्रैवेयक विमान प्रस्तर,
उपरितन ग्रैवेयक विमान प्रस्तर ।

अधस्तन ग्रैवेयक विमान स्तर तीन प्रकार के कहे गये हैं, यथा-

अधस्तनाधस्तन ग्रैवेयक विमान प्रस्तर,
अधस्तनमध्यम ग्रैवेयक विमान प्रस्तर,
अधस्तनोपरितन ग्रैवयक विमान प्रस्तर ।

१　लगातार तीन पट्टधर निर्वाण को प्राप्त हुए हैं ।

मध्यम ग्रैवेयक विमानप्रस्तर तीन प्रकार के कहे गये हैं यथा-

मध्यमाधस्तन ग्रैवेयक विमान प्रस्तर,

मध्यममध्यम ग्रैवेयक विमान प्रस्तर,

मध्यमोपरितन ग्रैवेयक विमान प्रस्तर ।

उपरितन ग्रैवेयक विमान प्रस्तर तीन प्रकार के कहे गये हैं, यथा-

उपरितन अधस्तन ग्रैवेयक विमान प्रस्तर,

उपरितन मध्यम ग्रैवेयक विमान प्रस्तर,

उपरितनोपरितन ग्रैवेयक विमान प्रस्तर ।

२३३ जीवोंने तीन स्थानो मे अर्जित पुद्‌गलो को पापकम रूप मे एकत्रित किये, करते हैं और करेगें, यथा

स्त्रीवेद निर्वातित,

पुरुषवेद निर्वातित,

नपुमकवेद निर्वातित ।

पुद्‌गलों का एकत्रित करना, वृद्धि करना, बध, उदीरणा, वेदन तथा निजरा का भी इसी तरह कथन समझना चाहिए ।

२३४ तीन प्रदेशी स्कन्ध अनन्त कहे हैं इस प्रकार–यावत्–त्रिगुण रूक्ष पुद्‌गल अनन्त कहे गये है ।

दु खो का अन्त करता है । जसे चातु
चक्रवर्ती राजा सनत्कुमार ।

॥ यह तीसरी अन्तक्रिया है ॥

चौथी अन्तक्रिया इस प्रकार है

कोई अल्पकर्मा व्यक्ति मनुष्य भव म उत्पन्न ह
है । वह मुण्डित होकर यावत-दीक्षा लेकर उत्तम स
का पालन करता है यावत- न तो उसे घोर तप क
पडता है और न उसे घोर वेदना सहनी पडती है । ए
पुरुष अल्पायु भोगकर सिद्ध होता है यावत स
दु खो का अन्त करता है । जैसे भगवती मरुदेवी

॥ यह चौथी अन्तक्रिया है ॥

२३६ चार प्रकार के वृक्ष कहे गये हैं, यथा-
कितनेक द्रव्य से भी ऊचे और भाव से भी ऊचे,[1]
कितनेक द्रव्य से ऊचे किन्तु भाव से नीचे,[2]
कितनेक द्रव्य से नीचे कि तु भाव से ऊचे[3],
कितनेक द्रव्य से भी नीचे और भाव से भी नीचे।[4]

---

१ जैसे चन्दनादि ।
२ जैसे नीम आदि ।
३ जैसे इलायची आदि ।
४ जैसे जवासा आदि ।

इसी प्रकार चार प्रकार के पुरुप कहे गये है, यथा-

कितनक द्रव्य से 'जाति से' उन्नत और गुण से भी उन्नत इस प्रकार यावत्- द्रव्य से भी हीन और गुण से भी हीन।

चार प्रकार के वृक्ष कहे गये है, यथा-

कितनेक वृक्ष ऊचाई मे उन्नत होते हैं और शुभ रस वाले होते हैं।

कितनेक वृक्ष ऊचाई मे उन्नत ह।ते हैं परन्तु अशुभ रस वाले होते हैं।

कितनेक वृक्ष ऊचाई मे अवनत और रमादि मे उन्नत होते हैं।

कितनेक वृक्ष ऊचाई मे भी अवनत और रसादि मे भी अवनत होते हैं।

इसी तरह चा॰ प्रनार के पुरुप कहे गये हैं यथा

द्रव्य से भी उ नत और गुण परिणमन से भी उन्नत। इत्यादि चार भग।

चार प्रकार के वृक्ष कहे गये हैं,

कितनेक ऊचाई मे भी ऊचे आर रूप मे भी उन्नत। इत्यादि चार भग।

इसी प्रकाग चार प्रकाग के पुरुण कह गये है, यथा-

कितनेक द्रव्यादि से उन्नत होते हुए रूप से भी उन्नत

दुःखों का अन्त करता है। जैसे चातुरन्त चक्रवर्ती राजा सनत्कुमार।

॥ यह तीसरी अन्तक्रिया है ॥

चौथी अन्तक्रिया इस प्रकार है

कोई अल्पकर्मा व्यक्ति मनुष्य भव में उत्पन्न होता है। वह मुण्डित होकर -यावत दीक्षा लेकर उत्तम संयम का पालन करता है यावत- न तो उसे घोर तप करना पड़ता है और न उसे घोर वेदना सहनी पड़ती है। ऐसा पुरुष अल्पायु भोगकर सिद्ध होता है -यावत सब दुःखों का अन्त करता है। जैसे भगवती मरुदेवी।

॥ यह चौथी अन्तक्रिया है ॥

२३६ चार प्रकार के वृक्ष कहे गये हैं यथा-

कितनेक द्रव्य से भी ऊंचे और भाव से भी ऊंचे,[1]

कितनेक द्रव्य से ऊंचे किन्तु भाव से नीचे,[2]

कितनेक द्रव्य से नीचे किन्तु भाव से ऊंचे[3],

कितनेक द्रव्य से भी नीचे और भाव से भी नीचे।[4]

---

१ जैसे चन्दनादि।

२ जैसे नीम आदि।

३ जैसे इलायची आदि।

४ जैसे जवासा आदि।

इसी प्रकार चार प्रकार के पुरुष कहे गये ह, यथा-

किननक द्रव्य से 'जाति से' उन्नत और गुण से भी उन्नत इस प्रकार यावत् द्रव्य से भी हीन और गुण से भी हीन।

चार प्रकार के वृक्ष कहे गये हैं, यथा-

कितनेक वृक्ष ऊचाई मे उन्नत होते हैं और शुभ रस वाले होते हैं।

कितनेक वृक्ष ऊचाई मे उन्नत हाते हैं परन्तु अशुभ रस वाले होते हैं।

कितनक वृक्ष ऊचाई मे अवनत और रसादि मे उन्नत होते हैं।

कितनेक वृक्ष ऊचाई मे भी अवनत और रसादि मे भी अवनत होते हैं।

इसी तरह चार प्रकार के पुरुष कहे गये हैं यथा-

द्रव्य से भी उन्नत और गुण परिणमन से भी उन्नत। इत्यादि चार भग।

चार प्रकार के वृक्ष कहे गये हैं,

कितनेक ऊचाई मे भी ऊचे ओर रूप मे भी उन्नत। इत्यादि चार भग।

इसी प्रकार चार प्रकार क पुरुष कह गये हैं, यथा-

कितनेक द्रव्यादि से उन्नत होते हुए रूप से भी उन्नत

है। इत्यादि चार भंग।

चार प्रकार के पुरुष कहे गये हैं, यथा-

द्रव्यादि मे उन्नत होते हुए उन्नत मनवाले -यावत चार भंग।

इसी प्रकार संकल्प ८ प्रज्ञा ९, दृष्टि १०, शीलाचार ११, व्यवहार १२, पराक्रम १३, सब के चार चार भंग समझ लेने चाहिए।

इन सब सूत्रो मे पुरुष सूत्र ही समझने चाहिये, वृक्ष सूत्र नही।

चार प्रकार के वृक्ष कहे गये है, यथा

कितनेक वृक्ष आकृति से भी सरल और फलादि देने मे भी सरल,[1]

कितनेक आकृति मे सरल और फलादि देने मे वक्र।

इस प्रकार चार भंग।

इसी प्रकार चार प्रकार के पुरुष कहे गये है, यथा-

आकृति से भी सरल और हृदय से भी सरल।

इसी प्रकार उन्नत प्रणत के चार भंग और ऋजुवक्र के चार भंग भी कहने चाहिये।

पराक्रम तक सब भंग जान लेने चाहिए।

---

१ जिसकी सेवा करने पर उचित समय पर उचित उपकार रूप फल प्राप्त हो।

२३७ प्रतिमाधारी अनगार को चार भाषाए बोलना कल्पता है, यथा-याचनी,[1] प्रच्छनी,[2] अनुज्ञापनी,[3] प्रश्नव्याकरणी ।[4]

२३८ चार प्रकार की भाषाए कही गई है, यथा-

सत्यभाषा, मृषा, सत्य मृषा और असत्यामृषा-व्यवहार भाषा ।

२३९ चार प्रकार के वस्त्र कहे गये है, यथा-

शुद्ध तन्तु आदि से बुना हुआ भी है और बाह्य मेल से रहित भी है

अथवा पहले भी शुद्ध और अभी भी शुद्ध ।

शुद्ध बुना हुआ तो है परन्तु मलिन है,

शुद्ध बुना हुआ नही परन्तु स्वच्छ है ।

शुद्ध बना हुआ भी नही है और स्वच्छ भी नही है ।

इसी प्रकार चार प्रकार के पुरुष कहे गये है, यथा-

जाति आदि से शुद्ध और ज्ञानादी गुण से भी शुद्ध ।

---

१ वस्तु मांगने के लिए बोलना ।

२ मार्ग पूछने के लिए या सूत्रार्थ पूछने के लिए बोलना ।

३ स्थान आदि की आज्ञा लेते हुए बोलना ।

४ प्रत्युत्तर देने के लिए बोलना ।

इत्यादि चार भग ।

इसी तरह परिणत और रूप से भी वस्त्र की चौभगी और पुरुष की चौभगी समझ लनी चाहिए ।

चार प्रकार के पुरुष कहे गये हैं, यथा-

जात्यादि से शुद्ध और मन मे भी शुद्ध ।

इत्यादि चार भग ।

इसी तरह सकल्प-यावत्-पराक्रम के भी चारभग जानने चाहिए ।

२४० चार प्रकार के पुत्र कहे गये हैं,

अतिजात, 'अपने पिता से भी बढा चढा हुआ,

'अनुजात, 'पिता के समान,

अवजात 'पिता से कम गुण वाला,

कुलागार' कलमे कलक लगाने वाला, ।

चार प्रकार के पुरुष कहे गये ह, यथा-

कितने द्रव्य से भी सत्य और भाव से भी सत्य होते ह ।

कितने द्रव्य से सत्य और भाव से असत्य होते ह ।

इत्यादि चार भग ।

इसी तरह परिणत-यावत-पराक्रमके चार भग जानने चाहिये ।

---

१ मूल मे भी सरल और अ त मे भी सरल ।

चार प्रकार के वस्त्र कहे गये हैं, यथा-

कितने स्वभाव से भी पवित्र और सस्कार से भी पवित्र,

कितनक स्वभाव से पवित्र परन्तु सस्कार से अपवित्र

इत्यादि चार भग।

इसी तरह चार प्रकार के पुरुष कहे गये है, यथा-

शरीर से भी पवित्र और स्वभाव से भी पवित्र।

इत्यादि चार भग।

२४१ शुद्ध वस्त्र के चार भग पहले कहे है उसी प्रकार शुचिवस्त्रके भी चार भग समझने चाहिए।

२४२ चार प्रकार के कोर कहे गये हैं, यथा-

आम्रफल के कोर,

ताड के फल के कोर,

वल्लीफल के कोर,

मेढे के सिंग के समान फलवाली वनस्पति के कोर।

इसी प्रकार चार प्रकार के पुरुप कहे गये है यथा

आम्रफल के कोर के समान,

तालफल के कोर के सामन[1],

---

१ जिसकी बहुत काल तक कष्ट उठा कर सेवा करने पर वडा फल प्राप्त होता हो।

इत्यादि चार भग ।

इसी तरह परिणत और रूप मे भी वस्त्र की चौभगी और पुरुष की चौभगी समझ लेनी चाहिए ।

चार प्रकार के पुरुप कहे गये हैं, यथा-

जात्यादि से शुद्ध और मन मे भी शुद्ध ।

इत्यादि चार भग ।

इसी तरह सकल्प-यावत् पराक्रम के भी चारभग जानने चाहिए ।

२४० चार प्रकार के पुत्र कहे गये ह,

अतिजात, 'अपने पिता से भी बढा चढा हुआ,

'अनुजात, 'पिता के समान,

अवजात 'पिता से कम गुण वाला,

कुलागार' कलमे कलक लगाने वाला, ।

चार प्रकार के पुरुप कहे गये ह, यथा-

कितने द्रव्य से भी सत्य और भाव से भी सत्य होते है ।

कितने द्रव्य से सत्य और भाव स असत्य होते हैं ।

इत्यादि चार भग ।

इसी तरह परिणत-यावत्-पराक्रममे चार भग जानने चाहिये ।

---

१ मूल मे भी सरल और अन्त मे भी सरल ।

चार प्रकार के वस्त्र कहे गये है यथा-

कितने स्वभाव से भी पवित्र और सस्कार से भी पवित्र, कितनेक स्वभाव से पवित्र परन्तु सस्कार से अपवित्र इत्यादि चार भग।

इसी तरह चार प्रकार के पुरुष कहे गये है, यथा-

शरीर से भी पवित्र और स्वभाव से भी पवित्र।

इत्यादि चार भग।

२४१ शुद्ध वस्त्र के चार भग पहले कह हैं उसी प्रकार शुचिवस्त्रके भी चार भग समझने चाहिए।

२४२ चार प्रकार के कोर कहे गये हैं, यथा-

आम्रफल के कोर,

ताड के फल के कोर,

वल्लीफल के कोर,

मेढे के सिंग के समान फलवाली वनस्पति के कोर।

इसी प्रकार चार प्रकार के पुरुष कहे गये है यथा-

आम्रफल के कोर के समान,

तालफल के कोर के सामन[1],

---

१ जिसकी बहुत काल तक कष्ट उठा कर सेवा करने पर बडा फल प्राप्त होता हो।

इत्यादि चार भंग।

इसी तरह परिणत और रूप से भी वस्त्र की चौभंगी और पुरुष की चौभंगी समझ लेनी चाहिए।

चार प्रकार के पुरुष कहे गये हैं, यथा-

जात्यादि से शुद्ध और मन से भी शुद्ध।

इत्यादि चार भंग।

इसी तरह संकल्प-यावत्-पराक्रम के भी चारभंग जानने चाहिए।

२८० चार प्रकार के पुत्र कहे गये हैं,

अतिजात, 'अपने पिता से भी बढ़ा चढ़ा हुआ,

'अनुजात, 'पिता के समान,

अवजात 'पिता से कम गुण वाला,

कुलांगार कुलमें कलंक लगाने वाला, ।

चार प्रकार के पुरुष कहे गये है, यथा-

कितने द्रव्य से भी सत्य और भाव से भी सत्य होते हैं।

कितने द्रव्य से सत्य और भाव से असत्य होते हैं।

इत्यादि चार भंग।

इसी तरह परिणत-यावत-पराक्रमके चार भंग जानने चाहिये।

---

१ मूल में भी सरल और अंत में भी सरल।

चार प्रकार के वस्त्र कहे गये है यथा-

कितने स्वभाव से भी पवित्र और सस्कार से भी पवित्र,
कितनेक स्वभाव से पवित्र परन्तु सस्कार से अपवित्र
इत्यादि चार भग ।

इसी तरह चार प्रकार के पुरुष कहे गये है, यथा

शरीर से भी पवित्र और स्वभाव से भी पवित्र ।
इत्यादि चार भग ।

२४१ शुद्ध वस्त्र के चार भग पहले कहे है उसी प्रकार शुचिवस्त्रके भी चार भग समझने चाहिए ।

२४२ चार प्रकार के कोर कहे गये हैं, यथा-

आम्रफल के कोर,
ताड के फल के कोर,
वल्लीफल के कोर,
मेढे के सिंग के समान फलवाली वनस्पति के कोर ।

इसी प्रकार चार प्रकार के पुरुष कहे गये हैं यथा

आम्रफल के कोर के समान,
तालफल के कोर के समान[1],

---

१ जिसकी बहुत काल तक कष्ट उठा कर सेवा करने पर बडा फल प्राप्त होता हो ।

इसी तरह नरकायुकर्म के क्षीण न होने से यावत आने में समर्थ नहीं होता है।

इन चार कारणों से नवीन उत्पन्न नैरयिक मनुष्य लोक में शीघ्र आने की इच्छा करने पर भी आने में समर्थ नहीं होता है।

२४६ साध्वि को चार साडिया धारण करने और पहनने के लिए कल्पती है, यथा

एक दो हाथ विस्तारवाली,[1]

दो तीन हाथ विस्तारवाली,

एक चार हाथ विस्तारवाली

२४७ ध्यान चार प्रकार के कहे गये हैं

आर्त ध्यान, रौद्र ध्यान धर्म ध्यान और शुक्ल ध्यान।

आर्त्तध्यान चार प्रकार का कहा गया है यथा

अमनोज्ञ 'अनिष्ट' वस्तु की प्राप्ति होने पर उसे दूर करने की चिन्ता करना।

मनोज्ञवस्तु की प्राप्ति होने पर वह दूर न हो उसकी चिन्ता करना।[2]

---

१ विस्तार का अर्थ है चौडाई पने से समझना चाहिए।

२ सूत्रार्थ का चिन्तन।

बीमारी होने पर उसे दूर करने की चिन्ता करना।
सेवित काम भोगों में युक्त होने पर उनके चले न जाने की चिन्ता करना।

अथवा ज्वरादि में भोग भोगने में असमर्थ न हो जाऊं ऐसी चिन्ता करना।

आर्तध्यान के चार लक्षण हैं यथा-

आक्रन्दन करना, शोक करना।
आंसु गिराना, विलाप करना।

रौद्रध्यान चार प्रकार का है यथा-

हिंसानुबन्धी, मृषानुबन्धी,
स्तेयानुबन्धी संरक्षणाणुबन्धी।

रौद्रध्यान के चार लक्षण कहे गये हैं, यथा-

हिंसादि दोषों में से किसी एक में
अत्यन्त प्रवृत्ति करना, हिंसादि सब दोषों में बहुविध प्रवृत्ति करना, हिंसादि अधर्मकार्य में धर्म बुद्धि से या अभ्युदय के लिये प्रवृत्ति करना,
मरण पर्यन्त हिंसादि कृत्यों के लिये पश्चात्ताप न होना आमरणान्त दोष है।

चार प्रकार का धर्मध्यान स्वरूप लक्षण, आलम्बन एवं अनुप्रेक्षा रूप चार पदों से चिन्तनीय है

आज्ञाविचय[1]

अपायविचय,[2]

विपाकविचय,[3]

संस्थान विचय[4] ।

धर्मध्यान के चार लक्षण कहे गये हैं यथा

आज्ञारुचि ,निसगरुचि

सूत्ररुचि अवगाढरुचि ।

धर्मध्यान के चार आलम्बन कहे गये हैं, यथा

वाचना, पृच्छना परिवर्तना और अनुप्रेक्षा ।

धर्मध्यान की चार भावनाएं कही गई हैं यथा-

एकत्वानुप्रेक्षा अनित्यानुप्रेक्षा,

---

१ वीतराग की आज्ञा का पर्यालोचन करना ।

२ रागादि से होने वाले अनर्थों का विचार ।

३ कर्म फल का विचार करना ।

४ लोक आदि के आकारका चिन्तन करना

५ शास्त्रों के अवगाहन से अथवा गुरु के उपदेश से होने वाली । रुचि ।

अशरणानुप्रेक्षा, ससारानुप्रेक्षा ।

शुक्लध्यान चार प्रकार का कहा गया है यथा-

पृथक्त्ववितक सविचारी ।[1]

एकत्व वितक अविचारी[2]

सूक्ष्म क्रिया अनिवृत्ति[3]

समुच्छिन्नक्रिया अप्रतिपाति[5]

---

१ एक द्रव्य के विभिन्न पर्यायों की पृथक् पृथक् विस्तार से श्रुतानुसार विचार करना और अथ से शब्द का और शब्द से अथ का विचार करना ।

२ द्रव्य की पयायों मे अभेद का चिन्तन करना तथा अर्थ से शब्द मे एव शब्द से अर्थ चिन्तन करना अथवा मन आदि योगों का एक से दूसरे मे सचरण न होना ।

३ मोक्षगमन के समय मनोयोग आदि के निरुद्ध हो जाने पर सूक्ष्म श्वासोच्छ्वास रूप क्रिया का शेष रहना तथा वर्धमान परिणाम रहने से नहीं गिरनेवाला ध्यान होने से सूक्ष्मक्रिया अनिवृत्ति है ।

४ विषयभोग और धनादि के रक्षण के लिये व्याकुल होना)

५ शैलेशीकरण मे सम्पूण काययोग का भी निरोध हो जाने से क्रिया का उच्छेद हो जाता है तथा यह अवस्था अप्रतिपाती है, अत समुच्छिन्न क्रिया, अप्रतिपाती कहा गया ।

शुक्लध्यान के चार लक्षण कहे गये हैं, यथा
अव्यथ[1] असम्मोह[2], विवेक[3], व्युत्सर्ग[4]।
शुक्लध्यान के चार आलम्बन हैं यथा-
क्षमा निर्ममत्व, मृदुता और सरलता।
शुक्लध्यान की चार भावनाएं कही गई हैं' यथा
अनन्तवर्तितानुप्रेक्षा[5]
विपरिणामानुप्रेक्षा[6]
अशुभानुप्रेक्षा,[7]
अपायानुप्रेक्षा[8],

---

१ देवकृत उपसर्गों से होने वाली व्यथा का अभाव।
२ अमूढता,
३ सब संयोगो से अपने आपको पृथक करना
४ देहोपाधि का त्याग।
५ जीव अनन्त बार चार गति रूप ससार मे भ्रमण कर चुका है आदि विचारना।
६ वस्तु के परिणमन की विचारणा।
७ ससार की अशुभता का विचार करना।
८ आश्रवके कटुक फलों का विचार करना।

२४८ देवो की स्थिति (क्रम–मर्यादा) चार प्रकार की है, यथा –

कोई सामान्य देव है, कोई देवो मे स्नातक (प्रधान) हैं, कोई देव पुरोहित हैं, कोई स्तुति पाठक देव है ।

चार प्रकार का सवास 'मैथुन के लिए सहनिवास' कहा गया है, यथा

कोई देव देवी के साथ सवास करता है,

कोई देव मानुषी नारी या तिर्यंच स्त्री के साथ सवास करता है

कोई मनुष्य या तिर्यंच-पुरुष देवीके साथ सवास करता है, ।

कोई मनुष्य या तिर्यंच पुरुष मानुषी या तिर्यंची के साथ सवास करता है ।

२४९ चार कषाय कहे गये हैं, यथा—

क्रोधकषाय, मानकषाय, मायाकषाय और लोभकषाय ।

ये चारो कषाय नारक-यावत्-वैमानिको में पाये जाते है

क्रोध के चार आधार कहे गये हैं, यथा—

आत्मप्रतिष्ठित[1] परप्रतिष्ठित[2]

---

१ 'अपने ऊपर आने वाला क्रोध' ।

२ दूसरे पर होने वाला' क्रोध ।

तदुभय प्रतिष्ठित[1], अप्रतिष्ठित[2]

ये क्रोध के चार आधार नैरयिक-यावत वमानिक पयन्त सब मे पाये जाते हैं।

इसी प्रकार यावत लोभ के भ। चार आधार हैं। मान, माया और लाभ के चार आधार वैमानिक पयन्त सब दण्डको मे पाये जाते हैं।

चार कारणो से क्रोध की उत्पत्ति होती है, यथा–

क्षेत्र के निमित्त से वस्तु के निमित्त से, शरीर के निमित्त से, उपधि क निमित्त मे।

इस प्रकार नारक-यावत वैमानिक मे जानना चाहिए। इसी प्रकार-यावत् लाभ की उत्पत्ति भी चार प्रकार स होती है। यह मान, माया और लाभ की उत्पत्ति नारक जीवो से लेकर वैमानिक पयन्त मब मे हाती है।

चार प्रकार का क्रोध कहा गया है यथा–

अनन्तानुबन्धी क्रोध, अप्रत्याख्यान क्रोध, प्रत्याख्यान नावरण क्रोध, सज्वलन क्रोध।

यह चारो प्रकार का क्रोध नारक यावत वैमानिको म

---

१ अपने और दूसरे के अपराध पर आने वाला क्रोध।

२ बिना किसी बाह्य कारण के क्रोध वेदनीय के उदय से होने वाला क्रोध।'

इसी तरह—यावत—लोभ भी वैमानिक पर्यन्त है।

चार प्रकार का क्रोध कहा गया है, यथा-

आभोगनिर्वर्त्तित,[1]

अनाभोगनिर्वतित,[2]

उपशान्त क्रोध,

अनुपशान्त क्रोध,

यह चारो प्रकार का क्रोध नैरयिक—यावत्
—वैमानिको मे होता है।

इसी तरह—यावत्—चार प्रकार का लोभ—यावत्—
वैमानिको मे पाया जाता है।

२५० चार कारणो से जीवो ने आठ कर्म-प्रकृतियो का चयन किया है, यथा

क्रोध से, मान से, माया से और लोभ से।

इसी प्रकार वैमानिको तक समझ लेना चाहिए।

इसी प्रकार "ग्रहण करते हैं" यह दण्डक भी जान लेना चाहिए।

इसी प्रकार "ग्रहण करेंगे" यह दण्डक भी समझ लेना चाहिए।

---

१ क्रोध के फल को जानते हुए भी किया गया क्रोध।
२ बिना जाने किया गया क्रोध।

इसी प्रकार चयन के तीन दण्डक हुए।

इसी प्रकार उपचय किया, करते हैं और करेंगे।

बंध किया, करते हैं और करेंगे।

उदीरणा की, करते हैं और करेंगे।

वेदन किया, करते हैं और करेंगे।

निर्जरा की, करते हैं और करेंगे।

यों वैमानिक पर्यन्त चौवीस दण्डक मे "उपचय—यावत्—निर्जरा करेंगे" तीन-तीन दण्डक समझ लेने चाहिए।

२५१ चार प्रकार की प्रतिमाए कही गई हैं, यथा-

समाधिप्रतिमा, उपधानप्रतिमा,
विवेकप्रतिमा, व्युत्सर्गप्रतिमा।

चार प्रकार की प्रतिमाए कही गई हैं, यथा-

भद्रा, सुभद्रा, महाभद्रा और सर्वतोभद्रा।

चार प्रकार की प्रतिमाए कही गई है, यथा-

क्षुद्रा मोकप्रतिमा, महती मोकप्रतिमा,
यवमध्या प्रतिमा, वज्रमध्या प्रतिमा।

२५२ चार अजीव अस्तिकाय कहे गये है, यथा-

धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय,
आकाशास्तिकाय, पुद्गलास्तिकाय।

चार अरूपी अस्तिकाय कहे गये है, यथा

धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय,

आकाशास्तिकाय, जीवास्तिकाय।

२५३ चार प्रकार के फल कहे गये हैं, यथा-

कोई कच्चा होने पर भी थोडा मीठा होता है,

कोई कच्चा होने पर भी अधिक मीठा होता है,

कोई पक्का होने पर भी थोडा मीठा होता है,

कोई पक्का होने पर ही अधिक मीठा होना है।

इसी प्रकार चार प्रकार के पुरुष कहे गये हैं, यथा

श्रुत और वय से अल्प होते हुए भी थोडे मीठे फल के समान अल्प उपशमादि गुण वाले होते है।

इस प्रकार चारो भग समझने चाहिए।

२५४ चार प्रकार के सत्य कहे गये हैं, यथा-

काया की सरलतारूप सत्य, भाषा की सरलतारूप सत्य,

भावो की सरलतारूप सत्य,अविसवाद योगरूप सत्य।[1]

चार प्रकार का मृषावाद कहा गया है, यथा-

काया की वक्रतारूप मृषावाद,

भाषा की वक्रतारूप मृषावाद,

भावो की वक्रतारूप मृषावाद,

---

१ वचन-पालन करना, विश्वासघात न करना।

विसंवाद योगरूप मृषावाद।

चार प्रकार के प्रणिधान (प्रयोग) कहे गये हैं, यथा

मन–प्रणिधान, वचन–प्रणिधान,

काय–प्रणिधान, उपकरण–प्रणिधान।

ये चारों प्रणिधान नारक –यावत्– वैमानिक पर्यन्त समस्त पंचेन्द्रिय दण्डकों में जानने चाहिए।

चार प्रकार के सुप्रणिधान कहे गये हैं, यथा

मन सुप्रणिधान यावत् उपकरण सुप्रणिधान।

यह सुप्रणिधान संयत मनुष्यों में ही पाये जाते हैं।

चार प्रकार के दुष्प्रणिधान कहे गये हैं, यथा

मन-दुष्प्रणिधान – यावत् उपकरण-दुष्प्रणिधान।

यह पंचेन्द्रियों को – यावत्– वैमानिकों को होता है।

२५५ चार प्रकार के पुरुष कहे गये हैं यथा

कोई प्रथम मिलन में वार्तालाप में भद्र लगते हैं परन्तु सहवास से अभद्र मालूम होते हैं,

कोई सहवास से भद्र मालूम होते हैं पर प्रथम मिलन में अभद्र लगते हैं,

कोई प्रथम मिलन में भी भद्र होते हैं और सहवास में भी भद्र मालूम होते हैं

कोई प्रथम मिलन में भी भद्र नहीं लगते और सहवास

मे भी भद्र मालूम नही होते ।

चार प्रकार के पुरुप कहे गये है, यथा-

कोई अपने दोष देखता है, दूसरो के नही,

कोई दूसरो के दोप देखता है अपने नही।

इस प्रकार चौभगी जाननी चाहिए।

चार प्रकार के पुरुप कहे गये हैं,यथा-

कोई अपने पाप की उदीरणा करता है किंतु दूसरो के पाप की उदीरणा नही करता ।

इस प्रकार चार भग जानने चाहिए।

चार प्रकार के पुरुप कहे गये हैं, यथा

कोई अपने पाप का शान्त करता है, दूसरो के पाप को शान्त नही करता,

इस तरह चौभगी जाननी चाहिए।

चार प्रकार के पुरुप कहे गये हैं, यथा-

कोई स्वय तो अभ्युत्थान आदि से दूसरो का सम्मान करते हैं परन्तु दूसरो के अभ्युत्थान मे अपना सम्मान नहीं कराते हैं।

इत्यादि-चोभगी ।

इसी तरह कोई स्वय वन्दन करता है किन्तु दूसरो से वन्दन नही कराता है।

इसी तरह सत्कार, सम्मान, पूजा, वाचना, सूत्रार्थ ग्रहण करना सूत्रार्थ पूछना, प्रश्न का उत्तर देना, आदि जानें।

चार प्रकार पुरुष कहे गये हैं, यथा

कोई सूत्रधर होता है अर्थधर नहीं होता,

कोई अर्थधर होता है, सूत्रधर नहीं होता।

कोई सूत्रधर भी होता है और अर्थधर भी होता है

कोई सूत्रधर भी नहीं होता और अर्थधर भी नहीं होता

२५६ असुरेन्द्र असुकुमार-राज चमर के चार लोकपाल कहे गये हैं, यथा-

सोम, यम, वरुण और वैश्रमण।

इसी तरह बलीन्द्र के भी सोम, यम, वैश्रमण और वरुण चार लोकपाल हैं।

धरणेन्द्र के कालपाल, कोलपाल शैलपाल और शंखपाल।

इसी तरह भूतानन्द के कालपाल, कालपाल शंखपाल और शैलपाल नामक चार लोकपाल हैं।

वेणुदेव के चित्र, विचित्र, चित्रपक्ष और विचित्रपक्ष।

वेणुदाली के चित्र, विचित्र, विचित्रपक्ष और चित्रपक्ष।

हरिकान्त के प्रभ, सुप्रभ, प्रभाकान्त और सुप्रभाकान्त।

हरिस्सह के प्रभ सुप्रभ, सुप्रभाकान्त और प्रभाकान्त।

अग्निशिख के तेज, तेजशिख, तेजस्कान्त और तेजप्रभ।

अग्निमानव के तेज, तेजशिख, तेजप्रभ और तेजस्कान्त।
पूर्णइन्द्र के रूप, रूपांश, रूपकान्त और रूपप्रभ।
विशिष्ट इन्द्र के रूप, रूपांश, रूपप्रभ और रूपकान्त।
जलकान्त इन्द्र के जल, जलरत, जलकान्त और जलप्रभ।
जलप्रभ के जल, जलरत, जलप्रभ और जलकान्त।
अमितगत के त्वरितगति, क्षिप्रगति, सिंहगति और सिंह विक्रमगति।

अमितवाहन के त्वरितगति, क्षिप्रगति

सिंहविक्रमगति सिंहगति और।
वेलम्ब के काल, महाकाल, अंजन और रिष्ट।
प्रभजन के काल, महाकाल, रिष्ट और अंजन।

घोस के आवर्त्त, व्यावर्त्त, नद्यावर्त्त और महानद्यावर्त्त।
महाघोषके आवर्त्त, व्यावर्त्त, महानन्द्यावर्त्त, और नन्द्यावर्त्त।
शक्र के सोम यम, वरुण और वैश्रमण।
ईशानेन्द्र के सोम, यम, वैश्रमण और वरुण।
इस प्रकार एक के अन्तर से अच्युतेन्द्र तक चार-चार लोकपाल समझने चाहिए।

वायुकुमार चार प्रकार के कहे गये हैं, यथा
काल, महाकाल, वेलम्ब और प्रभजन।

२ ७ चार प्रकार के देव कहे गये हैं, यथा-

भवनवासी, वानव्यन्तर, ज्योतिष्क और विमानवासी

२५८ चार प्रकार के प्रमाण कहे गये हैं, यथा
द्रव्यप्रमाण, क्षेत्रप्रमाण, कालप्रमाण और भावप्रमाण।

२५९ चार प्रधान दिक्कुमारियां कही गई हैं, यथा
रूपा, रूपांशा, सुरूपा और रूपावती। [२]

चार प्रधान विद्युतकुमारियां कही गई हैं, यथा
चित्रा, चित्रकनका, शतेरा और सौदामिनी।

२६० देवेन्द्र, देवराज शक्र की मध्यम परिषद के देवों की चार पल्योपम की स्थिति कही गई है।
देवेन्द्र देवराज ईशान की मध्यमपरिषद की देवियों की चार पल्योपम की स्थिति कही गई है। [३]

२६१ संसार चार प्रकार का कहा गया है, यथा
द्रव्यसंसार, क्षेत्रसंसार कालसंसार और भावसंसार।

२६२ चार प्रकार का दृष्टिवाद कहा गया है यथा
परिकर्म, सूत्र पूर्वगत और अनुयोग।

२६३ चार प्रकार के प्रायश्चित्त कहे गये हैं, यथा
ज्ञानप्रायश्चित्त, दर्शनप्रायश्चित्त
चारित्रप्रायश्चित्त, व्यक्तकृत्यप्रायश्चित्त[1]

---

१ गीतार्थ द्वारा किया जाने वाला प्रायश्चित्त।

ग्रथवा प्रीतिकृत्य[1]

चार प्रकार के प्रायश्चित्त कहे गये है यथा

पडिसेवना प्रायश्चित्त,[2] सयोजना प्रायश्चित्त[3]

आरोपण प्रायश्चित्त[4] पलिकुचन प्रायश्चित्त[5]

---

१ वैयावृत्यादि

२ अकृत्यके लिए किया जाने वाला प्रायश्चित्त।

३ समान कई अतिचारो का मेल होने पर दिया गया प्रायश्चित्त जसे शय्यातरपिंड ग्रहण किया वह भी जल से गीले हाथ वाले से लिया, वह भी सामने लाया हुआ और वह भी आधाकर्मी।

४ एकबार अपराधकरने और प्रायश्चित्त कर लेने पर पुन पुन उसी दोष के आसेवन से जो विजातीय प्रायश्चित्त दिया जाता है, जैसे पहले पाच अहोरात्र का प्रायश्चित्त एक बार का प्रायश्चित्त मिलने पर पुन उसी का सेवन किया तो दस दिन का, पुन सेवन करने पर पन्द्रह दिन का इस प्रकार यावत् छहमास का प्रायश्चित्त दिया जा सकता है यह आरोपणा प्रायश्चित्त है।

५ परिकुचन प्रायश्चित्त अपराध के छिपाने या अन्यथा कथन करने के अपराध मे दिया गया प्रायश्चित्त ।

अथवा प्रीतिकृत्य[1]

चार प्रकार के प्रायश्चित्त कहे गये हैं यथा

परिसेवना प्रायश्चित्त,[2] संयोजना प्रायश्चित्त[3]

आरोपण प्रायश्चित्त[4] परिकुंचन प्रायश्चित्त[5]

---

१ वैयावृत्यादि

२ अकृत्यके लिए किया जाने वाला प्रायश्चित्त।

३ समान कई अतिचारो का मेल होने पर दिया गया प्रायश्चित्त जैसे शय्यातरपिंड ग्रहण किया वह भी जल से गीले हाथ वाले से लिया, वह भी सामने लाया हुआ और वह भी आधाकर्मी।

४ एकबार अपराधकरने और प्रायश्चित्त कर लेने पर पुन पुन उसी दोष के आसेवन से जो विजातीय प्रायश्चित्त दिया जाता है, जैसे पहले पांच अहोरात्र का प्रायश्चित्त एक वार का प्रायश्चित्त मिलने पर पुन उसी का सेवन किया तो दस दिन का, पुन सेवन करने पर पन्द्रह दिन का इस प्रकार यावत् छह्मास का प्रायश्चित्त दिया जा सकता है यह आरोपणा प्रायश्चित्त है।

५ परिकुंचन प्रायश्चित्त अपराध के छिपाने या अन्यथा कथन करने के अपराध मे दिया गया प्रायश्चित्त है।

२६४ चार प्रकार का काल कहा गया है, यथा
प्रमाणकाल, यथायुनिर्वृत्तिकाल[1]
मरणकाल, अद्धाकाल।

२६५ पुद्गलो का चार प्रकार का परिणमन कहा गया है, यथा-
वर्णपरिणाम, गंधपरिणाम,
रसपरिणाम, स्पर्शपरिणाम।

२६६ भरत और ऐरवत क्षेत्र में प्रथम और अन्तिम तीर्थंकर को छोड़कर मध्य के बावीस अर्हन्त भगवान चातुर्याम (चार महाव्रत रूप) धर्म की प्ररूपणा करते हैं, यथा-
सर्व प्रकार की हिंसा से निवृत्त होना,
सर्व प्रकार के झूठ से निवृत्त होना
सर्व प्रकार के अदत्तादान से निवृत्त होना,
सर्व प्रकार के बाह्य पदार्थों के आदान से निवृत्त होना[2]

सर्व महाविदेहो में अर्हन्त भगवान चातुर्याम धर्म का प्ररूपण करते है, यथा-
सर्व प्रकार के प्राणातिपात से निवृत्त होना-यावत्-
सर्व प्रकार के बाह्य पदार्थों के आदान से निवृत्त होना[2]।

---

१ आयु बंध के अनुसार उतने काल तक उस रूप मे रहना।
२ धर्मोपकरण के अतिरिक्त-स्त्री, धन धान्य आदि के परिग्रह से निवृत्त होना।

२६७ चार प्रकार की दुगतिया कही गई हैं, यथा-

नैरयिक दुर्गति, तिर्यचयोनिक दुगति,

मनुष्य दुगति, देव दुगनि ।

चार प्रकार की सुगतिया कहो गई हैं, यथा

सिद्ध सुगति, देव सुगति,

मनुष्य सुगति, श्रेष्ठ कुलमें ज म ।

चार दुर्गतिप्राप्त कहे गये हैं यथा-

नैरयिक दुगतिप्राप्त तियचयोनिक दुगतिप्राप्त, ।

मनुष्य दुर्गति प्राप्त, देव दुगति प्राप्त ।

चार सुगति प्राप्त कहे गये हैं, यथा

सिद्ध सुगति प्राप्त यावत–श्रेष्ठ कुल मे जन्म प्राप्त । [४]

२६८ प्रथम समय जिन (सयोगिकेवली) के चार कम-प्रकृतियां क्षीण होती हैं, यथा-

ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, मोहनीय और अतराय ।

केवल ज्ञान–दर्शन जिन्हे उत्पन्न हुआ है ऐसे अर्हन्, जिन केवल चार कर्मप्रकृतियो का वेदन करते हैं, यथा-

वेदनीय, आयुष्य, नाम और गोत्र ।

प्रथम समय सिद्ध के चार कमप्रकृतिया एक साथ क्षीण होती हैं, यथा

वेदनीय, आयुष्य, नाम और गोत्र ।

२६९ चार कारणों से हास्य की उत्पत्ति होती है, यथा-

स्वयं जानकर सुनकर और स्मरण कर। [३]

२७० चार प्रकार के अन्तर कहे गये है-यथा

काष्ठान्तर[1] पक्ष्मान्तर[2] लोहान्तर[3], प्रस्तरान्तर[4]।

इसी तरह स्त्री स्त्री मे और पुरुष पुरुष मे भी चार प्रकार का अन्तर कहा गया है यथा-

काष्ठान्तर के समान पक्ष्मान्तर के समान,

लोहान्तर के समान प्रस्तरान्तर के समान।

२७१ चार प्रकार के भृतक (नौकर) कहे गये है, यथा

दिवसभृतक[5] यात्राभृतक[6], उच्चताभृतक[7], कब्बाडभृतक[8]।

२७२ चार प्रकार के पुरुष कहे गये है, यथा–

---

१ काष्ठ–काष्ठ मे अन्तर, जैसे कि चन्दन भी काष्ठ है और आकडा भी काष्ठ है परन्तु इनमे अन्तर है।

२ कपास–रुई-रुई मे अन्तर।

३ लोह-लोह मे अन्तर।

४ पाषाण- पाषण मे अन्तर।

५ प्रतिदिन मूल्य ठहरा कर काम करने के लिए रखा जाय वह।

६ देशान्तर मे जाने के लिए सहायक रूप से मे रखा जाय वह।

७ मूल्य और समय का नियम करके नियतकाल तक जिससे काय लिया जाय वह।

८ जमीन खोदने वाले ओड आदि जो ठेके से काम करते हैं।

कितनेक प्रकट रूप से दोप का सेवन करते हैं किन्तु गुप्त रूप से नही,

कितनेक प्रकट रूप से दोप का सेवन करते हैं किन्तु प्रकट रूप से नही,

कितनेक प्रकट रूप से भी और गुप्त रूप से भी दोप सेवन करते हैं,

कितनेक न तो प्रकट रूप से और न गुप्त रूप से दोप का सेवन करते है।

२७३ असुरेन्द्र असुरकुमारराज चमर के सोम महाराजा (लोकपाल) की चार अग्रमहिपिया कही गई हैं, यथा-

कनका कनकलता, चित्रगुप्ता और वसुधरा।

इसी तरह-यम, वरुण और वैश्रमण के भी इसी नाम की चार-चार अग्रमहिपिया है।

वैरोचनेन्द्र वैरोचनराज बलि के सोम लोकपाल की चार अग्रमहिपिया है, यथा-

मित्रका, सुभद्रा, विद्युता और अशनी।

इसी तरह यम, वैश्रमण और वरुण की भी अग्रमहिपिया इन्ही नाम वाली हैं।

नागकुमारेन्द्र नागकुमार-राज धरण के कालवाल, लोकपाल की चार अग्रमहिपिया हैं, यथा-

अशोका, विमला, सुप्रभा और सुदशना।

इसी प्रकार—यावत्—शखवान की अग्रमहिषिया है।

नागकुमारेन्द्र नागकुमारराज भूतानन्द के कालवाल लोकपाल की चार अग्रमहिषिया है, यथा

सुनन्दा, सुभद्रा, सुजाता और सुमना।

इसी प्रकार—यावत्—शैलवान की अग्रमहिषिया समझनी चाहिए।

जिस प्रकार धरणेन्द्रके लोकपालो का कथन किया उसी प्रकार सब दाक्षिणात्य—यावत्—घोष नामक इन्द्रके लोकपालो की अग्रमहिषिया जाननी चाहिये।

जिस प्रकार भूतानन्द का कथन किया उसी प्रकार उत्तर के सब इन्द्र—यावत्—महाघोष इन्द्र के लोकपालो की अग्रमहिषिया समझनी चाहिये।

पिशाचेन्द्र पिशाचराज काल की चार अग्रमहिषिया है, यथा-

कमला, कमलप्रभा उत्पला और सुदर्शना।

इसी तरह महाकाल की भी।

भूतेन्द्र भूतराज सुरूप के भी चार अग्रमहिषिया हैं, यथा

रूपवती, बहुरूपा, सुरूपा और सुभगा।

इसी तरह प्रतिरूप के भी।

यक्षेन्द्र यक्षराज पूर्णभद्र के चार अग्रमहिषिया है, यथा-

पुत्रा, बहुपुत्रा, उत्तमा और तारका।

ख—इसीप्रकार यक्षेन्द्र मणिभद्र की चार अग्रमहिषियो के नाम भी ये ही हैं।

४क—राक्षसेन्द्र, राक्षसराज भीम की अग्रमहिषिया चार हैं, उनके नाम ये हैं—

१ पद्मा, २ वसुमती, ३ कनका और ४ रत्नप्रभा।

ख—इसीप्रकार राक्षसेन्द्र महाभीम की चार अग्रमहिषियो के नाम भी ये ही हैं।

५क—किन्नरेन्द्र किन्नर की अग्रमहिषिया चार हैं, उनके नाम ये हैं—

१ वडिसा २ केतुमती, ३ रतिसेना और ४ रतिप्रभा।

ख—इसीप्रकार किन्नरेन्द्र किंपुरुष की चार अग्रमहिषियो के नाम भी ये ही हैं।

६क—किंपुरूषेन्द्र सत्पुरुष की अग्रमहिषिया चार हैं उनके नाम ये हैं—

१ रोहणी २ नवमिता, ३ ह्री और ४ पुष्पवती।

ख—इसीप्रकार पुरुषेन्द्र महापुरुष की चार अग्रमहिषियो के नाम भी ये ही हैं।

७क—महोरगेन्द्र अतिकाय की अग्रमहिषियां चार हैं उनके नाम ये हैं—

१ भुजगा, २ भुजगवती, ३ महाकच्छा और ४ स्फुटा।

ख—महोरगेन्द्र महाकाय की चार अग्रमहिषियो के नाम भी ये ही हैं।

८क—गधर्वेन्द्र गीतरति की अग्रमहिषिया चार हैं। उनके नाम ये हैं—

१ सुघोषा, २ विमला, ३ सुसरा और ४ सरस्वती।

ख—इसी प्रकार गधर्वेन्द्र गीत यशकी चार अग्रमहिषियो के नाम भी ये ही हैं।

९-१—ज्योतिष्केन्द्र, ज्योतिषराज चन्द्र की अग्रमहिषिया चार हैं। उनके नाम ये हैं—

१ चन्द्रप्रभा, २ ज्योत्स्नाभा, ३ अर्चिमाली और ४ प्रभकरा।

२—इसी प्रकार सूय की चार अग्रमहिषिया म प्रथम अग्रमहिषी का नाम सूयप्रभा और शेप तीन के नाम चन्द्र के समान हैं।

३—इगाल महाग्रह की अग्रमहिषिया चार हैं। उनके नाम ये हैं—

१ विजया, २ वैजयंती, ३ जयती और ४ अपराजिता।

४—इसीप्रकार सभी महाग्रहो की-यावत्-भावकेतु की चार-चार अग्रमहिषियो के नाम भी ये ही हैं।

१० १-क—शक्र देवेन्द्र देवराज के सोम (लोकपाल) महाराज की अग्रमहिषिया चार हैं। उनके नाम ये हैं—

१ रोहिणी, २ मदना, ३ चित्रा और ४ सोमा।

ख-घ—शेष लोकपालो की यावत् वैश्रमण की चार-चार अग्रमहिषियो के नाम भी ये ही हैं।

२-क—ईशानेन्द्र देवेन्द्र देवराज के सोम (लोकपाल) महाराज की अग्रमहिषियां चार हैं। उनके नाम ये हैं—

१ पृथ्वी, २ राजी, ३ रतनी और ४ विद्युत्।

ख-घ—इसीप्रकार शेष लोकपालो की-यावत्-वरुण की चार-चार अग्रमहिषियो के नाम भी ये ही हैं।

२७४ १—गोरस विकृतिया चार हैं। उनके नाम ये हैं—

१ दूध, २ दधि, ३ घृत और ४ नवनीत।

२—स्निग्ध विकृतियां चार हैं। उनके नाम ये हैं—

१ तैल, २ घृत, ३ चर्बी और ४ नवनीत।

३—महाविकृतियां चार हैं। उनके नाम ये हैं—

१ मधु, २ मांस, ३ मद्य और ४ नवनीत।

२७५ १क—कूटागार=शिखराकार गृह चार प्रकार के हैं—

१ गुप्त-प्राकार से आवृत और गुप्त द्वार वाला है,

२ गुप्त-प्राकार से आवृत किन्तु अगुप्त द्वार वाला है,

३ अगुप्त-प्राकार रहित है किन्तु गुप्त द्वार वाला है।

४ अगुप्त-प्राकार रहित है और अगुप्त द्वार वाला है।

ख—इसी प्रकार पुरुष वर्ग भी चार प्रकार का है। वह इस प्रकार है—

१ एक पुरुष गुप्त (वस्त्रावृत) है और गुप्तेन्द्रिय भी है।

२ एक पुरुष (वस्त्रावृत) है किन्तु अगुप्तेन्द्रिय है।

३ एक पुरुष अगुप्त (अनावृत) है किन्तु गुप्तेन्द्रिय है।

४ और एक पुरुष अगुप्त (अनावृत) भी है और अगुप्तेन्द्रिय भी है।

२ क—कूटागारशाला=शिखराकार शाला चार प्रकार की है। वे इस प्रकार हैं—

१ गुप्त है—प्राकारादि से आवृत है और गुप्त द्वार वाली है।

२ गुप्त है—प्राकारादि से आवृत है किन्तु गुप्त द्वार वाली नही है।

३ अगुप्त है—प्राकारादि से आवृत नही है किन्तु गुप्तद्वार वाली है।

४ अगुप्त भी है—प्राकारादि से आवृत नही है और गुप्तद्वार वाली भी नही है।

ख—इसी प्रकार स्त्री समुदाय भी चार प्रकार का है। वह इस प्रकार का है—

१. एक गुप्ता है—वस्त्रावृता है और गुप्तेन्द्रिया है।

२ एक गुप्ता है—वस्त्रावृता है किन्तु गुप्तेन्द्रियां नही है।

३ एक अगुप्ता है—वस्त्रादि से अनावृत है किन्तु गुप्तेन्द्रिया है।

४ एक अगुप्ता भी है—वस्त्रादि से अनावृता भी है और अगुप्तेन्द्रिया भी है।

अवगाहना (शरीर का प्रमाण) चार प्रकार की है यह इस प्रकार की है—

१ द्रव्यावगाहना—अनतद्रव्ययुता, २ क्षेत्रावगाहना—असख्यप्रदेशावगाढा, ३ कालावगाहना—असख्यसमय-स्थितिका, ४ भावावगाहना—वर्णादिअनतगुणयुता ।

२७७ चार प्रज्ञप्तिया अङ्गवाह्य हैं । उनके नाम ये हैं—

१ चद्रप्रज्ञप्ति २ सूर्यप्रज्ञप्ति, ३ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति ४ द्वीपसारणप्रज्ञप्ति ।

॥ चतुर्थ स्थानक प्रथम उद्देशक समाप्त ॥

२७८ १ प्रतिसलीन—(कपाय का निरोध करने वाले) पुरुप चार प्रकार के हैं । वे इस प्रकार हैं—

१ क्रोधप्रतिसलीन—क्रोध का निरोध करने वाला ।

२ मानप्रतिसलीन—मान का निरोध करने वाला ।

३ मायाप्रतिसलीन—माया का निरोध करने वाला ।

४ लोभप्रतिसलीन—लोभ का निरोध करने वाला ।

२ अप्रतिसलीन (कपाय का निरोध न करने वाला) पुरुप चार प्रकार के कहे गये हैं । वह इस प्रकार है—

१ क्रोध अप्रतिसलीन—क्रोध का निरोध न करने वाला ।

२ मान अप्रतिसलीन—मान का निरोध न करने वाला ।

३ माया अप्रतिसलीन—माया का निरोध न करने वाला।

४ लोभ अप्रतिसलीन—लोभ का निरोध न करने वाला।

३ प्रतिसलीन (प्रशस्त प्रवृत्तियो मे प्रवृत्त और अप्रशस्त प्रवृत्तियो से निवृत्त) पुरुष वर्ग चार प्रकार का है। वह इस प्रकार हैं—

१ मन प्रतिसलीन—मन का निग्रह करने वाला।
२ वचन प्रतिसलीन—वचन का निग्रह करने वाला।
३ काय प्रतिसलीन—काया का निग्रह करने वाला।
४ इन्द्रिय प्रतिसलीन—इन्द्रियो का निग्रह करने वाला।

४ अप्रतिसलीन (अप्रशस्त कार्यों मे प्रवृत्त और प्रशस्त कार्यों से उदासीन) पुरुष वर्ग चार प्रकार का है। वह इस प्रकार है—

१ मन अप्रतिसलीन—मन का निग्रह न करने वाला।
२ वचन अप्रतिसलीन—वचन का निग्रह न करने वाला।
३ काय अप्रतिसलीन—काया का निग्रह न करने वाला।

४ इन्द्रिय अप्रतिसलीन—इन्द्रियो का निग्रह न करने वाला ।

२७९ १क—पुरुष वग चार प्रकार का है । वह इस प्रकार है—

१ एक पुरुष दीन है (धनहीन है) और दीन है[1] (हीन मना है) ।

२ एक पुरुष दीन है (धनहीन है) किन्तु अदीन है (महामना है) ।

३ एक पुरुष अदीन है (धनी है) किन्तु दीन है (हीनमना है) ।

४ एक पुरुष अदीन है (धनी है) आर अदीन (महामना भी है) ।

ख—पुरुष वग चार प्रकार का है । वह इस प्रकार का है—

१ पुरुष दीन है (प्रारम्भिक जीवन मे भी निधन है) और दीन है (अतिम जीवन मे भी निधन है) ।

२ एक पुरुष दीन है (प्रारम्भिक जीवन मे निधन है) किन्तु अदीन भी है (अतिम जीवन मे धनी हो जाता है)

---

१ यहां 'दीन' का अथ हीन है ।

३ एक पुरुष अदीन है (प्रारम्भिक जीवन मे धनी है) किन्तु दीन भी है (अन्तिम जीवन मे निर्धन हो जाता है)

४ एक पुरुष अदीन है (प्रारम्भिक जीवन मे भी धनी है) और अदीन है (अन्तिम जीवन मे भी धनी ही रहता है)[1]

२—पुरुष वर्ग चार प्रकार का है। वह इस प्रकार है—

१ एक पुरुष दीन है (शरीर से कृश है) और दीन परिणति वाला है (कायर है)

२ एक पुरुष दीन है (शरीर से कृश है) किन्तु अदीन परिणति वाला है (शूरवीर है)

३ एक पुरुष अदीन है (हृष्ट-पुष्ट है) किन्तु दीन परिणति वाला है (कायर है)

४ एक पुरुष अदीन भी है (हृष्ट-पुष्ट भी है) और अदीन परिणति वाला भी है (शूरवीर भी है)

३—पुरुष वर्ग चार प्रकार का है। वह इस प्रकार है—

१ एक पुरुष दीन है (शरीर से कृश है) और दीन रूप भी है (मलिन वस्त्र वाला है)

---

१. यह व्याख्या भी टीकाकार सम्मत है।

२ एक पुरुप दीन है (शरीर से कृश है) किन्तु अदीन रूप है (वस्त्र आदि से सुमज्जित है)

३ एक पुरुप अदीन है (शरीर से हृष्ट-पुष्ट है) किन्तु दीन रूप है (मलिन वस्त्र वाला है)

४ एक पुरुप अदीन है (शरीर से हृष्ट-पुष्ट है) और अदीन रूप भी है) वस्त्र आदि से सुसज्जित है)

४-१७—इसी प्रकार ५ दीन मन, ६ दीन सकल्प, ७ दीन प्रज्ञा, ८ दीन हष्टि, ९ दीन शीलाचार, १० दीन व्यवहार, ११ दीन पराक्रम, १२ दीन वृत्ति, १३ दीन जाति, १४ दीन भासी, १५ दीनावभासी, १६ दीन सेवी, और १७ दीन परिवारी के चार-चार भाग जानें ।

२८०-१ पुरुप वग चार प्रकार का है । वह इस प्रकार है—

१ एक पुरुप आर्य है[1] (क्षेत्र से आर्य है) और आर्य है (आचरण से भी आय है)

२ एक पुरुप आय है (क्षेत्र से आय है) किन्तु अनाय भी है (पापाचरण से अनाय है)

३ एक पुरुप अनाय है (क्षेत्र से अनाय है) किन्तु आय भी है (आचरण से आय है)

---

१ आर्य नौ प्रकार के हैं ।

४ एक पुरुष अनार्य है (क्षेत्र से अनार्य है) और अनार्य है (आचरण से भी अनार्य है)

२-१८—इसीप्रकार २ आर्य परिणति, ३ आर्यरूप, ४ आर्यमन, ५ आर्य संकल्प, ६ आर्यप्रज्ञा, ७ आर्य दृष्टि, ८ आर्य शीलाचार, ९ आर्य व्यवहार, १० आर्यपराक्रम, ११ आर्य वृत्ति, १२ आर्य जाति, १३ आर्यभाषी, १४ आर्यविभासी, १५ आर्यसेवी, १६ आर्य पर्याय १७ आर्य परिवार और १८ आर्य भाव वाले पुरुष के चार-चार भागे जानें।

२८१ १क—वृषभ चार प्रकार के हैं। वे इस प्रकार हैं—

१ जातिसंपन्न[1], २ कुलसंपन्न[2], ३ बलसंपन्न, और ४ रूपसंपन्न हैं।

ख—इसी प्रकार पुरुष वर्ग भी चार प्रकार का है। वे इस प्रकार है—

१ जातिसंपन्न-यावत्—२-४ रूपसंपन्न हैं।

२क—वृषभ चार प्रकार के हैं। वे इस प्रकार हैं—

१ एक जातिसंपन्न है किन्तु कुलसंपन्न नहीं है।

---

१ यहां जाति मातृपक्ष को कहते हैं।

२. यहां कुल पितृपक्ष को कहते हैं।

२ एक कुलसपन्न है किन्तु जातिमपन्न नही है।

३ एक जाति सपन्न भी है और कुलसपन्न भी है।

४ एक जाति सपन्न भी नही है और कुल सपन्न भी नही है।

ख—इसी प्रकार पुरुप वग के भी चार भाग जानें।

३क—वृपभ चार प्रकार के हैं। वे इस प्रकार हैं—

१ एक जातिसम्पन्न[1] है किन्तु वलसम्पन्न नही है।

२ एक वलसम्पन्न है किन्तु जातिसम्पन्न नही है।

३ एक जातिसम्पन्न भी है और वलसम्पन्न भी है।

४ एक जातिसम्पन्न भी नही है और वलसम्पन्न भी नही है।

ख—इसी प्रकार पुरुप वग के भी चार भागे जानें।

४क—वृपभ चार प्रकार के हैं। वे इस प्रकार हैं—

१ एक जातिसम्पन्न है किन्तु रूपसम्पन्न नही है।

२ एक रूपसम्पन्न है किन्तु जातिसम्पन्न नही है।

३ एक जातिमम्पन्न भी है और रूपसम्पन्न भी है।

४ एक जातिसम्पन्न भी नही है और रूपसम्पन्न भी नही है।

---

१ यहां जाति शब्द श्रेष्ठता का सूचक है।

ख—इसी प्रकार पुरुष वर्ग के चार भागे जानें।

५क—कुल सम्पन्न और वल सम्पन्न वृषभ के चार भागे हैं।

ख—इसीप्रकार पुरुष वर्ग के भी चार भागे हैं।

६क—कुल सम्पन्न और रूप सम्पन्न वृषभ के चार भागे हैं।

ख—इसीप्रकार पुरुष वर्ग के भी चार भागे हैं।

७क—वल सम्पन्न और रूप सम्पन्न वृषभ के चार भागे हैं।

ख—इसी प्रकार पुरुष वर्ग के भी चार भागे हैं।

८क—हाथी चार प्रकार के हैं। वे इस प्रकार हैं—

१ भद्र[1], २ मद[2], ३ मृग[3] और ४ सकीण[4]।

ख—इसी प्रकार पुरुष वर्ग भी चार प्रकार का कहा गया है।

९क—हाथी चार प्रकार के हैं। वे इस प्रकार हैं—

१ एक भद्र[5] है और भद्रमन वाला है।

---

१ भद्र=धैर्यवान। २ मद=धैर्यरहित। ३ मृग=भीरु स्वभाव। ४ सकीर्ण=विचित्र स्वभाव वाला। ५ यहा भद्र का अर्थ उत्तम जातिवाला है।

२ एक भद्र है किन्तु मदमन वाला है ।

३ एक भद्र है किन्तु मृग (भीरु) मन वाला है ।

४ एक भद्र है किन्तु सकीर्ण मन वाला है ।

ख—इसी प्रकार पुरुप वग भी चार प्रकार का है ।

१०क—हाथी चार प्रकार के हैं । वे इस प्रकार हैं—

१ एक मद किन्तु भद्रमन वाला है ।

२ एक मद है और मदमन वाला है ।

३ एक मद है किन्तु मृग (भीरु) मन वाला है ।

४ एक मद है किन्तु सकीण (विचित्र) मन वाला है ।

ख—इसी प्रकार पुरुप वग भी चार प्रकार का कहा गया है ।

११क—हाथी चार प्रकार के हैं । वे इस प्रकार हैं—

१ एक मृग (भीरु) है और भद्र (भीरु) मन वाला है ।

२ एक मृग है किन्तु मद मन वाला है ।

३ एक मृग है और मृग मन वाला भी है ।

४ एक मृग है किन्तु सकीर्ण मन वाला है ।

ख—इसी प्रकार पुरुप वग भी चार प्रकार का है ।

१२क—हाथी चार प्रकार के हैं । वे इस प्रकार के हैं—

१ एक सकीण है किन्तु भद्र मन वाला है ।

२ एक सकीण है किन्तु मद मन वाला है ।

३ एक सकीण है किन्तु मृग मन वाला है।

४ एक सकीर्ण है और सकीर्ण मन वाला भी है।

ख—इसी प्रकार पुरुष वग भी चार प्रकार का कहा गया है।

१ गाथा—भद्र हाथी के लक्षण—

मधु की गोली के समान पिंगल (भूरे) नेत्र, क्रमश पतली सुन्दर एव लम्बी पूछ, उन्नत मस्तक आदि से सर्वाङ्ग सुन्दर भद्र हाथी धीर प्रकृति का होता है।

२ गाथा—मद हाथी के लक्षण—

चञ्चल, स्थूल एवं कहीं पतली और कही मोटी चम वाला स्थूल मस्तक, पूछ, नख, दात एव केश वाला तथा सिंह के समान पिंगल (भूरे) नेत्र वाला हाथी मद (अधीर) प्रकृति का होता है।

३ गाथा—मृग हाथी के लक्षण—

कृश शरीर और कृशग्रीवा वाला, पतले चर्म, नख, दात एव केश वाला, भयभीत, स्थिरकर्ण, उद्विग्नता पूर्वक गमन करने वाला स्वय त्रस्त और अन्यो को त्रास देने वाला हाथी मृग प्रकृति का होता है।

४ गाथा—सकीण हाथी के लक्षण—

जिस हाथी मे भद्र, मद और मृग प्रकृति के हाथियो के थोडे थोडे लक्षण हो तथा विचित्र रूप और शील (स्वभाव) वाला हाथी सकीर्ण प्रकृति का होता है।

५ गाथा[1]—हाथियो का मदकाल—

भद्र जाति का हाथी शरद् ऋतु मे मतवाला होता है, मद जाति का हाथी वसत ऋतु मे मतवाला होता है, मृग जाति का हाथी हेमत ऋतु मे मतवाला होता है, और सकीण जाति का हाथी किसी भी ऋतु मे मतवाला हो सकता है।

---

१ ये गाथायें निर्युक्ति से मूल मे उद्धृत की गई है ऐसा प्रतीत होता है। टीकाकार एक और निर्युक्ति गाथा उद्धृत करते हैं।

गाथा—दतेहि हणइ भद्दो, मदो हत्येण आहणइ हत्थी।
गत्ताऽधरेह य मिओ, संकिण्णो सव्वओ हणइ ॥

अर्थ—भद्र जाति का हाथी दोनों दांतों से प्रहार करता है। मद जाति का हाथी सूंड से प्रहार करता है। मृग जाति का हाथी शरीर से और होठ से प्रहार करता है। सकीण जाति का हाथी सर्वाङ्ग से प्रहार करता है।

२८२ १क—विकथा चार प्रकार की है—

यथा—१ स्त्रीकथा, २ भक्तकथा, ३ देशकथा और ४ राजकथा[1]।

ख—स्त्रीकथा चार प्रकार की है—

यथा—१ स्त्रियो की जाति सम्बन्धी कथा,

२ स्त्रियो की कुल सम्बन्धी कथा,

३ स्त्रियो की रूप सम्बन्धी कथा,

४ स्त्रियो की नेपथ्य (वेपभूपा) सम्बन्धी कथा।

ग—भक्तकथा चार प्रकार की है—

यथा—१ भोजन सामग्री की कथा,

२ विविध प्रकार के पकवानो और व्यञ्जनो की कथा,

२ भोजन बनाने की विधियो की कथा,

४ भोजन निर्माण मे होने वाले व्यय की कथा।

घ—देशकथा चार प्रकार की है—

यथा—१ देश के विस्तार की कथा,

२ देश मे उत्पन्न होने वाले धान्य आदि की कथा,

---

१ इन विकथाओं के करने से होने वाले दोषों का वर्णन नियुक्तिकार ने किया है।

३ देशवासियो के कर्तव्याकर्तव्य की कथा,

४ देशवासियो के नेपथ्य (वेशभूषा) की कथा।

ड—राजकथा चार प्रकार की है—

यथा—१ राजा के नगर-प्रवेश की कथा,

२ राजा के नगर-प्रयाण की कथा,

३ राजा के बल वाहन की कथा,

४ राजा के कोठार (भण्डार) की कथा।

२क—धर्मकथा चार प्रकार की है—

यथा—१ आक्षेपणी, २ विक्षेपणी, ३ संवेद(ग)नी और ४ निर्वेदनी।

ख—आक्षेपणी कथा चार प्रकार की है—

यथा—१ आचारआक्षेपणी—साधुओ का आचार बतानेवाली कथा,

२ व्यवहार आक्षेपणी—दोषनिवारणार्थ प्रायश्चित्त के भेद प्रभेद बतानेवाली कथा,

३ प्रज्ञप्ति आक्षेपणी—संशयनिवारणार्थ कही जाने वाली कथा।

४ दृष्टिवाद आक्षेपणी—श्रोताओ की अपेक्षाओं को समझकर नयानुसार सूक्ष्म तत्वो का विवेचन करने वाली कथा।

ग—विक्षेपणी कथा चार प्रकार की है—

यथा—१ स्व सिद्धान्त के गुणो का कथन करके पर-सिद्धान्त के दोष बताना

२ पर-सिद्धान्त का खण्डन करके स्वसिद्धान्त की स्थापना करना,

३ परसिद्धान्त की अच्छाईयाँ बताकर पर-सिद्धान्त की बुराइयाँ भी बताना,

४ पर सिद्धान्त की मिथ्या बातें बताकर सच्ची बातो की स्थापना करना।

घ—सवेदनीकथा चार प्रकार की है—

यथा—१ इहलोक सवेदनी—मनुष्य देह की नश्वरता बताकर वैराग्य उत्पन्न करने वाली कथा,

२ परलोक सवेदनी—मुक्ति की साधना मे भोग-प्रधान देव जीवन की निरुपयोगिता बताने वाली कथा,

३ आत्मशरीर सवेदनी—स्वशरीर को अशुचिमय बताने वाली कथा,

४ परशरीर सवेदनी—दूसरो के शरीर को नश्वर बताने वाली कथा।

ङ—निर्वेदनी कथा चार प्रकार की है—

यथा—१ इस जन्म मे किये गये दुष्कर्मों का फल इसी जन्म मे मिलता है—यह बताने वाली कथा,
२ इस जन्म मे किये गये दुष्कर्मों का फल परजन्म[1] म मिलता है—यह बतान वाली कथा,
३ परजन्म मे किये गये दुष्कर्मों का फल इस जन्म मे मिलता है—यह बतानेवाला कथा,
४ परजन्म[2] मे किये गये दुष्कर्मों का फल इस जन्म मे मिलता है—यह बताने वाली कथा,
४ परजन्म[3] कृत दुष्कर्मों का फल परजन्म मे मिलता है—यह बताने वाली कथा।

ख—१ इस जन्म मे किये गये सत्कर्मों का फल इसी जन्म मे मिलता है—यह बताने वाली कथा,
२ इस जन्म मे किये गये सत्कर्मों का फल पर-जन्म मे मिलता है—यह बताने वाली कथा,
३ परजन्म कृत सत्कर्मों का फल इस जन्म म मिलता है—यह बताने वाली कथा,

१ यहा पर-जन्म का अथ आगामी जन्म है।
२ यहां पर-जन्म शब्द का अथ पूर्वजन्म है।
३ यहां पर-जन्म शब्द का अर्थ पूवजन्म है।

४ परजन्म[1] कृत सत्कर्मों का फल परजन्म[2] मे मिलता है—यह बताने वाली कथा।

२८३ १क—पुरुष वर्ग चार प्रकार का है। वह इस प्रकार है—

१ एक पुरुष पहले भी कृश था और वर्तमान मे भी कृश है।

२ एक पुरुष पहले कृश था किन्तु वर्तमान मे सुदृढ शरीरवाला है।

३ एक पुरुष पहले भी सुदृढ शरीर वाला था किन्तु वर्तमान मे कृशकाय है।

४ एक पहले सुदृढ शरीरवाला था और वर्तमान मे भी सुदृढ शरीरवाला है।

ख—पुरुष वर्ग चार प्रकार का है। वह इस प्रकार है—

१ एक पुरुष हीन मनवाला है और कृशकाय भी है।

२ एक पुरुष हीन मनवाला है किन्तु सुदृढ शरीर वाला है।

३ एक पुरुष महामना (उदार मनवाला) है किन्तु कृशकाय है।

---

१ यहां परजन्म का अर्थ पूर्वजन्म है।

२ यहां परजन्म का अर्थ आगामीजन्म है।

४ एक पुरुष महामना भी है और सुदृढ शरीरवाला भी है।

ग—पुरुष वग चार प्रकार का है। वह इस प्रकार है—

१ किसी कृशकाय पुरुष को ज्ञान-दशन उत्पन्न हो जाता है किन्तु सुदृढ शरीरवाले पुरुष को ज्ञान-दशन उत्पन्न नही होता।

२ किसी सुदृढ शरीरवाले पुरुष को ज्ञान-दशन उत्पन्न हो जाता है किन्तु किसी कृशकाय पुरुष को ज्ञान दशन उत्पन्न नही होता है।

३ किसी कृशकाय पुरुष को भी ज्ञान-दशन उत्पन्न हो जाता है और किसी सुदृढ शरीरवाले पुरुष को भी ज्ञान दशन उत्पन्न हो जाता है।

४ किसी कृशकाय पुरुष को भी ज्ञान-दशन उत्पन्न नही होता और किसी सुदृढ शरीरवाले पुरुष को भी ज्ञान-दशन उत्पन्न नही होता।[1]

---

१ ज्ञान-दशन की उत्पत्ति मे साधक बाधक हेतु शरीर नहीं है अपितु मोह की क्षीणता या अधिकता है, अत कृशकाय या स्थूलकाय मे मोह अधिक होगा तो ज्ञान-दशन उत्पन्न नहीं होगा। यदि मोह उपशात हो जायगा या क्षीण हो जायगा तो ज्ञान-दर्शन उत्पन्न हो जायगा।

२८४ १क—चार कारणो से वतमान मे निर्ग्रन्थ निग्रन्थियो के चाहने पर भी उन्हे केवल ज्ञान-दशन उत्पन्न नही होता ।

१ जो बार-बार स्त्री-कथा, भक्त-कथा, देश-कथा और राज कथा कहता है ।

२ जो विवेकपूवक कायोत्सर्ग करके आत्मा को समाधिस्थ नही करता है ।

३ जो पूर्वरात्रि मे (रात्रि के प्रथम और द्वितीय प्रहर मे) और अपररात्रि मे (रात्रि के चतुर्थ प्रहर मे) धर्म जागरण नही करता है ।

४ जो प्रासुक आगमोक्त और एपणीय (शुद्ध) अल्प-आहार नही लेता तथा सभी घरो से आहार की गवेषणा नही करता है ।

—इन चार कारणो से निर्ग्रन्थ निर्ग्रन्थियो को वर्तमान मे केवल ज्ञान-दर्शन उत्पन्न नही होता है ।

ख—चार कारणो से वर्तमान मे भी निर्ग्रन्थ निर्ग्रन्थियो के चाहने पर उन्हें केवल ज्ञान, केवलदर्शन उत्पन्न होता है ।

१ जो स्त्रीकथा आदि चार कथा नही करते हैं ।

२ जो विवकपूवक कायोत्सग करके आत्मा को समाधिस्थ करते हैं।

३ जो पूवरात्रि और अपररात्रि मे धम-जागरण करते है।

४ जो प्रासुक और एपणीय अल्प आहार लेते हैं तथा सभी घरो से आहार की गवेपणा करते हैं।

—इन चार कारणो से निग्र न्थ निग्र न्थियो को वतमान मे भी केवलज्ञान, केवल-दशन उत्पन्न होता है।

२८५ १क—चार महाप्रतिपदाओ मे निग्रन्थ निग्रन्थियो को स्वाध्याय करना नहीं कल्पता है।

वे चार प्रतिपदायें ये हैं—

१ श्रावण कृष्णा प्रतिपदा, २ कार्तिक कृष्णा प्रतिपदा,

३ मार्गशीप कृष्णा प्रतिपदा ४ वैसाख कृष्णा प्रतिपदा।

ख—चार सध्याओ मे निग्रन्थ निग्रन्थियो को स्वाध्याय करना नही कल्पता है।

वे चार सध्यायें ये हैं—

१ दिन के प्रथम प्रहर मे[1], २ दिन के अन्तिम प्रहर मे[2],

---

१ सूर्योदय पूर्व एक घडी और पश्चात् एक घडी।

२ सूर्यास्त पूर्व एक घडी और पश्चात एक घडी।

३ रात्रि के प्रथम प्रहर में और ४ रात्रि के अंतिम प्रहर में।

२८६ १ लोकस्थिति चार प्रकार की है। वह इस प्रकार है—

१ आकाश के आधार पर घनवायु और तनवायु प्रतिष्ठित है।

२ वायु के आधार पर घनोदधि प्रतिष्ठित है।

३ घनोदधि के आधार पर पृथ्वी प्रतिष्ठित है।

४ और पृथ्वी के आधार पर त्रस-स्थावर प्राणी प्रतिष्ठित है।

२८७ १क—पुरुष वर्ग चार प्रकार का है। वह इस प्रकार है—

१ तथापुरुष—जो सेवक, स्वामी की आज्ञानुसार कार्य करे।

२ नो तथापुरुष—जो सेवक स्वामी की आज्ञानुसार कार्य न करे।

३ सौवस्तिक पुरुष—जो स्वस्तिक पाठ करे।

---

१ दिन के मध्य भाग से पूर्व एक घड़ी और पश्चात् एक घड़ी।

२ रात्रि के मध्य भाग से पूर्व एक घड़ी और पश्चात् एक घड़ी। ये चार सन्धिकाल हैं। इनमें स्वाध्याय करने का निषेध है।

४ और प्रधान पुरुष—जो सबका आदरणीय पुरुष हो।

ख—पुरुष वर्ग चार प्रकार का है। वह इस प्रकार है—

१ आत्मातकर—एक पुरुष अपने भव (जन्म-मरण) का अत करता है किन्तु दूसरे के भव का अत नही करता।[1]

२ परातकर—एक पुरुष दूसरे के भव का अत करता है किंतु अपने भव का अत नही करता।[2]

३ उभयातकरी—एक पुरुष अपने और दूसरे के भव का अत करता है।[3]

४ न उभयातकर—एक पुरुष न अपने भव का और न दूसरे के भव का अत करता है।[4]

---

१ प्रत्येक बुद्ध, २ अचरमशरीरी धर्माचार्य, ३ तीर्थंकर, ४ पाचवें आरे के धर्माचार्य।

टीकाकार के अनुसार इस सूत्र के वैकल्पिक अर्थ इस प्रकार है—

क—१ आत्मान्तकर—एक पुरुष आत्महत्या करने वाला होता है।

२ परान्तकर—एक पुरुष दूसरे की हत्या करने वाला होता है।

(कृपया शेष टिप्पणी ६९९ पृष्ठ पर देखिये)

ग—पुरुष वर्ग चार प्रकार का है। वह इस प्रकार है—

१ एक पुरुष स्वय चिंता करता है, किंतु दूसरे को चिंता नही होने देता,

२ एक पुरुष दूसरे को चिंतित करता है, किंतु स्वय चिंता नही करता।

(पृष्ठ ६६८ का टिप्पणी की शेष)

३ उभयान्तकर—एक पुरुष आत्महत्या और परहत्या करने वाला होता है।

४ न उभयान्तकर—एक पुरुष न आत्महत्या करता है और न परहत्या करता है।

ख—१ आत्मतत्रकर—जो स्वय स्वतन्त्र होकर कार्य करता है। यथा—जिन भगवान्।

२ परतत्रकर—जो परतत्र होकर काय करता है। यथा—भिक्षु।

३ उभयतत्रकर—जो स्वतत्र रहकर भी काय करता है और परतंत्र रहकर भी कार्य करता है। यथा—आचार्य

४ न उभयतत्रकर—जो न स्वतत्र रहकर कार्य करता है और न परतत्र रहकर कार्य करता है। यथा—शठ।

इसी प्रकार गच्छ या धन के सम्बन्ध में भी उक्त चार भांगों की व्याख्या करें।

३ एक पुरुष स्वयं भी चिंता करता है और दूसरे को भी चिंतित करता है।

४ एक पुरुष न स्वयं चिंता करता है और न दूसरे को चिंतित करता है।

घ—पुरुष वर्ग चार प्रकार का है। वह इस प्रकार है—

१ एक पुरुष आत्मदमन करता है, किंतु दूसरे का दमन नहीं करता।

२ एक पुरुष दूसरे का दमन करता है किंतु आत्मदमन नहीं करता।

३ एक पुरुष आत्मदमन भी करता है और परदमन भी करता है।

४ एक पुरुष न आत्मदमन करता है और न परदमन करता है।

२८८ १—गर्हा[1] चार प्रकार की है—यथा,

१ स्वकृत दोष की शुद्धि के लिए उचित प्रायश्चित्त लेने हेतु मैं स्वयं गुरु महाराज के समीप जाऊं यह एक गर्हा है।

२ गर्हणीय दोषों का मैं निराकरण करूं यह दूसरी गर्हा है।

---

१ गुरु के समक्ष आत्मनिंदा करना गर्हा है।

३ मैंने जो अनुचित किया है उसका मैं स्वय मिथ्या दुष्कृत करू—यह तीसरी गर्हा है ।

४ स्वकृत दोपो की गर्हा करने से आत्म-शुद्धि होती है, यह जिन भगवान ने कहा है—इस प्रकार स्वीकार करना, यह चौथी गर्हा है ।

२८९ १ पुरुष वग चार प्रकार का है । वह इस प्रकार है—

१ एक पुरुप अपने आपको दुष्प्रवृत्तियो से बचाता है किंतु दूसरे को नही बचाता ।

२ एक पुरुप दूसरे को दुष्प्रवृत्तियो से बचाता है, किंतु स्वय नही बचता ।

३ एक पुरुप स्वय भी दुष्प्रवृत्तियो से बचता है और दूसरे को भी बचाता है ।

४ एक पुरुष न स्वय दुष्प्रवृत्तियों से बचता है और न दूसरे को बचाता है ।[1]

---

१ टीकाकार के अनुसार एक वैकल्पिक अर्थ यह है—

१ एक पुरुष आत्मनिग्रह में समर्थ है किन्तु परनिग्रह में समर्थ नहीं है ।

२ एक पुरुष परनिग्रह मे समर्थ है किन्तु आत्मनिग्रह में समर्थ नहीं है ।

३ एक पुरुष आत्मनिग्रह में और परनिग्रह में भी समर्थ हैं ।

४ एक पुरुष न आत्मनिग्रह और न परनिग्रह मे समर्थ हैं ।

२ क—माग चार प्रकार का है । वह इस प्रकार है—

१ एक माग प्रारम्भ मे भी सरल है और अत म भी सरल है ।[1]

२ एक माग प्रारभ मे सरल है किन्तु अत मे वक्र है ।[1]

३ एक माग प्रारभ मे वक्र है किन्तु अन्त म सरल है ।

४ एक माग प्रारम्भ मे भी वक्र है और अन्त मे भी वक्र है ।

ख—इसीप्रकार पुरुष वग भी चार प्रकार का है[1]—

३ क—माग चार प्रकार का है । यथा—

१ एक मार्ग प्रारम्भ मे भी उपद्रवरहित है और अन्त मे भी उपद्रवरहित है ।

---

१ जिस मार्ग से पथिक गतव्यस्थान तक बिना किसी कठिनाई के पहुँच जाय वह सरल है ।

जो मार्ग ऊँचा-नीचा व टेढा हो वह वक्र है ।

३ मानव मे सरलता दो प्रकार की होती है—
एक बाह्य सरलता और दूसरी आभ्यन्तर सरलता ।
वाणी आदि में जो सरलता दिखाई देती है वह बाह्य सरलता है ।
हृदय की जो सरलता है वह आभ्यन्तर सरलता है ।

२ एक मार्ग प्रारम्भ में उपद्रवरहित है किन्तु अन्त मे उपद्रवरहित नही है।

३ एक मार्ग प्रारम्भ मे उपद्रवसहित है किन्तु अन्त मे उपद्रवरहित है।

४ एक मार्ग प्रारम्भ मे और अन्त मे उपद्रवसहित है।

ख—इसीप्रकार पुरुप वर्ग भी चार प्रकार का है।[१]

४क—मार्ग चार प्रकार का है यथा—

१ एक मार्ग उपद्रवरहित है और सुन्दर है।

२ एक मार्ग उपद्रवरहित है किन्तु सुन्दर नही है।

३ एक मार्ग उपद्रवसहित है किन्तु सुन्दर है।

४ एक मार्ग उपद्रवसहित भी है और सुन्दर भी नहीं है।

---

१ १ एक पुरुष पहले शांत रहता है और पीछे भी शांत रहता है।

२ एक पुरुष पहले शात रहता है किन्तु पीछे उत्तेजित हो जाता है।

३ एक पुरुष पहले उत्तेजित हो जाता है किन्तु पीछे शांत हो जाता है।

४ एक पुरुष पहले और पीछे सदा ही उत्तेजित रहता है।

ख—इसीप्रकार पुरुप वर्ग भी चार प्रकारका है। यथा—

१ एक पुरुप शांत स्वभाव वाला है और अच्छी वेश भूपा वाला है।

२ एक पुरुप शांतस्वभाववाला है किन्तु वेशभूपा अच्छी नही है।

३ एक पुरुप खराब वेशभूपा वाला तो है किन्तु शांत स्वभावी है।

४ एक पुरुप खराब वेशभूपा वाला भी है और क्रूर स्वभाव वाला भी है।

५क—शंख चार प्रकार के हैं। यथा—

१ एक शंख वाम है (प्रतिकूल प्रभाव वाला है) और वामावर्त भी है।[1]

२ एक शंख वाम है (प्रतिकूल प्रभाव वाला है) किन्तु दक्षिणावर्त है।

३ एक शंख दक्षिण है (अनुकूल प्रभाव वाला है) किन्तु वामावर्त है।

४ एक शंख दक्षिण है (अनुकूल प्रभाव वाला है) और दक्षिणावर्त भी है।[2]

---

१ उत्तरदिशा की ओर मुंह वाला।

२ दक्षिणदिशा की ओर मुंह वाला।

ख—इसीप्रकार पुरुप वग भी चार प्रकार का है। यथा—

१ एक पुरुष प्रतिकूल स्वभाव वाला है और प्रतिकूल व्यवहार वाला भी है।

२ एक पुरुप प्रतिकूल स्वभाव वाला है किन्तु अनुकूल व्यवहार वाला है।

३ एक पुरुष अनुकूल स्वभाव वाला है किन्तु प्रतिकूल व्यवहार वाला है।

४ एक पुरुष अनुकूल स्वभाव वाला है और अनुकूल व्यवहार वाला भी है।

६क—धूमशिखा चार प्रकार की है। यथा—

१ एक धूमशिखा वामा है (वायी ओर जाने वाली है) और वामावर्त भी है।

२ एक धूमशिखा वामा है (वायी ओर जाने वाली है) किन्तु दक्षिणावर्त है।

३ एक धूम शिखा दक्षिणा है (दायी ओर जाने वाली है) किन्तु वामावत है।

४ एक धूमशिखा दक्षिणा है और दक्षिणावत भी है।

२ प्रच्छन्नप्रतिसेवी—एक साधु प्रच्छन्न दोष सेवन करता है।

३ प्रत्युत्पन्न नदी—एक साधु वस्त्र या शिष्य के लाभ से आनन्द मनाता है।

४ नि सरण नदी—एक साधु गच्छ मे से स्वय के या शिष्य के निकलने से आनन्द मनाता है।

२ क—सेनायें चार प्रकार की हैं। यथा—

१ एक सेना शत्रु को जीतनेवाली है किन्तु हराने वाली नही है।

२ एक सेना हराने वाली है किन्तु जीतने वाली नही है।

३ एक सेना शत्रुओ को जीतनेवाली भी है और हरानेवाली भी है।

४ एक सेना शत्रुओ को न जीतनेवाली है और न हरानेवाली है।

ख—इसी प्रकार पुरुष भी चार प्रकार के हैं। यथा—

१ एक साधु परीषहो को जीतनेवाला है किन्तु भगवान महावीर की तरह परीषहो को सर्वथा परास्त करनेवाला नही है।

२ एक साधु परीषहो से हारनेवाला है किन्तु कडरीक की तरह उन्हे जीतनेवाला नही हैं ।

३ एक साधु शैलक राजर्षि के समान परीषहो से हारने वाला भी है और उन्हें जीतनेवाला भी हैं ।

४ एक साधु न परीषहो से हारनेवाला हैं और न उन्हे जीतनेवाला हैं ।

क्योकि साधनाकाल मे उसे परीपह आये ही नही ।

३क—सेनायें चार प्रकार की हैं। यथा—

१ एक सेना युद्ध के आरम्भ मे भी शत्रु सेना को जीतती है और युद्ध के अत मे भी शत्रु सेना को जीतती है ।

२ एक सेना युद्ध के आरम्भ मे शत्रु सेना को जीतती है किन्तु युद्ध के अन्त मे पराजित हो जाती हैं ।

३ एक सेना युद्ध के आरम्भ मे पराजित होती है किन्तु युद्ध के अन्त मे विजय प्राप्त करती हैं ।

४ एक सेना युद्ध के आरम्भ मे भी और अन्त मे भी पराजित होती है ।

ख—इसीप्रकार परीपहो से विजय और पराजय प्राप्त करने वाले पुरुप वर्ग के चार भागे हैं ।

२९३ १क—वक्र वस्तुएं चार प्रकार की हैं । यथा—

१ वास की जड के समान वक्रता,

२ घेटे के सीग के समान वक्रता,

३ गोमूत्रिका के समान वक्रता,

४ वास की छाल के समान वक्रता।

ख—इसीप्रकार माया भी चार प्रकार की है। यथा—

१ वास की जड के समान वक्रतावाली माया करने वाला जीव मरकर नरक मे उत्पन्न होता है।

२ घेटे के सीग के समान वक्रतावाली माया करने वाला जीव मरकर तिर्यचयोनि मे उत्पन्न होता है।

३ गोमूत्रिका के समान वक्रता वाली माया करने वाला जीव मरकर मनुष्ययोनि मे जन्म लेता है।

४ वास की छाल के समान वक्रता वाली माया करने वाला जीव मरकर देवयोनि मे उत्पन्न होता है।

२ क—स्तम्भ चार प्रकार के हैं। यथा—

१ शैलस्तम्भ, २ अस्थिस्तम्भ, ३ दारुस्तम्भ और ४ तिनिसलतास्तम्भ।

ख—इसीप्रकार मान चार प्रकार का है। यथा—

१ शैलस्तम्भ समान, २ अस्थिस्तम्भ समान, ३ दारुस्तम्भ समान और ४ तिनिसलतास्तम्भ समान।

१ शैलस्तम्भ समान मान करनेवाला जीव मरकर नरक मे उत्पन्न होता है ।

२ अस्थिस्तम्भ समान मान करने वाला जीव मरकर तिर्यंचयोनि मे उत्पन्न होता है ।

३ दारुस्तम्भ समान मान करनेवाला जीव मरकर मनुष्य योनि मे उत्पन्न होता है ।

४ तिनिसलतास्तम्भ समान मान करनेवाला जीव मरकर देवयोनि मे उत्पन्न होता है ।

३क—वस्त्र चार प्रकार के हैं। यथा—

१ कृमिरग से रगा हुआ,

२ कीचड से रगा हुआ,

३ खजन से रगा हुआ

४ हरिद्रा से रगा हुआ ।

ख—इसीप्रकार लोभ चार प्रकार का है । यथा—

१ कृमिरग से रगे हुए वस्त्र के समान,

२ कीचड से रगे हुए वस्त्र के समान,

३ खजन से रगे हुए वस्त्र के समान,

४ हरिद्रा से रगे हुए वस्त्र के समान ।

१ कृमिरग से रगे हुए वस्त्र के समान लोभ करने वाला जीव मरकर नरक मे उत्पन्न होता है ।

२ कीचड से रगे हुए वस्त्र के समान लोभ करने वाला जीव मरकर तिर्यच मे उत्पन्न होता है ।

३ खजन से रगे हुए वस्त्र क समान लोभ करने वाला जीव मरकर मनुष्य मे उत्पन्न होता है ।

४ हल्दी से रगे हुए वस्त्र के समान लोभ क ने वाला जीव मरकर देवताओ मे उत्पन्न होता है ।

२९४ १—ससार चार प्रकार का है । यथा—

१ नैरयिक ससार २ तिर्यंच ससार, ३ मानव ससार और ४ देव ससार ।

२—आयु चार प्रकार का है । यथा—

१ नैरयिकायु, २ तिर्यंचायु, ३ मनुजायु ४ देवायु ।

३—भव चार प्रकार का है । यथा—

१ नैरयिक भव, २ तिर्यंच भव, ३ मानव भव और ४ देवभव ।

२९५ १क—आहार चार प्रकार का है । यथा—

१ अशन २ पान, ३ खादिम और ४ स्वादिम ।

ख—यथा—१ उपस्करसपन्न—हीग वगरह से सस्कारित आहार ।

२ उपस्कृत सपन्न—अग्निपक्व आहार,

२ कीचड से रगे हुए वस्त्र के समान लोभ करने वाला जीव मरकर तिर्यंच मे उत्पन्न होता है ।

३ खजन से रगे हुए वस्त्र के समान लोभ करने वाला जीव मरकर मनुष्य मे उत्पन्न होता है ।

४ हल्दी से रगे हुए वस्त्र के समान लोभ क ने वाला जीव मरकर देवताओ मे उत्पन्न होता है ।

२६४ १—ससार चार प्रकार का है । यथा—

१ नैरयिक ससार, २ तिर्यंच ससार, ३ मानव ससार और ४ देव ससार ।

२—आयु चार प्रकार का है । यथा—

१ नैरयिकायु, २ तिर्यंचायु, ३ मनुजायु ४ देवायु ।

३—भव चार प्रकार का है । यथा—

१ नैरयिक भव, २ तिर्यंच भव, ३ मानव भव और ४ देवभव ।

२६५ १क—आहार चार प्रकार का है । यथा—

१ अशन २ पान, ३ खादिम और ४ स्वादिम ।

ख—यथा—१ उपस्करसपन्न—हीग वगरह से सस्कारित आहार ।

२ उपस्कृत सपन्न—अग्निपक्व आहार,

३ स्वभाव सपन्न—स्वत पक्वआहार—द्राक्ष आदि,

४ पर्यु पित सपन्न—रात भर रखकर बनाया हुआ आहार—दहीवडा आदि।

२९६ १क—बध चार प्रकार के हैं। यथा—

१ प्रकृतिबध, २ स्थितिबध, ३ अनुभागबध और ४ प्रदेशबध।

१ कर्मप्रकृतियो का बध—प्रकृतिबध है,

२ कर्मप्रकृतियो की जघन्य उत्कृष्ट स्थिति का बध—स्थितिबध है।

३ कर्मप्रकृतियो मे तीव्र-मद रस का बध—रसबध है।

४ आत्मप्रदेशों के साथ शुभाशुभ विपाक वाले अनन्तानत कर्मप्रदेशो का बध—प्रदेश बध है।

ख—उपक्रम चार प्रकार का है। यथा—

१ बधनोपक्रम २ उदीरणोपक्रम, ३ उपशमनोपक्रम और ४ विपरिणामनोपक्रम।

ग—बधनोपक्रम[1] चार प्रकार का है। यथा—

१ प्रकृतिबधनोपक्रम, २ स्थितिबधनोपक्रम, ३ अनुभागबधनोपक्रम और ४ प्रदेशबधनोपक्रम।

---

१ स्यादारभ उपक्रम—उपक्रम—आरम्भ।

घ—उदीरणोपक्रम[1] चार प्रकार का है। यथा—

१ प्रकृतिउदीरणोपक्रम, २ स्थितिउदीरणोपक्रम,

३ अनुभावउदीरणोपक्रम और ४ प्रदेशउदीरणोपक्रम।

ङ—उपशमनोपक्रम[2] चार प्रकार का है। यथा—

१ प्रकृतिउपशमनोपक्रम, २ स्थितिउपशमनोपक्रम,

३ अनुभावउपशमनोपक्रम और ४ प्रदेशउपशमनोपक्रम।

च—विपरिणामनोपक्रम[3] चार प्रकार का है। यथा—

१ प्रकृतिविपरिणामनोपक्रम २ स्थितिविपरिणामनोपक्रम, ३ अनुभावविपरिणामनोपक्रम और ४ प्रदेशविपरिणामनोपक्रम।

छ—अल्प-बहुत्व चार प्रकार का है। यथा—

---

१ उदीरणा—उदय में नहीं आये हुए कर्मदलिकों को उदय में लाना।

२ उपशमन—उदय में आई हुई कर्मप्रकृतियों को उपशांत करना।

३ विपरिणमन—सत्ता, उदय, क्षय, क्षयोपशम, उद्वर्तन और अपवर्तन द्वारा कर्मप्रकृति की वर्तमान अवस्था को बदल देना।

१ प्रकृति अल्पबहुत्व[1], २ स्थिति अल्पबहुत्व, ३ अनुभाव अल्पबहुत्व और ४ प्रदेश अल्पबहुत्व ।

ज—सक्रम[2] चार प्रकार का है यथा—

१ प्रकृति सक्रम, २ स्थिति सक्रम, ३ अनुभाव सक्रम और ४ प्रदेश सक्रम ।

झ—निधत्त[3] चार प्रकार का है । यथा—

१ प्रकृति निधत्त, २ स्थिति निधत्त, ३ अनुभाव निधत्त और ४ प्रदेश निधत्त ।

ञ—निकाचित[4] चार प्रकार का है । यथा—

१ प्रकृति निकाचित, २ स्थिति निकाचित, ३ अनुभाव निकाचित और ४ प्रदेश निकाचित ।

---

१ एक कर्म के दलिकों से दूसरे कर्म के दलिकों का अधिक होना ।

२ सक्रम—आत्मबल से कर्मप्रकृति को दूसरी कर्मप्रकृति के रूप मे बदल देना ।

३ निधत्त—उद्वर्तन या अपवर्तन के बिना अन्य कारणों से उदीरणा के अयोग्य कर्मप्रकृति ।

४ निकाचित—सर्व कारणो से उदीरणा के अयोग्य कर्मप्रकृति । अर्थात् निकाचित कर्म भोगे बिना नहीं छूटता है ।

चार महर्धिक देव रहते हैं। यथा—

१ स्वाति, २ प्रभास, ३ अरुण और ४ पद्म।

३—जम्बूद्वीप मे चार महाविदेह है। यथा—

१ पूर्वविदेह, २ अपरविदेह, ३ देवकुरु और ४ उत्तरकुरु।

४—सभी निषध और नीलवत वर्षधरपर्वत चार सौ योजन ऊँचे और चारसौ गाउ (कोश) भूमि म गहरे हैं।

२ क—जम्बूद्वीपवर्ती मेरुपर्वत के पूर्व मे बहनेवाली सीता महानदी के उत्तर किनारे पर चार वक्षस्कार पर्वत हैं। यथा—

१ चित्रकूट, २ पद्मकूट, ३ नलिनकूट और ४ एकशैल।

ख—जम्बूद्वीपवर्ती मेरुपर्वत के पूर्व मे बहनेवाली सीता महानदी के दक्षिण किनारे पर चार वक्षस्कार पर्वत हैं। यथा—

१ त्रिकूट २ वैश्रमणकूट, ३ अजन और ४ मातजन।

ग—जम्बूद्वीपवर्ती मेरुपर्वत के पश्चिम मे बहनेवाली सीता महानदी के दक्षिण किनारे पर चार वक्षस्कार पर्वत हैं। यथा—

१ अकावती, २ पद्मावती, ३ आशिविष और ४ सुखावह ।

घ—जम्बूद्वीपवर्ती मेरुपवत के पश्चिम मे बहनेवाली सीता महानदी के उत्तर किनारे पर चार वक्षस्कार पवत हैं। यथा—

१ चन्द्रपवत, २ सूयपवत, ३ देवपवत और ४ नाग-पवत ।

ङ—जम्बूद्वीपवर्ती मेरुपवत के चार विदिशाओ मे चार वक्षस्कार हैं। यथा—

१ सोमनस, २ विद्युत्प्रभ, ३ गधमादन और ४ माल्यवत ।

६—जम्बूद्वीप के महाविदेह मे जघन्य चार अरिहत, चार चक्रवर्ती, चार बलदेव, चार वासुदेव उत्पन्न हुए, उत्पन्न होते हैं और उत्पन्न होगे ।

७—जम्बूद्वीप के मेरुपवत पर चार वन है। यथा—

१ भद्रसाल वन, २ नन्दन वन, ३ सोमनस वन और ४ पडगवन।

८—जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत पर पडगवन मे चार अभिषेक शिलाएँ है। यथा—

१ पडुकवल शिला, २ अतिपडुकवल शिला, ३ रक्तकवल शिला और ४ अतिरक्तकवल शिला।

९—मेरुपर्वत की चूलिका ऊपर से चार सौ योजन चौडी है।

१०-११ (३४ सूत्र)—इसी प्रकार धातकी खड द्वीप के पूर्वार्ध और पश्चिमार्ध मे (पूर्वोक्त सूत्र ३०१ के ३ सूत्र और सूत्र ३०२ के १४ सूत्र) काल सूत्र से लेकर यावत्-मेरुचूलिका पर्यन्त कहे।

१२-१३ (३४ सूत्र)—इसी प्रकार पुष्करार्ध द्वीप के पूर्वार्ध और पश्चिमार्ध मे भी काल सूत्र से लेकर-यावत्-मेरु चूलिका पर्यन्त कहें।

गाथार्थ—जम्बूद्वीप मे शास्वत पदार्थकाल-यावत् मेरु चूलिका तक जो कहे हैं वे धातकी खण्ड और पुष्करवर द्वीप के पूर्वार्ध और पश्चिमार्ध मे भी कहे।

३०३ १—जम्बूद्वीप के चार द्वार हैं।

१ विजय, २ वैजयत, ३ जयत और ४ अपराजित।

२—जम्बूद्वीप के द्वार चार सौ योजन चौडे हैं और उनका उतना ही प्रवेशमार्ग है।

३—जम्बूद्वीप के उन द्वारो पर पल्योपमस्थितिवाले चार महर्धिक देव रहते हैं। उनके नाम ये हैं—

१ विजय, २ विजयन्त, ३ जयन्त और ४ अपराजित।

२०४ १क—जम्बूद्वीपवर्ती मेरुपर्वत के दक्षिण मे और चुल्ल (लघु) हिमवन्त वर्षधर पर्वत के चार विदिशाओ मे लवण समुद्र तीनसौ तीनसौ योजन जाने पर चार-चार अन्तरद्वीप हैं। यथा—

१ एकोरुक द्वीप, २ आभाषिक द्वीप, ३ वेषाणिक द्वीप और ४ लांगोलिक द्वीप।

२ख—उन द्वीपो मे चार प्रकार के मनुष्य रहते हैं। यथा

१ एकोरुक, २ आभाषिक, ३ वैषाणिक और ४ लांगुलिक

३क—उन द्वीपो की चार विदिशाओ मे लवण समुद्र मे चारसौ-चारसौ योजन जाने पर चार अन्तरद्वीप हैं। यथा—

१ हयकर्णद्वीप, २ गजकर्ण द्वीप, ३ गोकर्णद्वीप और ४ सकुलिकर्णद्वीप।

ख—उन द्वीपों में चार प्रकार के मनुष्य रहते है। यथा—१ हयकण, २ गजकर्ण, ३ गोकर्ण और शष्कुलीकर्ण।

१ पाण्डुकंबल शिला, २ अतिपाण्डुकंबल शिला, ३ रक्तकंबल शिला और ४ अतिरक्तकंबल शिला।

९—मेरुपर्वत की चूलिका ऊपर से चार सौ योजन चौड़ी है।

१०-११ (२८ सूत्र)—इसी प्रकार धातकी खंड द्वीप के पूर्वार्ध और पश्चिमार्ध में (पूर्वोक्त सूत्र ३०१ के ३ सूत्र और सूत्र ३०२ के १४ सूत्र) काल सूत्र से लेकर यावत-मेरुचूलिका पर्यन्त कहें।

१२-१३ (३४ सूत्र)—इसी प्रकार पुष्करार्ध द्वीप के पूर्वार्ध और पश्चिमार्ध में भी काल सूत्र से लेकर-यावत् मेरु-चूलिका पर्यन्त कहें।

गाथार्थ—जम्बूद्वीप में शाश्वत पदार्थकाल-यावत् मेरु-चूलिका तक जो कहें हैं वे धातकी खण्ड और पुष्करवर द्वीप के पूर्वार्ध और पश्चिमार्ध में भी कहें।

३०३ १—जम्बूद्वीप के चार द्वार हैं।

१ विजय, २ वेजयंत, ३ जयंत और ४ अपराजित।

२—जम्बूद्वीप के द्वार चार सौ योजन चौड़े हैं और उनका उतना ही प्रवेशमार्ग है।

३—जम्बूद्वीप के उन द्वारों पर पल्योपमस्थितिवाले चार महर्धिक देव रहते हैं। उनके नाम ये हैं—

१ विजय, २ विजयन्त, ३ जयन्त और ४ अप-राजित ।

३०४ १क—जम्बूद्वीपवर्ती मेरुपर्वत के दक्षिण मे और चुल्ल (लघु) हिमवन्त वर्षधर पर्वत के चार विदिशाओ मे लवण समुद्र तीनसौ तीनसौ योजन जाने पर चार-चार अन्तरद्वीप हैं । यथा—

१ एकोरुक द्वीप, २ आभाषिक द्वीप, ३ वेषाणिक द्वीप और ४ लागोलिक द्वीप ।

२ख—उन द्वीपो मे चार प्रकार के मनुष्य रहते हैं । यथा

१ एकोरुक, २ आभाषिक, ३ वैषाणिक और ४ लांगुलिक

३क—उन द्वीपो की चार विदिशाओ मे लवण समुद्र मे चारसौ-चारसौ योजन जाने पर चार अन्तरद्वीप हैं । यथा—

१ हयकर्णद्वीप, २ गजकर्ण द्वीप, ३ गोकर्णद्वीप और ४ सकुलिकर्णद्वीप ।

ख—उन द्वीपो मे चार प्रकार के मनुष्य रहते है । यथा—१ हयकर्ण, २ गजकर्ण, ३ गोकर्ण और शष्कुलीकर्ण ।

४क—उन द्वीपो की चार विदिशाओ मे लवण समुद्र मे पाचसो-पाचसो योजन जाने पर चार अंतर द्वीप हैं। यथा—१ आदर्शमुखद्वीप, २ मेढ़मुखद्वीप, ३ अयोमुखद्वीप और ४ गोमुखद्वीप।

ख—उन द्वीपो मे चार प्रकार के मनुष्य हैं। यथा—
१ आदर्शमुख, २ मेढ़मुख, ३ अयोमुख और ४ गोमुख।

५क—उन द्वीपो की चार विदिशाओं मे लवण समुद्र मे छ सो- छ सो योजन जाने पर चार अन्तरद्वीप है। यथा—१ अश्वमुखद्वीप, २ हस्तिमुखद्वीप, ३ सिंहमुखद्वीप और ४ व्याघ्रमुखद्वीप।

ख—उन द्वीपो मे मनुष्य चार प्रकार के है। यथा—
१ अश्वमुख, २ हस्तिमुख ३ सिंहमुख और ४ व्याघ्रमुख।

६क—उन द्वीपो की चार विदिशाओं मे लवण समुद्र मे सातसो सातसो योजन जाने पर चार अन्तरद्वीप है। यथा—
१ अश्वकर्ण द्वीप, २ हस्तिकर्ण द्वीप, ३ अकर्ण द्वीप और ४ कर्णप्रावरण द्वीप।

ख—उन द्वीपो मे चार प्रकार के मनुष्य हैं। यथा—

१ अश्वकर्ण, २ हस्तिकर्ण, ३ अकण और ४ कर्ण प्रन्वरण।

७क—उन द्वीपो की चार विदिशाओं में लवण समुद्र में आठसो आठसो योजन जाने पर चार अन्तर द्वीप हैं। यथा—

१ उल्कामुखद्वीप, १ मेघमुखद्वीप, ३ विद्युन्मुखद्वीप और ४ विद्युद्दन्तद्वीप।

ख—उन द्वीपो में चार प्रकार के मनुष्य रहते हैं। यथा

१ उल्कामुख, २ मेघमुख, ३ विद्युन्मुख और ४ विद्युद्दन्तमुख।

८क—उन द्वीपो की चार विदिशाओ मे लवण समुद्र में नोसो-नोसो योजन जाने पर चार द्वीप हैं। यथा—

१ धनदन्तद्वीप, २ लष्टदन्तद्वीप, ३ मूढदन्तद्वीप और ४ शुद्धदन्तद्वीप।

ख—उन द्वीपो मे चार प्रकार के मनुष्य हैं। यथा—

१ घनदन्त, २ लष्टदन्त, ३ गूढ़दत, ४ शुद्धदत।

९—जम्बूद्वीपवर्ती मेरु पर्वत के उत्तर मे और शिखरी वपधर पवत की चार विदिशाओ मे लवण समुद्र में तीनसो-तीनसो योजन जाने पर चार अन्तरद्वीप हैं। अन्तरद्वीपो के नाम इसी सूत्र के उपसूत्र ९

(१८) के समान समझें।

३०५ १क—जम्बूद्वीप की बाह्य वेदिकाओ मे (पूर्वादि) चार दिशाओ मे लवण समुद्र म ९५००० हजार योजन जाने पर महाघटाकार च र महापातालकलश हैं। यथा—१ वलयामुख, २ केतुक ३ यूपक और ४ ईश्वर।

ख—इन चार महापाताल कलशो मे पल्यापम स्थिति वाले चार महर्धिक देव रहते हैं। यथा—

१ काल, २ महाकाल, ३ वेलम्ब और ४ प्रभ-जन।

२क—जम्बूद्वीप की बाह्य वेदिकाओ से (पूर्वादि) चार दिशाओ मे लवण समुद्र म ४२,००० हजार योजन जाने पर चार वेलन्धर नागराजाओ के चार आवास पर्वत हैं। यथा—

१ गोस्तुभ, २ उदकभास, ३ शख, ४ दकसीम।

ख—इन चार आवास पर्वतों पर पल्योपम स्थिति वाले चार महर्धिक देव रहते हैं। यथा—

१ गोस्तूप, २ शिवक, ३ शख और ४ मनशिल।

३क—जम्बूद्वीप की बाह्य वेदिकाओ से (अग्न्यादि) चार विदिशाओ मे लवण समुद्र मे ४२,००० हजार

योजन जाने पर अनुवेलधर नागराजाओ के चार आवास पवत हैं। यथा—

१ कर्कोटक, २ कदमक, ३ कैलाश और ४ अरुणप्रभ।

ख—उन चार आवास पवतो पर पल्योपम स्थितिवाले चार महर्धिक देव रहते हैं।

यथा—इन देवों के नाम पवतो के समान है।

४क—लवण समुद्र मे चार चन्द्रमा अतीत मे प्रकाशित हुए थे वर्तमान मे प्रकाशित होते हैं और भविष्य में प्रकाशित होंगे।

ख—लवण समुद्र मे चार सूर्य अतीत में तपे थे वर्तमान मे तपते हैं और भविष्य मे तपेंगे।

५(८८)—इसी प्रकार चार कृतिका-यावत्-चारभाव केतु पर्यन्त सूत्र कहें।

६क—लवण समुद्र के चार द्वार हैं—

इनके नाम जम्बूद्वीप के द्वारो के समान हैं।

ख—इन द्वारो पर पल्योपम स्थितिवाले चार महर्धिक देव रहते हैं।

उनके नाम जम्बूद्वीप के द्वारों पर रहने वाले देवो के समान हैं।

३०६ १—धातकीखड द्वीप का वलयाकार विष्कम्भ चार लाख योजन का है।

२—जम्बूद्वीप के बाहर चार भरत क्षेत्र और चार ऐरवत क्षेत्र हैं।

३—इसी प्रकार पुष्करार्धद्वीप के पूर्वार्ध पयन्त द्वितीय स्थान उद्देशक तीन के सूत्र ९०, ९१ और ९२ में उक्त मेरुचूलिका तक के पाठ की पुनरावृत्ति करें, और उसमे सर्वत्र चार की सख्या कहे।

॥ नदीश्वर द्वीप वर्णन ॥

३०७ १क—वलयाकार विष्कम्भवाले नन्दीश्वर द्वीप के मध्य चारो दिशाओ में चार अजनक पर्वत हैं।

यथा—१ पूर्व मे अजनक पर्वत, २ दक्षिण मे अजनक पर्वत, ३ पश्चिम मे अजनक पर्वत और ४ उत्तर मे अजनक पर्वत।

वे अजनक पर्वत ८४,००० हजार योजन ऊँचे हैं और एक हजार योजन भूमि में गहरे हैं। उन पर्वतो के मूल का विष्कम्भ दस हजार योजन का है। फिर क्रमश कम होते होते ऊपर का विष्कम्भ एक हजार योजन का है।

उन पर्वतो की परिधि मूल मे इकतीस हजार छसो

तेईस योजन की है ।

फिर क्रमश कम होते-होते ऊपर की परिधि तीन हजार एक सौ छासठ योजन की है । वे पर्वत मूल मे विस्तृत, मध्य मे सकरे और ऊपर पतले अर्थात् गो पुच्छ की आकृति वाले हैं ।

सभी अजनक पवत अजन (श्यामरत्न) मय हैं, स्वच्छ हैं, कोमल हैं, घुटे हुए और घिसे हुए हैं । रज, मल और कदम रहित हैं । अनिन्द्य सुपमा वाले है, स्वत चमकने वाले हैं ।

उनसे किरणें निकल रही हैं, अत उद्योतित हैं । उन्हे देखने से मन प्रसन्न होता है, वे पर्वत दगनीय है, मनोहर हैं एव रमणीय हैं ।

ख—उन अजनक पर्वतो का ऊपरीतल समतल है उन समतल उपरितलो के मध्य भाग मे चार सिद्धायतन हैं ।

उन सिद्धायतनो की लम्बाई एक सौ योजन की है, चौडाई पचास योजन की है और ऊचाई बहत्तर योजन की हैं ।

ग—उन सिद्धायतनो की चार दिशाओ मे चार द्वार हैं । यथा—१ देव द्वार, २ असुर द्वार, ३ नागद्वार और

४ सुपर्ण द्वार ।

घ—उन द्वारो पर चार प्रकार के देव रहते हैं ।

यथा—१ देव, २ असुर, ३ नाग और ४ सुपर्ण ।

ङ—उन द्वारो के आगे चार मुखमण्डप हैं ।

च—उन मुखमण्डपो के आगे चार प्रेक्षाघर मण्डप है ।

छ—उन प्रेक्षाघर मण्डपो के मध्य भाग मे चार वज्रमय अखाडे हैं ।

ज—उन वज्रमय अखाडो के मध्य भाग मे चार मणि पीठिकायें है ।

झ—उन मणिपीठिकाओं के ऊपर चार सिंहासन हैं ।

ञ—उन सिंहासनो पर चार विजय दूष्य हैं ।

ट—उन विजयदूष्यो के मध्य भाग मे चार वज्रमय अकुश[1] है ।

ठ—उन वज्रमय अकुशो पर लघु कुंभाकार मोतियो की चार मालायें हैं ।

ड—प्रत्येक माला अर्धप्रमाण वाली चार-चार मुक्ता-मालाओ से घिरी हुई हैं ।

---

१ वस्तु लटकाने का आंकडा ।

२क—उन प्रेक्षाघर मण्डपो के आगे चार मणिपीठिकाएँ हैं[1]।

ख—उन मणिपीठिकाओ पर चार चैत्य स्तूप हैं।

ग—प्रत्येक चैत्य स्तूपो की चारो दिशाओ मे चार-चार मणिपीठिकाएँ हैं।

घ—प्रत्येक मणिपीठिका पर पल्यकासन वाली स्तूपाभिमुख सब रत्नमय चार जिन प्रतिमायें हैं।

उनके नाम—

१ रिषभ २ वधमान ३ चन्द्रानन और ४ वारिषेण।

ङ—उन चैत्यस्तूपो के आगे चार मणिपीठिकायें हैं।

च—उन मणिपीठिकाओ पर चार चैत्य वृक्ष हैं।

छ—उन चैत्य वृक्षों के सामने चार मणि पीठिकायें हैं।

ज—उन मणिपीठिकाओ पर चार महेन्द्र ध्वजायें हैं।

झ—उन महेन्द्र ध्वजाओ के सामने चार नदा पुष्करणियाँ हैं।

ञ—प्रत्येक पुष्करणी की चारो दिशाओ में चार वन खड हैं।

---

१ पूर्वोक्त (च) सूत्र देखें।

गाथार्थ—यथा—१ पूव मे अशोक वन,

२ दक्षिण म सप्तपण वन,

३ पश्चिम मे चम्पक वन, और

४ उत्तर म आम्रवन ।

३क—पूव दिशावर्ती अजनक पवत की चारो दिशाओ म चार नदा पुष्करणियाँ हैं ।

उनके नाम इस प्रकार हैं—

१ नदुत्तरा, २ नदा, ३ आनदा और ४ नदिवधना

उन पुष्करणियो की लम्बाई एक लाख योजन है । चौडाई पचास हजार योजन है और गहराई एक हजार योजन है ।

ख—प्रत्येक पुष्करणी की चारो दिशाओ मे त्रिसोपान प्रतिरूपक (तीन पगथिय) हैं ।

ग—उन त्रिसोपान प्रतिरूपको के सामने पूर्वादि चार दिशाओ मे चार तोरण हैं ।

घ—प्रत्येक तोरण की पूर्वादि चार दिशाओ मे चार वन खण्ड हैं ।

वन खण्डों के नाम इसी सूत्र के पूर्वोक्त हैं ।

ङ—उन पुष्करणियो के मध्यभाग मे चार दधिमुख पवत हैं । इनकी ऊँचाई ६४,००० हजार योजन,

भूमि में गहराई एक हजार योजन की है ।
वे पवत सर्वत्र पल्यक के समान आकार वाले है ।
इनकी चौडाई दस हजार योजन की है और परिधि
इकतीस हजार छसो तेईस योजन की है ।
य सभी रत्नमय हैं —यावत् रमणीय है ।
च—उन दधिमुख पर्वत के उपर का भाग समतल हैं ।
"शेप समग्र कथन अजनक पवतो के समान कहना
चाहिये यावत् -उत्तर मे आम्रवन तक" [इसी सूत्र
२ के उपसूत्र २ के (ख से ह तक) और उपसूत्र २
की पूरी आवृति करें]
४क-च—दक्षिण दिशा के अजनक पर्वत की चार दिशाओ मे
चार नन्दा पुष्करणिया है ।
उनके नाम इस प्रकार है—
१ भद्रा, २ विसाला, ३ कुमुद और ४ पोडरि-
किणी ।
पुष्करणियों का शेप वर्णन-यावत्-दधिमुखपर्वत वन-
खण्ड पर्वत तक कहे ।
५क-च—पश्चिम दिशा के अजनक पर्वत की चारों दिशाओ मे
चार नन्दा पुष्पकरणिया हैं ।
उनके नाम इस प्रकार है—

१ नन्दिसेना, २ अमोघा, ३ गास्तूपा और ४ सुद शना । शेप वणन पूववत ।

६क च—उत्तर दिशा के अजनक पवत की चारो दिशाआ म चार नन्दा पुष्करणिया है। उनके नाम है—

१ विजया, २ वेजयन्ती, ३ जयन्ती और ४ अप-राजिता । शेप वणन पूववत् ।

७क—वलयाकार विष्कम्भ वाले नन्दीश्वर द्वीप के मध्य भाग मे चार विदिशाओ मे चार रतिकर पवत है।

यथा—१ उत्तर पूव म रतिकर पवत,

२ दक्षिण-पूव मे रतिकर पवत,

३ दक्षिण पश्चिम मे रतिकर पवत,

४ उत्तर-पश्चिम मे रतिकर पवत ।

वे रतिकर पर्वत एक हजार योजन ऊचे हैं,

एक हजार गाउ भूमि मे गहर हैं।

झालर के समान सर्वत्र सम सस्थान वाले हैं ।

दस हजार योजन उनकी चौडाई है । इकतीस हजार छह सौ तेइस योजन उनकी परिधि है । सभी रत्न मय हैं । स्वच्छ हैं, यावत्-रमणीय हैं ।

ख—उत्तर पूव मे स्थित रतिकर पवत की चारो दिशाओ मे देवेन्द्र देवराज ईशानेन्द्र की चार अग्रमहिषियो

की जम्बूद्वीप जितनी बडी चार राजधानियाँ हैं।

उनके नाम ये हैं—

१ नदुत्तरा, २ नदा, ३ उत्तर कुरा और ४ देवकुरा

ग—चार अग्रमहिषियो के नाम—

१ कृष्णा, २ कृष्णराजो, ३ रामा और ४ राम रक्षिता।

इन अग्रमहिषियो की उक्त राजधानियाँ हैं।

ग—दक्षिण पूव में स्थित रतिकर पर्वत की चारो दिशाओं मे देवेन्द्र देवराज शक्रेन्द्र की चार अग्रमहिषियो की जम्बूद्वीप जितनी बडी चार राजधानियाँ हैं।

उनके नाम ये हैं—

१ समणा, २ सोमणसा, ३ अर्चिमाली और ४ मनोरमा।

ङ—चार अग्रमहिषियो के नाम—

१ पद्मा, २ शिवा, ३ शची और ४ अञ्जू।

इन अग्रमहिषियो की उक्त राजधानिया हैं।

च—दक्षिण-पश्चिम स्थित रतिकर पर्वत की चारो दिशाओ मे देवेन्द्र देवराज शक्रेन्द्र की चार अग्रमहिषियों की जम्बूद्वीप जितनी बडी चार राजधानिया हैं। उनके नाम ये हैं—

१ भूता २ भूतवडिंसा ३ गोस्तूपा और ४ सुदशणना ।

छ—अग्रमहिषियो के नाम—

१ अमला २ अप्सरा ३ नवमिका और ४ रोहणी ।

इन अग्रमहिषियो की उक्त राजधानिया हैं ।

ज—उत्तर-पश्चिम मे स्थित रतिकर पवत की चारो दिशाओ मे देवेन्द्र देवराज ईशानेन्द्र की जम्बूद्वीप जितनी वडी चार राजधानिया हैं ।

उनके नाम ये हैं—

१ रत्ना, २ रत्नोच्चया, ३ सवरत्ना और ४ रत्न सचया ।

अग्रमहिषियो के नाम—

१ वसु २ वसु गुप्ता ३ वसुमित्रा और ४ वसुधरा

इन अग्रमहिषियो की उक्त राजधानियाँ हैं ।

॥ इति श्री नदीश्वर द्वीप वणन ॥

३०८ १—सत्य चार प्रकार का है ।

यथा—१ नाम सत्य, २ स्थापना सत्य,
३ द्रव्य सत्य और ४ भाव सत्य ।

३०९ १—आजीविका (गोशालक) मतवालो का तप चार

प्रकार है। यथा—

१ उग्र तप, २ घोर तप,

३ रसनियूंह तप ४ जिव्हेन्द्रिय प्रतिसलीनता।

३१० १क—सयम चार प्रकार का है। यथा—

१ मन सयम, २ वचन सयम,

३ काय सयम और ४ उपकरण सयम।

ख—त्याग चार प्रकार का है। यथा—

१ मन त्याग, २ वचन त्याग,

३ काय त्याग और ४ उपकरण त्याग।

ग—अकिंचनता चार प्रकार की है। यथा—

१ मन अकिंचनता, २ वचन अकिंचनता,

३ काय अकिंचनता, और ४ उपकरण अकिंचनता।

॥ इति चतुर्थ स्थानक का द्वितीयोद्देशक ॥

अथ चतुर्थ स्थानक तृतीय उद्देशक

३११ १क—रेखायें चार प्रकार की हैं। यथा—

१ पवत की रेखा, २ पृथ्वी की रेखा, ३ बालु की रेखा और ४ पानी की रेखा।

ख—इसी प्रकार क्रोध चार प्रकार का है। यथा—

१ पवत की रेखा के समान,

२ पृथ्वी की रेखा के समान,

३ वालु की रेखा के समान,

४ पानी की रेखा के समान।

ग—१ पर्वत की रेखा के समान क्रोध करने वाला जीव मरकर नरक मे उत्पन्न होता है।

२ पृथ्वी की रेखा के समान क्रोध करने वाला जीव मरकर तिर्यंच योनि मे उत्पन्न होता है।

३ वालु की रेखा के समान क्रोध करने वाला जीव मरकर मनुष्य योनि मे उत्पन्न होता है।

४ पानी की रेखा के समान क्रोध करने वाला जीव मरकर देव योनि मे उत्पन्न होता है।[1]

घ—उदक (पानी चार प्रकार का होता है। यथा—

१ कर्दमोदक, २ खंजनोदक, ३ वालुकोदक और

---

१ इस सूत्र के आगे पूर्वोक्त सूत्र २९३ में वर्णित कषाय सूत्रों का कथन होना चाहिये था किंतु मान, माया और लोभविषयक कथन पहले हुआ और क्रोध विषयक कथन यहां हुआ यह विपर्यय देवर्धिगणि क्षमाश्रमण से अब तक चल रहा है। टीकाकार के सामने भी यही पाठ रहा है अत इनको यथास्थान रखने का साहस अब तक किसी ने नहीं किया है।

४ शैलोदक ।

ङ—इसी प्रकार भाव चार प्रकार का है ।

यथा—१ कदमोदक समान, २ खजोनदक समान, ३ वालुकोदक समान और ४ शैलोदक समान ।

च—कदमोदक समान भाव (विचार) रखने वाला जीव मरकर नरक मे उत्पन्न होता है। यावत् शैलोदक समान भाव रखने वाला जीव मरकर देवयोनि मे उत्पन्न होता है ।

३१२ १क—पक्षी चार प्रकार के हैं। यथा—

१—एक पक्षी रुत सम्पन्न (मधुर स्वर वाला) है किन्तु रूप सम्पन्न नही है ।[1]

२—एक पक्षी रूप सम्पन्न है किन्तु रुत सम्पन्न (मधुर स्वर वाला) नही है ।[2]

३—एक पक्षी रूप सम्पन्न भी है और रुतसम्पन्न भी है ।[3]

---

१ यथा—कोयल

२ यथा—शुक

३. यथा—मयूर

४—एक पक्षी रुत सम्पन्न भी नहीं है और रूप सम्पन्न भी नही है।[1]

ख—इसी प्रकार पुरुष वर्ग भी चार प्रकार का है।

ग—पुरुष वर्ग चार प्रकार का है। यथा—

१—एक पुरुष ऐसा सोचता है कि मैं अमुक के साथ प्रीति करूँ और उसके साथ प्रीति करता भी है।

२—एक पुरुष ऐसा सोचता है कि मैं अमुक के साथ प्रीति करू किन्तु उसके साथ प्रीति नही करता है।

३—एक पुरुष ऐसा सोचता है कि अमुक के साथ प्रीति न करूँ किन्तु उसके साथ प्रीति करलेता है।

४—एक पुरुष ऐसा सोचता है कि अमुक के साथ प्रीति न करू और उसके साथ प्रीति करता भी नही है।

घ—पुरुष वग चार प्रकार का है।

यथा—१—एक पुरुष स्वय भोजन आदि से तृप्त होकर आनन्दित होता है किन्तु दूसरे को तृप्त नहीं करता।

२—एक पुरुष दूसरे को भोजन आदि से तृप्त कर प्रसन्न

---

१ यथा—काक

होता है किन्तु स्वय को तृप्त नही करता ।

३—एक पुरुष स्वय भी भोजन आदि से तृप्त होता है और अन्य को भी भोजन आदि से तृप्त करता है ।

४—एक पुरुष स्वय भी तृप्त नही होता और अन्य को भी तृप्त नहीं करता ।

ङ—पुरुष वर्ग ४ प्रकार का है । यथा—

१—एक पुरुष ऐसा सोचता है कि मैं अपने सद्व्यवहार से अमुक मे विश्वास उत्पन्न करू और विश्वास उत्पन्न करता भी है ।

२—एक पुरुष ऐसा सोचता है कि मैं अपने सद्व्यवहार से अमुक मे विश्वास उत्पन्न करूँ किन्तु विश्वास उत्पन्न नही करता ।

३—एक पुरुष ऐसा सोचता है कि मैं अमुक मे विश्वाम उत्पन्न नही कर सकूगा किन्तु विश्वास उत्पन्न करने मे सफल हो जाता है ।

४—एक पुरुष ऐसा सोचता है कि मैं अमुक में विश्वास उत्पन्न नही कर सकूँगा और विश्वास उत्पन्न कर भी नही सकता है ।

च १—एक पुरुष स्वय विश्वास करता है किन्तु दूसरे मे विश्वास उत्पन्न नही कर पाता ।

२—एक पुरुप दूमरे मे विश्वाम उत्पन्न कर देता है, किंतु स्वय विश्वास नही करता।

३—एक पुरुप स्वय भी विश्वास करता है और दूसरे म भी विश्वास उत्पन्न करता है।

४—एक पुरुप स्वय भी विश्वास नही करता और न दूमरे मे विश्वाम उत्पन्न करता है।

३२३ १क—वृक्ष चार प्रकार के हैं। यथा—

१ पत्रयुक्त, २ पुष्पयुक्त,

३ फलयुक्त और ४ छायायुक्त

ख—इसी प्रकार पुरुप वग चार प्रकार का है। यथा—

१ पत्ते वाले वृक्ष के समान,[1]

२ पुष्प वाले वृक्ष के समान,[2]

३ फल वाले वृक्ष के समान,[3]

१—जिस प्रकार केवल पत्ते वाले वृक्ष से जन साधारण को पुष्पादि नहीं मिलते उसी प्रकार एक पुरुप से किसी का भला नहीं होता।

२—जिस प्रकार पुष्प वाले वृक्ष से सुगन्ध मिलती है उसी प्रकार एक पुरुष से सदविचार मिलते हैं।

३—जिस प्रकार फल वाले वृक्ष से फल मिलते हैं उसी प्रकार एक पुरुष से अन्न वस्त्र आदि मिलते हैं।

४ छाया वाले वृक्ष के समान ।[1]

३१४ १क—भारवहन करने वाले के चार विश्राम स्थल हैं ।

यथा—१ एक भारवाहक मार्ग मे चलता हुआ एक खधे से दूसरे खधे पर भार रखता है । यह भी एक प्रकार का विश्राम है ।

२ एक भारवाहक कही पर भार रखकर मल मूत्रादि का त्याग करता है—यह भी एक प्रकार का विश्राम है ।

३ एक भारवाहकनागकुमार या सुपणकुमार के मदिर मे रात्रि विश्राम लेता है । यह भी एक प्रकार का विश्राम है ।

४ एक भारवाहक अपने घर पहूच जाता है यह भी एक प्रकार का विश्राम हैं ।

ख—इसी प्रकार श्रमणोपासक के चार विश्राम हैं ।

यथा—१ जो श्रमणोपासक शीलव्रत, गुणव्रत, विरमण व्रत या प्रत्याख्यान पौषधोपवास करते हैं—यह

१—जिस प्रकार छाया वाले वृक्ष से ताप मिटता है और शान्ति मिलती है उसीप्रकार एक पुरुष से सुरक्षा होती है और सताप मिटता है ।

भी एक प्रकार का विश्राम है ।

२ जो श्रमणोपासक सामायिक या देशावगासिक धारण करता है यह भी एक प्रकार का विश्राम है ।

३ जो श्रमणोपासक चौदस अष्टमी, अमावस्या या पूर्णिमा के दिन पौषध करता है—यह भी एक प्रकार का विश्राम है ।

४ जो श्रमणोपासक भक्त-पान का प्रत्याख्यान करता है, और पादप के समान शयन करके मरण की कामना नही करता है—यह भी एक प्रकार का विश्राम का करता है ।

३१५ १—पुरुष वर्ग चार प्रकार का है । यथा—

१ उदितोदित—यहां भी उदय (समृद्ध) और आगे भी उदय (परम सुख प्राप्त) है ।

२ उदितास्तमित—यहा उदय (समृद्ध) है किन्तु आगे उदय नही ।

३ अस्तमितोदित—यहा उदय नही है किन्तु आग उदय है ।

४ अस्तमितास्तमित—यहां भी उदय नही है और आगे भी उदय नही है ।

१ भरत चक्रवर्ती उदितोदित है,

२ ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती उदितास्तमित है।

३ हरिकेशबल अणगार अस्तमितोदित है।

४ काल शौकरिक अस्तमितास्तमित है।

३१६ १क—युग्म ४ प्रकार है। यथा—

१ कृतयुग्म—एक ऐसी सख्या जिसके चार का भाग देने पर शेष चार रहे।

२ त्र्योज—एक ऐसी सख्या जिसके तीन का भाग देने पर शेष तीन रहे।

३ द्वापर—एक ऐसी सख्या जिसके दो का भाग देने पर शेष दो रहे।

४ कल्योज—एक ऐसी सख्या जिसके एक का भाग देने पर शेष एक रहे।

ख—नारक जीवो के चार युग्म हैं।

ग—इसी प्रकार २४ दण्डकवर्ती जीवो के चार युग्म हैं।

३१७ १क—शूर चार प्रकार के है। यथा—

१ क्षमाशूर, २ तपशूर, ३ दानशूर और ४ युद्धशूर।

ख—१ क्षमाशूर अरिहत है, २ तपशूर अणगार है, ३ दानशूर वैश्रमण है, और ४ युद्धशूर वासुदेव है।

३१८ १क—पुरुष वर्ग चार प्रकार का है। यथा—

१ एक पुरुप उच्च है (लौकिक वैभव से श्रेष्ठ है) और उच्चछद है (श्रेष्ठ अभिप्राय वाला है)

२ एक पुरुप उच्च है (लौकिक वैभव से श्रेष्ठ है) किन्तु नीच छद है (नीच अभिप्राय वाला है)

३ पुरुप एक नीच है (वैभवहीन है) किन्तु उच्चछद है (उच्च अभिप्राय वाला है)

४ एक पुरुप नीच है (वैभवहीन है) और नीच छद है (नीच अभिप्राय वाला है)

३१९ १क—असुरकुमारो की ४ लेश्या हैं। यथा—

१ कृष्ण लेश्या, २ नील लेश्या,

३ कापोत लेश्या और ४ तेजो लेश्या।

ख—इसी प्रकार शेप भवनवासी देवो की, पृथ्वी काय, अप्काय, वनस्पतिकाय और वाणव्यन्तरो की चार लेश्यायें हैं।

३२० १क—यान चार प्रकार के है।

१ एक यान युक्त है (वृपभ आदि से युक्त है) और युक्त है (सामग्री से भी युक्त है)

२ एक यान युक्त है (वृपभ आदि से युक्त है) किन्तु अयुक्त है (सामग्री रहित है)

३ एक यान अयुक्त है (वृपभ आदि से रहित है)

किन्तु युक्त है (सामग्री से युक्त है)।

४ एक यान अयुक्त (वृषभ आदि से रहित है) और अयुक्त है (सामग्री से भी रहित है)

ख—इसी प्रकार पुरुष वर्ग चार प्रकार का है। यथा—

१ एक पुरुष युक्त है (धनादि से युक्त है) और युक्त है (उचित अनुष्ठान से भी युक्त है)

२ एक पुरुष युक्त है (धनादि से युक्त है) किन्तु अयुक्त है। (उचित अनुष्ठान से अयुक्त है।)

३ एक पुरुष अयुक्त है (धनादि से अयुक्त है) किन्तु युक्त है (उचित अनुष्ठान से युक्त है)

४ एक पुरुष अयुक्त है (धनादि से रहित है) और अयुक्त है (उचित अनुष्ठान से भी रहित है।

२क—यान चार प्रकार के हैं। यथा—

१ एक यान युक्त है (वृषभ आदि से युक्त है) और युक्त परिणत है (चलने के लिए तैयार है)

२ एक यान युक्त है (वृषभ आदि से युक्त है) किंतु अयुक्त परिणत है (चलने योग्य नही है)

३ एक यान अयुक्त है (वृषभ आदि से रहित है) किन्तु युक्त है (चलने योग्य है)

४ एक यान अयुक्त है। (वृषभ आदि से रहित है)

१ एक पुरुप उच्च है (लौकिक वैभव से श्रेष्ठ है) और उच्चछद है (श्रेष्ठ अभिप्राय वाला है)

२ एक पुरुप उच्च है (लौकिक वैभव से श्रेष्ठ है) किन्तु नीच छद है (नीच अभिप्राय वाला है)

३ पुरुप एक नीच है (वैभवहीन है) किन्तु उच्चछद है (उच्च अभिप्राय वाला है)

४ एक पुरुप नीच है (वैभवहीन है) और नीच छद है (नीच अभिप्राय वाला है)

३१९ १क—असुरकुमारो की ४ लेश्या हैं। यथा—

१ कृष्ण लेश्या, २ नील लेश्या,

३ कापोत लेश्या और ४ तेजो लेश्या।

ख—इसी प्रकार शेप भवनवासी देवो की, पृथ्वी काय, अप्काय, वनस्पतिकाय और वाणव्यन्तरो की चार लेश्यायें हैं।

३२० १क—यान चार प्रकार के है ।

१ एक यान युक्त है (वृपभ आदि से युक्त है) और युक्त है (सामग्री से भी युक्त है)

२ एक यान युक्त है (वृपभ आदि से युक्त है) किन्तु अयुक्त है (सामग्री रहित है)

३ एक यान अयुक्त है (वृपभ आदि से रहित है)

किन्तु युक्त है (सामग्री से युक्त है)।

४ एक यान अयुक्त (वृषभ आदि से रहित है) और अयुक्त है (सामग्री से भी रहित है)

ख—इसी प्रकार पुरुष वग चार प्रकार का है। यथा—

१ एक पुरुष युक्त है (धनादि से युक्त है) और युक्त है (उचित अनुष्ठान से भी युक्त है)

२ एक पुरुष युक्त है (धनादि से युक्त है) किन्तु अयुक्त है। (उचित अनुष्ठान मे अयुक्त है।)

३ एक पुरुष अयुक्त है (धनादि से अयुक्त है) किन्तु युक्त है (उचित अनुष्ठान मे युक्त है)

४ एक पुरुष अयुक्त है (धनादि मे रहित हैं) और अयुक्त है (उचित अनुष्ठान से भी रहित है।

२क—यान चार प्रकार के हैं। यथा—

१ एक यान युक्त है (वृषभ आदि से युक्त है) और युक्त परिणत है (चलने के लिए तैयार है)

२ एक यान युक्त है (वृपभ आदि से युक्त है) किंतु अयुक्त परिणत है (चलने योग्य नहीं है)

३ एक यान अयुक्त है (वृपभ आदि से रहित है) किन्तु युक्त है (चलने योग्य है)

४ एक यान अयुक्त है। (वृषभ आदि से रहित है)

और अयुक्त है (चलने योग्य भी नही है)

ख—इसी प्रकार पुरुप चार प्रकार के हैं। यथा—

१ एक पुरुप युक्त है (धनधान्य से परिपूण है) और युक्त परिणत है (उचित प्रवृत्ति वाला है)

शेप तीन भागे पूर्वोक्त क्रम से कहे।

३क—यान चार प्रकार के हैं। यथा—

१ एक यान युक्त है (वृपभ आदि से युक्त है) और युक्त रूप है (सुन्दराकार है)

शेप तीन भागे पूर्वोक्त क्रम से कहे।

ख—इसी प्रकार पुरुप चार प्रकार का है। यथा—

१ एक पुरुप युक्त है (धन आदि से युक्त है) और युक्त रूप है (सुन्दर है)

शेप तीन भागे पूर्वोक्त कहे।

४क—*यान चार प्रकार के हैं। यथा—*

१ एक यान युक्त है (वृपभ आदि से युक्त है) और शोभा युक्त है।

शेप तीन भागे पूर्वोक्त क्रम से कहे।

ख—इसी प्रकार पुरुप चार प्रकार के हैं। यथा—

१ एक पुरुप युक्त है (धन से युक्त है) और उसकी शोभा युक्त है।

शेष तीन भागे पूर्वोक्त कहें।

५क—वाहन चार प्रकार के हैं।[1] यथा—

१ एक वाहन बैठने की सामग्री (मच आदि) से युक्त है और वेग युक्त है।

२ एक वाहन बैठने की सामग्री (मच आदि) से युक्त है किन्तु वेग युक्त नही है।

३ एक वाहन बैठने की सामग्री युक्त नही है किन्तु वेग युक्त है।

४ एक वाहन बैठने की सामग्री युक्त भी नही है और वेग युक्त भी नही है।

ख—इसी प्रकार पुरुष चार प्रकार के हैं। यथा—

१ एक पुरुष धन धान्य सम्पन्न है और उत्साही है।

२ एक पुरुष धन धान्य सम्पन्न है किन्तु उत्साही नही है।

३ एक पुरुष उत्साही है किन्तु धन धान्य सम्पन्न नही है।

४ एक पुरुष धन धान्य सम्पन्न भी नही है और

१—प्रत्येक यान या वाहन पर बैठने के साधन भिन्न-भिन्न प्रकार के होते हैं और उनके नाम भी भिन्न-भिन्न हैं।

उत्साही भी नही है ।

६–८—यान के चार सूत्रो के समान युग्म के चार सूत्र भी कहें और पुरुष सूत्र भी पूर्ववत् कहे ।

९क—सारथी चार प्रकार के हैं । यथा—

१ एक सारथी रथ के अश्व जोतता है किन्तु खोलता नही हैं ।

२ एक सारथी रथ के अश्व खोलता है किन्तु जोतता नही है ।

३ एक सारथी रथ मे अश्व जोतता भी है और खोलता भी है ।

४ एक सारथी रथ मे अश्व जोतता भी नही है है और खोलता भी नही है ।

ख—इसी प्रकार पुरुष (श्रमण) चार प्रकार के है ।

यथा—१ एक श्रमण (किसी व्यक्ति को) सयम साधना मे लगाता है किन्तु अतिचारो से मुक्त नही करता ।

२ एक श्रमण सयमी को अतिचारो से मुक्त करता है किन्तु सयम साधना मे नही लगाता ।

३ एक श्रमण सयम साधना मे भी लगाता है और अतिचारो से भी मुक्त करता है ।

४ एक श्रमण संयम साधना मे भी नही लगाता और अतिचारो से भी मुक्त नही करता ।

१०-१४—हय (अश्व) चार प्रकार के हैं । यथा—

१ एक अश्व पलाण युक्त हैं और वेग युक्त है ।

यान के चार सूत्रो के समान हय क चार सूत्र कहे और पुरुप सूत्र भी पूववत् कहे ।

१५-१८—हय के चार सूत्रो के समान गज के चार सूत्र कहे[1] और पुरुप सूत्र भी पूवन्त् कहें ।

१९क—युग्यचर्या (अश्व आदि की चर्या) चार प्रकार की है । यथा—१ एक अश्व माग मे चलता है किन्तु उन्माग मे नही चलता है ।

२ एक अश्व उन्मार्ग मे चलता है किन्तु माग मे नही चलता है ।

३ एक अश्व माग मे भी चलता है और उन्मार्ग मे भी चलता है ।

४ एक अश्व माग मे भी नही चलता और उन्मार्ग मे भी नहीं चलता ।

ख—इसी प्रकार पुरुप (श्रमण) भी चार प्रकार के है ।

१—गज सूत्रों मे अश्वाश्वादी कहें ।

यथा—१ एक पुरुष सयम मार्ग मे चलता है किन्तु उन्मार्ग मे नही चलता।

शेष तीन भागे पूर्वोक्त क्रम से कहें।

२०क—पुष्प चार प्रकार के हैं। यथा—

१ एक पुष्प सुन्दर है किन्तु सुगन्धित नहीं है।[1]

२ एक पुष्प सुगन्धित है किन्तु सुन्दर नही है।[2]

३ एक पुष्प सुन्दर भी है और सुगन्धित भी है।[3]

४ एक पुष्प सुन्दर भी नही है और सुगन्धित भी नही हैं।[4]

ख—इसी प्रकार पुरुष चार प्रकार के हैं। यथा—

१ एक पुरुष सुन्दर है किन्तु सदाचारी नही है।

शेष तीन भागे पूर्ववत् कहे।

२१क—जाति सम्पन्न और कुल सम्पन्न,

ख—जाति सम्पन्न और बल सम्पन्न।

ग—जाति सम्पन्न और रूप सम्पन्न,

घ—जाति सम्पन्न और श्रुत सम्पन्न।

ङ—जाति सम्पन्न और शील सम्पन्न,

१—आवले के पुष्प समान। २—चम्पा के पुष्प समान।
३—जाई पुष्प के समान। ४—बोरडी के पुष्प समान।

च—जाति सम्पन्न और चारित्र सम्पन्न ।
छ—कुल सम्पन्न और बल सम्पन्न,
ज—कुल सम्पन्न और रूप सम्पन्न ।
झ—कुल सम्पन्न और श्रुत सम्पन्न,
ञ—कुल सम्पन्न और शील सम्पन्न ।
ट—कुल सम्पन्न और चारित्र सम्पन्न,
ठ—बल सम्पन्न और रूप सम्पन्न ।
ड—बल सम्पन्न और श्रुत सम्पन्न,
ढ—बल सम्पन्न और शील सम्पन्न ।
ण—बल सम्पन्न और चारित्र सम्पन्न,
त—रूप सम्पन्न और श्रुत सम्पन्न ।
थ—रूप सम्पन्न और शील सम्पन्न,
द—रूप सम्पन्न और चारित्र सम्पन्न ।
ध—श्रुत सम्पन्न और शील सम्पन्न,
न—श्रुत सम्पन्न और चारित्र सम्पन्न ।
प—शील सम्पन्न और चारित्र सम्पन्न ।

इनके चार-चार भांगे पूर्वोक्त क्रम से कहें ।

२२क—फल चार प्रकार के हैं । यथा—

१ आंवले जैसा मधुर, २ दाख जैसा मधुर,
३ दूध जैसा मधुर, ४ खाण्ड जैसा मधुर ।

ख—इसी प्रकार आचार्य चार प्रकार के हैं। यथा—

१ मधुर आवले के समान जो आचार्य है वे मधुर भाषी हैं और उपशान्त है।

२ मधुर दाख समान जो आचार्य है वे अधिक मधुरभाषी हैं और अधिक उपशान्त है।

३ मधुर दूध के समान जो आचार्य हैं वे विशेष मधुरभाषी हैं और अत्यधिक उपशान्त हैं।

४ मधुर शर्करा समान जो आचार्य हैं वे अधिकतम मधुरभाषी है और अधिक उपशान्त हैं।

२३क—पुरुष चार प्रकार के हैं। यथा—

१ एक पुरुष अपनी सेवा करता है किन्तु दूसरे की नही करता।[1]

२ एक पुरुष दूसरे की सेवा करता है अपनी नहीं करता।[2]

३ एक पुरुष अपनी सेवा भी करता है और दूसरे की भी करता है।[3]

४ एक पुरुष अपनी सेवा भी नही करता और दूसर

---

१ आलसी या रूक्ष प्रकृतिवाला। २ परोपकारी।

३, व्यवहार कुशल (स्थविरकल्पी)

की भी नही करता ।[४]

ख--पुरुष चार प्रकार के हैं। यथा--

१ एक पुरुष दूसरे की सेवा करता है किन्तु अपनी सेवा नही करवाता ।[५]

२ एक पुरुष दूसरे से सेवा करवाता है किन्तु स्वय सेवा नही करता ।[६]

३ एक पुरुष दूसरे की सेवा भी करता है और दूसरे से सेवा करवाता हैं ।[७]

४ एक पुरुष न दूसरे की सेवा करता है और न दूसरे से सेवा करवाता है ।[८]

२४क--पुरुष चार प्रकार के हैं। यथा--

१ एक पुरुष काय करता है किन्तु मान नहीं करता।

२ एक पुरुष मान करता है किन्तु कार्य नहीं करता।

३ एक कार्य भी करता है और मान भी करता है।

४ एक कार्य भी नही करता है और मान भी नही

---

४ पादोपगमन भक्त प्रत्याख्यान करने वाला।

५ निस्पृही ।

६ रोगी या आचार्य ।

७ स्थविरकल्पी मुनि ।

८ जिनकल्पी मुनि ।

ख—इसी प्रकार आचार्य चार प्रकार के हैं। यथा—

१ मधुर आवले के समान जो आचार्य हैं वे मधुर-भाषी हैं और उपशान्त है।

२ मधुर दाख समान जो आचार्य हैं वे अधिक मधुरभाषी हैं और अधिक उपशान्त हैं।

३ मधुर दूध के समान जो आचार्य हैं वे विशेष मधुरभाषी हैं और अत्यधिक उपशान्त हैं।

४ मधुर शकरा समान जो आचार्य हैं वे अधिकतम मधुरभाषी हैं और अधिक उपशान्त हैं।

२३क—पुरुष चार प्रकार के हैं। यथा—

१ एक पुरुष अपनी सेवा करता है किन्तु दूसरे की नही करता।[1]

२ एक पुरुष दूसरे की सेवा करता है अपनी नहीं करता।[2]

३ एक पुरुष अपनी सेवा भी करता है और दूसरे की भी करता है।[3]

४ एक पुरुष अपनी सेवा भी नही करता और दूसरे

---

१ आलसी या रूक्ष प्रकृतिवाला। २ परोपकारी।

३, व्यवहार कुशल (स्थविरकल्पी)

की भी नही करता।[4]

ख---पुरुष चार प्रकार के हैं। यथा---

१ एक पुरुष दूसरे की सेवा करता है किन्तु अपनी सेवा नही करवाता।[5]

२ एक पुरुष दूसरे से सेवा करवाता है किन्तु स्वय सेवा नही करता।[6]

३ एक पुरुष दूसरे की सेवा भी करता है और दूसरे से सेवा करवाता हैं।[7]

४ एक पुरुष न दूसरे की सेवा करता है और न दूसरे से सेवा करवाता है।[8]

२४क---पुरुष चार प्रकार के हैं। यथा---

१ एक पुरुष काय करता है किन्तु मान नही करता।

२ एक पुरुष मान करता है किन्तु कार्य नही करता।

३ एक कार्य भी करता है और मान भी करता है।

४ एक कार्य भी नही करता है और मान भी नही

---

४ पादोपगमन भक्त प्रत्याख्यान करने वाला।

५ निस्पृही।

६ रोगी या आचार्य।

७ स्थविरकल्पी मुनि।

८ जिनकल्पी मुनि।

करता है।

ख—पुरुष चार प्रकार के है। यथा—

१ एक पुरुष (श्रमण) गण के लिये आहारादि का सग्रह करता है।

२ एक पुरुष गण के लिये सग्रह नही करता किन्तु मान करता है।

३ एक पुरुष गण के लिये भी सग्रह करता है और मान भी करता है।

४ एक पुरुष गण के लिये सग्रह भी नहीं करता और अभिमान भी नही करता है।

ग—पुरुष चार प्रकार के होते हैं। यथा—

१ एक पुरुष निर्दोष साधु समाचारी का पालन करके गण की शोभा बढाता है और मान नहीं करता।

२ एक पुरुष मान करता है किन्तु गण की शोभा नही बढाता है।

३ एक पुरुष गण की शोभा भी बढ़ाता है और मान भी करता है।

४ एक पुरुष गण की शोभा भी नही बढ़ाता और मान भी नही करता।

घ—पुरुष चार प्रकार के हैं। यथा—

१ एक पुरुष (श्रमण) गण की शुद्धि (यथा योग्य प्रायश्चित देकर) करता है किन्तु मान नही करता। शेष तीन भागे पूर्वोक्त कहें।

२५क—पुरुष चार प्रकार के हैं। यथा—

१ एक पुरुष साधु वेष छोडता हैं किन्तु चारित्र धर्म नही छोडता।[1]

२ एक पुरुष चारित्र धर्म छोडता है किन्तु साधु वेष नही छोडता।[2]

३ एक पुरुष साधु वेष भी छोडता है और चारित्र धर्म भी छोडता है।[3]

४ एक पुरुष साधु वेष भी नही छोडता और चारित्र धर्म भी नही छोडता।

ख—पुरुष चार प्रकार के हैं। यथा—

१ एक पुरुष (श्रमण) सर्वज्ञ धर्म को छोडता है किन्तु गण की मर्यादा को नही छोडता हैं।

२ एक पुरुष सर्वज्ञ कथित धर्म को नहीं छोडता है

---

१ अन्य दर्शन का अध्ययन करने के लिए यदि कहीं जाना हो तो।

२ निह्नव। ३ पतित।

किन्तु गण की मर्यादा को छोड देता है।

३ एक पुरुप सर्वज्ञ कथित कथित धम भी छोड देता है और गण की मर्यादा भी छोड देता है।

४ एक पुरुप सवज्ञ कथित धम भी नही छोडता है और गण की मर्यादा भी नही छोडता है।

२६—पुरुप चार प्रकार के हैं। यथा—

१ एक पुरुप है उसे धम प्रिय है किन्तु वह धम मे दृढ नही है।

२ एक पुरुप है वह धम मे दृढ है किन्तु उसे धम प्रिय नही है।

३ एक पुरुष है उसे धम प्रिय भी है और वह धम मे दृढ भी है।

४ एक पुरुप है उसे धम भी प्रिय नहीं है और वह धम मे दृढ़ भी नही है।

२७क—आचाम चार प्रकार के हैं। यथा—

१ एक आचाय दीक्षा देते हैं किन्तु महाव्रता की प्रतिज्ञा नही कराते हैं।[1]

---

१ दीक्षा देने वाले प्रव्राजनाचाय कहे जाते है। महाव्रत धारण कराने वाले उपस्थापनाचाय कहे जाते हैं।

२ एक आचार्य महाव्रतो की प्रतिज्ञा कराते हैं किन्तु दीक्षा नही देते हैं ।

३ एक आचार्य दीक्षा भी देते हैं और महाव्रत भी धारण कराते हैं ।

४ एक आचार्य न दीक्षा देते हैं और न महाव्रत धारण कराते हैं ।[1]

ख—आचार्य चार प्रकार के हैं । यथा—

१ एक आचाय शिष्य को आगम ज्ञान प्राप्त करने योग्य बना देते हैं ।[2] किन्तु स्वय आगमो का अध्ययन नही कराते ।[3]

२ एक आचार्य आगमो का अध्ययन कराते हैं किन्तु शिष्य को आगम ज्ञान प्राप्त करने योग्य नही बनाते।

३ एक आचाय शिष्य को योग्य भी बनाते हैं और वाचना भी देते हैं ।

---

१ धर्माचार्य, सामान्य साधु या श्रावक ।

२ जो शिष्यों को आगम ज्ञान प्राप्त करने योग्य बनाते हैं वे उद्देशनाचार्य कहे जाते हैं ।

३ जो शिष्य को आगमों का अध्ययन कराते हैं वे वाचनाचार्य कहे जाते हैं ।

४ एक आचाय न शिष्य को योग्य बनाते हैं और न वाचना देते हैं।[1]

२८क—अन्तेवासी (शिष्य चार प्रकार के हैं। यथा—

१ एक प्रव्रजित शिष्य है किन्तु उपस्थापित महाव्रतारोपित शिष्य नही है।

२ एक उपस्थापित शिष्य हैं किन्तु प्रव्रजित शिष्य नही है।

३ एक शिष्य प्रव्रजित भी है और उपस्थापित भी है।

४ एक शिष्य प्रव्रजित भी नही है और उपस्थापित भी नही है।[2]

ख—शिष्य चार प्रकार के हैं। यथा—

१ एक उद्देशना शिष्य है किन्तु वाचना शिष्य नही है।

२ एक वाचना शिष्य है किन्तु उद्देशना शिष्य नही है।

३ एक उद्देशना शिष्य भी है और वाचना शिष्य भी हैं।

---

१ ऐसे आचार्य धर्माचाय होते हैं वे केवलधर्मोपदेश करते हैं।

२ ऐसा शिष्य 'धर्मान्तेवासी' कहा जाता है जिसने गुरु से केवल धम का बोध प्राप्त किया है।

४ एक उद्देशना शिष्य भी नही है और वाचना शिष्य भी नही है ।

२९क—निर्ग्रन्थ चार प्रकार के हैं । यथा—

१ एक निर्ग्रन्थ दीक्षा मे ज्येष्ठ है किन्तु महा पाप कम और महापाप क्रिया करता है । न कभी आतापना लेता है और न पचसमितियो का पालन ही करता है । अत वह धर्म का आराधक नही है ।

२ एक निग्रन्थ दीक्षा मे ज्येष्ठ है किन्तु पापकर्म और पाप क्रिया कदापि नही करता है । आतापना लेता है और समितियो का पालन भी करता है । अत वह धम का आराधक होता है ।

३ एक निर्ग्रन्थ दीक्षा मे लघु है कि तु महापाप कर्म और महापाप क्रिया करता है, न कभी आतापना लेता है और न समितियो का पालन करता है । अत वह धम का आराधक नही होता है ।

४ एक निर्ग्रन्थ दीक्षा मे लघु है किन्तु कदापि पाप कर्म और पाप क्रिया नही करता है, आतापना लेता है और समितियो का पालन भी करता है । अत वह धर्म का आराधक होता है ।

इसी प्रकार निर्ग्रन्थियों श्रावको और श्राविकाओं के

भागे कहे।

३२१ १क—श्रमणोपासक चार प्रकार के है। यथा—

१ माता-पिता के समान।[1] २ भाई के समान।[2]

३ मित्र के समान।[3] और ४ शौक के समान।[4]

ख—श्रमणोसासक चार प्रकार के हैं। यथा—

१ आदर्श समान।[5] २ पताका समान।[6]

३ स्थाणु समान।[7] और ४ तीक्ष्ण काटे के समान।[8]

३२२ १—भगवान महावीर के जो श्रमणोपासक सौधमकल्प के अरूणाभ विमान मे उत्पन्न हुए हैं उनकी चार पल्यो

---

१ साधु का सदा हितचिंतक।

२ साधु को हित शिक्षा देते समय कठोर वचन कहने वाला और विपदग्रस्त होने पर सहायक।

३ साधु के कठोर वचन कहने पर विपत्ति मे उसकी उपेक्षा करने वाला।

४ साधु के दोष देखने वाला।

५ साधु के उपदेश या आदेश को यथावत् धारण करने वाला।

६ अनेक वक्ताओं के विविध उपदेशो से अस्थिर चित।

७ गीतार्थ के समझाने पर भी न मानने वाला।

८ हित शिक्षक साधु को दुर्वचन कहने वाला।

की स्थिति है।

३२३ १क—देवलोक मे उत्पन्न होते ही कोई देवता मनुष्य लोक मे आना चाहता है किन्तु चार कारणो से वह नही आ सकता। यथा—

१ देवलोक मे उत्पन्न होते ही एक देवता दिव्य काम-भोगो मे मूर्छित, गृद्ध, बद्ध एव आसक्त हो जाता है, अत वह मानवी काम-भोगो को न प्राप्त करना चाहता है और न उन्हें श्रेष्ठ मानता है। मानवी काम-भोगो से मुझे कोई लाभ नही है—ऐसा निश्चय कर लेता है। मुझे मानवी काम-भोग मिले—ऐसी कामना भी नही करता और मानवी काम भोगों में मैं कुछ समय लगा रहू—ऐसा विकल्प भी मन मे नही लाता।

२ देवलोक मे उत्पन्न होते ही एक देवता दिव्य काम-भोगो मे मूर्छित-यावत्-आसक्त हो जाता है, अत उसका मानवी प्रेम दैवी प्रेम मे परिणत हो जाता है।

३ देवलोक मे उत्पन्न होते ही एक देवता दिव्य काम-भोगो मे मूर्छित-यावत् आसक्त हो जाता है, अत उसके मन मे यह विकल्प आता है कि "मैं अभी जाऊँगा या एक मुहूर्त पश्चात जाऊ गा" ऐसा

सोचते सोचते उसके पूव जन्म के प्रेमी काल धम को प्राप्त हो जाते हैं ।

४ देवलोक मे उत्पन्न होते हुए ही एक देवता दिव्य काम-भोगो मे मूर्छित-यावत-आसक्त हो जाता है, अत उसे मनुष्य लोक की गन्ध भी अच्छी नही लगती । क्योकि मनुष्य लोक की गन्ध चार सो पाँच याजन तक जाती है ।

देवलोक में उत्पन्न होते ही देवता मनुष्य लोक म आना चाहता है किन्तु इन चार कारणा से नहीं आ मकता ।

ख—देवलोक से उत्पन्न होते ही देवता मनुष्य लोक म आना चाहता है और इन चार कारणो से आ भी सकता है ।

१ देवलोक मे उत्पन्न होत ही देवता दिव्य काम भोगो मे मूर्छित यावत् आसक्त नही होता क्योकि उसके मन मे यह विकल्प आता है कि—मेरे मनुष्य भव के आचाय, उपाध्याय, प्रवतक, स्थविर, गणी, गणधर और गणावच्छेदक हैं उनकी कृपा से मुझे यह दिव्य देवसष्टि, दिव्य देवद्युति प्राप्त हुई है, अत मैं जाऊँ और उन्हे वन्दना करूँ यावत् पयु-

पासना करू ।

२ देवलोक मे उत्पन्न होते ही देवता दिव्य काम-भोगो में मूर्छित-यावत्-आसक्त नही होता, क्योकि मन मे यह विकल्प आता है कि इस मनुष्यभव मे जो ज्ञानी या दुष्कर तप करने वाले तपस्वी हैं उन भगवन्तो की वन्दना करूँ यावत-पर्युपासना करूँ ।

३ देवलोक में उत्पन्न होते ही देवता दिव्य काम-भोगों मे मूर्छित-यावत्-आसक्त नही होता क्योकि उसके मन मे यह विकल्प आता है कि—मेरे मनुष्य भव के माता-पिता-यावत-पुत्रवधु हैं । उनके समीप जाऊ और उन्हें यह दिखाऊ कि मुझें ऐसी दिव्य देव सृष्टि और दिव्य देवद्युति प्राप्त हुई है ।

४ देवलोक मे उत्पन्न होते ही देवता दिव्य काम-भोगो मे मूर्छित यावत्-आसक्त नही होता क्योकि उसके मन मे यह विकल्प आता है कि—मेरे मनुष्यभव के मित्र, सखी,सुहृत, सखा या सगी (अतिपरिचित) हैं उनके और मेरे अर्थात् एक दूसरे के साथ यह वादा हो चुका है कि—जो पहले मरेगा वह कहने के लिये आवेगा ।

इन चार कारणों से देवता देवलोक मे उत्पन्न होते

रखने पर श्रमण का मन सदा ऊँचा नीचा (डावा-डोल) रहता है अत वह धर्म भ्रष्ट हो जाता है। यह प्रथम दुखशय्या है।

२ यह दूसरी दुख शय्या है। यथा—"एक व्यक्ति मुडित होकर-यावत्-प्रव्रजित होकर स्वय को जो आहार आदि प्राप्त है, उससे सन्तुष्ट नही होता है और दूसरे को जो आहार आदि प्राप्त है, उनकी इच्छा करता है" ऐसे श्रमण का मन सदा ऊँचा-नीचा (डावाडोल) रहता है अत वह धर्म भ्रष्ट हो जाता है। यह दूसरी दुखशय्या है।

३ यह तीसरी दुखशय्या है—एक व्यक्ति मुडित होकर-यावत्-प्रव्रजित होकर जो दिव्य मानवी काम भोगो का आस्वादन-यावत्-अभिलाषा करता है। उस श्रमण का मन सदा डावाडोल रहता है अत वह धर्मभ्रष्ट हो जाता है। यह तीसरी दुखशय्या है।

४ यह चौथी दुखशय्या है—एक व्यक्ति मुडित होकर-यावत् प्रव्रजित होकर ऐसा सोचता है कि मैं जब घर पर था तब मालिश, मर्दन, स्नान आदि नियमित करता था और जब से मैं मुडित-यावत्-प्रव्रजित हुआ हूं तब से मैं मालिश, मर्दन स्नान

आदि नही कर पाता हूँ—इस प्रकार श्रमण जो मालिश-यावत्-स्नान आदि की इच्छा-यावत् अभिलाषा करता है उसका मन सदा डावाडोल रहता है अत वह धर्म भ्रष्ट हो जाता है। यह चौथी दुख-शय्या है।

ख—सुखशय्या चार प्रकार की है उनमे से यह प्रथम सुख शय्या है।यथा—

१ एक व्यक्ति मुडित होकर-यावत्-प्रव्रजित होकर निर्ग्रन्थ प्रवचन मे शङ्का, काक्षा, विचिकित्सा नही करता है तो वह न दुविधा में पड़ता है और न धम विपरीत विचार रखता है। निर्ग्रन्थ प्रवचन मे श्रद्धा, प्रतीति एव रुचि रखने पर श्रमण का मन डावाडोल नही होता, अत वह धर्म भ्रष्ट भी नही होता। यह प्रथम सुख शय्या है।

२ यह दूसरी सुखशय्या है—एक व्यक्ति मुडित होकर-यावत्-प्रव्रजित होकर स्वय को प्राप्त आहार आदि से सतुष्ट रहता है और अन्य को प्राप्त आहार आदि की अभिलाषा नही रखता है—ऐसे श्रमण का मन कभी ऊँचा नीचा नही होता और न वह धर्म-भ्रष्ट होता है। यह दूसरी सुख शय्या है।

३ यह तीसरी सुख शय्या है—एक व्यक्ति मुंडित-यावत्-प्रव्रजित होकर दिव्य मानवी काम-भोगों का आस्वादन-यावत्-अभिलाषा नहीं करता है—उस श्रमण का मन कभी डांवाडोल नहीं होता है, अत वह धर्म भ्रष्ट भी नहीं होता। यह तीसरी सुखशय्या है।

४ यह चौथी सुख शय्या है—एक व्यक्ति मुंडित-यावत्-प्रव्रजित होकर ऐसा सोचता है कि—'अरिहंत भगवंत आरोग्यशाली, बलवान शरीर के धारक उदार कल्याण विपुल कर्मक्षयकारी तप कर्म को अंगीकार करते हैं, तो मुझे तो जो वेदना आदि उपस्थित हुई है उसे सम्यक् प्रकार से सहन करना चाहिए। यदि मैं आगत वेदनी कर्मों को सम्यक् प्रकार से सहन नहीं करूंगा तो एकान्त पाप कर्म का भागी होऊंगा। यदि सम्यक् प्रकार से सहन करूंगा तो एकान्त कर्म निर्जरा कर सकूंगा।' इस प्रकार वह धर्म मे स्थिर रहता है। यह चौथी सुख-शय्या है।

३२६ १क—चार प्रकार के व्यक्ति आगम वाचना के अयोग्य होते हैं। *यथा*—

१ अविनयी, २ दूध आदि पौष्टिक आहारों रा

अधिक सेवन करने वाला, ३ अनुपशात अर्थात् अति क्रोधी ४ मायावी ।

ख—चार प्रकार के आगम वाचना के योग्य होते हैं ।

यथा—१ विनयी, २ दूध आदि पौष्टिक आहारो का अधिक सेवन न करने वाला, ३ उपशान्त-क्षमाशील, ४ कपट रहित ।

३२७ १क—पुरुष वर्ग चार प्रकार का है । यथा—

१ एक अपना भरण-पोपण करता है किन्तु दूसरे का भरण-पोषण नही करता ।[1]

२ एक अपना भरण-पोषण नही करता किन्तु दूसरो का भरण-पोपण करता है ।[2]

३ एक अपना भी और दूसरे का भी भरण-पोषण करता है ।[3]

४ एक अपना भी भरण-पोपण नही करता और

१—लोकोत्तर पक्ष में—जिनकल्पी मुनि ।

२—लोकोत्तर पक्ष मे—अर्हन्त ।

३ लोकोत्तर पक्ष मे—स्थविरकल्पी ।

३ यह तीसरी सुख शय्या है—एक व्यक्ति मुडित-यावत्-प्रव्रजित होकर दिव्य मानवी काम-भोगो का आस्वादन-यावत्-अभिलाषा नही करता है—उस श्रमण का मन कभी डावाडोल नही होता है, अत वह धर्म भ्रष्ट भी नहीं होता। यह तीसरी सुखशय्या है।

४ यह चौथी सुख शय्या है—एक व्यक्ति मुडित-यावत्-प्रव्रजित होकर ऐसा सोचता है कि—'अरिहंत भगवत आरोग्यशाली, बलवान शरीर के धारक उदार कल्याण विपुल कर्मक्षयकारी तप कर्म को अगीकार करते हैं, तो मुझे तो जो वेदना आदि उपस्थित हुई है उसे सम्यक् प्रकार से सहन करना चाहिए। यदि मैं आगत वेदनी कर्मों को सम्यक् प्रकार से सहन नही करूँगा तो एकान्त पाप कर्म का भागी होऊँगा। यदि सम्यक् प्रकार से सहन करूँगा तो एकान्त कर्म निर्जरा कर सकूँगा।' इस प्रकार वह धर्म मे स्थिर रहता है। यह चौथी सुख शय्या है।

३२६ १क—चार प्रकार के व्यक्ति आगम वाचना के अयोग्य होते हैं। यथा—

१ अविनयो, २ दूध आदि पौष्टिक आहारो का

अधिक सेवन करने वाला, ३ अनुपशात अर्थात् अति क्रोधी ४ मायावी ।

ख—चार प्रकार के आगम वाचना के योग्य होते हैं । यथा—१ विनयी, २ दूध आदि पौष्टिक आहारो का अधिक सेवन न करने वाला, ३ उपशान्त-क्षमाशील, ४ कपट रहित ।

३२७ १क—पुरुष वर्ग चार प्रकार का है । यथा—

१ एक अपना भरण-पोषण करता है किन्तु दूसरे का भरण-पोषण नही करता ।[1]

२ एक अपना भरण-पोषण नही करता किन्तु दूसरो का भरण-पोषण करता है ।[2]

३ एक अपना भी और दूसरे का भी भरण-पोषण करता है ।[3]

४ एक अपना भी भरण-पोषण नही करता और

१—लोकोत्तर पक्ष में—जिनकल्पी मुनि ।

२—लोकोत्तर पक्ष में—अर्हन्त ।

३ लोकोत्तर पक्ष मे—स्थविरकल्पी ।

दूसरे का भी भरण-पोषण नही करता ।[४]

ख—पुरुष वर्ग चार प्रकार का है । यथा—

१ एक पुरुष पहले भी दरिद्री होता है और भी दरिद्री रहता है ।

२ एक पुरुष पहले दरिद्री होता है किन्तु पीछे वान हो जाता है ।

३ एक पुरुष पहले धनवान होता है किन्तु दरिद्री हो जाता है ।

४ एक पुरुष पहले भी धनवान होता है और भी धनवान रहता है ।

ग—पुरुष वर्ग चार प्रकार का है । यथा—

१ एक पुरुष दरिद्री होता है और दुराचारी होता है ।

२ एक पुरुष दरिद्री होता है किन्तु सदाचारी होता है ।

३ एक पुरुष धनवान होता है किन्तु दुराचारी होता है ।

४ एक पुरुष धनवान भी होता है और सदाच

---

४ लोकोत्तर पक्ष मे—जड़मति ।

भी होता है ।

घ—पुरुप वर्ग चार प्रकार का है । यथा—

१ एक दरिद्री है किन्तु दुष्कृत्यो मे आनन्द मानने वाला है ।

२ एक दरिद्री है किन्तु सत्कार्यों मे आनन्द मानने वाला है ।

३ एक धनी है किन्तु दुष्कृत्यो में आनन्द मानने वाला है ।

४ एक धनी भी है और सत्कार्यों मे भी आनन्द मानने वाला है ।

ङ—पुरुप वग चार प्रकार का है । यथा—

१ एक पुरुप दरिद्री है और दुगति मे जाने वाला है ।

२ एक पुरुष दरिद्री है और सुगति में जाने वाला है ।

३ एक पुरुष धनवान है और दुगति मे जाने वाला है ।

४ एक पुरुप धनवान है और सुगति में जाने वाला है ।

च—पुरुप वर्ग चार प्रकार का है । यथा—

१ एक पुरुष दरिद्री है और दुर्गति में गया है।[1]

२ एक पुरुष दरिद्री है और सुगति मे गया है।[2]

३ एक पुरुष धनवान् है और दुर्गति मे गया है।[3]

४ एक पुरुष धनवान है और सुगति मे गया है।[4]

छ—पुरुष वर्ग चार प्रकार का है। यथा—

१ एक पुरुष पहले भी अज्ञानी है और पीछे भी अज्ञानी है।

२ एक पुरुष पहले अज्ञानी है किन्तु पीछे ज्ञानवान हो जाता है।

३ एक पुरुष पहले ज्ञानी है किन्तु बाद में अज्ञानी बन जाता है।

४ एक पुरुष पहले भी ज्ञानी है और पीछे भी ज्ञानी है।

ज—पुरुष वर्ग चार प्रकार का है। यथा—

१ एक पुरुष मलिन स्वभाववाला है और उसके पास अज्ञान का बल है।

२ एक पुरुष मलिन स्वभाववाला है किन्तु उसके

---

१ द्रमक के समान। २ जिनदास के समान।

३ मम्मण शेठ के समान। ४ आनन्दश्रावक के समान।

पास ज्ञान का बल है।

३ एक पुरुष निर्मल स्वभाव वाला है किन्तु उसके पास अज्ञान का वल है।

४ एक पुरुष निमल स्वभाव वाला है और उसके पास ज्ञान का वल है।

८—पुरुष वर्ग चार प्रकार का है। यथा—

१ एक पुरुष मलिन स्वभाववाला है और अज्ञान वल मे आनद मानने वाला है।[1]

२ एक पुरुष मलिन स्वभाव वाला है किन्तु ज्ञान बल में आनद मानने वाला है।

३ एक पुरुष निमल स्वभाववाला है किन्तु अज्ञान वल मे आनद मानने वाला है।

४ एक पुरुष निर्मल स्वभाव वाला है और ज्ञान बल मे आनद मानने वाला है।

---

१ टीकाकार इस सूत्र के वैकल्पिक अर्थ भी देते हैं—(क) एक पुरुष मलिन स्वभाव वाला है किन्तु अपने अज्ञान से लज्जित होने वाला है। शेष तीन भागे पूर्वोक्त क्रम से कहें। (ख) एक पुरुष मलिन स्वभाव वाला है किन्तु अंधेरे में चलने से लज्जित होता है अर्थात् प्रकाश में चलता है। शेष तीन भांगे पूर्वोक्त क्रम से कहें।

ञ—पुरुष वर्ग चार प्रकार का है । यथा—

१ एक पुरुष ने कृषि आदि सावद्यकर्मों का तो परित्याग कर दिया है किन्तु सदोष आहार आदि का परित्याग नही किया है ।

२ एक पुरुष ने सदोष आहार आदि का तो परित्याग कर दिया है किन्तु कृषि आदि सावद्यकर्मों का परित्याग नही किया है ।

३ एक पुरुष ने कृषि आदि सावद्य कर्मों का भी परित्याग कर दिया है और सदोष आहार आदि का भी परित्याग कर दिया है ।

४ एक पुरुष ने कृषि आदि सावद्य कर्मों का भी परित्याग नही किया है और सदोष आहार आदि का भी परित्याग नही किया है ।

ट—पुरुष वर्ग चार प्रकार का है । यथा—

१ एक पुरुष ने कृषि आदि कर्मों का परित्याग कर दिया है, किन्तु गृहवास का परित्याग नही किया है । शेष तीन भांगे पूर्वोक्त क्रमसे कहे ।

ठ—पुरुष वर्ग चार प्रकार का है । पूर्ववत ।

ड—पुरुष वर्ग चार प्रकार का है । यथा—

१ एक पुरुष ने सदोष आहार आदि का तो परित्याग कर दिया है किन्तु गृहवास का परित्याग नही किया है।

शेष ३ भागे पूर्वोक्त क्रम से कहें।

ढ—पुरुष वर्ग चार प्रकार का है। यथा—

१ एक पुरुष इहभव के सुख की कामना करता है किन्तु परभव के सुख की कामना नही करता है।

२ एक पुरुष परभव के सुख की कामना करता है किन्तु इहभव के सुख की कामना नही करता है।

३ एक पुरुष इहभव और परभव दोनो के सुख की कामना करता है।

४ एक पुरुष न इहभव के और न परभव के सुख की कामना करता है।

ण—पुरुष वर्ग चार प्रकार का है। यथा—

१ एक पुरुष एक (श्रुतज्ञान) से बढता है और एक (सम्यग्दर्शन) से हीन होता है।

२ एक पुरुष एक (श्रुतज्ञान) से बढ़ता है और दो (सम्यग्दर्शन और विनय) से हीन होता है।

३ एक पुरुष दो (श्रुतज्ञान और सम्यकचारित्र) से

बढता है और सम्यग्दशन से हीन होता है।

४ एक पुरुष दो (श्रुतज्ञान और मम्यगनुष्ठान) से बढता है और दो (सम्यग्दशन और विनय) से हीन होता है।

त—अश्व चार प्रकार के हैं। यथा—

१ एक अश्व पहले शीघ्र गति होता है और पीछे भी शीघ्रगति रहता है।

२ एक अश्व पहले शीघ्रगति होता है किन्तु पीछे मन्द गति हो जाता है।

३ एक अश्व पहले मदगति होता है किन्तु पीछे शीघ्र गति हो जाता है।

४ एक अश्व पहले भी मदगति होता है और पीछे भी मद गति रहता है।

थ—इसी प्रकार पुरुष चार प्रकार के हैं। यथा—

१ एक पुरुष पहले सद्गुणी है और पीछे भी सद्-गुणी है।

२ एक पुरुष पहले सद्गुणी है किन्तु पीछे अवगुणी हो जाता है।

३. एक पुरुष पहले अवगुणी है किन्तु पीछे सद्गुणी

हो जाता है ।

४ एक पुरुष पहले भी और पीछे भी अवगुणी होता है ।

द—अश्व चार प्रकार के हैं । यथा—

१ एश अश्व शीघ्रगति है और सकेतानुसार चलता है ।

२ एक अश्व शीघ्रगति है किन्तु सकेतानुसार नही चलता है ।[1]

३ एक अश्व मदगति है किन्तु सकेतानुसार चलता है ।[2]

४ एक अश्व मद गति है और सकेतानुसार भी नही चलता है ।

ध—इसी प्रकार पुरुप चार प्रकार के हैं । यथा—

१ एक पुरुष विनय गुणसम्पन्न है और व्यवहार मे भी विनम्र है ।

शेप ३ भगि पूर्वोक्त क्रम से कहें ।

न—अश्व चार प्रकार के हैं । यथा—

१ एक अश्व जातिसम्पन्न है किन्तु कुलसम्पन्न

---

१. दुर्गम मार्ग होने से । २ अश्वारोही कुशल होने से ।

नही है ।

शेप तीन भागे पूर्वोक्त सूत्र के अनुसार कहें ।

प—इसी प्रकार पुरुप चार प्रकार के हैं ।

भागे पूर्वोक्त सूत्र २८१ के अनुसार कहें ।

फ—अश्व चार प्रकार के हैं । यथा—

१ एक अश्व जातिसम्पन्न है किन्तु बलसम्पन्न नही है ।

शेप तीन भागे पूर्वोक्त सूत्र २८१ के समान है ।

ब—इसी प्रकार पुरुप चार प्रकार के हैं ।

भागे पूर्वोक्त सूत्र २८१ के समान है ।

भ—अश्व चार प्रकार के हैं । यथा—

१ एक अश्व जातिसम्पन्न है किन्तु रूपसम्पन्न नही है ।

शेप भागे पूर्वोक्त सूत्र २८१ के समान है ।

म—इसी प्रकार पुरुप चार प्रकार के हैं ।

भागे पूर्वोक्त सूत्र २८१ के समान है ।

य—अश्व चार प्रकार के है । यथा—

१ एक अश्व जातिसम्पन्न है किन्तु युद्ध मे वह विजय प्राप्त नही कर पाता ।

शेप तीन भागे पूर्वोक्त क्रम से कहें ।

र—इसी प्रकार पुरुष चार प्रकार के है। यथा—

१ एक पुरुष जातिसम्पन्न (जिसका मातृ पक्ष उत्तम है) किन्तु युद्ध मे वह विजय प्राप्त नही कर पाता। शेप भागे पूर्वोक्त क्रम से कहे।

इसी प्रकार—

ल—१ कुल सम्पन्न और वल सम्पन्न,

व—२ कुल सम्पन्न और रूप सम्पन्न,

श—३ कुल सम्पन्न और जय सम्पन्न,

प्र—४ वल सम्पन्न और रूप सम्पन्न,

स—५ वल सम्पन्न और जय सम्पन्न,

ह—६ रूप सम्पन्न और वल सम्पन्न,

क्ष—७ रूप सम्पन्न और जय सम्पन्न,

अश्व के चार-चार भागे तथा इसी प्रकार पुरुष के चार-चार भागे पूर्वोक्त क्रम से कहें।

क—पुरुप वग चार प्रकार का है। यथा—

१ एक पुरुष सिह की तरह (वीरतापूवक) प्रव्रजित होता है और सिह की तरह ही विचरण करता है।

२ एक पुरुप सिह की तरह प्रव्रजित होता है किन्तु शृगाल (कायर) की तरह विचरण करता है।

३ एक पुरुप शृगाल की तरह प्रव्रजित होता किन्तु

सिंह की तरह विचरण करता है।

४ एक पुरुष शृगाल की तरह प्रव्रजित होता है और शृगाल की तरह ही विचरण करता है।

३२८ १क—लोक मे समान स्थान चार हैं। यथा—

१ अप्रतिष्ठान नरकावास,[१]

२ जम्बुद्वीप,

३ पालकयान विमान,[२]

४ सर्वार्थसिद्ध महाविमान।[३]

ख—लोक मे सर्वथा समान स्थान चार हैं। यथा—

१ सीमंतक नरकावास,[४]

२ समयक्षेत्र (मनुष्य लोक),

३ उडु नामक विमान,[५]

४ इषत्प्राग्भारा पृथ्वी[६] (सिद्धशिला)

३२९ १क—ऊर्ध्वलोक में दो देह धारण करने के पश्चात् मोक्ष में जाने वाले जीव चार प्रकार के हैं। यथा—

१ पृथ्वी कायिक जीव,

२ अप्कायिक जीव,

३ वनस्पति कायिक जीव,

४ स्थूल त्रसकायिक जीव,

ख ग—अधोलोक और तिर्यग्लोक सम्बन्धी सूत्र इसी प्रकार कहें।

३३० १क—पुरुष चार प्रकार के हैं। यथा—

१ एक पुरुष लज्जा से परिषह सहन करता है,

२ एक पुरुष लज्जा से मन दृढ़ रखता है,

३ एक पुरुष परिषह से चलचित्त हो जाता है,

४ एक पुरुष परिषह आने पर भी निश्चलमन रहता है।

३३१ १क—शय्या प्रतिमायें (प्रतिज्ञायें) चार हैं।[1]

---

१ क मन में निर्धारित प्रकार की शय्या (शयनार्थ काष्ठ फलक) का ही ग्रहण करना।

ख पहले देखी हुई शय्या लेना।

ग शय्या दाता के घर में हो तो लेना और स्वयं गृह स्वामी

सिंह की तरह विचरण करता है।

४ एक पुरुष शृगाल की तरह प्रव्रजित होता है और शृगाल की तरह ही विचरण करता है।

३२८ १क—लोक मे समान स्थान चार हैं। यथा—

१ अप्रतिष्ठान नरकावास,[1]

२ जम्बुद्वीप,

३ पालकयान विमान,[2]

४ सर्वार्थसिद्ध महाविमान।[3]

ख—लोक मे सवथा समान स्थान चार हैं। यथा—

१ सीमंतक नरकावास,[4]

२ समयक्षेत्र (मनुष्य लोक),

३ उडु नामक विमान,[5]

४ इषत्प्राग्भारा पृथ्वी[6] (सिद्धशिला)

---

१ सप्तम नरक में एक नरकावास।

२ पालक देव द्वारा निर्मित सौधर्मेन्द्र का वाहन विमान।

३ ये चारों एक एक लाख योजन के हैं।

४ प्रथम नरक का एक नरकावास।

५ सौधर्म देवलोक मे एक विमान।

६ ये चारों पंतालीस लाख योजन के हैं।

३२९ १क—ऊर्ध्वलोक मे दो देह धारण करने के पश्चात् मोक्ष मे जाने वाले जीव चार प्रकार के हैं। यथा—

१ पृथ्वी कायिक जीव,

२ अप्कायिक जीव,

३ वनस्पति कायिक जीव,

४ स्थूल त्रसकायिक जीव,

ख-ग—अधोलोक और तिर्यग्लोक सम्बन्धी सूत्र इसी प्रकार कहें।

३३० १क—पुरुष चार प्रकार के हैं। यथा—

१ एक पुरुष लज्जा से परिषह सहन करता है,

२ एक पुरुष लज्जा से मन दृढ रखता है,

३ एक पुरुष परिषह से चलचित्त हो जाता है,

४ एक पुरुष परिषह आने पर भी निश्चलमन रहता है।

३३१ १क—शय्या प्रतिमायें (प्रतिज्ञायें) चार हैं।[1]

---

१ क मन में निर्धारित प्रकार की शय्या (शयनार्थ काष्ठ फलक) का ही ग्रहण करना।

ख पहले देखी हुई शय्या लेना।

ग शय्या दाता के घर में हो तो लेना और स्वय गृह स्वामी

ख—वस्त्र प्रतिमायें चार हैं।[1]

ग—पात्र प्रतिमायें चार हैं।[2]

घ—स्थान प्रतिमायें चार हैं।[3]

३३२ १क—जीव से व्याप्त शरीर चार हैं। यथा—

१ वैक्रियक शरीर २ आहारक शरीर,

३ तेजस शरीर और ४ कार्मण शरीर।

ख—कार्मण शरीर से व्याप्त शरीर चार हैं। यथा—

१ औदारिक शरीर, २ वैक्रियक शरीर,

३ आहारक शरीर और ४ तेजस शरीर।

के देने पर लेना।

घ शय्या भी यथेष्ट बिछी हुई हो तो लेना।

१, क मन मे निर्धारित प्रकार का वस्त्र लेना।

ख पहले देखा हुआ वस्त्र लेना।

ग उपयुक्त वस्त्र लेना।

घ फेंकने योग्य वस्त्र लेना।

२ क मन मे निर्धारित प्रकार का पात्र लेना।

ख पहले देखा हुआ पात्र लेना।

ग उपयुक्त पात्र लेना।

शेष पृष्ठ ७८३ पर भी देखें।

३३३ १क—लोक मे व्याप्त अस्तिकाय चार हैं। यथा—

१ धर्मास्तिकाय, २ अधर्मास्तिकाय,

३ जीवास्तिकाय और ४ पुद्गलास्तिकाय।

ख—उत्पद्यमान चार बादरकाय लोक मे व्याप्त है।

यथा—१ पृथ्वीकाय २ अप्काय,

३ वायुकाय और ४ वनस्पतिकाय।

३३४ १—समान प्रदेश वाले द्रव्य चार हैं। यथा—

१ धर्मास्तिकाय, २ अधर्मास्तिकाय,

घ फेंकने योग्य पात्र लेना।

३ क निरवद्य स्थान की याचना करना और उस स्थान में—
१ हाथ पैरों का सकोचन प्रसारण करना। २ भींत आदि का सहारा लेना। ३ चक्रमण करना(टहलना)।

ख निरवद्य स्थान की याचना करना और उस स्थान में—
१ हाथों पैरों का सकोचन प्रसारण करना, २ भींत आदि का आश्रय लेना, ३ किन्तु चक्रमण नहीं करना।

ग निरवद्य स्थान की याचनाकरना और उस स्थान में—
१ केवल हाथों पैरों का सकोचन प्रसारण करना।

घ निरवद्य स्थान की याचना करना किन्तु उक्त तीनों कार्य न करना।

३ लोकाकाश, और ४ एक जीव।

३३५ १—चार प्रकार के जीवो का एक शरीर आंखो स नहीं देखा जा सकता। यथा—

१ पृथ्वीकाय, २ अप्काय,

३ तेउकाय और ४ वनस्पतिकाय।

३३६ १—चार इन्द्रियो से ज्ञान पदार्थों का सम्बध होने पर ही होता है। यथा—

१ श्रोत्रेन्द्रिय २ घ्राणेन्द्रिय,

३ जिह्वेन्द्रिय, और ४ स्पर्शेन्द्रिय।

३३७ १—जीव और पुद्गल चार कारणो से लोक के बाहर नही जा सकते। यथा—

१ गति का अभाव होने से,

२ सहायता का अभाव होने से,

३ रूक्षता से, ४ लोक की मर्यादा होने से।

३३८ १क—ज्ञात (दृष्टान्त) चार प्रकार के हैं। यथा—

१ जिस दृष्टान्त से अव्यक्त अर्थ व्यक्त किया जाय।

२ जिस दृष्टान्त मे वस्तु के एकदेश का प्रतिपादन किया जाय।

३ जिस दृष्टान्त से सदोष सिद्धान्त का प्रतिपादन किया जाय।

४ जिस दृष्टान्त से वादी द्वारा स्थापित सिद्धान्त का निराकरण किया जाय।

ख—अव्यक्त अर्थ को व्यक्त करने वाले दृष्टान्त चार प्रकार के हैं। यथा—

१ द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव विघ्न-बाधा बताने वाले दृष्टान्त।

२ द्रव्यादि से काय सिद्धि बताने वाले दृष्टान्त।

३ जिस दृष्टान्त से परमत को दूपित सिद्ध करके स्वमत को निर्दोष सिद्ध किया जाय।

४ जिस दृष्टान्त में तत्काल उत्पन्न वस्तु का विनाश सिद्ध किया जाय।

ग—वस्तु के एक देश का प्रतिपादन करने वाले दृष्टान्त चार प्रकार के हैं। यथा—

१ सद्गुणो की स्तुति से गुणवान के गुणो की प्रशसा करना।

२ असत्काय में प्रवृत्त मुनि को दृष्टान्त द्वारा उपालम्भ देना।

३ किसी जिज्ञासु का दृष्टान्त द्वारा प्रश्न पूछना।

४ एक व्यक्ति का उदाहरण देकर दूसरे को प्रति-

बोध देना।

घ—सदोष सिद्धान्त का प्रतिपादन करने वाले दृष्टांत चार प्रकार के हैं। यथा—

१ जिस दृष्टांत में पाप कार्य करने का संकल्प पैदा हो।

२ जिस दृष्टांत से 'जैसे को तैसा करना" सिखाया जाय।

३ परमत को दूषित सिद्ध करने के लिए जो दृष्टांत दिया जाय, उसी दृष्टांत से स्वमत भी दूषित सिद्ध हो जाय।

४ जिस दृष्टांत में दुर्वचनों का या अशुद्ध वाक्यों का प्रयोग किया जाय।

ङ—वादी के सिद्धान्त का निराकरण करने वाले दृष्टांत चार प्रकार के है। यथा—

१ वादी जिस दृष्टान्त से अपने पक्ष की स्थापना करे, प्रतिवादी भी उसी दृष्टान्त से अपने पक्ष की स्थापना करे।

२ वादी दृष्टान्त से जिस वस्तु को सिद्ध करे प्रतिवादी उस दृष्टान्त से भिन्न वस्तु सिद्ध करे।

३ वादी जैसा दृष्टान्त कहे प्रतिवादी को भी वैसा

ही दृष्टान्त देने के लिए कहे ।

४ प्रश्नकर्ता जिस दृष्टान्त का प्रयोग करता है उत्तरदाता भी उसी दृष्टान्त का प्रयोग करता है ।

च—हेतु चार प्रकार के हैं । यथा—

१ वादी का समय विताने वाला हेतु ।

२ वादी द्वारा स्थापित हेतु के सदृश हेतु की स्थापना करने वाला हेतु ।

३ शब्द छल से दूसरे को व्यामोह (भ्रम) पैदा करने वाला हेतु ।

४ धूर्त द्वारा अपहृत वस्तु को पुनः प्राप्त कर सके ऐसा हेतु ।

छ—हेतु चार प्रकार के हैं । यथा—

१ जो हेतु आत्मा द्वारा जाना जाय और जो हेतु इन्द्रियों द्वारा जाना जाय ।

२ जिसके देखने से व्याप्ति का बोध हो ऐसा हेतु । यथा—धुवा देखने से अग्नि और धुएं की व्याप्ति का स्मरण होना ।

३ उपमा द्वारा समानता का बोध कराने वाला हेतु ।

४ आप्त-पुरुष कथित वचन ।

ज—हेतु चार प्रकार के हैं। यथा—

१ धूम के अस्तित्व से अग्नि का अस्तित्व सिद्ध करने वाला हेतु।

२ अग्नि के अस्तित्व से विरोधी शीत का नास्तित्व सिद्ध करने वाला हेतु।

३ अग्नि के अभाव मे शीत का सद्भाव सिद्ध करने वाला हेतु।

४ वृक्ष के अभाव मे शाखा का अभाव सिद्ध करने वाला हेतु।

झ—गणित चार प्रकार का है। यथा—

१ पाटुना का गणित (पाटि गणित)।

२ व्यवहार गणित तोल माप आदि।

३ लम्बाई नापने का गणित।

४ राशि मापन का गणित।

ञ—अधोलोक म अधकार करने वाली चार वस्तुयें हैं।

यथा—१ नरकावास, २ नैरयिक,

३ पाप कर्म और ४ अशुभ पुद्गल।

ट—तिर्यक्लोक (मनुष्यलोक) मे उद्योत करने वाले चार हैं। यथा—

१ चन्द्र, २ सूर्य, ४ मणि और ४ ज्योति ।[1]

ठ—ऊर्ध्वलोक मे उद्योत करने वाले चार हैं । यथा—

१ देव, २ देवियाँ, ३ विमान और ४ आभरण ।

॥ चतुर्थ स्थानक तृतीय उद्देशक समाप्त ॥

● ● ●

॥ चतुर्थ स्थानक चतुर्थ उद्देशक प्रारम्भ ॥

३३९ १—विदेश जाने वाले पुरुष चार प्रकार के हैं । यथा—

१ एक पुरुष जीवन निर्वाह के लिए विदेश जाता है ।

२ एक पुरुष सचित सम्पत्ति की सुरक्षा के लिए विदेश जाता है ।[2]

३ एक पुरुष सुख सुविधा के लिए विदेश जाता है ।

४ एक पुरुष प्राप्त सुख-सुविधा की सुरक्षा के लिए विदेश जाता है ।[3]

३४० १क—नैरयिको का आहार चार प्रकार का है । यथा—

१ अगारो जैसा अल्पदाहक ।

२ प्रज्वलित अग्नि कणो जैसा अतिदाहक ।

---

१ अग्नि ।

२ अराजकता फैलने पर या सैनिक आक्रमण के भय से ।

३ कुशासन से या बांधवों के दुर्व्यवहार से ।

३ शीतकालीन वायु के समान शीतल।

४ बर्फ के समान अतिशीतल।

ख—तिर्यंचों का आहार चार प्रकार का है। यथा—

१ कंक पक्षी के आहार जैसा अर्थात् दुष्पच आहार भी तिर्यंचों का सुपच होता है।

२ बिल में जो भी डालें सब तुरन्त अन्दर चला जाता है इसी प्रकार तिर्यंच स्वाद लिए बिना सीधा उदरस्थ कर लेते हैं।

३ चाण्डाल के मांस समान अभक्ष्य भी तिर्यंच खा लेते हैं।

४ पुत्र मांस के समान तीव्र क्षुधा के कारण अनिच्छा-पूर्वक खाते हैं।

ग—मनुष्यों का आहार चार प्रकार का है। यथा—

१-४ अशन-पान-खादिम स्वादिम।

घ—देवताओं का आहार चार प्रकार का है। यथा—

१ सुवर्ण,   २ सुगन्धित,

३ स्वादिष्ट और   ४ सुखद स्पर्श वाला।

३४१ १—आशि-विष (मुँह में विष) चार प्रकार का है।

यथा—१ वृश्चिक जाति का आशिविष,

२ मण्डूक जाति का आशिविष,

३ सर्प जाति का आशिविप,

४ मनुष्य जाति का आशिविप।

प्रश्न—हे भगवन्! बिच्छु जाति का आशिविष कितना प्रभावशाली है?

उत्तर—आधे भरत क्षेत्र जितने बड़े शरीर को एक विच्छु का विप प्रभावित कर देता है। यह केवल विप का प्रभावमात्र बताया है। अब तक न इतने बड़े शरीर को प्रभावित किया है, न वर्तमान मे भी प्रभावित करता है और न भविष्य मे भी प्रभावित कर सकेगा।

प्रश्न—हे भगवन्! मडूक जाति का आशिविप कितना प्रभावशाली है?

उत्तर—भरत क्षेत्र जितने बड़े शरीर को एक मडूक का विप प्रभावित कर देता है। शेष पूर्ववत्।

प्रश्न ३—हे भगवन्! सर्प जाति का आशिविप कितना प्रभावशाली?

उत्तर—जम्बू द्वीप जितने बड़े शरीर को एक सर्प का विप प्रभावित कर देता है। शेप पूर्ववत्।

प्रश्न ४—हे भगवन्! मनुष्य जाति का आशिविष कितना प्रभावशाली है?

स्कर सदृश है।[1]

२ एक पुरुष भाव से श्रेयस्कर है किन्तु द्रव्य से पापी सदृश है।[2]

३ एक पुरुष भाव से पापी है किन्तु द्रव्य से श्रेयस्कर सदृश है।

४ एक पुरुष भाव से भी पापी है और द्रव्य से भी पापी सदृश है।

ट—पुरुष चार प्रकार के हैं। यथा—

१ एक पुरुष श्रेष्ठ है और अपने को श्रेष्ठ मानता है।

२ एक पुरुष श्रेष्ठ है किन्तु अपने को पापी मानता है।

३ एक पुरुष पापी है किन्तु अपने को श्रेष्ठ मानता है।

४ एक पुरुष पापी है और अपने को पापी मानता है।

ठ—पुरुष चार प्रकार के हैं। यथा—

१ एक पुरुष श्रेष्ठ है और लोगों में श्रेष्ठ सदृश माना जाता है।[3]

२ एक पुरुष श्रेष्ठ है किन्तु लोगों मे पापी सदृश

---

१ दूसरे को सत्परामर्श देने के कारण श्रेयस्कर सदृश है।

२ दूसरे को असत्परामर्श देने के कारण पापी सदृश है।

३ कुछ सत्कर्म करता है अत श्रेष्ठ सदृश माना जाता है।

श्रेष्ठ नही है।[1]

२ एक पुरुष का व्यवहार श्रेष्ठ है, किन्तु दुष्ट हृदय है।[2]

३ एक पुरुष दुष्ट हृदय भी है और उसका व्यवहार भी श्रेष्ठ नही है।

४ एक पुरुष दुष्ट हृदय भी नही है और व्यवहार भी उसका श्रेष्ठ है।

८—पुरुष चार प्रकार के है। यथा—

१ एक पुरुष सद्‌विचार वाला है और सत्काय करने वाला भी है।

२ एक पुरुष सद्‌विचार वाला है किन्तु सत्काय करने वाला नही है।

३ एक पुरुष सत्काय करने वाला तो है किन्तु सद्‌विचार वाला नही है।

४ एक पुरुष सद्‌विचार वाला भी नही है और सत्काय करने वाला भी नही है।

९—पुरुष चार प्रकार के है। यथा—

१ एक पुरुष भाव मे श्रेयस्कर है और द्रव्य मे श्रेय-

---

[1] पराधीन सम्यक्त्वी पुरुष।

[2] उदाई नृप को मारने वाला कपटी श्रमण वेषी।

स्कर सदृश है।[1]

२ एक पुरुप भाव से श्रेयस्कर है किन्तु द्रव्य से पापी सदृश है।[2]

३ एक पुरुष भाव से पापी है किन्तु द्रव्य से श्रेयस्कर सदृश्य है।

४ एक पुरुप भाव से भी पापी है और द्रव्य से भी पापी सदृश है।

ट—पुरुष चार प्रकार के हैं। यथा—

१ एक पुरुप श्रेष्ठ है और अपने को श्रेष्ठ मानता है।

२ एक पुरुप श्रेष्ठ है किन्तु अपने को पापी मानता है।

३ एक पुरुष पापी है किन्तु अपने को श्रेष्ठ मानता है।

४ एक पुरुष पापी है और अपने को पापी मानता है।

ठ—पुरुप चार प्रकार के हैं। यथा—

१ एक पुरुप श्रेष्ठ है और लोगों मे श्रेष्ठ सदृश माना जाता है।[3]

२ एक पुरुप श्रेष्ठ है किन्तु लोगो मे पापी सदृश

---

१ दूसरे को सत्परामर्श देने के कारण श्रेयस्कर सदृश है।

२ दूसरे को असत्परामर्श देने के कारण पापी सदृश है।

३ कुछ सत्कर्म करता है अत श्रेष्ठ सदृश माना जाता है।

माना जाता है।[1]

३ एक पुरुष पापी है किन्तु लोगो मे श्रेष्ठ सदृश माना जाता है।[2]

४ एक पुरुष पापी है और लोगो मे पापी सदृश माना जाता है।[3]

६—पुरुष चार प्रकार के हैं। यथा—

१ एक पुरुष जिन प्रवचनो का प्ररूपक है किन्तु प्रभावक नहीं है।

२ एक पुरुष शासन का प्रभावक है किन्तु जिन प्रवचनों का प्ररूपक नहीं है।[1]

३ एक पुरुष शासन का प्रभावक भी है और जिन प्रवचनों का प्ररूपक भी है।

४ एक पुरुष शासन का प्रभावक भी नहीं है और जिन प्रवचनो का प्ररूपक भी नही है।

६—पुरुष चार प्रकार के हैं। यथा—

---

१ कुछ असत्कार्य करता है अत पापी सदृश माना जाता है।

२ लोगो को दिखाने के लिए कुछ सुकृत करता है।

३ क्योंकि सदाचारी नहीं है।

१ एक पुरुष सूत्रार्थ का प्ररूपक है किन्तु शुद्ध आहारादि की एषणा मे तत्पर नही है।

२ एक पुरुष शुद्ध आहारादि की एषणा मे तत्पर नही है किन्तु सूत्रार्थ का प्ररूपक है।

३ एक पुरुष सूत्रार्थ का प्ररूपक भी है और शुद्ध आहारादि की एषणा मे भी तत्पर है।

४ एक पुरुष सूत्रार्थ का प्ररूपक भी नही है और शुद्ध आहारादि की एषणा में भी तत्पर नहीं है।

ण—वृक्ष की विकुर्वणा चार प्रकार की है। यथा—

१ नई कोपलें आना, २ पत्ते आना,
३ पुष्प आना, ४ फल आना।

३४५ १क—वाद करने वालो के समोसरण[1] चार है। यथा—

१ क्रियावादी[2], २ अक्रियावादी,[3]
३ अज्ञानवादी[4] और ४ विनयवादी[5]।

---

१ समवसरण अनेक मतों का एकत्र मिलना।

२ क्रियावादियों के एक सौ अस्सी मत हैं।

३ अक्रियावादियों के अस्सी मत हैं।

४ अज्ञानवादियों के सडसठ मत हैं।

५ विनयवादियो के बत्तीस मत हैं। सब मिलकर ३६३ मत हैं।

ख—विकलेन्द्रिया को छोडकर शेष सभी दण्डको मे वादिया के चार समवरण हैं।

३४६ १क—मेघ चार प्रकार के हैं। यथा—

१ एक मेघ गाजता है किन्तु बरसता नही है।

२ एक मेघ बरसता है किन्तु गाजता नही है।

३ एक मेघ गाजता भी है और बरसता भी है।

४ एक मेघ गाजता भी नही है और बरसता भी नही है।

ख—इसी प्रकार पुरुष चार प्रकार के हैं। यथा—

१ एक पुरुष बोलता बहुत है किन्तु देता कुछ भी नही है।

२ एक पुरुष देता है किन्तु बोलता कुछ भी नही है।

३ एक पुरुष बोलता भी है और देता भी है।

४ एक पुरुष बोलता भी नही है और देता भी नही है।

२क—मेघ चार प्रकार के हैं। यथा—

१ एक मेघ गाजता है किन्तु उसमे बिजलियां नहीं चमकती है।

२ एक मेघ मे बिजलिया चमकती है किन्तु गाजता नही है।

३ एक मेघ गाजता है और उसमें बिजलियाँ भी चमकती हैं।

४ एक मेघ गाजता भी नही है और उसमे बिजलिया भी चमकती नही है।

ख—इसी प्रकार पुरुष चार प्रकार के हैं। यथा—

१ एक पुरुष प्रतिज्ञा करता है किन्तु अपनी बडाई नही हांकता।

२, एक पुरुष अपनी बडाई हांकता है किन्तु प्रतिज्ञा नहीं करता है।

३ एक पुरुष प्रतिज्ञा भी करता है और अपनी बडाई भी हांकता है।

४ एक पुरुष प्रतिज्ञा भी नही करता है और अपनी बडाई भी नही हाकता है।

३क—मेघ चार प्रकार के हैं। यथा—

१ एक मेघ बर्षता है किन्तु उसमे बिजलिया नही चमकती है।

२ एक मेघ में बिजलियाँ चमकती हैं किन्तु वर्षता नही है।

३ एक मेघ वर्षता भी है और उसमे बिजलिया भी

चमकती हैं।

४ एक मेघ बरसता भी नही है और उसमे बिजलियां भी चमकती नही हैं।

ख—इसी प्रकार पुरुष चार प्रकार के हैं। यथा—

१ एक पुरुष दानादि सत्कार्य करता है किन्तु अपनी बडाई नही करता है।

२ एक पुरुष अपनी बडाई करता है किन्तु दानादि सत्कार्य नही करता है।

३ एक पुरुष दानादि सत्कार्य भी करता है और अपनी बडाई भी करता है।

४ एक पुरुष दानादि सत्कार्य भी नहीं करता और अपनी बडाई भी नही करता है।

४क—मेघ चार प्रकार के हैं। यथा—

१ एक मेघ समय पर बरसता है किन्तु असमय नही बरसता।

२ एक मेघ असमय बरसता है किन्तु समय पर नही बरसता।

३ एक मेघ समय पर भी बरसता है और असमय भी बरसता है।

४ एक मेघ समय पर भी नही बरसता और असमय भी नहीं बरसता ।

ख—इसी प्रकार पुरुष चार प्रकार के हैं । यथा—

१ एक पुरुष समय पर दानादि सत्काय करता है, किंतु असमय नहीं करता ।

२ एक पुरुष असमय दानादि सत्काय करता है किन्तु समय पर नही करता ।

३ एक पुरुष समय पर भी दानादि सत्कार्य करता है और असमय भी ।

४ एक पुरुष समय पर भी दानादि सत्कार्य नहीं करता और असमय भी नही करता ।

५क—मेघ चार प्रकार के हैं । यथा—

१ एक मेघ क्षेत्र में बरसता है किन्तु अक्षेत्र में नहीं बरसता ।

२ एक मेघ अक्षेत्र में बरसता है किन्तु क्षेत्र में नहीं बरसता ।

३ एक मेघ क्षेत्र मे भी बरसता है और अक्षेत्र में भी बरसता है ।

४ एक मेघ क्षेत्र मे भी नहीं बरसता और अक्षेत्र में

भी नहीं बरसता ।

ख—इसी प्रकार पुरुष चार प्रकार के हैं। यथा—

१ एक पुरुष पात्र को दान देता है किन्तु अपात्र को नही ।

२ एक पुरुष अपात्र को दान देता है किन्तु पात्र को नही ।

३ एक पुरुष पात्र को भी दान देता है और अपात्र को भी ।

४ एक पुरुष पात्र को भी दान नहीं देता और अपात्र को भी नही देता ।

६क—मेघ चार प्रकार के हैं। यथा—

१ एक मेघ धान्य के अकुर उत्पन्न करता है किन्तु धान्य को पूण नही पकाता ।

२ एक मेघ धान्य को पूण पकाता है किन्तु धान्य के अकुर उत्पन्न नही करता ।

३ एक मेघ धान्य के अकुर भी उत्पन्न करता है और धान्य को पूण भी पकाता है ।

४ एक मेघ धान्य के अकुर भी उत्पन्न नही करता है और धान्य को पूण भी नहीं पकाता है।

ख—इसी प्रकार माता-पिता भी चार प्रकार के हैं।

यथा—१ एक माता-पिता पुत्र को जन्म देते हैं किन्तु उसका पालन नही करते।

२ एक माता-पिता पुत्र का पालन करते हैं किन्तु पुत्र को जन्म नही देते हैं।

३ एक माता-पिता पुत्र को जन्म भी देते हैं और उसका पालन भी करते हैं।

४ एक माता-पिता पुत्र को जन्म भी नही देते हैं और उसका पालन भी नही करते हैं।

७क—मेघ चार प्रकार के हैं। यथा—

१ एक मेघ एक देश मे बरसता है किन्तु सर्वत्र नही बरसता है।

२ एक मेघ सर्वत्र बरसता है किन्तु एक देश में नही बरसता।

३ एक मेघ एक देश मे भी बरसता है और सर्वत्र भी बरसता है।

४ एक मेघ न एक देश मे बरसता है और न सर्वत्र बरसता है।

ख—इसी प्रकार राजा भी चार प्रकार के हैं। यथा—

१ एक राजा एक देश का अधिपति है किन्तु सर्व

और पर-सिद्धान्त का ज्ञाता होता है और श्रमणाचार का पालक भी होता है।

४ राजा के करडिय समान आचार्य जिनागमों के ममज्ञ एव आचार्य के समस्त गुण युक्त होते हैं।

३४९ १क—वृक्ष चार प्रकार के हैं। यथा—

१ एक वृक्ष शाल (महान) है और शाल के (छायादि) गुण युक्त है।

२ एक वृक्ष शाल (महान) है किन्तु गुणो मे एरण्ड समान है अर्थात् छायादि रहित।

३ एक वृक्ष एरण्ड समान (अत्यल्प विस्तार वाला) है किन्तु गुणो से शाल (महावृक्ष) के समान है।

४ एक वृक्ष एरण्ड है और गुणो मे भी एरण्ड जैसा ही है।

ख—इसी प्रकार आचार्य चार प्रकार के हैं। यथा—

१ एक आचार्य शाल समान महान (उत्तम जाति कुल सद्गुरु वाले) हैं और ज्ञानक्रियादि महान गुणयुक्त है।

२ एक आचार्य महान् है किन्तु ज्ञान-क्रियादि गुणहीन है।

३ एक आचार्य एरण्ड समान (जाति-कुल-गुरु आदि से सामान्य) है किन्तु ज्ञानक्रियादि महान् गुणयुक्त है।

४ एक आचार्य एरण्ड समान है और ज्ञान-क्रियादि गुणहीन है।

२क—वृक्ष चार प्रकार के हैं। यथा—

१ एक वृक्ष शाल (महान्) है और शालवृक्ष समान महान् वृक्षो से परिवृत है।

२ एक वृक्ष शाल समान महान् है किन्तु एरण्ड समान तुच्छ वृक्षो से परिवृत है।

३ एक वृक्ष एरण्ड समान तुच्छ है किन्तु शाल समान महान् वृक्षो से परिवृत है।

४ एक वृक्ष एरण्ड समान तुच्छ है और एरण्ड समान तुच्छ वृक्षो से परिवृत है।

ख—इसी प्रकार आचाय भी चार प्रकार हैं। यथा—

१ एक आचाय शाल वृक्ष समान (उत्तम जात्यादि) महान् गुणयुक्त है और शाल परिवार समान श्रेष्ठ शिष्य परिवार युक्त है।

२ एक आचाय शाल वृक्ष समान महान् उत्तम गुण युक्त है किन्तु एरण्ड परिवार समान कनिष्ठ शिष्य परिवार युक्त है।

३ एक पुरुष काष्ठ के गोले के समान कुछ अधिक कठोर हृदय होता है।

४ एक पुरुष मिट्टी के गोले के समान कुछ और अधिक कठोर हृदय होता है।

५क—गोले चार प्रकार के होते हैं। यथा—

१ लोहे का गोला, २ जस्ते का गोला,

३ तांबे का गोला और ४ शीशे का गोला।

ख—इसी प्रकार पुरुष चार प्रकार के हैं। यथा—

१ लोहे के गोले के समान एक पुरुष के कर्म भारी होते हैं।

२ जस्ते के गोले के समान एक पुरुष के कर्म कुछ अधिक भारी होते हैं।

३ तांबे के गोले के समान एक पुरुष के कर्म और अधिक भारी होते हैं।

४ सीसे के गोले के समान एक पुरुष के कर्म अत्यधिक भारी होते हैं।

६क—गोले चार प्रकार के होते हैं। यथा—

१ चांदी का गोला, २ सोने का गोला,

३ रत्नों का गोला और ४ हीरे का गोला।

ख—इसी प्रकार पुरुष चार प्रकार के हैं। यथा—

१ चांदी के गोले के समान एक पुरुष ज्ञानादि श्रेष्ठ गुण युक्त होता है।

२ सोने के गोले के समान एक पुरुष कुछ अधिक श्रेष्ठ ज्ञानादि गुण युक्त होता है।

३ रत्नों के गोले के समान एक पुरुष और अधिक श्रेष्ठ ज्ञानादि गुण युक्त होता है।

४ हीरे के गोले के समान एक पुरुष अत्यधिक श्रेष्ठ युक्त होता है।

७क—पत्ते चार प्रकार के होते हैं। यथा—

१ तलवार की धार के समान तीक्ष्ण धार वाले पत्ते।

२ करवत की धार के समान तीक्ष्ण दांत वाले पत्ते।

३ उस्तरे की धार के समान तीक्ष्ण धार वाले पत्ते।

४ कदम्बचीरिका (एक प्रकार का शस्त्र) की धार के समान तीक्ष्ण धार वाले पत्ते।

ख—इसी प्रकार पुरुष चार प्रकार के हैं। यथा—

१ एक पुरुष तलवार की धार के समान तीक्ष्ण (तीव्र) वैराग्यमय विचार धारा से मोहपाश का

३ एक पुरुष काष्ठ के गोले के समान कुछ अधिक कठोर हृदय होता है।

४ एक पुरुष मिट्टी के गोले के समान कुछ और अधिक कठोर हृदय होता है।

५क—गोले चार प्रकार के होते हैं। यथा—

१ लोहे का गोला, २ जस्ते का गोला,

३ ताबे का गोला और ४ शीशे का गोला।

ख—इसी प्रकार पुरुष चार प्रकार के हैं। यथा—

१ लोहे के गोले के समान एक पुरुष के कर्म भारी होते हैं।

२ जस्ते के गोले के समान एक पुरुष के कर्म कुछ अधिक भारी होते हैं।

३ ताबे के गोले के समान एक पुरुष के कर्म और अधिक भारी होते हैं।

४ सीसे के गोले के समान एक पुरुष के कर्म अत्यधिक भारी होते हैं।

६क—गोले चार प्रकार के होते हैं। यथा—

१ चादी का गोला, २ सोने का गोला,

३ रत्नों का गोला और ४ हीरे का गोला।

ख—उसी प्रकार पुरुष चार प्रकार के हैं। यथा—

१ चांदी के गोले के समान एक पुरुष ज्ञानादि श्रेष्ठ गुण युक्त होता है।

२ सोने के गोले के समान एक पुरुष कुछ अधिक श्रेष्ठ ज्ञानादि गुण युक्त होता है।

३ रत्नों के गोले के समान एक पुरुष और अधिक श्रेष्ठ ज्ञानादि गुण युक्त होता है।

४ हीरों के गोले के समान एक पुरुष अत्यधिक श्रेष्ठ युक्त होता है।

७क—पत्ते चार प्रकार के होते हैं। यथा—

१ तलवार की धार के समान तीक्ष्ण धार वाले पत्ते।

२ करवत की धार के समान तीक्ष्ण दांत वाले पत्ते।

३ उस्तरे की धार के समान तीक्ष्ण धार वाले पत्ते।

४ कदत्रचीरिका (एक प्रकार का शस्त्र) की धार के समान तीक्ष्ण धार वाले पत्ते।

ख—इसी प्रकार पुरुष चार प्रकार के हैं। यथा—

१ एक पुरुष तलवार की धार के समान तीक्ष्ण (तीव्र) वैराग्यमय विचार धारा से मोहपाश का

शीघ्र छेदन करता है।

२ एक पुरुष करवत की धार के समान वैराग्यमय विचारो से मोहपाश को शनै शनै काटता है।

३ एक पुरुष उस्तरे की धार के समान वैराग्यमय विचारधारा से मोहपाश का विलम्ब से छेदन करता है।

४ एक पुरुष कदंबचीरिका की धार के समान वैराग्यमय विचारो से मोहपाश का अतिविलम्ब से विच्छेद करता है।

८क—कट[1] (चटाई) चार प्रकार के हैं। यथा—

१ घास की चटाई

२ बांस की सलियो की चटाई

३ चर्म की चटाई और

४ कंबल की चटाई

ख—इसी प्रकार पुरुष चार प्रकार के हैं। यथा—

१ घास की चटाई के समान एक पुरुष अल्प राग वाला होता है।

---

१ कट बिछोने का एक आसन। चटाई की बुनाई ढीली और गाढी होती है उसी प्रकार रागभाव भी अल्पाधिक होता है।

२ बांस की चटाई के समान एक पुरुष विशेष राग भाव वाला होता है।

३ चमड़े की चटाई के समान एक पुरुष विशेषतर राग भाव वाला होता है।

४ कंबल की चटाई के समान एक पुरुष विशेषतम राग भाव वाला होता है।

३५०—१ चतुष्पद चार प्रकार के हैं। यथा—

१ एक खुर वाले[1] २ दो खुर वाले[2]

३ कठोर चर्म मय गोल पैर वाले[3]

४ तीक्ष्ण नखयुक्त पैर वाले।[4]

२—पक्षी चार प्रकार के होते हैं। यथा—

१ चमड़े की पांखों वाले

२ रुएं वाली पांखों वाले।

३ सिमटी हुई पांखों वाले[5]

४ फैली हुई पांखों वाले।

---

१ गधे, घोड़े आदि। २ गाय, भैंस आदि।

३ ऊँट, हाथी आदि। ४ कुत्ता, बिल्ली आदि।

५ समुद्गक पक्षी और वितत पक्षी अढ़ाई द्वीप के बाहर ही होते हैं।

३—क्षुद्र प्राणी चार प्रकार के होते हैं। यथा—

१ दो इन्द्रियो वाले २ तीन इन्द्रियो वाले

३ चार इन्द्रियो वाले और

४ सम्मूर्छिम[1] पचेन्द्रिय तिर्यंच।

३५१ १क—पक्षी चार प्रकार के हैं। यथा—

१ एक पक्षी घोसले से बाहर निकलता है किन्तु बाहर फिरने व उडने मे समर्थ नही है।

२ एक पक्षी फिरने मे समर्थ है किन्तु घोंसले से बाहर नही निकलता है।

३ एक पक्षी घोसले से बाहर भी निकलता है और फिरने मे भी समर्थ है।

४ एक पक्षी न घोसले से बाहर निकलता है और न फिरने मे समर्थ होता है।

ख—इसी प्रकार भिक्षुक (श्रमण) भी चार प्रकार के है। यथा—

१ एक श्रमण भिक्षार्थ उपाश्रय से बाहर जाता है किन्तु फिरता नही है।

२ एक श्रमण फिरने मे समर्थ है किन्तु भिक्षा के

---

१ बिना गर्भ के पैदा होने वाले।

लिए नहीं जाता है।

३ एक श्रमण भिक्षार्थ जाता है और फिरता भी है।

४ एक श्रमण भिक्षार्थ जाता भी नहीं है और फिरता भी नहीं है।

३५२ १क—पुरुष चार प्रकार के हैं। यथा—

१ एक पुरुष पहले (पूर्वावस्था मे) भी कृश है और पीछे (वृद्धावस्था मे) भी कृश रहता है।

२ एक पुरुष पहले कृश है किन्तु पीछे स्थूल हो जाता है।

३ एक पुरुष पहले स्थूल है किन्तु पीछे कृश हो जाता है।

४ एक पुरुष पहले भी स्थूल होता है और पीछे भी स्थूल ही रहता है

ख—पुरुष चार प्रकार के हैं। यथा

१ एक पुरुष का शरीर कृश है और उसके (क्रोधादि) कषाय भी कृश (अल्प) है।

२ एक पुरुष का शरीर कृश है किन्तु उसके कषाय अकृश (अधिक) है।

३ एक पुरुष के कषाय अल्प है किन्तु उसका शरीर स्थूल है।

४ एक पुरुष के कषाय अल्प है और शरीर भी कृश है।

२२—पुरुष चार प्रकार के हैं। यथा—

१ एक पुरुष बुध (सत्कर्म करने वाला) है और बुध विवेकी है।

२ एक पुरुष बुध है किन्तु अबुध (विवेक रहित) है।

३ एक पुरुष अबुध है किन्तु बुध (सत्कर्म करने वाला) है।

४ एक पुरुष अबुध है (विवेक रहित है) और अबुध है (सत्कर्म करने वाला भी नहीं है)

ख—पुरुष चार प्रकार के है। यथा—

१ एक पुरुष बुध (शास्त्रज्ञ) है और बुध हृदय है (कार्यकुशल है)

२ एक पुरुष बुध (शास्त्रज्ञ) है किन्तु अबुध हृदय है (कार्यकुशल नहीं है)

३ एक पुरुष अबुध हृदय है (कार्यकुशल नहीं है) किन्तु बुध है (शास्त्रज्ञ है)

४ एक पुरुष अबुध है (शास्त्रज्ञ नही है) और अबुध है (कायकुशल भी नही है)

३—पुरुष चार प्रकार के हैं। यथा—

१ एक पुरुष अपने पर अनुकम्पा करने वाला है किन्तु दूसरे पर अनुकम्पा करने वाला नही है।[1]

२ एक पुरुष अपने पर अनुकम्पा नही करता है किन्तु दूसरे पर अनुकम्पा करता है।[2]

३ एक पुरुष अपने पर भी अनुकम्पा करता है और दूसरे पर भी अनुकम्पा करता है।[3]

४ एक पुरुष अपने पर भी अनुकम्पा नही करता है और दूसरे पर भी अनुकम्पा नहीं करता है।[4]

३५३ १क—संभोग (मैथुन) चार प्रकार के हैं। यथा—

१ देवताओ का[5] २ असुरों का
३ राक्षसों का और ४ मनुष्यों का।

---

१ प्रत्येक बुध प्राणीमात्र पर अनुकम्पा करने वाले है किन्तु दूसरे मुनियों की सेवा नहीं करते हैं और उपदेश भी नहीं देते हैं इस अपेक्षा से यह कथन है। २ तीर्थंकर
३ स्थविरकल्पी ४ कालशौकरिक आदि।
५ ज्योतिषी देवों का और वैमानिक देवों का।

ख—संभोग चार प्रकार का है। यथा—

१ एक देवता देवी के साथ संभोग करता है।

२ एक देवता असुरी के साथ संभोग करता है।

३ एक असुर देवी के साथ संभोग करता है।

४ एक असुर असुरी के साथ संभोग करता है।

ग—संभोग चार प्रकार का है। यथा

१ एक देव देवी के साथ संभोग करता है।

२ एक देव राक्षसी के साथ संभोग करता है।

३ एक राक्षस देवी के साथ संभोग करता है।

४ एक राक्षस राक्षसी के साथ संभोग करता है।

घ—संभोग चार प्रकार का है। यथा—

१ एक देव देवी के साथ संभोग करता है।

२ एक देव मानुषी के साथ संभोग करता है।

३ एक मनुष्य देवी के साथ संभोग करता है।

३ एक मनुष्य मानुषी के साथ संभोग करता है।

ङ—संभोग चार प्रकार का है। यथा—

१ एक असुर असुरी के साथ संभोग करता है।

२ एक असुर राक्षसी के साथ संभोग करता है।

३ एक राक्षस असुरी के साथ संभोग करता है।

४ एक राक्षस राक्षसी के साथ सभोग करता है।

घ—सभोग चार प्रकार के हैं। यथा—

१ एक असुर असुरी के साथ सभोग करता है।

२ एक असुर मानुषी के साथ सभोग करता है।

३ एक मनुष्य असुरी के साथ सभोग करता है।

४ एक मनुष्य मनुष्यणी के साथ सभोग करता है।

छ—सभोग चार प्रकार के हैं। यथा—

१ एक राक्षस राक्षसी के साथ सभोग करता है।

२ एक राक्षस मनुष्यणी के साथ सभोग करता है।

३ एक मनुष्य राक्षसी के साथ सभोग करता है।

४ एक मनुष्य मनुष्यणी के मथभोसग करता है।

३५४ १क—अपध्वण (चारित्र के फल का नाश) चार प्रकार का है। यथा

१ आसुरी भावनाजन्य-आसुर भाव,

२ अभियाग भावनाजन्य-अभियोग भाव,

३ समोह भावनाजन्य-समोह भाव,

४ किल्विष भावना जन्य—किल्विप भाव

ख—असुरायु का बन्ध चार कारणो से होता है। यथा—

१ क्रोधी स्वभाव से २ अतिकलह करने से।

३ आहार में आसक्ति रखते हुए तप करने से
४ निमित्त ज्ञान द्वारा आजीविकोपार्जन करने से

ग—अभियोगायु का बंध चार कारणों से होता है। यथा
१ अपने तप जप की महिमा अपने-मुंह करने से।
२ दूसरों की निंदा करने से।
३ ज्वरादि के उपशमन हेतु अभिमन्त्रित राख देने से।
४ अनिष्ट की शान्ति के लिये मन्त्रोपचार करते रहने से।

घ—सम्मोहायु[1] बांधने के चार कारण हैं। यथा—
१ उन्मार्ग का उपदेश देने से,
२ सन्मार्ग में अन्तराय देने से।
३ काम-भोगों की तीव्र अभिलाषा से।
४ अतिलोभ करके नियाणा करने से।

ङ—देव किल्विष आयु बांधने के चार कारण हैं। यथा-
१ अरिहंतों की निंदा करने से।
२ अरिहंत कथित धर्म की निंदा करने से,
३ आचार्य-उपाध्याय की निंदा करने से।

---

१ मूढ़ात्मा देव की आयु।

४ चतुर्विध सघ की निन्दा करने से ।

३५५ १क—प्रव्रज्या चार प्रकार की है। यथा—

१ इह लोक के सुख के लिये दीक्षा लेना।

२ परलोक के सुख के लिये दीक्षा लेना।

३ इहलोक और परलोक क लिये दीक्षा लना।

४ किसी प्रकार की कामना न रखते हुए दीक्षा लेना।

ख—प्रव्रज्या चार प्रकार की है। यथा—

१ शिष्यादि की कामना से दीक्षा लना।

२ पूव दीक्षित स्वजनो के मोह से दीक्षा लेना।

३ उक्त दोनो कारणो से दीक्षा लेना।

४ निष्काम भाव से दीक्षा लना।

ग—प्रव्रज्या चार प्रकार की है। यथा—

१ सदगुरुजो की सेवा के लिए दीक्षा लेना।

२ किसी के कहने से दीक्षा लेना।

३ "तू दीक्षा लेगा तो मैं भी लूंगा" इस प्रकार वचनबद्ध होकर दीक्षा लेना।

४ किसी वियोग से व्यथित होकर दीक्षा लेना।

घ—प्रव्रज्या चार प्रकार की है। यथा—

१ किसी को उत्पीडित करके दीक्षा दी जाय,

२ किसी को अन्यत्र ले जाकर दीक्षा दी जाय।

३ किसी को ऋण मुक्त करके दीक्षा दी जाय,

४ किसी को भोजन आदि का लालच दिखाकर दीक्षा दी जाय।

ङ—प्रव्रज्या चार प्रकार की है। यथा—

१ नटखादिता—नट की तरह वैराग्य रहित धर्म कथा करके आहारादि प्राप्त करना।

२ सुभटखादिता—सुभट की तरह बल दिखाकर आहारादि प्राप्त करना।

३ सिंहखादिता—सिंह की तरह दूसरे की अवज्ञा करके आहारादि प्राप्त करना।

४ शृगालखादिता—शृगाल की तरह दीनता प्रदर्शित कर आहारादि प्राप्त करना।

२क—कृषि चार प्रकार की है। यथा—

१ एक कृषि में धान्य एक बार बोया जाता है।

२ एक कृषि में धान्य आदि दो तीन बार बोया जाता है।[1]

---

१ एक बार पौध लगाकर रोपना, या एक बार बोये हुए को उखाड़ कर रोपना, इसे "बोवना" कहते हैं।

३ एक कृषि मे एक वार निनाण (घास आदि उखाड फेकना) की जाती है।

४ एक कृषि मे वार-वार निनाण की जाती है।

ख—इसी प्रकार प्रव्रज्या चार प्रकार की है। यथा—

१ एक प्रव्रज्या मे एक वार सामायिक चारित्र धारण किया जाता है।

२ एक प्रव्रज्या मे वार वार सामायिक चारित्र धारण किया जाता है।

३ एक प्रव्रज्या मे एक वार अतिचारो की आलोयणा की जाती है।

४ एक प्रव्रज्या मे वार-वार अतिचारो की आलोयणा की जाती है।

ग—प्रव्रज्या चार प्रकार की है। यथा—

१ खलिहान मे शुद्ध की हुई धान्यराशि जैसी अतिचार रहित प्रव्रज्या।

२ खलिहान मे उफणे हुए धान्य जैसी अल्प अतिचार वाली प्रव्रज्या।

३ गायटा किये हुए धान्य जैसी अनेक अतिचार वाली प्रव्रज्या।

१ एक पुरुष बाह्य चेष्टाओं में तुच्छ है और तुच्छ हृदय है।

२ एक पुरुष बाह्य चेष्टाओं से तो तुच्छ है किंतु गम्भीर हृदय है।

३ एक पुरुष बाह्य चेष्टाओं में तो गम्भीर प्रतीत होता है किंतु तुच्छ हृदय है।

४ एक पुरुष बाह्य चेष्टाओं से भी गम्भीर प्रतीत होता है और गम्भीर हृदय भी है।

२क—पानी चार प्रकार का है। यथा—

१ एक पानी छिछला है और छिछला जैसा ही दीखता है।

२ एक पानी छिछला है किंतु गहरा दीखता है।

३ एक पानी गहरा है किंतु छिछला जैसा प्रतीत होता है।

४ एक पानी गहरा है और गहरे जैसा ही प्रतीत होता है।

ख—इसी प्रकार पुरुष चार प्रकार के हैं। यथा—

१ एक पुरुष तुच्छ प्रकृति है और वैसा ही दिखता भी है।

२ एक पुरुष तुच्छ प्रकृति है किन्तु बाह्य व्यवहार से गम्भीर जैसा प्रतीत होता है।

३ एक पुरुष गम्भीर प्रकृति है किन्तु बाह्य व्यवहार मे तुच्छ प्रतीत होता है।

४ एक पुरुष गम्भीर प्रकृति है और बाह्य व्यवहार मे भी गम्भीर ही प्रतीत होता है।

३क—उदधि (समुद्र) चार प्रकार के हैं। यथा—

१ समुद्र का एक देश छिछरा (थोड़ा गहरा) है और थोड़े गहरे (छिछरा) जैसा दिखाई देता है।[1]

२ समुद्र का एक भाग छिछरा है किन्तु बहुत गहरे जैसा प्रतीत होता है।[2]

३ समुद्र का एक भाग बहुत गहरा है किन्तु छिछरे जैसा प्रतीत होता है।[3]

४ समुद्र का एक भाग बहुत गहरा है और गहरे जैसा ही प्रतीत होता है।

---

१ मनुष्य क्षेत्र के बाहर के समुद्रों मे ज्वार भाटा नहीं आता है। अत छिछरा ही प्रतीत होता है।

२ ज्वार भाटा आने से गहरा हो जाता है।

३ ज्वार भाटा चले जाने से छिछरे जैसा प्रतीत होता है।

१ एक पुरुष बाह्य चेष्टाओ मे तुच्छ है और तुच्छ हृदय है।

२ एक पुरुष बाह्य चेष्टाओ से तो तुच्छ है किंतु गम्भीर हृदय है।

३ एक पुरुष बाह्य चेष्टाओ से तो गम्भीर प्रतीत होता है किंतु तुच्छ हृदय है।

४ एक पुरुष बाह्य चेष्टाओ से भी गम्भीर प्रतीत होता है और गम्भीर हृदय भी है।

२क—पानी चार प्रकार का है। यथा—

१ एक पानी छिछला है और छिछला जैसा ही दीखता है।

२ एक पानी छिछला है किन्तु गहरा दीखता है।

३ एक पानी गहरा है किन्तु छिछला जैसा प्रतीत होता है।

४ एक पानी गहरा है और गहरे जैसा ही प्रतीत होता है।

ख—इसी प्रकार पुरुष चार प्रकार के है। यथा—

१ एक पुरुष तुच्छ प्रकृति है और वैसा ही दिखता भी है।

२ एक पुरुष तुच्छ प्रकृति है किन्तु बाह्य व्यवहार से गम्भीर जैसा प्रतीत होता है।

३ एक पुरुष गम्भीर प्रकृति है किन्तु बाह्य व्यवहार से तुच्छ प्रतीत होता है।

४ एक पुरुष गम्भीर प्रकृति है और बाह्य व्यवहार से भी गम्भीर ही प्रतीत होता है।

३क—उदधि (समुद्र) चार प्रकार के हैं। यथा—

१ समुद्र का एक देश छिछरा (थोड़ा गहरा) है और थोड़े गहरे (छिछरा) जैसा दिखाई देता है।[1]

२ समुद्र का एक भाग छिछरा है किन्तु बहुत गहरे जैसा प्रतीत होता है।[2]

३ समुद्र का एक भाग बहुत गहरा है किन्तु छिछरे जैसा प्रतीत होता है।[3]

४ समुद्र का एक भाग बहुत गहरा है और गहरे जैसा ही प्रतीत होता है।

---

१ मनुष्य क्षेत्र के बाहर के समुद्रों में ज्वार भाटा नहीं आता है। अत छिछरा ही प्रतीत होता है।

२ ज्वार भाटा आने से गहरा हो जाता है।

३ ज्वार भाटा चले जाने से छिछरे जैसा प्रतीत होता है।

ख—इसी प्रकार गन्ध चार प्रकार के हैं।

पूर्वोक्त उदक सूत्र के समान आगे कहें।

३५६ १क—तैराक चार प्रकार के हैं। यथा—

१ एक तैराक (तिरने वाला) ऐसा होता है जो समुद्र को तिरने का निश्चय करके समुद्र को ही तिरता है।

२ एक तैराक ऐसा होता है जो समुद्र को तिरने का निश्चय करके गोपद (समुद्र की खाड़ी) ही तिरता है।

३ एक तैराक ऐसा होता है जो गोपद तिरने का निश्चय करके समुद्र को तिरता है।

४ एक तैराक ऐसा होता है जो गोपद तिरने का निश्चय करके गोपद ही तिरता है।[1]

---

१ इस सूत्र का एक वैकल्पिक अर्थ टीकाकार ने इस प्रकार किया है—(१) इसी प्रकार भाव तैराक भवसागर को पार करने वाले पुरुष चार प्रकार के हैं—(१) एक पुरुष सर्वविरति धारण करने का निश्चय करके सर्वविरति ही धारण करता है। (२) एक पुरुष सर्वविरति धारण करने का निश्चय करके देशविरति धारण करता है। (३) एक पुरुष देशविरति धारण

ख—तैराक चार प्रकार के हैं। यथा—

१ एक तैराक एक बार समुद्र को तिरकर पुन समुद्र को तिरने मे असमर्थ होता है।

२ एक तैराक एक बार समुद्र को तिरके दूसरी बार गोपद को तिरने में भी असमर्थ होता है।

३ एक तैराक एक बार गोपद (समुद्र की खाड़ी) को तिर करके पुन समुद्र को पार करने मे असमर्थ होता है।

४ एक तैराक एक बार गोपद को तिर करके पुन गोपद को पार करने में भी असमर्थ होता है।[२]

करने का निश्चय करके सर्वविरक्ति धारण करता है। (४) एक पुरुष देश विरक्ति धारण करने का निश्चय करके देश विरक्ति ही धारण करता है।

२ टीकाकार इस सूत्र का एक वैकल्पिक अर्थ प्रस्तुत करते हैं। पुरुष चार प्रकार के हैं। यथा—

१ एक पुरुष समुद्र समान महान् कार्य करके पुन महान कार्य नहीं कर पाता।

२ एक पुरुष समुद्र समान महान कार्य करके पुन गोपद समान सामान्य कार्य भी नहीं कर पाता।

१ एक पुरुष (धन या श्रुत मे) पूर्ण है और धन या श्रुत देता भी है।

२ एक पुरुष पूर्ण है किन्तु देता नही है।

३ एक पुरुष (धन या श्रुत मे) अपरिपूर्ण है किन्तु यथाशक्ति या यथाज्ञान देता भी है।

४ एक पुरुष अपूर्ण है और देता भी नही है।

६ क—कुम्भ चार प्रकार के हैं। यथा—

१ खडित, २ जाजरा,

३ कच्चा (जिसमे से पानी झरता है।)

४ पक्का (जिसमे से पानी नही झरता है।)

ख—इसी प्रकार पुरुष चार प्रकार के हैं। यथा—

१ एक पुरुष मूल प्रायश्चित्त योग्य (पुन दीक्षा देने योग्य) होता है।

२ एक पुरुष छेदादि प्रायश्चित्त योग्य होता है।

३ एक पुरुष सूक्ष्म अतिचार युक्त होता है।

४ एक पुरुष निरतिचार, चारित्र युक्त होता है।

७ क—कुंभ चार प्रकार के है, यथा—

१ एक मधु कुम्भ है और उसका ढक्कन भी मधु पूरित है।

२ एक मधु कुम्भ है किन्तु उसका ढक्कन विष पूरित है।

३ एक विष कुम्भ है किन्तु उसका ढक्कन मधु पूरित है।

४ एक विष कुम्भ है और उसका ढक्कन भी विष पूरित है।

ख—इसी प्रकार पुरुष चार प्रकार के है। यथा—

१ एक पुरुष सरल हृदय है और मधुरभाषी है।

२ एक पुरुष सरल हृदय है किन्तु कटुभाषी है।

३ एक पुरुष मायावी है किन्तु मधुरभाषी भी नही है।

४ एक पुरुष मायावी है किन्तु मधुरभाषी भी है।

गाथार्थ—१ जिस पुरुष का हृदय निष्पाप एव निर्मल है और जिसकी जिह्वा भी सदा मधुर भाषिणी है। उस पुरुष को मधु ढक्कन वाले मधु कुम्भ की उपमा दी जाती है।

२ जिस पुरुष का हृदय निष्पाप एव निर्मल है किन्तु उसकी जिह्वा सदा कटुभाषिणी है तो उस पुरुष को विष पूरित ढक्कन वाले मधु कुम्भ की उपमा दी जाती है।

३ जो पापी एवं मलिन हृदय है और जिसकी जिह्वा सदा मधुरभाषिणी है। उस पुरुष को मधुपूरित ढक्कन वाले विष कुम्भ की उपमा दी जाती है।

४ जो पापी एवं मलिन हृदय है और जिसकी जिह्वा सदा कटुभाषिणी है उस पुरुष को विषपूरित ढक्कन वाले विष कुम्भ की उपमा दी जाती है।

३६१ १ क—उपसर्ग चार प्रकार के हैं। यथा—

१ देवकृत, २ मनुष्य कृत,
३ तिर्यंचकृत और ४ आत्मकृत।

ख—देवकृत उपसर्ग चार प्रकार के हैं। यथा—

१ उपहास करके उपसर्ग करता है।

२ द्वेष करके उपसर्ग करता है।

३ परीक्षा के बहाने उपसर्ग करता है।

४ विविध प्रकार से उपसर्ग करता है।

ग—मनुष्य कृत उपसर्ग चार प्रकार के हैं। यथा—

१-३ पूर्ववत्।

४ मैथुन सेवन की इच्छा से उपसर्ग करता है।

घ—तिर्यंच कृत उपसर्ग चार प्रकार के हैं। यथा—

१ भयभीत होकर उपसर्ग करता है।

२ द्वेष भाव से उपसर्ग करता है।

३ आहार (घासादि) के लिये उपसर्ग करता है।

४ स्वस्थान की रक्षा के लिये उपसर्ग करता है।

ह —आत्मकृत उपसर्ग चार प्रकार के हैं। यथा—

१. संघट्टन से-आंख में पड़ी हुई रज आदि को हाथ से निकालने पर पीड़ा होती है।

२ गिर पड़ने से।

३ अधिक देर तक एक आसन से बैठने पर पीड़ा होती है।

४ पग संकुचित कर अधिक देर तक बैठने से पीड़ा होती है।

३६२ १ क—कर्म चार प्रकार के है। यथा—

१ एक कर्म प्रकृति शुभ है और उसका हेतु भी शुभ है। अर्थात् पुण्यानुबंधी पुण्य।

२ एक कर्म प्रकृति शुभ है किंतु उसका हेतु अशुभ है। अर्थात् पापानुबंधी पुण्य।

३ एक कर्म प्रकृति अशुभ है किन्तु उसका हेतु शुभ है। अर्थात् पुण्यानुबंधी पाप।

३ तालाव के पानी जैसी[1] ४ समुद्र के पानी जैसी,[2]

३६५ १ ससारी जीव चार प्रकार के हैं। यथा
१ नैरयिक, २ तिर्यंच ३ मनुष्य और ४ देव।

२ सभी जीव चार प्रकार के है। यथा
१ मनयोगी, २ वचन योगी,
३ काय योगी और ४ अयोगी।

३ सभी जीव चार प्रकार के हैं। यथा
१ स्त्री वेदी, २ पुरुष वेदी।
३ नपुसक वेदी और ४ अवेदी।

४ सभी जीव चार प्रकार के हैं। यथा
१ चक्षु दर्शन वाले, २ अचक्षु दर्शन वाले।
३ अवधि दर्शन वाले, ४ केवल दर्शन वाले।

५ सभी जीव चार प्रकार के है। यथा
१ सयत, २ असयत।
३ सयतासयत और ४ नोसयत-नोअसयत।

---

१ सरोवर का पानी खाली नहीं होता है इसी प्रकार चिंतन मनन में जो कभी थकती नहीं वैसी मति।
२ समुद्र का पानी सदा समान रहता है इसी प्रकार सदा समान रहने वाली मति।

३६६ १क—पुरुष चार प्रकार के हैं। यथा—

१ एक पुरुष इहलोक का भी मित्र है और परलोक का भी मित्र है।[1]

२ एक पुरुष इहलोक का तो मित्र है किन्तु परलोक का मित्र नही है।[2]

३ एक पुरुष परलोक का तो मित्र है किन्तु इहलोक का मित्र नहीं है।[3]

४ एक पुरुष इहलोक का भी मित्र नहीं है और परलोक का भी मित्र नही है।[4]

ख—पुरुष चार प्रकार के हैं। यथा—

१ एक पुरुष अन्तरग मित्र है और बाह्य स्नेह भी पूर्ण मित्रता का है।

२ एक पुरुष अन्तरग मित्र तो है किन्तु बाह्य स्नेह प्रदर्शित नही करता है।

३ एक पुरुष बाह्य स्नेह तो प्रदर्शित करता है किन्तु अन्तरग मे शत्रुभाव है।[5]

४ एक पुरुष अन्तरग (हृदय में) में भी शत्रु भाव

---

१ सद्गुरु २ स्वार्थी सम्बधी, ३ जिनके प्रतिकूल आचरण से वैराग्य हो ४ शत्रु ५ कुलटा स्त्री।

का असंयम करता है। यथा—

१ जिह्वेन्द्रिय के सुख को नष्ट करता है।

२ जिह्वेन्द्रिय सम्बन्धी दुःख देता है।

३ स्पर्शेन्द्रिय के सुख को नष्ट करता है।

४ स्पर्शेन्द्रिय सम्बन्धी दुःख देता है।

३६९ १क—सम्यग्दृष्टि नैरयिक चार क्रियायें करते है। यथा—

१ आरम्भिकी २ पारिग्रहिकी,

३ मायाप्रत्यया, और ४ अप्रत्याख्यान क्रिया।

ख—विकलेन्द्रिय छोड़कर शेष सभी दण्डको के जीव चार क्रियायें करते हैं। पूर्ववत्।

३७० १क—चार कारणो से पुरुष दूसरे के गुणा को छिपाता है।

यथा—१ क्रोध से, २ ईर्ष्या से,

३ कृतघ्न होने से और ४ दुराग्रही होने से।

ख—चार कारणो से पुरुष दूसरे के गुणो को प्रकट करता है। यथा—

१ प्रशंसक स्वभाव वाला व्यक्ति।

२ दूसरे के अनुकूल व्यवहार वाला।

३ स्वकार्य साधक व्यक्ति।

४ प्रत्युपचार करने वाला।

३७१ १क—चार कारणो से नैरयिक शरीर की उत्पत्ति प्रारम्भ होती है। यथा—

१ क्रोध से, २ मान से,
३ माया से, और ४ लोभ से।

शेष सभी दण्डकवर्ती जीवो के शरीर की उत्पत्ति का प्रारम्भ भी इन्ही चार कारणो से होता है।

ख—चार कारणो से नैरयिको के शरीर की पूर्णता होती है। यथा—

१ क्रोध से यावत लोभ से।

शेष सभी दण्डकवर्ती जीवो के शरीर की पूर्णता भी इन्हीं चार कारणों से होती है।

३७२ १—धर्म के चार द्वार हैं। यथा—

१ क्षमा, २ निर्लोभता,
३ सरलता और ४ मृदुता।

३७३ १क—चार कारणो से नरक मे जाने योग्य कर्म बधते हैं। यथा—१ महा आरम्भ (हिंसा) करने से,

२ महापरिग्रह (सग्रह) करने से।

३ पचेन्द्रिय जीवो को मारने से।

४ मास आहार करने से।

ख—चार कारणों से तिर्यंचों में उत्पन्न होने योग्य कर्म बंधते हैं। यथा—

१ मन की कुटिलता से।

२ वेष बदलकर ठगने से।

३ झूठ बोलने से, ४ खोटे तोल माप बरतने से।

ग—चार कारणों से मनुष्यों में उत्पन्न होने योग्य कर्म बंधते हैं। यथा—

१ सरल स्वभाव से, २ विनम्रता से,

३ अनुकम्पा से, ४ मात्सर्यभाव न रखने से

घ—चार कारणों से देवताओं में उत्पन्न होने योग्य कर्म बंधते हैं। यथा—

१ सराग संयम से, २ श्रावक जीवनचर्या से,

३ अज्ञान तप से[1] और ४ अकामनिर्जरा से[2]।

३७४ १—वाद्य चार प्रकार के हैं। यथा—

१ तत (वीणा आदि), २ वितत (ढोल आदि),

---

१ विवेक बिना जो तपश्चर्या की जाती है वह अज्ञानतप कहा जाता है।

२ इच्छा के बिना जो कष्ट सहा जाय और उससे जो कर्मक्षय हो उसे अकाम निर्जरा कहते हैं।

३ घन (कास्यताल आदि), और

४ शुषिर (बासुरी आदि)।

२—नाट्य (नाटक) चार प्रकार के हैं। यथा—

१ ठहर-ठहर कर नाचना।

२ सगीत के साथ नाचना।

३ सकेतो से भावाभिव्यक्ति करते हुये नाचना।

४ झुककर या लेट कर नाचना।

३—गायन चार प्रकार का है। यथा—

१ नाचते हुये गायन करना।

२ छद (पद्य) गायन।

३ मद-मद स्वर से गायन करना।

४ शनै शनै स्वर को तेज करते हुए गायन करना।

४—पुष्प रचना चार प्रकार की है। यथा—

१ सूत के धागे से गूँथकर की जाने वाली पुष्प रचना।

२ चारों ओर पुष्प बीटकर की जाने वाली रचना।

३ पुष्प आरोपित करके की जाने वाली रचना।

४ परस्पर पुष्प नाल मिलाकर की जाने वाली रचना।

५—अलकार चार प्रकार के हैं। यथा—

१ केशालंकार, २ वस्त्रालंकार,

३ माल्यालंकार, और ४ आभरणालंकार।

६—अभिनय चार प्रकार का है। यथा—

१ किसी घटना का अभिनय करना।

२ महाभारत का अभिनय करना।

३ राजा मन्त्री आदि का अभिनय करना।

४ मानव जीवन की विभिन्न अवस्थाओं का अभिनय करना।

३७५ १—सनत्कुमार और माहेन्द्रकल्प में चार वर्ण के विमान हैं। यथा—

१ नीले, २ रक्त, ३ पीत और ४ श्वेत।

२—महाशुक्र और सहस्रारकल्प में देवताओं के शरीर चार हाथ के ऊँचे हैं।

३७६ १ क—पानी के गर्भ चार प्रकार के हैं।[1] यथा—

१ ओस, २ धुंवर,

३ अतिशीत और ४ अतिगरम।

ख—पानी के गर्भ चार प्रकार के हैं। यथा—

१ हिमपात।

२ बादल से आकाश का आच्छादित होना।

---

१ यहाँ गर्भ का अर्थ वर्षा का हेतु है।

३ अतिशीत या अतिगरमी होना।

४ (१) वायु, (२) बद्दल (३) गाज, (४) बिजली और (५) बरसना इन पांचो का सयुक्त रूप से होना।

गाथार्थ—१ माघ मास मे हिमपात से, २ फाल्गुन मास मे बादलो से, ३ चैत्र माम मे अधिक शीत से और ४ वैशाख मे ऊपर कहे सयुक्त पांच प्रकार मे पानी का गर्भ स्थिर होता है।[1]

३७७ १ —मनुष्यणी (स्त्री) के गर्भ चार प्रकार के है। यथा—

१ स्त्री रूप मे, २ पुरुष रूप मे,

३ नपुसक रूप मे और, ४ बिंब रूप मे।[2]

गाथार्थ—१ अल्प शुक्र और अधिक ओज का मिश्रण होने से गर्भ स्त्री रूप मे उत्पन्न होता है। अल्प ओज और अधिक शुक्र का मिश्रण होने से गर्भ पुरुष रूप में

---

१ इन लक्षणों के अनुसार जिस दिन पानी का गर्भ स्थिर होता है उससे ६ या ७ माह पश्चात् वर्षा होती है। टीकाकार अन्य ग्रन्थों के कुछ और श्लोक उद्धृत करके उदक गर्भ की स्थिति के हेतु बताते हैं अत टीका देखें।

२ गर्भ केवल पिंड रूप में उत्पन्न होता है अत उसमे किसी प्रकार की आकृति नहीं होती।

उत्पन्न होता है। ओज और शुक्र के समान मिश्रण मे गभ नपुसक रूप मे उत्पन्न होता है। स्त्री का स्त्री से सहवास होने पर गर्भ बिंब रूप मे उत्पन्न होता है।

३७८ १ —उत्पाद पूव के चार मूल वस्तु हैं।

३७९ १ —काव्य चार प्रकार के हैं। यथा—

१ गद्य[1], २ पद्य[2] ३ कथ्य[3] और ४ गेय[4]।

३८० १ क—नैरयिक जीवो के चार समुद्घात है।[5] यथा—

१ वेदना समुद्घात।

२ कषाय समुद्घात।

३ मारणातिक समुद्घात और

४ वैक्रिय समुद्घात।

ख—वायुकायिक जीवो के भी ये चार समुद्घात है।

३८१ १ —अहन्त अरिष्टनेमि—(नेमिनाथ) के चार सौ चौदह पूवधारी श्रमणो की उत्कृष्ट सम्पदा थी। वे जिन न

---

१ छद रहित, २ छद बद्ध, ३ कथारूप, ४ गाने योग्य।
५ आत्म शक्ति से कम दलिको मे की जाने वाली एक विशेष प्रक्रिया को समुद्घात कहते हैं।

होते हुए भी जिनसदृश थे। जिनकी तरह पूर्ण यथार्थ वक्ता थे और सव अक्षर सयोगो के पूर्ण ज्ञाता थे।

३८२ —श्रमण भगवान महावीर के चार सौ वादी मुनियो की उत्कृष्ट सपदा थी। वे देव, मनुष्य असुरो की परिषद मे कदापि पराजित होने वाले न थे।

३८३ १ क—नीचे के चार कल्प अर्ध चन्द्राकार हैं। यथा—

१ सौधर्म, २ ईशान,
३ सनत्कुमार और ४ माहेन्द्र।

ख—विचले चार कल्प पूर्ण चन्द्राकार हैं।

१ ब्रह्मलोक, २ लातक,
३ महाशुक्र और ४ सहस्रार।

ग—ऊपर के चार कल्प अर्ध चन्द्राकार हैं। यथा—

१ आनत, २ प्राणत,
३ आरण और ४ अच्युत।

३८४ १ —चार समुद्रो मे से प्रत्येक समुद्र के पानी का स्वाद भिन्न-भिन्न प्रकार का है। यथा—

१ लवण समुद्र के पानी का स्वाद लवण जैसा खारा है।

२ वरुणोद समुद्र के पानी का स्वाद मद्य जैसा है।

३ क्षीरोद समुद्र के पानी का स्वाद दूध जैसा है।

उत्पन्न होता है। ओज और शुक्र के समान मिश्रण से गभ नपु सक रूप मे उत्पन्न होता है। स्त्री का स्त्री मे सहवास होने पर गर्भ बिंब रूप मे उत्पन्न होता है।

३७८ १ —उत्पाद पूव के चार मूल वस्तु है।

३७९ १ —काव्य चार प्रकार के हैं। यथा—

१ गद्य[1], २ पद्य[2] ३ कथ्य[3] और ४ गेय[4]।

३८० १ क—नैरयिक जीवो के चार समुद्घात है।[5] यथा—

१ वेदना समुद्घात।

२ कषाय समुद्घात।

३ मारणातिक समुद्घात और

४ वैक्रिय समुद्घात।

ख—वायुकायिक जीवों के भी ये चार समुद्घात है।

३८१ १ —अहन्त अरिष्टनेमि—(नेमिनाथ) के चार सौ चौदह पूवधारी श्रमणो की उत्कृष्ट सम्पदा थी। वे जिन न

---

१ छद रहित, २ छद बद्ध, ३ कथारूप, ४ गाने योग्य।

५ आत्म शक्ति से कम दलिकों मे की जाने वाली एक विशेष प्रक्रिया को समुद्घात कहते हैं।

होते हुए भी जिनसदृश थे। जिनकी तरह पूर्ण यथार्थ वक्ता थे और सर्व अक्षर सयोगो के पूर्ण ज्ञाता थे।

३८२ —श्रमण भगवान महावीर के चार सौ वादी मुनियो की उत्कृष्ट सपदा थी। वे देव, मनुष्य असुरो की परिषद मे कदापि पराजित होने वाले न थे।

३८३ १ क—नीचे के चार कल्प अर्ध चन्द्राकार हैं। यथा—

१ सौधर्म, २ ईशान,

३ सनत्कुमार और ४ माहेन्द्र।

ख—बिचले चार कल्प पूर्ण चन्द्राकार हैं।

१ ब्रह्मलोक, २ लातक,

३ महाशुक्र और ४ सहस्रार।

ग—ऊपर के चार कल्प अर्ध चन्द्राकार हैं। यथा—

१ आनत, २ प्राणत,

३ आरण और ४ अच्युत।

३८४ १ —चार समुद्रो मे से प्रत्येक समुद्र के पानी का स्वाद भिन्न-भिन्न प्रकार का है। यथा—

१ लवण समुद्र के पानी का स्वाद लवण जैसा खारा है।

२ वरुणोद समुद्र के पानी का स्वाद मद्य जैसा है।

३ क्षीरोद समुद्र के पानी का स्वाद दूध जैसा है।

४ घृतोद समुद्र के पानी का स्वाद घी जैसा है।

३८५ १ क—आवर्त चार प्रकार के हैं।[1] यथा—

१ खरावर्त-समुद्र मे चक्र की तरह पानी का घूमना।

२ उन्नतावर्त-पर्वत पर चक्र की तरह घूमकर चढ़ने वाला मार्ग।

३ गूढावर्त-दडी पर रस्सी से की जाने वाली गुंथन।

४ आमिषावर्त-मांस के लिए आकाश मे पक्षियो का घूमना।

ख —कषाय चार प्रकार के है। यथा—

१ खरावर्त समान क्रोध।

२ उन्नतावर्त समान मान।

३ गूढावर्त समान-माया।

४ आमिषावर्त समान लोभ।

ग —१ खरावर्त समान क्रोध करने वाला जीव मरकर नरक में उत्पन्न होता है।

२ इसी प्रकार उन्नतावर्त समान मान करने वाला जीव।

३ गूढावर्त समान माया करने वाला जीव, और

---

१ किसी भी पदार्थ का गोल घूमना 'आवर्त' कहा जाता है।

४ आमिषावर्त समान लोभ करने वाला जीव मरकर नरक मे उत्पन्न होता है ।

३८६ १ क—अनुराधा नक्षत्र के चार तारे हैं ।

ख-ग—इसी प्रकार पूर्वाषाढा और उत्तराषाढा नक्षत्र के चार-चार तारे है ।

३८७ १ क—चार स्थानो मे सचित पुद्‌गल पाप कर्म रूप मे एकत्र हुए हैं, होते हैं और भविष्य मे भी होंगे । यथा—

१ नारकीय जीवन मे एकत्रित पुद्‌गल ।

२ तिर्यंच जीवन मे एकत्रित पुद्‌गल ।

३ मनुष्य जीवन मे एकत्रित पुद्‌गल ।

४ देव जीवन मे एकत्रित पुद्‌गल ।

ख-च—इसी प्रकार पुद्‌गलो का उपचय, बंध, उदीरण, वेदन और निर्जरा के एक-एक सूत्र कहें ।

३८८ १ क—चार प्रदेश वाले स्कन्ध अनेक हैं ।

ख—चार आकाश प्रदेश मे रहे हुए पुद्‌गल अनन्त हैं ।

ग—चार गुण वाले पुद्‌गल अनन्त हैं ।

घन्ब—चार गुण रुखे पुद्‌गल अनन्त हैं ।

—चतुर्थ स्थानक चतुर्थ उद्देशक समाप्त—

।। चतुर्थ स्थान समाप्त ।।



पांचवां स्थान प्रथम उद्देशक

३८९ क—महाव्रत पांच कहे गये हैं। यथा—

१ प्राणातिपात से सर्वथा विरत होना—

२-५ यावत् परिग्रह से सर्वथा विरत होना।

ख—अणुव्रत पांच कहे गये हैं। यथा—

१ स्थूल प्राणातिपात से विरत होना।

२ स्थूल मृषावाद से विरत होना।

३ स्थूल अदत्तादान से विरत होना।

४ स्व-स्त्री में सन्तुष्ट रहना।

५ इच्छाओं (परिग्रह) की मर्यादा करना।

३९० क—वर्ण पांच कहे गये हैं। यथा—

१ कृष्ण, २ नील, ३ रक्त ४ पीत, ५ शुक्ल।

ख—रस पांच कहे गये हैं। यथा—

१ तिक्त यावत—२-५ मधुर।

ग—काम गुण पाच कहे गये हैं। यथा—

१ शब्द, २ रूप, ३ गध, ४ रस, ५ स्पर्श।

घ—इन पाचो मे जीव आसक्त हो जाते हैं। यथा—

१ शब्द, यावत् २-५ स्पर्श मे।

(ङ-झ)—इसी प्रकार पूर्वोक्त पाँचो मे जीव राग भाव को प्राप्त होते हैं।

" " मूर्छा भाव को "

" " गृद्धि भाव को "

" " आकाक्षा भाव को "

" " मरण को "

(ञ)—इन पाचो का ज्ञान न होना जीवो के अहित के लिए होता है।

" " " अशुभ "

" " " अनुचित "

" " " अकल्याण "

" " " अनानुगामिता के "

यथा—

शब्द, यावत् २-५ स्पर्श।

(ट)—इन पाचों का ज्ञान होना, त्याग होना जीवों के हित के लिए होना है।

पांचवां स्थान प्रथम उद्देशक

३८९ क—महाव्रत पांच कहे गये हैं। यथा—

१ प्राणातिपात से सर्वथा विरत होना—

२-५ यावत् परिग्रह से सर्वथा विरत होना।

ख—अणुव्रत पांच कहे गये हैं। यथा—

१ स्थूल प्राणातिपात से विरत होना।

२ स्थूल मृषावाद से विरत होना।

३ स्थूल अदत्तादान से विरत होना।

४ स्व-स्त्री में सन्तुष्ट रहना।

५ इच्छाओं (परिग्रह) की मर्यादा करना।

३९० क—वर्ण पांच कहे गये हैं। यथा—

१ कृष्ण, २ नील, ३ रक्त ४ पीत, ५ शुक्ल।

ख—रस पांच कहे गये हैं। यथा—

१ तिक्त यावत—२-५ मधुर।

ग—काम गुण पांच कहे गये हैं। यथा—

१ शब्द, २ रूप, ३ गंध, ४ रस, ५ स्पर्श।

घ—इन पांचो मे जीव आसक्त हो जाते हैं। यथा—

१ शब्द, यावत् २-५ स्पर्श मे।

(ङ-झ)—इसी प्रकार पूर्वोक्त पांचो मे जीव राग भाव को प्राप्त होते हैं।

" " मूर्छा भाव को "
" " गृद्धि भाव को "
" " आकाक्षा भाव को "
" " मरण को "

(ञ)—इन पांचो का ज्ञान न होना जीवो के अहित के लिए होता है।

" " " अशुभ "
" " " अनुचित "
" " " अकल्याण "
" " " अनानुगामिता के "

यथा—

शब्द, यावत् २-५ स्पर्श।

(ट)—इन पाचो का ज्ञान होना, त्याग होना जीवों के हित के लिए होना है।

„	„	„	शुभ	के लिए होता है
„	„	„	उचित	„
„	„	„	कल्याण	„
„	„	„	अनुगामिकता	„

ठ—इन पाँच स्थानो का न जानना और न त्यागना जीवो की दुर्गतिगमन के लिए होता है। यथा—
१ शब्द, यावत् २ ५ स्पश।

ड—इन पाँच स्थानो का ज्ञान और परित्याग जीवो की सुगतिगमन के लिए होता है।
यथा—१ शब्द यावत २-५ स्पश।

३९१ क—पाच कारणो से जीव दुर्गति को प्राप्त होते हैं।
यथा—१ प्राणातिपात से, यावत् २-५ परिग्रह से।

ख—पाच कारणो से जीव सुगति को प्राप्त होते हैं।
यथा—१ प्राणातिपात विरमण से, यावत २-५ परिग्रह विरमण से।

३९२ क—पाच प्रतिमाए कही गई हैं। यथा—
१ भद्रा प्रतिमा, २ सुभद्रा प्रतिमा।
३ महाभद्रा प्रतिमा, ४ सर्वतोभद्रप्रतिमा।
५ भद्रोत्तर प्रतिमा।

३९३ क—पाँच स्थावर काय कहे गये हैं। यथा—

१ इन्द्र स्थावर काय (पृथ्वीकाय)

२ ब्रह्म स्थावर काय (अप्काय)

३ शिल्प स्थावर काय (तेजस्काय)

४ समति स्थावर काय (वायुकाय)

५ प्राजापत्य स्थावर काय (वनस्पति काय)

ख—पांच स्थावर कायो के ये पांच अधिपति हैं। यथा—

१ पृथ्वीकाय का अधिपति (इन्द्र)

२ अपकाय का अधिपति (ब्रह्म)

३ तेजस्काय का अधिपति (शिल्प)

४ वायुकाय का अधिपति (समति)

५ वनस्पतिकाय का अधिपति (प्रजापति)

३६४ क—अवधि उपयोग की प्रथम प्रवृत्ति के समय अवधि ज्ञान-दर्शन। पांच कारणो से चलित-क्षुब्ध होते हैं। यथा—

१ पृथ्वी को छोटी देखकर,

२ पृथ्वी को सूक्ष्म जीवो से व्याप्त देखकर,

३ महान अजगर का शरीर देखकर,

४ महान ऋद्धि वाले देव को अत्यन्त सुखी देखकर,

५ ग्राम नगरादि मे अज्ञात एव गडे हुए स्वामीरहित खजानों को देखकर।

ख—किन्तु इन पांच कारणो से केवलज्ञान-केवलदर्शन चलित-क्षुब्ध नही होता है। यथा—

१ पृथ्वी को छोटी देखकर यावत २-५ ग्राम नगरादि मे गडे हुए अज्ञात खजानो को देखकर।

३९५ क—नैरयिको के शरीर पांच वर्ण वाले और पांच रस वाले कहे गये है। यथा—

१ कृष्ण यावत्, २-५ शुक्ल।

२ तिक्त यावत्, २-५ मधुर।

इसी प्रकार वैमानिक देव पर्यन्त २४ दण्डक के शरीरो के वर्ण और रस कहने चाहिए।

ख—पांच शरीर कहे गये है, यथा—

१ औदारिक शरीर,

२ वैक्रिय शरीर,

३ आहारक शरीर,

४ तेजस शरीर,

५ कार्मणशरीर।

ग—औदारिक शरीर के पाच वर्ण और पांच रस कहे गये है। यथा—

१ कृष्ण, यावत २-५ शुक्ल।

२ तिक्त, यावत् २-५ मधुर।

घ छ—इसी प्रकार कार्मण शरीर पर्यन्त वर्ण और रस कहने चाहिये। सभी स्थूल-देहधारियो के शरीर पांच वर्ण,

पांच रस, दो गध और आठ स्पर्श युक्त हैं।

३९६ क—पांच कारणो से प्रथम और अन्तिम जिन का उपदेश उनके शिष्यो को उन्हे समझने मे कठिनाई होती है।

१ दुराख्येय—आयास माध्य व्याख्या युक्त।

२ दुर्विभजन—विभाग करने मे कष्ट होता है।

३ दुर्दर्श—कठिनाई से समझ मे आता है।

४ दु सह—परीषह महन करने मे कठिनाई होती है।

५ दुरनुचर—जिनाज्ञानुसार आचरण करने मे कठिनाई होती है।

ख—पांच कारणो से मध्य के २२ जिनका उपदेश उनके शिष्यो को सुगम होता है। यथा—

१ सुआख्येय—व्याख्या सरलतापूर्वक करते हैं।

२ सुविभाज्य—विभाग करने मे किसी प्रकार का कष्ट नही होता।

३ सुदर्श—सरलतापूर्वक समझ लेते हैं।

४ सुसह—शातिपूर्वक परीषह सहन करते है।

५ सुचर—प्रसन्नतापूर्वक जिनाज्ञानुसार आचरण करते हैं।

ग—भगवान महावीर ने श्रमण निग्रन्थो के लिए पांच सद्गुण सदा प्रशस्त एव आचरण योग्य कहे हैं।

ख—किन्तु इन पांच कारणों से केवलज्ञान-केवलदर्शन चलित-क्षुब्ध नहीं होता है। यथा—

१ पृथ्वी को छोटी देखकर यावत् २-५ ग्राम नगरादि में गड़े हुए अज्ञात खजानों को देखकर।

*९५ क—नैरयिकों के शरीर पांच वर्ण वाले और पांच रस वाले कहे गये हैं। यथा—

१ कृष्ण यावत्, २-५ शुक्ल।

२ तिक्त यावत्, २-५ मधुर।

इसी प्रकार वैमानिक देव पर्यन्त २४ दण्डक के शरीरों के वर्ण और रस कहने चाहिए।

ख—पांच शरीर कहे गये हैं, यथा—

१ औदारिक शरीर,

२ वैक्रिय शरीर,

३ आहारक शरीर,

४ तैजस शरीर,

५ कार्मण शरीर।

ग—औदारिक शरीर के पाँच वर्ण और पांच रस कहे गये हैं। यथा—

१ कृष्ण, यावत् २-५ शुक्ल।

२ तिक्त, यावत् २-५ मधुर।

घ-छ—इसी प्रकार कार्मण शरीर पर्यन्त वर्ण और रस कहने चाहिये। सभी स्थूलदेहधारियों के शरीर पांच वर्ण,

पाँच रस, दो गध और आठ स्पर्श युक्त हैं।

३९६ क—पांच कारणो से प्रथम और अन्तिम जिन का उपदेश उनके शिष्यो को उन्हे समझने मे कठिनाई होती है।

१ दुराख्येय—आयास साध्य व्याख्या युक्त।

२ दुर्विभजन—विभाग करने में कष्ट होता है।

३ दुर्दर्श—कठिनाई से समझ मे आता है।

४ दु सह—परीषह सहन करने मे कठिनाई होती है।

५ दुरनुचर—जिनाज्ञानुसार आचरण करने मे कठिनाई होती है।

ख—पाँच कारणो मे मध्य के २२ जिनका उपदेश उनके शिष्यो को सुगम होता है। यथा—

१ सुआख्येय—व्याख्या सरलतापूर्वक करते हैं।

२ सुविभाज्य—विभाग करने मे किसी प्रकार का कष्ट नही होता।

३ सुदर्श—सरलतापूर्वक समझ लेते है।

४ सुसह—शातिपूर्वक परीषह सहन करते हैं।

५ सुचर—प्रसन्नतापूर्वक जिनाज्ञानुसार आचरण करते हैं।

ग—भगवान महावीर ने श्रमण निग्रन्थो के लिए पाँच सद्गुण सदा प्रशस्त एव आचरण योग्य कहे हैं।

यथा—१ क्षमा, २ निर्लोभता,

३ सरलता, ४ मृदुता, ५ लघुता।

घ—भगवान महावीर ने श्रमण निग्रन्थो के लिए पाँच सद्गुण सदा प्रशस्त एव आचरण योग्य कहे हैं।

यथा—१ सत्य, २ सयम,
३ तप, ४ त्याग, ५ ब्रह्मचर्य।

ङ—भगवान महावीर ने श्रमण निग्रन्थो के लिए पांच अभिग्रह सदा प्रशस्त एव आचरण योग्य कहे हैं। यथा—

१ उक्षिप्तचारी—'यदि गृहस्थ राधने के पात्र मे से जीमने के पात्र म अपने खाने के लिए आहार ले और उस आहार में से दे तो लेउ।' ऐसा अभिग्रह करने वाला मुनि।

२ निक्षिप्तचारी—'राधने के पात्र मे से निकाला हुआ आहार यदि गृहस्थ दे तो लेउँ।' ऐसा अभिग्रह करने वाला मुनि।

३ अतचारी—भोजन करने के पश्चात बचा हुआ आहार लेने वाला मुनि।

४ प्रान्तचारी—तुच्छ आहार लेने का अभिग्रह करने वाला मुनि।

५ रूक्षचारी—रूखा आहार लेने का अभिग्रह करने

वाला मुनि ।

च—भगवान महावीर ने श्रमण निग्रन्थो के लिये पाँच अभिग्रह सदा प्रशस्त एव आचरण योग्य कहे हैं। यथा—

१ अज्ञातचारी—अपनी जाति-कुल आदि का परिचय दिये बिना आहार लेने के अभिग्रह वाला मुनि ।

२ अन्य ग्लानचारी—दूसरे रोगी के लिए भिक्षा लाने वाला मुनि ।

३ मौनचारी—मौनव्रत धारी मुनि ।

४ ससृष्टकल्पिक—लेप वाले हाथ से कल्पनीय आहार दे तो लेऊ। ऐसी प्रतिज्ञा वाला मुनि ।

५—तज्जात ससृष्ट कल्पिक—प्रासुक पदार्थ के लेप वाले हाथ से आहार दे तो लेऊ। ऐसे अभिग्र हवाला मुनि।

छ—भगवान महावीर ने श्रमण निर्ग्रन्थों के लिए पाँच अभिग्रह प्रशस्त एव सदा आचरण के योग्य कहे हैं।

यथा—१ औपनिधिक—अन्य स्थान से लाया हुआ आहार लेने वाला मुनि ।

२ शुद्धैषणिक—निर्दोष आहार की गवेषणा करने वाला मुनि ।

३ सख्यादत्तिक—आज इतनी दत्ति (निर्धारित सख्या के अनुसार) ही आहार लेऊँगा ऐसा अभिग्रह

करके आहार की गवेषणा करने वाला मुनि।

४ दृष्टलाभिक—देखी हुई वस्तु लेने के संकल्प वाला मुनि।

५ पृष्टलाभिक—(क) आपको आहार (आदि) दूं ?—इस प्रकार पूछकर आहार दे तो लेऊं ऐसी प्रतिज्ञा वाला मुनि।

—अथवा 'आहार निर्दोष है या सदोष ? इस प्रकार पूछ कर आहार लेने वाला मुनि।

ज—भ० महावीर ने श्रमण निर्ग्रन्थों के लिए पाँच अभिग्रह प्रशस्त एवं सदा आचरण करने योग्य कहे हैं। यथा—

१ आचाम्लिक—आयम्बिल करने वाला मुनि।

२ निर्विकृतिक—घी आदि की विकृति को न लेने वाला मुनि।

३ पुरिमार्धक—दिन के पूर्वार्ध तक (दो प्रहर तक) प्रत्याख्यान करने वाला मुनि।

४ परिमितपिण्डपातिक—परिमित आहार लेने वाला मुनि।

५ भिन्न पिण्डपातिक—अखण्ड नहीं किन्तु टुकड़े टुकड़े किया हुआ आहार लेने वाला मुनि।

झ—भ० महावीर ने श्रमण निग्रन्थो के लिए पांच अभिग्रह प्रशस्त एव सदा आचरण योग्य कहे हैं। यथा—

१ अरसाहारी, २ विरसाहारी, ३ अताहारी,
४ प्रान्ताहारी ५ रुक्षाहारी।

ञ—भ० महावीर ने श्रमण निग्रन्थो के लिए पांच अभिग्रह प्रशस्त एव सदा आचरण योग्य कहे हैं। यथा—

१ अरसजीवी, २, विरसजीवी, ३ अतजीवी,
४ प्रान्तजीवी, ५ रुक्षजीवी।

ट—भ० महावीर ने श्रमण निर्गन्थो के लिए पांच अभिग्रह प्रशस्त एव सदा आचरण योग्य कहे हैं। यथा—

१ स्थानातिपद—कायोत्सग करने वाला मुनि।

२ उत्कटुकासनिक—उकडु आसन बैठने वाला मुनि।

३ प्रतिमास्थायी—'एक रात्रिकी' आदि प्रतिमाओं का धारण करने वाला मुनि।

४ वीरासनिक—वीरासन से बैठने वाला मुनि।

५ नैषधिक—पालथी लगाकर बैठने वाला मुनि।

ठ—भ० महावीर ने श्रमण निर्गन्थो के लिए पांच अभिग्रह सदा प्रशस्त एव आचरण योग्य कहे है। यथा—

१ दण्डायतिक—सीधे पैर कर सोने वाला मुनि।

२ लगडशायी—आके वांके पैर व कमर कर मोने वाला मुनि ।

३ आतापक—शीत या ग्रीष्म की आतापना लेन वाला मुनि ।

४ अपावृतक—वस्त्र रहित रहने वाला मुनि ।

५ अकण्डूयक—खाज न खुजाने वाला मुनि ।

३९७ क—पांच कारणो मे श्रमण निग्रन्थ की महानिजरा और महापयवसान—मुक्ति होती है । यथा—

१ ग्लानि के बिना आचार्य की सेवा करन वाला

२ " उपाध्याय की मेवा करने वाला

३ " स्थविर की सेवा करने वाला

४ " तपस्वी की सेवा करने वाला

५ " ग्लान की मेवा करने वाला

ख—पांच कारणो से श्रमण निग्रन्थ की महानिजरा और महापयवमान होता है । यथा—

१ ग्लानि के बिना नवदीक्षित की सेवा करने वाला

२ " कुल की मेवा करने वाला

३ " गण की सेवा करने वाला

४ " मघ की मेवा करने वाला

५ " स्वधर्मी की सेवा करने वाला

३६८ क—पांच कारणों से श्रमण निर्ग्रन्थ साम्भोगिक साधर्मिक को विसंभोगी करे तो जिनाज्ञा का अतिक्रमण नही करता है। यथा—

१ अकृत्य करने वाले को।

२ अकृत्य करके आलोचना न करने वाले को।

३ आलोचना करके प्रायश्चित्त न करने वाले को।

४ प्रायश्चित लेकर भी आचरण न करने वाले को।

५ "अरे! ये स्थविर ही बार-बार अकृत्य का सेवन करते हैं तो ये मेरा क्या कर सकेंगे।" ऐसा कहने वाले को।

ख—पांच कारणो मे श्रमण निर्ग्रन्थ (आचार्य) साम्भोगिक को पाराञ्चिक प्रायश्चित दे तो जिनाज्ञा का अतिक्रमण नही करता है। यथा—

१ स्वकुल मे भेद डालने के लिए कलह करने वाले को।

२ स्वगण मे भेद डालने के लिए कलह करने वाले को।

३ हिंसा प्रेक्षी—साधु आदि को मारने के लिए उनका शोध करने वाले को।

४ छिद्र प्रेक्षी—साधु आदि को मारने के लिए अव-

सर की तलाश म रहने वाले को।

५ प्रश्न विद्या का वार-वार प्रयोग करन वाले को।

३६६ क—आचार्य और उपाध्याय के गण मे विग्रह (कलह) के पाँच कारण हैं। यथा—

१ आचाय या उपाध्याय गण म रहन वाले श्रमणो को आज्ञा[1] या निषेध[2] सम्यक प्रकार से न करे।

२ गण मे रहने वाले श्रमण दीक्षा पर्याय के क्रम स सम्यक् प्रकार से वदना न करे।

३ गण मे काल क्रम से जिसको जिस आगम की वाचना देनी है उसे उस आगम की वाचना न दे।

४ आचार्य या उपाध्याय अपने गण मे ग्लान (रोगी) या शैक्ष्य (नवदीक्षित) की सेवा के लिए सम्यक व्यवस्था न करे।

५ गण मे रहने वाले श्रमण गुरु की आज्ञा के बिना विहार करे।

ख—आचाय उपाध्याय के गण मे अविग्रह (कलह न होने) के पाँच कारण हैं। यथा—

---

१ हे मुनि! यह काय करो—यह आज्ञा है।
२ हे मुनि! यह कार्य न करो यह निषेध है इसे ही 'धारणा' कहा जाता है।

१ आचार्य या उपाध्याय गण मे रहने वाले श्रमणों को आज्ञा या निषेध सम्यक् प्रकार से करे।

२ गण मे रहने वाले श्रमण दीक्षा पर्याय के क्रम से सम्यक् प्रकार वदना करे।

३ गण मे कालक्रम से जिसको जिस आगम की वाचना देनी है उसे उस आगम की वाचना दे।

४ आचार्य या उपाध्याय अपने गण मे ग्लान या शैक्ष्य (नवदीक्षित) की सेवा के लिए सम्यक् व्यवस्था करे।

५ गण मे रहने वाले श्रमण गुरु की आज्ञा से विहार करें।

४०० क—पांच निषद्यायें (बैठने के ढग) कही गई हैं। यथा—

१ उत्कुटिका—उकडु बैठना।

२ गोदोहिका—गाय दुहे उस आसन से बैठना।

३ समपादपुता—पैर और पुत से पृथ्वी का स्पर्श करके बैठना।

४ पर्यंका—पालथी मारकर बैठना।

५ अवपर्यंका—अर्ध पद्मासन से बैठना।

ख पांच आजव (सवर) के हेतु कहे गये हैं। यथा—

१ शुभ आर्जव, २ शुभ मार्दव, ३ शुभ लाघव,

४ शुभ क्षमा,　५ शुभ निर्लोभता।

४०१ क—पाँच ज्योतिष्क देव कहे गये हैं। यथा—

१ चन्द्र, २ सूर्य, ३ ग्रह, ४ नक्षत्र, ५ तारा।

ख　पाँच प्रकार के देव कहे गये हैं। यथा

१ भव्य द्रव्य देव—देवताओं में उत्पन्न होने योग्य मनुष्य और तिर्यंच।

२ नर देव—चक्रवर्ती।

३ धर्मदेव—साधु।

४ देवाधिदेव—अरिहन्त।

५ भावदेव—देवभव के आयुष्य का अनुभव करने वाले भवनपति आदि ४ प्रकार के देव।

४०२—पाँच प्रकार की परिचारणा (विषय सेवन) कही गई हैं। यथा—

१ काय-परिचारणा—केवल काया से मैथुन सेवन करना। यह परिचारणा दूसरे देवलोक तक होती है।

२ स्पर्श परिचारणा—केवल स्पर्श होने से विषयेच्छा की पूर्ति होना। यह तीसरे चौथे देवलोक तक होती है।

३ रूप परिचारणा—केवल रूप देखने से विषयेच्छा की पूर्ति होना। यह परिचारणा पांचवे, छठे देवलोक

तक होती है।

४ शब्द परिचारणा—केवल शब्द श्रवण से विषयेच्छा की पूर्ति होना। यह परिचारणा सातवें, आठवें देवलोक तक होती है।

५ मन परिचारणा—केवल मानसिक संकल्प से विषयेच्छा की पूर्ति होना। यह परिचारणा नवमे से बारहवें देवलोक तक होती है।

४०३ क—चमर असुरेन्द्र की पाँच अग्रमहिषिया कही गई हैं।
यथा—१ काली, २ रात्रि,
३ रजनी, ४ विद्युत, ५ मेघा।

ख—बलि वैरोचनेन्द्र की पांच अग्रमहिषियाँ कही गई हैं।
यथा—१ शुभा, २ निशुभा,
३ रभा, ४ निरभा, ५ मदना।

४०४ क—चमर असुरेन्द्र की पाँच-सेनायें हैं और उनके पाँच सेनापति हैं। यथा—

१ पैदल सेना, २ अश्व सेना,
३ हस्ति सेना, ४ महिष सेना,
५ रथ सेना।

पाँच सेनापति—

१. द्रुम—पैदल सेना का सेनापति।

२ सौदामी अश्वराज—अश्व सेना का सेनापति।

३ कुंथु हस्तीराज—हस्तिसेना का सेनापति।

४ लोहिताक्षमहिषराज—महिष सेना का सेनापति।

५ किन्नर—रथ सेना का सेनापति।

ख—बलि वैरोचनेन्द्र की पांच सेनायें हैं और उनके पांच पांच सेनापति हैं। यथा—

१ पैदल सेना—यावत् २-५ रथ सेना।

पांच सेनापति—

१ महद्रुम—पैदल सेना के सेनापति।

२ महासौदाम अश्वराज—अश्वसेना के सेनापति।

३ मालकार हस्तीराज—हस्तिसेना के सेनापति।

४ महालोहिताक्ष महिषराज—महिष सेना के सेनापति।

५ किंपुरुष—रथसेना के सेनापति।

ग—धरण नागकुमारेन्द्र की पांच सेनायें हैं और उनके पांच सेनापति हैं, यथा—

१ पैदल सेना—यावत २-५ रथ सेना।

पांच सेनापति—

१ भद्रसेन—पैदल सेना के सेनापति।

२ यशोधर अश्वराज—अश्व सेना के सेनापति।

३ सुदर्शन हस्तिराज—हस्ति सेना के सेनापति।

४ नीलकंठ महिषराज—महिष सेना के सेनापति।

५ आनन्द—रथसेना के सेनापति।

घ—भूतानन्द नागकुमारेन्द्र की पांच सेनाएं है और पांच सेनापति हैं। यथा—

१ पैदल सेना—यावत् २-५ रथ सेना।

पांच सेनापति—

१ दक्ष—पैदल सेना का सेनापति।

२ सुग्रीव अश्वराज—अश्व सेना का सेनापति।

३ सुविक्रम हस्तिराज—हस्ति सेना का सेनापति।

४ श्वेतकण्ठ महिषराज—महिष सेना का सेनापति।

५ नन्दुत्तर—रथ सेना का सेनापति।

ङ—वेणुदेव सुपर्णेन्द्र की पांच सेनापति और पांच सेनाएं। यथा—

१ पैदल सेना यावत् २-५ रथ सेना।

२ धरण के सेनापतियो के नाम के समान वेणुदेव के सेनापतियो के नाम है।

३ भूतानन्द के सेनापतियो के नाम के समान वेणुदालिय के सेनापतियो के नाम हैं।

(च-ठ)—धरण के सेनापतियो के नाम के समान सभी

२ सौदामी अश्वराज—अश्व सेना का सेनापति।

३ कुंथु हस्तीराज—हस्तिसेना का सेनापति।

४ लोहिताक्षमहिषराज—महिष सेना का सेनापति

५ किन्नर—रथ सेना का सेनापति।

ख—बलि वैरोचनेन्द्र की पांच सेनायें हैं और उनके पांच सेनापति हैं। यथा—

१ पैदल सेना—यावत् २-५ रथ सेना।

पांच सेनापति—

१ महद्रुम—पैदल सेना के सेनापति।

२ महासौदाम अश्वराज—अश्वसेना के सेनापति।

३ मालकार हस्तीराज—हस्तिसेना के सेनापति।

४ महालोहिताक्ष महिषराज—महिष सेना के सेनापति।

५ किंपुरुष—रथसेना के सेनापति।

ग—धरण नागकुमारेन्द्र की पांच सेनायें हैं और उनके पांच सेनापति हैं, यथा—

१ पैदल सेना—यावत् २-५ रथ सेना।

पांच सेनापति—

१ भद्रसेन—पैदल सेना के सेनापति।

२ यशोधर अश्वराज—अश्व सेना के सेनापति।

३ सुदर्शन हस्तिराज—हस्ति सेना के सेनापति ।

४ नीलकंठ महिषराज—महिष सेना के सेनापति ।

५ आनन्द—रथसेना के सेनापति ।

घ—भूतानन्द नागकुमारेन्द्र की पाँच सेनाएँ है और पाँच सेनापति हैं। यथा—

१ पैदल सेना—यावत् २-५ रथ सेना ।

पाँच सेनापति—

१ दक्ष—पैदल सेना का सेनापति ।

२ सुग्रीव अश्वराज—अश्व सेना का सेनापति ।

३ सुविक्रम हस्तिराज—हस्ति सेना का सेनापति ।

४ श्वेतकण्ठ महिषराज—महिष सेना का सेनापति ।

५ नन्दुत्तर—रथ सेना का सेनापति ।

ङ—वेणुदेव सुपर्णेन्द्र की पाँच सेनापति और पाँच सेनाएँ। यथा—

१ पैदल सेना यावत् २-५ रथ सेना ।

२ धरण के सेनापतियो के नाम के समान वेणुदेव के सेनापतियो के नाम हैं।

३ भूतानन्द के सेनापतियो के नाम के समान वेणुदालिय के सेनापतियो के नाम हैं।

(च-ठ)—धरण के सेनापतियो के नाम के समान सभी

दक्षिण दिशा के इन्द्रो के यावत् घोस के सेनापतियों के नाम हैं।

(ड न)—भूतानन्द के सेनापतियो के नाम के समान सभी उत्तर दिशा के इन्द्रो के यावत महाघोस के सेना पतियो से नाम हैं।

प—शक्रेन्द्र की पांच सेनाएं हैं और उनके पांच सेना पति हैं। यथा—

१ पैदल सेना, २ अश्व सेना, ३ गज सेना,

४ वृषभ सेना, ५ रथ सेना।

१ हरिणगमेंषी—पैदल सेना का सेनापति।

२ वायु अश्वराज—अश्व सेना का सेनापति।

३ एरावण हस्तिराज—हस्ति सेना का सेनापति।

४ दामर्धि वृषभराज—वृषभ सेना का सेनापति।

५ मावर—रथ सेना का सेनापति।

फ—शक्रेन्द्र की पांच सेनायें हैं, और उनके पांच सेनापति हैं। यथा—

१ पैदल सेना यावत् २-४ वृषभ सेना, ५ रथ सेना।

पांच सेनापति—

१ लघुपराक्रम—पैदल सेना का सेनापति।

२, महावायु अश्वराज—अश्व सेना का सेनापति।

३ पुष्पदन्त हस्तिराज—हस्ति सेना का सेनापति।

४ महादामर्धि वृषभराज—वृषभ सेना का सेनापति।

५ महामाढर—रथ सेना का सेनापति।

शक्रेन्द्र के सेनापतियो के नाम के समान सभी दक्षिण दिशा के इन्द्रो के यावत् आरणकल्प के इन्द्रो के सेनापतियो के नाम हैं। ईशानेन्द्र के सेनापतियों के समान सभी उत्तर दिशा के इन्द्रो के यावत् अच्युत कल्प के इन्द्रों के सेनापतियो के नाम हैं।

४०५ क—शक्रेन्द्र की आभ्यन्तर परिषदा के देवो की स्थिति पाँच पल्योपम की कही गई है।

ख—ईशानेन्द्र की आभ्यन्तर परिषदा के देवियो की स्थिति पाँच पल्योपम की कही गई है।

४०६—पाँच प्रकार के प्रतिघात कहे गये हैं। यथा—

१ गति प्रतिघात—देवादि गतियो का प्राप्त न होना

२ स्थिति प्रतिघात—देवादि की स्थितियो का प्राप्त न होना।

३ बन्धन प्रतिघात—प्रशस्त औदारिकादि बंधनों का प्राप्त न होना।

४ भोग प्रतिघात—प्रशस्त भोग-सुख का प्राप्त न होना।

३ इस भव मे वेदने योग्य कम मेरे उदय मे आये हैं।
इसलिए यह पुरुष १-मुझे आक्रोश वचन बोलता है
यावत् २-११ मेरे पात्र चुरा लेता है।

४ यदि मैं सम्यक प्रकार से सहन नही करूगा।
,, ,, क्षमा नही करूगा।
,, ,, तितिक्षा नही करूँगा।
,, ,, निश्चल नही रहूँगा।
तो मेरे केवल पाप कर्म का बध होगा।

५ यदि मैं सम्यक् प्रकार से सहन करूगा।
,, ,, क्षमा करूगा।
,, ,, तितिक्षा करूगा।
,, ,, निश्चल रहूँगा।
तो मेरे केवल कर्मों की निर्जरा ही होगी।

ख पाच कारणों से केवली उदय मे आये हुए परीषहों
और उपसर्गों को—

१ समभाव से सहन करता है-यावत्
२-४ ,, निश्चल रहता है। यथा—

१ यह विक्षिप्त पुरुष है, इसलिए १ मुझे आक्रोश
वचन बोलता है—यावत-२-११ मेरे पात्र चुरा
लेता है।

२ यह दृप्तचित्त (अभिमानी) पुरुष है, इसलिये—
१ मुझे आक्रोश वचन बोलता है-यावत-

२-११ मेरे पात्र चुरा लेता है ।

३ यह यक्षाविष्ट पुरुष है-इसलिये-

१ मुझे आक्रोश वचन बोलता है-यावत्-

२-११ मेरे पात्र चुरा लेता है ।

४ इस भव मे वेदने योग्य कर्म मेरे उदय मे आये हैं, इसलिए यह पुरुष—

१ मुझे आक्रोश वचन बोलता है-यावत

२-११-मेरे पात्र चुरा लेता है ।

५ मुझे सम्यक प्रकार से सहन करते हुए, क्षमा करते हुए, तितिक्षा करते हुए या निश्चल रहते हुए देखकर अन्य अनेक छद्मस्थ श्रमण निग्रन्थ उदय मे आये हुए परीषहो और उपसर्गों को सम्यक् प्रकार से सहन करेंगे यावत निश्चल रहेगे ।

४१० क—पाच प्रकार के हेतु कहे गये है, यथा—

१ अनुमान प्रमाण के अग धूमादि हेतु को जानता नही है,

२ ,, ,, देखता नही है,

३ ,, धूमादि हेतु पर श्रद्धा नही करता है ।

४ ,, धूमादि हेतु को प्राप्त नही करता है ।

५ ,, जाने विना अज्ञान मरण मरता है ।

ख—पाच प्रकार के हेतु कहे गये हैं, यथा—

१ हेतु से जानता नही है, यावत २-५ हेतु से अज्ञान मरण मरता है।

ग—२ पाच प्रकार के हेतु कहे गये हैं, यथा—

१ हेतु से जानता है, यावन २-५ हेतु से छद्मस्थ मरण मरता है।

घ—पाच हेतु कहे गये हैं, यथा—

१ हेनु मे जानता है, यावत् २-५ हतु से छद्मस्थ मरण मरता है।

ङ—पाच अहेतु कहे गय हैं, यथा—

१ अहेतु को नही जानता है, यावत्-२-५ अहेतु रूप छद्मस्थ मरण मरता है।

च—पाच अहेतु कहे गये हैं, यथा—

१ अहेतु से नही जामता है, यावत्-२-५ अहतु से छद्मस्थ मरण मरता है।

छ—पाच अहेतु कहे गय हैं, यथा—

१ अहेतु को जानता है-यावत् २-५ अहेतु रूप केवली मरण मरता है।

ज—पाच अहेतु कहे गये है, यथा—

१ अहेनु मे जानना है-यावत २-५ अहतु से केवली मरण मरता है।

भ—पाच गुण केवली के अनुत्तर (श्रेष्ठ) कहे गये हैं-यथा—

१ अनुत्तर ज्ञान २ अनुत्तर दर्शन, ३ अनुत्तर चारित्र, ४ अनुत्तर तप, ५ अनुत्तर वीर्य ।

४११ क—पद्मप्रभ अर्हन्त के पांच कल्याणक चित्रा नक्षत्र मे हुये हैं, यथा—

१ चित्रा नक्षत्र मे देवलोक से च्यवकर गर्भ मे उत्पन्न हुए ।

२ ,, जन्म हुआ,

३ ,, प्रव्रजित हुए,

४ ,, अनत, अनुत्तर, निर्व्याघात, [निरावरण] पूर्ण, प्रतिपूर्ण केवल ज्ञान-दर्शन उत्पन्न हुआ ।

५ चित्रा नक्षत्र मे निर्वाण प्राप्त हुए

ख—पुष्पदन्त अर्हन्त के पाच कल्याणक मूल नक्षत्र मे हुए, यथा—

१ मूल नक्षत्र मे देवलोक से च्यवकर गर्भ मे उत्पन्न हुए

२-५ ,, जन्म यावत् निर्वाण कल्याणक कहे ।

ग-त—तीर्थंकरो के कल्याणक इन गाथाओ से समझें ।

१ पद्मप्रभ अर्हन्त के पाच कल्याणक चित्रा नक्षत्र मे हुए ।

२ पुष्पदन्त अर्हन्त के पाच कल्याणक मूल नक्षत्र मे हुए।

३ शीतल अर्हन्त के पाच कल्याणक पूर्वाषाढा नक्षत्र मे हुए।

४ विमल अर्हन्त के पाच कल्याणक उत्तराभाद्रपद नक्षत्र मे हुए।

५ अनन्त अर्हन्त के पाच कल्याणक रेवति नक्षत्र मे हुए।

६ धर्मनाथ अर्हन्त के पाच कल्याणक पुष्य नक्षत्र मे हुए।

७ शातिनाथ अर्हन्त के पाच कल्याणक भरणी नक्षत्र मे हुए।

८ कुन्थुनाथ अर्हन्त के पाच कल्याणक कृत्तिका नक्षत्र मे हुए।

९ अरनाथ अर्हन्त के पाँच कल्याणक रेवति नक्षत्र मे हुए।

१० मुनिसुव्रत अर्हन्त के पाच कल्याणक श्रवण नक्षत्र मे हुए।

११ नमि अर्हन्त के पाच कल्याणक अश्विनी नक्षत्र मे हुए।

१२ नेमिनाथ अर्हन्त के पाच कल्याणक चित्रा नक्षत्र मे हुए।

१३ पार्श्वनाथ अर्हन्त के पाच कल्याणक विशाखा नक्षत्र मे हुए।

१४ भ० महावीर के पाच कल्याणक हस्तोत्तरा (चित्रा) नक्षत्र मे हुए।

ख—श्रमण भगवान् महावीर के पाच कल्याणक हस्तो—त्तरा नक्षत्र मे हुऐ।

यथा—१ भ० महावीर हस्तोत्तरा नक्षत्र मे देवलोक से च्यवकर गर्भ मे उत्पन्न हुए।

२ ,, ,, देवानन्दा के गर्भ से त्रिशला के गभ मे आये।

३ ,, ,, जन्म हुआ।

४ ,, ,, दीक्षित हुए।

५ ,, ,, केवलज्ञान दर्शन उत्पन्न हुआ।

—पचम स्थान का प्रथम उद्देशक समाप्त—

पचम स्थान द्वितीय उद्देशक

४१२ क—निग्रन्थ और निग्रन्थियो को ये पांच महानदियां एक माग मे दो या तीन बार तैर कर पार करना या नौका द्वारा पार करना नही कल्पता है।

यथा—१ गगा, २ यमुना, ३ सरयू, ४ ऐरावती, ५ मही।

४ आचार्य या उपाध्याय के मरने पर अन्य आचार्य या उपाध्याय के आश्रय में जाने के लिये।

५ आचार्यादि द्वारा या अन्यत्र रहे हुए आचार्यादि की सेवा के लिए भेजने पर।

४१४ —पाँच अनुद्घातिक (महा प्रायश्चित देने योग्य) कहे गये हैं, यथा—

१ हस्त कर्म करने वाले को,

२ मैथुन सेवन करने वाले को,

३ रात्रि भोजन करने वाले को,

४ सागारिक (जिसकी आज्ञा से मकान मे ठहरे हैं) के घर से लाया हुआ आहार खाने वाले को।

५ राजपिंड खाने वाले को।

४१५ —पाच कारणो से श्रमण निर्ग्रन्थ अन्तःपुर मे प्रवेश करे तो भगवान् की आज्ञा का अतिक्रमण नहीं करता है। यथा—

१ पर सैन्य से नगर घिर गया हो या आक्रमण के भय से नगर के द्वार बन्द कर दिये गैए हों और श्रमण ब्राह्मण आहार-पानी के लिए कही आ जा न सकते हो तो श्रमण-निर्ग्रन्थ अन्त पुर मे सूचना-देने के लिए जा मकता है।

१ रजस्राव काल मे पुरुष के साथ विधिवत् सहवास न करने वाली।

२ योनि-दोष से शुक्राणुओं के नष्ट होने पर।

३ जिसका पित्त प्रधान रक्त हो वह।

४ गर्भ धारण से पूर्व देवता द्वारा शक्ति नष्ट किये जाने पर।

५ सतान होना भाग्य मे न हो तो।

४१७ क—पाच कारणो से निर्ग्रन्थ और निर्ग्रन्थियां एक जगह ठहरें, सोयें या बैठें तो भगवान् की आज्ञा का अतिक्रमण नही होता है। यथा—

१ निर्ग्रन्थ और निर्ग्रन्थियां कदाचित अनेक योजन लम्बी, निर्जन एव अगम्य अटवी मे पहुँच जाय तो—

२ किसी ग्राम, नगर यावत् राजधानी मे निर्ग्रन्थ या निर्ग्रन्थियो मे से किसी एक को ही उपाश्रय मिला हो तो—

३ नागकुमार या सुपर्णकुमारावास मे स्थान मिला हो तो—

४ निर्ग्रन्थियो के वस्त्र यदि चोर ले जायें तो—

५ यदि तरुण गुण्डे निर्ग्रन्थियो के साथ बलात्कार करना चाहें तो—

ख—पांच कारणो से अचेल (अल्पवस्त्रधारी) निर्ग्रन्थ सचेल (सवस्त्र) निर्ग्रन्थियो के साथ एक स्थान मे रहे तो भगवान् की आज्ञा का अतिक्रमण नही करता है। यथा—

१ विक्षिप्त चित्त श्रमण के साथ यदि अन्य श्रमण न हो तो—

२ इसी प्रकार हर्षातिरेक से दृप्तचित्त

३ यक्षाविष्ट और

४ वायु रोग से उन्मत्त हो तो—

५ किसी साध्वी का पुत्र दीक्षित हो और उसके साथ यदि अन्य श्रमण न हो तो।

४१८ क—पाच आश्रवद्वार कहे गए हैं, यथा—

१ मिथ्यात्व, २ अविरति, ३ प्रमाद, ४ कषाय, ५ अशुभयोग।

ख—पांच संवर द्वार कहे गये हैं,—यथा

१ सम्यक्त्व, २ विरति, ३ अप्रमाद, ४ अकषाय, ५ शुभयोग।

ग—पाच प्रकार का दण्ड कहा गया है, यथा—

१ अर्थ दण्ड—स्व-पर के हित के लिए त्रस या स्थावर प्राणी की हिंसा।

२. अनर्थ दण्ड—निरर्थक हिंसा।

अ—ये पाचो क्रियायें केवल एक मनुष्य दण्डक मे हैं। शेष दण्डको मे नही हैं।[1]

४२० परिज्ञा पाच प्रकार की हैं,
यथा— १ उपधि परिज्ञा, २ उपाश्रय परिज्ञा, ३ कषाय परिज्ञा, ४ योग परिज्ञा, ५ भक्त परिज्ञा।

४२१ व्यवहार पाच प्रकार का है, यथा —
१ आगम व्यवहार[2], २ श्रुत व्यवहार[3], ३ आज्ञा व्यवहार, ४ धारणा व्यवहार[4], ५ जीत व्यवहार।
१ किसी विवादास्पद विषय मे जहां तक आगम मे कोई निणय निकलता हो वहा तक आगम के अनुसार ही व्यवहार करना चाहिये।

---

१ ईर्यापथिक क्रिया केवल उपशान्त मोह आदि तीन गुण स्थानको मे ही सम्भव है। ये गुणस्थान केवल मनुष्य दण्डक मे ही होते हैं।

२ केवलज्ञानी, मन पर्यवज्ञानी, अवधिज्ञानी, चौदह पूर्वधारी, दशपूर्वधारी, और नवपूर्वधारी का व्यवहार "आगम व्यवहार" कहा जाता है।

३ नव पूर्व से न्यून ज्ञान वाले का व्यवहार "श्रुत व्यवहार" कहा जाता है।

४ गीतार्थ ने पहले किसी को प्रायश्चित दिया हो उसे धारे-याद रखे और उसके अनुसार अन्य को प्रायश्चित दे, यह धारणा व्यवहार कहा जाता है।

२ जहां किसी आगम मे निर्णय न निकलता हो वहां श्रुत से व्यवहार करना चाहिए।

३ जहां श्रुत से निणय न निकलता हो वहा गीतार्थ की आज्ञा के अनुसार व्यवहार करना चाहिये।

४ जहा गीतार्थ की आज्ञा से समस्या हल न होती हो वहा धारणा के अनुसार व्यवहार करना चाहिए।

५ जहा धारणा से समस्या न सुलझती हो वहा जीत (गीतार्थ पुरुषो की परम्परा द्वारा अनुसरित) हार के अनुसार व्यवहार करना चाहिए।

इस प्रकार आगमादि से व्यवहार करना चाहिए।

प्रश्न—हे भगवन्। श्रमण निर्ग्रन्थ आगम व्यवहार को ही प्रमुख मानने वाले हैं फिर ये पांच व्यवहार क्यो कहे गये हैं?

उत्तर—इन पांच व्यवहारो मे से जहा जिस व्यवहार से समस्या सुलझती हो वहा उस व्यवहार से प्रवृत्ति करने वाला श्रमण निर्ग्रंथ आज्ञा का आराधक होता है।

४२२ क—सोये हुये सयत मनुष्यों के पाच जागृत हैं,
यथा—शब्द-यावत्-स्पर्श।

ख—जागृत सयत मनुष्यो के पाच सुप्त हैं,
यथा—शब्द-यावत्-स्पर्श।

ग—सुप्त या जागृत असयत मनुष्यो के पाच जागृत है,
यथा—शब्द-यावत-स्पर्श ।

४२३ क—पाच कारणो से जीव कर्म-रज ग्रहण करता है,
यथा—प्राणातिपात से-यावत्-परिग्रह से ।

ख—पाच कारणो से जीव कर्म-रज से मुक्त होता है,
यथा—प्राणातिपात विरमण से — यावत-परिग्रह
विरमण से ।

४२४ पाच मास वाली पांचवी भिक्षु प्रतिमा धारण करने
वाले अणगार को पांच दत्ति आहार की और पांच
पाच दत्ति पानी की लेना कल्पता है ।

४२५ क—पाच प्रकार के उपघात (आहारादि की अशुद्धि) हैं।
यथा—१ उद्गमोपघात—गृहस्थ द्वारा लगने वाले
आधा कर्म आदि सोलह दोष ।

२ उत्पादनोपघात—साधु द्वारा लगने वाले धात्री
आदि सोलह दोष ।

३ एषणोपघात— साधु और गृहस्थ द्वारा लगने
वाले शकितादि दश दोष ।

४ परिकर्मोपघात—वस्त्र पात्र के छेदन या सिलाई
आदि मे मर्यादा का उल्लघन ।

५ परिहरणोपघात—एकाकी विचरने वाले साधु
के वस्त्र पात्रादि उपकरणो का उपयोग न करो ।

ख—पाच प्रकार की विशुद्धि कही गई है,

यथा—१ उदगम विशुद्धि, २ उत्पादन विशुद्धि, ३ एषणा विशुद्धि, ४ परिकर्म विशुद्धि, ५ परिहरण विशुद्धि। पूर्वोक्त उद्गमादि दोषो का सेवन न करना विशुद्धि है।

४२६ क—पाच कारणों से जीव दुलभ बोधी रूप कम बाधते है,

यथा—१ अरिहन्तों का अवणवाद[1] बोलने पर,

२ अरिहन्त कथित धर्म का अवणवाद बोलने पर,

३ आचार्यो या उपाध्यायो का अवर्णवाद बोलने पर,

४ चतुर्विध सघ का अवर्णवाद बोलने पर,

५ उत्कृष्ट तप और ब्रह्मचर्य का पालन करने से हुये देवो का अवणवाद बोलने पर।

ख—पाच कारणों से जीव सुलभ बोधि रूप कम बाधते हैं।

यथा—१-५ अरिहन्तो का गुणानुवाद करने पर-यावत् उत्कृष्ट तप और ब्रह्मचय के पालने से हुए देवो के गुणानुवाद करने पर।

४२७ क—प्रतिसलीन[2] पाच प्रकार के ह,

यथा—१ श्रोत्रेन्द्रिय प्रतिसलीन-यावत्-२-४

---

१ अवर्णवाद—निन्दा।

२ प्रतिसलीन—इन्द्रियविजयी।

५ स्पर्शेन्द्रिय प्रतिसलीन ।

ख—अप्रतिसलीन पांच प्रकार के हैं,

यथा—१ श्रोत्रेन्द्रिय अप्रतिसलीन-यावत्-२-४

५ स्पर्शेन्द्रिय अप्रतिसलीन ।

ग—संवर[1] पांच प्रकार के हैं,

यथा—१ श्रोत्रेन्द्रिय संवर-यावत-२-४

५ स्पर्शेन्द्रिय संवर ।

घ—असंवर[2] पांच प्रकार के हैं,

यथा—१-५ श्रोत्रेन्द्रिय असंवर-यावत्-
स्पर्शेन्द्रिय असंवर ।

४२८ —संयम पांच प्रकार का है,

यथा—१ सामायिक संयम, २ छेदोपस्थापनीय संयम, ३ परिहार विशुद्धि संयम, ४ सूक्ष्म संपराय संयम, ५ यथाख्यात चारित्र संयम ।

४२९ क—एकेन्द्रिय जीवों की हिंसा न करने वाले को पांच प्रकार का संयम होता है,

यथा—१-५ पृथ्वीकायिक संयम-यावत-
वनस्पतिकायिक संयम ।

---

१ संवर—आत्मा के साथ कर्ममल का बंध न हो—ऐसा आचरण ।

२ असंवर आश्रव आत्मा के साथ कर्म बंध हो ऐसा आचरण ।

ख—एकन्द्रिय जीवा की हिसा करन वाल का पाच प्रकार का असयम होता है,

यथा—१-५ पृथ्वी कायिक असयम-यावत्-
वनस्पतिकायिक असयम ।

४३० क—पञ्चेन्द्रिय जीवो की हिसा न करने वालो के पाच प्रकार का सयम होता है,

यथा-१ श्रोत्रेन्द्रिय सयम-यावत-२-४
५ स्पर्शेन्द्रिय सयम

ख—पचेन्द्रिय जीवो की हिसा करने वालो के पांच प्रकार का असयम होता है,

यथा—१ श्रोत्रेन्द्रिय असयम-यावत्-२-४
५ स्पर्शेन्द्रिय असयम ।

ग—सभी प्राण, भूत, सत्त्व और जीवो की हिसा न करने वालो के पाच प्रकार का सयम होता है,

यथा—१-५ एकन्द्रिय सयम-यावत्-
पचेन्द्रिय सयम ।

घ—सभी प्राण, भूत, सत्त्व और जीवो की हिसा करने वालो के पाच प्रकार का असयम होता है,

यथा—१-५ एकेन्द्रिय असयम-यावत्
पचेन्द्रिय असयम ।

५ स्पर्शेन्द्रिय प्रतिसलीन ।

ख—अप्रतिसलीन पाच प्रकार के हैं,

यथा—१ श्रोत्रेन्द्रिय अप्रतिसलीन यावत् २-४

५ स्पर्शेन्द्रिय अप्रतिसलीन ।

ग—सवर[1] पाँच प्रकार के हैं,

यथा—१ श्रोत्रेन्द्रिय सवर-यावत-२-४

५ स्पर्शेन्द्रिय सवर ।

घ—असवर[2] पाच प्रकार के हैं,

यथा–१-५ श्रोत्रेन्द्रिय असवर-यावत्-
स्पर्शेन्द्रिय असवर ।

४२८ —सयम पाच प्रकार का है,

यथा— १ सामायिक सयम, २ छेदोपस्थापनीय मयम, ३ परिहार विशुद्धि सयम, ४ सूक्ष्म सपराय सयम, ५ यथाख्यात चारित्र सयम ।

४२९ क—एकेन्द्रिय जीवो की हिंसा न करने वाले को पाच प्रकार का सयम होता है,

यथा—१-५ पृथ्वीकायिक सयम-यावत्-
वनस्पतिकायिक सयम ।

---

१ सवर—आत्मा के साथ कर्ममल का बध न हो—ऐसा आचरण ।

२ असवर आश्रव-आत्मा के साथ कर्म बध हो ऐसा आचरण ।

ख—एकेन्द्रिय जीवा की हिसा करन वाल का पाच
प्रकार का असयम होता है,
यथा—१-५ पृथ्वी कायिक असयम-यावत्-
वनस्पतिकायिक असयम।

४३० क—पञ्चेन्द्रिय जीवो की हिंसा न करने वालों के पांच
प्रकार का सयम होता है,
यथा-१ श्रोत्रेन्द्रिय सयम-यावत-२-४
५ स्पर्शेन्द्रिय सयम

ख—पचेन्द्रिय जीवो की हिंसा करने वालो के पांच प्रकार
का असयम होता है,
यथा—१ श्रोत्रेन्द्रिय असयम-यावत्-२-४
५ स्पर्शेन्द्रिय असयम।

ग—सभी प्राण, भूत, सत्व और जीवो की हिंसा न
करने वालो के पाच प्रकार का सयम होता है,
यथा—१-५ एकेन्द्रिय सयम-यावत्-
पचेन्द्रिय सयम।

घ—सभी प्राण, भूत, सत्व और जीवो की हिंसा करने
वालों के पाच प्रकार का असयम होता है,
यथा—१-५ एकेन्द्रिय असयम-यावत्
पचेन्द्रिय असयम।

४३१ —तृणवनस्पति कायिक जीव पाच प्रकार के है,
यथा—१ अग्रबीज, २ मूल बीज, ३ पर्व बीज,
४ स्कन्ध बीज, ५ बीज रुह।

४३२ —आचार पाच प्रकार का है,
यथा—१ ज्ञानाचार, २ दर्शनाचार, ३ चारित्रा
चार, ४ तपाचार ५ वीर्याचार।

४३३ क—आचार प्रकल्प[1] पांच प्रकार का है,
यथा—१ मासिक उद्घातिक-लघुमास[2],
२ मासिक अनुद्घातिक—गुरुमास[3],
३ चातुर्मासिक उद्घातिक—लघु चौमासी,
४ चातुर्मासिक अनुद्घातिक—गुरु चौमासी,
५ आरोपणा[4]—प्रायश्चित मे वृद्धि करना।

---

१ आचार प्रकल्प—निशीथ सूत्रोक्त प्रायश्चित्त।

२ लघुमास—मासिक तपश्चर्यारूप प्रायश्चित्त मे कुछ अश कम करना।

३ गुरुमास—मासिक तपश्चर्यारूप प्रायश्चित्त में कुछ भी कमी न करना।

४ आरोपणा—गुरु के समक्ष यदि दोष छिपावे तो दोष के प्रायश्चित के साथ-साथ माया दोष का जो प्रायश्चित और अधिक बढ़ाया जाय तो वह आरोपणा है।

ख—आरोपणा पांच प्रकार की है,

यथा—१ प्रस्थापिता—आरोपणा करने के गुरुमास आदि प्रायश्चित रूप तपश्चर्या का प्रारम्भ करना।

२ स्थापिता—गुरुजनों की वैयावृत्य करने के लिये आरोपित प्रायश्चित के अनुसार भविष्य मे तपश्चर्या करना।

३ कृत्स्ना—वर्तमान जिन शासन में उत्कृष्ट तप ६ मास का माना गया है अत इससे अधिक प्राय-श्चित न देना।

४ अकृत्स्ना—यदि दोष के अनुसार प्रायश्चित देने पर छ मास से अधिक प्रायश्चित आता हो तथापि छ मास का ही प्रायश्चित देना।

५ हाडहडा—लघुमास आदि प्रायश्चित शीघ्रता-पूर्वक देना।

४३४ क—जम्बूद्वीप मे मेरु पर्वत के पूर्व में सीता महानदी के उत्तर मे पाच वक्षस्कार पवत हैं,

यथा—१ माल्यवत, २ चित्रकूट, ३ पद्मकूट, ४ नलिनकूट, ५ एक शैल।

ख—जम्बूद्वीप मे मेरु पर्वत के पूर्व मे सीता महानदी के दक्षिण मे पाच वक्षस्कार पवत हैं,

यथा—१ त्रिकूट, २ वैश्रमणकूट, ३ अजन, ४ मातजन, ५ सोमनस।

ग—जम्बूद्वीप मे मेरु पर्वत के पश्चिम में सीता महानदी के दक्षिण मे पांच वक्षस्कार पवत हैं,

यथा—१ विद्युत्प्रभ, २ अकावती, ३ पद्मावती, ४ आशिविष, ५ सुखावह ।

घ—जम्बूद्वीप मे मेरु पवत के पश्चिम मे सीता महानदी के उत्तर मे पाच वक्षस्कार पवत हैं,

यथा—१ चन्द्रपर्वत, २ सूय पवत, ३ नाग पवत, ४ देव पर्वत, ५ गन्धमादन पवत ।

ङ—जम्बूद्वीप मे मेरु पवत के दक्षिण मे देव कुरुक्षेत्र मे पाच महाद्रह हैं,

यथा—१ निषधद्रह, २ देवकुरुद्रहें, ३ सूयद्रह, ४ सुलसद्रह, ५ विद्युत्प्रभद्रह ।

च—जम्बूद्वीप में मेरु पवत के के दक्षिण मे उत्तर कुरुक्षेत्र मे पाँच महाद्रह हैं,

यथा—१ नीलवतद्रह, २ उत्तर कुरुद्रह, ३, चन्द्रद्रह ४ एरावणद्रह, ५ माल्यवतद्रह ।

छ—सीता, सीतोदा महा नदी की ओर तथा मेरु पवत की ओर सभी वक्षस्कार पर्वत ५०० योजन ऊँचे हैं, और ५०० गाउ भूमि मे गहरे हैं ।

ज-ट—धातकीखण्ड के पूर्वार्ध मे मेरु पवत के पूर्व मे, सीता महानदी के उत्तर मे पाँच वक्षस्कार पर्वत है [जम्बूद्वीप के समान] [ख से छ तक]

ण-न—धातकीखण्ड के पश्चिमार्ध मे [जम्बूद्वीप के समान]

प-य—पुष्करवरद्वीपार्ध के पश्चिमार्ध मे भी जम्बूद्वीप के समान वक्षस्कार पर्वत और द्रहों की ऊँचाई आदि कहना चाहिये ।

र—समय क्षेत्र मे पाच भरत, पाच ऐरवत-यावत्-पांच मेरु और पांच मेरु चूलिकायें ।[1]

४३५ क—कौशलिक अर्हन्त ऋषभदेव पाच सौ धनुष के ऊचे थे ।

ख—चक्रवर्ती महाराजा भरत पांच सौ धनुष के ऊचे थे ।

ग—बाहुबली अणगार भी इतने ही ऊचे थे ।

घ—ब्राह्मी नाम की आर्या पाच सौ धनुष ऊची थी ।

ङ—इसी प्रकार सुन्दरी नाम की आर्या भी इतनी ही ऊची थी ।

४३६ पांच कारणो से सोया हुआ मनुष्य जागृत होता है, यथा—१ शब्द सुनने से, २ हाथ आदि के स्पर्श से, ३ भूख लगने से, ४ निद्रा क्षय से, ५ स्वप्न दर्शन से ।

---

१ सूचना–चतुर्थ स्थान के द्वितीय उद्देशक सूत्र के समान यहां कहें ।
विशेष सूचना–यहाँ इषुकार पर्वत नहीं है ।

४ स्वगण की या परगण की निग्रन्थी मे आसक्त हो जाय तो।

५ मित्र या स्वजन यदि गण छोडकर चला जाय तो उसे पुन स्वगण मे स्थापित करने के लिए आचार्य या उपाध्याय गण छोडकर चला जाय तो।

४४० पाच प्रकार के ऋद्धिमान् मनुष्य हैं,
यथा—१ अर्हन्त, २ चक्रवर्ती, ३ बलदेव, ४ वासुदेव, ५ भावितात्मा अणगार।

पचम स्थान-द्वितीय उद्देशक समाप्त

पञ्चम स्थान-तृतीय उद्देशक

४४१ क—पाँच अस्तिकाय हैं—

यथा—१ धर्मास्तिकाय २ अधर्मास्तिकाय,
३ आकाशास्तिकाय, ४ जीवास्तिकाय,
५ पुद्गलास्तिकाय।

ख धर्मास्तिकाय अवर्ण, अगध, अरस, अस्पर्श, अरूपी, अजीव, शाश्वत, अवस्थित लोकद्रव्य हैं।
वह पाँच प्रकार का है,
यथा—१ द्रव्य से, २ क्षेत्र से, ३ काल से, ४ भाव से और ५ गुण से।
१ द्रव्य से—धर्मास्तिकाय एक द्रव्य है,

२ क्षेत्र से—लोक प्रमाण है,

३ काल से—अतीत मे कभी नहीं था—ऐसा नही,
वर्त्तमान मे नहीं है—ऐसा नही,
भविष्य में कभी नही होगा—ऐसा भी नही।

धर्मास्तिकाय अतीत मे था, वर्तमान मे है और भविष्य मे भी रहेगा। वह ध्रुव, नियत, शाश्वत, अक्षय, अव्यय, अवस्थित और नित्य है।

४ भाव से—अवर्ण, अगध, अरस, और अस्पर्श है।

५ गुण से—गमन सहायक गुण है।

ग—अधर्मास्तिकाय धर्मास्तिकाय के समान पांच प्रकार का है।

विशेष सूचना—गुण से-स्थिति सहायक गुण।

घ—आकाशास्तिकाय धर्मास्तिकाय के समान पांच प्रकार का है।

विशेष सूचना—क्षेत्र से-आकाशास्तिकाय लोकालोक प्रमाण है। गुण से-अवगाहन गुण है।

ङ—जीवास्तिकाय धर्मास्तिकाय के समान पाच प्रकार का है।

विशेष सूचना द्रव्य—से जीवास्तिकाय अनन्तजीव द्रव्य हैं। गुण से-उपयोग गुण हैं।

च—पुद्गलास्तिकाय पाच वर्ण, पांच रस, दो गध और

ङ—पांच प्रकार के बादर वायुकायिक जीव हैं,
यथा—१ पूर्व दिशा का वायु, २ पश्चिम दिशा का वायु, ३ दक्षिण दिशा का वायु, ४ उत्तर दिशा का वायु, ५ विदिशाओं का वायु।

च—पांच प्रकार के अचित्त वायुकायिक जीव है,
यथा—१ आक्रान्त—दबाने से पैदा होने वाला वायु।
२ ध्मात—धमण से पैदा होने वाला वायु।
३ पीडित—वस्त्र के नीचोड़ने से होने वाला वायु।
४ शरीरानुगत—डकार या श्वासादि रूप वायु।
५ सम्मूर्च्छिम—पखा आदि से उत्पन्न होने वाला वायु।

४४५ क—निर्ग्रन्थ पांच प्रकार के हैं,
यथा—१ पुलाक[1], २ बकुश[2], ३ कुशील, ४ निर्ग्रन्थ ५ स्नातक।

ख—पुलाक पांच प्रकार के हैं,
यथा—१ ज्ञान पुलाक, २ दर्शन पुलाक, ३ चारित्र पुलाक, ४ लिंग पुलाक, ५ यथासूक्ष्म पुलाक।

ग—बकुश पांच प्रकार के हैं।

---

१ पुलाक—अतिचार लगाने वाला निर्ग्रन्थ।
२ बकुश—दोष लगाने वाला निर्ग्रन्थ।

यथा—१ आभोग बकुश, २ अनाभोग बकुश, ३ सवृत बकुश, ४ असवृत बकुश ५ यथा सूक्ष्म बकुश ।

घ—कुशील पाच प्रकार के हैं,

यथा—१ ज्ञान कुशील, २ दर्शन कुशील, ३ चारित्र कुशील, ४ लिंग कुशील, ५ यथा सूक्ष्म कुशील ।

ङ—निर्ग्रंथ पांच प्रकार हैं,

यथा—१ प्रथम समय निग्रन्थ,

२ अप्रथम समय निर्ग्रन्थ

३ चरम समय निर्ग्रन्थ,

४ अचरम समय निर्ग्रन्थ,

५ यथासूक्ष्म निर्ग्रन्थ ।

च—स्नातक पाच प्रकार के हैं,

यथा—१ अच्छवी—शरीर रहित ।

२ अशबल—अतिचार रहित ।

३ अकर्मांश—कर्म रहित ।

४ शुद्ध ज्ञान—दर्शन के धारक अर्हन्त जिन केवली ।

५ अपरिश्रावी—तीनो योगों का निरोध करनेवाला अयोगी ।

४४६ क—निर्ग्रन्थो और निग्र न्थियो को पाच प्रकार के वस्त्रों का उपभोग या परिभोग कल्पता है,

यथा—१ जागमिक[1] कबल आदि।

२ भागमिक—अलसी का वस्त्र।

३ सानक—शण के सूत्र का वस्त्र।

४ पोतक—कपास का वस्त्र।

५ तिरीडपट्ट[2]—वृक्ष की छाल का वस्त्र।

ख—निर्ग्रन्थों और निर्ग्रन्थियो को पांच प्रकार के रजाहरणो का उपभोग या परिभोग कल्पता है।

यथा—१ औणिक—ऊन का बना हुआ।

२ औष्ट्रिक—ऊँट के बालों का बना हुआ।

३ शानक—शण का बना हुआ।

४ वल्वज—घास की छाल से बना हुआ।

५ मुंज का बना हुआ।

४४७ —धार्मिक पुरुष के पाच आलम्बन स्थान हैं,

यथा—१ छःकाय, २ गण, ३ राजा, ४ गृहपति, ५ शरीर।

---

१ जगम—त्रसजीव भेड़, बकरी आदि की ऊन से बना हुआ।

२ तिरीड—नामक वृक्ष की छाल से बना हुआ।

४४८ —निधि पाच प्रकार की है,

यथा—१ पुत्रनिधि, २ मित्रनिधि, ३ शिल्पनिधि, ४ धननिधि, ५ धान्य निधि।

४४९ —शौच पांच प्रकार का है,

यथा—१ पृथ्वी शौच, २ जल शौच,
३ अग्नि शौच, ४ मत्र शौच,
५ ब्रह्म शौच।

४५० क—इन पांच स्थानों को छद्मस्थ पूर्ण रूप से न जानता है और न देखता है।

यथा—१ धर्मास्तिकाय, २ अधर्मास्तिकाय
३ आकाशास्तिकाय, ४ शरीर रहित जीव,
५ परमाणु पुद्गल।

ख—इन्ही पांच स्थानों को केवलज्ञानी पूर्णरूप से जानते हैं और देखते हैं,

यथा—१-५ धर्मास्तिकाय-यावत्-
परमाणु पुद्गल।

४५१ —ऊर्ध्वलोक मे पाँच महाविमान हैं,
यथा—१ विजय, २ वैजयत, ३ जयत, ४ अपराजयत, ५ सर्वार्थ सिद्ध महाविमान।

४५२ —पुरुष पांच प्रकार के हैं,

यथा—१ ह्री सत्त्व-लज्जा से धैर्य रखने वाला,

२ ह्री मन सत्त्व लज्जा से मन में धैर्य रखने वाला,

३ चल सत्त्व—अस्थिर चित्त वाला,

४ स्थिर सत्त्व-स्थिर चित्त वाला,

५ उदात्त सत्त्व-बढते हुए धैर्य वाला।

४५३ क—मत्स्य पांच प्रकार के है

यथा—१ अनुश्रोतचारी—प्रवाह के अनुसार चलने वाला,

२ प्रतिश्रोतचारी—प्रवाह के सामने जाने वाला।

३ अंतचारी—किनारे किनारे चलने वाला,

४ प्रान्तचारी—प्रवाह के मध्य में चलने वाला,

५ सर्वचारी—सर्वत्र चलने वाला।

ख—इसी प्रकार भिक्षु पांच प्रकार के हैं,

यथा—१-५ अनुश्रोतचारी-यावत्-सर्वश्रोतचारी।

१ उपाश्रय से भिक्षाचर्या प्रारम्भ करने वाला,

२ दूर से भिक्षाचर्या प्रारम्भ करके उपाश्रय तक आने वाला,

३ गांव के किनारे बसे हुए घरों से भिक्षा लेने वाला,

४ गाव के मध्य मे बसे हुए घरों से भिक्षा लेने वाला,

५ सभी घरो से भिक्षा लेने वाला।

४५४ —वनीपक-याचक पाच प्रकार के है,

यथा—अतिथि वनीपक, २ दरिद्री वनीपक,

३ ब्राह्मण वनीपक, ४ श्वान वनीपक,

५ श्रमण वनीपक।

४५५ —पाच कारणों से अचेलक प्रशस्त होता है,

यथा—१ अल्पप्रत्युपेक्षा—अल्प उपधि होने से अल्प-प्रतिलेखन होता है।

२ प्रशस्त लाघव—अल्प उपधि होने से अल्पराग होता है।

३ वैश्वासिक रूप—विश्वास पैदा करने वाला वेष।

४ अनुज्ञात तप—जिनेश्वर सम्मत अल्प उपाधि रूप तप।

५ विपुल इन्द्रिय निग्रह—इन्द्रियो का महान् निग्रह।

४५६ —उत्कट पुरुष पाच प्रकार के हैं,

यथा—१ दण्ड उत्कट—अपराध करने पर कठोर दण्ड देने वाला।

२ राज्योत्कट—ऐश्वर्य में उत्कृष्ट।

३ स्तेन उत्कट—चोरी करने में उत्कृष्ट।

४ देशोत्कट—देश मे उत्कृष्ट।

५ सर्वोत्कट—सब में उत्कृष्ट।

४५७ —समितिया पाच हैं,
यथा १ इर्या समिति यावत्-२-४
५ परिष्ठापनिका समिति।

४५८ क—ससारी जीव पाच प्रकार के हैं,
यथा—१ एकेन्द्रिय-यावत्-२-४
५ पचेन्द्रिय।

ख—एकेन्द्रिय जीव पाच गतियो (स्थानों) मे पाच गतियो (स्थानों) से आकर उत्पन्न होते हैं।
१-५ एकेन्द्रिय जीव एकेन्द्रियो मे एकेन्द्रियो से यावत्-पचेन्द्रियो से आकर उत्पन्न होता है।

ग—१-५ एकेन्द्रिय एकेन्द्रियपन को छोडकर एकेन्द्रिय रूप मे-यावत्-पचेन्द्रिय रूप मे उत्पन्न होता है।

घ—द्वीन्दिय जीव पाच स्थानो मे पाच स्थानो से आकर उत्पन्न होते हैं।

ङ—१-५ द्वीन्दिय जीव एकेन्द्रियो मे यावत्-पचेन्द्रियो मे आकर उत्पन्न होते हैं।

च—१-५ त्रीन्दिय जीव पाच स्थानो मे पाच स्थानों से आकर उत्पन्न होते हैं।

छ—१-५ त्रीन्द्रिय जीव एकेन्द्रियों में-यावत्-पचेन्द्रियो मे आकर उत्पन्न होते हैं ।

ज—१-५ त्रीन्दियजीव एकेन्द्रियों में-यावत् पचेन्द्रियो मे आकर उत्पन्न होते हैं ।

झ—१-५ चतुरिन्द्रिय जीव पाच स्थानो में पाच स्थानो से आकर उत्पन्न होते हैं ।

ञ—१-५ चतुरिन्द्रिय जीव एकेन्द्रियों में-यावत्-पञ्चेन्द्रियों मे आकर उत्पन्न होते हैं।

ट—१-५ पञ्चेन्द्रिय जीव पाच स्थानों मे पांच स्थानो से आकर उत्पन्न होते हैं ।

ठ—१-५ पञ्चेन्द्रिय जीव एकेन्द्रियो मे-यावत्-पञ्चेन्द्रियो में आकर उत्पन्न होते हैं ।

ड—सभी जीव पाच प्रकार के है,
यथा—१-५ क्रोध कपायी-यावत्-अकपायी ।

ढ—अथवा सभी जीव पांच प्रकार के हैं,
यथा-१-५ नैरयिक-यावत्-सिद्ध ।

४५६ प्र०—हे भगवन् ! चणा, मसूर, तिल, मूंग, उडद, वाल, कुलथ, चंवला, तुवर और कालाचणा कोठे में रखे हुए इन धान्यो की कितनी स्थिति है ?

उ०—हे गौतम ! जघन्य अन्तमुहूर्त उत्कृष्ट पाच वर्ष ।
इसके पश्चात् योनि (जीवोत्पत्तिस्थान) कुमला जाती है और शनै शनै योनि विच्छेद (उत्पति स्थान निर्जीव) हो जाता है ।

४६० क—सवत्सर पाच प्रकार के हैं,
यथा—१ नक्षत्र सवत्सर, २ युग सवत्सर,
३ प्रमाण सवत्सर, ४ लक्षण सवत्सर,
५ शनैश्चर सवत्सर ।

ख—युग सवत्सर पाच प्रकार के हैं,
यथा—१ चद्र, २ चद्र, ३ अभिवर्धित, ४ चद्र
५ अभिवर्धित ।

ग—प्रमाण सवत्सर पाच प्रकार का है,
यथा—१ नक्षत्र सवत्सर, २ चद्र सवत्सर,
३ ऋतु सवत्सर, ४ आदित्य सवत्सर,
५ अभिवर्धित सवत्सर ।

घ—लक्षण सवत्सर पाच प्रकार का है,
यथा—१ जिस तिथि मे जिस नक्षत्र का योग होना चाहिए उस नक्षत्र का उसी तिथि मे योग होता है[1] जिसमे रितुओ का परिणमन क्रमश होता रहता

---

१ यथा-कार्तिक मे कृत्तिका, मृगसिर मे आर्द्रा, पोष मे पुष्य-इत्यादि ।

है, जिसमे सरदी और गरमी का प्रमाण बराबर रहता है, और जिसमे वर्षा अच्छी होतो है वह नक्षत्र सवत्सर कहा जाता है।

२ जिसमे सभी पूर्णिमाओ मे चन्द्र का योग रहता है, जिसमे नक्षत्रो की विषम गति होती है[1] जिसमे अतिशीत और अति ताप पडता है, और जिसमे वर्षा अधिक होती है वह चद्र सवत्सर होता है।

३ जिसमे वृक्षो का यथासमय परिणमन नही होता है, रितु के विना फल लगते हैं, वर्षा भी नही होती है उसे कम सवत्सर या रितु सवत्सर कहते हैं।

४ जिसमे पृथ्वी जल, पुष्प और फलो को सूर्य रस देता है और थोडी वर्षा से भी पाक अच्छा होता है उसे आदित्य सवत्सर कहते हैं।

५ जिसमें क्षण, लव, दिवस और ऋतु सूर्य से तप्त रहते हैं, और जिसमें सदा धूल उडती रहती है। उसे अभिवर्धित सवत्सर कहते हैं।

४६१ शरीर से जीव के निकलने के पांच मार्ग हैं, यथा १ पैर, २ उरू (साथल), ३ वक्षस्थल,

---

१ कार्तिक पूर्णिमा को कृत्तिका के बदले भरणी अथवा रोहिणी होता है।

उ०—ह गौतम ! जघन्य अन्तमुहूर्त उत्कृष्ट पाच वर्ष।
इसक पश्चात् योनि (जीवोत्पत्तिस्थान) कुमला जाती है और शनै शनै योनि विच्छेद (उत्पत्ति स्थान निर्जीव) हो जाता है।

४६० क—सवत्सर पाच प्रकार के है,
यथा—१ नक्षत्र सवत्सर, २ युग सवत्सर,
३ प्रमाण सवत्सर, ४ लक्षण सवत्सर,
५ शनैश्चर सवत्सर।

ख—युग सवत्सर पाच प्रकार के ह,
यथा—१ चद्र, २ चद्र, ३ अभिवर्धित, ४ चद्र
५ अभिवर्धित।

ग—प्रमाण सवत्सर पाच प्रकार का है,
यथा—१ नक्षत्र सवत्सर, २ चद्र सवत्सर,
३ ऋतु सवत्सर, ४ आदित्य सवत्सर,
५ अभिवर्धित सवत्सर।

घ—लक्षण सवत्सर पाच प्रकार का है,
यथा—१ जिस तिथि मे जिस नक्षत्र का योग होना चाहिए उस नक्षत्र का उसी तिथि मे योग होता है[1] जिसमे रितुओ का परिणमन क्रमश होता रहता

---

१ यथा-कार्तिक मे कृत्तिका, मृगसिर मे आर्द्रा, पोष में पुष्य-इत्यादि ।

है, जिसमे सरदी और गरमी का प्रमाण बराबर रहता है, और जिसमे वर्षा अच्छी होती है वह नक्षत्र सवत्सर कहा जाता है।

२ जिसमे सभी पूर्णिमाओ मे चन्द्र का योग रहता है, जिसमे नक्षत्रो की विषम गति होती है[1] जिसमे अतिशीत और अति ताप पडता है, और जिसमे वर्षा अधिक होती है वह चद्र सवत्सर होता है।

३ जिसमे वृक्षो का यथासमय परिणमन नही होता है, रितु के विना फल लगते हैं, वर्षा भी नही होती है उसे कर्म सवत्सर या रितु सवत्सर कहते हैं।

४ जिसमे पृथ्वी जल, पुष्प और फलों को सूय रस देता है और थोडी वर्षा से भी पाक अच्छा होता है उसे आदित्य सवत्सर कहते हैं।

५ जिसमे क्षण, लव, दिवस और ऋतु सूर्य से तप्त रहते हैं, और जिसमे सदा धूल उडती रहती है। उसे अभिवर्धित सवत्सर कहते हैं।

४६१ शरीर से जीव के निकलने के पाच मार्ग हैं, यथा १ पैर, २ उरू (साथल), ३ वक्षस्थल,

---

१ कार्तिक पूर्णिमा को कृत्तिका के बदले भरणी अथवा रोहिणी होता है।

४ शिर, ५ सर्वाङ्ग ।

१ पैरो से निकलने पर जीव नरकगामी होता है,

२ उरू से निकलने पर जीव तिर्यचगामी होता है,

३ वक्षस्थल से निकलने पर जीव मनुष्य गति प्राप्त होता है ।

४ शिर से निकलने पर जीव देवगतिगामी होता है,

५ सर्वांग से निकलने पर जीव मोक्षगामी होता है ।

४६२ क—छेदन पांच प्रकार के हैं,

यथा—१ उत्पाद छेदन–नवीन पर्याय की अपेक्षा से पूवपर्याय का छेदन ।

२ व्यय छेदन–पूर्व पर्याय का व्यय-छेदन ।

३ बंध छेदन–कर्मबंध का छेदन ।

४ प्रदेश छेदन–जीव द्रव्य के बुद्धि से कल्पित प्रदेश ।

५ द्विधाकार छेदन–जीवादिद्रव्यो के दो विभाग करना ।

ख—आनन्तर्य पाच प्रकार का है,

यथा–१ उत्पादानन्तर्य–जीवो की निरन्तर उत्पत्ति ।

२ व्ययानन्तय–जीवों का निरन्तर मरण ।

३ प्रदेशानन्तय–प्रदेशो का निरन्तर अविरह[1] ।

---

१ जीव प्रदेशों के साथ कर्मों का निरन्तर अविरह ।

(क) भव्य के ससारी अवस्था में निरन्तर अविरह रहता है ।

४ समयानन्तर्य—समय का निरन्तर अविरह।

५ सामान्यानन्तर्य—उत्पाद आदि विशेष के अभाव में जो निरन्तर अविरह।

ग—अनन्त पाच प्रकार के हैं,

यथा–१ नाम अनन्त, २ स्थापना अनन्त, ३ द्रव्य अनन्त, ४ गणना अनन्त, ५ प्रदेशानन्त।

घ—अनन्तक पांच प्रकार के हैं,

यथा—१ एकत अनन्तक—दीर्घता की अपेक्षा जो अनन्त है। एक श्रेणी का क्षेत्र।

२ द्विघा अनन्तक—लम्बाई और चोडाई की अपेक्षा से जो अनन्त हो।

३ देश विस्तार अनन्तक—रूचक प्रदेश से पूर्व आदि किसी एक दिशा मे देश का जो विस्तार हो।

४ सवविस्तार अनन्तक—अनन्तप्रदेशी सम्पूर्ण आकाश।

५ शास्वतानन्तक—अनन्त समय की स्थिति वाले जीवादि द्रव्य।

४६३ —ज्ञान पांच प्रकार के हैं,

यथा—१ आभिनिबोधिक ज्ञान,

२ श्रुत ज्ञान, ३ अवधि ज्ञान,

४, मन पर्यवज्ञान, ५ केवल ज्ञान।

४६४ —ज्ञानावरणीय कम पाच प्रकार के हैं,
यथा—१ आभिनिबोधिक ज्ञानावरणीय कर्म
यावत्—२-४-५ केवलज्ञानावरणीय कर्म ।

४६५ —स्वाध्याय पाच प्रकार के हैं,
यथा—१ वाचना, २ पृच्छना, ३ परिवर्तना,
४ अनुप्रेक्षा ५ धर्म कथा ।

४६६ —प्रत्याख्यान पाच प्रकार के हैं, यथा—
१ श्रद्धा शुद्ध, २ विनय शुद्ध, ३ अनुभापना शुद्ध,
४ अनुपालना शुद्ध, ५ भाव शुद्ध ।

४६७ —प्रतिक्रमण पांच प्रकार के हैं,
यथा—१ आश्रव द्वार—प्रतिक्रमण,
२ मिथ्यात्व—प्रतिक्रमण,
३ कषाय—प्रतिक्रमण,
४ योग—प्रतिक्रमण,
५ भाव—प्रतिक्रमण ।

४६८ क—पांच कारणो से गुरु शिष्य को वाचना देते हैं,
यथा—१ सग्रह के लिये—शिष्यो को सूत्र का ज्ञान कराने के लिये ।
२ उपग्रह के लिये—गच्छ पर उपकार करने के लिये ।

३ निर्जरा के लिये—शिष्यों को वाचना देने से कर्मो की निर्जरा होती है।

४ सूत्र ज्ञान दृढ करने के लिये।

५ सूत्र का विच्छेद न होने देने के लिये।

ख—पाच कारणो से सूत्र सीखे,

यथा—१ ज्ञान वृद्धि के लिये,

२ दर्शन शुद्धि के लिये,

३ चारित्र शुद्धि के लिये,

४ दूसरे का दुराग्रह छुडाने के लिये,

५ पदार्थों के यथार्थ ज्ञान के लिये।

४६१ क—सौधर्म और ईशान कल्प में विमान पाच वर्ण के हैं,

यथा—१ कृष्ण-यावत्-२-४, ५ शुक्ल।

ख—सौधर्म और ईशान कल्प मे विमान पाचसौ योजन के ऊचे हैं।

ग—ब्रह्मलोक और लान्तक कल्प मे देवताओं के भव-धारणीय शरीर ऊचाई में पाच हाथ का है।

घ—नैरयिको ने पाच वर्ण और पाच रस वाले कर्म पुद्गल बाधे हैं, बाधते हैं और बाधेंगे।

यथा—१-५ कृष्ण-यावत्-शुक्ल।

१-५ तिक्त-यावत्-मधुर।

षष्ठ स्थान (छठा ठाणा)

४७५ —छह स्थान युक्त अणगार गण का अधिपति हो सकता है।

यथा—१ श्रद्धालु, २ सत्यवादी, ३ मेधावी, ४ बहुश्रुत, ५ शक्ति सम्पन्न, ६ क्लेशरहित।

४७६ —छह कारणो से निग्रन्थ निग्रन्थी को पकड कर रखे या सहारा दे तो भगवान् की आज्ञा का अतिक्रमण नही होता।

यथा—१ विक्षिप्त को, २ क्रुद्ध को,

३ यक्षाविष्ट को, ४ उन्मत्त को,

५ उपसर्ग युक्त को, ६ कलह करती हुई को।

४७७ —छह कारणो से निग्रन्थ और निग्रन्थिया कालगत (मृत) सार्धमिक के प्रति आदर भाव करें तो आज्ञा का अतिक्रमण नही होता है।

यथा—१ उपाश्रय से बाहर निकालना हो,

२ उपाश्रय के बाहर से जगल मे ले जाना हो,

३ मृत को बाधना हो

४ जागरण करना हो,

५ अनुज्ञापन करना हो,[1]

६ चुपचाप साथ जावे तो।

४७८ क—छ स्थान छद्मस्थ पूर्ण रूप से नही जानता है और नही देखता है।

यथा—१ धर्मास्तिकाय को, २ अधर्मास्तिकाय को, ३ आकाशास्तिकाय को, ४ शरीर रहित जीव को ५ परमाणु पुद्गल को, ६ शब्द को।

ख—इन्ही छ स्थानो को केवल ज्ञानी अर्हन्त जिन पूर्ण-रूप से जानते हैं और देखते हैं।

यथा—१ धर्मास्तिकाय को-यावत्-शब्द को,

४७९ —छ कारणो से जीवो को ऋद्धि, द्युति, यश, बल, वीर्य और पराक्रम प्राप्त नही होता है।

यथा—१ जीव को अजीव करना चाहे तो,

२ अजीव को जीव करना चाहे तो,

३ सांच और झूठ एक साथ बोले तो,

४ स्वकृत कर्म भोगे या न भोगे—ऐसा माने तो,

५ परमाणु को छेदन-भेदन करना चाहे अथवा अग्नि से जलाना चाहे तो,

६ लोक से बाहर जाने तो।

---

१ स्वजन सम्बन्धियों को सूचना देनी हो।

४८० छ जीव निकाय हैं,
यथा—१-६ पृथ्वीकाय—यावत—त्रसकाय।

४८१ छ ग्रह छ-छ तारा वाले हैं,
यथा—१ शुक्र, २ बुध, ३ बृहस्पति, ४ अंगारक[1], ५ शनैश्चर, ६ केतु।

४८२ क—संसारी जीव छ प्रकार के हैं,
यथा—पृथ्वीकायिक यावत—त्रसकायिक।

ख—पृथ्वीकायिक जीव छ गति और छ आगति वाले है,
यथा—१ पृथ्वीकायिक जीव पृथ्वी काय में उत्पन्न होते हैं तो पृथ्वीकायिको से—यावत्—त्रसकायिकों से उत्पन्न होते हैं।

ग—वही पृथ्वीकायिक जीव पृथ्वीकायिकपने को छोड़ कर पृथ्वीकायिकपने को—यावत्—त्रसकायिकपन को प्राप्त होता है।

घ-ट—अप्कायिक जीव छ गति और छ आगति वाल हैं। इसी प्रकार—यावत्—त्रसकायिक पर्यन्तक हैं।

४८३ क—जीव छ प्रकार के हैं,
यथा—२-५ आभिनिवोधिक ज्ञानी—यावत—केवल ज्ञानी, ६ अज्ञानी।

---

१ अंगारक—मंगल।

ख—अथवा जीव छ प्रकार के हैं।

यथा—१-५ एकेन्द्रिय—यावत्—पचेन्द्रिय,
६ अनीन्द्रिय।

ग—अथवा जीव ६ प्रकार के हैं,

यथा—१ औदरिक शरीरी, २ वैक्रिय शरीरी,
३ आहारक शरीरी, ४ तैजस शरीरी, ५ कार्मण
शरीरी, ६ अशरीरी।

४८४ —तृण वनस्पतिकाय छ प्रकार की हैं,
यथा—१ अग्रवीज, २ मूलबीज, ३ पवबीज,
४ स्कन्धबीज, ५ बीजरूह, ६ सम्मूर्छिम।

४८५ —छ स्थान सब जीवो को सुलभ नही है,
यथा—१ मनुष्यभव, २ आय क्षेत्र में जन्म, ३ सुकुल
मे उत्पत्ति, ४ केवली कथित धर्म का श्रवण ५ श्रुत
धर्म पर श्रद्धा, ६ श्रद्धित, प्रतीत और रोचित धर्म
का आचरण।

४८६ छ इन्द्रियो के छ विषय हैं,

यथा—१ श्रोत्रेन्द्रिय का विषय—यावत्—स्पर्शेन्द्रिय
का विषय, ६ मनका विषय।

४८७ क—सवर छ प्रकार के हैं,

यथा—१-५ श्रोत्रेन्द्रिय सवर—यावत्—स्पर्शेन्द्रिय
सवर, ६ मन सवर।

ख—असवर (आश्रय) छ प्रकार के हैं,

यथा—१ ५ श्रोत्रेन्द्रिय असवर—यावत्—स्पर्शन्द्रिय अमवर, ६ मन असवर।

४८८ क—सुख छ प्रकार का है,

यथा—१-५ श्रोत्रेन्द्रिय का सुख यावत स्पर्शन्द्रिय का सुख, ६ मन का सुख।

ख—दु ख छ प्रकार का है,

यथा—१-५ श्रोत्रेन्द्रिय का दु ख यावत स्पर्शेन्द्रिय का दु ख, ६ मन का दु ख।

४८९ —प्रायश्चित्त छ प्रकार का है,

यथा—१ आलोचना योग्य—गुरु के समक्ष सरलता पूवक लगे हुए दोप को स्वीकार करना।

२ प्रतिक्रमण योग्य—लगे हुए दोप की निवृत्ति के लिये पश्चात्ताप करना और पुन दोप न लगे ऐसी सावधानी रखना।

३ उभय योग्य—आलोचन और प्रतिक्रमण योग्य।

४ विवेक योग्य—आधा कम आदि सदोप आहार को परठकर शुद्ध होना।

५ व्युत्सग योग्य—कायचेष्टा का निरोध करके शुद्ध होना।

६ तप योग्य—विशिष्ट तप करके शुद्ध होना।

४९० क—मनुष्य छ प्रकार के है,

यथा—१ जम्बूद्वीप मे उत्पन्न।

२ धातकी खण्ड द्वीप के पूर्वार्ध मे उत्पन्न।

३ धातकी खण्ड द्वीप के पश्चिमार्ध मे उत्पन्न।

४ पुष्करवर द्वीपार्ध के पूर्वार्ध में उत्पन्न।

५ पुष्करवर द्वीपार्ध के पश्चिमार्ध में उत्पन्न।

६ अन्तरद्वीपों में उत्पन्न।

ख—अथवा मनुष्य छ प्रकार के हैं,

यथा— सम्मुर्छिम मनुष्य १ कर्म भूमि मे उत्पन्न।
,, ,, २ अकर्म भूमि मे उत्पन्न।
,, ,, ३ अन्तरद्वीपो मे उत्पन्न।
गर्भज मनुष्य १ कर्मभूमि मे उत्पन्न।
,, ,, २ अकर्म भूमि में उत्पन्न।
,, ,, ३ अन्तरद्वीपो मे उत्पन्न।

४९१ क—ऋद्धिमान मनुष्य छ प्रकार के हैं,

यथा—१ अरिहन्त, २ चक्रवर्ती, ३ बलदेव,

४ वासुदेव, ५ चारण[1], ६ विद्याधर।

---

१ जघाचारण लब्धि युक्त।

ख—ऋद्धिरहित मनुष्य छ प्रकार के है,

यथा—१ हेमवन्त क्षेत्र के ।

२ हैरण्यवत क्षेत्र क ।

३ हरिवप क्षेत्र के ।

४ रम्यक् क्षेत्र के ।

५ देवकुरु और उत्तरकुरु क्षेत्र के ।

६ अन्तरद्वीपो के ।

४९२ क—अवसर्पिणी काल छ प्रकार का है,

यथा—१-६ सुषम-सुषमा—यावत—दुषम-दुषमा ।

ख—उत्सर्पिणी काल छ प्रकार का है,

यथा—१-६ दुषम-दुषमा यावत सुषम-सुषमा ।

४९३ क—जम्बूद्वीपवर्ती भरत और एरवत क्षेत्रो मे अतीत उत्सर्पिणी के सुषम-सुषमा काल मे मनुष्य छ हजार धनुष के ऊचे थे, और उनका परमायु छ के आधे (तीन) पल्योपमो का था ।

ख—जम्बूद्वीपवर्ती भरत और ऐरवत क्षेत्रो म इस उत्सर्पिणी के सुषम-सुषमा काल मे मनुष्यो की ऊंचाई और उनका परमायु पूर्ववत् ही था ।

ग—जम्बूद्वीपवर्ती भरत और एरवत क्षेत्रो मे आगामी उत्सर्पिणी के सुषम सुषमा काल मे मनुष्यो की ऊंचाई और उनका परमायु पूर्ववत् ही होगा ।

घ—जम्बूद्वीपवर्ती देवकुरु उत्तरकुरु क्षेत्रो मे मनुष्यों की ऊचाई और उनका परमायु पूर्ववत् ही है।

ङ-न—इसी प्रकार घातकी खण्ड द्वीप के पूर्वाध में पूर्ववत् चार आलापक हैं—यावत्—पुष्करवर द्वीपार्ध के पश्चिमार्ध मे भी पूर्ववत् चार आलापक हैं।

४९४ —सघयण छ प्रकार के हैं

यथा—१ वज्रऋषभ नाराच सहनन,

२ ऋषभ नाराच सहनन,

३ नाराच सहनन,

४ अर्ध नाराच सहनन,

५ कीलिका सहनन,

६ सेवार्त सहनन।

४९५ —सस्थान छ प्रकार के हैं,

यथा—१ सम चतुरस्र सस्थान,

२ न्यग्रोध परिमण्डल सस्थान,

३ साती सस्थान,

४ कुब्ज सस्थान,

५ वामन सस्थान,

६ हुंड सस्थान।

४६६ क—अनात्मभाववर्ती (कषाय युक्त) मनुष्यो क लिए य छह स्थान अहितकर हैं, अशुभ हैं, अशान्ति मिटान मे असमर्थ है, अकल्याणकर हैं, और अशुभ परम्परा वाले हैं,

यथा—१ आयु अथवा दीक्षा काल,

२ परिवार–पुत्रादि, या शिष्यादि,

३ श्रुत, ४ तप, ५ लाभ, ६ पूजा-सत्कार।

ख—आत्मभाववर्ती (कषाय रहित) मनुष्यो के लिए उक्त छह स्थान हितकर हैं, शुभ हैं, अशान्ति मिटान में समर्थ हैं, कल्याणकर हैं, और शुभ परम्परा वाले हैं,

यथा—१-६ पर्याय यावत् पूजा-सत्कार।

४६७ क—जाति आर्य मनुष्य छ प्रकार के हैं,

यथा—१ अबष्ठ, २ कलद, ३ वैदह, ४ वद गायक, ५ हरित, ६ चु चण।

ख—कुलार्य मनुष्य छ प्रकार के हैं,

यथा—१ उग्र कुल के, २ भोग कुल के ३ राजन्य कुल के, ४ इक्ष्वाकुकुल के, ५ ज्ञात कुल के, ६ कौरव कुल के।

४६८ —लोक स्थिति छ प्रकार की है,

यथा—१ आकाश पर वायु,

२ वायु पर उदधि,

३ उदधि पर पृथ्वी,

४ पृथ्वी पर त्रस और स्थावर प्राणी,

५ जीव के सहारे अजीव,

६ कर्म के सहारे जीव।

४९९ क—दिशायें छः हैं,

यथा—१ पूर्व, २ पश्चिम, ३ दक्षिण, ४ उत्तर, ५ ऊर्ध्व, ६ अधो।

ख—उक्त छह दिशाओं में जीवों की गति होती है।
इसी प्रकार (ग) जीवों की आगति, (घ) व्युत्क्रान्ति, (ङ) आहार, (च) शरीर की वृद्धि, (छ) शरीर की हानि, (ज) शरीर की विकुर्वणा, (झ) गतिपर्याय (ञ) वेदनादि समुद्घात, (ट) दिन-रात आदि काल का संयोग, (ठ) अवधि आदि दर्शन से सामान्य ज्ञान, (ड) अवधि आदि ज्ञान से विशेषज्ञान, (ढ) जीव-स्वरूप का प्रत्यक्ष ज्ञान, (ण) पुद्गलादि अजीव-स्वरूप का प्रत्यक्ष ज्ञान, (त) इसी प्रकार पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चों के और मनुष्यों के चौदह-चौदह सूत्र हैं।

५०० क—छः कारणों से श्रमण निर्ग्रन्थ के आहार करने पर भगवान् की आज्ञा का अतिक्रमण नहीं होता,
यथा—१ क्षुधा शान्त करने के लिये,

२ सेवा करने के लिए,

३ ईर्या समिति के शोधन के लिये,

३ अनानुबंधि—उतावल या झटकाये बिना प्रति लेखना करना।

४ अमोसली—वस्त्र को मसले बिना की गई प्रति लेखना।

५ छ पुरिमा और नव खोटका।

५०४ —दण्डक सूत्र—

क—लेश्याए छ हैं,

यथा—१-६ कृष्णलेश्या यावत् शुक्ललेश्या।

ख—तियञ्च पञ्चेन्द्रियो मे छह लेश्यायें हैं

यथा—१-६ कृष्णलेश्या यावत् शुक्ल लेश्या।

ग—मनुष्य और देवताओ मे छ लेश्यायें हैं,

यथा—१-६ कृष्ण लेश्या यावत् शुक्ल लेश्या।

५०५ —शक्रदेवन्द्र देवराज सोम महाराजा की छ अग्रमहिषिया हैं।

५०६ —ईशान देवेन्द्र की मध्यम परिषद् के देवों की स्थिति छ पल्योपम की है।

५०७ क—छ श्रेष्ठ दिककुमारिया हैं,

यथा—१ रूपा, २ रूपाशा, ३ सुरूपा, ४ रूपवती, ५ रूपकाता, ६ रूपप्रभा।

ख—छ, श्रेष्ठ विद्युत कुमारिया हैं,

यथा—१ आला, २ शुक्रा, ३ सतेरा, ४ सौदामिनी, ५ इन्द्रा, ६ घन विद्युता।

५०८ क—धरण नागकुमारेन्द्र की छ अग्रमहिषियां हैं।
यथा—१ आला, २ शुक्रा, ३ सतेरा, ४ सौदामिनी, ५ इन्द्रा, ६, घनविद्युता।

ख—भूतानन्द नाग कुमारेन्द्र की छ अग्रमहिषियां हैं
यथा—१ रूपा, २ रूपांशा, ३ सुरूपा, ४ रूपवती, ५ रूपकांता, ६ रूपप्रभा।

ग-ञ—घोष पर्यन्त दक्षिण दिशा के सभी देवेन्द्रों की अग्रमहिषियो के नाम धरणेन्द्र के समान हैं।

ट-द—महाघोष पर्यन्त उत्तर दिशा के सभी देवेन्द्रो की अग्र-महिषियों के नाम भूतानन्द के समान हैं।

५०९ क—धरण नागकुमारेन्द्र के छ हजार सामानिक देव हैं।

ख-न—इसी प्रकार भूतानन्द यावत् महाघोष नागकुमारेन्द्र के छ हजार सामानिक देव हैं।

५१० क—अवग्रहमति छ प्रकार की हैं,
यथा—१ क्षिप्रा—क्षयोपशम की निर्मलता से शख आदि के शब्द को शीघ्र ग्रहण करने वाली मति।

२ बहु—शख आदि अनेक प्रकार के शब्दो को ग्रहण करने वाली मति।

३ बहुविध—शब्दों के माधुय आदि पर्यायो को ग्रहण करने वाली मति।

३ अनायुक्त—उपयोग या झटकाये बिना प्रतिलेखना करना।

४ आलोलो—वस्त्र को गगने बिना की गई प्रतिलेखना।

५ छ पुरिमा और नव खोटका।

५०४ —षष्ठम स्थान—

क—लेश्याए छ है,

यथा—१ ६ कृष्णलेश्या यावत शुक्ललेश्या।

ख—तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रियो मे छह लेश्यायें हैं

यथा—१-६ कृष्णलेश्या यावत् शुक्ल लेश्या।

ग—मनुष्य और देवताओ मे छ लेश्यायें हैं,

यथा—१-६ कृष्ण लेश्या यावत् शुक्ल लेश्या।

५०५ —शक्रदेवेन्द्र देवराज सोम महाराजा की छ अग्रमहिषियां हैं।

५०६ —ईशान देवेन्द्र की मध्यम परिषद् के देवो की स्थिति छ पल्योपम की है।

५०७ क—छ श्रेष्ठ दिककुमारिया हैं,

यथा—१ रूपा, २ रूपांशा, ३ सुरूपा, ४ रूपवती, ५ रूपकांता, ६ रूपप्रभा।

ख—छ, श्रेष्ठ विद्युत कुमारिया हैं,

यथा—१ आला, २ शुक्रा, ३ सतेरा, ४ सौदामिनी, ५ इन्द्रा, ६ घन विद्युता।

५०८ क—धरण नागकुमारेन्द्र की छ अग्रमहिषियां हैं।
यथा—१ आला, २ शुक्रा, ३ सतेरा, ४ सौदामिनी, ५ इन्द्रा, ६, घनविद्युता।

ख—भूतानन्द नाग कुमारेन्द्र की छ अग्रमहिषियां हैं
यथा—१ रूपा, २ रूपांशा, ३ सुरूपा, ४ रूपवती, ५ रूपकांता, ६ रूपप्रभा।

ग-ञ—घोष पर्यन्त दक्षिण दिशा के सभी देवेन्द्रों की अग्रमहिषियों के नाम धरणेन्द्र के समान हैं।

ट-द—महाघोष पर्यन्त उत्तर दिशा के सभी देवेन्द्रों की अग्र-महिषियों के नाम भूतानन्द के समान हैं।

५०९ क—धरण नागकुमारेन्द्र के छ हजार सामानिक देव हैं।

ख-न—इसी प्रकार भूतानन्द यावत् महाघोष नागकुमारेन्द्र के छ हजार सामानिक देव हैं।

५१० क—अवग्रहमति छ प्रकार की है,
यथा—१ क्षिप्रा—क्षयोपशम की निर्मलता से शंख आदि के शब्द को शीघ्र ग्रहण करने वाली मति।

२ बहु—शंख आदि अनेक प्रकार के शब्दों को ग्रहण करने वाली मति।

३ बहुविध—शब्दों के माधुर्य आदि पर्यायों को ग्रहण करने वाली मति।

२ विनय—जिस तप के द्वारा विशेष रूप से कर्मों का नाश हो।

३ वैयावृत्त्य—सेवा, शुश्रूषा।

४ स्वाध्याय—विविध प्रकार का अभ्यास करना।

५ ध्यान—एकाग्र होकर चिंतन करना।

६ व्युत्सर्ग—परित्याग[1]। चित्त की चंचलता के कारणों का परित्याग करना।

५१२ —विवाद छह प्रकार का है,

यथा—१ अवष्वष्कय—पीछे हटकर प्रारम्भ में कुछ सामान्य तर्क देकर समय बितावे और अनुकूल अवसर पाकर प्रतिवादी पर आक्षेप करे।

२ उत्ष्वष्कय—पीछे हटाकर किसी प्रकार प्रतिवादी से विवाद बंध करावे और अनुकूल अवसर पाकर पुनः विवाद करे।

३ अनुलोम्य—सभ्यों को और सभापति को अनुकूल करके विवाद करे।

---

१ इसके दो भेद हैं यथा—

(क) द्रव्य व्युत्सर्ग—गण, शरीर, उपाधि, आहारादि का त्याग करना।

(ख) भाव व्युत्सर्ग—क्रोधादि कलुषित भावों का त्याग करना।

४ प्रतिलोम्य—सभ्यो को और सभापति को प्रति-
कूल करके विवाद करे।

५ भेदयित्वा—सभ्यो मे मतभेद पैदा करके विवाद
करे।

६ मेलयित्वा—कुछ सभ्यो का अपने पक्ष म मिला-
कर विवाद करे।

५१३ —क्षुद्र प्राणी छ प्रकार के है,
यथा—१ द्वीन्द्रिय, २ त्रीन्द्रिय, ३ चतुरिन्द्रिय,
४ सम्मूर्छिम पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च योनिक,
५ तेजस्कायिक, ६ वायु कायिक।

५१४ —गोचरी छ प्रकार की है
यथा—१ पेटा—गाव के चार विभाग करके
गोचरी करना।

२ अध पेटा—गाव के दो विभाग करके गोचरी
करना।

३ गोमूत्रिका—घरों की दो पक्तियो मे गोमूत्रिका
के समान क्रम बना कर गोचरी करे।[1]

---

१ गोमूत्रिका—गाय जसे तिरछी गति से प्रस्रवण करती है
वैसी तिरछी गति से गोचरी करना।

४ पतगवीथिका—पतगिया की उड़ान के समान विना क्रम के गोचरी करना।

५ शबुक वृत्ता—शख के वृत्त की तरह घरो का क्रम बनाकर गोचरी करना।

६ गत्वा प्रत्यागत्वा—प्रथम पक्ति के घरों मे क्रमश आद्योपान्त गोचरी करके द्वितीय पक्ति के घरा म क्रमश आद्योपान्त गोचरी करना।

५१५ क—जम्बूद्वीपवर्ती मेरु पवत के दक्षिण म—इस रत्नप्रभा पृथ्वी मे छह अपक्रान्त (अत्यन्त घृणित) महा नरका वास है,

यथा—१ लोल, २ लोलुप, ३ उद्दग्ध, ४ निदग्ध, ५ जरक, ६ प्रजरक।

ख—चौथी पक प्रभा पृथ्वी मे छह अपक्रान्त (अत्यन्त घृणित) महा नरकावास हैं,

यथा—१ आर, २ वार, ३ मार, ४ रार, ५ रोरुक ६ खाडखड।

५१६ —ब्रह्मलोक कल्प मे छह विमान प्रस्तर है,

यथा—१ अरज, २ विरज, ३ निरज, ४ निमल, ५ वितिमिर, ६ विशुद्ध।

५१७ क—ज्योतिष्केन्द्र चन्द्र के साथ छह नक्षत्र ३०, ३० मुहूत तक सम्पूण क्षेत्र मे योग करते हैं।

यथा—१ पूर्वाभद्र पद, २ कृत्तिका, ३ मघा, ४ पूर्वा फाल्गुनी, ५ मूल, ६ पूर्वाषाढा।

ख—ज्योतिष्केन्द्र चन्द्र के साथ छह् नक्षत्र १५-१५ मुहूर्त तक आधे क्षेत्र मे योग करते ह,
यथा—१ शतभिषा, २ भरणी, ३ आद्रा, ४ अश्लेषा, ५ स्वाती, ६ ज्येष्ठा।

ग—ज्योतिष्केन्द्र चन्द्र के साथ छह् नक्षत्र आगे और पीछे दोनो ओर ४५-४५ मुहूर्त तक योग करते हैं,
यथा—१ रोहिणी, २ पुनर्वसु, ३ उत्तरा फाल्गुनी, ४ विशाखा, ५ उत्तरापाढा, ६ उत्तराभाद्रपदा, ६ उत्तरापाढा।

५१८ —अभिचन्द्र कुलकर छ सौ धनुष के ऊँचे थे।

५१९ —भरत चक्रवर्ती छह लाख पूर्व तक महाराजा (राज-पद पर) रहे।

५२० क—भगवान पार्श्वनाथ के छ सौ वादी मुनियों की सपदा थी वे वादी मुनि देव-मनुष्यो की परिषद् मे अजेय थे।

ख—वासुपूज्य अर्हन्त के साथ छ सौ पुरुष प्रव्रजित हुये।

ग—चन्द्र प्रभ अर्हं त छ मास पर्यन्त छद्मस्थ रहे।

५२१ क—तेइन्द्रिय जीवो की हिंसा न करने वाला छह प्रकार के सयम का पालन करता है।
यथा—१ गध ग्रहण का सुख नष्ट नही होता।

२ गध (ग्रहण न कर सकने) का दु'ख प्राप्त नही होता।

३ रसास्वादन का सुख नष्ट नहीं होता।

४ रसास्वादन न कर सकने का दु ख प्राप्त नही होता।

५ स्पश जन्य सुख नष्ट नहीं होता।

६ स्पर्शानुभव न होने का दु'ख प्राप्त नही होता।

ख—तेइन्द्रिय जीवो की हिंसा करने से छह प्रकार का असयम होता है।

यथा—१ गध ग्रहण जन्य सुख प्राप्त नही होता।

२ गध ग्रहण न कर सकने का दु ख प्राप्त होता है।

३ रसास्वादन जन्य सुख प्राप्त नही होता।

४ रसास्वादन न कर सकने का दु'ख प्राप्त होता है।

५ स्पशजन्य सुख प्राप्त नही होता।

६ स्पर्शानुभव न कर सकने का दुख प्राप्त होता है।

५२२ क—जम्बूद्वीप मे छह अकम भूमियां हैं,

यथा—१ हैमवत, २ हैरण्यवत, ३ हरिवप, ४ रम्यक् वर्प, ५ देवकुरु, ६ उत्तर कुरु।

ख—जम्बूद्वीप मे छह वप (क्षेत्र) है

यथा १ भरत, २ ऐरवत, ३ हैमवत,

४ हैरण्यवत, ५ हरिवर्ष, ६ रम्यग् वर्ष[1]।

ग—जम्बूद्वीप मे छ वर्षधर पर्वत हैं,

यथा—१ चुल्ल (छोटा) हिमवत, २ महा हिमवत
३ निषध, ४ नीलवत,
५ रुक्मि, ६ शिखरी।

घ—जम्बूद्वीपवर्ती मेरु पर्वत से दक्षिण दिशा मे छ कूट (शिखर) हैं।

यथा—१ चुल्ल हैमवत कूट, २ वैश्रमण कूट,
३ महा हैमवत कूट, ४ वैडूर्य कूट,
५ निषध कूट, ६ रुचक कूट।

ङ—जम्बूद्वीप वर्ती मेरु पर्वत से उत्तर दिशा मे छह कूट हैं।

यथा—१ नीलवान कूट, २ उपदर्शन कूट,
३ रुक्मिकूट, ४ मणिकचन कूट,
५ शिखरी कूट, ६ तिगिच्छ कूट।[2]

च—जम्बूद्वीप मे छ महाद्रह हैं,

यथा—१ पद्मद्रह, २ महा पद्मद्रह,

---

१ वर्ष (क्षेत्र) यद्यपि सात हैं किन्तु छठा स्थान होने से छह कहे हैं।

२ दक्षिण और उत्तर में स्थित वर्ष धरों में से प्रत्येक वर्षधर पर्वत के दो दो कूटों को यहा गिना गया है।

३ तिगिच्छद्रह, ४ केसरीद्रह,
५ महा पौंडरीकद्रह, ६ पौंडरिक द्रह।

छ—उन महाद्रहों में छह पल्योपम की स्थिति वाली छ महर्धिक देवियां रहती हैं।
यथा—१ श्री, २ ह्री, ३ धृति, ४ कीर्ति, ५ बुद्धि ६ लक्ष्मी।

ज—जम्बूद्वीपवर्ती मेरु से दक्षिण दिशा में छ महानदियां हैं।
यथा—१ गंगा, २ सिंधु, ३ रोहिता
४ रोहितांशा, ५ हरी, ६ हरिकांता।

झ—जम्बूद्वीपवर्ती मेरु से उत्तर दिशा में छ महा नदियां हैं,
यथा—१ नरकांता, २ नारीकांता,
३ सुवर्ण कूला, ४ रुप्य कूला,
५ रक्ता, ६ रक्तवती।

ञ—जम्बूद्वीप वर्ती मेरु से पूर्व में सीता महानदी के दोनों किनारों पर छ अन्तर नदियां हैं,
यथा—१ ग्राहवती, २ द्रहवती, ३ पंकवती,
४ तप्तजला, ५ मत्तजला ६ उन्मत्तजला।

ट—जम्बूद्वीपवर्ती मेरु से पश्चिम में शीतोदा महानदी के दोनों किनारों पर छ अंतर नदियां हैं।
यथा—१ क्षीरोदा, २ सिंह स्रोता, ३ अंतर्वाहिनी,

४ ऊर्मिमालिनी, ५ फेनमालिनी

६ गम्भीर मालिनी ।

१-११ क—धातकीखण्ड के पूर्वार्ध में छह अकर्म भूमियाँ हैं, यथा—हैमवत आदि नदी सूत्र पर्यन्त जम्बूद्वीप के समान ग्यारह सूत्र कहें।

ख—धातकीखण्ड के पश्चिमार्ध में जम्बूद्वीप के समान ग्यारह सूत्र हैं।

ग—पुष्करवर द्वीपार्ध के पूर्वार्ध में जम्बूद्वीप के समान ग्यारह सूत्र हैं।

घ—पुष्करवर द्वीपार्ध के पश्चिमार्ध में जम्बूद्वीप के समान ग्यारह सूत्र हैं।[1]

५२३ —ऋतुएँ छ हैं, यथा—

१ प्रावृट—आषाढ और श्रावण मास।

२ वर्षा ऋतु—भाद्रपद और आश्विन।

३ शरद्—कार्तिक और मार्गशीर्ष।

४ हेमन्त—पौष और माघ।

५ वसन्त—फाल्गुन और चैत्र।

६ ग्रीष्म—वैशाख और ज्येष्ठ।

---

१ सब मिलकर ५५ सूत्र हैं।

३ तिगिच्छद्रह, ४ केसरीद्रह,
५ महा पौंडरीकद्रह, ६ पौंडरिक द्रह।

छ—उन महाद्रहों में छह पल्योपम की स्थिति वाली छ महर्धिक देवियां रहती हैं।
यथा—१ श्री, २ ह्री, ३ धृति, ४ कीर्ति, ५ बुद्धि ६ लक्ष्मी।

ज—जम्बूद्वीपवर्ती मेरु से दक्षिण दिशा में छ महानदियां हैं।
यथा—१ गंगा, २ सिंधु, ३ रोहिता
४ रोहितांशा, ५ हरी, ६ हरिकान्ता।

झ—जम्बूद्वीपवर्ती मेरु से उत्तर दिशा में छ महा नदियां हैं,
यथा—१ नरकान्ता, २ नारीकान्ता,
३ सुवर्ण कूला, ४ रुप्य कूला,
५ रक्ता, ६ रक्तवती।

ञ—जम्बूद्वीप वर्ती मेरु से पूर्व में सीता महानदी के दोनों किनारों पर छ अन्तर नदियां हैं,
यथा—१ ग्राहवती, २ द्रहवती, ३ पंकवती,
४ तप्तजला, ५ मत्तजला ६ उन्मत्तजला।

ट—जम्बूद्वीपवर्ती मेरु से पश्चिम में शीतोदा महानदी के दोनों किनारों पर छ अन्तर नदियां हैं।
यथा—१ क्षीरोदा, २ सिंह श्रोता, ३ अंतर्वाहिनी,

४ उर्मिमालिनी, ५ फेनमालिनी
६ गम्भीर मालिनी ।

१-११ क—धातकीखण्ड के पूर्वार्ध मे छह अकर्म भूमियां हैं, यथा—हैमवत आदि नदी-सूत्र पर्यन्त जम्बूद्वीप के समान ग्यारह-सूत्र कहें।

ख—धातकीखण्ड के पश्चिमार्ध में जम्बूद्वीप के समान ग्यारह सूत्र हैं।

ग—पुष्करवर द्वीपार्ध के पूर्वार्ध में जम्बूद्वीप के समान ग्यारह सूत्र हैं।

घ—पुष्करवर द्वीपार्ध के पश्चिमार्ध मे जम्बूद्वीप के समान ग्यारह सूत्र हैं।[1]

५२३ —ऋतुएं छः हैं, यथा—

१ प्रावृट—आषाढ और श्रावण मास ।

२ वर्षा ऋतु—भाद्रपद और आश्विन ।

३ शरद्—कार्तिक और मार्गशीर्ष ।

४ हेमन्त—पोष और माघ ।

५ बसन्त—फाल्गुन और चैत्र ।

६ ग्रीष्म—वैशाख और ज्येष्ठ ।

---

१ सब मिलकर ५५ सूत्र हैं।

५२४ क—दिनक्षय वाले छ पर्व हैं।[1] यथा

१ तृतीयपर्व—आषाढ कृष्ण पक्ष।

२ सप्तम पर्व—भाद्रपद कृष्ण पक्ष।

३ ग्यारहवाँ पर्व—कार्तिक कृष्ण पक्ष।

४ पन्द्रहवाँ पर्व—पोष कृष्ण पक्ष।

५ उन्नीसवाँ पर्व—फाल्गुन कृष्ण पक्ष।

६ तेतीसवाँ पर्व—वैशाख कृष्ण पक्ष।

ख—दिन वृद्धि वाले छ पर्व हैं,[2] यथा—

१ चतुर्थ पर्व—आषाढ शुक्ल पक्ष।

२ आठवाँ पर्व—भाद्रपद शुक्ल पक्ष।

३ बारहवाँ पर्व—कार्तिक शुक्ल पक्ष।

४ सोलहवाँ पर्व—पोष शुक्ल पक्ष।

५ वीसवाँ पर्व—फाल्गुन शुक्ल पक्ष।

६ चौवीसवाँ पर्व—वैशाख शुक्ल पक्ष।

५२५ —आभिनिबोधिक ज्ञान के छ अर्थावग्रह हैं, यथा—
१-६ श्रोत्रेन्द्रिय अर्थावग्रह यावत् नोइन्द्रिय अर्थावग्रह।

---

१ इन छ पर्वों (पक्षों) में दिन की हानि (दिन छोटे) और रात्रि की वृद्धि (रातें बड़ी) होती है।

५२६ —अवधि ज्ञान छ प्रकार का है। यथा—

१ आनुगामिक—मनुष्य के साथ जैसे मनुष्य की आँखें चलती हैं उसी प्रकार अवधि ज्ञान भी अवधि-ज्ञानी के साथ चलता है।

२ अनानुगामिक—जो अवधि ज्ञान दीपक की तरह अवधि ज्ञानी के साथ नहीं चलता।

३ वधमान—जो अवधि ज्ञान प्रति समय बढ़ता रहता है।

४ हीयमान—जो अवधि ज्ञान प्रति समय क्षीण होता रहता है।

५ प्रतिपाती—जो अवधि ज्ञान पूण लोक को देखने के पश्चात् नष्ट हो जाता है।

६ अप्रतिपाती—जो अवधि ज्ञान पूर्ण लोक को देखने के पश्चात् अलोक के एक प्रदेश को देखने की शक्ति वाला है।

५२७ —निर्ग्रन्थों और निग्रन्थियो को ये छ अवचन (कुवचन) कहने योग्य नही हैं।

यथा—१ अलीक वचन—असत्य वचन[1]।

---

१ ऊघ लेने वाले निग्रन्थ या निर्ग्रन्थी को कोई कहे कि—ऊघ क्यों लेते हो? उस समय निग्रन्थ या निग्रन्थी—कहे कि—मैं प्रचला (ऊघ) नहीं लेता।

२ हीलित वचन—ईर्ष्या भरे वचन।

३ खिंसित वचन—गुप्त बातें प्रगट करना।

४ परुष वचन—कठोर वचन।

५ गृहस्थ वचन—बेटा, भाई आदि कहना।

६ उदीरण वचन—उपशान्त कलह को पुन उद्दीप्त करने वाले वचन।

५२८ —कल्प (साधु का आचार) के छ प्रस्तार हैं।[1]

यथा—१ छोटा साधु बडे साधु को कहे कि तुमने प्राणातिपात किया है।

२ छोटा साधु बडे साधु को कहे कि तुम मृषावाद बोले हो।

३ छोटा साधु बडे साधु को कहे कि तुमने अमुक वस्तु चुराई है।

४ छोटा साधु बडे साधु को कहे कि तुमने अविरति का सेवन किया है।

५ छोटा साधु बडे साधु को कहे कि तुम अपुरुष (नपु सक हो)।

६ छोटा साधु बडे साधु को दास वचन (तुम दास हो) कहे।

---

१ प्रस्तार—प्रायश्चित्त बढ़ाना।

इन छ वचनो का जानबूझ कर भी बडा साधु पूण प्रायश्चित्त न दे तो वडा साध उसी प्रायश्चित्त का मागी होता है ।

५२९ —कल्प (साधु का आचार) के छ पलिमथू (सयम के घातक) हैं।

यथा—१ कौत्कुच्य—कुचेष्टा करना सयम का घात करना है ।

२ मौखर्य—अनावश्यक बोलना सत्य वचन का घात करना है ।

३ चक्षु लोलुप—चचल चक्षु रहना ईर्यासमिति का घात करना है ।

४ तितिनिक—इष्ट वस्तु के अलाभ से दुखी होना एषणा प्रधान गोचरी का घात करना है ।

५ इच्छालोभिक—अति लोम करना मुक्ति मार्ग का घात करना है ।

६ मिथ्या निदान करण—लोभ से निदान करना मोक्ष मार्ग का घात करना है। क्योकि निदान (फलेच्छा) न करना ही भगवान् ने प्रशस्त-कहा है ।

५३० —कल्प-साध्वाचार-की व्यवस्था छ प्रकार की है, यथा—१ सामायिक कल्पस्थिति—सामायिक सबधी मर्यादा ।

२ छेदोपस्थापनिक कल्पस्थिति—शैक्षकाल पूर्ण होने पर पच महाव्रत धारण कराने की मर्यादा।

३ निर्विसमान कल्प स्थिति—परिहार विशुद्धि तप स्वीकार करने वाले की मर्यादा।

४ निर्विष्ठकल्पस्थिति—पारिहारिक तप पूरा करने वाले की मर्यादा।

५. जिन कल्पस्थिति—जिन कल्प की मर्यादा।

६ स्थविर कल्पस्थिति—स्थविर कल्प की मर्यादा।

५३१ क—श्रमण भगवान् महावीर चतुर्विध आहार परित्याग पूर्वक छट्ठ भक्त (दो उपवास) करके मुडित यावत् प्रव्रजित हुये।

ख—श्रमण भगवान् महावीर को जब केवल ज्ञान उत्पन्न हुआ था उस समय चौविहार छट्ठ भक्त था।

ग—श्रमण भगवान् महावीर जब सिद्ध यावत् सब दुःख से मुक्त हुए उस समय चौविहर छट्ठ भक्त था।

५३२ क—सनत्कुमार और माहेन्द्रकल्प—देवलोक मे विमान छ सौ योजन ऊचे हैं।

ख—सनत्कुमार और माहेन्द्र कल्प मे भवधारणीय शरीर की अवगाहना—ऊचाई छ हाथ की है।

५३३ क—भोजन का परिणाम स्वभाव छ प्रकार का है
यथा—१ मनोज्ञ—मन को अच्छा लगने वाला।
२ रसिक—माधुर्यादिरस युक्त।
३ प्रीणनीय—तृप्ति करने वाला तथा शरीर के रसो में समता लाने वाला।
४ बृहणीय—शरीर की वृद्धि करने वाला।
५ दीपनीय—जठराग्नि प्रदीप्त करने वाला।
६ मदनीय—कामोत्तेजक।

ख—विष का परिणाम—स्वभाव छह प्रकार का है।
यथा—१ दष्ट—सर्प आदि के डक से पीडा पहुँचाने वाला।
२ भुक्त—खाने पर पीडा पहुचाने वाला।
३ निपतित—शरीर पर गिरते ही पीडित करने वाला अथवा दृष्टिविष।
४ मासानुसारी—मास मे व्याप्त होने वाला।
५ शोणितानुसारी—रक्त मे व्याप्त होने वाला।
६ अस्थिमज्जानुसारी—हड्डी और चर्बी मे व्याप्त होने वाला।

५३४ —प्रश्न छ प्रकार के हैं,
यथा—१ सशय प्रश्न—सशय होने पर किया जाने वाला प्रश्न।

२ मिथ्याभिनिवेश प्रश्न[1]—परपक्ष को दूषित करने के लिये किया गया प्रश्न।

३ अनुयोगी प्रश्न—व्याख्या करने के लिए ग्रन्थकार द्वारा किया गया प्रश्न।

४ अनुलोम प्रश्न—कुशल प्रश्न।

५ तथा ज्ञान प्रश्न—गणधर गौतम के प्रश्न।

६ अतथाज्ञान प्रश्न—अज्ञ व्यक्ति द्वारा किया गया प्रश्न।

५३५ क—चमर चचा राजधानी मे उत्कृष्ट विरह छ मास का है।

ख—प्रत्येक इन्द्रप्रस्थान मे उपपात विरह उत्कृष्ट छ मास का है।

ग—सप्तम पृथ्वी तमस्तमा मे उपपात विरह उत्कृष्ट छ मास का है।

घ—सिद्धगती मे उपपात विरह उत्कृष्ट छ मास का है।

दण्डक सूत्र

५३६ क—आयुबन्ध छ प्रकार का है,

यथा—१ जातिनामनिधत्तायु—जातिनाम कर्म के साथ प्रति समय भोगने के लिये आयुकर्म के दलिकों की निषेक नाम की रचना।

---

१ व्युद्ग्रह प्रश्न

१ गतिनाम निधत्तायु—गतिनाम कर्म के साथ पूर्वोक्त रचना।

३ स्थितिनाम निधत्तायु—स्थिति की अपेक्षा से निषेक रचना।

४ अवगाहना नाम निधत्तायु—जिसमे आत्मा रहे यह अवगाहना औदारिक शरीर आदि की होती है। अत शरीर नाम कर्म के साथ पूर्वोक्त रचना।

५ प्रदेश नाम निधत्तायु—प्रदेश रूप नाम कर्म के साथ पूर्वोक्त रचना।

६ अनुभाव नाम निधत्तायु—अनुभाव विपाक रूप नाम कर्म के साथ पूर्वोक्त रचना।

ख—१-४ नैरयिको के यावत् वैमानिको के छ प्रकार का आयुबंध होता है।

यथा १-६ जातिनाम निधत्तायु—यावत् अनुभाव नाम निधत्तायु।

ग—१-४ नैरयिक यावत् वैमानिक छ मास आयु शेष रहने पर परभव का आयु बांधते हैं।[1]

---

१ असख्य वर्ष की आयु वाले मनुष्य और तिर्यञ्च छ मास आयु शेष रहने पर परभव का आयु बांधते हैं।

५३७ —भाव छ प्रकार के हैं,
यथा—१ औदयिक, २ औपशमिक, ३ क्षायिक, ४ क्षायोपशमिक, ५ पारिणामिक, ६ सान्निपातिक।

५३८ —प्रतिक्रमण छ प्रकार के हैं,
यथा—१ उच्चार प्रतिक्रमण,—मल को परठकर स्थान पर आवे और मार्ग मे लगे दोषो का प्रतिक्रमण करे।
२ प्रश्रवण प्रतिक्रमण—मूत्र परठकर पूर्ववत् प्रतिक्रमण करे।
३ इत्वरिक प्रतिक्रमण—थोडे काल का प्रतिक्रमण यथा—दिन सम्बन्धी प्रतिक्रमण या रात्रि सबंधी प्रतिक्रमण।
४ यावज्जीवन का प्रतिक्रमण—महाव्रत ग्रहण करना अथवा भक्त परिज्ञा स्वीकार करना।
५ यत्किंचित् मिथ्या प्रतिक्रमण—जो मिथ्या आचरण हुआ हो उसका प्रतिक्रमण।
६ स्वाप्नान्तिक प्रतिक्रमण—स्वप्न सम्बन्धी प्रतिक्रमण।

५३९ क—कृत्तिका नक्षत्र के छ तारे हैं।
ख—अश्लेषा नक्षत्र के छ तारे हैं।

५४० क—जीवो ने छ स्थानो मे अर्जित पुद्गलो को पाप कर्म के रूप मे एकत्रित किया है। एकत्रित करते हैं और एकत्रित करेंगे।

यथा—१-६ पृथ्वीकाय निर्वर्तित—यावत्—त्रसकाय निर्वर्तित ।

ख-ज—इसी प्रकार पाप कर्म के रूप मे चय, उपचय, बंध, उदीरण, वेदन और निर्जरा सम्बन्धी सूत्र हैं।

झ—छ प्रदेशी स्कंध अनन्त हैं।

ञ—छ प्रदेशों मे स्थित पुद्गल अनन्त हैं।

ट—छ समय की स्थिति वाले पुद्गल अनन्त हैं।

ठ-ण—छ गुण काले—यावत्—छ गुण रूक्ष पुद्गल अनन्त हैं।

षष्ठ स्थान समाप्त

५३७ —भाव छः प्रकार के हैं,
यथा—१ औदयिक, २ औपशमिक, ३ क्षायिक, ४ क्षायोपशमिक, ५ पारिणामिक, ६ सान्निपातिक।

५३८ —प्रतिक्रमण छः प्रकार के हैं,
यथा—१ उच्चार प्रतिक्रमण,—मल को परठकर स्थान पर आवे और मार्ग में लगे दोषो का प्रतिक्रमण करे।

२ प्रस्रवण प्रतिक्रमण—मूत्र परठकर पूर्ववत् प्रतिक्रमण करे।

३ इत्वरिक प्रतिक्रमण—थोड़े काल का प्रतिक्रमण यथा—दिन सम्बन्धी प्रतिक्रमण या रात्रि संबधी प्रतिक्रमण।

४ यावज्जीवन का प्रतिक्रमण—महाव्रत ग्रहण करना अथवा भक्त परिज्ञा स्वीकार करना।

५ यत्किंचित् मिथ्या प्रतिक्रमण—जो मिथ्या आचरण हुआ हो उसका प्रतिक्रमण।

६ स्वाप्नान्तिक प्रतिक्रमण—स्वप्न सम्बन्धी प्रतिक्रमण।

५३९ क—कृत्तिका नक्षत्र के छः तारे हैं।
ख—अश्लेषा नक्षत्र के छः तारे हैं।

५४० क—जीवों ने छः स्थानो मे अर्जित पुद्गलों को पाप कर्म के रूप में एकत्रित किया है। एकत्रित करते हैं और एकत्रित करेंगे।

यथा—१-६ पृथ्वीकाय निर्वर्तित—यावत्—त्रसकाय निर्वर्तित ।

ख-ज—इसी प्रकार पाप कर्म के रूप मे चय, उपचय, बध, उदीरण, वेदन और निर्जरा सम्बन्धी सूत्र हैं ।

झ—छ प्रदेशी स्कध अनन्त हैं ।

ञ—छ प्रदेशों मे स्थित पुद्गल अनन्त हैं ।

ट—छ समय की स्थिति वाले पुद्गल अनन्त हैं ।

ठ-ण—छ गुण काले—यावत्—छ गुण रूखे पुद्गल अनन्त हैं ।

षष्ठ स्थान समाप्त

सप्तम स्थान (सातवा ठाणा)

५४१ —गण छोड़ने के सात कारण हैं,

यथा—१ मैं सब धर्मों (ज्ञान, दर्शन और चारित्र की साधनाओ) को प्राप्त करना (साधना) चाहता हूँ और उन धर्मों (साधनाओं) को मैं अन्य गण मे जाकर ही प्राप्त कर (साध) सकूंगा अत मैं गण छोडकर अन्य गण मे जाना चाहता हूँ।[1]

२ मुझे अमुक धर्म (साधना) प्रिय है और अमुक धर्म (साधना) प्रिय नहीं है। अत मैं गण छोडकर अन्यगण में जाना चाहता हूँ।

३. सभी धर्मो (ज्ञान, दर्शन और चारित्र) मे मुझे सन्देह है अत संशय निवारणार्थ मैं अन्य गण मे जाना चाहता हूँ।

४ कुछ धर्मो (साधनाओ) मे मुझे संशय है और कुछ धर्मो (साधनाओ) मे संशय नही है। अत मैं संशय निवारणार्थ अन्य गण मे जाना चाहता हूँ।

---

१ धर्माचार्य को गण छोड़ने का कारण बताकर गण छोड़ने की आज्ञा प्राप्तकर लेनी चाहिए। आज्ञा लिये बिना गण नहीं छोडना चाहिये।

५ सभी धर्मों (ज्ञान दर्शन और चारित्र सम्बन्धी) की विशिष्ट धारणाओ को मैं देना (सिखाना) चाहता हूँ। इस गण में ऐसा कोई योग्य पात्र नही है अत मैं अन्य गण में जाना चाहता हूँ।

६ कुछ धर्मों (पूर्वोक्त धारणाओ) को देना चाहता हूँ और कुछ धर्मों (पूर्वोक्त धारणाओ) को नहीं देना चाहता हूं अत मैं अन्य गण मे जाना चाहता हूँ।

७ एकल विहार की प्रतिमा धारण करके विचरना चाहता हू। (अत मैं गण छोड़कर जाना चाहता हूँ।)

५४२ —विभग ज्ञान सात प्रकार का है,

यथा—१ एक दिशा में लोकाभिगम।

२ पाँच दिशा मे लोकाभिगम।

३ क्रियावरण जीव।

४ मुदग्र जीव।

५ अमुदग्र जीव।

६ रूपी जीव।

७ सभी कुछ जीव हैं।

प्रथम विभग ज्ञान—किसी श्रमण ब्राह्मण को एक दिशा का लोकाभिगम ज्ञान उत्पन्न होता है। अत वह पूर्व, पश्चिम, दक्षिण या उत्तर दिशा मे स किसी एक दिशा मे अथवा ऊपर सौधर्म देवलोक पर्यन्त लोक देखता है तो-जिस दिशा मे उसने

लोक देखा है उसी दिशा मे लोक है अन्य दिशा मे नहीं है—ऐसी प्रतीति उसे होती है और वह मानने लगता है कि मुझे ही विशिष्ट ज्ञान उत्पन्न हुआ है और वह दूसरो को ऐसा कहता है कि जो लोग "पाच दिशाओ म लोक है" ऐसा कहते हैं वे मिथ्या कहते हैं।

द्वितीय विभग ज्ञान—किसी श्रमण ब्राह्मण को पाच दिशा का लोकाभिगम ज्ञान उत्पन्न होता है। अत वह पूव, पश्चिम, दक्षिण और उत्तर दिशा मे तथा ऊपर सौधर्म देवलोक पयन्त लोक देखता है तो उस समय उसे यह अनुभव होता है कि लोक पांच दिशाओ मे ही है। तथा यह भी अनुभव होता है कि मुझे ही अतिशय ज्ञान उत्पन्न हुआ है। और वह यो कहने लगता है कि जो लोग 'एक ही दिशा मे लोक है" ऐसा कहते हैं वे मिथ्या कहते हैं।

तृतीय विभग ज्ञान—किसी श्रमण या ब्राह्मण को क्रिया वरण जीव नाम का विभग ज्ञान उत्पन्न होता है तो वह जीवो को हिंसा करते हुए, झूठ बोलते हुए, चोरी करते हुए, मैथुन करते हुए, परिग्रह मे आसक्त रहते हुए और रात्रि भोजन करते हुए देखता है किन्तु इन सब कृत्यो से जीवो के पाप कर्मों का बन्ध होता है यह नही देख सकता उस समय उसे यह अनुभव होता है कि मुझे ही अतिशय ज्ञान उत्पन्न हुआ है। और वह यो मानने लगता है कि जीव के आवरण (कम बन्ध) क्रिया रूप ही है। साथ ही यह भी कहने लगता है कि जो श्रमण ब्राह्मण

४ हैरण्यवत, ५ हरिवर्ष, ६ रम्यक् वर्ष[1]।

ग—जम्बूद्वीप में छ वर्षधर पर्वत हैं,
यथा—१ चुल्ल (छोटा) हिमवत, २ महा हिमवत
३ निषध, ४ नीलवत,
५ रुक्मि, ६ शिखरी।

घ—जम्बूद्वीपवर्ती मेरु पर्वत से दक्षिण दिशा मे छ कूट (शिखर) हैं।
यथा—१ चुल्ल हैमवत कूट, २ वैश्रमण कूट,
३ महा हैमवत कूट, ४ वैडूर्य कूट,
५ निषध कूट, ६ रुचक कूट।

ङ—जम्बूद्वीप वर्ती मेरु पर्वत से उत्तर दिशा में छह कूट हैं।
यथा—१ नीलवान कूट, २ उपदर्शन-कूट,
३ रुक्मिकूट, ४ मणिकचन कूट,
५ शिखरी कूट, ६ तिगिच्छ कूट।[2]

च—जम्बूद्वीप में छ महाद्रह हैं,
यथा—१ पद्मद्रह, २ महा पद्मद्रह,

---

१ वर्ष (क्षेत्र) यद्यपि सात हैं किन्तु छठा स्थान होने से छह कहे हैं।
२ दक्षिण और उत्तर में स्थित वर्ष धरों मे से प्रत्येक वर्षधर पर्वत के दो दो कूटों को यहा गिना गया है।

३ तिगिच्छद्रह, ४ केसरोद्रह,
५ महा पौंडरीकद्रह, ६ पौंडरिक द्रह।

छ—उन महाद्रहो मे छह पल्योपम की स्थिति वाली छ महर्धिक देविया रहती हैं।
यथा—१ श्री, २ ह्री, ३ धृति, ४ कीर्ति, ५ बुद्धि ६ लक्ष्मी।

ज—जम्बूद्वीपवर्ती मेरु से दक्षिण दिशा मे छ महानदिया है।
यथा—१ गगा, २ सिधु, ३ रोहिता ४ रोहिताशा, ५ हरी, ६ हरिकाता।

झ—जम्बूद्वीपवर्ती मेरु से उत्तर दिशा मे छ महानदियां हैं,
यथा—१ नरकाता, २ नारीकाता, ३ सुवर्ण कूला, ४ रूप्य कूला, ५ रक्ता, ६ रक्तवती।

ञ—जम्बूद्वीप वर्ती मेरु से पूर्व मे सीता महानदी के दोनो किनारों पर छ अन्तर नदिया है,
यथा—१ ग्राहवती, २ द्रहवती, ३ पकवती, ४ तप्तजला, ५ मत्तजला ६ उन्मत्तजला।

ट—जम्बूद्वीपवर्ती मेरु से पश्चिम मे शीतोदा महानदी के दोनों किनारो पर छ अन्तर नदिया हैं।
यथा—१ क्षीरोदा, २ सिंह स्रोता, ३ अन्तर्वाहिनी,

४ उर्मिमालिनी, ५ फेनमालिनी
६ गम्भीर मालिनी ।

१-११ क—धातकीखण्ड के पूर्वार्ध मे छह अकर्म भूमियाँ हैं, यथा—हैमवत आदि नदी-सूत्र पर्यन्त जम्बूद्वीप के समान ग्यारह-सूत्र कहें ।

ख—धातकीखण्ड के पश्चिमार्ध मे जम्बूद्वीप के समान ग्यारह सूत्र हैं ।

ग—पुष्करवर द्वीपार्ध के पूर्वार्ध में जम्बूद्वीप के समान ग्यारह सूत्र हैं ।

घ—पुष्करवर द्वीपार्ध के पश्चिमार्ध मे जम्बूद्वीप के समान ग्यारह सूत्र हैं ।[1]

५२३ —ऋतुएं छ हैं, यथा—

१ प्रावृट—आषाढ और श्रावण मास ।
२ वर्षा ऋतु—भाद्रपद और आश्विन ।
३ शरद्—कार्तिक और मार्गशीर्ष ।
४ हेमन्त—पोष और माघ ।
५ बसन्त—फाल्गुन और चैत्र ।
६ ग्रीष्म—वैशाख और ज्येष्ठ ।

---

१ सब मिलकर ४५ सूत्र हैं ।

३ तिगिञ्छद्रह, ४ केसरीद्रह,
५ महा पौंडरीकद्रह, ६ पौंडरिक द्रह।

ढ—उन महाद्रहों में छह पल्योपम की स्थिति वाली छः महर्धिक देवियां रहती है।
यथा—१ श्री, २ ह्री, ३ धृति, ४ कीर्ति, ५ बुद्धि
६ लक्ष्मी।

ज—जम्बूद्वीपवर्ती मेरु म दक्षिण दिशा में छ महानदियां है।
यथा—१ गंगा, २ सिंधु, ३ रोहिता
४ रोहितांशा, ५ हरी, ६ हरिकांता।

झ—जम्बूद्वीपवर्ती मेरु से उत्तर दिशा में छ महा नदियां हैं,
यथा—१ नरकांता, २ नारीकांता,
३ सुवर्ण कूला, ४ रूप्य कूला,
५ रक्ता, ६ रक्तवती।

ञ—जम्बूद्वीप वर्ती मेरु से पूर्व म सीता महानदी के दोनों किनारों पर छः अन्तर नदियां है,
यथा—१ ग्राहवती, २ द्रहवती, ३ पंकवती,
४ तप्तजला, ५ मत्तजला ६ उन्मत्तजला।

ट—जम्बूद्वीपवर्ती मेरु से पश्चिम म शीतोदा महानदी के दोनों किनारों पर छः अन्तर नदियां हैं।
यथा—१ क्षीरोदा, २ सिंह श्रोता, ३ अन्तर्वाहिनी,

४ र्मिमालिनी, ५ फेनमालिनी
६ गम्भीर मालिनी ।

१-११ क—धातकीखण्ड के पूर्वार्ध मे छह अकर्म भूमियाँ हैं,
यथा—हैमवत आदि नदी-सूत्र पर्यन्त जम्बूद्वीप के
समान ग्यारह-सूत्र कहें ।

ख—धातकीखण्ड के पश्चिमार्ध मे जम्बूद्वीप के समान
ग्यारह सूत्र हैं ।

ग—पुष्करवर द्वीपार्ध के पूर्वार्ध में जम्बूद्वीप के समान
ग्यारह सूत्र हैं ।

घ—पुष्करवर द्वीपार्ध के पश्चिमार्ध में जम्बूद्वीप के
समान ग्यारह सूत्र हैं ।[1]

५२३ —ऋतुएँ छ हैं, यथा—

१ प्रावृट—आषाढ और श्रावण मास ।

२ वर्षा ऋतु—भाद्रपद और आश्विन ।

३ शरद्—कार्तिक और मार्गशीर्ष ।

४ हेमन्त—पोष और माघ ।

५ बसन्त—फाल्गुन और चैत्र ।

६ ग्रीष्म—वैशाख और ज्येष्ठ ।

---

१ सब मिलकर ५५ सूत्र हैं ।

५२४ क—दिनक्षय वाले छ पर्व है।[1] यथा

१ तृतीयपर्व—आषाढ कृष्ण पक्ष।

२ सप्तम पर्व—भाद्रपद कृष्ण पक्ष।

३ ग्यारहवां पर्व—कार्तिक कृष्ण पक्ष।

४ पन्द्रहवां पर्व—पौष कृष्ण पक्ष।

५ उन्नीसवां पर्व—फाल्गुन कृष्ण पक्ष।

६ तेतीसवां पर्व—वैशाख कृष्ण पक्ष।

ख—दिन वृद्धि वाले छ पर्व है,[2] यथा—

१ चतुर्थ पर्व—आषाढ शुक्ल पक्ष।

२ आठवां पर्व—भाद्रपद शुक्ल पक्ष।

३ बारहवां पर्व—कार्तिक शुक्ल पक्ष।

४ सोलहवां पर्व—पौष शुक्ल पक्ष।

५ बीसवां पर्व—फाल्गुन शुक्ल पक्ष।

६ चौवीसवां पर्व—वैशाख शुक्ल पक्ष।

५२५ —आभिनिबोधिक ज्ञान के छ अर्थावग्रह है, यथा—
१-६ श्रोत्रेन्द्रिय अर्थावग्रह यावत् नोइन्द्रिय अर्थावग्रह।

---

१ इन छ पर्वों (पक्षों) में दिन की हानि (दिन छोटे) और रात्रि की वृद्धि (रातें बड़ी) होती है।

५२६ —अवधि ज्ञान छ प्रकार का है। यथा—

१ आनुगामिक—मनुष्य के साथ जैसे मनुष्य की आँखें चलती हैं उसी प्रकार अवधि ज्ञान भी अवधिज्ञानी के साथ चलता है।

२ अनानुगामिक—जो अवधि ज्ञान दीपक की तरह अवधि ज्ञानी के साथ नहीं चलता।

३ वर्धमान—जो अवधि ज्ञान प्रति समय बढता रहता है।

४ हीयमान—जो अवधि ज्ञान प्रति समय क्षीण होता रहता है।

५ प्रतिपाती—जो अवधि ज्ञान पूर्ण लोक को देखने के पश्चात् नष्ट हो जाता है।

६ अप्रतिपाती—जो अवधि ज्ञान पूर्ण लोक को देखने के पश्चात् अलोक के एक प्रदेश को देखने की शक्ति वाला है।

५२७ —निर्ग्रन्थों और निर्ग्रन्थियों को ये छ अवचन (कुवचन) कहने योग्य नहीं हैं।

यथा—१ अलीक वचन—असत्य वचन[1]।

---

१ ऊघ लेने वाले निग्रन्थ या निग्रन्थी को कोई कहे कि—ऊघ क्यों लेते हो? उस समय निर्ग्रन्थ या निर्ग्रन्थी कहे कि—मैं प्रचला (ऊघ) नहीं लेता।

२ हीलित वचन—ईर्ष्या भरे वचन।

३ खिसित वचन—गुप्त बातें प्रगट करना।

४ परुष वचन—कठोर वचन।

५ गृहस्थ वचन—बेटा, भाई आदि कहना।

६ उदीण वचन—उपशान्त कलह को पुन उद्दीप्त करने वाले वचन।

५२८ —कल्प (साधु का आचार) के छ प्रस्तार हैं।[1]

यथा—१ छोटा साधु बडे साधु को कहे कि तुमने प्राणातिपात किया है।

२ छोटा साधु बडे साधु को कहे कि तुम मृषावाद बोले हो।

३ छोटा साधु बडे साधु को कहे कि तुमने अमुक वस्तु चुराई है।

४ छोटा साधु बडे साधु को कहे कि तुमने अविरति का सेवन किया है।

५ छोटा साधु बडे साधु को कहे कि तुम अपुरुष (नपुसक हो)।

६ छोटा साधु बडे साधु को दास वचन (तुम दास हो) कहे।

---

१ प्रस्तार—प्रायश्चित्त बढाना।

इन छ वचनो का जानबूझ कर भी बड़ा साधु पूर्ण प्रायश्चित्त न दे तो बड़ा साधु उसी प्रायश्चित्त का भागी होता है ।

५२९ —कल्प (साधु का आचार) के छ पलिमथू (सयम के घातक) हैं ।

यथा—१ कौत्कुच्य—कुचेष्टा करना सयम का घात करना है ।

२ मौखर्य—अनावश्यक बोलना सत्य वचन का घात करना है ।

३ चक्षुलोलुप—चचल चक्षु रहना ईर्यासमिति का घात करना है ।

४ तितिनिक—इष्ट वस्तु के अलाभ से दुखी होना एषणा प्रधान गोचरी का घात करना है ।

५ इच्छालोभिक—अति लोभ करना मुक्ति मार्ग का घात करना है ।

६ मिथ्या निदान करण—लोभ से निदान करना मोक्ष मार्ग का घात करना है । क्योंकि निदान (फलेच्छा) न करना ही भगवान् ने प्रशस्त कहा है ।

५३० —कल्प-साध्वाचार-की व्यवस्था छ प्रकार की है, यथा—१ सामायिक कल्पस्थिति—सामायिक सबधी मर्यादा ।

२ छेदोपस्थापनिक कल्पस्थिति—शक्षकाल पूर्ण होने पर पच महाव्रत धारण कराने की मर्यादा।

३ निर्विसमान कल्प स्थिति—परिहार विशुद्धि तप स्वीकार करने वाले की मर्यादा।

४ निर्विष्ठकल्पस्थिति—पारिहारिक तप पूरा करने वाले की मर्यादा।

५ जिन कल्पस्थिति—जिन कल्प की मर्यादा।

६ स्थविर कल्पस्थिति—स्थविर कल्प की मर्यादा।

५३१ क—श्रमण भगवान् महावीर चतुर्विध आहार परित्याग पूवक छटठ भक्त (दो उपवास) करके मुडित यावत् प्रवजित हुये।

ख—श्रमण भगवान् महावीर को जब केवल ज्ञान उत्पन्न हुआ था उस समय चौविहार छटठ भक्त था।

ग—श्रमण भगवान् महावीर जब सिद्ध यावत् सर्व दुःख से मुक्त हुए उस समय चौविहर छटठ भक्त था।

५३२ क—सनत्कुमार और माहेन्द्रकल्प—देवलोक मे विमान छ सौ योजन ऊचे हैं।

ख—सनत्कुमार और माहेन्द्र कल्प में भवधारणीय शरीर की अवगाहना—ऊचाई छ हाथ की है।

५३३ क—भोजन का परिणाम स्वभाव छ प्रकार का है

यथा—१ मनोज्ञ—मन को अच्छा लगने वाला।

२ रसिक—माधुर्यादिरस युक्त।

३ प्रीणनीय—तृप्ति करने वाला तथा शरीर के रसो मे समता लाने वाला।

४ बृंहणीय—शरीर की वृद्धि करने वाला।

५ दीपनीय—जठराग्नि प्रदीप्त करने वाला।

६ मदनीय—कामोत्तेजक।

ख—विष का परिणाम—स्वभाव छह प्रकार का है।

यथा—१ दष्ट—सर्प आदि के डक से पीडा पहुँचाने वाला।

२ भुक्त—खाने पर पीडा पहुचाने वाला।

३ निपतित—शरीर पर गिरते ही पीडित करने वाला अथवा दृष्टिविष।

४ मासानुसारी—मास में व्याप्त होने वाला।

५ शोणितानुसारी—रक्त मे व्याप्त होने वाला।

६ अस्थिमज्जानुसारी—हड्डी और चर्बी मे व्याप्त होने वाला।

५३४ —प्रश्न छ प्रकार के हैं,

यथा—१ सशय प्रश्न—सशय होने पर किया जाने वाला प्रश्न।

२ मिथ्याभिनिवेश प्रश्न[1]—परपक्ष को दूषित करने के लिये किया गया प्रश्न।

३ अनुयोगी प्रश्न—व्याख्या करने के लिए ग्रन्थकार द्वारा किया गया प्रश्न।

४ अनुलोम प्रश्न—कुशल प्रश्न।

५ तथा ज्ञान प्रश्न—गणधर गौतम के प्रश्न।

६ अतथाज्ञान प्रश्न—अज्ञ व्यक्ति द्वारा किया गया प्रश्न।

५३५ क—चमर चंचा राजधानी मे उत्कृष्ट विरह छ मास का है।

ख—प्रत्येक इन्द्रप्रस्थान मे उपपात विरह उत्कृष्ट छ मास का है।

ग—सप्तम पृथ्वी तमस्तमा मे उपपात विरह उत्कृष्ट छ मास का है।

घ—सिद्धगती मे उपपात विरह उत्कृष्ट छ मास का है।

दण्डक सूत्र

५३६ क—आयुबंध छ प्रकार का है,

यथा—१ जातिनामनिधत्तायु—जातिनाम कर्म के साथ प्रति समय भोगने के लिये आयुकर्म के दलिकों की निषेक नाम की रचना।

---

१ व्युद्ग्रह प्रश्न

२ गतिनाम निधत्तायु—गतिनाम कर्म के साथ पूर्वोक्त रचना।

३ स्थितिनाम निधत्तायु—स्थिति की अपेक्षा से निषेक रचना।

४ अवगाहना नाम निधत्तायु—जिसमे आत्मा रहे वह अवगाहना औदारिक शरीर आदि की होती है। अत शरीर नाम कर्म के साथ पूर्वोक्त रचना।

५ प्रदेश नाम निधत्तायु—प्रदेश रूप नाम कर्म के साथ पूर्वोक्त रचना।

६ अनुभाव नाम निधत्तायु—अनुभाव विपाक रूप नाम कर्म के साथ पूर्वोक्त रचना।

ख—१-४ नैरयिको के यावत् वैमानिको के छ प्रकार का आयुबंध होता है।

यथा १-६ जातिनाम निधत्तायु—यावत् अनुभाव नाम निधत्तायु।

ग—१-४ नैरयिक यावत् वैमानिक छ मास आयु शेष रहने पर परभव का आयु बांधते हैं।[1]

---

१ असख्य वर्ष की आयु वाले मनुष्य और तिर्यञ्च छ मास आयु शेष रहने पर परभव का आयु बांधते हैं।

५३७ —भाव छ प्रकार के हैं,
यथा—१ औदयिक, २ औपशमिक, ३ क्षायिक, ४ क्षायोपशमिक, ५ पारिणामिक, ६ सान्निपातिक।

५३८ —प्रतिक्रमण छ प्रकार के हैं,
यथा—१ उच्चार प्रतिक्रमण,—मल को परठकर स्थान पर आवे और मार्ग में लगे दोषों का प्रतिक्रमण करे।

२ प्रश्रवण प्रतिक्रमण—मूत्र परठकर पूर्ववत् प्रतिक्रमण करे।

३ इत्वरिक प्रतिक्रमण—थोडे काल का प्रतिक्रमण यथा—दिन सम्बन्धी प्रतिक्रमण या रात्रि सबंधी प्रतिक्रमण।

४ यावज्जीवन का प्रतिक्रमण—महाव्रत ग्रहण करना अथवा भक्त परिज्ञा स्वीकार करना।

५ यत्किंचित् मिथ्या प्रतिक्रमण—जो मिथ्या आचरण हुआ हो उसका प्रतिक्रमण।

६ स्वाप्नान्तिक प्रतिक्रमण—स्वप्न सम्बन्धी प्रतिक्रमण।

५३९ क—कृत्ति का नक्षत्र के छ तारे हैं।
ख—अश्लेषा नक्षत्र के छ तारे हैं।

५४० क—जीवो ने छ स्थानो में अर्जित पुद्गलों को पाप कर्म के रूप में एकत्रित किया हैं। एकत्रित करते हैं और एकत्रित करेंगे।

यथा—१-६ पृथ्वीकाय निर्वर्तित—यावत्—त्रसकाय निर्वर्तित ।

ख-ज—इसी प्रकार पाप कर्म के रूप मे चय, उपचय, बध, उदीरण, वेदन और निर्जरा सम्बन्धी सूत्र हैं।

झ—छ प्रदेशी स्कघ अनन्त हैं।

ञ—छ प्रदेशो मे स्थित पुद्गल अनन्त हैं।

ट—छ समय की स्थिति वाले पुद्गल अनन्त हैं।

ठ-ण—छ गुण काले—यावत्—छ गुण रूखे पुद्गल अनन्त है।

षष्ठ स्थान समाप्त

लोक देखा है उसी दिशा मे लोक है अन्य दिशा मे नहीं है—ऐसी प्रतीति उसे होती है और वह मानने लगता है कि मुझे ही विशिष्ट ज्ञान उत्पन्न हुआ है और वह दूसरों को ऐसा कहता है कि जो लोग "पाच दिशाओ मे लोक है" ऐसा कहते हैं वे मिथ्या कहते है।

द्वितीय विभग ज्ञान—किसी श्रमण ब्राह्मण को पाच दिशा का लोकाभिगम ज्ञान उत्पन्न होता है। अत वह पूर्व, पश्चिम, दक्षिण और उत्तर दिशा मे तथा ऊपर सौधर्म देवलोक पर्यन्त लोक देखता है तो उस समय उसे यह अनुभव होता है कि लोक पाच दिशाओ मे ही हैं। तथा यह भी अनुभव होता है कि मुझे ही अतिशय ज्ञान उत्पन्न हुआ है। और वह यों कहने लगता है कि जो लोग "एक ही दिशा म लोक है" ऐसा कहते हैं व मिथ्या कहते हैं।

तृतीय विभग ज्ञान—किसी श्रमण या ब्राह्मण को क्रिया वरण जीव नाम का विभग ज्ञान उत्पन्न होता है तो वह जीवों को हिंसा करते हुए, झूठ बोलते हुए, चोरी करते हुए, मैथुन करते हुए, परिग्रह म आसक्त रहते हुए और रात्रि भोजन करत हुए देखता है किन्तु इन सब कृत्यो से जीवों क पाप कर्मों का बन्ध होता है यह नही देख सकता उस समय उसे यह अनुभव होता है कि मुझे ही अतिशय ज्ञान उत्पन्न हुआ है। और वह यों मानने लगता है कि जीव व आवरण (कर्म बन्ध) क्रिया रूप ही है। साथ ही यह भी कहने लगता है कि जो श्रमण ब्राह्मण

"जीव के क्रिया से आवरण (कर्म बन्ध) नहीं होता" ऐसा कहते हैं वे मिथ्या कहते है।

चतुर्थ विभग ज्ञान—किसी श्रमण ब्राह्मण को मुदग्रविभग ज्ञान उत्पन्न होता है तो वह बाह्य और आभ्यन्तर पुद्गलो को ग्रहण करके तथा उनके नाना प्रकार के स्पर्श करके नाना प्रकार के शरीरों की विकुर्वणा करते हुए देवताओं को देखता है उस समय उसे यह अनुभव होता है कि मुझे ही अतिशय वाला ज्ञान उत्पन्न हुआ है अत मैं देख सकता हूँ कि जीव मुदग्र अर्थात् बाह्य और आभ्यन्तर पुद्गलो को ग्रहण करके शरीर रचना करने वाला है। "जो लोग जीव को अमुदग्र कहते हैं वे मिथ्या कहते हैं" ऐसा वह कहने लगता है।

पचम विभग ज्ञान—किसी श्रमण ब्राह्मण को अमुदग्र विभग ज्ञान उत्पन्न होता है तो वह आभ्यन्तर और बाह्य पुद्गलो को ग्रहण किये विना ही देवताओ को विकुर्वणा करते हुए देखता है। उस समय उसे ऐसा अनुभव होता है कि मुझे ही अतिशय ज्ञान उत्पन्न हुआ है अत मैं देख सकता हूँ "जीव अमुदग्र है" और वह यो कहने लगता है कि जो लोग जीव को मुदग्र समझते हैं वे मिथ्यावादी है।

छठा विभग ज्ञान—किसी श्रमण ब्राह्मण को जब रूपीजीव नाम का विभग ज्ञान उत्पन्न होता है तब वह उस ज्ञान से देवताओं को ही बाह्याभ्यन्तर पुदगल ग्रहण करके या ग्रहण किये विना विकुर्वणा करते देखता है। उस समय उसे ऐसा अनुभव

होता है कि मुझे अतिशय वाला ज्ञान उत्पन्न हुआ है और वह यो मानने लगता है कि जीव तो रूपी है किन्तु जो लोग जीव को अरूपी कहते हं उन्हे वह मिथ्यावादी कहने लगता है।

सप्तम विभग ज्ञान—किसी श्रमण ब्राह्मण को जब "सर्व जीवा" नाम का विभग ज्ञान उत्पन्न होता है तब वह वायु से इधर उधर हिलते चलते कापते और अन्य पुद्गलो के साथ टकराते हुए पुद्गलो को देखता है उस समय उसे ऐसा अनुभव होता है कि मुझे ही अतिशय वाला ज्ञान उत्पन्न हुआ है अत' वह यों मानने लगता है कि "लोक में जो कुछ है वह सब जीव ही है" किन्तु जो लोग लोक मे जीव अजीव दोनो मानते हैं उन्हें वह मिथ्यावादी कहने लगता है।

ऐसे विभग ज्ञानी को पृथ्वी, वायु और तजस्काय का सम्यग ज्ञान होता ही नही अत वह उस विषय म मिथ्या भ्रम मे पडा होता है।

५४३ क—योनि सग्रह सात प्रकार का है,

यथा—१ अडज,—पक्षी, मछलिया, सप इत्यादि अड से पैदा होने वाले।

२ पोतज—हाथी, वागल आदि चमडे से लिपटे हुए उत्पन्न होने वाले।

३ जरायुज—मनुष्य, गाय आदि जर के साथ उत्पन्न होने वाले।

४ रसज—रस मे उत्पन्न हाने वाल।

५ सस्वेदज—पसीने से उत्पन्न होने वाले।

६ सम्मूर्छिम—माता-पिता के सयोग के बिना उत्पन्न होने वाले जीव—कृमि आदि।

७ उद्भिज—पृथ्वी का भेदन कर उत्पन्न होने वाले जीव खजनक आदि।

ख-ज—अण्डज की गति और आगति सात प्रकार की होती है।

पोतज की गति और आगति सात प्रकार की होती है। इसी प्रकार उद्भिज पर्यन्त सातों की गति और आगति जाननी चाहिए। अण्डज यदि अण्डजो मे आकर उत्पन्न होता है तो अण्डजो पोतजो यावत् उद्भिजो से आकर उत्पन्न होता है।

इसी प्रकार अण्डज अण्डजपन को छोडकर अण्डज पोतज यावत् उद्भिज जीवन को प्राप्त होता है।

५४४ क—आचार्य और उपाध्याय सात प्रकार से गण का सग्रह (सगठन) करते हैं।

यथा—१ आचार्य और उपाध्याय गण मे रहने वाले साधुओ को सम्यक् प्रकार से आज्ञा (विधि अर्थात् कर्तव्य के लिए आदेश) या धारणा (अकृत्य का निषेध) करे।

२-५ आगे पाचवे स्थान मे कहे अनुसार (यावत्-

आचार्य और उपाध्याय गच्छ को पूछकर प्रवृत्ति करें किन्तु गच्छ को पूछे विना प्रवृत्ति न करें) करें।

६ आचार्य और उपाध्याय गण म अप्राप्त उपकरणो को सम्यक् प्रकार से (निर्दोष रूप से) प्राप्त करे।

७ आचार्य और उपाध्याय गण मे प्राप्त उपकरणो की सम्यक् प्रकार से रक्षा एव सुरक्षा करे किन्तु जैसे तैसे न रखे।

ख—आचार्य और उपाध्याय सात प्रकार से गण का अग्रह (छिन्न-भिन्न) करते हैं।

यथा—१ आचार्य या उपाध्याय गण में रहने वाले साधुओ को आज्ञा या धारणा सम्यक् प्रकार से न करे। इसी प्रकार यावत् २-७ प्राप्त उपकरणो की सम्यक् प्रकार से रक्षा न करे।

५४५ क—पिण्डैषणा सात प्रकार की कही गई है,

यथा—१ असंसृष्टा—देने योग्य आहार से हाथ या पात्र लिप्त न हो ऐसी भिक्षा लेना।

२ संसृष्टा—देने योग्य आहार से हाथ या पात्र लिप्त हो ऐसी भिक्षा लेना।

३ उद्धृता—गृहस्थ अपने लिए रांधने वासण के मे से आहार बाहर निकाले व ऐसा आहार ले।

४ अल्पलेपा—जिस आहार म पात्र म लेप न लाग ऐसा आहार (चणाआदि) ले।

५ अवगृहीता—भाजन मे परोषा हुआ आहार ले ।

६ प्रगृहीता—परोषने के लिये हाथ मे लिया हुआ अथवा खाने के लिए लिया हुआ आहार ही ले ।

७ उज्झित धर्मा—फेंकने योग्य आहार ही भिक्षा मे ले ।

ख—पाणेषणा सात प्रकार की कही गई है ।[1]

ग—अवग्रह प्रतिमा सात प्रकार की कही गई है ।
यथा—१ "मुझे अमुक उपाश्रय ही चाहिये" ऐसा निश्चय करके आज्ञा मांगे ।

२ "मेरे साथी साधुओ के लिए उपाश्रय की याचना करूंगा" और उनके लिए जो उपाश्रय मिलेगा उसी मे मैं रहूगा ।

३ मैं अन्य साधुओ के लिए उपाश्रय की याचना करूंगा किन्तु मैं उसमें नहीं रहूंगा ।

४ मैं अन्य साधुओ के लिए उपाश्रय की याचना नही करूंगा किन्तु अन्य साधुओ द्वारा याचित उपाश्रय मे मैं रहूंगा ।

५ मैं अपने लिये ही उपाश्रय की याचना करूंगा अन्य के लिए नही ।

---

१ पिण्डैषणा के समान पाणैषणा भी है ।

६ मैं जिसके घर (उपाश्रय) मे ठहरूँगा उसी के यहाँ से सस्तारक भी प्राप्त होगा तो उस पर सोऊँगा अन्यथा बिना सस्तारक के ही रात बिताऊँगा ।

७ मैं जिस घर मे (उपाश्रय) मे ठहरूँगा उसमे पहले से बिछा हुआ सस्तारक होगा तो उसका उपयोग करूँगा ।

घ—सप्तैकक सात प्रकार का कहा गया है । यथा—

१. स्थान सप्तैकक, २ नैषेधिकी सप्तकक,

३ उच्चारप्रश्रवण विधि सप्तैकक, ४ शब्द सप्तैकक,

५ रूप सप्तैकक, ६ परक्रिया सप्तैकक,

७ अन्योन्य क्रिया सप्तैकक ।[1]

ङ—सात महा अध्ययन कहे गये हैं ।[2]

च—सप्तसप्तमिका भिक्षु प्रतिमा की आराधना ४९ अहो रात्र मे होती है उसम सूत्रानुसार यावत्—१९६ दत्ति ली जाती है ।

५४६ क—अधोलोक मे सात पृथ्वियाँ हैं ।

ख—सात घनोदधी हैं ।

---

१ आचारांग सूत्र के द्वितीय श्रुतस्कध की चूला रूप ये सात अध्ययन हैं ।

२ सूत्रकृताङ्ग सूत्र के द्वितीय श्रुतस्कन्ध मे ये सात महा अध्ययन हैं ।

ग—सात घनवात और सात तनुवात है।

घ—सात अवकाशान्तर है।

ङ—इन सात अवकाशान्तरो मे सात तनुवात प्रतिष्ठित हैं।

च—इन सात तनुवातों में सात घनवात प्रतिष्ठित हैं।

छ—इन सात घनवातो मे सात घनोदधि प्रतिष्ठित हैं।

ज—इन सात घनोदधियो मे पुष्पभरी छाबडी के समान सस्थान वाली सात पृथ्वियाँ है।
यथा—१-७ प्रथमा यावत् सप्तमा।

झ—इन सात पृथ्वियों के सात नाम हैं।
यथा—१ घम्मा, २ वसा, ३ सेला, ४ अजना, ५ रिष्ठा, ६ मघा, ७ माघवती।

ज—इन सात पृथ्वियो के सात गोत्र हैं।
यथा—१ रत्नप्रभा, २ शर्कराप्रभा, ३ बालुकाप्रभा, ४ पकप्रभा, ५ धूमप्रभा, ६, तमप्रभा, ७ तमस्तमाप्रभा।

५४७ —बादर (स्थूल) वायुकाय सात प्रकार की कही गई है।
यथा—१ पूर्व का वायु, २ पश्चिम का वायु, ३ दक्षिण का वायु, ४ उत्तर का वायु, ५ ऊर्ध्व दिशा का वायु, ६ अधोदिशा का वायु ७ विविध दिशाओं का वायु।

५४८ —सस्थान सात प्रकार के कहे गय हैं।
यथा—१ दीघ २ ह्रस्व, ३ वृत्त ४ त्र्यस्र,
५ चतुरस्र, ६ पृथुल, ७ परिमण्डल।

५४६ भय स्थान सात प्रकार के कहे गये हैं।
यथा—१ इहलोक भय, २ परलोक भय,
३ आदान भय, ४ अकस्मात् भय, ५ वेदना भय,
६ मरण भय। ७ अश्लोक—अपयश भय।

५५० क—सात कारणो से छद्मस्थ (असवज्ञ) जाना जाताहै।
यथा—१ हिंसा करने वाला, २ झूठ बोलने वाला,
३ अदत्त लेने वाला, ४ शब्द रूप, रस और स्पश
को भोगने वाला, ५ पूजा और सत्कार से प्रसन्न
होने वाला।

६ 'यह आधा कम आहार सावद्य (पाप सहित) है''
इस प्रकार की प्ररूपणा करने के पश्चात भी आधा
कम आदि दोषो का सेवन करने वाला।

७ कथनी के समान करणी न करने वाला।

ख—सात कारणो से केवली जाना जाता है, यथा—

१ हिंसा न करने वाला।
२ झूठ न बोलने वाला।
३ अदत्त न लेने वाला।
४ शब्द, गन्ध, रूप, रस और स्पश का न भोगने
वाला।

५-७ पूजा और सत्कार से प्रसन्न न होने वाला यावत्
कथनी के समान करणी करने वाला।

८१ क—मूल गोत्र सात कहे जाते हैं, यथा—

१ काश्यप, २ गौतम, ३ वत्स, ४ कुत्स,
५ कौशिक, ६ मांडव्य, ७ वाशिष्ट।

ख—काश्यप गोत्र सात प्रकार का कहा गया है, यथा—

१ काश्यप, २ साण्डिल्य, ३ गोल्य, ४ बाल,
५ मौजकी, ६ पर्वप्रेक्षकी, ७ वर्षकृष्ण।

ग—गौतम गोत्र सात प्रकार का कहा गया है, यथा—

१ गौतम, २ गार्ग्य, ३ भारद्वाज, ४ अंगिरस,
५ शर्कराभ, ६ भक्षकाम, ७ उदकात्माभ।

घ—वत्स गोत्र सात प्रकार का कहा गया है, यथा—

१ वत्स, २ आग्नेय, ३ मैत्रिक, ४ स्वामिली,
५ शलक, ६ अस्थिसेन, ७ वीतकर्म।

ङ—कुत्स गोत्र सात प्रकार का कहा गया है, यथा—

१ कुत्स, २ मौद्गलायन, ३ पिंगलायन,
४ कौडिन्य, ५ मडली, ६ हारित,
७ सौम्य।

च—कौशिक गोत्र सात प्रकार का कहा गया है, यथा—

१ कौशिक, २ कात्यायन, ३ शालंकायण,
४ गोलिकायण, ५ पाक्षिकायण, ६ आग्नेय,
७ लोहित्य।

छ—मांडव्य गोत्र सात प्रकार का कहा गया है, यथा—

१ माडव्य, २ अरिष्ट, ३ समुक्त, ४ तैल,

५ गेलापत्य, ६ काडिल्य, ७ क्षारायण।

ञ—वाशिष्ठ गोत्र सात प्रकार का कहा गया है, यथा—

१ वाशिष्ठ, २ उजायन, ३ जारेकृष्ण,
४ व्याघ्रापत्य, ५ कौण्डिन्य, ६ सज्ञी,
७ पाराशर।

५५२ —मूलनय सात प्रकार के कहे गये हैं, यथा—

१ नैगम, २ सग्रह, ३ व्यवहार,
४ ऋजुसूत्र, ५ शब्द, ६ समभिरूढ़,
७ एवभूत।

५५३ क —स्वर सात प्रकार के कहे गये हैं, यथा—

१ षड्ज, २ रिसभ, ३ गांधार, ४ मध्यम,
५ पचम, ६ धैवत, ७ निषाद।

१—षड्ज—१ नासा, २ कठ, ३ हृदय, ४ जीभ, ५ दांत, और तालु इन छ स्थानों से उत्पन्न होने वाला स्वर।

२—रिषभ—बैल (सांड) के समान गभीर स्वर।

३—गाधार—विविध प्रकार के गधो से युक्त स्वर।

४—मध्यम—महानाद वाला स्वर।

५—पचम—नासिकाओ से निकलने वाला स्वर।

६—धैवत—अन्य स्वरो से अनुसधान करने वाला स्वर।

७—निषाद—अन्य स्वरों को तिरस्कृत करने वाला स्वर।

ख—इन सात स्वरो के सात स्वर स्थान हैं, यथा

१—षड्ज स्वर जिह्वा के अग्रभाग से निकने वाला स्वर।

२—ऋषभ स्वर हृदय से निकलता है।

३—गाधार स्वर उग्र कठ से निकलता है।

४—मध्यम स्वर जिह्वा के मध्य भाग से निकलता है।

५—पचम स्वर पाँच स्थानो से निकलने वाला स्वर।

६—धैवत स्वर दाँत और ओष्ठ से निकलने वाला स्वर।

७—निषाद स्वर मस्तक से निकलने वाला स्वर।

ग—सात प्रकार के जीवो से निकलने वाले सात स्वर।

१—षड्ज मयूर के कण्ठ से निकलने वाला स्वर।

२—रिषभ कुक्कुट के कण्ठ से निकलता है।

३—गाधार हस के कण्ठ से निकलता है।

४—मध्यम घेंटे के कण्ठ से निकलता है।

५—पचम कोयल के कण्ठ से निकलता है।

६—धैवत सारस या क्रौंच के कण्ठ से निकलता है।

७—निषाद हाथी के कण्ठ से निकलता है।

घ सात प्रकार के अजीव पदार्थों से निकलने वाले सात स्वर, यथा—

यथा—१ षड्जस्वर—मृदङ्ग से निकलता है।

२ ऋषभ स्वर—गोमुखी[1] से निकलता है।

३ गाधार स्वर—शख से निकलता है।

---

१ गोमुखी को रणसिंगा भी कहते हैं।

५ गोलापत्य, ६ काण्डिल्य, ७ क्षारायण ।

ञ—वाशिष्ठ गोत्र सात प्रकार का कहा गया है, यथा—

१ वाशिष्ठ, २ उजायन, ३ जारेकृष्ण,
४ व्याघ्रापत्य, ५ कौण्डिन्य, ६ सज्ञी,
७ पाराशर ।

५५२ —मूलनय सात प्रकार के कहे गये हैं, यथा—

१ नैगम, २ सग्रह, ३ व्यवहार,
४ ऋजुसूत्र, ५ शब्द, ६ समभिरूढ,
७ एवभूत ।

५५३ क —स्वर सात प्रकार के कहे गये हैं, यथा—

१ षड्ज, २ रिसभ, ३ गाधार, ४ मध्यम,
५ पचम, ६ धैवत, ७ निषाद ।

१—षड्ज—१ नासा, २ कठ, ३ हृदय, ४ जीभ,
५ दाँत, और तालु इन छ स्थानो से उत्पन्न होने वाला स्वर ।

२—रिषभ—बैल (सांढ) के समान गभीर स्वर ।

३—गाधार—विविध प्रकार के गधो से युक्त स्वर ।

४—मध्यम—महानाद वाला स्वर ।

५—पचम—नासिकाओ से निकलने वाला स्वर ।

६—धैवत—अन्य स्वरो से अनुसधान करने वाला स्वर ।

७—निषाद—अन्य स्वरों को तिरस्कृत करने वाला स्वर ।

ख—इन सात स्वरों के सात स्वर स्थान हैं, यथा

१—षड्ज स्वर जिह्वा के अग्रभाग से निकने वाला स्वर।

२—ऋषभ स्वर हृदय से निकलता है।

३—गांधार स्वर उग्र कंठ से निकलता है।

४—मध्यम स्वर जिह्वा के मध्य भाग से निकलता है।

५—पंचम स्वर पांच स्थानों से निकलने वाला स्वर।

६—धैवत स्वर दांत और ओष्ठ से निकलने वाला स्वर।

७—निषाद स्वर मस्तक से निकलने वाला स्वर।

ग—सात प्रकार के जीवों से निकलने वाले सात स्वर।

१—षड्ज मयूर के कण्ठ से निकलने वाला स्वर।

२—रिषभ कुक्कुट के कण्ठ से निकलता है।

३—गांधार हंस के कण्ठ से निकलता है।

४—मध्यम घेंटे के कण्ठ से निकलता है।

५—पंचम कोयल के कण्ठ से निकलता है।

६—धैवत सारस या क्रौंच के कण्ठ से निकलता है।

७—निषाद हाथी के कण्ठ से निकलता है।

घ सात प्रकार के अजीव पदार्थों से निकलने वाले सात स्वर, यथा—

यथा—१ षड्जस्वर—मृदङ्ग से निकलता है।

२ ऋषभ स्वर—गोमुखी[1] से निकलता है।

३ गांधार स्वर—शंख से निकलता है।

---

१ गोमुखी को रणसिंगा भी कहते हैं।

४ मध्यम स्वर—झालर से निकलता है।

५ पचम स्वर—गोधिका वाद्य से निकलता है।

६ धैवत स्वर—ढोल से निकलता है।

७ निषाद स्वर—महाभेरी से निकलता है।

ङ—सात स्वर वाले मनुष्यो के लक्षण—

यथा—१ षडजस्वर वाले मनुष्य को आजीविका सुलभ होती है, उसका काय निष्फल नहीं होता। उसे गायें, पुत्र और मित्रो की प्राप्ति होती है। वह स्त्री को प्रिय होता है।

२ रिषभ स्वर वाले को ऐश्वय प्राप्त होता है। वह सेनापति बनता है और उसे धन लाभ होता है। तथा वस्त्र, गध, अलकार, स्त्री, और शयन आदि प्राप्त होते हैं।

३ गाधार स्वर वाला गीत—युक्तिज्ञ, प्रधान आजी विका वाला, कवि, कलाओ का ज्ञाता, प्रज्ञाशील और अनेक शास्त्रो का ज्ञाता होता है।

४ मध्यम स्वर वाला—सुख से खाता पीता है और दान देता है।

५ पचम स्वर वाला—राजा, शूरवीर, लोक सग्रह करने वाला, और गणनायक होता है।

६ धैवत स्वर वाला—शाकुनिक, झगडालु, वागु रिक, शौकरिक और मच्छीमार होता है।

७ निषाद स्वर वाला—चाडाल, अनेक पापकर्मो का करने वाला या गौ घातक होता है।

च—इन सात स्वरो के तीन ग्राम कहे गये हैं।
यथा १ षड्ज ग्राम, २ मध्यम ग्राम,
३ गाधार ग्राम।

छ—षड्जग्राम की सात मूछनायें होती हैं।
यथा १ मगी, २ कौरवीय, ३ हरि, ४ रजनी,
५ सारकान्ता, ६ सारसी, ७ शुद्ध षड्जा।

ज—मध्यम ग्राम की सात मूछनायें होती हैं।
यथा १ उत्तरमन्दा, २ रजनी, ३ उत्तरा,
४ उत्तरासमा, ५ आशोकान्ता, ६ सौवीरा,
७ अभीरू।

झ—गाधार ग्राम की सात मूछनायें हैं।
यथा १ नदी, २ क्षुद्रिमा, ३ पुरिमा,
४ शुद्ध गाधारा, ५ उत्तर गाधारा, ६ सुष्ठुत्तर आयाम, ७ कोटि मातसा।

ञ—१ प्रश्न—सात स्वर कहा से उत्पन्न होते हैं?
उत्तर—नाभी से।
२ प्रश्न—गेय की यानि कौनसी होती है?
उत्तर—गीत रुदित योनि है।
३ प्रश्न—उच्छ्वास काल कितन समय का है?

उत्तर—एक पद के उच्चारण में जितना समय लगता है उतना समय गीत के उच्छ्वास का है।

४—गेय के तीन आकार हैं, वे इस प्रकार है—

१ मद स्वर से आरम्भ करे।

२ मध्य मे स्वर की वृद्धि करे।

१ अन्त मे क्रमश हीन करे।

५—गेय के छ दोष, आठ गुण, तीन वृत्त और दो भणितियाँ इनको जो सम्यक् प्रकार से जानता है वह सुशिक्षित रग (नाट्य शाला) मे गा सकता है।

६—हे गायक! इन छ दोषों को टालकर गाना।

१ भयभीत होकर गाना, २ शीघ्रतापूर्वक गाना, ३ सक्षिप्त करके गाना, ४ ताल बद्ध न गाना, ५ काकस्वर से गाना, ६ नाक से उच्चारण करते हुए गाना।

गेय के आठ गुण हैं।

यथा—१ पूर्ण, २ रक्त, ३ अलकृत, ४ व्यक्त, ५ अविस्वर, ६ मधुर, ७ स्वर, ८ सुकुमार,

गेय के ये गुण और हैं

यथा—१ उरविशुद्ध, कठविशुद्ध और शिरविशुद्ध जो गाया जाय।

२ मृदु और गम्भीर स्वर से गाया जाय।

३ तालबद्ध और प्रतिक्षेप बद्ध गाया जाय।

४ सात स्वरो से सम गाया जाय।

गेय के ये आठ गुण और है।

१ निर्दोष, २ सारयुक्त, ३ हेतु युक्त, ४ अलकृत

५ उपसहार युक्त, ६ सोत्प्रास, ७ मित, ८ मधुर।

तीन वृत्त हैं—

१ सम, २ अर्ध सम, ३ सर्वत्र विषम।

दो भणितिया हैं, यथा—

१ सस्कृत और २ प्राकृत

इन दो भाषाओ का ऋषियो ने प्रशस्त मानी हैं और

इन दो भाषाओ म ही गाया जाता है।

१ प्रश्न—मधुर कौन गाती है?

उत्तर—श्यामा (किंचित् काली) स्त्री।

२ प्रश्न—खर स्वर से कौन गाती है?

उत्तर—काली (घन के समान श्याम रग वाली)।

३ प्रश्न—रुक्ष स्वर से कौन गाती है?

उत्तर—काली।

४ प्रश्न—दक्षता पूर्वक कौन गाती है?

उत्तर—गौरी (गौरवर्ण वाली)

५ प्रश्न—मन्द स्वर से कौन गाती है?

उत्तर—काणी।

६ प्रश्न—शीघ्रतापूर्वक कौन गाती है।

उत्तर—अधी

७ प्रश्न—विस्वर (विरुद्ध स्वर) से कौन गाती है?

उत्तर—पिंगला—भूरे वर्ण वाली।

स्वर सात प्रकार से सम होता है,

यथा—१ तन्त्रीसम, २ तालसम, ३ पाद सम,
४ लय सम, ५ ग्रह सम, ६ श्वासोच्छ्वाससम,
७ सचार सम, सात स्वर, तीन ग्राम, इक्कीस
मूर्छना, और उनपचास तान हैं।

इति स्वर मडल

५५४ —काय क्लेश सात प्रकार का कहा गया है,
यथा—१ स्थानातिग—कार्योत्सग करने वाला।
२ उत्कटुकासनिक—उकडु बैठने वाला।
३ प्रतिमास्थायी—भिक्षु प्रतिमा का वहन करने वाला।
४ वीरासनिक—सिहासन पर बैठने वाले के समान बैठना।
५ नैषधिक—पैर आदि स्थिर करके बैठना।
६ दडायतिक—दण्ड के समान पैर फैलाकर बैठना।
७ लगडशायी—वक्र काष्ठ के समान—
—भूमी से पीठ ऊची रखकर सोने वाला।

५५ क—जम्बूद्वीप मे सात वर्ष (क्षेत्र) कहे गये हैं,
यथा—१ भरत, २ एरवत, ३ हैमवत, ४ हैरण्यवत, ५ हरिवर्ष, ६ रम्यक् वर्ष, ७ महाविदेह।

ख—जम्बूद्वीप मे सात वर्षधर पर्वत कहे गये हैं।
यथा—१ चुल्लहिमवन्त, २ महाहिमवत, ३ निषध।
४ नीलवत, ५ रुक्मी, ६ शिखरी, ७ मदराचल।

ग—जम्बूद्वीप मे सात महानदिया हैं जो पूर्व की ओर बहती हुई लवण समुद्र मे मिलती हैं।
यथा—१ गगा, २ रोहिता, ३ हरित, ४ शीता,
५ नरकान्ता, ६ सुवर्णकूला, ५ रक्ता।

घ—जम्बूद्वीप मे सात महानदिया हैं जो पश्चिम की ओर बहती हुई लवण समुद्र मे मिलती हैं,
यथा—१ सिन्धु, २ रोहितांशा, ३ हरिकान्ता,
४ शीतोदा, ५ नारीकान्ता, ६ रुप्यकूला,
७ रक्तवती।

ङ—धातकीखण्ड द्वीप के पूर्वार्ध मे सात वर्ष हैं,
यथा—१-७ भरत—यावत्—महाविदेह।

च—धातकीखण्ड द्वीप मे पूर्वार्ध मे सात वर्षधर पर्वत हैं।
यथा—१ चुल्ल हिमवत—यावत्—मदराचल।

छ—धातकी खण्ड द्वीप के पूर्वार्ध मे सात महानदियां हैं जो पूर्व दिशा मे बहती हुई कालोद समुद्र मे मिलती है।
यथा—१-७ गगा यावत् रक्ता।

यथा—१ तन्त्रीसम, २ तालसम, ३ पाद सम,
४ लय सम, ५ ग्रह सम, ६ श्वासोच्छ्वाससम,
७ सचार सम, सात स्वर, तीन ग्राम, इक्कीस
मूर्छना, और उनपचास तान हैं।

इति स्वर मडल

५५४ —काय क्लेश सात प्रकार का कहा गया है,
यथा—१ स्थानातिग—कार्योत्सग करने वाला।
२ उत्कटुकासनिक—उकडु बैठने वाला।
३ प्रतिमास्थायी—भिक्षु प्रतिमा का वहन
करने वाला।
४ वीरासनिक—सिहासन पर बैठने वाल के
समान बैठना।
५ नैपधिक—पैर आदि स्थिर करक बैठना।
६ दडायतिक—दण्ड के समान पैर फैलाकर
बैठना।
७ लगडशायी—वक्र काप्ठ के समान—
—भूमी से पीठ ऊची रखकर सान वाला।

५५५ क—जम्बूद्वीप म मात वप (क्षेत्र) कह गय है,
यथा—१ भरत, २ ऐरवत, ३ हैमवत, ४ हैरण्य
वत, ५ हरिवर्प, ६ रम्यक् वप, ७ महाविदेह।

ख—जम्बूद्वीप मे सात वर्षधर पर्वत कहे गये हैं।
यथा—१ चुल्लहिमवन्त, २ महाहिमवत, ३ निषध।
४ नीलवत, ५ रुक्मी, ६ शिखरी, ७ मदराचल।

ग—जम्बूद्वीप मे सात महानदिया हैं जो पूर्व की ओर बहती हुई लवण समुद्र मे मिलती है।
यथा—१ गगा, २ रोहिता, ३ हरित, ४ शीता,
५ नरकान्ता, ६ सुवर्णकूला, ५ रक्ता।

घ—जम्बूद्वीप मे सात महानदिया हैं जो पश्चिम की ओर बहती हुई लवण समुद्र मे मिलती हैं,
यथा—१ सिन्धु, २ रोहिताशा, ३ हरिकान्ता,
४ शीतोदा, ५ नारीकान्ता, ६ रुप्यकूला,
७ रक्तवती।

ङ—धातकीखण्ड द्वीप के पूर्वार्ध मे सात वर्ष हैं,
यथा—१-७ भरत—यावत्—महाविदेह।

च—धातकीखण्ड द्वीप मे पूर्वार्ध मे सात वर्षधर पर्वत है।
यथा—१ चुल्ल हिमवत—यावत्—मदराचल।

छ—धातकी खण्ड द्वीप के पूर्वार्ध मे सात महानदिया है जो पूर्व दिशा मे बहती हुई कालोद समुद्र मे मिलती हैं।
यथा—१-७ गगा यावत् रक्ता।

ज—धातकी खण्ड द्वीप मे सात महानदिया हैं जो पश्चिम म बहती हुई लवण समुद्र म मिलती ह।
यथा—१-७ सिन्धु—यावत्—रक्तावती।

झ-ट—धातकी खण्ड द्वीप के पश्चिमार्ध म सात वर्ष हैं,
यथा १ ७ भरत यावत महाविदेह
शेष तीन सूत्र पूर्ववत।
विशेष—पूर्व की ओर बहने वाली नदिया लवण समुद्र मे मिलती हैं और पश्चिम की ओर बहने वाली नदिया कालोद समुद्र म मिलती हैं।

ड-त—पुष्करवर द्वीपार्ध के पूर्वार्ध म पूर्ववत् सात वर्ष है।
विशेष—पूर्व की ओर बहने वाली नदिया पुष्करोद समुद्र मे मिलती हैं। पश्चिम की ओर बहने वाली नदिया कालोद समुद्र मे मिलती हैं शेष ३ सूत्र पूर्ववत्।
इसी प्रकार पश्चिमार्ध के भी ४ सूत्र हैं।
विशेष—पूर्व की ओर बहने वाली नदिया कालोद-समुद्र म मिलती हैं और पश्चिम की ओर बहने वाली नदिया पुष्करोद समुद्र म मिलती हैं।
वर्ष, वर्षधर और नदिया सवत्र कहनी चाहिये।

५५६ क—जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र म अतीत उत्सर्पिणी म सात कुलकर थे,
यथा—१ मित्रदाम, २ सुदाम, ३ सुपार्श्व,

४ स्वयप्रभ, ५ विमलघोष, ६ सुघोष,
७ महाघोष।

ख—जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र मे इस अवसर्पिणी मे सात
कुलकर थे,
यथा—१ विमलवाहन, २ चक्षुष्मान्, ३ यशस्वान्,
४ अभिचन्द्र, ५ प्रसेनजित्, ६ मरुदेव, ७ नाभि।

ग—इन सात कुलकरो की सात भार्यायें थी,
यथा—१ चन्द्रयशा, २ चन्द्रकान्ता, ३ सुरूपा,
४ प्रतिरूपा, ५ चक्षुकान्ता, ६ श्रीकान्ता,
७ मरुदेवी ।

घ—जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र मे आगामी उत्सर्पिणी मे
सात कुलकर होगे।
यथा—१ मित्रवाहन, २ सुभीम, ३ सुप्रभ,
४ सयप्रभ, ५ दत्त, ६ सूक्ष्म, ७ सुबन्धु।

ड—विमलवाहन कुलकर के काल मे सात प्रकार के
कल्पवृक्ष उपभोग मे आते थे।
यथा—१ मद्यागा, २ भृगा, ३ चित्रागा, ४ चित्र-
रसा, ५ मण्यगा, ६ अनग्ना, ७ कल्पवृक्ष।

५५७ दण्ड नीति सात प्रकार की है—
यथा—१ हक्कार—हे या हा कहना।
२ मक्कार—मा अर्थात मत कर कहना।
३ धिक्कार—फटकारना ।

३ देश कथा, ४ राज कथा, ५ मृदुकारिणी कथा[1]
६ दर्शनभेदिनी[2] ७ चारित्र भेदिनी[3]

५७० —गण मे आचार्य और उपाध्याय के सात अतिशय हैं।

यथा—१-५ आचार्य और उपाध्याय उपाश्रय मे धूल भरे पैरों को दूसरे से झटकवावे या पुछावे तो भी मर्यादा का उल्लघन नही होता—शेष पांचवे ठाणे के समान यावत् आचार्य उपाध्याय उपाश्रय के बाहर इच्छानुसार एक रात या दो रात रहे तो भी मर्यादा का अतिक्रमण नही होता।

६ उपकरण की विशेषता—आचार्य या उपाध्याय उज्ज्वल वस्त्र रखे तो मर्यादा का लघन नही होता।

७ भक्तपान की विशेषता—आचार्य या उपाध्याय श्रेष्ठ और पथ्य भोजन ले तो मर्यादा का अतिक्रमण नही होता।

५७१ क—सयम सात प्रकार के कहे गये हैं,
यथा—१-६ पृथ्वीकायिक सयम—यावत् त्रस कायिक सयम १-७ अजीवकाय सयम

---

१ कारुण्य रस प्रधान कथा
२ कुतीर्थिको की प्रशसा रूप कथा।
३ प्रमाद बाहुल्य से इस काल मे चारित्र नही है।

ख—असयम सात प्रकार के कहे गये हैं,

यथा—१-६ पृथ्वीकायिक असयम—यावत त्रस-कायिक असयम, अजीवकाय असयम।

ग—आरम्भ सात प्रकार के कहे गये हैं,

यथा—१-७ पृथ्वीकायिक आरम्भ—यावत् अजीव-काय आरम्भ।

घ—इसी प्रकार अनारम्भ सूत्र है।

ङ—,, ,, सारभ सूत्र है।

च—,, ,, असारभ सूत्र है।

छ—,, ,, समारभ सूत्र है।

ज—,, ,, असमारभ सूत्र है।

५७२ —प्रश्न—हे भगवन्! अलसी, कुसुभ, कोद्रव, कांग, रल, सण, सरसों और मूले के बीज। इन धान्यो को कोठे मे, पाले मे यावत् ढाककर रखे तो उन धान्यो की योनि[1] कितने काल तक सचित्त रहती है?

उत्तर—हे गौतम? जघन्य अन्तमु हूर्त, उत्कृष्ट—सात सवत्सर।

पश्चात् योनि म्लान हो जाती है—यावत्—योनि नष्ट हो जाती है।

५७३ क—बादर अप्कायिक जीवो की उत्कृष्ट स्थिति सात हजार वर्ष की कही गई है।

---

१ योनि-ऊगने की शक्ति।

३ देश कथा, ४ राज कथा, ५ मृदुकारिणी कथा[1]
६ दर्शनभेदिनी[2] ७ चारित्र भेदिनी[3]

५७० —गण मे आचार्य और उपाध्याय के सात अतिशय हैं।

यथा—१-५ आचार्य और उपाध्याय उपाश्रय मे धूल भरे पैरों को दूसरे से झटकवावे या पुछावे तो भी मर्यादा का उल्लघन नही होता—शेष पाचवे ठाणे के समान यावत् आचार्य उपाध्याय उपाश्रय के बाहर इच्छानुसार एक रात या दो रात रहे तो भी मर्यादा का अतिक्रमण नही होता।

६ उपकरण की विशेषता—आचार्य या उपाध्याय उज्ज्वल वस्त्र रखे तो मर्यादा का लघन नहीं होता।

७ भक्तपान की विशेषता—आचार्य या उपाध्याय श्रेष्ठ और पथ्य भोजन ले तो मर्यादा का अतिक्रमण नही होता।

५७१ क—सयम सात प्रकार के कहे गये है,
यथा—१-६ पृथ्वीकायिक सयम—यावत त्रस कायिक सयम १-७ अजीवकाय सयम

---

१ कारुण्य रस प्रधान कथा
२ कुतीर्थीको की प्रशसा रूप कथा।
३ प्रमाद बाहुल्य से इस काल मे चारित्र नहीं है।

ख—असयम सात प्रकार के कहे गये हैं,

यथा—१-६ पृथ्वीकायिक असयम—यावत् त्रस-कायिक असयम, अजीवकाय असयम।

ग—आरम्भ सात प्रकार के कहे गये हैं,

यथा—१-७ पृथ्वीकायिक आरम्भ—यावत् अजीव-काय आरम्भ।

घ—इसी प्रकार अनारम्भ सूत्र है।

ङ—„ „ सारभ सूत्र है।

च—„ „ असारभ सूत्र है।

छ—„ „ समारभ सूत्र है।

ज—„ „ असमारभ सूत्र है।

५७२ —प्रश्न—हे भगवन्! अलसी, कुसुभ, कोद्रव, कांग, रल, सण, सरसो और मूले के बीज। इन धान्यो को कोठे मे, पाले मे यावत् ढाककर रखे तो उन धान्यो की योनि[1] कितने काल तक सचित्त रहती है?

उत्तर—हे गौतम? जघन्य अन्तमुहूर्त, उत्कृष्ट—सात सवत्सर।

पश्चात् योनि म्लान हो जाती है—यावत्—योनि नष्ट हो जाती है।

५७३ क—बादर अप्कायिक जीवो की उत्कृष्ट स्थिति सात हजार वर्ष की कही गई है।

---

१ योनि-ऊगने की शक्ति।

ख—तीसरी वालुका प्रभा मे नैरयिको की उत्कृष्ट स्थिति सात सागरोपम की कही गई है।

ग—चौथी पक प्रभा मे नैरयिको की जघन्य स्थिति सात सागरोपम की कही गई है।

५७४ क—शक्रेन्द्र के वरुण लोकपाल की सात अग्रमहिषिया हैं

ख—ईशानेन्द्र के सोम लोकपाल की सात अग्रमहिषियां है

ग—ईशानेन्द्र के यम लोकपाल की सात अग्रमहिषिया है

५७५ क—ईशानेन्द्र के आभ्यन्तर परिषद् के देवो की स्थिति सात पल्योपम की है।

ख—शक्रेन्द्र के अग्रमहिषी देवियो की स्थिति सात पल्योपम की है।

ग—सौधर्म कल्प मे परिगृहिता देवियो की उत्कृष्ट स्थिति सात पल्योपम की है।

५७६ क—सारस्वत लोकान्तिक देव के सात देवो का परिवार है।

ख—आदित्य लोकान्तिक देव के सात सौ देवो का परिवार है।

ग—गर्दतोय लोकान्तिक देव के सात देवो का परिवार है।

घ—तुषित लोकान्तिक देव के सात हजार देवो का परिवार है।

५७७ क—सनत्कुमार कल्प मे देवताओ की उत्कृष्ट स्थिति सात सागरोपम की है।

ख—महेन्द्र कल्प मे देवताओ की उत्कृष्ट स्थिति कुछ अधिक सात सागरोपम की है,

ग—ब्रह्मलोक कल्प मे देवताओ की जघन्य स्थिति सात सागरोपम की है।

५७८ ब्रह्मलोक और लातक कल्प में विमानो की ऊचाई सात सौ योजन की है,

५७९ क—भवनवासी देवो के भवधारणीय शरीरो की ऊचाई सात हाथ की है।

ख—इसी प्रकार व्यन्तर देवो की

ग—ज्योतिषी देवो की

घ—सौधर्म और ईशान कल्प मे देवो के भवधारणीय शरीरो की ऊचाई सात हाथ की है।

५८० क—नन्दीश्वर द्वीप मे सात द्वीप हैं।

यथा—१ जम्बूद्वीप, २ धातकीखण्ड द्वीप, ३ पुष्कर वरद्वीप, ४ वरुणवर द्वीप, ५ क्षीरवर द्वीप, ६ घृत वर द्वीप, ७ क्षोद वर द्वीप।

ख—नन्दीश्वर द्वीप मे सात समुद्र हैं।

यथा—१ लवण समुद्र, २ कालोद समुद्र, ३ पुष्करोद समुद्र, ४ करुणोद समुद्र, ५ क्षीरोद समुद्र, ६ घृतोद समुद्र, ७ क्षोदोद समुद्र।

सात प्रकार की श्रेणियाँ कही गई हैं।
यथा—१ ऋजु आयता[1]।
२ एकत वक्रा[2], ३ द्विधावक्रा[3]

---

१ ऋजु आयता—सरल और लम्बी श्रेणी।
जब जीव या पुद्गल ऊर्ध्वलोक से अधोलोक मे या अधोलोक से ऊर्ध्वलोक मे गमन करे तब सीधी रेखा से गमन करते हैं वह सीधी रेखा "ऋजु आयता श्रेणी" कही जाती है।

२ एकत वक्रा—जब जीव या पुद्गल एक श्रेणी से दूसरी श्रेणी में गमन करता है तब एक जगह वक्र गति करता है।
यथा—एक जीव अधोलोक में पूर्व दिशा में मरता है और उसका उत्पत्ति स्थान उर्ध्वलोक में पश्चिम दिशा में होता है तो वह पहले ऋजु गति से उर्ध्वलोक की पूर्व दिशा में पहुचता है और वहा से सीधा पश्चिम दिशा में जाता है। इस प्रकार उसे पश्चिम दिशा में पहुँचने के लिए एक जगह वक्र गति से गमन करना पड़ता है।

३ द्विधावक्रा—जिस श्रेणी में दो जगह वक्र गति करनी पड़ती है, वह द्विधा वक्रा श्रेणी कही जाती है। यथा—एक जीव उर्ध्वलोक के अग्निकोण में मृत्यु को प्राप्त हुआ और उसका उत्पत्ति स्थान वायव्य कोण में हो तो वह पहले तिरछी गति से नैऋत्य कोण में जाता है वहाँ से तिरछी गति से वायव्य कोण में पहुचता है।

४ एकत खा[4], ५ द्विधा खा[5], ६ चक्रवाला[6],
७ अर्धचक्र वाला[7]

५८२ क—चमर असुरेन्द्र के सात सेनायें हैं, और सात सेनापति हैं।

यथा—१ पैदल सेना, २ अश्व सेना, ३ हस्तिसेना,
४ महिष सेना, ५ रथ सेना, ६ नट सेना,
७ गंधर्व सेना।

१-५ द्रुम—पैदल सेनापति,

---

४ एकत खा—जिस श्रेणी में एक ओर लोक नाडी(त्रसनाडी) के बाहर का आकाश हो वह श्रेणी "एकत खा" कही जाती है। यथा—एक जीव त्रसनाडी से बाहर का त्रसनाडी में उत्पन्न हो तो वह श्रेणी एकत खा कही जाती है।

५ द्विधा खा—जिस श्रेणी में दो वार त्रसनाडी के बाहर के आकाश का स्पर्श हो वह श्रेणी द्विधा खा कही जाती है। यथा—एक जीव त्रसनाडी के बाहर दक्षिण भाग से त्रसनाडी के बाहर बायें भाग में जाकर उत्पन्न हो तो वह दो वार त्रसनाडी से बाहर के आकाश का स्पर्श करता है।

६ चक्र वाला—चक्र के समान जो गति करे वह चक्रवाला कही जाती है। यह गति जीव की नहीं होती, केवल पुद्गल की होती है।

७ अर्धचक्र वाला—अर्ध गोल यह गति भी परमाणु की होती है।

शेप पाचवें स्थानक के समान यावत् किन्नर-रथसेना का सेनापति,

६ रिप्ट—नटसेना का सेनापति,

७ गीतरती—गधर्व सेना का सेनापति।

ख—बलि वैरोचनन्द्र के सात सेनायें हैं और सात सेनापति हैं।

यथा—१ ५ पैदल सेना यावत् गधर्व सेना,

१-५ महाद्रुम—पैदल सेना का सेनापति,

यावत किंपुरुष—रथ सेना का सेनापति,

६ महारिष्ट—नट सेना का सेनापति,

७ गीतयश—गधर्व सेना का सेनापति।

ग—घरणेद्र (नाग कुमारेन्द्र) की सात सेनायें और सात सेनापति हैं,

यथा—१-७ पैदल सेना यावत् गधर्व सेना

१-५ रुद्रसेन—पैदल सेना का सेनापति

यावत्—आनन्द—रथ—सेना का सेनापति,

६ नन्दन—नटसेना का सेनापति

७ तेतली—गधर्व सेना का सेनापति।

घ—नाग कुमारेन्द्र भूतानन्द की सात सेनाय और सात सेनापति हैं

यथा—१-६ पैदल सेना यावत् गधर्व सेना।

१-५ दक्ष पैदल सेना का सेनापति

यावत्—नदुत्तर—रथ सेना का सेनापति

६ रती—नट सना का सेनापति,

७ मानस गधर्व सेना का सेनापति।

ड भ—इस प्रकार घोप और महाघोप पर्यन्त सात सात मेनायें और सात मात सेनापति है।

म—शक्रेन्द्र की सात मेनायें और सात सेनापति ह।

यथा—१-७ पैदल सेना यावत् गधव सेना

१-५ हरिणगमेषी—पैदल सेना का सेनापति।

यावत् माढर—रथ सेना का सेनापति।

६ महास्वेत—नट सेना का सेनापति

७ रत—गधर्व सेना का सेनापति

शेप पाचवें स्थान के अनुसार

इम प्रकार अच्युत देवलोक पर्यन्त सेना और सेनापतियो का वर्णन समझें।

५८३ क—चमरेन्द्र के द्रुम पैदल सेनापति के सात कच्छ (सैन्य समूह) है,

यथा—१-७ प्रथम कच्छ—यावत् सप्तम कच्छ।

प्रथम कच्छ मे ६४००० देव हैं।

द्वितीय कच्छ म प्रथम कच्छ से दूने देव हैं।

तृतीय कच्छ मे द्वितीय कच्छ से दूने देव है।

इस प्रकार सातवें कच्छ तक दूने-दूने देव कहे।

ख—इस प्रकार बलेन्द्र के भी सात कच्छ हैं,

३ अक्रिय—कायिकादि क्रिया रहित,

४ निरुपक्लेश—शोकादि पीडा रहित,

५ अनाश्रवकर—प्राणातिपातादि रहित,

६ अक्षतकर—प्राणियों को पीडित न करने रूप,

७ अभूताभिशंकन—अभयदान रूप।

ग—अप्रशस्त मन विनय सात प्रकार का कहा गया है,

यथा—१ पापक—अशुभ चिंतन रूप,

२ सावद्य—चोरी आदि निंदित कर्म,

३ सक्रिय—कायिकादि क्रिया युक्त,

४ सोपक्लेश—शोकादि पीडा युक्त,

५ आश्रवकर—प्राणातिपातादि आश्रव,

६ क्षयकर—प्राणियों को पीडित करने रूप,

७ भूताभिशंकन—भयकारी।

घ—प्रशस्त वचन विनय सात प्रकार का कहा गया है,

यथा—१-७ अपापक, असावद्य, यावत् अभूताभिशंकन।

ङ—अप्रशस्त वचन विनय सात प्रकार का कहा गया है,

यथा—१-७ पापक यावत् भूताभिशंकन।

च—प्रशस्तकाय विनय सात प्रकार का कहा गया है,

यथा—१ उपयोग पूर्वक गमन,

२ उपयोग पूर्वक स्थिर रहना,

३ उपयोग पूर्वक बैठना,

४ उपयोग पूर्वक सोना,

५ उपयोग पूर्वक देहली आदि का उल्लंघन करना,

६ उपयोग पूर्वक अर्गला आदि का अतिक्रमण,

७ उपयोग पूर्वक इन्द्रियो का प्रवर्तन ।

छ—अप्रशस्तकाय विनय सात प्रकार का कहा गया है,
यथा—१-७ उपयोग विना गमन करना,
यावत्—उपयोग बिना इन्द्रियो का प्रवर्तन ।

ज—लोकोपचार विनय सात प्रकार का कहा गया है,
यथा—१ अभ्यासवर्तित्व—समीपरहना — जिससे बोलने वाले को तकलीफ न हो,

२ परछदानुवर्तित्व—दूसरे के अभिप्राय के अनुसार आचरण करना,

३ काय हेतु—इन्होने मुझे श्रुत-दिया है अत इनका कहना मुझे मानना ही चाहिये ।

४ कृतप्रतिकृतिता—इनकी मैं कुछ सेवा करूगा तो ये मेरे पर कुछ उपकार करेंगे,

५ आतगवेषण—रुग्ण की गवेषणा करके औषध देना,

६ देश-कालज्ञता—देश और काल को जानना,

७ सभी अवसरो मे अनुकूल रहना ।

५८६ क—समुद्घात सात प्रकार के कहे गये हैं,
यथा—१ वेदना समुद्घात, २ कषाय समुद्घात,
३ मारणातिक समुद्घात, ४ वैक्रिय समुद्घात,

५ तैजस समुद्घात, ६ आहारक समुद्घात,
७ केवली समुद्घात ।

ख—मनुष्यों के सात समुद्घात कहे गये हैं,
यथा—पूर्ववत ।

५८७ क—श्रमण भगवान् महावीर के तीर्थ में सात प्रवचन निह्नव हुए,
यथा—१ बहुरत—दीर्घकाल मे वस्तु की उत्पत्ति मानने वाले,

२ जीव प्रदेशिका—अन्तिम जीव प्रदेश मे जीवत्व मानने वाले,

३ अव्यक्तिका—साधु आदि को सदिग्ध दृष्टि से देखने वाले,

४ सामुच्छिदेका—क्षणिक भाव मानने वाले,

५ दो क्रिया—एक समय मे दो क्रिया मानने वाले,

६ त्रैराशिका—१ जीव राशि, २ अजीव राशि और ३ नो जीव राशि । इस प्रकार तीन राशि की प्ररुपणा करने वाले,

७ अवद्धिका—जीव कर्म से स्पष्ट है किन्तु कर्म से बद्ध जीव नहीं है, इस प्रकार की प्ररुपणा करने वाले।

ख—इन सात प्रवचन निह्नवों के सात धर्माचार्य थे,
यथा—१ जमाली, २ तिष्यगुप्त, ३ आषाढ,

४ अश्वमित्र, ५ गग, ६ षडुलुक (रोहगुप्त), ७ गोष्ठामाहिल ।

ग—इन प्रवचन निह्ववो के सात उत्पत्ति नगर है,
यथा—१ श्रावस्ती, २ ऋषभपुर, ३ श्वेताम्बिका, ४ मिथिला, ५ उल्लुकातीर, ६ अतरजिका ७ दशपुर ।

५८८ क—सातावेदनीय कम के सात अनुभाव (फल) हैं,
यथा—१ मनोज्ञ शब्द, २ मनोज्ञ रूप, ३-५ यावत्—मनोज्ञ स्पश, ६ मानसिक सुख, ७ वाचिक सुख ।

ख—असातावेदनीय कर्म के सात अनुभाव (फल) हैं,
यथा—१-७ अमनोज्ञ शब्द—यावत्—वाचिक दुख ।

५८९ क—मघा नक्षत्र के सात तारे हैं,

ख—अभिजित् आदि सात नक्षत्र पूर्व दिशा मे द्वार वाले हैं,[1]
यथा—१ अभिजित्, २ श्रवण, ३ धनिष्ठा, ४ शतभिषा, ५ पूर्वाभाद्रपदा, ६ उत्तराभाद्रपदा, ७ रेवती ।

---

१ इन सात नक्षत्रो मे पूर्व दिशा मे यात्रा की जाती है इसी प्रकार आगे भी जानें ।

ग—अश्विनो आदि सात नक्षत्र दक्षिण दिशा मे द्वार वाले हैं, यथा—१ अश्विनी, २ भरणी, ३, कृत्तिका, ४ रोहिणी, ५ मृगशिरा, ६ आर्द्रा, ७ पुनवसु।

घ—पुष्य आदि सात नक्षत्र पश्चिम दिशा मे द्वारवाले हैं, यथा—१ पुष्य, २ अश्लेषा, ३ मघा, ४ पूर्वा फाल्गुनी, ५ उत्तराफाल्गुनी, ६ हस्त, ७ चित्रा।

ङ—स्वाति आदि मात नक्षत्र उत्तर दिशा मे द्वारवाले हैं, यथा—स्वाति, २ विशाखा, ३ अनुराधा, ४ ज्येष्ठा, ५ मूल, ६ पूर्वाषाढ़ा, ७ उत्तराषाढा।

५९० क—जम्बूद्वीप मे सोमनस वक्षस्कार पवत पर सात कूट हैं, यथा—१ सिद्धकूट, २ सोमनसकूट, ३ मगलावती कूट, ४ दवकूट, ५ विमलकूट, ६ कचनकूट, ७ विशिष्टकूट।

ख—जम्बूद्वीप मे गधमादन वक्षस्कार पर्वत पर सात कूट हैं,
यथा—१ सिद्धकूट, २ गधमादनकूट, ३ गधला वतीकूट, उत्तरकुरुकूट, ५ फलिघकूट, ६ लोहिताक्ष कूट, ७ आनन्दन कूट।

५९१ —बेइन्द्रिय की सात लाख कुल कोडी हैं।

५९२ क ङ—जीवो ने सात स्थानो म निवर्तित (सचित) पुद्गल पाप कम के रूप मे चयन किये हैं, चयन करते हैं, और चयन करेंगे।

इसी प्रकार उपचयन, बन्ध, उदीरणा, वेदना और निर्जरा के तीन-तीन दण्डक कहें।

५६३ क—सात प्रदेशिक स्कन्ध अनन्त हैं,

ख—सात प्रदेशावगाढ पुद्गल अनन्त हैं,

ग-य—यावत् सात गुण रुक्ष पुद्गल अनन्त हैं।

सप्तम स्थान समाप्त

अष्टम स्थान—(आठवां ठाणा)

५९४ —आठ गुण सम्पन्न अणगार एकलविहारी प्रतिमा धारण करने योग्य होता है,
यथा—१ श्रद्धावान, २ सत्यवादी, ३ मेधावी, ४ बहुश्रुत, ५ शक्तिमान्, ६ अल्पकलही, ७ धैर्यवान्, ८ वीर्यसम्पन्न।

५९५ क—योनिसग्रह आठ प्रकार का कहा गया है,
यथा—१-७ अडज, पोतज—यावत्—उद्भिज
८ औपपातिक।

ख—अडज आठगति वाले हैं, और आठ आगति वाले हैं।

ग—अण्डज यदि अण्डजो मे उत्पन्न हो तो अण्डजो से पोतजो से यावत्—औपपातिको से आकर उत्पन्न होते हैं।

घ—वही अण्डज अण्डजपन को छोड़कर अण्डज रूप मे यावत्—औपपातिक रूप मे उत्पन्न होता है।

ङ—इसी प्रकार जरायुजो की गति आगति कहे।
शेष रसज आदि पाँचो की गति आगति न कहे।

५९६ क—जीवो ने आठ कर्म प्रकृतियो का चयन किया है, करते हैं, और करेंगे ।

यथा—१ ज्ञानावरणीय, २ दर्शनावरणीय, ३ वेदनीय, ४ मोहनीय, ५ आयु, ६ नाम, ७ गोत्र, ८ अतराय ।

दण्डक सूत्र

१-२४—नैरयिको ने आठ कर्म प्रकृतियो का चयन किया है, करते हैं, और करेंगे ।

इस प्रकार वैमानिक पर्यन्त कहे ।

इसी प्रकार उपचय, बन्ध, उदीरणा, वेदना और निर्जरा के सूत्र कहें ।

प्रत्येक के दण्डक सूत्र कहें ।[1]

५९७ क—आठ कारणो से मायावी माया करके न आलोचना करता है, न प्रतिक्रमण करता है,—यावत्—न प्रायश्चित्त स्वीकारता है,

यथा—१ मैंने पाप कर्म किया है अब मैं उस पाप की निन्दा कैसे करू ?

२ मैं वर्तमान मे भी पाप करता हू अत मैं पाप की आलोचना कैसे करू ?

३ मैं भविष्य मे भी यह पाप करू गा—अत मैं आलोचना कैसे करू ।

---

१ इस सूत्र के अन्तर्गत १६० सूत्र हैं ।

अष्टम स्थान—(आठवा ठाणा)

५९४ —आठ गुण सम्पन्न अणगार एकलविहारी प्रतिमा धारण करने योग्य होता है,

यथा—१ श्रद्धावान, २ सत्यवादी, ३ मेधावी, ४ बहुश्रुत, ५ शक्तिमान्, ६ अल्पकलही, ७ धैर्यवान्, ८ वीर्यसम्पन्न।

५९५ क—योनिसंग्रह आठ प्रकार का कहा गया है,

यथा—१-७ अण्डज, पोतज—यावत्—उद्भिज ८ औपपातिक।

ख—अण्डज आठगति वाले हैं, और आठ आगति वाले हैं।

ग—अण्डज यदि अण्डजो मे उत्पन्न हो तो अण्डजो से पोतजो से यावत्—औपपातिको से आकर उत्पन्न होते हैं।

घ—वही अण्डज अण्डजपने को छोडकर अण्डज रूप मे यावत्—औपपातिक रूप मे उत्पन्न होता है।

ङ—इसी प्रकार जरायुजा की गति आगति कहे।

शेष रसज आदि पाँचो की गति आगति न कहे।

१६६ क—जीवो ने आठ कर्म प्रकृतियो का चयन किया है,
करते हैं, और करेंगे ।
यथा—१ ज्ञानावरणीय, २ दर्शनावरणीय,
३ वेदनीय, ४ मोहनीय, ५ आयु, ६ नाम,
७ गोत्र, ८ अतराय ।

दण्डक सूत्र

१-२४—नैरयिको ने आठ कर्म प्रकृतियो का चयन किया है,
करते हैं, और करेंगे ।
इस प्रकार वैमानिक पर्यन्त कहे ।
इसी प्रकार उपचय, बन्ध, उदीरणा, वेदना और
निर्जरा के सूत्र कहें ।
प्रत्येक के दण्डक सूत्र कहे ।[1]

५९७ क—आठ कारणो से मायावी माया करके न आलोचना
करता है, न प्रतिक्रमण करता है,—यावत्—न
प्रायश्चित्त स्वीकारता है,
यथा—१ मैंने पाप कर्म किया है अत मैं उस पाप
की निंदा कैसे करूं ?
२ मैं वर्तमान में भी पाप करता हूं अत मैं पाप की
आलोचना कैसे करूं ?
३ मैं भविष्य में भी यह पाप करूंगा—अत मैं
आलोचना कैसे करूं ।

---

१ इस सूत्र के अन्तर्गत १६० सूत्र हैं ।

४ मेरी अपकीर्ति होगी अत मैं आलोचना कैसे करूं ?

५ मेरा अपयश होगा अत मैं आलोचना कैसे करूं ?

६ पूजा प्रतिष्ठा की हानि होगी अत मैं आलोचना कैसे करूं ?

७ कीर्ति की हानि होगी ,, ,,

८ मेरे यश की हानि होगी ,, ,,

ख—आठ कारणो से मायावी माया करके आलोयणा करता है—यावत—प्रायश्चित्त स्वीकार करता है, यथा—मायावी का यह लोक निन्दनीय होता है अत मैं आलोचना करूं ।

२ उपपात (देव नारक) निन्दित होता है ।

३ भविष्य का जन्म निन्दनीय होता है ।

४ एक वक्त माया करके आलोचना न करे तो आराधक नही होता है ।

५ एक वक्त माया करके आलोचना करे तो आराधक होता है ।

६ अनेक वार माया करके आलोचना न करे तो आराधक नही होता है ।

७ अनेक वार माया करके भी आलोचना करे तो आराधक होता है ।

८ मेरे आचार्य और उपाध्याय विशिष्ट ज्ञान वाले हैं, वे जानेंगे कि "यह मायावी है" अत मैं आलोचना करू—यावत्—प्रायश्चित्त स्वीकार करू ।

माया करने पर मायावी का हृदय किस प्रकार पश्चात्ताप से दग्ध होता रहता है—यह यहा पर हष्टान्त द्वारा बताया गया है ।

जिस प्रकार लोहा, तावा, कलई, शीशा, रूपा और सोना गलाने की भट्टी, तिल, तुस, भुसा, नल और पत्तो की अग्नि । दारु बनाने की भट्टी, मिट्टी के बर्तन, गोले, कवेलु, ईटें आदि पकाने का स्थान, गुड पकाने की भट्टी और लुहार की भट्टी मे केसूले के फूल और उल्कापात जैसे जाज्वल्यमान, हजारो चिनगारिया जिनसे उछल रही है ऐसे अगारो के समान मायावी का हृदय पश्चात्ताप रूप अग्नि से निरन्तर जलता रहता है ।

मायावी को सदा ऐसी आशका बनी रहती है कि ये सब लोग मेरे पर ही शका करते हैं ।

मायावी की दुर्गति—

मायावी माया करके आलोचना किये विना यदि मरता है और देवो मे उत्पन्न होता है तो वह महर्धिक देवों मे यावत् सौधर्मादि देव लोको मे उत्पन्न नही होता है । उत्कृष्ट स्थिति वाले देवो मे भी वह उत्पन्न नहीं होता है । उस देव की बाह्य या आभ्य-

छठे स्थान के समान—यावत्—ससारी जीव कर्म के आधार पर रहे हुए हैं।

७ पुद्गलादि अजीव जीवो से सग्रहीत (बद्ध) हैं।

८ जीव ज्ञानावरणीयादि कर्मों से सग्रहीत (बद्ध) हैं।

६०१ —गणी (आचार्य) की आठ सम्पदा (भावसमृद्धि) कही गयी है, यथा—

१ आचार सम्पदा—क्रियारूप सम्पदा,

२ श्रुत सम्पदा—शास्त्र ज्ञान रूप सम्पदा,

३ शरीर सम्पदा—प्रमाणोपेत शरीर तथा अवयव,

४ वचन सम्पदा—आदेय और मधुर वचन,

५ वाचना सम्पदा—शिष्यो की योग्यतानुसार आगमो की वाचना देना।

६ मति सम्पदा—अवग्रहादि बुद्धिरूप,

७ प्रयोग सम्पदा—वाद विषयक स्वसामर्थ्य का ज्ञान तथा द्रव्य-क्षेत्र आदि का ज्ञान।

८ सग्रह परिज्ञा सम्पदा—बाल-वृद्ध तथा रूग्ण आदि के क्षेत्रादि का ज्ञान।

६०२ —चक्रवर्ती की प्रत्येक महानिधि आठ चक्र के ऊपर प्रतिष्ठित है और प्रत्येक आठ-आठ योजन ऊचे हैं।

६०३ —समितिया आठ कही गयी हैं,

यथा—१ ईर्यासमिति, २ भाषा समिति, ३ एषणा समिति, ४ आदान भांड मात्र निक्षेपणा

समिति, ५ उच्चार, प्रस्रवण, श्लेष्म, मल, सिंघाण परिष्ठापनिका समिति।

६ मन समिति[1] ७ वचन समिति[2] ८ काय समिति[3]

६०४ क—आठ गुण सम्पन्न अणगार आलोचना सुनने योग्य होता है,

यथा—१ आचारवान्, २ अवधारणावान् ३ व्यवहारवान्,

४ आलोचक का संकोच मिटाने में समर्थ,

५ शुद्धि करवाने में समर्थ,

६ आलोचक की शक्ति के अनुसार प्रायश्चित्त देने वाला,

७ आलोचक के दोष अन्य को न कहने वाला,

८ दोष सेवन से अनिष्ट होता है, यह समझाने में समर्थ।

ख—आठ गुण युक्त अणगार अपने दोषों की आलोचना कर सकता है,

यथा—१ जातिसम्पन्न, २ कुलसम्पन्न, ३ विनय

---

१ दुष्ट संकल्प का त्याग और प्रशस्त संकल्प का स्वीकार।

२ असत्य, अहितकर और अपरिमित वचन का त्याग, सत्य हितकर और परिमित वचन का स्वीकार।

३ अकुशल प्रवृत्ति का त्याग और कुशल प्रवृत्ति का स्वीकार।

सम्पन्न, ४ ज्ञान सम्पन्न, ५ दर्शन सम्पन्न, ६ चारित्र सम्पन्न, ७ क्षान्त, ८ दांत।

६०५ प्रायश्चित्त आठ प्रकार का कहा गया है,
यथा—१ आलोचना योग्य, २ प्रतिक्रमण योग्य, ३ उभय योग्य, ४ विवेक योग्य[1]
५ व्युत्सर्ग योग्य, ६ तप योग्य, ७ छेद योग्य[2]
८ मूल योग्य[3]।

६०६ —मद स्थान आठ कहे गये हैं,
यथा—१ जाति मद, २ कुल मद, ३ बल मद, ४ रूप मद, ५ तप मद, ६ सूत्र मद, ७ लाभ मद, ८ ऐश्वर्य मद।

६०७ —अक्रियावादी आठ हैं,
यथा—१ एक वादी—आत्मा एक ही है ऐसा कहने वाले,
२ अनेकवादी—सभी भावों को भिन्न मानने वाले,
३ मितवादी—अनन्त जीव हैं फिर भी जीवों की एक नियत संख्या मानने वाले।

---

१ आधाकर्म आदि सदोष आहार के त्याग से शुद्धि हो।

२ कायोत्सर्ग योग्य।

३ अनेक अतिचार लगने से जो तप करने में असमर्थ हो—उसके श्रमण पर्याय का छेद करना।

४ मूल महाव्रत का भंग होने पर पुनः महाव्रतारोपण करना।

४ निर्मितवादी—"यह सृष्टि किसी की बनायी हुई है" ऐसा मानने वाले।

५ मातवादी—सुख से रहना, किन्तु तपश्चर्या न करना।

६ समुच्छेदवादी—प्रतिक्षण वस्तु नष्ट होती है, ऐसा मानने वाले क्षणिकवादी।

७ नित्यवादी—सभी वस्तुओ को नित्य मानने वाले।

८ मोक्ष या परलोक नही है, ऐसा मानने वाले।

६०८ —महानिमित्त आठ प्रकार का कहा गया है, यथा—१ भौम—भूमि विषयक शुभाशुभ का ज्ञान करने वाला शास्त्र।

२ उत्पात—रुधिर वृष्टि आदि उत्पातो का फल बताने वाला शास्त्र।

३ स्वप्न—शुभाशुभ स्वप्नो का फल बताने वाला शास्त्र।

४ अतरिक्ष—गाधर्व नगरादि का शुभाशुभ फल बताने वाला शास्त्र।

५ अग—चक्षु मस्तक आदि अगो के फरकने से शुभाशुभ फल की सूचना देने वाला शास्त्र।

६ स्वर—षड्ज आदि स्वरों का शुभाशुभ फल बताने वाला शास्त्र।

७ लक्षण—स्त्री-पुरुष के शुभाशुभ लक्षण बताने वाला शास्त्र।

८ व्यञ्जन—तिल मस आदि के शुभाशुभ फल बताने वाला शास्त्र।

६०९ —वचन विभक्ति आठ प्रकार की कही गयी है, यथा १ निर्देश मे प्रथमा—वह, यह, मैं।

२ उपदेश मे द्वितीया—यह करो! इस श्लोक को पढो!

३ करण मे तृतीया—मैंने कुण्ड बनाया।

४ सम्प्रदान मे, चतुर्थी—नम स्वस्ति, स्वाहा के योग मे, साधु के लिये भिक्षा देना।

५ अपादान मे, पचमी—पृथक् करने मे तथा ग्रहण करने मे, यथा—कूप से जल निकाल, कोठी मे से धान्य ग्रहण कर।

६ स्वामित्व के सम्बन्ध षष्ठी—इसका, उसका तथा सेठ का नौकर।

७ सन्निधान अर्थ म सप्तमी—आधार अर्थ मे—मस्तक पर मुकुट है।

काल मे—प्रात काल म कमल खिलता है, भावरूप क्रिया विशेषण म—सूर्य अस्त होने पर रात्रि हुई।
८ आमन्त्रण मे अष्टमी—यथा—हे युवान्! हे राजन्!

६१० क—आठ स्थानों को छद्मस्थ पूर्णरूप से न देखता है और न जानता है।

यथा—१-६ धर्मास्तिकाय—यावत् ७ गन्ध, ८ वायु।

ख—आठ स्थानों को सर्वज्ञ पूर्णरूप से देखता है और जानता है।

यथा—१-६ धर्मास्तिकाय यावत् ७ गध, ८ वायु।

६११ —आयुर्वेद आठ प्रकार का कहा गया है,

यथा—१ कुमार भृत्य—बाल चिकित्सा शास्त्र,

२ कायचिकित्सा—शरीर चिकित्सा शास्त्र,

३ शालाक्य—गले से ऊपर के अगो की चिकित्सा का शास्त्र।

४ शल्यहत्या—शरीर में कटक आदि कही लग जाय तो उसकी चिकित्सा का शास्त्र,

५ जगोली—सर्प आदि के विष की चिकित्सा का शास्त्र।

६ भूतविद्या—भूत-पिशाच आदि के शमन का शास्त्र,

७ क्षारतत्र—वीर्यपात की चिकित्सा का शास्त्र,

८ रसायन—शरीर आयुष्य और बुद्धि की वृद्धि करने वाला शास्त्र।

---

१ इसका दूसरा नाम—बाजीकरण है—मनुष्य को घोडे के समान करने वाली औषधी।

६१२ क—शक्रेन्द्र के आठ अग्रमहिषियां हैं,
यथा—१ पद्मा, २ शिवा, ३ सती, ४ अञ्जू,
५ अमला, ६ आसरा, ७ नवमिका ८ रोहिणी।

ख—ईशानेन्द्र के आठ अग्रमहिषियां हैं,
यथा—१ कृष्णा, २ कृष्णराजी, ३ रामा, ४ राम-
रक्षिता, ५ वसु, ६ वसुगुप्ता, ७ वसुमित्रा,
८ वसुंधरा।

ग—शक्रेन्द्र के सोम लोकपाल की आठ अग्रमहिषियां हैं,

घ—ईशानेन्द्र के वैश्रमण लोकपाल की आठ अग्रम
हिषियां हैं,

ङ—महाग्रह आठ हैं
यथा—१ चन्द्र, २ सूर्य, ३ शुक्र, ४ बुध,
५ बृहस्पति, ६ मंगल, ७ शनैश्चर, ८ केतु।

६१३ —तृण वनस्पति काय आठ प्रकार का है,
यथा—१ मूल, २ कंद, ३ स्कंध, ४ त्वचा,
५ शाल, ६ प्रवाल, ७ पत्र, ८ पुष्प।

६१४ क—चतुरिन्द्रिय जीवों की हिंसा न करने वालों में आठ
प्रकार का संयम होता है। यथा—
१ नेत्र सुख नष्ट नहीं होता,
२ नेत्र दुःख उत्पन्न नहीं होता,
यावत्—७ स्पर्श सुख नष्ट नहीं होता
८ स्पर्श दुःख उत्पन्न नहीं होता।

ख—चउरिन्द्रिय जीवों की हिंसा करने वालों के आठ प्रकार का असयम होता है, यथा—

१ नेत्र सुख नष्ट होता है,

२ नेत्र दुःख उत्पन्न होता है,

३ यावत्—७ स्पर्श सुख नष्ट होता है ८ स्पर्श दुःख उत्पन्न होता है।

६१५ —सूक्ष्म आठ प्रकार के हैं,

यथा—१ प्राणसूक्ष्म—कुंथुआ आदि
२ पनक सूक्ष्म—लीलण, फूलण,
३ बीज सूक्ष्म—वटबीज,
४ हरित सूक्ष्म—लीली वनस्पति,
५ पुष्प सूक्ष्म
६ अंड सूक्ष्म—कृमियों के अंडे,
७ लयन सूक्ष्म—कीडी नगरा
८ स्नेह सूक्ष्म—धुंअर आदि।

६१६ —भरत चक्रवर्ती के पश्चात् आठ युग प्रधान पुरुष व्यवधान रहित सिद्ध हुये यावत्—सब दुःख रहित हुए।

यथा—१ आदित्य यश, २ महायश, ३ अतिबल, ४ महाबल, ५ तेजोवीर्य, ६ कार्तवीर्य, ७ दंडवीर्य, ८ जलवीर्य।

६१७ —भगवान् पार्श्वनाथ के आठ गण और आठ गणधर थे,
यथा—१ शुभ, २ आर्य घोष, ३ वसिष्ठ, ४ ब्रह्मचारी, ५ सोम, ६ श्रीधर, ७ वीय, ८ भद्रयश।

६१८ —दर्शन आठ प्रकार के कहे गये हैं,
यथा—१ सम्यग्दर्शन, २ मिथ्यादर्शन, ३ सम्यग्मिथ्यादर्शन, ४ चक्षुदर्शन, यावत् ५-७ केवल दर्शन, ८ स्वप्नदर्शन।

६१९ —औपमिक काल आठ प्रकार के कहे गये हैं,
यथा—१ पल्योपम, २ सागरोपम, ३ उत्सर्पिणी, ४ अवसर्पिणी, ५ पुद्गल परावर्तन, ६ अतीतकाल, ७ भविष्य काल, ८ सर्वकाल।

६२० —भगवान् अरिष्टनेमि के पश्चात ८ युग प्रधान पुरुष मोक्ष मे गये और उनकी दीक्षा के दो वर्ष पश्चात् वे मोक्ष मे गये।

६२१ —भगवान् महावीर से मुण्डित होकर आठ राजा (गृहस्थ त्यागकर) प्रव्रजित हुए।
यथा—१ वीरागद, २ क्षीरयश, ३ सजय, ४ एणेयक, ५ श्वेत, ६ शिव, ७ उदायन, ८ शख।

६२२ —आहार आठ प्रकार के है,
यथा—१ मनोज्ञ अशन, २ मनोज्ञ पान, मनोज्ञ खाद्य, ४ मनोज्ञ स्वाद्य, ५ अमनोज्ञ अशन,

७ अमनोज्ञ पान ६ अमनोज्ञ खाद्य, ८ अमनोज्ञ स्वाद्य ।

६२३ क—सनत्कुमार और माहेन्द्र कल्प के नीचे ब्रह्मलोक कल्प मे रिष्टविमान के प्रस्तट मे अखाडे के समान समचतुरस्र (समचोरस) सस्थान वाली आठ कृष्णराजिया हैं,

यथा—१-२ दो कृष्णराजिया पूर्व मे,
३-४ दो कृष्णराजियाँ दक्षिण मे
५-६ दो कृष्णराजियाँ पश्चिम मे
७-८ दो कृष्णराजिया उत्तर मे ।

१ पूर्वा दिशा की आभ्यन्तर कृष्णराजि दक्षिण दिशा को वाह्य कृष्णराजि मे स्पष्ट है ।

२ दक्षिण दिशा की आभ्यन्तर कृष्णराजि पश्चिम दिशा की वाह्य कृष्णराजि से स्पृष्ट है ।

३ पश्चिम दिशा की आभ्यन्तर कृष्णराजि उत्तर दिशा की वाह्य कृष्णराजि से स्पृष्ट है ।

४ उत्तर दिशा की आभ्यन्तर कृष्णराजि पूर्व दिशा की वाह्य कृष्णराजि से स्पृष्ट है ।

क—पूर्व और पश्चिम दिशा की दो बाह्य कृष्णराजिया षट्कोण हैं ।

ख—उत्तर और दक्षिण दिशा की दो बाह्य कृष्णराजिया त्रिकोण हैं ।

ग—सभी आभ्यन्तर कृष्णराजिया चौरस हैं।

आठ कृष्णराजियो के आठ नाम हैं—

यथा—१ कृष्णराजि, २ मेघराजि, ३ मघाराजि, ४ माघवती, ५ वातपरिघा, ६ वातपरिक्षोभ, ७ देवपरिघा, ८ देवपरिक्षोभ।

इन आठ कृष्णराजियो के मध्य भाग[1] मे आठ लोकान्तिक विमान ह,

यथा—१ अर्चि, २ अर्चिमाली, ३ वैराचन, ४ प्रभकर, ५ चन्द्राभ, ६ सूर्याभ ७ सुप्रतिष्ठाभ, ८ अग्नेयाभ।

इन आठ लोकान्तिक विमानो मे आठ लाकान्तिक देव रहते हैं,

यथा—१ सारस्वत, २ आदित्य, ३ वह्नि, ४ वरुण ५ गदतोय, ६ तुषित, ७ अव्याबाध, ८ आग्नेय।

६२४ क—धर्मास्तिकाय के मध्य प्रदेश आठ हैं,

ख—अधर्मास्तिकाय के मध्य प्रदश आठ हैं,

ग—आकाशास्तिकाय के मध्य प्रदेश आठ हैं,

घ—जीवास्तिकाय के मध्य प्रदश आठ हैं।

---

१ आठ अवकाशान्तरो मे।

६२५ —महापद्म अर्हन्त आठ राजाओ को मुण्डित करके तथा गृहस्थ का त्याग करा करके अणगार प्रव्रज्या देंगे। यथा—१ पद्म, २ पद्मगुल्म, ३ नलिन, ४ नलिन-गुल्म ५ पद्मध्वज, ६ धनुध्वज, ७ कनकरथ, ८ भरत।

६२६ —कृष्ण वासुदेव की आठ अग्रमहिषिया अर्हन्त अरिष्ट नेमि के समीप मुण्डित होकर तथा गृहस्थ से निकल-कर अणगार प्रव्रज्या स्वीकार करेंगी, सिद्ध होंगी यावत् सब दु खो से मुक्त होंगी।

यथा—१ पद्मावती, २ गोरी, ३ गधारी, ४ लक्षणा, ५ सुसीमा, ६ जाम्ववती ७ सत्यभामा ८ रुक्मिणी।

६२७ —वीर्यप्रवाद पूर्व की आठ वस्तु और आठ चूलिका वस्तु हैं।

६२८ —गतिया आठ प्रकार की हैं,
यथा—१ नरक गति २ तिर्य चगति
३-५ यावत् सिद्ध गति,
६ गुरु गति ७ प्रणोदन गति ८ प्राग् भारगति

६२९ —गगा, सिन्धु रक्ता और रक्तवती देवियो के द्वीप आठ-आठ योजन के लम्बे चौडे हैं।

६३० —उल्कामुख, मेघमुख, विद्युन्मुख और विद्युद्दन्त अन्तर-

द्वीपो के द्वीप आठसौ आठसौ योजन के लम्बे चौडे हैं।

६३१ —कालोद समुद्र की वलयाकार चौडाई ८ लाख योजन की है।

६३२ क—आभ्यन्तर पुष्करार्ध द्वीप की वलयाकार चौडाई भी आठ लाख योजन की है।

ख—बाह्य पुष्करार्ध द्वीप की वलयाकार चौडाई भी इतनी ही है।

६३३ —प्रत्येक चक्रवर्ती के काकिणी रत्न आठ सुवर्ण प्रमाण होते हैं

काकिणी रत्न के ६ तले, १२ अस्त्रि (कोटी) आठ कर्णिकायें होती हैं।

काकिणी रत्न का संस्थान एरण के समान होता है।

६३४ —मगध का योजन आठ हजार धनुष का निश्चित है।

६३५ क—जम्बूद्वीप मे सुदर्शन वृक्ष आठ योजन का ऊंचा है, मध्य भाग मे आठ योजन का चौडा है, और सर्व परिमाण कुछ अधिक आठ योजन का है।[1]

ख—कूट शाल्मली वृक्ष का परिमाण भी इसी प्रकार है।[2]

---

१ यह सुदर्शन वृक्ष उत्तर कुरु मे है।

२ यह कूट शाल्मली वृक्ष देवकुरु मे है।

६३६ क—तमिस्रा गुफा की ऊचाई आठ योजन की है।[1]

ख—खण्ड प्रपात गुफा की ऊचाई भी इसी प्रकार आठ योजन की है।

६३७ क—जम्बूद्वीपवर्ती मेरु पर्वत के पूर्व मे सीता महानदी के दोनो किनारो पर वक्षस्कार पर्वत है,

यथा—१ चित्रकूट, २ पद्मकूट[2], ३ नलिनीकूट, ४ एकशैलकूट, ५ त्रिकूट, ६ वैश्रमणकूट, ७ अजनकूट, ८ मातजन कूट।

ख—जम्बूद्वीपवर्ती मेरुपर्वत के पश्चिम मे शीतोदा महानदी के किनारो पर आठ वक्षस्कार पर्वत हैं।

यथा—१ अकावती, २ पद्मावती, ३ आशीविष, ४ सुखावह, ५ चन्द्रपर्वत, ६ सूर्य पर्वत, ७ नागपर्वत, ८ देव पर्वत।

ग—जम्बूद्वीपवर्ती मेरुपर्वत के पूर्व मे सीता महानदी के उत्तरी किनारे पर आठ चक्रवर्ती विजय हैं,

यथा—१ कच्छ, २ सुकच्छ, ३ महाकच्छ, ४ कच्छगावती, ५ आवर्त, ६-७ यावत् ८ पुष्कलावती विजय।

---

१ तमिस्रा गुफा।

२ इसका अपरनाम ब्रह्मकूट है।

घ—जम्बूद्वीपवर्ती मेरुपवत के पूव मे शीता महानदी के दक्षिण मे आठ चक्रवर्ती विजय हैं,

यथा—१ वत्स, २-७ सुवत्स यावत्-८ मगलावती।

ङ—जम्बूद्वीपवर्ती मेरपवत के पश्चिम मे शीतोदा महानदी के दक्षिण मे आठ चक्रवर्ती विजय हैं, १-८ पद्म यावत् सलिलावती। ~

च—जम्बूद्वीपवर्ती मेरुपर्वत के पश्चिम मे शीतोदा के उत्तर मे आठ चक्रवर्ती विजय हैं,

यथा—१ वप्रा, २ सुवप्रा, यावत् गधिलावती।

छ—जम्बूद्वीपवर्ती मेरुपवत के पश्चिम मे शीता महानदी के उत्तर म आठ राजधानिया हैं,

यथा—१ क्षेमा, २ क्षेमपुरी, ३ यावत्-पुडरिकिणी।

ज—जम्बूद्वीपवर्ती मेरुपर्वत के पूर्व मे शीता महानदी के दक्षिण मे आठ राजधानिया हैं।

यथा—१ सुसीमा, २ कुडला यावत् ८ रत्नसचया

झ—जम्बूद्वीपवर्ती मरुपर्वत के पश्चिम मे शीतादा महानदी के दक्षिण मे आठ राजधानिया है,

१ अश्वपुरा, २ ७ यावत् वीतशोका।

ञ—जम्बूद्वीपवर्नी मेरुपवत के पश्चिम मे शीतोदा महानदी के उत्तर मे आठ राजधानिया हैं,

यथा—१ विजया, २ वैजयन्ती—यावत अयोध्या।

७३८ क—जम्बूद्वीपवर्ती मेरुपर्वत के पूर्व मे शीता महानदी के उत्तर मे, उत्कृष्ट आठ अर्हन्त, आठ चक्रवर्ती, आठ बलदेव और आठ वासुदेव उत्पन्न हुए, होते हैं और होंगे।

ख—जम्बूद्वीपवर्ती मेरुपर्वत के पूर्व मे शीता महानदी के दक्षिण मे इतने ही अरिहन्त आदि हुए हैं, होते हैं और होंगे।

ग—जम्बूद्वीपवर्ती मेरुपर्वत के पश्चिम मे शीतोदा महानदी के दक्षिण मे इतने ही अरिहन्त आदि हुए हैं, होते हैं और होंगे।

घ—उत्तर मे भी इतने ही अरिहन्त आदि हुए हैं, होते हैं और होंगे।

६३९ क—जम्बूद्वीपवर्ती मेरुपर्वत से पूर्व मे शीता महानदी के उत्तर मे आठ दीर्घ वैताढ्य, आठ तमिस्र गुफा, आठ खडप्रपात गुफा, आठ कृतमालक देव, आठ नृत्यमालक देव, आठ गगा कुण्ड, आठ सिन्धु कुण्ड, आठ गगा, आठ सिन्धु, आठ ऋषभकूट पर्वत और आठ ऋषभ-कूट देव हैं।

ख—जम्बूद्वीपवर्ती मेरुपर्वत के पूर्व मे शीता महानदी के दक्षिण मे आठ दीर्घवैताढ्य हैं—यावत् — आठ ऋषभकूट देव हैं।

ग घ—विशेप सूचना—रक्ता और रक्तवती नदियो के इतन ही कुण्ड हैं।

ट—जम्बूद्वीपवर्ती मेरुपर्वत से पश्चिम मे शीतोदा महानदी के दक्षिण मे आठ दीर्घ वैताढ्य पर्वत हैं यावत्—आठ नृत्यमालक देव हैं, आठ गगा कुण्ड, आठ सिन्धु कुण्ड, आठ गगा (नदिया) आठ सिन्धु नदियाँ, आठ ऋपभ कूट पर्वत और आठ ऋपभ कूट देव हैं।

च—जम्बूद्वीपवर्ती मेरुपवत के पश्चिम मे शीतोदा महानदी के उत्तर मे आठ दीघ वैताढ्य पवत हैं यावत—आठ नृत्यमालक देव है। आठ रक्त कुण्ड हैं, आठ रक्तावती कुण्ड हैं, आठ रक्ता नदियाँ हैं यावत्—आठ ऋपभ कूट देव हैं।

६४० —मेरुपर्वत की चूलिका मध्य भाग मे आठ योजन की चौडी है।

६४१ क—धातकी खण्डद्वीप के पूर्वाध म धातकी वृक्ष आठ याजन का ऊँचा है, मध्य भाग मे आठ योजन का चौडा है, और इसका सव परिमाण कुछ अधिक आठ योजन का है।

सूचना—धातकी वृक्ष म मेरु चूलिका पर्यन्त सारा कथन जम्बूद्वीप के वर्णन के समान कहना चाहिए।[1]

---

१ सूत्र ६३५ से ६४० तक जम्बूद्वीप का वर्णन है।

ख—धातकी खण्ड द्वीप के पश्चिमार्ध मे भी महाधातकी वृक्ष से मेरु चूलिका पर्यन्त का कथन जम्बूद्वीप के वर्णन के समान है।

ग—इसी प्रकार पुष्करवर द्वीपार्ध के पूर्वाध मे पद्मवृक्ष से मेरु चूलिका पर्यन्त का कथन जम्बूद्वीप के समान है।

घ—इस प्रकार पुष्करवरद्वीपार्ध के पश्चिमाध मे महापद्म वृक्ष से मेरुचूलिका पय न्त का कथन जम्बूद्वीप के समान है।

६४२ क—जम्बूद्वीप के मेरुपर्वत पर भद्र शालवन मे आठ दिशाहस्तिकूट हैं।

यथा—१ पद्मोत्तर, २ नीलवत, ३ सुहस्ती, ४ अजनागिरी, ५ कुमुद, ६ पलाश, ७ अवतसक, ८ रोचनागिरी।

ख—जम्बूद्वीप की जगति आठ योजना की ऊँची है और मध्य मे आठ योजन की चौडी है।

६४३ क—जम्बूद्वीपवर्ती मेरुपर्वत के दक्षिण मे महाहिमवत वर्षधर पर्वत पर आठ कूट है,

यथा—१ सिद्ध, २ महाहिमवत, ३ हिमवत, ४ रोहित, ५ हरीकूट, ६ हरिकान्त, ७ हरिवास, ८ वैडूर्य।

ख—जम्बूद्वीपवर्ती मेरुपर्वत के उत्तर मे रुक्मी वर्षधर पर्वत पर आठ कूट हैं,

यथा—१ सिद्ध, २ रुक्मी, ३ रम्यक्, ४ नरकान्त, ५ बुद्धि, ६ रुक्मकूट ७ हिरण्यवत, ८ मणिकचन।

ग—जम्बूद्वीपवर्ती मेरुपर्वत के पूर्व मे रुचकवर पर्वत पर आठ कूट हैं,

यथा—१ रिष्ट, २ तपनीय, ३ कचन, ४ रजत, ५ दिशास्वस्तिक, ६ प्रलम्ब, ७ अजन, ८ अजनपुलक।

घ—इन आठ कूटो पर महर्धिक यावत् पल्योपम स्थिति वाली आठ दिशा कुमारिया रहती हैं।

यथा—१ नदुत्तरा, २ नदा, ३ आनन्दा, ४ नदिवर्धना, ५ विजया, ६ वैजयती, ७ जयती ८ अपराजिता।

ङ—जम्बूद्वीपवर्ती मेरुपर्वत के दक्षिण म रुचकवर पर्वत पर आठ कूट हैं,

यथा—१ कनक, २ कचन, ३ पद्म, ४ नलिन, ५ शशि, ६ दिवाकर, ७ वैश्रमण ८ वैडूर्य

च—इन आठ कूटो पर महर्धिक यावत् पल्योपम स्थिति वाली आठ दिशा कुमारिया रहती हैं।

यथा—१ समाहारा, २ सुप्रतिज्ञा, ३ सुप्रबद्धा, ४ यशोधरा, ५ लक्ष्मीवती, ६ शेपवती, ७ चित्रगुप्त ८ वसुधरा।

छ—जम्बूद्वीपवर्ती मेरुपर्वत के पश्चिम मे रुचकवर पर्वत पर आठ कूट हैं,
यथा—१ स्वस्तिक, २ अमोघ, ३ हिमवत्, ४ मदर, ५ रुचक, ६ चक्रोत्तम, ७ चन्द्र, ८ सुदर्शन।

ज—इन आठ कूटो पर महर्धिक यावत् पल्योपम स्थिति-वाली आठ दिशाकुमारिया रहती हैं,
यथा—१ इलादेवी, २ सुरादेवी, ३ पृथ्वी, ४ पद्मावती, ५ एक नासा, ६ नवमिका, ७ सीता, ८ भद्रा।

झ—जम्बूद्वीपवर्ती मेरुपवत के उत्तर मे रुचकवर पर्वत पर आठ कूट हैं,
यथा—१ रत्न, २ रत्नोच्चय, ३ सवरत्न, ४ रत्न-सचय, ५ विजय, ६ वैजयत, ७ जयन्त, ८ अप-राजित।

ञ—इन आठ कूटो पर महर्धिक यावत् पल्योपम स्थिति-वाली आठ दिशाकुमारिया रहती हैं,
यथा—१ अलवुसा, २ मितकेसी, ३ पोडरी ४ गीत-वारुणी ५ आशा, ६ सर्वगा, ७ श्री, ८ ह्री।

ट—आठ दिशा कुमारिया अधोलोक मे रहती हैं,
यथा—१ भोगकरा, २ भोगवती, ३ सुभोगा,

४ भोग मालिनी, ५ सुवत्सा, ६ वत्समित्रा,
७ वारिसेना, ८ वलाहका।

ठ—आठ दिशा कुमारियां ऊर्ध्वलोक में रहती हैं,
यथा—१ मेघकरा २ मेघवती, ३ सुमेघा,
४ मेघमालिनी, ५ तोयधारा, ६ विचित्रा,
७ पुष्पमाला, ८ अनिंदिता।

६४४ क—तिर्यंच और मनुष्यों की उत्पत्ति वाले आठ कल्प (देवलोक) है,
यथा—१-८ सौधर्म–यावत्–सहस्रारेन्द्र।

ख—इन आठ कल्पों में आठ इन्द्र हैं,
यथा—१-८ शक्रेन्द्र–यावत्–सहस्रारेन्द्र।

ग—इन आठ इन्द्रों के आठ यान विमान हैं,
यथा—१ पालक, २ पुष्पक, ३ सौमनस,
४ श्रीवत्स, ५ नंदावन, ६ कामक्रम, ७ प्रीतिमन
८ विमल।

६४५ —अष्ट अष्टमिका भिक्षुपडिमा का सूत्रानुसार आराधन यावत्—सूत्रानुसार पालन ६४ अहोरात्रि में होता है और उसमें २८८ बार भिक्षा ली जाती है।

६४६ क—संसारी जीव आठ प्रकार के हैं,
यथा—१ प्रथम समयोत्पन्न नैरयिक,
२ अप्रथम समयोत्पन्न नैरयिक,
३-८ यावत्—अप्रथम समयोत्पन्न देव।

ख—सवजीव आठ प्रकार के हैं,

यथा—१ नैरयिक, २ तिर्य च योनिक, ३ तिर्य च-निया, ४ मनुष्य, ५ मनुष्यनिया, ६ देव, ७ देविया, ८ सिद्ध ।

ग—अथवा सर्वजीव आठ प्रकार के हैं,

यथा—१-५, आभिनिबोधिक ज्ञानी, यावत्—केवलज्ञानी,

६ मति अज्ञानी, ७ श्रुत अज्ञानी,

८ विभग ज्ञानी ।

६४७ —सयम आठ प्रकार का है,

यथा—१ प्रथम समय—सूक्ष्म सम्पराय-सराग-सयम,

२ अप्रथम समय—सूक्ष्म सपराय सयम

३ प्रथम समय—वादर सराग सयम,

४ अप्रथम समय—वादर-सराग-सयम,

५ प्रथम समय—उपशान्त कपाय-वीतराग सयम,

६ अप्रथम समय—उपशान्त कपाय-वीतराग सयम,

७ प्रथम समय—क्षीण कपाय वीतराग सयम,

८ अप्रथम समय—क्षीण कपाय वीतराग सयम ।

६४८ —ईपत् प्राग्भारा पृथ्वी के आठ नाम हैं,

यथा—१ ईपत्, २ ईपत्प्राग्भारा, ३ तनु, ४ तनु-तनु, ५ सिद्धि, ६ सिद्धालय, ७, मुक्ति,

८ मुक्तालय ।

४ भोग मालिनी, ५ सुवत्सा, ६ वत्समित्रा,
७ वारिसेना, ८ बलाहका।

ठ—आठदिशा कुमारिया ऊर्ध्वलोक मे रहती हैं,
यथा—१ मेघकरा २ मेघवती, ३ सुमेघा,
४ मेघमालिनी, ५ तोयधारा, ६ विचित्रा,
७ पुष्पमाला, ८ अनिंदिता।

६४४ क—तिर्यंच और मनुष्यो की उत्पत्ति वाले आठ कल्प (देवलोक) है,
यथा—१-८ सौधर्म—यावत्—सहस्रारेन्द्र।

ख—इन आठ कल्पों मे आठ इन्द्र हैं,
यथा—१-८ शक्रेन्द्र—यावत्—सहस्रारेन्द्र।

ग—इन आठ इन्द्रो के आठ यान विमान हैं,
यथा—१ पालक, २ पुष्पक, ३ सौमनस,
४ श्रीवत्स, ५ नदावन, ६ कामक्रम, ७ प्रीतिमन,
८ विमल।

६४५ —अष्ट अष्टमिका भिक्षुपडिमा का सूत्रानुसार आराधन यावत्—सूत्रानुसार पालन ६४ अहोरात्रि मे होता है और उसमे २८८ बार भिक्षा ली जाती है।

६४६ क—ससारी जीव आठ प्रकार के हैं,
यथा—१ प्रथम समयोत्पन्न नैरयिक,
२ अप्रथम समयोत्पन्न नैरयिक,
३-८ यावत्—अप्रथम समयोत्पन्न देव।

ख—सवजीव आठ प्रकार के हैं,

यथा—१ नैरयिक, २ तिय च योनिक, ३ तिर्य च-
निया, ४ मनुष्य, ५ मनुष्यनिया, ६ देव,
७ देविया, ८ सिद्ध ।

ग—अथवा सर्वजीव आठ प्रकार के हैं,

यथा—१-५, आभिनिबोधिक ज्ञानी, यावत्—
केवलज्ञानी,
६ मति अज्ञानी, ७ श्रुत अज्ञानी,
८ विभग ज्ञानी ।

६४७ —सयम आठ प्रकार का है,

यथा—१ प्रथम समय—सूक्ष्म सम्पराय-सराग-सयम,
२ अप्रथम समय—सूक्ष्म सपराय सयम,
३ प्रथम समय—बादर सराग सयम,
४ अप्रथम समय—बादर-सराग-सयम,
५ प्रथम समय—उपशान्त कषाय-वीतराग सयम,
६ अप्रथम समय—उपशान्त कषाय-वीतराग सयम,
७ प्रथम समय—क्षीण कषाय वीतराग सयम,
८ अप्रथम समय—क्षीण कषाय वीतराग सयम ।

६४८ —ईषत् प्राग्भारा पृथ्वी के आठ नाम हैं,

यथा—१ ईषत्, २ ईषत्प्राग्भारा, ३ तनु, ४ तनु-
तनु, ५ सिद्धि, ६ सिद्धालय, ७, मुक्ति,
८ मुक्तालय ।

६४९ —आठ आवश्यक कार्यो के लिए उद्यम, प्रयत्न और पराक्रम करना चाहिये किन्तु इनके लिए प्रमाद नही करना चाहिए,

यथा—१ अश्रुत धम को सम्यक् प्रकार से सुनने के लिए तत्पर रहना चाहिय ।

२ श्रुत धम को ग्रहण करने और धारण करने के लिए तत्पर रहना चाहिए ।

३ सयम स्वीकार करने के पश्चात् पापकम न करने के लिए तत्पर रहना चाहिए ।

४ तपश्चर्या से पुराने पाप कर्मो की निर्जरा करने के लिए तथा आत्मशुद्धि के लिए तत्पर रहना चाहिए ।

५ निराश्रित—परिजन को आश्रय देने के लिए तत्पर रहना चाहिये ।

६ शैक्ष (नव दीक्षित) को आचार और गोचरी विपयक मर्यादा सिखाने के लिए तत्पर रहना चाहिए ।

७ ग्लान की ग्लानि रहित सेवा करने के लिए तत्पर रहना चाहिये ।

८ साधर्मिकों मे कलह उत्पन्न होने पर राग-द्वेप रहित हो पक्ष ग्रहण किये बिना मध्यस्थ भाव से सार्धामिको के वोलचाल, कलह, और तु-तु मैं मैं को शान्त करने के लिए प्रयत्न करना चाहिये ।

६५० —महाशुक्र और सहस्रारकल्प मे विमान आठसौ योजन के ऊचे हैं।

६५१ —भगवान् अरिष्टनेमिनाथ के आठसौ ऐसे वादि मुनियो की सम्पदा थी जो देव, मनुष्य और असुरो की पषदा मे किसी से पराजित होने वाले नहीं थे।

६५२ —केवली समुद्घात आठ समय का होता है,
यथा—१ प्रथम समय मे स्वदेह प्रमाण नीचे ऊँचे, लम्बा और पोला चौदह रज्जु (लोक) प्रमाण दण्ड किया जाता है,

२ द्वितीय समय मे पूर्व और पश्चिम मे लोकान्त पर्यन्त कपाट किये जाते हैं,

३ तृतीय समय मे दक्षिण और उत्तर मे लोकान्त पर्यन्त मथान किया जाता है,
४ चतुर्थ समय मे रिक्त स्थानो की पूर्ति करके लोक को पूरित किया जाता है,

५ पांचवे समय मे आतरो का सहार किया जाता है,

६ छठे समय मे मथान का सहरण किया जाता है,
७ सातवें समय मे कपाट का सहरण किया जाता है,
८ आठवें समय मे दण्ड का सहरण किया जाता है।

६५३ —भगवान् महावीर के उत्कृष्ट ८०० ऐसे शिष्य थे जिनकी कल्याणकारी अनुत्तरोपपातिक देवगति यावत् भविष्य मे (भद्र) मोक्ष गति निश्चित है।

६५४ क—वाणव्यन्तर देव आठ प्रकार के हैं,
यथा—१ पिशाच, २ भूत, ३ यक्ष, ४ राक्षस, ५ किन्नर, ६ किंपुरुष, ७ महोरग, ८ गंधर्व।

ख—इन आठ वाणव्यन्तर देवो के आठ चैत्य वृक्ष है,
यथा—१ पिशाचो का कदम्ब वृक्ष,
२ यक्षो का चैत्य वृक्ष,
३ भूतो का तुलसी वृक्ष,
४ राक्षसो का कंडक वृक्ष,
५ किन्नरो का अशोक वृक्ष,
६ किंपुरुषो का चंपक वृक्ष
७ भुजगो का नाग वृक्ष[1]
८ गंधर्वो का तिंदुक वृक्ष।

६५५ —रत्नप्रभा पृथ्वी के समभूमि भाग से ८०० योजन ऊंचे ऊपर की ओर सूर्य का विमान गति करता है।

६५६ —आठ नक्षत्र चन्द्र के साथ स्पर्श करके गति करते हैं,
यथा—१ कृत्तिका, २ रोहिणी, ३ पुनर्वसु, ४ मघा, ५ चित्रा, ६ विशाखा, ७ अनुराधा, ८ ज्येष्ठा।

---

१ महोरगो का

६५७ क—जम्बूद्वीप के द्वार आठ योजन ऊँचे हैं।

ख—सभी द्वीप समुद्रो के द्वार आठ योजन ऊँचे हैं।

६५८ क—पुरुष वेदनीय कर्म की जघन्य आठ वर्ष की वन्ध स्थिति है।

ख—यशोकीर्ति नाम कर्म को जघन्य बन्ध स्थिति आठ मुहूर्त की है।

ग—उच्चगोत्र कर्म की भी इतनी ही स्थिति है।

६५९ —तेइन्द्रिय की आठ लाख कुल कोडी हैं।

६६० क—जीवो ने आठ स्थानो मे निर्वर्तित—सचित पुद्गल पापकर्म के रूप मे चयन किये हैं चयन करते हैं, और चयन करेंगे।

यथा—१-८ प्रथम समय नैरयिक निर्वर्तित यावत्—अप्रथम समय देव निर्वर्तित।

इसी प्रकार उपचयन, बन्ध, उदीरणा, वेदना और निर्जरा के तीन तीन दण्डक कहने चाहिये।

ख—आठ प्रदेशिक स्कन्ध अनन्त हैं।

ग—अष्ट प्रदेशावगाढ पुद्गल अनन्त हैं।

घ—यावत् आठ गुण रुक्ष पुद्गल अनन्त है।

अष्टम स्थान समाप्त

नवम स्थान (नवा ठाणा)

६६१ —नौ प्रकार के साभोगिक श्रमण निग्रन्थो को विसभोगी करे तो भगवान् की आज्ञा का अतिक्रमण नही होता है,

यथा—१ आचाय के प्रत्यनीक को,

२ उपाध्याय के प्रत्यनीक को,

३ स्थविरो के प्रत्यनीक को,

४ कुल के प्रत्यनीक को,

५ गण के प्रत्यनीक को,

६ सघ के प्रत्यनीक को,

७ ज्ञान के प्रत्यनीक को,

८ दशन के प्रत्यनीक को,

९ चारित्र के प्रत्यनीक को।

६६२ —ब्रह्मचर्य (आचाराग प्रथम श्रुतस्कन्ध) के नौ अध्ययन हैं,

यथा—१ शस्त्र परिज्ञा, २-७ लोक विजय यावत्—
८ उपधान श्रुत, ९ महापरिज्ञा।

६६३ क—ब्रह्मचर्य की गुप्ति (रक्षा) नौ प्रकार की हैं,

यथा—१ एकान्त (पृथक्) शयन और आसन का सेवन करना चाहिये, किन्तु स्त्री, पशु और नपुंसक के संसर्ग वाले शयनासन का सेवन नहीं करना चाहिए,

२ स्त्री कथा नही कहनी चाहिये,

३ स्त्री के स्थान (स्त्री के निवास स्थान) मे निवास नही करना चाहिए,

४ स्त्री की मनोहर इन्द्रियो के दर्शन और ध्यान नहीं करना चाहिए,

५ विकार वर्धक रस का आस्वादन नहीं करना चाहिए,

६ आहारादि की अतिमात्रा नही लेनी चाहिए,

७ पूर्वानुभूत रति—क्रीडा का स्मरण नही करना चाहिए,

८ स्त्री के रागजन्य शब्द और रूप की तथा स्त्री की प्रशसा नही सुननी चाहिए,

९ शारीरिक सुखादि मे आसक्त नही होना चाहिए।

ख—ब्रह्मचय की अगुप्ति नव प्रकार की है,

यथा—१ एकान्त शयन और आसन का सेवन

(उपयोग) नहीं करे अपितु स्त्री, पशु तथा नपुंसक सहित शयनासन का उपयोग करे,

२ स्त्री कथा कहे,

३ स्त्री स्थानों का सेवन करे,[1]

४ स्त्रियों की इन्द्रियों का दर्शन-यावत् ध्यान करे,

५ विकार वर्धक आहार करे,

६ आहार आदि अधिक मात्रा में सेवन करे,

७ पूर्वानुभूत रति क्रीडा का स्मरण करे,

८ स्त्रियों के शब्द तथा रूप की प्रशंसा करे,

९ शारीरिक सुखादि में आसक्त रहे।

६६४ —अभिनंदन अरहंत के पश्चात् सुमतिनाथ अरहन्त नव लाख क्रोड सागर के पश्चात् उत्पन्न हुये।

६६५ —शास्वत पदार्थ नव हैं,
यथा—१ जीव, २ अजीव, ३ पुण्य, ४ पाप, ५ आश्रव, ६ संवर, ७ निर्जरा, ८ बंध, ९ मोक्ष।

६६६ क—संसारी जीव नौ प्रकार के है,
यथा—१-५ पृथ्वीकाय, यावत् वनस्पति काय, ६-९ बेइन्द्रिय यावत् पंचेन्द्रिय।

---

१ स्त्रियों के निवास स्थान में रहे।

ख—पृथ्वीकायिक जीवों की नौ गति और नौ आगति।
यथा—पृथ्वीकायिक पृथ्वीकायिको मे उत्पन्न हो तो पृथ्वीकायिको मे यावत् पचेन्द्रियो से आकर उत्पन्न होते हैं।
पृथ्वीकायिक जीव पृथ्वीकायिकपन को छोडकर पृथ्वीकायिक रूप मे यावत् पंचेन्द्रिय रूप मे उत्पन्न होते है।

इसी प्रकार अप्कायिक जीव-यावत् पचेन्द्रिय जीव उत्पन्न होते हैं।

ग—सर्व जीव नौ प्रकार के है,
यथा—१ एकेन्द्रिय, २ द्वीन्द्रिय, ३ तेइन्द्रिय, ४ चउरिन्द्रिय ५ नैरयिक, ६ तियञ्च पचेन्द्रिय, ७ मनुष्य, ८ देव, ९ सिद्ध।

घ—सर्व जीव नौ प्रकार के है,
यथा—१ प्रथम समयोत्पन्न नैरयिक, २-७ अप्रथम-समयोत्पन्न नैरयिक यावत्
८ अप्रथम समयोत्पन्न देव ९ सिद्ध।

ङ—सर्व जीवो की अवगाहना नौ प्रकार की है,
यथा—१ पृथ्वीकायिक जीवो की अवगाहना,
२-५ अप्कायिक जीवो की अवगाहना,
यावत् वनस्पति कायिक जीवो की अवगाहना,
६ वेन्द्रिय जीवो की अवगाहना,

७ तेन्द्रिय जीवो की अवगाहना
८ चउरिन्द्रिय जीवो की अवगाहना
९ पचेन्द्रिय जीवो की अवगाहना ।

ख—ससारी जीव नौ प्रकार के थे, है और रहेगे ।
यथा—१-९ पृथ्वीकायिक रूप मे यावत् पचेन्द्रिय रूप मे ।

६६७ —नौ कारणो से रोगोत्पत्ती होती है,
यथा—१ अति आहार करने से,
२ अहितकारी आहार करने से,
३ अति निद्रा लेने से,
४ अति जागने से,
५ मल का वेग रोकने से,
६ मूत्र का वेग रोकने से,
७ अति चलने से,
८ प्रतिकूल भोजन करने से,
९ कामवेग को रोकने से ।

६६८ —दर्शनावरणीय कर्म नौ प्रकार का है,
यथा—१ निद्रा, २ निद्रा - निद्रा, ३ प्रचला, ४ प्रचला प्रचला, ५ स्त्यानगृद्धी, ६ चक्षुदर्शनावरण, ७ अचक्षुदर्शनावरण, ८ अवधिदर्शनावरण, ९ केवलदर्शनावरण ।

६६९ क—अभिजित् नक्षत्र कुछ अधिक ९ मुहूर्त चन्द्र के साथ योग करते हैं,

ख—अभिजित् आदि नौ नक्षत्र चन्द्र के साथ उत्तर से योग करते हैं,

यथा—१ अभिजित्, २ श्रवण धनिष्ठा, ३-८ यावत् ९ भरणी।

६७० —इस रत्नप्रभा पृथ्वी के सम भू भाग से नवसौ योजन की ऊंचाई पर ऊपर का तारा मण्डल गति करता है।

६७१ —जम्बूद्वीप नाम के द्वीप मे नौ योजन के मच्छ प्रवेश करते थे, करते हैं और करेंगे।

६७२ क—जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र मे, इस अवसर्पिणी मे ये नौ बलदेव और नौ वासुदेव के पिता थे।

यथा—१ प्रजापती, २ ब्रह्म, ३ रुद्र, ४ सोम, ५ शिव, ६ महासिंह, ७ अग्निसिंह, ८ दशरथ, ९ वसुदेव।

यहाँ से आगे समवायांग सूत्र के अनुसार कहना चाहिये यावत् एक नवमा बलदेव ब्रह्मलोक कल्प से च्यवकर एक भव करके मोक्ष मे जावेंगे—पर्यन्त कहना चाहिए।

ख—जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र मे आगामी उत्सर्पिणी मे नौ बलदेव और नौ वासुदेव के पिता होंगे, नौ बलदेव

२ दूसरो से हिंसा नही करवाता है,

३ हिंसा करने वालो का अनुमोदन नही करता है,

४ स्वय अन्नादि को पकाता नही हैं,

५ दूसरो से पकवाता नही है,

६ पकाने वालो का अनुमोदन नही करता है,

७ स्वय आहारादि खरीदता नही हैं,

८ दूसरो से खरीदवाता नही है,

९ खरीदने वालो का अनुमोदन नही करता है।

६८२ —ईशानेन्द्र के वरुण लोकपाल की नौ अग्रमहिषिया हैं।

६८३ क—ईशानेन्द्र की अग्रमहिषियो की स्थिति नव पल्योपम की हैं।

ख—ईशान कोण मे देवियो की उत्कृष्ट स्थिति नव पल्यो पम की हैं।

६८४ क—नौ देव निकाय (समूह) हैं,
यथा—१ सारस्वत, २ आदित्य, ३ वन्हि, ४ वरुण, ५ गदतोय, ६ तुषित, ७ अव्याबाध, ८ आग्नेय, ९ रिष्ट।

ख—अव्याबाध देवो के नवसो नौ देवो का परिवार है,

ग-घ—इसी प्रकार अग्गिच्चा और रिट्ठा देवो का परिवार है।

६८५ क—नौ ग्रैवेयक विमान प्रस्तट (प्रतर) हैं,

यथा—१ अधस्तन अधस्तन ग्रैवेयक विमान प्रस्तट,
२ अधस्तन मध्यम ग्रैवेयक विमान प्रस्तट,
३ अधस्तन उपरितन ग्रैवेयक विमान प्रस्तट,
४ मध्यम अधस्तन ग्रैवेयक विमान प्रस्तट,
५ मध्यम मध्यम ग्रैवेयक विमान प्रस्तट,
६ मध्यम उपरितन ग्रैवेयक विमान प्रस्तट,
७ उपरितन अधस्तन ग्रैवेयक विमान प्रस्तट,
८ उपरितन मध्यम ग्रैवेयक विमान प्रस्तट,
९ उपरितन उपरितन ग्रैवेयक विमान प्रस्तट।

ख—नव ग्रैवेयक विमान प्रस्तटो के नौ नाम हैं,

यथा—१ भद्र, २ सुभद्र, ३ सुजात, ४ सौमनस, ५ प्रिय दर्शन, ६ सुदर्शन, ७ अमोघ, ८ सुप्रबुद्ध, ९ यशोधर।

६८६ —आयु परिणाम नौ प्रकार का है,

यथा—गति परिणाम, गतिबंधणपरिणाम, ३ स्थितिपरिणाम, ४ स्थिति बंधण परिणाम, ५ उर्ध्वगोरव परिणाम, ६ अधो गोरव परिणाम, ७ तिर्यग् गोरव परिणाम, ८ दीर्घ गोरव परिणाम, ९ ह्रस्व गोरव परिणाम।

६८७ —नव नवमिका भिक्षा प्रतिमा का सूत्रानुसार आराधन यावत् पालन इक्यासी रात दिन मे होता है, इस प्रतिमा मे ४०५ बार भिक्षा (दति) ली जाती हैं।

६८८ —प्रायश्चित्त नो प्रकार का है,

यथा—१ आलोचनार्ह—गुरु के समक्ष आलोचना करने से जो पाप छूटे, यावत ८ मूलार्ह—(पुन दीक्षा देने योग्य)

९ अनवस्थाप्यार्ह—अत्यन्त सक्लिष्ट परिणाम वाले को इस प्रकार के तप का प्रायश्चित्त दिया जाता है। जिससे कि वह उठ बैठ नही सके।
तप पूर्ण होने पर उपस्थापना (पुन महाव्रतारोपणा) की जाती है और यह तप जहाँ तक किया जाता है वहा तक तप करने वाले से कोई बात नही करता।

६८९ क—जम्बूद्वीप के मेरु से दक्षिण दिशा के भरत मे दीर्घ वैताढ्य पर्वत पर नो कूट है,

यथा—१ सिद्ध, २ भरत, ३ खण्ड प्रपातकूट, ४ मणिभद्र, ५ वैताढ्य, ६ पूर्णभद्र, ७ तिमिस्र गुहा, ८ भरत, ९ वैश्रमण।

ख—जम्बूद्वीप के मेरुपर्वत से दक्षिण दिशा मे निषध वर्षधर पर्वत पर नो कूट हैं,

यथा—१ सिद्ध, २ निषध, ३ हरिवर्ष, ४ विदेह, ५ हरि, ६ धृति, ७, शीतोदा, ८ अपर विदेह, ९ रुचक।

ग—जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत पर नदन वन मे नो कूट हैं,

यथा—१ नदन, २ मेरु, ३ निषध, ४ हैमवन्त,

५ रजत, ६ रुचक, ७ सागरचित, ८ वज्र, ९ वलकूट ।

घ—जम्बूद्वीप के माल्यवत वक्षस्कार पर्वत पर नो कूट हैं,

यथा—१ सिद्ध, २ माल्यवत, ३ उत्तरकुरु, ४ कच्छ, ५ सागर, ६ रजत, ७ सीता, ८ पूर्ण, ९ हरिस्सहकूट

ङ—जम्बूद्वीप के कच्छ विजय मे दीर्घ वैताढ्य पर्वत पर नो कूट हैं,

यथा—१ सिद्ध, २ कच्छ, ३ खण्ड प्रपात, ४ माणिभद्र, ५ वैताढ्य ६ पूर्णभद्र, ७ तिमिस्र गुहा, ८ कच्छ, ९ वैश्रमण

च—जम्बूद्वीप के सुकच्छ विजय मे दीर्घ वैताढ्य पर्वत पर नो कूट हैं।

यथा—१ सिद्ध, २ सुकच्छ, ३ खण्ड प्रपात, ४ माणिभद्र, ५ वैताढ्य, ६ पूर्णभद्र, ७ तिमिस्र गुहा, ८ सुकच्छ, ९ वैश्रमण ।

छ—इसी प्रकार पुष्कलावती विजय मे दीघ वैताढ्य पर्वत पर नो कूट हैं,

ज—इसी प्रकार वच्छ विजय मे दीघ वैताढ्य पर्वत पर नो कूट हैं यावत्—मगलावती विजय मे दीर्घ वैताढ्य पवत पर नो कूट हैं ।

झ—जम्बूद्वीप के विद्युत्प्रभ वक्षस्कार पर्वत पर नौ कूट हैं,

यथा—१ सिद्ध, २ विद्युत्प्रभ, ३ देवकुरु, ४ पद्म प्रभ, ५ कनकप्रभ, ६ श्रावस्ती, ७ शीतोदा, ८ सजल, ९ हरीकूट।

ञ—जम्बूद्वीप के पक्ष्मविजय मे दीर्घ वैताढ्य पर्वत पर नौ कूट हैं,

यथा—१ सिद्ध कूट, २ पक्ष्मकूट, ३ खण्ड प्रपात, ४ माणिभद्र, ५ वैताढ्य, ६ पूर्णभद्र, ७ तिमिश्र गुहा, ८ पक्ष्मकूट, ९ वैश्रमण कूट।

ट—इसी प्रकार यावत् सलिलावती विजय मे दीर्घ वैताढ्य पर्वत पर नौ कूट हैं।

ठ—इसी प्रकार वप्रविजय मे दीर्घ वैताढ्य पर्वत पर नौ कूट हैं।

ड—इसी प्रकार यावत्—गंधिलावती विजय म दीर्घ वैताढ्य पर्वत पर नौ कूट हैं,

यथा—१ सिद्ध कूट, २ गंधिलावती, ३ खण्डप्रपात, ४ माणिभद्र, ५ वैताढ्य, ६ पूर्णभद्र, ७ तिमिश्र गुहा, ८ गंधिलावती, ९ वैश्रमण।

ढ—इस प्रकार सभी दीर्घ वैताढ्य पर्वतो पर दूसरा और नवमा कूट समान नाम वाले हैं शेष कूटो के समान पूर्ववत् हैं।

ण—जम्बूद्वीप मे मेरुपर्वत की उत्तर दिशा मे नीलवान वर्षधर पर्वत पर नौ कूट हैं,
यथा—१ सिद्ध कूट, २ नीलवान कूट, ३ विदेह, ४ शीता, ५ कीर्ति, ६ नारिकान्ता, ७ अपरविदेह, ८ रम्यक्कूट, ६ उप दर्शन कूट ।

त—जम्बूद्वीप मे मेरुपर्वत पर उत्तर दिशा मे ऐरवत क्षेत्र मे दीर्घ वैताढ्य पर्वत पर नौ कूट हैं,
यथा—१ सिद्ध, २ रत्न, ३ खण्ड प्रपात ४ माणिभद्र, ५ वैताढ्य, ६ पूर्णभद्र, ७ तिमिश्रगुहा, ८ ऐरवत, ६ वैश्रमण ।

६६० —भगवान् पार्श्वनाथ पुरुषो मे आदेय नाम कर्म वज्रऋषभ-नाराज संघयण और समचतुरश्र संस्थान वाले थे तथा नौ हाथ के ऊँचे थे ।

६६१ —भगवान् महावीर के तीर्थ मे नौ जीवो ने तीर्थंकर गोत्र नाम कर्म का उपार्जन किया,
यथा—१ श्रेणिक, २ सुपार्श्व, ३ उदायन, ४ पोटिलअणगार ५ दृढायु, ६ शख, ७ शतक, ८ सुलसा श्राविका, ६ रेवती ।

६६२ —१ आर्य कृष्ण वासुदेव, २ राम बलदेव, ३ उदक पेढाल पुत्र[1], ४ पोटिलमुनि, ५ शतक गाथापति,

---

१ पेढालपुत्र उदक मुनि का वर्णन सूत्रकृताङ्ग के नालदीय अध्ययन में है ।

६ दारूक[1] निग्रन्थ, ७ सत्यकी निर्ग्रन्थीपुत्र,
८ सुलसाश्राविका से प्रतिबोधित अम्बड परिव्राजक,
९ भ० पाश्वनाथ की प्रशिष्या सुपार्श्वा आर्या।
ये आगामी उत्सर्पिणी में चार याम धम की प्ररूपणा करके सिद्ध होंगे—यावत्—सब दु ख़ो का अन्त करेंगे।[2]

६६३ —हे आर्य ! यह श्रेणिक राजा (बिंबिसार) मरकर इस रत्नप्रभा पृथ्वी के सीमनक नरकावास म चौरासी हजार वप की नारकीय स्थिति वाले नैरयिक के रूप मे उत्पन्न होगा और अती तीव्र—यावत—असह्य वेदना भोगेगा। यह उस नरक से निकलकर आगामी उत्सर्पिणी म इसी जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र म वैताढ्य पर्वत के समीप पुण्ड्रजन पद के शत द्वार नगर म समति कुलकर की भद्रा भार्या की कुक्षी म पुत्र रूप मे उत्पन्न होगा।

---

१ दारूक श्रीकृष्ण के पुत्र थे इनका चरित्र अनुत्तरोपपातिक सूत्र में है।

२ (क) ये नौ जीव आगामी उत्सर्पिणी मे प्रथम और अन्तिम तीर्थङ्कर को छोडकर मध्य के तीर्थङ्करो के तीर्थ में तीर्थङ्कर होंगे।

(ख) इन नौ मे से कुछ तीर्थङ्कर होंगे और कुछ तीर्थङ्करों के तीर्थ में सिद्ध होंगे।

नो मास और साढेसात अहोरात्र बीतने पर सुकुमार हाथ पैर, प्रतिपूर्ण पचेन्द्रिय शरीर और उत्तम लक्षण तिलमस युक्त यावत—रूपवान पुत्र पैदा होगा।

जिस रात्रि मे यह पुत्र रूप मे पैदा होगा उस रात्रि मे शतद्वार नगर के अन्दर और बाहर भाराग्र तथा कुम्भाग्र प्रमाण पद्म एव रत्नो की वर्षा बरसेगी। पश्चात् उसके माता-पिता इग्यारवा दिन बीतने पर यावत्—बारहवें दिन उसका गुण सम्पन्न नाम देगें। क्योंकि इनका जन्म होने पर शतद्वार नगर के अन्दर और बाहर भार एव कुम्भ प्रमाण पद्म एव रत्नो की वर्षा होने से इस पुत्र का महापद्म नाम देंगे।

पश्चात् महापद्म के माता-पिता महापद्म को कुछ अधिक आठ वर्ष का हुआ जानकर राज्याभिषेक का महोत्सव करेंगे। पश्चात वह राजा महाराजा के समान यावत्—राज्य करेगा। उसके राज्यकाल मे पूर्णभद्र और महाभद्र नाम के दो देव महर्धिक यावत्—महान् ऐश्वर्य वाले उनकी सेना का सचालन करेंगे। उस समय शतद्वार नगर के बहुत से राजा यावत्—सार्थवाह आदि परस्पर वातें करेंगे—हे देवानुप्रियो। हमारे महापद्म राजा की सेना का सचालन महर्धिक यावत्—महान् ऐश्वर्य वाले दो

देव (पूर्णभद्र और मणिभद्र) करते हैं इसलिए इनका दूसरा नाम "देवसेन" हो।

उस समय से महापद्म का दूसरा नाम देवसेन भी होगा।

कुछ समय पश्चात् उस देवसेन राजा को शखतल जैसा निर्मल, श्वेत चार दांत वाला हस्तिरत्न प्राप्त होगा। वह देवसेन राजा उस हस्तिरत्न पर आरूढ होकर शतद्वार नगर के मध्यभाग में से बार-बार आव-जाव करेगा। उस समय शतद्वार नगर के बहुत से राजेश्वर यावत्—सार्थवाह आदि परस्पर बातें करेंगे।

यथा—हे देवानुप्रियो! हमारे देवसेन राजा को शखतल जैसा निर्मल श्वेत चार दान्त वाला हस्तिरत्न प्राप्त हुआ है, इसलिए हमारे देवसेन राजा का तीसरा नाम "विमलवाहन" हो।

पश्चात वह विमलवाहन राजा तीस वर्ष गृहस्थावास में रहेगा और माता पिता के स्वर्गवासी होने पर गुरुजनों की आज्ञा लेकर शरद् ऋतु में स्वयं बोध को प्राप्त होगा तथा अनुत्तर मोक्ष मार्ग में प्रस्थान करेगा।

उस समय लोकान्तिक देव इष्ट यावत्—कल्याणकारी वाणी से उनका अभिनन्दन एवं स्तुति करेंगे। नगर

के बाहर सुभूमि भाग उद्यान मे एक देवदूष्य वस्त्र ग्रहण करके वह प्रव्रज्या लेगा।

शरीर का ममत्व न रखने वाले उन भगवान् को कुछ अधिक बारह वर्ष तक देव, मनुष्य और तिर्यंच सम्बन्धी जो उपसर्ग उत्पन्न होगे उन्हे वे समभाव से सहन करेंगे यावत्—अकम्पित रहेंगे।

पश्चात् वे विमलवाहन भगवान् ईर्या समिति, भाषा समिति का पालन करेंगे—यावत्—ब्रह्मचर्य का पालन करेंगे।

वे निर्मम निष्परिग्रही कास्य पात्र के समान अलिप्त होंगे यावत्—भावना अध्ययन में कहे गये भगवान् महावीर के वर्णन के समान कहे।

वे विमलवाहन भगवान्

१ कास्यपात्र के समान अलिप्त,

२ शख के समान निर्मल,

३ जीव के समान अप्रतिहत गति,

४ गगन के समान आलम्बन रहित,

५ वायु के समान अप्रतिबद्ध विहारी,

६ शरद् ऋतु के जल के समान स्वच्छ हृदय वाले,

७ पद्म पत्र के समान अलिप्त,

८ कूर्म के समान गुप्तेन्द्रिय,

९ पक्षी के समान एकाकी,

कर्मों को जानेंगे अर्थात उनसे कोई कार्य छिपा नही रहेगा ।

वे पूज्य भगवान् सम्पूर्ण लोक मे उम समय के मन वचन और कायिक योग मे वतमान सव जीवो के सर्व भावो को देखते हुए विचरेंगे ।

उस समय वे भगवान् केवल ज्ञान, केवल दशन से समस्त लोक को जानकर श्रमण निर्ग्रन्थो के पच्चीस भावना सहित पांच महाव्रतो का तथा छजीवनिकाय घम का उपदेश देंगे ।

—हे आर्या ! जिस प्रकार मैंन श्रमण निर्ग्रन्थों का एक आरम्भ स्थान (प्रमाद) कहा है उसी प्रकार महापद्म अर्हन्त भी श्रमण निर्ग्रन्था का एक आरम्भ स्थान कहेगे ।

हे आर्यो ? जिस प्रकार मैंने श्रमण निग्रन्थो के दो वन्धन कहे ह उसी प्रकार महापद्म अहन्त भी श्रमण निर्ग्रन्थो के दो बन्धन कहेंगे यथा—राग बन्धन और द्वेष वन्धन ।

हे आर्या ! जिस प्रकार मैंन श्रमण निग्रन्थो के तीन दण्ड कहे हैं, उसी प्रकार महापद्म अहन्त भी श्रमण निग्रन्थो के तीन दण्ड कहेंगे यथा—मनदण्ड, वचन-दण्ड और कायदण्ड ।

इस प्रकार चार कपाय, पाच काम गुण, छ जीव-निकाय, सात भय स्थान, आठ मद स्थान, नो ब्रह्म-चर्य गुप्ति, दश श्रमण धर्म यावत् तेतीस आशातना पर्यन्त कहे।

हे आर्यो! जिस प्रकार मैंने श्रमण निर्ग्रन्थो का नग्न भाव, मुण्ड भाव, अस्नान, अदन्तधावन, छत्र रहित रहना, जूते न पहनना, भू-शय्या, फलक शय्या, काष्ठ शय्या, केश लोच, ब्रह्मचर्य पालन गृहस्थ के घर से आहार आदि लाना, मान अपमान मे सामान रहना आदि की प्ररूपणा करेंगे।

हे आर्यो! मैंने श्रमण निर्ग्रन्थो को आधाकर्म[1] औद्देशिक[2] मिश्रजात[3] अध्यवपूवक[4] पूतिक[5] क्रीत[6]

---

१ आधा कर्म—जो आहार साधु के निमित्त बनता है।

२ औद्देशिक—जो आहार श्रमण निर्ग्रन्थो के उद्देश्य से बनाया जाता है।

३ मिश्रजात—जो आहार गृहस्थ और श्रमण के निमित्त बनता है।

४ अध्यवपूर्वक—गृहस्थ अपने लिए जो आहार बना रहा है उसी मे साधु के निमित्त थोडा और मिलाकर बनाता है।

५ पूतिक—आधा कर्म आहार से मिश्रित शुद्ध आहार।

६ क्रीत—साधु के निमित्त खरीदा हुआ आहार।

अपमित्यक[1] आच्छेद्य[2] अनिसृष्ट[3] अभ्याहृत[4]
कान्तार भक्त[5], दुर्भिक्ष भक्त[6], ग्लान भक्त[7] वद्दलिका भक्त[8] प्राघूणक[9], मूल भोजन[10], कन्द भोजन,[11] फल भोजन[12]

---

१ अपमित्यक—साधु के निमित्त उधार लिया हुआ आहार।

२ आच्छिद्य—नौकर आदि से छीनकर दिया जाने वाला आहार।

३ अनिसृष्ट—दो के स्वामित्व का आहार एक की आज्ञा के बिना देना।

४ अभ्याहृत—सन्मुख लाकर दिया जाने वाला आहार

५ कान्तार भक्त—अटवी में साधु के निमित्त बनाकर दिये जाने वाला आहार,

६ दुर्भिक्ष भक्त—दुष्काल में साधु के निमित्त बनाकर दिया जाने वाला आहार,

७ ग्लान भक्त—ग्लान साधु के निमित्त बनाकर दिया जाने वाला आहार,

८ वद्दलिका भक्त—वर्षाकाल में साधु के निमित्त बनाकर दिया जाने वाला आहार,

९ प्राघूणक—महमानों के निमित्त रखे हुए आहार में से आहार दिया जाय,

१० मूल भोजन—सचित्त (सजीव) वनस्पतिया साधु को देना।

११ कन्द भोजन—सचित्त कन्द साधु को देना,

१२ फल भोजन—सचित्त फल साधु को देना,

बीज भोजन[1], हरित भोजन[2] लेने का निषेध किया है उसी प्रकार महापद्म अर्हन्त भी श्रमण निर्ग्रन्थो को आधा कर्म—यावत्—हरित भोजन लेने का निषेध करेंगे ।

हे आर्यो । जिस प्रकार मैंने श्रमण निग्रन्थो का प्रतिक्रमण सहित पच महाव्रत अचेलक धर्म कहा है इसी प्रकार महापद्म अर्हन्त भी श्रमण निर्ग्रन्थो का प्रतिक्रमण सहित यावत् अचेलक धर्म कहेगे ।

हे आर्यो ! जिस प्रकार मैंने पाच अणुव्रत और सात शिक्षाव्रत रूप बारह प्रकार का श्रावक धर्म कहा है उसी प्रकार महापदम अर्हन्त भी पाँच अणुव्रत यावत् श्रावक धर्म कहेगे ।

हे आर्यो ! जिस प्रकार मैंने श्रमण निर्ग्रन्थो को शय्यात्तर पिंड[3] और राजपिंड[4] लेने का निषेध

---

१ बीज भोजन—सचित्त बीज साधु को देना ।
२ हरित भोजन—सचित्त मधुर तृणादि साधु को देना ।
३ शय्यातर पिंड—साधु को ठहरने के लिए जो स्थान की आज्ञा दे उसके घर का आहार ।
४ राजपिंड—चक्रवर्ती या वासुदेव के निमित्त बना हुआ आहार ।

किया है उसी प्रकार महापद्म अहन्त भी श्रमण निर्ग्रन्थो को शय्यातर पिड और राजपिंड लेन का निपेध करेंगे।

हे आर्यो ! जिम प्रकार मेरे नौ गण और इग्यारह गणधर हैं उसी प्रकार महापद्म अर्हन्त के भी नौ गण और इग्यारह गणधर होंग।

हे आर्यो ! जिस प्रकार मैं तीस वप गृहस्थ पर्याय म रहकर मुण्डित यावत् प्रव्रजित हुआ, बारह वर्ष और तेरह पक्ष न्यून तीस वप का केवली पर्याय, बियालीस वप का का श्रमण पर्याय और बहत्तर वर्ष का पूर्णायु भोगकर, सिद्ध, होऊंगा यावत् सब दुःखो का अन्त करूंगा इसी प्रकार महापद्म अहन्त भी तीस वप गृहस्थावास मे रहकर यावत् सब दुःखो का अन्त करेंगे।

सक्षिप्त मे

जो शील समाचार (कार्यकलाप) अहत तीर्थकर महावीर का था वह शील समाचार महापद्म अहन्त का होगा ।

६६४ —नौ नक्षत्र चन्द्र के पीछे से गति करते है,
यथा—१ अभिजित्, २ श्रवण, ३ धनिष्ठा, ४ रेवति, ५ अश्विनी, ६ मृगशिरा, ७ पुष्य, ८ हस्त ९ चित्रा।

६९५ —आणत, प्राणत, आरण और अच्युत कल्प मे विमान नौ सौ योजन के ऊँचे हैं।

६९६ —विमल वाहन कुल कर नौ धनुप के ऊँचे थे।

६९७ —कौशलिक भगवान् ऋपभदेव ने इस अवसर्पिणी मे नौ क्रोडाक्रोड सागरोपम काल बीतने पर तीर्थ प्रवर्ताया।[1]

६९८ —घनदन्त, लष्टदन्त, गूढदन्त और शुद्धदन्त इन अन्तर्द्वीपवासी मनुष्यो के द्वीप नौ-सौ नौ-सौ योजन के लम्बे और चौडे कहे गये हैं।

६९९ —शुक्र महाग्रह की नौ विथियाँ हैं,
यथा—१ हयवीथी, २ गजवीथी, ३ नागवीथी, ४ वृपभवीथी, ५ गोवीथी, ६ उरगवीथी, ७ अजवीथी, ८ मित्रवीथी, ९ वैश्वानरवीथी[2]।

७०० —नौ कपाय वेदनीय कर्म नौ प्रकार का है,
यथा—१ स्त्री वेद, २ पुरुष वेद, ३ नपुंसक वेद, ४ हास्य, ५ रति, ६ अरति, ७ भय, ८ शोक, ९ दुगुंछा।

७०१ क—चौरिन्द्रिय जीवो की नौ लाख कुल कोडी हैं।

---

१ यहा एक लाख पूर्व और निव्यासी पक्ष न्यून नौ क्रोडा-क्रोड सागरोपम काल समझना चाहिये।

२ ये नौ शुक्रग्रह के गति क्षेत्र हैं, अर्थात् इन नौ क्षेत्रो में शुक्र ग्रह गति करता है।

ख—भुजपरिसर्प स्थलचर तिय च पचेन्द्रिय जीवो की नौ लाख कुल कोडी हैं।

७०२ —नौ स्थानो मे सचित पुद्गलो को जीवो ने पापकम के रूप मे चयन किया था, करते है और करेंगे।

यथा—पृथ्वीकायिक जीवो द्वारा सचित यावत्—पचेन्द्रिय जीवो द्वारा मचित।

ख—इसी प्रकार चय, उपचय यावत निर्जरा सम्बधि सूत्र कहने चाहिए।

७०३ क—नौ प्रादेशिक स्कन्ध अनन्त कहे गये हैं,

ख—नव प्रदेशावगाढ़ पुद्गल अनन्त कहे गये हैं—यावत नवगुण रुक्ष पुद्गल अनन्त कहे गये हैं।

नवम स्थान समाप्त

दशम स्थान (दसवा ठाणा)

७०४ —लोक स्थिति दश प्रकार की है,

यथा—१ जीव मर-मरकर वार-वार लोक मे ही उत्पन्न होते हैं।

२—जीव सदा पाप कर्म करते है।

३ जीव सदा मोहनीय कर्म का बन्ध करते है।

४ तीन काल मे जीव अजीव नही होते है और अजीव जीव नही होते हैं।

५ तीन काल मे त्रसप्राणी और स्थावर प्राणी विच्छिन्न नही होते हैं।

६ तीन काल मे लोक अलोक नही होता है और अलोक लोक नही होता है।

७ तीन काल में लोक अलोक मे प्रविष्ट नही होता है और अलोक लोक मे प्रविष्ट नही होता है।

८ जहाँ तक लोक है वहा तक जीव है और जहाँ तक जीव है वहाँ तक लोक है।

९ जहाँ तक जीवो और पुद्गलो की गति है वहाँ तक लोक है, जहाँ तक लोक है वहाँ तक जीवों और पुद्गलो की गति है।

१० लोकान्त मे सवत्र रूक्ष पुद्गल हैं अत जीव और पुद्गल लोकान्त के बाहर गमन नही कर सकते हैं।

७०५ —शब्द दस प्रकार के हैं,

यथा—१ नीहारी—घण्टा के समान घोप वाला शब्द।

२ डिडिम—ढोल के समान घोप रहित शब्द।

३ रूक्ष—काक के समान रूक्ष शब्द।

४ भिन्न—कुष्टादिरोग से पीडित रोगी के समान शब्द।

५ जजरित—वीणा के समान शब्द।

६ दीघ—दीर्घ अक्षर के उच्चारण से होने वाला शब्द अथवा मेघ के समान दूर तक सुनाई देने वाला शब्द।

७ ह्रस्व—ह्रस्व अक्षर के उच्चारण से होने वाला शब्द अथवा वीणा के समीप मे सुना जाने वाला शब्द।

८ पृथक्त्व—अनेक प्रकार के वाद्यो का एक समवेत स्वर।

९ काकणी—कोयल के समान सूक्ष्म कण्ठ से निकलने वाला शब्द।

१० किंकिणी—छोटी-छोटी घटियो से निकलने वाल शब्द।

७०६ क—इन्द्रियो के दश विषय अतीत काल के हैं,

यथा—१ अतीत मे एक व्यक्ति ने एक देश (कान) से शब्द सुना।

२ अतीत मे एक व्यक्ति ने सर्व देश (दोनों कानो) से शब्द सुना।

३-१० इसी प्रकार रूप, रस, गध और स्पर्श के दो-दो भेद है।

ख—इन्द्रियो के दश विषय वर्तमान काल के हैं,

यथा—१ वर्तमान मे एक व्यक्ति एक देश (एक कान) से शब्द सुनता है।

२ वर्तमान मे एक व्यक्ति सव देश (दोनों कानों) से शब्द सुनता है।

३-१० इसी प्रकार रूप, रस, गध और स्पर्श के दो-दो भेद हैं।

ग—इन्द्रियो के दश विषय भविष्य काल के हैं,

यथा—१ भविष्य मे एक व्यक्ति एक देश (एक कान) से सुनेगा।

२ भविष्य म एक व्यक्ति सर्व देश (दोनो कानो) से सुनेगा।

३-१० इसी प्रकार रूप, रस, गध और स्पर्श के दो दो भेद हैं।

७०७ —शरीर अथवा स्कन्ध से पृथक् न हुए पुदगल दश प्रकार से चलित होते हैं,

यथा—१ आहार करते हुए पुद्गल चलित होते हैं।

२ रस रूप मे परिणत होते हुए पुद्गल चलित होते हैं।

३ उच्छ्‌वास लेते समय वायु के पुद्गल चलित होते हैं।

४ निश्वास लेते समय वायु के पुद्गल चलित होते हैं।

५ वेदना भोगते समय पुद्गल चलित होते हैं।

६ निर्जरित पुद्गल चलित होते हैं।

७ वैक्रिय शरीर रूप मे परिणत पुद्गल चलित होते हैं।

८ मैथुन सेवन करते समय शुक्र के पुद्गल चलित होते हैं।

६ यक्षाविष्ट पुरुष के शरीर के पुद्गल चलित होते हैं।

१० शरीर के वायु से प्रेरित पुद्गल चलित होते हैं।

७०८ —दश प्रकार से क्रोध की उत्पत्ति होती है,

यथा—१ मेरे मनोज्ञ शब्द, स्पर्श, रस, रूप, और गध का इसने अपहरण किया था ऐसा चिन्तन करने से—

२ इसने मुझे अमनोज्ञ शब्द, स्पश, रस, रूप और गध दिया था ऐसा चिन्तन करने से—

३ मेरे मनोज्ञ शब्द, स्पर्श, रस, रूप, और गध का यह अपहरण करता है ऐसा चिन्तन करने से—

४ इससे मुझे अमनोज्ञ शब्द, स्पर्श, रस, रूप और गध दिया जाता है ऐसा चिन्तन करने से—

५ मेरे मनोज्ञ शब्द स्पर्श, रस, रूप और गध का यह अपहरण करेगा-ऐसा चिन्तन करने से—

६ यह मुझे अमनोज्ञ शब्द, स्पर्श, रस, रूप और गध देगा–ऐसा चिन्तन करने से–

७ मेरे मनोज्ञ शब्द, स्पर्श, रस, रूप और गध का इसने अपहरण किया था, करता है या करेगा–ऐसा चिन्तन करने से–

८ इसने मुझे अमनोज्ञ शब्द-यावत् गध दिया था, देता है या देगा–ऐसा चिन्तन करने से–

९ इसने मेरे मनोज्ञ शब्द-यावत् गध का अपहरण किया, करता है या करेगा तथा इसने मुझे अमनोज्ञ शब्द-यावत गध दिया, देता है या देगा ऐसा चिंतन करने से–

१० मैं आचार्य या उपाध्याय की आज्ञानुसार आचरण करता हू किन्तु वे मेरे पर प्रसन्न नहीं रहते हैं।

८०६ क—सयम दश प्रकार का है,

यथा—१-५ पृथ्वीकायिक जीवों का सयम यावत्-वनस्पतिकायिक जीवो का सयम, ६ बेइन्द्रिय जीवो का सयम, ७ तेइन्द्रिय जीवो का सयम, ८ चउरिन्द्रिय जीवो का सयम, ९ पचेन्द्रिय जीवा का सयम, १० अजीव काय सयम[1]

ख—असयम दश प्रकार का है,

यथा—१-५ पृथ्वीकायिक जीवो का असयम यावत-वनस्पतिकायिक जीवो का असयम, ६-९ बेइन्द्रिय जीवो का असयम-यावत्-पचेन्द्रिय जीवो का असयम, १० अजीव कायिक असयम ।[2]

ग—सवर दस प्रकार का है,

---

१ वस्त्र-पात्र आदि अजीव पदार्थो को यत्नापूर्वक काम मे लेना ।

२ वस्त्र-पात्र आदि अजीव पदार्थो को अयत्ना से काम में लेना ।

यथा—१-५ श्रोत्रेन्द्रिय सवर–यावत्–स्पर्शेन्द्रिय सवर, ६ मन सवर, ७ वचन सवर, ८ काय सवर, ९ उपकरण सवर,[1] १० शुचि कुशाग्र सवर।[२]

घ—असवर दस प्रकार है,

यथा—१-५ श्रोत्रेन्द्रिय असवर–यावत्–स्पर्शेन्द्रिय असवर, ६ मन असवर, ७ वचन असवर, ८ काय असवर, ९ उपकरण असवर,[3] १० शुचि कुशाग्र असवर,[४]

७१० —दस कारणो से मनुष्य को अभिमान उत्पन्न होता है, यथा—१ जातिमद से, २-७ कुलमद से–यावत्–८ ऐश्वयमद से, ९ नाग कुमार देव या सुपर्णकुमार देव मेरे समीप शीघ्र आते है इस प्रकार के मद से, १० सामन्य पुरप को जिस प्रकार का अवधिज्ञान उत्पन्न होता है उससे श्रेष्ठ अवधिज्ञान और दशन मुझे उत्पन्न हुआ है इस प्रकार के मद से।

७११ —समाधी दस प्रकार की हैं,

---

१ अकल्पनीय उपकरण वस्त्र-पात्र का त्याग करना।

२ सुई या कुशाग्र को सवृत करके रखना।

३ अकल्पनीय उपकरण वस्त्र-पात्र का त्याग न करना।

४ सुई या कुशाग्र को सवृत करके न रखना।

९ इसने मेरे मनोज्ञ शब्द यावत्-गध का अपहरण किया, करता है या करेगा तथा इसने मुझे अमनोज्ञ शब्द-यावत् गध दिया, देता है या देगा ऐसा चिन्तन करने से—

१० मैं आचाय या उपाध्याय की आज्ञानुसार आचरण करता हू किन्तु वे मेरे पर प्रसन्न नहीं रहते हैं।

९०६ क—सयम दश प्रकार का है,

यथा—१-५ पृथ्वीकायिक जीवो का सयम यावत्-वनस्पतिकायिक जीवो का सयम, ६ वेइन्द्रिय जीवो का सयम, ७ तेइन्द्रिय जीवो का सयम, ८ चउरिन्द्रिय जीवो का सयम, ९ पचेन्द्रिय जीवो का सयम, १० अजीव काय सयम[1]

ख—असयम दश प्रकार का है,

यथा—१-५ पृथ्वीकायिक जीवो का असयम यावत्-वनस्पतिकायिक जीवो का असयम, ६-९ वेइन्द्रिय जीवो का असयम-यावत्-पचेन्द्रिय जीवो का असयम, १० अजीव कायिक असयम।[2]

ग—सवर दस प्रकार का है,

---

१ वस्त्र-पात्र आदि अजीव पदार्थो को यत्नापूवक काम मे लेना।

२ वस्त्र-पात्र आदि अजीव पदार्थो को अयत्ना से काम में लेना।

यथा—१-५ श्रोत्रेन्द्रिय सवर-यावत्-स्पर्शेन्द्रिय सवर, ६ मन सवर, ७ वचन सवर, ८ काय सवर, ९ उपकरण सवर,[1] १० शुचि कुशाग्र सवर।[2]

घ—असवर दस प्रकार है,

यथा—१-५ श्रोत्रेन्द्रिय असवर-यावत्-स्पर्शेन्द्रिय असवर, ६ मन असवर, ७ वचन असवर, ८ काय असवर, ९ उपकरण असवर,[3] १० शुचि कुशाग्र असवर,[4]

७१० —दस कारणो से मनुष्य को अभिमान उत्पन्न होता है,

यथा—१ जातिमद से, २-७ कुलमद से-यावत्-८ ऐश्वयमद से, ९ नाग कुमार देव या सुपर्णकुमार देव मेरे समीप शीघ्र आते है इस प्रकार के मद से, १० सामान्य पुरुष को जिस प्रकार का अवधिज्ञान उत्पन्न होता है उससे श्रेष्ठ अवधिज्ञान और दर्शन मुझे उत्पन्न हुआ है इस प्रकार के मद से।

७११ —समाधी दस प्रकार की है,

---

१ अकल्पनीय उपकरण वस्त्र-पात्र का त्याग करना।

२ सुई या कुशाग्र को सवृत करके रखना।

३ अकल्पनीय उपकरण वस्त्र-पात्र का त्याग न करना।

४ सुई या कुशाग्र को सवृत करके न रखना।

यथा—१ प्राणातिपात से विरत होना,

२ मृषावाद से विरत होना,

३ अदत्तादान से विरत होना,

४ मैथुन से विरत होना,

५ परिग्रह से विरत होना,

६ ईर्या समिति से,

७ भाषा समिति से।

८ एषणा समिति।

९ आदान भाण्डमात्र निक्षेपणा समिति से,

१० उच्चार प्रश्रवण श्लेष्म सिंघाण परिस्थापनिका समिति।

ख—असमाधि दस प्रकार की हैं,

यथा—१-५ प्राणातिपात—यावत्—परिग्रह,

६-१० ईर्या असमिति—यावत्—उच्चार प्रश्रवण श्लेष्म सिंघाण परिस्थापनिका असमिति।

७१२ क—प्रव्रज्या दस प्रकार की हैं,

यथा—१ छन्द से—गोविन्द वाचक के समान स्वेच्छा से दीक्षा ले।

२ रोष से—शिवभूति के समान रोष से दीक्षा ले।

३ दरिद्रता से—कठिआरे के समान दरिद्रता से दीक्षा ले।

४ स्वप्न से—पुष्प चूला के समान स्वप्न दर्शन से दीक्षा ले, अथवा स्वप्न मे दीक्षा लेने से दीक्षा ले।

५ प्रतिज्ञा लेने से—धन्नाजी के समान प्रतिज्ञा लेने से दीक्षा ले।

६ स्मरण से—भगवान् मल्लिनाथ के छ मित्रो के समान पूर्वभव के स्मरण से दीक्षा ले।

७ रोग होने से—सनत्कुमार चक्रवर्ती के समान रोग होने से दीक्षा ले।

८ अनादर से—नदीषेण के समान अनादर से दीक्षा ले।

९ देवता के उपदेश से—मेतार्य के समान देवता के उपदेश से दीक्षा ले।

१० पुत्र के स्नेह से—वज्रस्वामी की माताजी के समान पुत्र स्नेह से दीक्षा ले।

ख—श्रमण धर्म दस प्रकार का है,
यथा—१ क्षमा, २ निर्लोभता, ३ सरलता, ४ मृदुता, ५ लघुता, ६ सत्य, ७ सयम, ८ तप, ९ त्याग, १० ब्रह्मचर्य।

ग—वैयावृत्य दस प्रकार का है,
यथा—१ आचार्य की वैयावृत्य,
२ उपाध्याय की वैयावृत्य,
३ स्थविर साधुओ की वैयावृत्य,

४ तपस्वी की वैयावृत्य,
५ ग्लान (रोगी) की वैयावृत्य,
६ शैक्ष (नवदीक्षित) की वैयवृत्य,
७ कुल (चन्द्र कुलादि) की वैयावृत्य,
८ गण (कोटि कादिगण) की वैयावृत्य,
९ चतुर्विध संघ की वैयावृत्य,
१० सार्धर्मिक की वैयावृत्य।

७१३ क—जीव परिणाम दस प्रकार के हैं

यथा—१ गति परिणाम, २ इन्द्रिय परिणाम, ३ कषाय परिणाम, ४ लेश्या परिणाम, ५ योग-परिणाम, ६ उपयोग परिणाम, ७ ज्ञान परिणाम, ८ दर्शन परिणाम, ९ चारित्र परिणाम, १० वेद परिणाम।

ख—अजीव परिणाम दस प्रकार के हैं,

यथा—१ बन्धन परिणाम, २ गति परिणाम, ३ संस्थान परिणाम, ४ भेद परिणाम, ५ वर्ण परि-णाम, ६ रस परिणाम, ७ गंध परिणाम, ८ स्पर्श परिणाम ९ अगुरु लघु परिणाम, १० शब्द परिणाम।

७१४ क—आकाश सम्बन्धी अस्वाध्याय दस प्रकार का है,

यथा—१ उल्कापात—आकाश से प्रकाश पुंज का गिरना[1]

---

१ अस्वाध्याय काल—एक प्रहर।

२ दिशादाह—महानगर के दाह के समान आकाश मे प्रकाश का दिखाई देना[1]

३ गर्जना—आकाश मे गर्जना होना[2]

४ विद्युत—अकाल मे विद्युत चमकना[3]

५ निर्घात—आकाश मे व्यन्तर देव कृत महाध्वनि अथवा भूकम्प की ध्वनि[4]

६ जूयग—सध्या और चन्द्रप्रभा का मिलना[5]

७ यक्षादीप्त—आकाश मे यक्ष के प्रभाव से जाज्वल्यमान अग्नि का दिखाई देना।

८ धूमिका—धुए जैसे वर्णवाली सूक्ष्मवृष्टि।

९ मिहिका—शरद काल मे होने वाली सूक्ष्म वर्षा अर्थात् ओस गिरना,

१० रजघात—चारो दिशा मे सूक्ष्म रज की वृष्टि[6]

---

१ अस्वाध्याय काल—एक प्रहर

२ " " दो प्रहर

३ " " एक प्रहर

४ " " आठ प्रहर

५ शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से तृतीया तक प्रतिक्रमण पश्चात एक प्रहरपर्यन्त कालिक सूत्र का अस्वाध्याय काल है।

६ यक्षादीप्त, धूमिका, मिहिका और रजघात जब तक रहे तब तक अस्वाध्याय है।

ख—औदारिक शरीर सम्बन्धी अस्वाध्याय दस प्रकार का हैं,

यथा—१ अस्थि, २ मांस, ३ रक्त[1] ४ अशुचि के समीप, ५ स्मशान के समीप, ६ चन्द्र ग्रहण[2] ७ सूर्य ग्रहण[3] ८ पतन—राजा, मत्री, सेनापति या ग्रामाधिपति आदि का मरण[4] ९ राजविग्रह—युद्ध, १० उपाश्रय मे मनुष्य आदि का मृत शरीर पडा हो तो सौ हाथ पयन्त अस्वाध्याय क्षेत्र हैं।

७१५ क—पचेन्द्रिय जीवो की हिंसा न करने वाले को दस प्रकार का सयम होता हैं।

यथा—१ श्रोत्रेन्द्रिय का सुख नष्ट नही होता।
२ श्रोत्रेन्द्रिय का दु ख प्राप्त नही होता यावत्—
३-१० स्पर्शेन्द्रिय का दु ख प्राप्त नही होता।

---

१ (क) अस्थि आदि तिर्यंच के हो तो क्षेत्र से साठ हाथ पयन्त और काल से तीन प्रहर तक अस्वाध्याय हैं।
(ख) अस्थि आदि मनुष्यों के हो तो क्षेत्र आदि से सौ-सौ हाथ पर्यन्त और काल से अहोरात पयन्त अस्वाध्याय हैं।

२ उत्कृष्ट—बारह प्रहर पयन्त अस्वाध्याय काल हैं।
जघन्य—आठ प्रहर पर्यन्त अस्वाध्याय काल हैं।

३ उत्कृष्ट—सोलह प्रहर पर्यन्त अस्वाध्याय काल हैं।
जघन्य—बारह प्रहर पर्यन्त अस्वाध्याय काल हैं।

४ अहोरात्र पर्यन्त अस्वाध्याय हैं।

ख—इसी प्रकार दस प्रकार का असयम भी कहना चाहिए।

७१६ —सूक्ष्म दस प्रकार के हैं,

यथा—१ प्राण सूक्ष्म—कु थुआ आदि।

२ पनक सूक्ष्म—फूलण आदि।

३ बीज सूक्ष्म—डागर आदि का अग्र भाग।

४ हरित सूक्ष्म—सूक्ष्म हरी घास।

५ पुष्प सूक्ष्म—वड आदि के पुष्प।

६ अड सूक्ष्म—कीडी आदि के अण्डे।

७ लयन सूक्ष्म—कीडी नगरादि।

८ स्नेह सूक्ष्म—धुअर आदि।

९ गणित सूक्ष्म—सूक्ष्म बुद्धि से गहन गणित करना।

१० भग सूक्ष्म—सूक्ष्म बुद्धि से गहन भागे बनाना।

सरितासूत्र

७१७ क—जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत से दक्षिण दिशा मे गगा और सिन्धु महानदी मे दस महा नदियाँ मिलती हैं।

यथा—गगा नदी मे मिलने वाली पाँच नदियाँ—

१ यमुना, २ सरयू, ३ आवी, ४ कोशी, ५ मही।

सिन्धु नदी मे मिलने वाली पाँच नदियाँ—

१ शतद्रु, २ विवत्सा, ३ विभासा, ४ एरावती, ५ चन्द्रभागा।

ख—जम्बूद्वीप के मेरु से उत्तर दिशा मे रक्ता और रक्तवती महानदी मे दस महानदियां मिलती हैं,
यथा—१ कृष्णा, २ महाकृष्णा, ३ नीला ४ महा नीला, ५ तीरा, ६ महातीरा, ७ इन्द्रा, ८ इन्द्र षेणा, ९ वारिषेणा, १० महाभोगा।

७१८ क—जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र मे दस राजधानियां हैं,
यथा—१ चम्पा, २ मथुरा, ३ वाराणसी, ४ श्रावस्ती, ५ साकेत, ६ हस्तिनापुर, ७ कापिल्य पुर, ८ मिथिला, ९ काशाम्बि १० राजगृह।

ख—इन दस राजधानियो मे दश राजा मुण्डित यावत—प्रव्रजित हुए,
यथा—१ भरत, २ सगर, ३ मघव, ४ सनत्कुमार, ५ शान्तिनाथ, ६ कुन्थुनाथ, ७ अरनाथ, ८ महापद्म, ९ हरिषेण, १० जयनाथ

मेरुपर्वत सूत्र

७१९ क—जम्बूद्वीप का मेरुपवत भूमि म दस सो (एक हजार) योजन गहरा है।

ख—भूमि पर दस हजार योजन चौडा है।

ग—ऊपर से दस सौ (एक हजार) योजन चौडा है।

घ—दस-दस हजार (एक लाख) योजन के सम्पूर्ण मेरु-पर्वत हैं।

७२० क—जम्बूद्वीपवर्ती मेरुपर्वत के मध्य भाग मे इस रत्न प्रभा पृथ्वी के ऊपर और नीचे के लघु प्रतर मे आठ प्रदेश वाला रुचक है वहाँ से इन दश दिशाओ का उद्गम होता है।
यथा—१ पूव, २ पूर्व दक्षिण, ३ दक्षिण, ४ दक्षिण पश्चिम, ५, पश्चिम, ६ पश्चिमोत्तर, ७ उत्तर, ८ उत्तर पूव, ९ ऊध्व, १० अधो।

ख—इन दस दिशाओ के दस नाम है,
यथा—१ ऐन्द्री, २ आग्नेयी, ३ यमा, ४ नैऋती, ५ वारुणी, ६ वायव्या, ७ सोमा, ८ ईशाना, ९ विमला, १० तमा।

लवण समुद्र सूत्र

ग—लवण समुद्र के मध्य मे दस हजार योजन का गोतीर्थ विरहित क्षेत्र है।

घ—लवण समुद्र के जल की शिखा दस हजार योजन की हैं।

महापाताल कलश सूत्र

ङ—सभी (चार) महापाताल कलश दस दश सहस्र (एक लाख योजन के गहरे हैं।

च—मूल मे (पेंदे मे) दस हजार योजन के चौडे हैं।

छ—मध्य भाग मे—एक प्रदेश वाली श्रेणी मे दस-दस हजार (एक लाख) योजन चौडे है।

ज—कलशो के मुह दस हजार योजन चौडे हैं।

झ—उन महापाताल कलशो की ठीकरी वज्रमय है और दस सौ योजन की सवत्र समान चौडी (मोटी) है।

लघुपाताल कलश सूत्र

ञ—सभी (चार) लघुपाताल कलश दस सौ (एकहजार) योजन गहरे हैं।

ट—मूल मे (पेंद मे) दस दशक (सौ) योजन चौड हैं।

ठ—मध्य भाग मे—एक प्रदेश वाली श्रेणी मे दशसो (एक हजार) योजन चौडे हैं।

ड—कलशो के मुह दशदशक (सौ) योजन चौडे हैं।

ढ—उन लघुपाताल कलशा की ठीकरी वज्रमय है और दश योजन की सवत्र समान चौडी (मोटी) है।

मेरु पर्वत सूत्र

७२१ क—धातकीखण्ड द्वीप के मेरु भूमि मे दश सौ (एक हजार) योजन गहरे हैं।

ख—भूमि पर कुछ न्यून दश हजार योजन चौडे ह।

ग—ऊपर से दश सौ (एक हजार योजन) चौड हैं।

घ-च—पुष्करवर अधद्वीप के मेरु पवतो का प्रमाण भी इसी प्रकार का है।

वैताढ्य पर्वत सूत्र

७२२ क—सभी वृत वैताढ्य पवत दश सो (एक हजार) योजन ऊँचे हैं।

ख—भूमि मे दस सो (एक हजार) गाऊ गहरे हैं।

ग—सवत्र समान पल्यक सस्थान से सस्थित हैं और दश सो (एक हजार) योजन चौडे हैं।

७२३ —जम्बूद्वीप मे दश क्षेत्र हैं,
यथा—१ भरत, २ ऐरवत, ३ हैमवत, ४ हैरण्यवत, ५ हरिवर्ष, ६ रम्यक्‌वष, ७ पूव-विदेह, ८ अपरविदेह, ९ देवकुरु, १० उत्तरकुरु।

७२४ —मानुषोत्तर पर्वत मूल मे दश सो बावीस (एक हजार बावीस–१०२२) योजन चौडा है।

अजनक पर्वत सूत्र

७२५ क—सभी अजनक पवत भूमि मे दश सो (एक हजार) योजन गहरे हैं।

ख—भूमि पर मूल मे दश हजार योजन चौडे हैं।

ग—ऊपर मे दश सो (एक हजार) योजन चौडे हैं।

दधिमुख पर्वत सूत्र

घ—सभी दधिमुख पर्वत दश सो (एक हजार) योजन भूमि मे गहरे हैं।

ङ—सर्वत्र समान पल्यक सस्थान से सस्थित है और दश हजार योजन चौडे हैं।

ज—कलशो के मुह दस हजार योजन चौडे हैं।

झ—उन महापाताल कलशो की ठीकरी वज्रमय है और दस सौ योजन की सवत्र समान चौडी (मोटी) है।

लघुपाताल कलश सूत्र

ञ—सभी (चार) लघुपाताल कलश दस सौ (एकहजार) योजन गहरे हैं।

ट—मूल मे (पेंद मे) दस दशक (सौ) योजन चौड हैं।

ठ—मध्य भाग मे—एक प्रदेश वाली श्रेणी मे दशसौ (एक हजार) योजन चौडे हैं।

ड—कलशो के मुह दशदशक (सौ) योजन चौडे हैं।

ढ—उन लघुपाताल कलशो की ठीकरी वज्रमय है और दश योजन की सवत्र समान चौडी (मोटी) है।

मेरु पर्वत सूत्र

७२१ क—धातकीखण्ड द्वीप के मेरु भूमि मे दश सौ (एक हजार) योजन गहरे हैं।

ख—भूमि पर कुछ न्यून दश हजार योजन चौड हैं।

ग—ऊपर से दश सौ (एक हजार योजन) चौडे है।

घ-च—पुष्करवर अर्धद्वीप के मेरु पवतो का प्रमाण भी इसी प्रकार का है।

वैताढ्य पर्वत सूत्र

७२२ क—सभी वृत वैताढ्य पवत दश सौ (एक हजार) योजन ऊँचे हैं।

ख—भूमि मे दस सौ (एक हजार) गाऊ गहरे हैं।

ग—सवत्र समान पल्यक सस्थान से सस्थित हैं और दश सौ (एक हजार) योजन चौडे हैं।

७२३ —जम्बूद्वीप मे दश क्षेत्र हैं,
यथा—१ भरत, २ ऐरवत, ३ हैमवत, ४ हैरण्यवत, ५ हरिवर्ष, ६ रम्यक्वष, ७ पूव-विदेह, ८ अपरविदेह, ९ देवकुरु, १० उत्तरकुरु।

७२४ —मानुषोत्तर पवत मूल म दश सौ बावीस (एक हजार बावीस-१०२२) योजन चौडा ह।

अजनक पर्वत सूत्र

७२५ क—सभी अजनक पवत भूमि मे दश सौ (एक हजार) योजन गहरे हैं।

ख—भूमि पर मूल मे दश हजार योजन चौडे हैं।

ग—ऊपर मे दश सौ (एक हजार) योजन चौडे हैं।

दधिमुख पर्वत सूत्र

घ—सभी दधिमुख पर्वत दश सौ (एक हजार) योजन भूमि मे गहरे हैं।

ङ—सर्वत्र समान पल्यक सस्थान से सस्थित हैं और दश हजार योजन चौडे हैं।

रतिकर पर्वत सूत्र

च—सभी रतिकर पर्वत दश सौ (एक हजार) योजन ऊँचे हैं।

छ—दश सौ (एक हजार) गाऊ भूमि मे गहरे हैं।

ज—सर्वत्र समान झालर के सस्थान से स्थित हैं और दश हजार योजन चौडे है।

रुचकवर पर्वत सूत्र

७२६ क—रुचकवर पवत दश सौ योजन भूमि मे गहरे है।

ख—मूल मे (भूमि पर) दस हजार योजन चौडे हैं।

ग—ऊपर से दस सौ योजन चौडे हैं।

घ-च—इसी प्रकार कुण्डलवर पवत का प्रमाण भी करना चाहिए।

७२७ —द्रव्यानुयोग दस प्रकार का है,

यथा—१ द्रव्यानुयोग, २ जीवादि द्रव्यो का चिन्तन यथा—गुण-पर्यायवद् द्रव्यम्।

२ मातृकानुयोग—उत्पाद, व्यय और ध्रौव्य इन तीन पदो का चिन्तन।

यथा—उत्पाद व्यय ध्रौव्य युक्त सत्।

३ एकार्थिकानुयोग—एक अर्थ वाले शब्दो का चिन्तन।

यथा—जीव, प्राण, भूत और सत्व इन एकार्थवाची शब्दो का चिन्तन ।

४ करणानुयोग—साधकतम कारणो का चिन्तन । यथा—काल, स्वभाव, नियति और साधकतम कारण से कर्त्ता कार्य करता है ।

५ अर्पितानर्पित—
यथा—अर्पित-विशेषण सहित—यह ससारी जीव हैं । अनर्पित विशेषण रहित—यह जीव द्रव्य हैं ।

६ भाविताभावित—
यथा—अन्य द्रव्य के ससग मे प्रभावित—भावित कहा जाता है और अन्य द्रव्य के ससग से अप्रभावित अभावित कहा जाता है—इस प्रकार द्रव्यो का चिन्तन किया जाता है ।

७ बाह्याबाह्य—बाह्य द्रव्य और अबाह्य द्रव्यो का चिन्तन ।

८ शास्वताशास्वत—शास्वत और अशास्वत द्रव्यो का चिन्तन ।

९ तथाज्ञान— सम्यगदृष्टि जीवो का जो यथार्थ ज्ञान है वह तथाज्ञान है ।

१० अतथाज्ञान—मिथ्यादृष्टि जीवो का जो एकान्त ज्ञान है वह अतथाज्ञान है ।

उत्पात पर्वत सूत्र

७२८ क—असुरेन्द्र चमर का तिगिच्छा कूट उत्पात पवत मूल म दस सो बाईस (एक हजार बाईस १०२२) योजन चोडा है।

ख—असुरेन्द्र चमर के सोम लोकपाल का सोमप्रभ उत्पाद पर्वत दस सो (एक हजार) योजन का ऊंचा है, दस सो (एक हजार) गाऊ का भूमि म गहरा है, मूल मे (भूमि पर) दससो (एक हजार) योजन का चौडा है।

ग—असुरेन्द्र चमर के यमलोकपाल का यमप्रभ उत्पात पवत का पमाण भी पूर्ववत् है।

घ—इसी प्रकार वरुण क उत्पात पवत का प्रमाण है।

ङ—इसी प्रकार वैश्रमण के उत्पात पर्वत का प्रमाण है।

च—वैरोचनेन्द्र बलि का रुचकेन्द्र उत्पात पवत मूल म दस सो बावीस (एक हजार बाईस १०२२) योजन चौडा है।

छ-ज—जिस प्रकार चमरेन्द्र के लोकपालो के उत्पात पवतो का प्रमाण कहा है उसी प्रकार बलि के लोकपालो के उत्पात पवतो का प्रमाण कहना चाहिए।

ट—नागकुमारेन्द्र धरण का धरणप्रभ उत्पात पवत दस सो (एक हजार) योजन ऊंचा है, दस सो (एक हजार) गाऊ का भूमि मे गहरा है, मूल मे दससो (एक हजार) योजन चौडा है।

ठ-त—इसी प्रकार धरण के कालवाल आदि लोकपालो के उत्पात पर्वतो का प्रमाण है।

थ-प—इसी प्रकार भूतानन्द और उनके लोकपालो के उत्पात पर्वतो का प्रमाण है।

सूचना—इसी प्रकार लोकपाल सहित स्तनित कुमार पर्यन्त उत्पात पर्वतो का प्रमाण कहना चाहिए। असुरेन्द्रो और लोकपालो के नामो के समान उत्पात पर्वतो के नाम कहने चाहिए।

फ—देवेन्द्र देवराज शक्रेन्द्र का शक्रप्रभ उत्पात पर्वत दस हजार योजन ऊँचा है। दस हजार गाऊ भूमि मे गहरा है। मूल मे दस हजार योजन चौडा है।

ब य—इसी प्रकार शक्रेन्द्र के लोकपालो के उत्पात पर्वतो का प्रमाण है।

सूचना—इसी प्रकार अच्युत पर्यन्त सभी इन्द्रो और लोकपालो के उत्पात पर्वतो का प्रमाण है।[1]

अवगाहना सूत्र

७२९ क—बादर वनस्पतिकाय की उत्कृष्ट अवगाहना दश सौ (एक हजार) योजन की है।

ख—जलचर तिर्यंच पचेन्द्रिय की उत्कृष्ट अवगाहना दश सौ (एक हजार) योजन की है।

---

१ सबका समान प्रमाण है।

ग—स्थलचर उरपरिसर्प तिर्यंच पंचेन्द्रिय की उत्कृष्ट अवगाहना भी इतनी ही है।

७३० —भगवनाथ अर्हन्त की मुक्ति के पश्चात् दश लाख क्रोड सागरोपम व्यतीत होने पर अभिनन्दन अर्हन्त उत्पन्न हुए।

७३१ —अनन्तक दश प्रकार के हैं,

यथा—१ नाम अनन्तक—सचित्त या अचित्त वस्तु का अनन्तक नाम।

२ स्थापना अनन्तक—अक्ष आदि में किसी पदार्थ में अनन्त की स्थापना।

३ द्रव्य अनन्तक—जीव द्रव्य या पुद्गल द्रव्य का अनन्तपना।

४ गणना—अनन्तक एक, दो, तीन इसी प्रकार संख्यात, असंख्यात और अनन्त पर्यन्त गिनती करना।

५ प्रदेश अनन्तक—आकाश प्रदेशों का अनन्तपना।

६ एकतोऽनन्तक—अतीत काल अथवा अनागत काल।

७ द्विधा अनन्तक—सर्वकाल।

८ देश विस्तारानन्तक—एक आकाश प्रतर।

९ सर्व विस्तारानन्तक—सर्व आकाशास्तिकाय।

१० शाश्वतानन्तक—अक्षय जीवादि द्रव्य।

७३२ क—उत्पाद पूर्व के दश वस्तु (अध्ययन) हैं।

ख—अरितनास्ति प्रवादपूव के दश चूल वस्तु (लघु अध्ययन) हैं।

७३३ क—प्रतिषेवना (प्राणातिपात आदि पापो का सेवन) दश प्रकार की है।

यथा—१ दर्प प्रतिषेवना—दर्पपूवक दौडने या वध्यादि कर्म करने से।

२ प्रमाद प्रतिषेवना—हास्य विकथा आदि प्रमाद से[1]

३ अनाभोग प्रतिषेवना—असावधानी से।

४ आतुर प्रतिषेवना—स्वय की या अय की चिकित्सा हेतु[2]

५ आपत्ति प्रतिषेवना—विपद्ग्रस्त होने से[3]

६ शकित प्रतिषेवना—शुद्ध आहारादि मे अशुद्ध की शका होने पर भी ग्रहण करने से।

---

१ करने योग्य काय के करने मे प्रयत्न न करना प्रमाद है।

२ भूख प्यास या व्याधि से पीड़ित होकर दोष सेवन करना।

३ द्रव्यादि भेद से चार प्रकार की विपत्ति है—
द्रव्य विपत्ति—प्राशुक द्रव्य की दुर्लभता,
क्षेत्र विपत्ति—मार्ग मे गिरना,
काल विपत्ति—दुर्भिक्ष आदि,
भाव विपत्ति—ग्लानि होना।

७ सहसात्कार प्रतिषेवना—अकस्मात् दोष लग जाने से।[1]

८ भयप्रतिषेवना—राजा चोर आदि के भय से।[2]

९ प्रद्वेषप्रतिषेवना—क्रोधादि कषाय की प्रबलता से।

१० विमर्श प्रतिषेवना—शिष्यादि की परीक्षा के हेतु[3]

ख—आलोचना के दश दोष हैं,

यथा—१ अनुकम्पा उत्पन्न करके आलोचना करे—आलोचना लेने के पहले गुरु महाराज की सेवा इस संकल्प से करे कि ये मेरी सेवा से प्रसन्न होकर मेरे पर अनुकम्पा करके कुछ कम प्रायश्चित्त देंगे।

२ अनुमान करके आलोचना करे—ये आचार्यादि मृत्यु दण्ड देने वाले है या कठोर दण्ड देने वाले हैं

---

१ [क] देखे बिना पैर धरदे पश्चात् देखने पर जीवों की विराधना होती हुयी देखे किन्तु पीछे न लौटे।

[ख] पात्र मे सहसा कोई सदोष आहार डाल दे बाद मे दोष जानने पर भी उस आहार को न त्यागे।

२ सिंह आदि श्वापद तथा सर्पादि उरग जीवो के भय से वृक्षादि पर चढ़ने से।

३ सचित्त पृथ्वी आदि के स्पर्श से।

यह अनुमान से जानकर मृदु दण्ड मिलने की आशा से आलोचना करे।

३ मेरा दोष इन्होंने देख लिया है ऐसा जानकर आलोचना करे—आचार्यादि ने मेरा यह दोषसेवन देख तो लिया ही है अब इसे छिपा नही सकता अत मैं स्वय इनके समीप जाकर अपने दोष की आलोचना करलूं इससे ये मेरे पर प्रसन्न होगे—ऐसा सोच कर आलोचना करे किन्तु दोष सेवी को ऐसा अनुभव हो कि आचार्यादि ने मेरा दोष सेवन देखा नही है है, ऐसा विचार करके आलोचना न करे अत यह दृष्ट दोष है।

४ स्थूल दोष की आलोचना करे—अपने बडे दोष की आलोचना इस आशय से करे कि यह कितना सत्यवादी हैं ऐसी प्रतीति कराने के लिये बडे दोष की आलोचना करे।

५ सूक्ष्म दोष की आलोचना करे—यह छोटे-छोटे दोषो की आलोचना करता है तो बडे दोषो की आलोचना करने मे तो सन्देह ही क्या है ऐसी प्रतीति कराने के लिए सूक्ष्म दोषो की आलोचना करे।

६ प्रच्छन्न रूप से आलोचना करे—आचार्यादि सुन न सके ऐसे धीमे स्वर से आलोचना करे अत आलोचना नही करी ऐसा कोई न कह सके।

१० पारांचवाह—गृहस्थ के कपडे पहनाकर जो प्रायश्चित्त दिया जाय।

७३४ —मिथ्यात्व दश प्रकार का है, यथा—

१ अधम मे धम की बुद्धि

२ धर्म मे अधम की बुद्धि,

३ उन्मार्ग म माग की बुद्धि,

४ माग म उन्माग की बुद्धि,

५ अजीव मे जीव की बुद्धि,

६ जीव म अजीव की बुद्धि,

७ असाधु मे साधु की बुद्धि,

८ साधु मे असाधु की बुद्धि,

९ अमूर्त मे मूर्त की बुद्धि,

१० मूर्त मे अमूत की बुद्धि।

७३५ क—चन्द्रप्रभ अर्हन्त दश लाख पूर्व का पूर्णायु भोग कर सिद्ध यावत मुक्त हुए।

ख—धर्मनाथ अर्हन्त दश लाख वप का पूर्णायु भोगकर सिद्ध यावत् मुक्त हुए।

ग—नमिनाथ अर्हन्त दश हजार वप का पूर्णायु भोगकर सिद्ध यावत् मुक्त हुए।

घ—पुरुपसिंह वासुदेव दश लाख वप का पूर्णायु भोगकर छट्ठी तमा पृथ्वी मे नैरयिक रूप मे उत्पन्न हुए।

ङ—नेमनाथ अर्हन्त दश धनुष के ऊँचे थे और दश सौ (एक हजार) वर्ष का पूर्णायु भोगकर सिद्ध यावत् मुक्त हुए।

च—कृष्ण वासुदेव दश धनुष के ऊँचे थे और दश सौ (एक हजार) वर्ष का पूर्णायु भोगकर तीसरी वालुकाप्रभा पृथ्वी मे नैरयिक रूप मे उत्पन्न हुए।

७३६ क—भवनवासी देव दश प्रकार के हैं,

यथा—१-१० असुरकुमार यावत् स्तनितकुमार।

ख—इन दश प्रकार के भवनवासी देवो के दश चैत्य वृक्ष हैं,

यथा—१ अश्वत्थ—पीपल, २ सप्तपर्ण, ३ शाल्मली, ४ उदुम्बर, ५ शिरीष, ६ दधिपर्ण, ७ वजुल, ८ पलाश, ९ वप्र, १० कर्णेरवृक्ष।

७३७ सुख दस प्रकार का है,

यथा—१ आरोग्य, २, दीर्घायु, ३ धनाढ्य होना, ४ इच्छित शब्द और रूप का प्राप्त होना, ५ इच्छित गध, रस और स्पर्श का प्राप्त होना, ६ सन्तोष, ७ जब जिस वस्तु की आवश्यकता हो, उस समय उस वस्तु का प्राप्त होना, ८ शुभ भोग प्राप्त होना, ९ निष्क्रमण दीक्षा, १० अनाबाध-मोक्ष।

७३८ क—उपघात दस प्रकार का है,[1]
यथा—१ उद्गम उपघात, उत्पादन उपघात शेष पांचवे स्थान के समान यावत्—३-५ परिहरण उपघात, ६ ज्ञानोपघात, ७ दर्शनोपघात, ८ चारित्रोपघात, ९ अप्रीतिकोपघात[2] १० सरक्षणोपघात[3]।

ख—विशुद्धि दस प्रकार की है,[4]
यथा—१ उद्गम विशुद्धि, २ उत्पादन विशुद्धि यावत् ३-१० सरक्षण विशुद्धि।

७३९ क—सक्लेश दस प्रकार का है,
यथा—१ उपधि सक्लेश, २ उपाश्रय सक्लेश, ३ कषाय सक्लेश, ४ भक्तपाण सक्लेश, ५ मन सक्लेश, ६ वचन सक्लेश, ७ काय सक्लेश, ८ ज्ञान सक्लेश, ९ दर्शन सक्लेश, १० चारित्र सक्लेश।

ख—असक्लेश दस प्रकार का है,
यथा—१ उपधि असक्लेश यावत २-१० चारित्र असक्लेश।

---

१ चारित्र की विराधना रूप उपघात।

२ गुरु पर स्नेह न रखने से विनय का भग होना,

३ शरीर पर मूर्छा होने से अपरिग्रह व्रत का उपघात।

४ उपघात का विरोधी विशुद्धि है।

७४० —बल दस प्रकार के हैं,

यथा—१ श्रोत्रेन्द्रिय बल यावत् २-५ स्पर्शेन्द्रि बल, ज्ञान बल, ७ दर्शन बल ८ चारित्र बल, १० वीर्य बल।

७४१ क—सत्य दस प्रकार के हैं,

यथा—१ जनपद सत्य—देश की अपेक्षा से सत्य,

२ सम्मत सत्य—सब का सम्मत सत्य,

३ स्थापना सत्य—बालक द्वारा लकडी मे घोडे की स्थापना,

४ नाम सत्य—एक दरिद्री का धनराज नाम,

५ रूप सत्य—एक कपटी का साधुवेप,

६ प्रतीत्यसत्य—कनिष्ठा की अपेक्षा अनामिका का दीर्घ होना, और मध्यमा की अपेक्षा अनामिका का लघु होना।

७ व्यवहार सत्य—पर्वत मे तृण जलते हैं फिर भी पर्वत जल रहा है ऐसा कहना।

८ भाव सत्य—बक मे प्रधान श्वेत वर्ण है अत बक (बगुला) को श्वेत कहना।

९ योग सत्य—दड हाथ मे होने से दण्डी कहना।

१० औपम्य सत्य—यह कन्या चन्द्रमुखी है।

ख—मृषावाद दस प्रकार का है,

यथा—१ क्रोध जन्य, २ मान जन्य, ३ माया जन्य, ४ लोभ जन्य, ५ प्रेम जन्य, ६ द्वेष जन्य, ७ हास्य

जन्य, ८ भय जन्य, ९ आख्यायिका जन्य[1],
१० उपघात जन्य[2] ।

ग—सत्यमृषा (मिश्र वचन) दस प्रकार का है,
यथा—१ उत्पन्न मिश्रक सही संख्या मालूम न होने पर भी "इस शहर मे दस बच्चे पैदा हुए हैं" ऐसा कहना ।
२ विगत मिश्रक—जन्म के समान मरण के सम्बन्ध मे कहना ।
३ उत्पन्न विगत मिश्रक—सही संख्या प्राप्त न होने पर भी "इस गाँव मे दस बालक जन्मे हैं और दस वृद्ध मरे हैं" इस प्रकार कहना ।
४ जीव मिश्रक—जीवित और मृत जीवो के समूह को देखकर "जीव समूह है" ऐसा कहना ।
५ अजीव मिश्रक—जीवित और मृत जीवो के समूह को देखकर "यह अजीव समूह है" ऐसा कहना ।
६ जीवाजीव मिश्रक—जीवित और मृत जीवो के समूह को देखकर "इतने जीवित हैं और इतने मृत है" ऐसा कहना ।
७ अनन्त मिश्रक—पत्ते सहित कन्द मूल को 'अनन्तकाय' कहना ।

---

१ मिथ्या कथा कहना ।
२ प्राणी की हिंसा के लिए कहे गये वचन ।

८ प्रत्येक मिश्रक—मोगरी सहित मूली को प्रत्येक वनस्पति कहना।

९ अद्धामिश्रक—सूर्योदय न होने पर भी "सूर्योदय हो गया" ऐसा कहना।

१० अद्धाद्धामिश्रक—एक प्रहर दिन हुआ है "फिर भी दुपहर हो गया" ऐसा कहना।

७४२ दृष्टिवाद के दस नाम हैं,

यथा—१ दृष्टिवाद, २ हेतुवाद, ३ भूतवाद, ४ तत्ववाद, ५ सम्यग्वाद, ६ धर्मवाद, ७ भाषाविषय, ८ पूर्वगत, ९ अनुयोगगत, १० सर्व प्राण भूत जीव सत्त्व सुखवाद।

७४३ क—शस्त्र दश प्रकार के हैं,

यथा—१ अग्नि, २ विष

३ लवण, ४ स्नेह,

५ क्षार, ६ आम्ल,

७ दुष्प्रयुक्तमन, ८ दुष्प्रयुक्त वचन,

९ दुष्प्रयुक्तकाय, १० अविरति भाव।[1]

ख—(वाद के) दोष दस प्रकार के हैं,

यथा—१ तज्जात दोष—प्रतिवादी के जाति कुल को दोष देना,

२ मति भंग—विस्मरण,

---

१ अन्तिम चार भाव शस्त्र हैं।

३ प्रशास्तृदोप—सभापति या सभ्यो का निष्पक्ष न रहना।

४ परिहरण दोप—प्रतिवादी के दिये हुए दोप का निराकरण न कर सकना।

५ स्वलक्षण दाप—स्वकथित लक्षण का सदोप होना।

६ कारण दाप—साध्य के साथ साधन का व्यभिचार।

७ हेतुदोप—सदोप हेतु देना।

८ सक्रामण दोप—प्रस्तुत मे अप्रस्तुत का कथन।

९ निग्रहदोप—प्रतिज्ञा हानि आदि निग्रह स्थान का कथन।

१० वस्तुदोप—पक्ष मे दोप का कथन,

ग—विशेप दोप दस प्रकार के हैं।

यथा—१ वस्तु—पक्ष मे प्रत्यक्ष निराकृत आदि दोप का कथन,

२ तज्जातदोप—जाति कुल आदि को दोप देना,

३ दोप—मतिभगादि पूर्वोक्त आठ दोपो की अधिकता,

४ एकार्थिक दोप—समानार्थक शब्द कहना,

५ कारणदोप—कारण को विशेप महत्त्व देना,

६ प्रत्युत्पन्नदोप—वर्तमान मे उत्पन्न दोप का विशेप रूप से कथन,

७ नित्यदोष—वस्तु को एकान्त नित्य मानने से उत्पन्न होने वाले दोष,

८ अधिकदोष—वाद काल मे आवश्यकता से अधिक कहना,

९ स्वकृतदोष,

१० उपनीत दोष—अन्य का दिया हुआ दोष।

७६४ शुद्ध वागनुयोग[1] दस प्रकार का है,

यथा—१ चकारानुयोग—वाक्य मे आने वाले "च" का विचार।

२ मकारानुयोग—वाक्य मे आने वाले "मा" का विचार।

३ अपिकारानुयोग—"अपि" शब्द का विचार।

४ सेकारानुयोग—आनन्तर्यादि सूचक "से"[2] शब्द का विचार।

५ सायकारानुयोग—ठीक अर्थ मे प्रयुक्त "साय" का विचार।

६ एकत्वानुयोग—एक वचन के सम्बन्ध मे विचार।

७ पृथक्त्वानुयोग—द्विवचन और बहुवचन का विचार।

८ सयूथानुयोग—समास सम्बन्धी विचार।

---

१ वाक्य द्वारा पदार्थ बोध विषयक विचार।

२ "से" अर्थात् अथ का विचार

९ सक्रामितानुयाग— विभक्ति विपर्यास के सम्बन्ध मे विचार ।

१० भिन्नानुयोग सामान्य वात कहन के पश्चात क्रम और काल की अपेक्षा से उसके भेद करने के सम्बन्ध म विचार करना ।

७४५ क—दान दस प्रकार का होता है,

यथा—१ अनुकम्पादान—कृपा करके दीनो और अनाथो को देना,

२ मग्रहदान—आपत्तियो मे सहायता देना,

३ भयदान—भय से राजपुरुषों को कुछ देना,

४ कारुण्यदान—शोक अर्थात पुत्रादि वियाग के कारण कुछ देना ।

५ लज्जादान—इच्छा न होते हुऐ भी पाच प्रमुख व्यक्तियो के कहने से देना ।

६ गोरवदान—अपने यश के लिये गव पूवक देना,

७ अघमदान—अधर्मी पुरुप को देना,

८ घमदान— सुपात्र को देना,

९ आशादान—सुफल की आशा से देना,

१० प्रत्युपकारदान—किसी के उपकार के वदले कुछ देना ।

ख—गति दश प्रकार की है,

यथा—१ नरक गति, २ नरक की विग्रहगति,
३ तिय चगति, ३ तिर्यञ्च की विग्रहगति,

५ मनुष्यगति, ६ मनुष्य विग्रहगति,
७ देवगति, ८ देव विग्रहगति,
६ सिद्धगति, १० सिद्ध विग्रहगति ।

७४६ —मुण्ड दस प्रकार के हैं,
यथा—१-५ श्रोत्रेन्द्रिय मुण्ड यावत् स्पर्शेन्द्रियमुण्ड, ६-६ क्रोध मुण्ड यावत् लोभ मुण्ड, १० सिरमुण्ड ।

७४७ —सख्यान—गणित दस प्रकार के हैं,
यथा—१ परिकम गणित—अनेक प्रकार की गणित का सकलन करना ।
२ व्यवहारगणित—श्रेणी आदि का व्यवहार ।
३ रज्जूगणित—क्षेत्रगणित
४ राशिगणित—त्रिराशी आदि,
५ कलासवर्ण गणित—कला अशो का समीकरण ।
६ गुणाकार गणित—सख्याओ का गुणाकार करना
७ वग गणित—समान सख्या को समान सख्या से गुणा करना यथा—दो को दो से गुणा करना ।
८ घन गणित—समान सख्या को समान सख्या से दो वार गुणा करना, यथा—दो का घन आठ, दो को दो से गुणा किया तो हुये चार और चार को चार गुणा किया तो हुये सोलह ।
६ वर्ग-वर्ग गणित—वर्ग का वग से गुणा करना, यथा—दो का वर्ग चार और चार का वर्ग सोलह । यह वर्ग-वर्ग हैं ।

१० कल्प गणित—छेद गणित करके काष्ठ का करवत से छेदन करना।

७४८ —प्रत्याख्यान दश प्रकार के हैं,

यथा—१ अनागत प्रत्याख्यान—भविष्य मे तप करने से आचार्यादि की सेवा मे बाधा आने की सम्भावना होने पर पहले तप कर लेना।

२ अतिक्रान्त प्रत्याख्यान—आचार्यादि की सेवा म किसी प्रकार की बाधा न आवे—इस सकल्प से जो तप अतीत मे नही किया जा सका उस तप को वर्तमान मे करना।

३ कोटी सहित प्रत्याख्यान—एक तप के अन्त में दूसरा तप आरम्भ कर देना।

४ नियत्रित प्रत्याख्यान—पहले से यह निश्चित कर लेना कि कैसी भी परिस्थिति हो किन्तु मुझे अमुक दिन अमुक तप करना ही है।

५ सागार प्रत्याख्यान—जो तप आगार सहित किया जाय।

६ अनागार प्रत्याख्यान—जिस तप में "महत्तरागारेण" आदि आगार न रखे जाय।

७ परिमाण कृत प्रत्याख्यान—जिस तप मे दत्ति, कवल, घर और भिक्षा का परिमाण करना।

८ निरवशेप प्रत्याख्यान—सर्व प्रकार के अशनादि का त्याग करना।

९ सांकेतिक प्रत्याख्यान—अंगुष्ठ मुष्टि आदि के संकेत से प्रत्याख्यान करना।

१० अद्धा प्रत्याख्यान—नोकारसी, पोरसी आदि काल विभाग से प्रत्याख्यान करना।

७४६ समाचारी दस प्रकार की हैं,

यथा—१ इच्छाकार समाचारी—स्वेच्छापूर्वक जो क्रिया की जाय और उसके लिए गुरु से आज्ञा प्राप्त करली जाय।

२ मिच्छाकार समाचारी—मेरा दुष्कृत मिथ्या हो इस प्रकार की क्रिया करना।

३ तथाकार समाचारी—आपका कहना यथार्थ है इस प्रकार कहना।

४ आवश्यिका समाचारी—आवश्यक कार्य है ऐसा कहकर बाहर जाना।

५ नैषेधकी समाचारी—बाहर से आने के बाद मे अब मैं गमनागमन बन्द करता हूँ ऐसा कहना।

६ आपृच्छना समाचारी—सभी क्रियायें गुरु को पूछ कर के करना।

७ प्रतिपृच्छा समाचारी—पहले जिस क्रिया के लिए गुरु की आज्ञा प्राप्त न हुई हो और उसी प्रकार की क्रिया करना आवश्यक हो तो पुन गुरु आज्ञा प्राप्त करना।

८ छदना समाचारी—लायी हुई भिक्षा मे से किसी को कुछ आवश्यक हो तो "लो" ऐसा कहना।

९ निमन्त्रणा समाचारी—मैं आपके लिए आहारादि लाऊँ ? इस प्रकार गुरु से पूछना।

१० उपसपदा समाचारी—ज्ञानादि की प्राप्ति के लिए गच्छ छोडकर अन्य साधु के आश्रय मे रहना।

७५० श्रमण भगवान महावीर छद्मस्थ काल की अंतिम रात्रि मे ये दश महास्वप्न देखकर जागृत हुये, यथा—१ प्रथम स्वप्न मे एक महा भयकर जाज्वल्यमान ताड जितने लम्बे पिशाच को देखकर जागृत हुए।

२ द्वितीय स्वप्न मे एक श्वेत पखो वाले महा पुस्कोकिल को देखकर जागृत हुये,

३ तृतीय स्वप्न मे एक विचित्र रग की पाखो वाले महा पुस्कोकिल को देखकर जागृत हुये,

४ चौथे स्वप्न मे—सव रत्नमय मोटी मालाओ की एक जोडी को देखकर जागृत हुये,

५ पाचवे स्वप्न मे श्वेत गायो के एक समूह को देखकर जागृत हुये,

६ छठे स्वप्न मे कमल फूलो से आच्छादित एक महान पद्म सरोवर को देखकर जागृत हुये,

७ सातवें स्वप्न मे—एक सहस्र तरगी महासागर को अपनी भुजाओ से तिरा हुआ जानकर जागृत हुये।

८ आठवें स्वप्न मे एक महान् तेजस्वी सूर्य को देखकर जागृत हुये।

९ नव मे स्वप्न मे एक महान् मानुषोत्तर पवत को वैडूर्यमणिवर्ण वाली अपनी आँतो से परिवेष्टित देखकर जागृत हुए।

१० दसवें स्वप्न मे महान् मेरु पवत की चूलिका पर स्वय को सिहासनस्थ देखकर जागृत हुए।

दस स्वप्नो का फल

१ प्रथम स्वप्न मे ताल पिशाच को पराजित देखने का अर्थ यह है कि—भगवान महावीर ने मोहनीय कर्म को समूल नष्ट कर दिया।

२ द्वितीय स्वप्न मे श्वेत पाखो वाले पुस्कोकिल को देखने का अथ यह है कि भगवान महावीर शुक्ल ध्यान मे रमण कर रहे थे।

३ तृतीय स्वप्न मे विचित्र रँग की पङ्खो वाले पुस्कोकिल को देखने का अर्थ यह है कि भगवान महावीर ने स्व समय और पर समय के प्रतिपादन से चित्रविचित्र द्वादशाङ्गरूप गणिपिटक का सामान्य कथन किया, विशेष कथन किया, प्ररूपण किया,

युक्ति पूवक क्रियाओ के स्वरूप का दर्शन निदर्शन किया।

यथा—आचाराङ्ग यावत् दृष्टिवाद।

४ चतुथ स्वप्न मे सव रत्नमय माला युगल को देखने का अथ यह है कि श्रमण भगवान महावीर ने दो प्रकार का धम कहा—

यथा—आगार धम और अणगार धम

५ पाँचवे स्वप्न मे श्वेत गो-वग को देखने का अथ यह है कि श्रमण भगवान महावीर के चार प्रकार का सघ था।

यथा—१ श्रमण, २ श्रमणिया, ३ श्रावक, ४ श्राविकायें।

६ छठे स्वप्न मे पद्म सरोवर को देखने का अथ यह है कि श्रमण भगवान महावीर ने चार प्रकार के देवो का प्रतिपादन किया। यथा—भवनपति २ वाणव्यन्तर, ३ ज्योतिषी ४ वैमानिक।

७ सातवे स्वप्न मे सहस्रतरगी सागर को भुजाओ स तिरने का अथ यह है कि श्रमण भगवान महावीर ने अनादि अनन्त दीघ माग वाली गति रूप विकट भवाटवी को पार किया।

८ आठवे स्वप्न मे तेजस्वी सूर्य को देखने का अर्थ यह है कि श्रमण भगवान महावीर को अनन्त ज्ञान अनन्त दर्शन उत्पन्न हुआ।

९ नव मे स्वप्न मे आंतो से परिवेष्टित मानुपोत्तर पर्वत को देखने का अर्थ यह है कि इस लोक के देव मनुष्य और असुरो मे श्रमण भगवान महावीर की कीर्ति एव प्रशसा इस प्रकार फैल रही है कि श्रमण भगवान महावीर सर्वज्ञ सर्वदर्शी सव-सशयोच्छेदक एव जगद्वत्सल हैं।

दसवे स्वप्न मे चूलिका पर स्वय को सिंहासनस्थ देखने का अर्थ यह है कि श्रमण भगवान महावीर देव मनुष्यो और असुरो की परिपद मे केवली प्रज्ञप्त धर्म का समान्य रूप से कथन करते हैं यावत् समस्त नयो को युक्ति पूर्वक समझाते हैं।

७८१ सराग सम्यग्दशन दम प्रकार का है,

१ निसगरुचि, जो दूसरे का उपदेश सुने विना स्वमति से सवज्ञ कथित सिद्धान्तो पर श्रद्धा करे,

२ उपदेश रुचि--जो दूसरो के उपदेश से सर्वज्ञ प्रतिपादित मिद्धान्तो पर श्रद्धा करे,

३ आज्ञारुचि—जो केवल आचाय या सद्गुरु के कहने से सर्वज्ञ कथित मूत्रो पर श्रद्धा करे,

४ मूत्र रुचि—जो सूत्र शास्त्र वाच कर श्रद्धा करे,

५ वीजरुचि—जो एक पद के ज्ञान से अनेक पदो को समझ लें।

६ अभिगम रुचि—जो शास्त्र को अर्थ सहित समझे,

७ विस्तार रुचि—जो द्रव्य और उनके पर्यायो को

युक्ति पूवक क्रियाओ के स्वरूप का दर्शन निदर्शन किया ।

यथा—आचाराङ्ग यावत् दृष्टिवाद ।

४ चतुथ स्वप्न मे सव रत्नमय माला युगल को देखने का अथ यह है कि श्रमण भगवान महावीर ने दो प्रकार का धम कहा—

यथा—आगार धम और अणगार धम

५ पाँचवे स्वप्न मे श्वेत गो–वग को देखने का अर्थ यह है कि श्रमण भगवान महावीर के चार प्रकार का सघ था ।

यथा—१ श्रमण, २ श्रमणियां, ३ श्रावक, ४ श्राविकायें ।

६ छठे स्वप्न मे पद्म सरोवर को देखने का अथ यह है कि श्रमण भगवान महावीर ने चार प्रकार के देवो का प्रतिपादन किया । यथा—भवनपति २ वाणव्यन्तर, ३ ज्योतिषी ४ वैमानिक ।

७ सातवें स्वप्न मे सहस्रतरगी सागर को भुजाओ से तिरने का अथ यह है कि श्रमण भगवान महावीर ने अनादि अनन्त दीघ माग वाली गति रूप विकट भवाटवी को पार किया ।

८ आठवें स्वप्न मे तेजस्वी सूय को देखने का अर्थ यह है कि श्रमण भगवान महावीर को अनन्त ज्ञान अनन्त दर्शन उत्पन्न हुआ ।

९ नव मे स्वप्न मे आंतो से परिवेष्टित मानुपोत्तर पर्वत को देखने का अर्थ यह है कि इस लोक के देव मनुष्य और असुरो मे श्रमण भगवान महावीर की कीर्ति एव प्रशसा इस प्रकार फैल रही है कि श्रमण भगवान महावीर सर्वज्ञ सर्वदर्शी सर्व-सशयोच्छेदक एव जगद्वत्सल हैं ।

दसवे स्वप्न मे चूलिका पर स्वय को सिंहासनस्थ देखने का अर्थ यह है कि श्रमण भगवान महावीर देव मनुष्यो और असुरो की परिपद मे केवली प्रज्ञप्त धम का समान्य रूप से कथन करते हैं यावत् समस्त नयो को युक्ति पूर्वक समझाते हैं ।

७५१ सराग सम्यग्दर्शन दस प्रकार का है,

१ निसगरुचि, जो दूमरे का उपदेश सुने विना स्वमति से सवज्ञ कथित सिद्धान्तों पर श्रद्धा करे,

२ उपदेश रुचि--जो दूसरो के उपदेश से सर्वज्ञ प्रतिपादित मिद्धान्तो पर श्रद्धा करे,

३ आज्ञारुचि—जो केवल आचार्य या सद्गुरु के कहने से सवज्ञ कथित सूत्रो पर श्रद्धा करे,

४ सूत्र रुचि—जो सूत्र शास्त्र वाच कर श्रद्धा करे,

५ वीजरुचि—जो एक पद के ज्ञान से अनेक पदो को समझ लें ।

६ अभिगम रुचि—जो शास्त्र को अथ सहित समझे,

७ विस्तार रुचि—जो द्रव्य और उनके पर्यायो को

प्रमाण तथा नय के द्वारा विस्तार पूवक समझे,
८ क्रिया रुचि—जो आचरण मे रुचि रखे,
९ सक्षेप रुचि—जो स्वमत और परमत मे कुशल न हो किन्तु जिसकी रुचि सक्षिप्त त्रिपदी मे हो,
१० धमरुचि—जो वस्तु स्वभाव की अथवा श्रुत चारित्र रूप जिनोक्त धम की श्रद्धा करे।

दण्डक सूत्र

७५२ क—सज्ञा दस प्रकार की होती है,
यथा—१-४ आहार सज्ञा यावत् परिग्रह सज्ञा,
५-८ क्रोध सज्ञा यावत् लोभ सज्ञा,
९ लोक सज्ञा, १० ओघ सज्ञा,
ख—नैरयिको मे दस प्रकार की सज्ञायें होती हैं, इसी प्रकार वैमानिक पर्यन्त दस सज्ञायें हैं।

७५३ नैरयिक दस प्रकार की वेदना का अनुभव करते हैं,
यथा—शीत वेदना, २ उष्णवेदना, ३ क्षुधा वेदना, ४ पिपासा वेदना, ५ कण्डुवेदना, ६ पराधीनता, ७ भय, ८ शोक, ९ जरा, १० व्याधि।

७५४ दस पदार्थो छद्मस्थ पूण रूप से न जानता है और न देखता है,
यथा—१-८ धर्मास्तिकाय यावत् वायु ९ यह पुरुष जिन होगा या नही, १० यह पुरुष सब दु खो का अन्त करेगा या नही ?

ख—इन्हीं दस पदार्थों को सर्वज्ञ सर्वदर्शी पूर्ण रूप से जानते हैं और देखते हैं।

७५१ क—दशा दस हैं

यथा—१ कर्मविपाक दशा, २ उपासक दशा, ३ अंतकृद् दशा, ४ अनुत्तरोपपातिकदशा, ५ आचार दशा, ६ प्रश्नव्याकरण दशा, ७ बंध दशा, ८ दोगृद्धि दशा, ९ दीर्घ दशा, १० संक्षेपित दिशा।

ख—कर्म विपाक दशा के दस अध्ययन हैं,

यथा—१ मृगापुत्र २ गोत्रास, ३ अण्ड, ४ शकट, ५ ब्राह्मण ६ नंदिसेण, ७ सौरिक, ८ उदुंबर, ९ सहसोदाह—आमरक, १० लिच्छवी कुमार।

ग—उपासक दशा के दस अध्ययन हैं,

यथा—१ आनन्द, २ कामदेव, ३ चुलिनीपिता, ४ सुरादेव, ५ चुल्लशतक, ६ कुण्डकोलिक, ७ शकडालपुत्र, ८ महाशतक, ९ नंदिनीपिता, १० सालेयिका पिता।

घ—अन्तकृद्दशा के दस अध्ययन हैं,

यथा—१ नमि, २ मातंग, ३ सोमिल, ४ रामगुप्त, ५ सुदर्शन, ६ जमाली, ७ भगाली, ८ किंकर्म, ९ पल्यंक, १० अंबडपुत्र[1]।

---

१ क—मूल पाठ में 'फाल" नाम अधिक है।

ख—वर्तमान में उपलब्ध अन्तकृद्दशा के दस अध्ययन इन अध्ययनों से भिन्न हैं।

ङ—अनुत्तरोपपातिक दशा के दस अध्ययन हैं,
यथा—१ ऋषिदास, २ धन्ना, ३ सुनक्षत्र ४ कार्तिक, ५ सस्थान, ६ शालिभद्र, ७ आनन्द, ८ तेतली, ९ दशार्णभद्र, १० अतिमुक्त[1]।

च—आचार दशा (दशा श्रुतस्कंध) के दस अध्ययन हैं,
यथा—१ बीस असमाधि स्थान, २ इक्कीस शबल दोष, ३ तेतीस आशातना, ४ आठ गणिसम्पदा, ५ दस चित्त समाधि स्थान, ६ इग्यारह श्रावक प्रतिमा, ७ बारह भिक्षु प्रतिमा, ८ पर्युषण कल्प, ९ तीस मोहनीय स्थान, १० आजातिस्थान।[2]

छ—प्रश्न व्याकरण दशा के दस अध्ययन हैं,
यथा—१ उपमा २ सख्या, ३ ऋषि भाषित, ४ आचार्य भाषित, ५ महावीर भाषित, ६ क्षौमिक प्रश्न, ७ कोमल प्रश्न, ८ आदर्श प्रश्न, ९ अंगुष्ठ प्रश्न, १० बाहु प्रश्न।[3]

ज—बन्ध दशा के दस अध्ययन हैं,
यथा—१ बंध २ मोक्ष, ३ देवर्धि, ४ दशार-

---

१ वर्तमान में उपलब्ध अनुत्तरोपपातिक दशा के दस अध्ययनों में कुछ अध्ययन तो ये ही हैं और कुछ अध्ययन भिन्न हैं।

२ सम्मूर्छन, गर्भ और उपपात से जन्म स्थान।

३ वर्तमान में उपलब्ध प्रश्न व्याकरण में ये दस अध्ययन नहीं हैं किन्तु पाँच आश्रव द्वार और पाँच संवर द्वार हैं।

मङ्गलिक, ५ आचार्य विप्रतिपत्ति, ६ उपाध्याय विप्रति पत्ति, ७ भावना, ८ विमुक्ति, ९ शास्वत, १० कर्म[1]।

झ—द्विगृद्धि दशा के दस अध्ययन हैं,

यथा—१ वात, २ विवात, ३ उपपात, ४ सुक्षेत्र कृष्ण[2] ५ बियालीस स्वप्न, ६ तीस महास्वप्न, ७ बहत्तर स्वप्न, ८ हार, ९ राम, १० गुप्त[3]।

ञ—दीघ दशा के दस अध्ययन हैं,

यथा—१ चन्द्र, २ सूय, ३ शुक्र, ४ श्री देवी, ५ प्रभावती, ६ द्वीप समुद्रोपपत्ति, ७ बहुपुत्रिका, ८ मदर ९ स्थविर सभूत विजय, १० स्थविर पक्ष उश्वास निश्वास[4]।

ट—सक्षपिक दशा के दस अध्ययन हैं,

१ क्षुल्लिका विमान प्रविभक्ति, २ महती विमान

---

१ यह आगम उपलब्ध नहीं है।

२ यह आगम उपलब्ध नहीं है।

३ क—प्राचीन प्रतियो मे सुक्षेत्र और कृष्ण भिन्न-भिन्न नाम हैं किन्तु आगमोदय समिति की प्रति मे सुक्षेत्र कृष्ण एक नाम हैं।

ख—प्राचीन प्रतियो मे "रामगुप्त" एक नाम है किन्तु आगमोदय समिति की प्रति मे भिन्न-भिन्न नाम हैं।

४ यह अग उपलब्ध नही हैं।

प्रविभक्ति, ३ अग चूलिका, ४ वग चूलिका, ५ विवाह चूलिका, ६ अरुणोपपात, ७ वरुणोपपात, ८ गरुलोपपात, ९ वेलधरोपपात, १० वैश्रमणोपपात[1]।

७५६ क—दस सागरोपम क्रोडाक्रोडी प्रमाण उत्सर्पिणी काल है।
ख—दस सागरोपम क्रोडा-क्रोडी प्रमाण अवसर्पिणी काल है।

दण्डक सूत्र

७५७ क—नैरयिक दस प्रकार के हैं,
यथा—१ अनन्तरोपपन्नक,
२ परपरोपन्नक,
३ अनन्तरावगाढ,
४ परपरावगाढ,
५ अनन्तराहारक,
६ परपराहारक
७ अनन्तर पर्याप्त,
८ परम्परा पर्याप्त,
९ चरिम, १० अचरिम।

इसी प्रकार वैमानिक पर्यन्त सभी दस प्रकार के हैं।
ख—चौथी पक प्रभा पृथ्वी मे दस लाख नरकावास हैं।

---

१ यह अग उपलब्ध नहीं है।

ग—रत्नप्रभा पृथ्वी मे नैरयिको की जघन्य स्थिति, दस हजार वर्ष की है।

घ—चौथी पक प्रभा पृथ्वी मे नैरयिको की उत्कृष्ट स्थिति दस सागरोपम की है।

ङ—पाँचवी धूम प्रभा पृथ्वी मे नैरयिको की जघन्य स्थिति दस सागरोपम की है।

च—असुरकुमारो की जघन्य स्थिति दस हजार वर्ष की है। इसी प्रकार स्तनित कुमार पर्यन्त दस हजार वर्ष की स्थिति हैं।

छ—बादर वनस्पतिकाय की उत्कृष्ट स्थिति दस हजार वर्ष की है।

ज—वाणव्यन्तर देवो की जघन्यस्थिति दस हजार वर्ष की है।

झ—ब्रह्मलोककल्प मे देवो की उत्कृष्ट स्थिति दस सागरोपम की है।

ञ—लातककल्प मे देवो की जघन्य स्थिति दशसागरोपम की है।

७५८ —दस कारणो से जीव अगामी भव मे भद्रकारक कर्म करता है।

यथा—१ अनिदानता—धर्माचरण के फल की अभिलाषा न करना।

२ दृष्टिसपन्नता—सम्यग्दृष्टि होना।

३ योगवाहिता—तप का अनुष्ठान करना।

४ क्षमा—क्षमा धारण करना।

५ जितेन्द्रियता—इन्द्रिया पर विजय प्राप्त करना।

६ अमायिता—कपट रहित होना।

७ अपार्श्वस्थता—शिथिलाचारी न होना।

८ सुश्रामण्यता—सुसाधुता।

९ प्रवचनवात्सल्य—द्वादशाङ्ग अथवा सघ का हित करना।

१० प्रवचनोद्भावना—प्रवचन की प्रभावना करना।

७५९ —आशसा प्रयाग[1] दश प्रकार के हैं,

यथा—१ इहलोक आशसा प्रयोग—मैं अपने तप के प्रभाव से चक्रवर्ती आदि होऊ।

२ परलोक आशसा प्रयोग—मैं अपने तप के प्रभाव से इन्द्र अथवा सामान्य देव बनू,

३ उभयलोक आशसा प्रयोग—मैं अपने तप के प्रभाव से इस भव मे चक्रवर्ती बनू और परभव मे इन्द्र बनू।

४ जीवित आशसा प्रयोग—मैं चिरकाल तक जीवू,

५ मरण आशसा प्रयोग—मेरी मृत्यु शीघ्र हो,

६ काम आशसा प्रयोग—मनोज्ञ शब्द आदि मुझे

---

१ आशसा प्रयोग-आशा करना अर्थात नियाणा करना।

प्राप्त हो,

७ भोग आशसा प्रयोग—मनोज्ञ गध आदि मुझे प्राप्त हो,

८ लाभ आशसा प्रयोग—कीर्ति आदि प्राप्त हो,

९ पूजा आशसा प्रयोग—पुष्पादि से मेरी पूजा हो,

१० सत्कार आशसा प्रयोग—श्रेष्ठ वस्त्रादि से मेरा सत्कार हो।

७६० —धर्म दश प्रकार के हैं,

यथा—१ ग्राम धर्म, २ नगर धर्म, ३ राष्ट्र धर्म, ४ पाषड धर्म, ५ कुल धर्म ६ गण धर्म, ७ सघ धर्म, ८ श्रुत धर्म, ९ चारित्र धर्म, १० अस्तिकाय धर्म।

७६१ —स्थविर दश प्रकार के हैं,

यथा—१ ग्राम स्थविर, २ नगर स्थविर, ३ राष्ट्र स्थविर, ४ प्रशास्तृ स्थविर, ५ कुल स्थविर, ६ गण स्थविर, ७ सघ स्थविर, ८ जाति स्थविर, ९ श्रुत स्थविर, १० पर्याय स्थविर।

७६२ —पुत्र दश प्रकार के हैं,

यथा—१ आत्मज—पिता से उत्पन्न,

२ क्षेत्रज—माता से उत्पन्न किन्तु पिता के वीर्य से उत्पन्न न होकर अन्य पुरुष के वीर्य से उत्पन्न,

३ दत्तक—गोद लिया हुआ पुत्र,

४ विनयित शिष्य—पढ़ाया हुआ,

५ औरस—जिस पर पुत्र जैसा स्नेह हो,

६ मौखर—किसी को प्रसन्न रखने के लिए अपने आपको पुत्र कहने वाला,

७ शौंडीर—जो शौर्य से किसी शूर पुरुष के पुत्र रूप में स्वीकार किया जाय,

८ संवर्धित—जो पाल पोष कर बड़ा किया जाय,

९ औपयाचितक—देवता की आराधना से उत्पन्न पुत्र,

१० धर्मान्तेवासी—धर्माराधना के लिए समीप रहने वाला।

७६३ —केवली के दश उत्कृष्ट हैं,

यथा—१ उत्कृष्ट ज्ञान, २ उत्कृष्ट दर्शन, ३ उत्कृष्ट चारित्र, ४ उत्कृष्ट तप, ५ उत्कृष्ट वीर्य, ६ उत्कृष्ट क्षमा, ७ उत्कृष्ट निर्लोभता, ८ उत्कृष्ट सरलता, ९ उत्कृष्ट कोमलता, १० उत्कृष्ट लघुता।

७६४ —समय क्षेत्र में दश कुरुक्षेत्र हैं,

यथा—(क) पांच देव कुरु, पांच उत्तर कुरु,

(ख) इन दश कुरु क्षेत्रों में दश महावृक्ष हैं।

यथा—१ जम्बू सुदर्शन, २ धातकी वृक्ष, ३ महाधातकी वृक्ष, ४ पद्म वृक्ष, ५ महा पद्म वृक्ष, ६-१० कूटशाल्मली वृक्ष।

ग—इन दश कुरु क्षेत्रो मे दश महर्धिक देव रहते हैं, यथा—१ जम्बूद्वीप का अधिपतिदेव-अनाहृत, २ सुदर्शन, ३ प्रिय दर्शन, ४ पौंडरिक, ५ महा पौंडरिक, ६-१० पाच गरुड (वेणुदेव) देव हैं।

७६५ क—दश लक्षणो मे पूर्ण दुषम काल जाना जाता है, यथा—१ अकाल (चौमासे के अतिरिक्त काल) मे वर्षा हो,
२ काल (चातुर्मास) मे वर्षा न हो,
३ असाधु की पूजा हो, ४ साधु की पूजा न हो,
५ माता पिता आदि का विनय न करे,
६-१० अमनोज्ञ शब्द यावत् स्पर्श।

ख—दश कारणो से पूर्ण सुषमकाल जाना जाता है, यथा—१ अकाल मे वर्षा न हो, शेष पूर्व कथित से विपरीत यावत् मनोज्ञ स्पर्श।

७६६ —सुषम-सुषम काल मे दश कल्पवृक्ष युगलियाओं के उपभोग के लिए शीघ्र उत्पन्न होते हैं।
यथा—१ मत्तागक—स्वादु पेय की पूर्ति करने वाले,
२ भृतांग—अनेक प्रकार के भाजनो की पूर्ति करने वाले,
३ तूर्यांग—वाद्यो की पूर्ति करने वाले,
४ दीपांग—सूर्य के अभाव मे दीपक के समान प्रकाश देने वाले,

५ ज्योतिरंग—सूर्य और चन्द्र के समान प्रकाश देने वाले,

६ चित्रांग—विचित्र पुष्प (माला) देने वाले,

७ चित्र रसांग—विविध प्रकार के भोजन देने वाले,

८ मण्यंग—मणि, रत्न आदि आभूषण देने वाले,

९ गृहाकार—घर के समान स्थान देने वाले,

१० अनग्न—वस्त्रादि की पूर्ति करने वाले।

७६७ क—जम्बू द्वीप के भरत क्षेत्र मे अतीत उत्सर्पिणी मे दश कुलकर थे,

यथा—१ शतजल, २ शतायु, ३ अनन्तसेन, ४ अमितसेन, ५ तर्कसेन, ६ भीमसेन, ७ महा भीमसेन, ८ दृढरथ, ९ दशरथ, १० शतरथ।

ख—जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र मे आगामी उत्सर्पिणी मे दश कुलकर होंगे,

यथा—१ सीमकर, २ सीमधर, ३ खेमकर, ४ खेमधर, ५ विमलवाहन, ६ समति, ७ प्रतिश्रुत ८ दृढधनु, ९ दश धनु, १० शत धनु।

७६८ क—जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत से पूर्व मे सीता महानदी के दोनो किनारो पर दश वक्षस्कार पर्वत हैं,

यथा—१ माल्यवन्त, २ चित्रकूट, ३ विचित्रकूट, ४ ब्रह्मकूट, ५-१० यावत् सोमनस।

ख—जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत से पश्चिम मे शीतोदा महानदी के दोनो किनारो पर दश वक्षस्कार पर्वत हैं, यथा—विद्युत्प्रभ यावत गधमादन ।

ग-च—इसी प्रकार धातकी खण्ड द्वीप के पूर्वार्ध मे भी दश वक्षस्कार पवत हैं यावत् पुष्करवर द्वीपार्ध के पश्चिमाध मे भी दश वक्षस्कार पवत हैं ।

७६९ क—दश कल्प इन्द्र वाले हैं,
यथा—१-८ सोधर्म यावत सहस्रार, ९ प्राणत, १० अच्युत ।

ख—इन दश कल्पो मे दश इन्द्र हैं,
यथा—१ शक्रेन्द्र, २ ईशानेन्द्र, ३-१० यावत् अच्युतेन्द्र ।

ग—इन दश इन्द्रो के दश पारियानिक विमान हैं ।
यथा—१ पालक, २ पुष्पक यावत्, ३-९ विमलवर, १० सर्वतोभद्र ।

७७० —दशमिका भिक्षु प्रतिमा की एक सो दिन से और ५५० भिक्षा (दत्ति) से सूत्रानुसार यावत् आराधना होती है ।

७७१ क—ससारी जोव दश प्रकार के हैं,
यथा—१ प्रथमसमयोत्पन्न एकेन्द्रिय,
२ अप्रथमसमयोत्पन्न एकेन्द्रिय,
३-१० यावत् अप्रथम समयोत्पन्न पचेन्द्रिय

७ इसी प्रकार श्रमण—ब्राह्मण जब तेजोलेश्या छोड़ता है तो आशातना करने वाले के शरीर पर छाले पडकर फूट जाते हैं, पश्चात् छोटे छोटे छाले पैदा होकर भी फूट जाते है तब वह भस्म हो जाता है।

८ इसी प्रकार देवता जब तेजोलेश्या छोड़ता है तो आशातना करने वाला पूर्ववत् भस्म हो जाता है।

९ इसी प्रकार देवता और श्रमण—ब्रह्मण जब एक साथ तेजोलेश्या छोड़ता है तो आशातना करने वाला पूर्ववत् भस्म हो जाता है।

१० कोई तेजोलेश्या वाला किसी श्रमण की आशातना करने के लिये उस पर तेजोलेश्या छोड़ता है वह उसका कुछ भी अनर्थ नहीं कर सकती है वह तेजोलेश्या इधर से उधर ऊँची नीची होती है और उस श्रमण के चारों ओर घूमकर आकाश में उछलती है और वह तेजोलेश्या छोड़ने वाले की ओर मुड़कर उसे ही भस्म कर देती है जिस प्रकार गोशालक की तेजोलेश्या से गोशालक ही मरा किन्तु भगवान महावीर का कुछ भी नहीं बिगड़ा।

७७७ —आश्चर्य दस प्रकार के हैं,

यथा—१ उपसर्ग—भगवान महावीर की केवली अवस्था में भी गोशालक ने उपसर्ग किया।

२ गर्भहरण—हरिण गमेषी देव ने भगवान महावीर

के गर्भ को देवानन्दा की कुक्षी से लेकर त्रिशला माता की कुक्षी मे स्थापित किया।

३ स्त्री तीर्थङ्कर—भगवान मल्लीनाथ स्त्रीलिङ्ग (वेद) में तीर्थङ्कर हुए।

४ अभावित परिपदा—केवल ज्ञान प्राप्त हो जाने के पश्चात् भगवान महावीर की देशना निष्फल गई किसी ने धम स्वीकार नही किया।

५ कृष्ण का अपरकका गमन, कृष्ण वासुदेव द्रौपदी को लाने के लिए अपरकका नगरी गये।

६ चन्द्र सूर्य का आगमन—कौशाम्बि नगरी मे भगवान महावीर की वन्दना के लिए शास्वत विमान सहित चन्द्र-सूर्य आये।

७ हरिवश कुलोत्पत्ति—हरिवप क्षेत्र के युगलिये का भरत क्षेत्र मे आगमन हुआ और उससे हरिवश कुल की उत्पत्ति हुई। युगलिये का निरुपक्रम आयु घटा और उसकी नरक मे उत्पत्ति हुई।

८ चमरोत्पात—चमरेन्द्र का सौधर्म देवलोक मे जाना।

९ एक सौ आठ सिद्ध—उत्कृष्ट अवगाहना वाले एक समय मे एक सौ आठ सिद्ध हुए[1]।

---

१ मध्यम अवगाहना वाले तो एक सौ आठ सिद्ध होते है, किन्तु उत्कृष्ट अवगाहना वाले केवल दो ही सिद्ध होते हैं।

१० असंयत पूजा—आरम्भ और परिग्रह के धारण करने वाले ब्राह्मणों की साधुओं के समान पूजा हुई।[1]

७७८ क—इस रत्नप्रभा पृथ्वी का रत्नकाण्ड दस सौ (एक हजार) योजन का चौडा है।

ख—इस रत्नप्रभा पृथ्वी का वज्र काण्ड दस सौ (एक हजार) योजन का चौडा है।

ग—इसी प्रकार—३ वैडूर्य काण्ड, ४ लोहिताक्ष काण्ड, ५ मसारगल्ल काण्ड, ६ हंसगर्भ काण्ड, ७ पुलक काण्ड, ८ सौगन्धिक काण्ड, ९ ज्योतिरस काण्ड, १० अंजन काण्ड, ११ अंजन पुलक काण्ड, १२ रजत काण्ड, १३ जलातरूप काण्ड, १४ अंक काण्ड, १५ स्फटिक काण्ड १६ रिष्ट काण्ड ये सब रत्न काण्ड के समान दस सौ (एक हजार) योजन के चौडे हैं।

७७९ क—सभी द्वीप समुद्र दस सौ (एक हजार) योजन के गहरे हैं।

ख—सभी महाद्रह दस योजन गहरे हैं।

ग—सभी सलिल कुण्ड (प्रताप कुण्ड-प्रभव-कुण्ड) दस योजन गहरे हैं।

---

१ ये दस आश्चर्य अनन्त काल के पश्चात् इस हुंडा अवसर्पिणी में हुये।

घ—शीता और शीतोदा नदी के मूल मुख दस-दस योजन गहरे हैं।

७८० क—कृत्तिका नक्षत्र चन्द्र के सर्व बाह्य मण्डल से दसवें मण्डल मे भ्रमण करता है[1]।

ख—अनुराधा नक्षत्र चन्द्र के सर्व आभ्यन्तर मण्डल से दसवें मण्डल मे भ्रमण करता है[2]।

७८१ ज्ञान की वृद्धि करने वाले दस नक्षत्र है,

यथा—१ मृगशिरा, २ आर्द्रा, ३ पुष्य, ४-६ तीन पूर्वा[3], ७ मूल, ८ अश्लेषा, ९ हस्त, १० चित्रा।

७८२ क—चतुष्पद स्थलचर तिर्यञ्च पचेन्द्रियो की दस लाख कुल कोटी हैं।

ख—उरपरिसर्प स्थलचर तिर्यञ्च पचेन्द्रियो की दस लाख कुल कोटी हैं।

७८३ क-च—दस स्थानो मे बद्ध पुद्गल जीवो ने पाप कर्म रूप मे ग्रहण किये, ग्रहण करते हैं और ग्रहण करेंगे।

यथा—प्रथम समयोत्पन्न एकेन्द्रिय द्वारा निर्वर्तित

---

१ कृत्तिका नक्षत्र चन्द्र के सर्व आभ्यन्तर मण्डल से छठे मण्डल मे भ्रमण करता है।

२ अनुराधा नक्षत्र चन्द्रके सर्व बाह्यमण्डल से छठे मण्डल मे भ्रमण करता है।

३ पूर्वाषाढा, पूर्वाभाद्रपद, पूर्वाफाल्गुनी।

यावत्—अप्रथमसमयोत्पन्न पचेन्द्रिय द्वारा निर्वर्तित पुद्गल जीवो ने पाप कमरूप मे ग्रहण किये, ग्रहण करते है और ग्रहण करेंगे।

इसी प्रकार चय, उपचय, बन्ध, उदीरणा, वेदना और निर्जरा के तीन-तीन विकल्प कहने चाहिए।

छ—दस प्रादेशिक स्कन्ध अनन्त है।

ज—दस प्रदेशावगाढ पुदगल अनन्त हैं।

झ—दस समय की स्थिति वाले पुदगल अनन्त हैं।

ज-ट—दस गुण वाले पुद्गल अनन्त हैं।

इसी प्रकार वर्ण, गध, रस और स्पर्श से यावत्—दस गुण रूक्ष पुद्गल अनन्त हैं।

दशवाँ अध्ययन समाप्त

स्थानाङ्ग समाप्त

परिशिष्ट

परिशिष्ट १

अनुयोग वर्गीकरण

द्रव्यानुयोग के सूत्र	४२६
चरणानुयोग के सूत्र	२१४
गणितानुयोग के सूत्र	१०९
धर्म कथानुयोग के सूत्र	५१
	योग ८००[1]

---

१ स्थानाग के मूल सूत्र ७८३ हैं किन्तु इस अनुयोग वर्गीकरण परिशिष्ट मे वर्गीकृत सूत्रो का योग ८०० हुआ है। इस अन्तर का कारण यह है कि अनुयोग वर्गीकरण तालिका क्रमाक ६, ८, १०, ११, १२, १३, १४, १५, १६ मे एक मूल सूत्र के अन्तगत जितने सूत्र हैं उनका अनुयोग के अनुसार विभाजन करके दिये हैं। विस्तृत जानकारी के लिये तालिकाओ के टिप्पण देखें।

अनुयोग वर्गीकरण तालिका

(१)

एक स्थान सूत्र १-५६ (सूत्र ५६)

उत्थानिका सूत्र १

(१) द्रव्यानुयोग—
२।७, ८, ९, १०-३८।४१-४७।५०-५१।५४।५६।—योग-४४

(२) चरणानुयोग—
३, ४।२१।३९, ४०।४८, ४९।—योग ७

(३) गणितानुयोग—
५, ६।५२।५५।—योग ४

(४) धर्मकथानुयोग—
५३।—योग १

(२)

द्वि स्थानक-प्रथम उद्देशक सूत्र ५७ ७६ (सूत्र २०)

(१) द्रव्यानुयोग—
५७, ५८, ५९।६७,६८।७०,७१।७३,७४,७५।—योग १०

(२) चरणानुयोग—
६०-६६।६९।७२।७६।—योग १०

(३)

द्विस्थानक-द्वितीय उद्देशक सूत्र ७७-८० (सूत्र ४)

(१) द्रव्यानुयोग—
७७-८०।—योग ४

(४)

द्विस्थानक-तृतीय उद्देशक सूत्र ८१-९४ (सूत्र १४)

(१) द्रव्यानुयोग—
८१, ८२, ८३।८५।९४—योग ५

(२) चरणानुयोग—
८४।—योग १

(३) गणितानुयोग—
८६-९३।—योग ८

(५)

द्विस्थानक-चतुर्थ उद्देशक सूत्र ९५-११८ (सूत्र २४)

(१) द्रव्यानुयोग—
९५,९६,९७।९९,१००, १०१।१०४,१०५,१०६।१०९।११३-
११८।—योग १६

(२) चरणानुयोग—
९८।१०२।१०७ ।—योग ३

(३) गणितानुयोग—

१०३।११०,१११।–योग ३

(४) धर्मकथानुयोग—

१०८।११२।–योग २

(६)

त्रिस्थान-प्रथम उद्देशक सूत्र ११६-१५२ (सूत्र ३४)[1]

(१) द्रव्यानुयोग—

११६[२]-१२५।१२८[३]-१३३।१३७-१४१।१४३[४]-१४७।—

---

१ यहा सूत्र संख्या ३४ है और चारो अनुयोग के सूत्रो का योग ३६ होता है। इस अन्तर का कारण यह है कि एक सूत्र के अन्तर्गत सूत्रो मे से कुछ सूत्र एक अनुयोग के होते हैं और कुछ सूत्र दूसरे अनुयोग के होते हैं, अत एक ही सूत्राक अनुयोग भेद से कई बार गिना जाता है। आगे भी ऐसा ही समझें।

२ सूत्र ११६ के अन्तर्गत ३ सूत्र हैं। इनमे से दो सूत्र प्रथम और अन्तिम द्रव्यानुयोग के हैं और एक मध्यसूत्र चरणानुयोग का है।

३ सूत्र १२८ के अन्तर्गत ६ सूत्र है। इनमे से चार सूत्र द्रव्यानुयोग के हैं। एक सूत्र चरणानुयोग का है और ४ सूत्र धर्मकथानुयोग के हैं।

४ सूत्र १४३ के अन्तर्गत ३२ सूत्र हैं। इनम से अन्तिम २ सूत्र द्रव्यानुयोग के हैं और ३० सूत्र गणितानुयोग के हैं।

१५०[1], १५१।—योग २५

(२) चरणानुयोग—
११६।१२६,१२७,१२८।१३५,१३६।१५०।१५२।—योग ८

(३) गणितानुयोग—
१४२,१४३।—योग २

(४) धर्मकथानुयोग—
१२८।१३४।—योग २

(७)

त्रिस्थान-द्वितीय उद्देशक सूत्र १५३-१६७ (सूत्र १५)

(१) द्रव्यानुयोग—
१५४।१५६।१६०।१६२-१६७।—योग ९

(२) चरणानुयोग—
१५५।१५७,१५८,१५९।१६१।—योग ५

(३) गणितानुयोग—
१५३।—योग १

---

१ सूत्र १५० के अन्तर्गत दो सूत्र हैं। इनमे से एक सूत्र द्रव्यानुयोग का है और एक सूत्र चरणानुयोग का है।

(८)

त्रिस्थान-तृतीय उद्देशक सूत्र १६८ १६० (सूत्र २३)

(१) द्रव्यानुयोग—
१७५-१७६।१८१।१८४[1]-१८७।—योग १०

(२) चरणानुयोग—
१६८-१७४।१८२।१८४।१८८।१६०।—योग ११

(३) गणितानुयोग
१८०।१८३।—योग २

(४) धर्मकथानुयोग—
१८६।—योग १

(६)

त्रिस्थान-चतुर्थ उद्देशक सूत्र १६१-२३४ (सूत्र ४४)

(१) द्रव्यानुयोग—
१६२,१६३।१६६,२००।२०७।२०६।२११।२१४,२१५,२१६।
२१६,२२०,२२१।२२४,२२५,२२६।२३२,२३३,२३४।
—योग १६

---

१ सूत्र १८४ के अन्तगत ३ सूत्र हैं। उनमे से प्रारम्भ के दो सूत्र चरणानुयोग के हैं और अतिम एक सूत्र द्रव्यानुयोग का है।

(२) चरणानुयोग—

१९१।१९४,१९५,१९६।२०१,२०२,२०३।२०६।२०८।२१०।
२१२,२१३,२१४।२१७,२१८।२२२,२२३।—योग १७

(३) गणितानुयोग--

१९७,१९८।२०४,२०५।—योग ४

(४) धर्मकथानुयोग—

२२८–२३१।—योग ४

(१०)

चतुःस्थान-प्रथम उद्देशक सूत्र २३५-२७७ (सूत्र ४३)

(१) द्रव्यानुयोग—

२३६।२३८-२४२।२४४,२४५।२४८,२४९,२५०।२५२-२६२।
२६४, २६५।२६७-२७१।२७३-२७७।—योग ३४

(२) चरणानुयोग—

२३५।२३७।२४३।२४६,२४७।२५१।२५५[1]।२६३।२६६।२७२
—योग १०

---

१ सूत्र २५५ के अन्तर्गत १४ सूत्र हैं। उनमे से प्रथम सूत्र द्रव्यानुयोग का है। शेष १३ सूत्र चरणानुयोग के हैं।

३६१।३६३।३६८,३६९,३७०।३७२।—योग १५

(३) गणितानुयोग—
३८३ ३८४।३८६।—योग ३

(४) धर्म कथानुयोग—
३८१,३८२।—योग २

(१४)

पच स्थान-प्रथम उद्देशक सूत्र ३८९-४११ (सूत्र २३)

(१) द्रव्यानुयोग—
३९०।३९३,३९४ ३९५।४०१[1]—४०६।—योग १०

(२) चरणानुयोग—
३८९।३९१,३९२।३९६-४००।४०७,४०८।४०९,—
४१०।—योग १२

(३) गणितानुयोग—
४०१।—योग १

(४) घम कथानुयोग—
४११।—योग १

---

१ सूत्र ४०१ के अन्तर्गत २ सूत्र हैं। इनमे से प्रथम सूत्र गणितानुयोग का है और द्वितीय सूत्र द्रव्यानुयोग का है।

(१५)

पच स्थान-द्वितीय उद्देशक सूत्र ४१२-४४० (सूत्र २९)

(१) द्रव्यानुयोग—
४१६।४१८,४१९।४३१।४३६।—योग ५

(२) चरणानुयोग—
४११-४१५।४१७।४१९[1]—४३०।४३२,४३३।४३७,४३८,
४३९।—योग २३

(३) गणितानुयोग—
४३४।—योग १

(४) धम कथानुयोग—
४३५।४४०।—योग २

(१६)

पच स्थान-तृतीय उद्देशक सूत्र ४४१-४७४ (सूत्र ३४)

(१) द्रव्यानुयोग—
४४१-४४४।४४८,४४९,४५०।४५२।४५४।४५६।४५८-४५९।
४६१।४६४।४६९।४७४।—योग १८

---

१ सूत्र ४१९ के अन्तर्गत ९९ सूत्र हैं। इनमे से ५ क्रिया सूत्र चरणानुयोग के हैं। शेप सूत्र द्रव्यानुयोग के हैं।

(२) चरणानुयोग—

४४३[1]।४४५,४४६,४४७।४५३।४५५।४५७।४६५

४६८।—योग ९

(३) गणितानुयोग—

४५१।४६०।४६९,४७०।४७२, ४७३ ।—योग ६

(१७)

षष्ठ स्थान— सूत्र ४७५-५४० (सूत्र ६६)

(१) द्रव्यानुयोग—

४७८, ४७९, ४८०।४८२।४८३,४८४।४८६,४८७,४८८।

४९०-४९५।४९७।४९९।५०१,५०२।५०४।५०५-५१०।५१२।

५१३।५२४, ५२५,५२६।५३२-५३७।५४०।—योग ३८

(२) चरणानुयोग—

४७५, ४७६,४७७।४८५।४८९।४९६।५००।५०१।५११।

५१४।५२१।५२७-५३०।५३८।—योग १६

(३) गणितानुयोग—

४८१।४८८।५१५,५१६,५१७।५२२,५२३।५३९।—योग ८

(४) धर्मकथानुयोग—

५१८, ५१९, ५२०।५३१।—योग ४

---

१ सूत्र ४४३ के अन्तगत ३ सूत्र है। इनमे से प्रथम सूत्र द्रव्यानुयोग का है। अन्तिम दो सूत्र चरणानुयोग के ह।

झ—भ० महावीर ने श्रमण निर्ग्रन्थो के लिए पांच अभिग्रह प्रशस्त एव सदा आचरण योग्य कहे हैं। यथा—

१ अरसाहारी, २ विरसाहारी, ३ अताहारी,
४ प्रान्ताहारी, ५ रुक्षाहारी।

ञ—भ० महावीर ने श्रमण निर्ग्रन्थो के लिए पांच अभिग्रह प्रशस्त एव सदा आचरण योग्य कहे हैं। यथा—

१ अरसजीवी, २, विरसजीवी, ३ अतजीवी,
४ प्रान्तजीवी, ५ रुक्षजीवी।

ट—भ० महावीर ने श्रमण निर्ग्रन्थो के लिए पांच अभिग्रह प्रशस्त एव सदा आचरण योग्य कहे हैं। यथा—

१ स्थानातिपद—कायोत्सग करने वाला मुनि।

२ उत्कटुकासनिक—उकडु आसन बैठने वाला मुनि।

३ प्रतिमास्थायी—'एक रात्रिकी' आदि प्रतिमाओ को धारण करने वाला मुनि।

४ वीरासनिक—वीरासन से बैठने वाला मुनि।

५ नैषधिक—पालथी लगाकर बैठन वाला मुनि।

ठ—भ० महावीर ने श्रमण निग्र थो के लिए पांच अभिग्रह सदा प्रशस्त एव आचरण योग्य कहे हैं। यथा—

१ दण्डायतिक—सीधे पैर कर सोने वाला मुनि।

२ लगडशायी—आंके बांके पैर व कमर कर सोने वाला मुनि।

३ आतापक—शीत या ग्रीष्म की आतापना लेने वाला मुनि।

४ अपावृतक—वस्त्र रहित रहने वाला मुनि।

५ अकण्डूयक—खाज न खुजाने वाला मुनि।

३६७ क—पांच कारणो से श्रमण निग्र न्थ की महानिर्जरा और महापयवसान—मुक्ति होती है। यथा—

१ ग्लानि के विना आचार्य की सेवा करने वाला

२ " उपाध्याय की सेवा करने वाला

३ " स्थविर की सेवा करने वाला

४ " तपस्वी की सेवा करने वाला

५, " ग्लान की सेवा करने वाला

ख—पांच कारणो से श्रमण निग्र न्थ की महानिजरा और महापयवसान होता है। यथा—

१ ग्लानि के विना नवदीक्षित की सेवा करन वाला

२ " कुल की सेवा करने वाला

३ " गण की सेवा करने वाला

४ " सघ की सेवा करने वाला

५ " स्वधर्मी की सेवा करने वाला

३९८ क—पांच कारणा से श्रमण निग्रन्थ साम्भोगिक साधर्मिक को विसभोगी करे तो जिनाज्ञा का अतिक्रमण नही करता है। यथा—

१ अकृत्य करने वाले को।

२ अकृत्य करके आलोचना न करने वाले को।

३ आलोचना करके प्रायश्चित्त न करने वाले को।

४ प्रायश्चित लेकर भी आचरण न करने वाले को।

५ "अरे! ये स्थविर ही बार-बार अकृत्य का सेवन करते हैं तो ये मेरा क्या कर सकेंगे।" ऐसा कहने वाले को।

ख—पांच कारणो से श्रमण निग्रन्थ (आचार्य) साम्भोगिक को पाराञ्चिक प्रायश्चित दे तो जिनाज्ञा का अतिक्रमण नही करता है। यथा—

१ स्वकुल मे भेद डालने के लिए कलह करने वाले को।

२ स्वगण मे भेद डालने के लिए कलह करने वाले को।

३ हिंसा प्रेक्षी—साधु आदि को मारने के लिए उनका शोध करने वाले को।

४ छिद्र प्रेक्षी—साधु आदि को मारने के लिए अव-

सर की तलाश मे रहने वाले को।

५ प्रश्न विद्या का वार-वार प्रयोग करने वाले को।

३९९ क—आचार्य और उपाध्याय के गण मे विग्रह (कलह) के पाँच कारण हैं। यथा—

१ आचार्य या उपाध्याय गण मे रहने वाले श्रमणो को आज्ञा[1] या निषेध[2] सम्यक् प्रकार से न करे।

२ गण मे रहने वाले श्रमण दीक्षा पर्याय के क्रम से सम्यक् प्रकार से वदना न करे।

३ गण मे काल क्रम से जिसको जिस आगम की वाचना देनी है उसे उस आगम की वाचना न दे।

४ आचार्य या उपाध्याय अपने गण मे ग्लान (रोगी) या शैक्ष्य (नवदीक्षित) की सेवा के लिए सम्यक व्यवस्था न करे।

५ गण मे रहने वाले श्रमण गुरु की आज्ञा के विना विहार करे।

ख—आचार्य उपाध्याय के गण मे अविग्रह (कलह न होने) के पाँच कारण हैं। यथा—

---

१ हे मुनि! यह कार्य करो—यह आज्ञा है।

२ हे मुनि! यह कार्य न करो यह निषेध है इसे ही 'धारणा' कहा जाता है।

१ आचार्य या उपाध्याय गण मे रहने वाले श्रमणों को आज्ञा या निषेध सम्यक प्रकार से करे।

२ गण मे रहने वाले श्रमण दीक्षा पर्याय के क्रम से सम्यक् प्रकार वंदना करे।

३ गण मे कालक्रम से जिसको जिस आगम की वाचना देनी है उसे उस आगम की वाचना दे।

४ आचार्य या उपाध्याय अपने गण मे ग्लान या शैक्ष्य (नवदीक्षित) की सेवा के लिए सम्यक् व्यवस्था करे।

५ गण मे रहने वाले श्रमण गुरु की आज्ञा से बिहार करें।

४०० क—पांच निषद्यायें (बैठने के ढग) कही गई हैं। यथा—

१ उत्कुटिका—उकडु बैठना।

२ गोदोहिका—गाय दुहे उस आसन से बैठना।

३ समपादपुता—पैर और पुत से पृथ्वी का स्पर्श करके बैठना।

४ पर्यंवा—पालथी मारकर बैठना।

५ अर्धपर्यंका—अध पद्मासन से बैठना।

ख पांच आजव (सवर) के हेतु कहे गये हैं। यथा—

१. शुभ आर्जव, २ शुभ मार्दव, ३ शुभ लाघव,

४ शुभ क्षमा, ५ शुभ निर्लोभता।

४०१ क—पांच ज्योतिष्क देव कहे गये हैं। यथा—

१ चन्द्र, २ सूय, ३ ग्रह, ४ नक्षत्र, ५ तारा।

ख पांच प्रकार के देव कहे गये हैं। यथा

१ भव्य द्रव्य देव—देवताओ मे उत्पन्न होने योग्य मनुष्य और तिर्यंच।

२ नर देव—चक्रवर्ती।

३ धर्मदेव—साधु।

४ देवाधिदेव—अरिहन्त।

५ भावदेव—देवभव के आयुष्य का अनुभव करने वाले भवनपति आदि ४ प्रकार के देव।

४०२—पांच प्रकार की परिचारणा (विषय सेवन) कही गई हैं। यथा—

१ काय-परिचारणा—केवल काया से मैथुन सेवन करना। यह परिचारणा दूसरे देवलोक तक होती है।

२ स्पर्श परिचारणा—केवल स्पर्श होने से विषयेच्छा की पूर्ति होना। यह तीसरे चौथे देवलोक तक होती है।

३ रूप परिचारणा—केवल रूप दर्शन से विषयेच्छा की पूर्ति होना। यह परिचारणा पाचवे, छठे देवलोक

तक होती है।

४ शब्द परिचारणा—केवल शब्द श्रवण से विषयेच्छा की पूर्ति होना। यह परिचारणा सातवें, आठवें देवलोक तक होती है।

५ मन परिचारणा—केवल मानसिक सकल्प से विषयेच्छा की पूर्ति होना। यह परिचारणा नवमे से बारहवें देवलोक तक होती है।

४०३ क—चमर असुरेन्द्र की पांच अग्रमहिषिया कही गई हैं।
यथा—१ काली, २ रात्रि,
३ रजनी, ४ विद्युत, ५ मेघा।

ख—बलि वैरोचनेन्द्र की पांच अग्रमहिषियां कही गई हैं।
यथा—१ शुभा, २ निशुभा,
३ रभा, ४ निरभा, ५ मदना।

४०४ क—चमर असुरेन्द्र की पांच सेनायें हैं और उनके पांच सेनापति हैं। यथा—

१ पैदल सेना, २ अश्व सेना,

३ हस्ति सेना, ४ महिष सेना,

५ रथ सेना।

पांच सेनापति—

१ द्रुम—पैदल सेना का सेनापति।

४ शुभ क्षमा, ५ शुभ निर्लोभता।

४०१ क—पांच ज्योतिष्क देव कहे गये हैं। यथा—

१ चन्द्र, २ सूर्य, ३ ग्रह, ४ नक्षत्र, ५ तारा।

ख पांच प्रकार के देव कहे गये हैं। यथा

१ भव्य द्रव्य देव—देवताओं में उत्पन्न होने योग्य मनुष्य और तिर्यंच।

२ नर देव—चक्रवर्ती।

३ धर्मदेव—साधु।

४ देवाधिदेव—अरिहन्त।

५ भावदेव—देवभव के आयुष्य का अनुभव करने वाले भवनपति आदि ४ प्रकार के देव।

४०२—पांच प्रकार की परिचारणा (विषय सेवन) कही गई हैं। यथा—

१ काय-परिचारणा—केवल काया से मैथुन सेवन करना। यह परिचारणा दूसरे देवलोक तक होती है।

२ स्पर्श परिचारणा—केवल स्पर्श होने से विषयेच्छा की पूर्ति होना। यह तीसरे चौथे देवलोक तक होती है।

३ रूप परिचारणा—केवल रूप देखने से विषयेच्छा की पूर्ति होना। यह परिचारणा पांचवें, छठे देवलोक

तक होती है।

४ शब्द परिचारणा—केवल शब्द श्रवण से विषयेच्छा की पूर्ति होना। यह परिचारणा सातवें, आठवें देवलोक तक होती है।

५ मन परिचारणा—केवल मानसिक सकल्प से विषयेच्छा की पूर्ति होना। यह परिचारणा नवमे से बारहवें देवलोक तक होती है।

४०३ क—चमर असुरेन्द्र की पांच अग्रमहिषिया कही गई है।
यथा—१ काली, २ रात्रि,
३ रजनी, ४ विद्युत, ५ मेघा।

ख—बलि वैरोचनेन्द्र की पांच अग्रमहिषियां कही गई हैं।
यथा—१ शुभा, २ निशुभा,
३ रभा, ४ निरभा, ५ मदना।

४०४ क—चमर असुरेन्द्र की पांच सेनायें हैं और उनके पांच सेनापति हैं। यथा—

१ पैदल सेना, २ अश्व सेना,
३ हस्ति सेना, ४ महिष सेना,
५ रथ सेना।

पांच सेनापति—

१ द्रुम—पैदल सेना का सेनापति।

२ सोदामी अश्वराज—अश्व सेना का सेनापति।

३ कुंथु हस्तीराज—हस्तिसना का सेनापति।

४ लोहिताक्षमहिषराज—महिष सेना का सेनापति।

५ किन्नर—रथ सेना का सेनापति।

ख—बलि वैरोचनेन्द्र की पांच सेनायें हैं और उनके पांच-पांच सेनापति हैं। यथा—

१ पैदल सेना—यावत् २-५ रथ सेना।

पांच सेनापति—

१ महद्रुम—पैदल सेना के सेनापति।

२ महासौदाम अश्वराज—अश्वसेना के सेनापति।

३ मालकार हस्तीराज—हस्तिसेना के सेनापति।

४ महालोहिताक्ष महिषराज—महिष सेना के सेनापति।

५ किंपुरुष—रथसेना के सेनापति।

ग—धरण नागकुमारेन्द्र की पांच सेनायें है और उनके पांच सेनापति हैं यथा—

१ पैदल सेना—यावत् २-५ रथ सेना।

पांच सेनापति—

१ भद्रसेन—पैदल सेना के सेनापति।

२ यशोधर अश्वराज—अश्व सेना के सेनापति।

३ सुदर्शन हस्तिराज—हस्ति सेना के सेनापति ।

४ नीलकठ महिषराज—महिष सेना के सेनापति ।

५ आनन्द—रथसेना के सेनापति ।

घ—भूतानन्द नागकुमारेन्द्र की पाँच सेनाएँ हैं और पांच सेनापति है । यथा—

१ पैदल सेना—यावत् २-५ रथ सेना ।

पाँच सेनापति—

१ दक्ष—पैदल सेना का सेनापति ।

२ सुग्रीव अश्वराज—अश्व सेना का सेनापति ।

३ सुविक्रम हस्तिराज—हस्ति सेना का सेनापति ।

४ श्वेतकण्ठ महिषराज—महिष सेना का सेनापति ।

५ नन्दुत्तर—रथ सेना का सेनापति ।

ङ—वेणुदेव सुपर्णेन्द्र की पाँच सेनापति और पाँच सेनाएँ । यथा—

१ पैदल सेना यावत् २-५ रथ सेना ।

२ धरण के सेनापतियो के नाम के समान वेणुदेव के सेनापतियो के नाम है ।

३ भूतानन्द के सेनापतियो के नाम के समान वेणु-दालिय के सेनापतियो के नाम हैं ।

(च ठ)—धरण के सेनापतियो के नाम के समान सभी

दक्षिण दिशा के इन्द्रो के यावत् घोस के सेनापतियों के नाम हैं।

(ड न)—भूतानन्द के सेनापतियो के नाम के समान सभी उत्तर दिशा के इन्द्रो के यावत् महाघोस के सेना पतियो से नाम हैं।

प—शक्रेन्द्र की पांच सेनाएँ हैं और उनके पांच सेना-पति हैं। यथा—

१ पैदल सेना, २ अश्व सेना, ३ गज सेना,

४ वृषभ सेना, ५ रथ सेना।

१ हरिणगमंषी—पैदल सेना का सेनापति।

२ वायु अश्वराज—अश्व सेना का सेनापति।

३ एरावण हस्तिराज—हस्ति सेना का सेनापति।

४ दामधि वृषभराज—वृषभ सेना का सेनापति।

५ माढर—रथ सेना का सेनापति।

फ—शक्रेन्द्र की पांच सेनायें है, और उनके पांच सेनापति हैं। यथा—

१ पैदल सेना यावत् २-४ वृषभ सेना, ५-रथ सेना।

पांच सेनापति—

१ लघुपराक्रम—पैदल सेना का सेनापति।

२. महावायु अश्वराज—अश्व सना का सेनापति।

३ पुष्पदन्त हस्तिराज—हस्ति सेना का सेनापति।

४ महादामर्धि वृषभराज—वृषभ सेना का सेनापति।

५ महामाढर—रथ सेना का सेनापति।

शक्रेन्द्र के सेनापतियो के नाम के समान सभी दक्षिण दिशा के इन्द्रो के यावत् आरणकल्प के इन्द्रो के सेनापतियों के नाम हैं। ईशानेन्द्र के सेनापतियों के समान सभी उत्तर दिशा के इन्द्रो के यावत् अच्युत कल्प के इन्द्रो के सेनापतियो के नाम हैं।

४०५ क—शक्रेन्द्र की आभ्यन्तर परिषदा के देवो की स्थिति पांच पल्योपम की कही गई हैं।

ख—ईशानेन्द्र की आभ्यन्तर परिषदा के देवियों की स्थिति पांच पल्योपम की कही गई है।

४०६—पांच प्रकार के प्रतिघात कहे गये हैं। यथा—

१ गति प्रतिघात—देवादि गतियो का प्राप्त न होना

२ स्थिति प्रतिघात—देवादि की स्थितियो का प्राप्त न होना।

३ बधन प्रतिघात—प्रशस्त औदारिकादि बधनो का प्राप्त न होना।

४ भोग प्रतिघात—प्रशस्त भोग-सुख का प्राप्त न होना।

५ बल, वीय, पुरुषाकार, पराक्रम प्रतिघात--बल आदि का प्राप्त न होना।

४०७ पाँच प्रकार की आजीविका (जीवननिर्वाह के लिए किया जाने वाला काय) कही गई है। यथा —

१ जाति आजीविका—अपनी जाति बताकर आजीविका करना।

२ कुल आजीविका—अपना कुल बताकर आजीविका करना।

३ कम आजीविका—कृषि आदि कर्म करके आजीविका करना।

४ शिल्प आजीविका—वस्त्र आदि बुनने का काय करके आजीविका करना।

५ लिंग आजीविका—साधु आदि का वेष धारण करके आजीविका करना।

४०८ पाँच प्रकार के राजचिन्ह कहे गये हैं। यथा

१ खड्ग, २ छत्र, ३ मुकुट,
४ मोजडी, ५ चामर।

४०९ क पाँच कारणो मे छद्मस्थ जीव (साधु) उदय मे आये हुए परीषहो और उपसर्गो को —

१ समभाव से सहन करता है।

२, समभाव से क्षमा करता है।

३ समभाव से तितिक्षा करता है ।

४ समभाव से निश्चल होता है ।

५ समभाव से विचलित होता है ।

१ कर्मोदय से यह पुरुष उन्मत्त है इसलिए —

१ मुझे आक्रोश वचन गाली बोलता है ।

२ मुझे हसता है ।

३ मुझे हाथ पकडकर फेंक देता है ।

४ दुर्वचनो से मेरी भर्त्सना करता है ।

५ मुझे रस्सी आदि से बाँधता है ।

६ मुझे बदीखाने मे डालता है ।

७ मेरे शरीर के अवयवो का छेदन करता है ।

८ मेरे सामने उपद्रव करता है ।

९ मेरे वस्त्र पात्र, कवल या रजोहरण छीन लेता है, या दूर फेंक देता है ।

१० मेरे पात्रो को तोड देता है ।

११ मेरे पात्र चुरा लेता है ।

२ यह यक्षाविष्ट पुरुष है इसलिए यह—

१ मुझे आक्रोश वचन बोलता है यावत् २-११ मेरे पात्र चुरा लेता है ।

३ इस भव म वेदने योग्य कम मर उदय मे आये है।
इसलिए यह पुरुष १-मुझे आक्रोश वचन बोलता है-
यावत् २-११ मेरे पात्र चुरा लेता है।

४ यदि मैं सम्यक प्रकार से सहन नही करूंगा।
" " क्षमा नही करूंगा।
" " तितिक्षा नही करूँगा।
" " निश्चल नही रहूँगा।
तो मेरे केवल पाप कर्म का बध होगा।

५ यदि मैं सम्यक् प्रकार से सहन करूंगा।
" " क्षमा करूंगा।
" " तितिक्षा करूंगा।
" " निश्चल रहूँगा।
तो मरे केवल कर्मों की निर्जरा ही होगी।

ख पाच कारणो से केवली उदय मे आये हुए परीषहो और उपसर्गों को—

१ समभाव से सहन करता है-यावत्
२-८ " निश्चल रहता है। यथा—

१ यह विक्षिप्त पुरुष है, इसलिए १ मुझे आक्रोश वचन बोलता है—यावत्-२-११-मेरे पात्र चुरा लेता है।

२ यह दृप्तचित्त (अभिमानी) पुरुष है, इसलिये—
१ मुझे आक्रोश वचन बोलता है-यावत-

२-११ मेरे पात्र चुरा लेता है।

३ यह यक्षाविष्ठ पुरुष है-इसलिये-

१ मुझे आक्रोश वचन बोलता है-यावत्-

२-११ मेरे पात्र चुरा लेता है।

४ इस भव मे वेदने योग्य कर्म मेरे उदय मे आये हैं, इसलिए यह पुरुष—

१ मुझे आक्रोश वचन बोलता है-यावत्

२-११-मेरे पात्र चुरा लेता है।

५ मुझे सम्यक् प्रकार से सहन करते हुए, क्षमा करते हुए, तितिक्षा करते हुए या निश्चल रहते हुए देखकर अन्य अनेक छद्मस्थ श्रमण निग्रन्थ उदय मे आये हुए परीषहो और उपसर्गो को सम्यक् प्रकार से सहन करेंगे-यावत-निश्चल रहेगे।

४१० क—पाच प्रकार के हेतु कहे गये हैं, यथा—

१ अनुमान प्रमाण के अग धूमादि हेतु को जानता नहीं है,

२ ,, ,, देखता नही है,

३ ,, धूमादि हेतु पर श्रद्धा नही करता है।

४ ,, धूमादि हेतु को प्राप्त नही करता है।

५ ,, जाने विना अज्ञान मरण मरता है।

ख—पाच प्रकार के हेतु कहे गये हैं, यथा—

१ हेतु से जानता नही है, यावत २-५ हेतु से अज्ञान मरण मरता है।

ग—२ पाच प्रकार के हेतु कहे गये हैं, यथा–

१ हेतु से जानता है, यावत् २-५ हेतु से छद्मस्थ मरण मरता है।

घ—पाच हेतु कहे गये है, यथा—

१ हेतु से जानता है, यावत् २-५ हेतु से छद्मस्थ मरण मरता है।

ङ—पाच अहेतु कहे गये हैं, यथा—

१ अहेतु को नही जानता है, यावत्-२-५ अहेतु रूप छद्मस्थ मरण मरता है।

च—पाच अहेतु कहे गये हैं, यथा—

१ अहेतु से नही जानता है, यावत्-२-५ अहेतु से छद्मस्थ मरण मरता है।

छ—पाच अहेतु कहे गये हैं, यथा—

१ अहेतु को जानता है-यावत् २-५ अहेतु रूप केवली मरण मरता है।

ज—पाच अहेतु कहे गये है, यथा—

१ अहेतु से जानता है-यावत २-५ अहेतु से केवली मरण मरता है।

(१८)

सप्त स्थान सूत्र ५४१-५९३ (सूत्र ५३)

(१) द्रव्यानुयोग—

५४२, ५४३।५४७-५५०।५५२,५५३।५५९-५६२।
५६५,५६६,५६७।५६९।५७२-५७९।५८२,५८३।५८६।
५८८।५९१,५९२,५९३।—योग ३१

(२) चरणानुयोग—

५४१।५४४,५४५।५५४।५७०,५७१।५८४,५८५।—योग ८

(३) गणितानुयोग—

५४६।५५५।५८०,५८१।५८९,५९०।—योग ६

(४) धर्मकथानुयोग—

५५१।५५६,५५७,५५८।५६३,५६४।५६८।५८७।—योग ८

(१९)

अष्ट स्थान सूत्र ५९४-६६० (सूत्र ६७)

(१) द्रव्यानुयोग—

५९५,५९६।५९९।६०२।६०६-६१३।६१५।६१९।६२२।६२४।
६२७,६२८।६४४।६४६।६५२।६५४।६५८,६५९,६६०।
—योग २५

(२) चरणानुयोग—

५९४।५९७,५९८।६०१।६०३,६०४,६०५।६१४।६१८।
६४५।६४७।६४९।—योग १२

(३) गणितानुयोग—

६००।६२३।६२६-६४३।६४८।६५०।६५५,६५६,६५७।

—योग २२

(४) धर्मकथानुयोग—

६१६,६१७।६२०,६२१।६२५,६२६।६५१।६५३।—योग ८

(२०)

नव स्थान सूत्र ६६१-७०३ (सूत्र ४३)

(१) द्रव्यानुयोग—

६६२।६६५-६६८।६७१।६७३।६७५-६७६।६८२,६८३,६८४।

६८६।७००,७०३।—योग २०

(२) चरणानुयोग—

६६१।६६३।६७४।६८१।६८७,६८८।—योग ६

(३) गणितानुयोग—

६६६,६७०।६८५।६८६।६९४,६९५। ६९८,६९९ ।—योग ८

(४) धर्मकथानुयोग—

६६४।६७२।६८०।६९०-६९३। ६९६,६९७।—योग ९

(२१)

दश स्थान सूत्र ७०४-७८३ सूत्र ८०

(१) द्रव्यानुयोग—

७०४-७०८।७१०।७१३।७१६।७२७।७२९।७३१,७३२।७३४।

७३६,७३७।७४०-७४३।७५२,७५३,७५४।७५६,७५७।७६०,

७६१,७६२।७६५,७६६।७६९।७७२,७७३।७७६।७८१,७८२,
७८३।—योग ३६

(२) चरणानुयोग—
७०९।७११,७१२।७१४,७१५।७३३।७३८,७३९।७४४,७४९।
७५१।७५५।७५८,७५९।७६३।७७०। —योग २०

(३) गणितानुयोग—
७१७।७१९-७२६।७२८।७४७।७६४।७६८।७७४,७७५।७७८,
७७९,७८०।—योग १८

(४) धर्मकथानुयोग—
७१८।७३०।७३५।७५०।७६७।७७७।—योग ६

अनुयोग वर्गीकरण तालिका समाप्त

भगवान महावीर के जीवन प्रसंग

क्रम	स्थान	उद्देशक	सूत्र	वर्णन
१	१		५३	निर्वाण
२	३	४	२२९	युगान्तकृद्भूमि
३	३	४	२३०	चौदहपूर्वीमुनि
४	४	३	३२२	जो श्रमणोपासक देवगति प्राप्त हुए उनकी स्थिति
५	४	४	३८२	वादीमुनि
६	५	१	४११	पच कल्याण
७	६		५३१	प्रव्रज्या केवलज्ञान निर्वाण
८	७		५६८	सघयण सस्थान ऊँचाई
९	७		५८७	प्रवचन निह्नव
१०	७		५८७	निह्नवो के धर्माचार्य
११	७		५८७	निह्नवो के नगर
१२	८		६२१	भ० महावीर ने ८ राजाओ को दीक्षा दी
			,,	
१३	८		६५३	अनुत्तर विमानो मे उत्पन्न होने वाले भ० महावीर के शिष्य

१४	६	६८०	भ० महावीर के गण
१५	६	६८१	नौकोटी शुद्ध आहार
१६	६	६६१	भ० महावीर के समय मे तीर्थंकर गोत्र बाधने वाले जीव
१७	६	६६२	भ० महावीर ने कहा—ये जीव आगामी उत्सर्पिणी मे तीर्थंकर होंगे
१८	६	६६३	राजा श्रेणिक का वर्णन
१६	१०	७५०	भ० महावीर के दस महास्वप्न



एक स्थान		द्वि स्थान	प्रथम उद्देशक
मूलसूत्राक	अन्तगत सूत्र	मूल सूत्राक	अन्तर्गत सूत्र
१	०[1]	५७	१०
२-४०	०	५८	२
४१	३	५९	४
४२	१८	६०	१६
४३	३	६१	२
४४	०	६२	२
४५	२	६३	०
४६	४	६४	११
४७	३६	६५	११
४८	१८	६६	११
४९	१८	६७	०
५०	१४	६८	०
५१	१०८४	६९	२५
५२	०	७०	७
५३	०	७१	२३
५४	०	७२	२५
५५	३	७३	२८
५६	२२	७४	२
		७५	९
	योग १२६९	७६	१८
			योग ३१९

१ जहा शून्य है वहा मूलसूत्राक के अनुसार एक ही सूत्र है किन्तु अन्तगत सूत्र भी नही है ।

द्विस्थान द्वितीय उद्देशक

मूलसूत्राङ्क	अन्तर्गत सूत्र
७७	२४
७८	४८
७९	३६६
८०	४५
	४८३

द्विस्थान तृतीय उद्देशक

मूलसूत्राङ्क	अन्तर्गत सूत्र
८१	६
८२	१७
८३	३०
८४	११
८५	२४
८६	७
८७	१९
८८	२५
८९	१८
९०	१४८
९१	३
९२	४३४
९३	४३४
९४	३४
	योग १२१३

त्रिस्थान चतुर्थ उद्देशक

मूल सूत्राङ्क	अन्तर्गत सूत्र
९५	७८
९६	५
९७	५
९८	१०
९९	१
१००	४३२
१०१	१४
१०२	९
१०३	३
१०४	४
१०५	८
१०६	३
१०७	३
१०८	४
१०९	[illegible]
११०	४
१११	०
११२	०
११३	५
११४	०
११५	०
११६	५
११७	६
११८	२३
	योग ६२७

त्रिस्थान प्रथम उद्देशक

मूल सूत्राङ्क	अन्तर्गतसूत्र
११९	३
१२०	३
१२१	१९
१२२	३
१२३	३
१२४	७२
१२५	४
१२६	३३
१२७	४
१२८	९
१२९	१२
१३०	९
१३१	०
१३२	२८
१३३	३
१३४	२१
१३५	०
१३६	०
१३७	१८
१३८	८४
१३९	३६
१४०	२३
१४१	०
१४२	१५
१४३	३२
१४४	२
१४५	०
१४६	२
१४७	३
१४८	२
१४९	२
१५०	२
१५१	२
१५२	०
	योग ४५७

त्रिस्थान द्वितीय उद्देशक

मूलासूत्राङ्क	अन्तर्गतसूत्र
१५३	३
१५४	३२०
१५५	२४
१५६	४
१५७	४
१५८	२
१५९	२
१६०	२९५
१६१	२
१६२	५
१६३	२९
१६४	२
१६५	८
१६६	०
१६७	०
	योग ७०२

त्रिस्थान तृतीय उद्देशक		त्रि स्थान चतुर्थ उद्देशक	
मूल सूत्राङ्क	अन्तगतसूत्र	मूल सूत्रांक	अन्तर्गत सूत्र
१६८	६	१९१	६
१६९	०	१९२	५१
१७०	२	१९३	३
१७१	०	१९४	४
१७२	२	१९५	१८
१७३	०	१९६	०
१७४	४	१९७	९०
१७५	४	१९८	२
१७६	१	१९९	२
१७७	०	२००	३
१७८	२	२०१	४
१७९	२	२०२	६
१८०	३	२०३	४
१८१	२५	२०४	०
१८२	१४	२०५	०
१८३	५	२०६	२
१८४	३	२०७	०
१८५	८	२०८	६
१८६	२	२०९	२
१८७	७	२१०	२
१८८	८	२११	०
१८९	२	२१२	०
१९०	०	२१३	०
		२१४	७
		२१५	०
		२१६	०
	योग १५१	२१७	०

मूल सूत्रांक	अन्तर्गत सूत्र
३२२	०
३२३	२
३२४	८
३२५	२
३२६	२
३२७	३९
३२८	२
३२९	१
३३०	०
३३१	४
३३२	२
३३३	२
३३४	०
३३५	०
३३६	०
३३७	०
३३८	८
	योग २१६

चतु स्थान चतुर्थ उद्देशक

मूल सूत्रांक	अन्तर्गत सूत्र
३३९	०
३४०	४
३४१	०
३४२	०
३४३	०
३४४	१५
३४५	२
३४६	१४

मूल सूत्रांक
३४७
३४८
३४९
३५०
३५१
३५२
३५३
३५४
३५५
३५६
३५७
३५८
३५९
३६०
३६१
३६२
३६३
३६४
३६५
३६६
३६७
३६८
३६९
३७०
३७१
३७२
३७३
३७४
३७५

अन्तर्गत सूत्र
०
२
१६
३
२
५
७
५
८
५
०
८
२
१४
५
३
०
३
५
४
२
२
०
२
४८
०
४
६
२

मूल सूत्रांक	अन्तर्गत सूत्र
३७६	२
३७७	०
३७८	०
३७९	०
३८०	०
३८१	०
३८२	०
३८३	३
३८४	०
३८५	२
३८६	०
३८७	६
३८८	२३

योग-२५१

पच स्थान प्रथम उद्देशक

मूल सूत्रांक	अन्तर्गत सूत्र
३८९	२
३९०	१३
३९१	२
३९२	०
३९३	२
३९४	२
३९५	८
३९६	१२
३९७	२
३९८	२
३९९	२
१००	२

मूल सूत्रांक	अन्तर्गत सूत्र
४०१	२
४०२	०
४०३	२
४०४	३२
४०५	२
४०६	०
४०७	०
४०८	०
४०९	२
४१०	९
४११	१४

योग-११७

पच स्थान द्वितीय उद्देशक

मूल सूत्रांक	अन्तर्गत सूत्र
४१२	२
४१३	२
४१४	०
४१५	०
४१६	४
४१७	२
४१८	३
४१९	९९
४२०	०
४२१	०
४२२	३
४२३	२
४२४	०
४२५	२

षष्ठ स्थान

मूल सूत्राक	अन्तर्गत सूत्र
४७५	०
४७६	०
४७७	०
४७८	२
४७९	०
४८०	०
४८१	०
४८२	७
४८३	३
४८४	०
४८५	०
४८६	०
४८७	२
४८८	२
४८९	०
४९०	२
४९१	२
४९२	२
४९३	१६
४९४	०
४९५	०

मूल सूत्राक	अन्तर्गत सूत्र
४९६	२
४९७	२
४९८	०
४९९	४३
५००	२
५०१	०
५०२	०
५०३	२
५०४	१६
५०५	२
५०६	०
५०७	२
५०८	२०
५०९	२०
५१०	४
५११	२
५१२	०
५१३	०
५१४	०
५१५	२
५१६	०
५१७	३
५१८	०

११५	११५४
३२	५१९
३२	५२०
३२	५२१
३२	५२२
३२	५२३
३२	५२४
३२	५२५
३२	५२६
३३	५२७
३३	५२८
३३	५२९
३३	५३०
३३	५३१
३३	५३२
३३	

स्थानांग

०	सप्तस्थान
३	मूलसूत्राङ्क
२	५४१
५५	५४२
०	५४३
२	५४४
०	५४५
०	५४६
०	५४७
०	५४८
०	५४९
०	५५०
३	५५१
२	५५२

५६३	०	५८६	२
५६४	०	५८७	३
५६५	०	५८८	२
५६६	०	५८९	५
५६७	२	५९०	२
५६८	०	५९१	०
५६९	०	५९२	६
५७०	०	५९३	२३
५७१	८		योग-२४५
५७२	०		
५७३	३	**अष्ट स्थान**	
५७४	३	**मूल सूत्राङ्क**	**अन्तर्गत सूत्र**
५७५	३	५९४	०
५७६	२	५९५	२
५७७	३	५९६	१४४
५७८	१	५९७	२
५७९	४	५९८	२
५८०	२	५९९	०
५८१	१	६००	०
५८२	३२	६०१	०
५८३	३३	६०२	०
५८४	०	६०३	०
५८५	८	६०४	२

३२	५१९	०	सप्तस्थान
३२	५२०	३	मूलसूत्राङ्क
३२१	५२१	२	५४१
३२५ ३२१	५२२	५५	५४२
३२१	५२३	०	५४३
३२१	५२४	२	५४४
३२	५२५	०	५४५
३३ ३३	५२६	०	५४६
३३	५२७	०	५४७
३३	५२८	०	५४८
३३	५२९	०	५४९
३३ ३३	५३०	०	५५०
३३	५३१	३	५५१
३३	५३२	२	५५२

५६३	०
५६४	०
५६५	०
५६६	०
५६७	२
५६८	०
५६९	०
५७०	०
५७१	८
५७२	०
५७३	३
५७४	३
५७५	३
५७६	२
५७७	३
५७८	१
५७९	४
५८०	२
५८१	१
५८२	३२
५८३	३३
५८४	०
५८५	८
५८६	२
५८७	३
५८८	२
५८९	५
५९०	२
५९१	०
५९२	६
५९३	२३

योग-२४५

अष्ट स्थान

मूल सूत्राङ्क	अन्तर्गत सूत्र
५९४	०
५९५	२
५९६	१४४
५९७	२
५९८	२
५९९	०
६००	०
६०१	०
६०२	०
६०३	०
६०४	२

११	११५६	स्थानांग	
३२	६०५	०	६२८
३२	६०६	०	६२९
३२			
३२	६०७	०	६३०
३२	६०८	०	६३१
३२	६०९	०	६३२
३२	६१०	२	६३३
३२			
३३	६११	२	६३४
३३	६१२	५	६३५
३३	६१३	०	६३६
३३	६१४	२	६३७
३३			
३३	६१५	०	६३८
३३	६१६	०	६३९
३३	६१७	०	६४०
३३			

६५१	०
६५२	०
६५३	०
६५४	२
६५५	०
६५६	०
६५७	२
६५८	३
६५९	०
६६०	२९
योग	

नव स्थान

मूल सूत्रांक	अन्तर्गत सूत्र
६६१	०
६६२	०
६६३	२
६६४	०
६६५	०
६६६	१४
६६७	०
६६८	०
६६९	२
६७०	०
६७१	०
६७२	१९
६७३	०
६७४	०
६७५	०
६७६	०
६७७	०
६७८	०
६७९	०
६८०	०
६८१	०
६८२	०
६८३	०
६८४	०
६८५	२
६८६	०
६८७	०
६८८	०
६८९	३८
६९०	०
६९१	०
६९२	०

११५८ स्थानांग

११

१

३२	६९३	०	७१२
३२	६९४	०	७१३
३२	६९५	०	७१४
३२	६९६	०	७१५
३२	६९७	०	७१६
३२	६९८	०	७१७
३२	६९९	०	७१८
३२	७००	०	७१९
३३	७०१	०	७२०
३३	७०२	६	७२१
३३	७०३	२३	७२२
३३			७२३
३३		योग १४०	७२४
३३			७२५
३३	दस स्थान		
३३	मूलसूत्राङ्क	अन्तर्गतसूत्र	७२६

७३५	६	७६१	०
७३६	४	७६२	०
७३७	०	७६३	०
७३८	२	७६४	३
७३९	२	७६५	२
७४०	०	७६६	०
७४१	३	७६७	२
७४२	०	७६८	१०
७४३	३	७६९	३
७४४	०	७७०	०
७४५	२	७७१	३
७४६	०	७७२	०
७४७	०	७७३	०
७४८	०	७७४	२
७४९	०	७७५	०
७५०	०	७७६	०
७५१	०	७७७	०
७५२	०	७७८	१६
७५३	०	७७९	३
७५४	०	७८०	२
७५५	११	७८१	०
७५६	०	७८२	२
७५७	१०	७८३	२९
७५८	०		
७५९	०		३५४
७६०	०		

परिशिष्ट ३

स्थानांग–समवायांग

सम विषयक सूत्र सूची

स्थानांग और सनवायाङ्ग के सम विषयक सूत्र

अधर्म—
स्था० ८[1] सम० १[2]

अलोक—
स्था० ६ सम० १

अस्तिकाय—
स्था० ४४१ सम० ५

आत्मा—
स्था० १ सम० १

आभिनिवोधिक ज्ञान—
स्था० ५२५ सम० ६

आयुबन्ध—
स्था० ५३६ सम० १५४

आश्रव—
स्था० १३ सम० १
स्था० ४१८ सम० ५

कर्म प्रकृतिया—
स्था० ६६८ सम० ९

कषाय—
स्था० २४९ सम० ४

कामगुण—
स्था० ३९० सम० ५

कुलकर—
स्था० ५५६ सम० १५७-८
स्था० ६९६ सम० ११२
स्था० ५१८ सम० १०९

गुप्तिया—
स्था० १२६ सम० ३

गौरव—
स्था० २१५ सम० ३

चक्रवर्ती के रत्न—
स्था० ५५८ सम० १४

जीवनिकाय—
स्था० ४८० सम० ६

जम्बूद्वीप मे वर्ष (क्षेत्र)—
स्था० ५५५ सम० ७

वपधर पर्वत—
स्था० ५५५ सम० ७

---

१ यहा सर्वत्र सूत्राङ्क दिये है।
२ यहा सर्वत्र समवायाङ्क दिये हैं।

---

१ पाठ भेद हैं।



स्थानांग सूत्र

(समाप्त)